



विदेश मंत्रालय

वार्षिक रिपोर्ट

2012-2013







वार्षिक रिपोर्ट 2012-2013

विदेश मंत्रालय
नई दिल्ली

प्रकाशित:

नीति नियोजन एवं अनुसंधान प्रभाग, विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
यह वार्षिक रिपोर्ट वेबसाइट पर भी देखी जा सकता है: www.mea.gov.in

सामने का कवर 1947 के बाद साउथ ब्लॉक, विदेश मंत्रालय की सीट को दर्शाता है।

सामने कवर के अन्दर जवाहरलाल नेहरू भवन, विदेश मंत्रालय के जून 2011 के बाद से नए भवन को दर्शाया गया है।

पिछले पृष्ठ के भीतरी भाग में जवाहरलाल नेहरू भवन के अन्दर की वस्तुओं को प्रदर्शित करते हुए।

अभिकल्पन एवं मुद्रण:

ग्राफिक प्वाइंट प्रा. लि.

चौथा तल, हरबंस भवन II

नांगल राय, कॉमर्शियल कॉम्प्लेक्स

नई दिल्ली-110046

दूरभाष: 011 28523517

ई.मेल: gppl@graphicpointindia.com

विषय-वस्तु

प्रस्तावना और सारांश	i-xvii
1. भारत के पड़ोसी देश	1
2. दक्षिण पूर्व एशिया और प्रशांत	16
3. पूर्वी एशिया	28
4. यूरेशिया	33
5. खाड़ी तथा पश्चिम एशिया	41
6. अफ्रीका	48
7. यूरोप और यूरोपीय संघ	63
8. संयुक्त राज्य अमरीका	80
9. संयुक्त राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय संगठन	94
10. निरस्त्रीकरण और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा मामले	108
11. बहुपक्षीय आर्थिक संबंध	112
12. दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संघ (सार्क)	119
13. विकास सहयोग	121
14. निवेश एवं प्रौद्योगिकी संवर्धन	127
15. ऊर्जा सुरक्षा	128
16. आतंकवाद विरोध एवं नीति नियोजन	130
17. नयाचार	132
18. कौंसली, पासपोर्ट और वीजा सेवाएँ	139
19. प्रशासन एवं स्थापना	146
20. सूचना का अधिकार तथा मुख्य जन सूचना कार्यालय	149
21. ई-अभिशासन और सूचना प्रौद्योगिकी	150
22. समन्वय प्रभाग	151
23. विदेश प्रचार	152
24. लोक राजनय	155
25. विदेश सेवा संस्थान	159
26. राजभाषा नीति का कार्यान्वयन और विदेशों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार	161
27. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आई सी सी आर)	162
28. भारतीय विश्व कार्य परिषद (आई सी डब्ल्यू ए)	166
29. विकासशील देशों के लिए अनुसंधान एवं सूचना प्रणाली	168
30. विदेश मंत्रालय, पुस्तकालय	171
31. वित्त और बजट	172

परिशिष्ट

परिशिष्ट-I: वर्ष-2012 में भारत द्वारा अन्य देशों के साथ संपन्न अथवा नवीकृत की गई संधियां/अभिसमय/करार	175
परिशिष्ट II: जनवरी 2012 से दिसम्बर 2012 तक की अवधि के दौरान जारी किए गए पूर्ण अधिकार के दस्तावेज	191
परिशिष्ट III: जनवरी 2012 से दिसम्बर 2012 तक की अवधि के दौरान जारी किए गए अनुसमर्थन/अधिमिलन दस्तावेज	193
परिशिष्ट IV: आईटेक और स्काप देशों की सूची	195
परिशिष्ट V: पैनल में शामिल आईटेक/स्काप प्रशिक्षण संस्थानों की सूची	198
परिशिष्ट-VI: वर्ष 2012-13 की अवधि के दौरान नियोजन तथा अनुसंधान प्रभाग द्वारा आंशिक अथवा पूर्ण रूप से वित्तपोषित विश्वविद्यालयों, संस्थानों द्वारा आयोजित/संचालित सम्मेलन/संगोष्ठियां/अध्ययन परियोजनाएँ	200
परिशिष्ट VII: जनवरी से दिसम्बर, 2012 के दौरान प्राप्त हुए पासपोर्ट आवेदन पत्रों और जारी किए गए पासपोर्टों, कुल प्राप्त विविध आवेदनों एवं प्रदत्त सेवाओं, जारी किए गए पासपोर्टों के साथ तत्काल योजना के तहत राजस्व और पासपोर्ट कार्यालयों का कुल राजस्व और व्यय दर्शाने वाला विवरण	201
अनुबंध VIII: केन्द्रीय पासपोर्ट संगठन की दिनांक 31-12-2012 तक काडर संख्या	203
परिशिष्ट IX: दिनांक 10-12-2012 के अनुसार मुख्यालय और विदेश स्थित मिशन/केन्द्रों में संवर्ग सं. (इनमें वाणिज्य मंत्रालय के बजट से प्रदान किए गए पद और संवर्ग बाह्य पद इत्यादि शामिल हैं)	204
परिशिष्ट X: मंत्रालय में अप्रैल 2012 से दिसम्बर 2012 तक सीधी भर्ती, विभागीय पदोन्नति और सीमित विभागीय परीक्षा के माध्यम से आरक्षित रिक्तियों के साथ-साथ की गई भर्ती संबंधी आंकड़े	205
परिशिष्ट XI: विविध भाषाओं में प्रवीणता प्राप्त भा.वि. सेवा के अधिकारियों की संख्या	206
परिशिष्ट XII: अनुसंधान और सूचना प्रणाली	207
परिशिष्ट XIII: 2012-13 तक विदेश मंत्रालय का वित्त	208
परिशिष्ट XIV: 2012-13 बजट (संशोधित अनुमान) में मुख्य क्षेत्रों का आबंटन	209
परिशिष्ट XV: भारत के तकनीकी सहयोग कार्यक्रमों के मुख्य गन्तव्य	210
परिशिष्ट XVI: भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक के लम्बित लेखापरीक्षा पैरा की स्थिति	211
संक्षिप्तियां	212

प्रस्तावना और सारांश

राष्ट्रीय लोकाचार पर आधारित भारत की विदेश नीति देश के राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय विकास एवं परिवर्तन की प्रक्रियाओं का समर्थन करती है। भारत की सुरक्षा सुनिश्चित करना, सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा देना, देश की रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखना तथा और अधिक उचित वैश्विक व्यवस्था की दिशा में कार्य करना इस नीति के अभिन्न अंग हैं। भारत अपनी सीमाओं को शांतिपूर्ण एवं सुरक्षित रखने, अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों का विस्तार करने, महाशक्तियों के साथ सौहार्द्रपूर्ण एवं संतुलित रिश्ते कायम करने और विकासशील देशों के साथ परस्पर लाभदायक सहभागिता करने का इच्छुक है। भारत की विदेश नीति में सशक्त बहुपक्षीय आयाम भी हैं जिसके तहत वह आज की चुनौतियों जैसे आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, चिरस्थायी विकास, ऊर्जा एवं खाद्य सुरक्षा और साइबर एवं अंतरिक्ष सुरक्षा संबंधी चुनौतियों से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय निकायों तथा मंचों पर सहभागी देशों के साथ मिलकर कार्य कर रहा है। भारत अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में सुधार की मांग करता है ताकि आज के विश्व की वैश्विक वास्तविकता को परिलक्षित किया जा सके तथा भारत के लिए एक समुचित भूमिका सुनिश्चित की जा सके।

भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ निकट एवं मैत्रीपूर्ण संबंध चाहता है। भारत की नीतियां शांति एवं स्थायित्व को बढ़ावा देने और अंतर-संबंध, व्यापार तथा निवेश हेतु नेटवर्क स्थापित करने की दिशा में अभिमुख हैं ताकि विकास के लाभों का अपने पड़ोसी देशों के साथ साझेदारी की जा सके। भूटान के साथ भारत के अनूठे रिश्ते को भूटान के सामाजिक-आर्थिक विकास हेतु दृढ़ प्रतिबद्धता से एक मजबूती मिलती है। वर्ष 2013 में 64वें गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में महामहिम भूटान नरेश जिग्मे खेसर नांग्येल वांगचुक और महामान्या महारानी जेस्टन पेमा वांगचुक की भारत यात्रा से यह रिश्ता और प्रगाढ़ हुआ। अफगानिस्तान जो इस समय संक्रमण काल से गुजर रहा है, को संक्रमण काल के दौरान तथा तत्पश्चात् भारत के द्वारा दी जा रही निरन्तर सहायता वर्ष के दौरान शुरू की गई विभिन्न पहलकदमियों से परिलक्षित होती है। अफगानिस्तान के राष्ट्रपति की नवम्बर, 2012 में भारत यात्रा से रणनीतिक भागीदारी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता परिलक्षित होती है। बांग्लादेश के साथ भारत के घनिष्ठ संबंध वर्ष, 2010 तथा 2011 में उच्चस्तरीय यात्राओं के दौरान संपन्न समझौतों को लागू किए जाने हेतु दोनों देशों द्वारा साथ मिलकर प्रयास किए जाने के साथ ही और प्रगाढ़ हुए। भारत और बांग्लादेश ने संस्कृति तथा धरोहर के साझा संबंधों को मजबूती प्रदान करने के लिए भी कार्य किया। श्रीलंका के साथ सर्वोच्च राजनैतिक स्तर पर बातचीत हुई जिससे संबंध और घनिष्ठ हुए। श्रीलंका में भारत की विकास मूलक परियोजनाओं,

जिनमें आंतरिक रूप से विस्थापित लोगों हेतु परियोजनाएं शामिल हैं, में अच्छी प्रगति हुई। भारत ने नेपाल की संक्रमणकालीन प्रक्रियाओं में सहयोग देना जारी रखा जो इस समय लोकतंत्र एवं स्थायित्व बहाली के लिए प्रयत्नशील है। राष्ट्रपति डॉ. राम बरन यादव की दिसम्बर, 2012 में भारत यात्रा के साथ उच्च स्तरीय राजनैतिक वार्ता जारी रखी गई। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की मई, 2012 में म्यामां यात्रा के जरिए म्यामां के साथ भारत के संबंधों को नई ऊंचाईयों पर ले जाया गया। वर्ष के दौरान राष्ट्रपति वाहिद तथा प्रमुख राजनैतिक दलों के नेताओं के भारत दौरे के साथ भारत और मालदीव के बीच बातचीत का दौर चलता रहा। कारोबार तथा उदारीकृत वीजा व्यवस्था के क्षेत्रों में हुई थोड़ी बहुत प्रगति के साथ ही पाकिस्तान के साथ संबंधों में सुधार देखे गए परन्तु जनवरी, 2013 में भारत-पाक सीमा पर हुई घटना से इस प्रक्रिया को काफी धक्का लगा। पाकिस्तान को अपनी जमीन से होने वाली हर प्रकार की आतंकवादी वारदातों को रोकने की अपनी वचनबद्धता को पूरा करना होगा तथा मुम्बई हमले के दोषियों को सजा दिलानी होगी। भारत ने सार्क में अपने सकारात्मक दृष्टिकोण को जारी रखा, जो इसका मानना है कि क्षेत्रीय विकास एवं सहयोग के लिए एक कारगर साधन हो सकता है।

बहुपक्षीय कार्यक्रमों के अवसर पर नेताओं के बीच आपसी बातचीत के साथ ही वर्ष के दौरान चीन के साथ संबंधों में सुधार हुआ। आतंकवाद विरोधी, सीमा-पार नदियों, नीतिगत आयोजनों तथा अर्थव्यवस्था विषयों पर द्विपक्षीय वार्ता तंत्र की बैठकें आयोजित की गईं। चीन के रक्षा मंत्री जनरल कियांग ग्वांगली की सितम्बर, 2012 में भारत यात्रा के साथ रक्षा संबंधी आदान-प्रदान की प्रक्रिया सुदृढ़ हुई। दोनों देश एक रणनीतिक उद्देश्य से सीमा विवाद को उचित, औचित्यपूर्ण एवं परस्पर स्वीकार्य तरीके से शांतिपूर्ण बातचीत के जरिए निपटाने के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञा रहे।

भारत ने अपने विस्तारित पड़ोस-पूर्वी तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया, खाड़ी तथा मध्य एशिया के साथ अपने संबंधों का दायरा बढ़ाते हुए घनिष्ठता बढ़ाना जारी रखा। इस वर्ष आसियान-भारत वार्ता सह-भागिता की बीसवीं वर्षगांठ और आसियान-भारत शिखर सम्मेलन स्तरीय बातचीत की 10वीं वर्षगांठ मनाई गई। भारत ने 20-21 दिसम्बर, 2012 तक नई दिल्ली में आयोजित आसियान-भारत स्मारक शिखर-सम्मेलन की मेजबानी की जिसके दौरान आसियान-भारत संबंधों को रणनीतिक भागीदारी के स्तर तक ले जाया गया। सेवाओं तथा निवेशों में आसियान-भारत मुक्त व्यापार करार पर बातचीत सम्पन्न होने के साथ ही आर्थिक संबंधों पर जोर दिया गया। उप राष्ट्रपति श्री हामिद अन्सारी ने जनवरी, 2013 में

वियतनाम की यात्रा की। भारत ने 19-20 नवम्बर, 2012 तक नॉम पेन्ह, कम्बोडिया में आयोजित आसियान-भारत शिखर सम्मेलन और पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में भाग लिया।

भारत-जापान संबंधों ने नई ऊर्चायां छुईं। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन के अवसर पर नॉम पेन्ह में नवम्बर, 2012 में जापान के प्रधानमंत्री योशीहिरो नोडा से मुलाकात की। नई वार्ताएं शुरू की गईं जिनमें विदेश मंत्रियों के स्तर पर आपसी हित के आर्थिक मुद्दे और समुद्रवर्ती मामले तथा साइबर सुरक्षा विषयक वार्ताएं शामिल थीं।

भारत ने आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री जूलिया गिलार्ड की अक्टूबर, 2012 में भारत यात्रा से आस्ट्रेलिया के साथ अपने संबंधों को सुदृढ़ किया है। आस्ट्रेलिया के भारत को यूरेनियम का विक्रय करने के निर्णय का स्वागत किया गया है और दोनों देश द्विपक्षीय सिविल परमाणु सहयोग करार पर बातचीत शुरू करने के लिए सहमत हो गए हैं।

भारत ने मध्य एशिया के साथ संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए जून, 2012 में नई मध्य एशिया से जुड़ी नीति की घोषणा की है। इस नीति के तत्वों में उच्च-स्तरीय यात्राओं का आदान-प्रदान, रणनीतिक और सुरक्षा सहयोग को सुदृढ़ करना; बहुपक्षीय कार्यक्रमों को गति प्रदान करना, जमीन और वायु कनेक्टिविटी में सुधार करना तथा व्यक्ति-दर-व्यक्ति सम्पर्क शामिल है। तजाकिस्तान के राष्ट्रपति इमोमाली रहमान ने सितम्बर, 2012 में भारत की यात्रा की।

भारत इस संबंध में खाड़ी और मध्य पूर्व के अन्य भागों में होने वाली गतिविधियों पर प्रत्यक्ष नजर रखता है। इस खाड़ी क्षेत्र में लगभग 6.5 मिलियन भारतीय रहते हैं। इसलिए भारत स्वाभाविक रूप से इस क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखने का इच्छुक है। क्रमशः अप्रैल और मई, 2012 में कतर के अमीर शेख हमद बिन खलीफा अल-थानी तथा बहरीन के शहजादे और उप सर्वोच्च कमांडर सलमान बिन हमद अलखलीफा की भारत यात्राओं से इस क्षेत्र में भारत की सक्रियता को सुदृढ़ किया गया।

इस वर्ष के दौरान भारत-अमरीकी संबंधों को और सुदृढ़ किया गया। तत्कालीन विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा और अमरीकी विदेश उप मंत्री हिलेरी क्लिंटन की सह-अध्यक्षता में जून, 2012 में तीसरे दौर की रणनीतिक वार्ता वाशिंगटन डी.सी. में की गई। दोनों देशों ने अपने रणनीतिक और राजनीतिक परामर्शों का विस्तार करने पर सहमति व्यक्त की। अफगानिस्तान के साथ द्विपक्षीय वार्ता करने का निर्णय लिया गया। विभिन्न प्रकार के क्षेत्रों के संबंध में वार्ता की गईं जिनमें आतंकवाद रोकने, साइबर सुरक्षा, रक्षा-सहयोग, व्यापार और निवेश, ऊर्जा, सिविल परमाणु ऊर्जा, कृषि, शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य और महिला अधिकारिता को शामिल किया गया। माल और सेवाओं में 100 बिलियन अमरीकी डॉलर के व्यापार के साथ अमरीका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बना रहा।

भारत की विदेश नीति में रूस के साथ संबंधों को प्राथमिकता दी गई है। वार्षिक शिखर-स्तरीय बैठकें आयोजित करके इन संबंधों को

बेहतर बनाए रखा गया। राष्ट्रपति पुतिन ने दिसम्बर, 2012 में भारत की यात्रा की। सैनिक एवं तकनीकी सहयोग और व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी तथा सांस्कृतिक सहयोग से सम्बन्धित अन्तर-सरकारी आयोगों की अक्टूबर, 2012 में नई दिल्ली में वार्षिक बैठकें आयोजित की गईं। दोनों देशों ने रक्षा, आतंकवाद रोकने, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, सिविल परमाणु ऊर्जा और हाइड्रोकार्बन के क्षेत्र में अपने संबंधों को और सुदृढ़ करने के प्रयास जारी रखे।

भारत यूरोपीय संघ के साथ अपने संबंधों को बहुमूल्य मानता है और यह भारत का मुख्य व्यापारिक भागीदार बना रहा। ये संबंध विशेष रूप से वर्ष 2010 की लिसबन संधि के बाद से राजनीतिक और सुरक्षा क्षेत्रों में स्थापित करके इनमें विविधता लाई गई है। वर्ष के दौरान भारत-यूरोपीय संघ व्यापक आधार व्यापार और निवेश करार (बी.टी.आई.ए.) को पूरा करने के लिए बातचीत जारी रखी गई। यूरोपीय देशों के साथ उच्च-स्तरीय संबंध बनाए रखे गए हैं। स्पेन के सम्राट सुआन कार्लोस-की अक्टूबर, 2012 में भारत यात्रा से इन संबंधों में नया आयाम जुड़ा है।

कनाडा के साथ भारत के संबंधों में नवम्बर, 2012 में प्रधानमंत्री स्टीफन हार्पर की भारत यात्रा से और तेजी आई और इस यात्रा के दौरान विदेश मंत्री स्तर पर वार्षिक रणनीतिक वार्ता, अधिकारी स्तर की ऊर्जा वार्ता और सुरक्षा वार्ता करने का निर्णय लिया गया। दोनों देशों ने परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग से सम्बन्धित करार को कार्यान्वित करने के लिए उपयुक्त व्यवस्था निर्धारित करने का भी निर्णय लिया।

ऐतिहासिक सन्धियों और हाल ही में किए गए विकास सहयोग से अफ्रीका के साथ भारत के संबंधों को सुदृढ़ किया जा रहा है। उच्च-स्तरीय यात्राओं के आदान-प्रदान और भारत-अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन के तहत कार्यक्रमों में वृद्धि करके इन संबंधों को और सुदृढ़ किया गया। तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटील ने सेशल्स (29 अप्रैल-1 मई, 2012) और दक्षिण अफ्रीका (1-7 मई, 2012) की यात्रा की। मॉरीशस के राष्ट्रपति राजकेश्वर पुरुषोत्तम और बुरुन्दी पीरी-कुरजिजा ने क्रमशः जनवरी, 2013 और सितम्बर, 2012 में भारत की यात्रा की। भारत ने मानव संसाधन विकास और अफ्रीका में क्षमता निर्माण संस्थानों की स्थापना करने पर ध्यान देना जारी रखा।

कैरिबियाई और लातिन अमरीका के साथ भारत के संबंधों को अगस्त, 2012 में नई दिल्ली में प्रथम भारत-सी.ई.एल.ए.सी. विदेश मंत्रियों की बैठक आयोजित करके सुदृढ़ किया गया।

विकास सहयोग भारतीय विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण घटक है। भारत के पड़ोसी देशों (अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, म्यांमार, नेपाल और श्रीलंका) में अवसंरचना और जलविद्युत से लेकर कृषि और उद्योग से लेकर शिक्षा तथा स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में मुख्य विकास परियोजनाएं कार्यान्वित की जा रही हैं। भारतीय विकास सहायता का एक महत्वपूर्ण घटक विकासशील देशों के लिए ऋण सीमा (एलओसी) का विस्तार करना है वर्ष के दौरान अफ्रीका और लातिन अमरीकी देशों को लगभग 200 मिलियन अमरीकी

डॉलर और म्यांमा को 500 मिलियन अमरीकी डॉलर की सहायता आबंटित की गई। भारत ने प्रशिक्षण और छात्रवृत्ति कार्यक्रमों के माध्यम से क्षमता निर्माण के क्षेत्र में अन्य विकासशील देशों की सहायता करना जारी रखा।

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने जून, 2012 में लॉस काबोस, मैक्सिको में जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग लिया जिसमें भारत ने अन्तर-राष्ट्रीय मुद्राकोष की अतिरिक्त फायरवाल के लिए 10 बिलियन अमरीकी डॉलर के अंशदान की घोषणा की। ब्रिक्स देशों का चौथा शिखर सम्मेलन मार्च, 2012 में नई दिल्ली में आयोजित किया गया। भारत ने नवम्बर, 2012 में गुडगांव में क्षेत्रीय सहयोग के लिए हिन्द महासागर रिम संघ के मंत्रियों की परिषद की 12वीं बैठक की अध्यक्षता की। छठी मेकांग गंगा सहयोग से संबंधित अधिकारी स्तर की बैठक सितम्बर, 2012 में नई दिल्ली में आयोजित की गई जिसमें भारत ने भारत सीएलबी (कम्बोडिया, लाओस, पी.डी.आर. म्यांमा, वियतनाम) तत्काल प्रभाव परियोजना आवृत्ति निधि में 1 मिलियन अमरीकी डॉलर वार्षिक अंशदान करने की प्रतिबद्धता की घोषणा की। भारत ने गुट-निरपेक्ष आन्दोलन और राष्ट्रमंडल जैसे अन्य अन्तर-राष्ट्रीय मंचों में भाग लिया। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने अगस्त, 2012 में तेहरान में आयोजित किए गए XVI नाम शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। राष्ट्रमंडल महासचिव श्री कमलेश शर्मा ने फरवरी, 2013 में भारत की सरकारी यात्रा की।

भारत ने वर्ष 2012 में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सदस्य के रूप में सार्थक भूमिका निभाई और अन्य बातों के साथ-साथ सीरिया, सूडान-दक्षिणी सूडान, सोमालिया, फिलिस्तीन और अन्तर-राष्ट्रीय आतंकवाद, जलदस्युता और शांति सेना जैसे अन्य मुद्दों से संबंधित चर्चा में योगदान दिया। भारत ने राष्ट्र की संप्रभुता का सम्मान करने, विवादों के शांतिपूर्ण समाधान, सेना का अंतिम विकल्प के रूप में उपयोग करने और बाह्य सैनिक शांति से समाजों को पुनः निर्धारित करने के सभी प्रयासों का विरोध करने सहित सुरक्षा परिषद में अन्तर-राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा से संबंधित मुद्दों के बारे में भारतीय विदेश नीति के आधार भूत सिद्धान्तों पर आधारित संतुलित दृष्टिकोण अपनाया है। भारत ने आतंकवादी कार्रवाई से अन्तर-राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने से संबंधित परिषद के कार्यबल के अतिरिक्त आतंकवाद रोधी समिति और सोमालिया तथा इरीट्रिया से संबंधित समिति की सह-अध्यक्षता की। भारत ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के संकल्प जिसे संयुक्त राष्ट्र संघ में फिलिस्तीन के दर्जे को गैर-सदस्य पर्यवेक्षक देश के रूप में स्तरोन्नत करने के लिए नवम्बर, 2012 में स्वीकार किया गया था, को सह-प्रायोजित किया और इसमें सहायता प्रदान की। फिलिस्तीन राष्ट्रीय प्राधिकरण के अध्यक्ष, मोहम्मद अब्बास ने सितम्बर, 2012 में भारत की यात्रा की। संयुक्त राष्ट्र संघ सहित अन्य वैश्विक संस्थाओं में सुधार और इनका पुनर्गठन भारत के लिए महत्वपूर्ण प्राथमिकता बनी रही।

पड़ोसी देश

अफगानिस्तान: भारत-अफगानिस्तान संबंधों में वर्ष 2012-13 विशेष महत्वपूर्ण वर्ष रहा है और नवम्बर, 2012 में राष्ट्रपति हामिद करजई ने भारत की राजकीय यात्रा की तथा उच्च-स्तर के आदान-प्रदान कार्यक्रम आयोजित किए गए। रणनीतिक भागीदार परिषद की प्रथम बैठक दिनांक 01 मई, 2012 को आयोजित की गई। भारत ने दिनांक 28 जून, 2012 को अफगानिस्तान से संबंधित दिल्ली निवेश शिखर सम्मेलनों की मेजबानी की। अफगानिस्तान से संबंधित मुख्य अन्तर-राष्ट्रीय सम्मेलनों में भी भारत ने सक्रिय रूप से भाग लिया। अफगानिस्तान में भारत की सहायता से बिलियन अमरीकी डॉलर के सहायता कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं जिनमें सलमा बांध, संसद भवन का निर्माण, जैसी मुख्य परियोजनाएं और लघु विकास परियोजनाएं शामिल हैं जिनकी अफगानिस्तान की सरकार और जनता ने अत्यधिक सराहना की है।

बांग्लादेश: बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना की जनवरी, 2010 में भारत की यात्रा और प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की 01 सितम्बर, 2011 में बांग्लादेश की यात्रा के अनुसरण में वर्ष 2012-13 में दोनों देशों के मध्य करार, प्रोटोकॉल और सम्पन्न किए गए समझौता ज्ञापनों और वर्ष 2010 में संयुक्त विज्ञप्ति तथा वर्ष 2011 में संयुक्त वक्तव्य में सहमत पहल के कार्यान्वयन के बारे में द्विपक्षीय सहयोग पर विशेष ध्यान दिया गया।

भारत-बांग्लादेश बहु-स्तरीय सहयोग को उच्च-स्तरीय यात्राओं के आदान-प्रदान और विभिन्न संस्थागत तंत्र की बैठकें आयोजित करके बढ़ाया गया।

संयुक्त सांस्कृतिक विशेषज्ञ के संबंधों को और मजबूत करने के लिए दोनों देशों ने संयुक्त रूप से काजी नजरूल इस्लाम द्वारा बिद्रोही प्रकाशन की 90वीं वर्षगांठ समारोह शुरू किए और एक वर्ष तक चलने वाले रवीन्द्र नाथ टैगोर की 150वीं जयंती समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन किया।

भूटान: भारत-भूटान विशेष, प्रत्यक्ष और सौहार्द्रपूर्ण संबंधों को 64वें गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में महामहिम भूटान नरेश जिग्मे खेसर नामग्याल वांग्चुक और महारानी जेस्तन पेमा वांग्चुक को राजकीय यात्रा पर आमंत्रित करके और सुदृढ़ किया गया। महारानी मदर आणि सांग्ये चौडेन वांग्चुक ने जनवरी 2013 में भारत की यात्रा की और दिल्ली में आयोजित 'शांतिपूर्ण ड्रेगन की जमीन से वस्त्र कला' से संबंधित प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। भूटान के प्रधान मंत्री जिग्मे वाई थिन्ले ने सितम्बर में भारत की यात्रा की और विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद ने जनवरी, 2013 में भूटान की यात्रा की।

भारत भूटान का सबसे बड़ा व्यापार और विकास भागीदार बना रहा। दोनों देशों ने कृषि, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, शिक्षा, क्षमता-निर्माण, ऊर्जा, संस्कृति और अवसंरचना जैसे मुख्य सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रों और तीन पनबिजली परियोजनाओं अर्थात् लगभग 3000 मेगावाट की कुल संस्थापित क्षमता वाली पुनात्सांगछु-और मांगदेच्छु के निष्पादन के बारे में विकास सहयोग के लिए प्रत्यक्ष रूप से साथ-साथ कार्य करना जारी रखा।

चीन: भारत ने वर्ष 2005 में निर्धारित की गई रणनीतिक और सहयोगी भागीदार कार्य-संरचना के आधार पर चीन के साथ मैत्रीपूर्ण और सहयोगी संबंध बनाने की अपनी नीति को जारी रखा। दोनों देशों ने '21वीं शताब्दी के लिए साझा दृष्टिकोण' जिसमें क्षेत्रीय और अन्तर-राष्ट्रीय मुद्दों पर इनके हितों के मध्य सामंजस्य स्थापित करने और इन क्षेत्रों में साथ-मिलकर कार्य करने की इच्छा का उल्लेख किया गया है, को अपनाया है।

वर्ष 2012-13, जिसे "भारत-चीन मैत्री और सहयोग वर्ष" घोषित किया गया है, द्विपक्षीय संबंधों, बहुमुखी प्रगति का साक्षी रहा है। राष्ट्रपति हू जिन्ताओ ने मार्च, 2012 में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत की यात्रा की। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने दिनांक 8 जून, 2012 को लॉस-काबोस, मैक्सिको में जी-20 शिखर सम्मेलन के अवसर पर राष्ट्रपति हू जिन्ताओ से मुलाकात की और दिनांक 21 जून, 2012 को रियो डी जनेरियो, ब्राजील में रियो+20 शिखर सम्मेलन के अवसर पर चीन के प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ से मुलाकात की और इसके बाद दिनांक 19 नवम्बर, 2012 के 7वें पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन के अवसर पर नोम पेन्ह, कम्बोडिया में इनसे मुलाकात की। इस वर्ष दोनों देशों के विदेश मंत्रियों ने चार बैठकें कीं।

द्विपक्षीय वार्ता तंत्र के भाग के रूप में निम्नलिखित बैठकें आयोजित की गई आतंकवाद रोधी संयुक्त कार्य समूह की छठी बैठक; सीमा-पार नदियों से संबंधित विशेषज्ञ स्तरीय तंत्र की छठी बैठक; नीतिगत आयोजित वार्ता की पांचवीं बैठक; संयुक्त आर्थिक समूह की नौवीं बैठक; और रणनीतिक आर्थिक वार्ता की द्वितीय बैठक।

वर्ष के दौरान दोनों देशों के सशस्त्र बलों के मध्य आत्मविश्वास पैदा करने के उपाय किए गए। चीन के रक्षा मंत्री ने दिनांक 2 से 6 सितम्बर, 2012 तक भारत की राजकीय यात्रा की। दिनांक 12 जनवरी, 2013 को बीसेंग में पांचवी वार्षिक रक्षा वार्ता आयोजित की गई।

भारत और चीन रणनीतिक उद्देश्य के रूप में अपने सीमा विवाद का निष्पक्ष, विवेक सम्मत और दोनों देशों को स्वीकार्य तरीके से शांतिपूर्ण बातचीत से समाधान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। भारत-चीन सीमा मामलों से संबंधित परामर्श और संबंध के लिए कार्य तंत्र जिसकी व्यवस्था जनवरी, 2012 में सीमा विवाद के बारे में 15वें दौर की विशेष प्रतिनिधि बातचीत (एसआर) के दौरान की गई थी, ने इस वर्ष के दौरान दिनांक 29-30 नवम्बर, 2012 को नई दिल्ली में और दिनांक 5-6 मार्च, 2012 को बीजिंग में बैठकें आयोजित कीं। भारत के विशेष प्रतिनिधि और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने अपने समकक्ष के साथ अनौपचारिक विचार-विमर्श करने के लिए दिनांक -4 दिसम्बर, 2012 को चीन की यात्रा की।

मालदीव: इस अवधि के दौरान भारत और मालदीव अपने द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ करने का प्रयास करते रहे। राष्ट्रपति मोहम्मद वहीद ने मई, 2012 में भारत की राजकीय यात्रा की। सरकार ने मालदीव में बहुदलीय लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था से संबंधित अपने आउटरीच कार्यक्रम के भाग के रूप में मालदीव लोकतांत्रिक

दल के नेता श्री मोहम्मद नशीद, धिवेही रैय्थीथुंगे दल के नेता श्री अहमद तसमीन अली, और मालदीव के पूर्व राष्ट्रपति तथा प्रगतिशील दल के नेता श्री मोयून अब्दुल गय्यूम की भारत यात्राओं को सुकर बनाया।

म्यांमा: साझा ऐतिहासिक और एक समान सांस्कृतिक, धार्मिक तथा बौद्धिक सुदृढ़ संबंधों पर आधारित भारत और म्यांमा के बहुस्तरीय संबंधों को नई पहल और करारों से वर्ष 2012-13 के दौरान और मजबूत किया गया। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने मई, 2012 में म्यांमा की राजकीय यात्रा की जो पिछले 25 वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की प्रथम यात्रा थी। इसके बाद दिसम्बर, 2012 में विदेश मंत्री ने म्यांमा की यात्रा की और म्यांमा के राष्ट्रपति ने इसी माह में आसियान भारत स्मारक शिखर सम्मेलन के लिए भारत की द्विपक्षीय यात्राएं की। डॉ. एयुंग सैन सू की ने नवम्बर, 2012 में नई दिल्ली में नेहरू स्मारक व्याख्यान देने के लिए भारत की यात्रा की।

नेपाल: भारत और नेपाल के मध्य साझा और विशेष तथा बेमिसाल संबंध है जिनकी जड़ें साझा संस्कृति और खुली सीमा के आर-पार व्यक्ति-दर-व्यक्ति गहन संबंधों में निहित है। भारत ने नेपाल के साथ प्रत्यक्ष रूप से कार्य करना जारी रखा ताकि द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत बनाया जा सके। नेपाल के राष्ट्रपति श्री राम बरन यादव ने दिनांक 4 से 29 दिसम्बर, 2012 तक भारत की राजकीय यात्रा की।

इस वर्ष के दौरान आयोजित की गई द्विपक्षीय संस्थागत तंत्र बैठकों में सुरक्षा से संबंधित मुद्दों के बारे में भारत-नेपाल द्विपक्षीय परामर्शदाता समूह की 9वीं बैठक, नेपाल को भारत उत्पाद शुल्क वापस करने से संबंधित 8वीं महानिदेशक स्तरीय बातचीत, सप्तकोशी उच्च बांध बहु-उद्देश्यीय परियोजना और संकोशी स्टोरेज-व-परिवर्तन स्कीम से संबंधित संयुक्त विशेषज्ञ दल की 12वीं बैठक, सशस्त्र सीमा बल, भारत और सशस्त्र पुलिस बल नेपाल के मध्य प्रथम प्रतिनिधिमंडल स्तरीय बातचीत, सीमा प्रबंधन से संबंधित भारत-नेपाल संयुक्त कार्य समूह की 10वीं बैठक और जल संसाधन से संबंधित भारत-नेपाल संयुक्त समिति की 7वीं बैठक शामिल है।

भारत ने लघु विवाद परियोजनाओं, क्षमता-निर्माण और मानव संसाधन वृद्धि के माध्यम सहित विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए नेपाल को अपना सहयोग जारी रखा और सड़कों के निर्माण, एकीकृत चैक पोस्ट और सीमा-पार रेल सम्पर्क सहित अनेक परियोजनाएं पूरी की हैं। भारत नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार और विदेशी निवेश तथा पर्यटकों का सबसे बड़ा स्रोत बना रहा।

पाकिस्तान: सरकार ने पाकिस्तान के साथ अपने कार्यकलाप इस आधारभूत सिद्धान्त के आधार पर जारी रखें हैं कि पाकिस्तान में शांतिपूर्ण लोकतांत्रिक व्यवस्था होने से भारत को शांतिपूर्ण और सहयोगात्मक संबंध बनाने का सर्वोत्तम अवसर प्राप्त होता है। तथापि, नियंत्रण रेखा पर शांति बनाए रखना दोनों देशों के मध्य विश्वास पैदा करने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपाय (सी.बी.एम.) है। इस वर्ष व्यापार सामान्य करने और वीजा व्यवस्था के उदारीकरण

के क्षेत्रों में पाकिस्तान के साथ किए गए सरकारी प्रयासों में आशा की किरण दिखाई दी है। तथापि, दोनों देशों के संबंध केवल आतंकवाद और हिंसा से मुक्त वातावरण में ही फल-फूल सकते हैं। इसीलिए पाकिस्तान के नियंत्रण वाले क्षेत्र में आतंकवाद को समाप्त करना इस क्षेत्र के लिए और व्यापक स्तर पर विश्व के लिए महत्वपूर्ण है। भारत द्विपक्षीय वार्ता के माध्यम से पाकिस्तान के साथ सभी बकाया मुद्दों का समाधान करने के लिए प्रतिबद्ध बना रहा। सरकार अभी तक हासिल की गई प्रगति को ध्यान में रखकर दूरगामी दृष्टिकोण अपना रही है, इस संबंध में सावधान रहने की आवश्यकता है कि पाकिस्तान को अपनी जमीन पर मौजूद आतंकवादी समूहों के विरुद्ध तथा संबंधित अवसंरचना के बारे में विश्वसनीय कार्रवाई करनी है, और दोनों देशों के मध्य सहमत विश्वास पैदा करने वाले उपायों को ईमानदारी से कार्यान्वित करना है। भारतीय सैनिकों पर बर्बर हमला, जो नियंत्रण रेखा पर दिनांक 8 जनवरी, 2011 को किया गया, जैसी घटनाओं से इस प्रकार के प्रयासों के लिए चुनौती पैदा होती है।

श्रीलंका: भारत और श्रीलंका के संबंध बौद्धिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई आदान-प्रदान के पहले से मौजूद तत्वों पर आधारित है। श्रीलंका के राष्ट्रपति महेन्द्र राजपक्षे ने सितम्बर, 2012 में भारत की राजकीय यात्रा की। इस वर्ष के दौरान उच्च राजनीतिक स्तरों पर प्रत्यक्ष संबंध स्थापित किए गए और इन संबंधों को सार्थक वार्ता, बढ़ते व्यापार और निवेश, अवसंरचना विकास, शिक्षा, संस्कृति और रक्षा के क्षेत्रों में सहयोग तथा अन्तर-राष्ट्रीय हितों के मुख्य मुद्दों पर व्यापक आपसी समझ-बूझ से और सुदृढ़ किया गया। भारत की ओर से प्रदान की जाने वाली अत्यधिक विकास सहायता कार्यक्रम से आंतरिक रूप से विस्थापित व्यक्तियों के पुनर्वास और श्रीलंका के उत्तरी तथा पूर्वी क्षेत्रों में पुनर्निर्माण कार्य में योगदान मिला है। इस वर्ष के दौरान दिनांक 2 अक्टूबर, 2012 को उत्तरी और पूर्वी क्षेत्र में भवन निर्माण के लिए बड़ा सहायता कार्यक्रम शुरू किया गया है।

दक्षिण-पूर्व एशिया और प्रशान्त क्षेत्र

दक्षिण-पूर्वी एशिया और प्रशान्त क्षेत्र के देशों के साथ भारत के संबंध हाल ही के वर्षों में महत्वपूर्ण परिवर्तन के साक्ष्य रहे हैं। हमारी पूरब की ओर देखो नीति के विस्तार और इसे और सुदृढ़ करने से इस क्षेत्र में आर्थिक विकास और स्थिरता की तीव्र प्रवृत्ति देखने को मिली तथा एशिया की ओर सतत भू-राजनीतिक अंतरण से हमारे द्विपक्षीय तथा अलग-अलग देशों के साथ और क्षेत्रीय संबंधों को नई गति मिली है। अन्य देशों के साथ भारत के संबंधों का वर्गीकरण आपसी सद्भावना और सहयोग को सुदृढ़ करने की प्रबल इच्छा के आधार पर किया गया है; इन्हें बहु-स्तरीय तथा दूरगामी बनाया गया है; और इन्हें पांच देशों (आस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर और वियतनाम) के साथ तथा आसियान के साथ रणनीतिक आयाम प्रदान किया गया है।

दिनांक 20-21 दिसम्बर, 2012 को नई दिल्ली में आसियान-भारत स्मारक शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें दृष्टिकोण

दस्तावेज को रणनीतिक भागीदारी और क्षेत्रीय एकीकरण तथा कानेक्टिविटी के महत्त्व के रेखांकित करने की घोषणा करने के लिए स्वीकार किया गया था। इस स्मारक शिखर सम्मेलन में ब्रूनेई के सुल्तान, इंडोनेशिया और म्यांमा के राष्ट्रपति, फिलीपींस के उप-राष्ट्रपति और कम्बोडिया, लाओस पी.डी.आर., मलेशिया, सिंगापुर, थाइलैंड तथा वियतनाम के प्रधानमंत्रियों ने भाग लिया।

यह वर्ष सिंगापुर के प्रधानमंत्री ली हेसिन लूंग (जुलाई, 2012) और आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री जुलिया गिलार्ड (अक्टूबर, 2012) की द्विपक्षीय यात्राओं तथा फिजी के राष्ट्रपति (अगस्त, 2012) तथा फिजी के प्रधानमंत्री कमोडोर जोसाइया वारेक बेनीमारमा की निजी यात्राओं (अप्रैल और सितम्बर, 2012) का साक्ष्य रहा है। उप-राष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी ने वियतनाम की यात्रा (जनवरी, 2013) की और प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने नोम पेन्ह में आसियान-भारत शिखर सम्मेलन और पूर्व-एशिया शिखर सम्मेलन में (नवम्बर, 2012) भाग लिया। इस वर्ष के दौरान लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार की न्यूजीलैंड और टोंगा की यात्रा तथा सिंगापुर, थाइलैंड, इंडोनेशिया, वियतनाम और आसियान से संसदीय प्रतिनिधिमंडलों की यात्राओं से संसदीय आदान-प्रदान कार्यक्रम सुदृढ़ हुए हैं।

नियमित आदान-प्रदान और वार्ता कार्यक्रमों तथा ढोस सहयोग से सुरक्षा और रक्षा के क्षेत्रों के संबंधों को और सुदृढ़ किया गया है। मुख्य भागीदारों के साथ रक्षा सहयोग से संबंधित औपचारिक व्यवस्थाओं के अतिरिक्त, आतंकवाद रोधी, कानून प्रवर्तन मुद्दों, समुद्री सुरक्षा और मानवीय सहायता तथा आपदा सहायता (एच.ए.डी.आर) में प्रत्यक्ष सहयोग को जारी रखा गया।

दक्षिणी-पूर्व एशियाई देशों के साथ आर्थिक संबंध अब आपसी संबंधों के मुख्य आधार के रूप में उभरे हैं। माल के संबंध में भारत-आसियान मुक्त व्यापार करार कार्यान्वित किए जाने से आसियान देशों के साथ व्यापार वर्ष 2011-12 में लगभग 80 बिलियन डॉलर का होकर 37 प्रतिशत हो गया है। सेवाओं और निवेश में भारत-आसियान मुक्त व्यापार करार को सम्पन्न करने तथा क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी में भावी सक्रियता से सभी भागीदारों की ओर से आर्थिक सहयोग तथा क्षेत्रीय एकीकरण को और गति प्रदान करने के लिए व्यक्त की गई प्रतिबद्धता का पता चलता है। द्विपक्षीय व्यापक आर्थिक सहयोग करार के संबंध में थाइलैंड और इंडोनेशिया के साथ तथा मुक्त व्यापार करार के संबंध में आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के साथ बातचीत की जा रही है। इस क्षेत्र के साथ भारत के आपसी आर्थिक कार्यकलाप देश की विकास प्राथमिकता के लिए महत्वपूर्ण हो गए हैं क्योंकि दक्षिण-पूर्व एशिया देश मुख्य व्यापार तथा निवेश भागीदारों के रूप में उभरे हैं; मलेशिया, सिंगापुर और थाइलैंड अवसंरचना विकास के मुख्य खिलाड़ी हैं; और आस्ट्रेलिया तथा इंडोनेशिया संसाधनों और ऊर्जा सुरक्षा के दीर्घकालिक स्रोत हैं।

भारत ने कम्बोडिया, लाओस, म्यांमा और वियतनाम (सीएलएमवी) को उनकी विकास प्राथमिकताओं के अनुसार सामान्य हित के मुद्दों पर वार्ता करके तथा परियोजनाओं के लिए सहायता प्रदान करके इनके साथ अपने कार्यकलापों का विस्तार किया है। सड़क सम्पर्क

और उद्यमिता विकास, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी तथा अंग्रेजी भाषा के लिए संस्थाओं की स्थापना करने से संबंधित परियोजनाएं शुरू की गई। भारत ने सीमरीप, वाट्यू और माइसन जैसे सांस्कृतिक विरासत स्थलों के परिरक्षण तथा संरक्षण के लिए सहायता का विस्तार करना जारी रखा।

भारत और वियतनाम ने वर्ष 2012 को पूर्ण राजनयिक संबंधों की 40वीं वर्षगांठ मनाने के लिए और हमारी रणनीतिक भागीदारी की 5वीं वर्षगांठ मनाने के लिए मैत्री वर्ष के रूप में मनाया। भारत ने मेकांग गंगा सहयोग कार्य संरचना के भीतर सी.एम.एल.वी. के साथ अपने सहयोग का भी विस्तार किया।

भारत और प्रशान्त द्वीप राष्ट्रों के मध्य संबंधों को प्रशान्त द्वीप मंच (पी.आई.एफ.) और वर्ष 2012 में कुक द्वीप में आयोजित की गई उत्तर-मंच वार्ता भागीदार बैठक में भागीदारों के साथ नियमित तालमेल से और सुदृढ़ किया गया। भारत ने नी यू को राजनयिक मान्यता प्रदान की। लघु विकास परियोजनाओं में नई पहल, संस्थागत सहायता और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से प्रशान्त द्वीप के देशों के साथ सहयोग को और बेहतर बनाया गया।

पूर्व एशिया

जापान: इस वर्ष के दौरान जापान के साथ हमारे संबंधों में नए-नए कीर्तिमान स्थापित किए जाते रहे और इसे राजनयिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगांठ के रूप में मनाया गया। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने दिनांक 18 नवम्बर, 2012 को नोम पेन्ह में पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन के अवसर पर प्रधानमंत्री योशिहिको नोडा से मुलाकात की।

क्रास-कटिंग आर्थिक मुद्दों पर विचार-विमर्श करने के लिए अप्रैल, 2012 में एक नई वार्ता शुरू की गई जिसकी सह-अध्यक्षता विदेश मंत्री स्तर पर की गई। दोनों विदेश मंत्रियों के मध्य रणनीतिक वार्ता की छठी बैठक भी अप्रैल, 2012 में आयोजित की गई। इस बैठक के दौरान कार्यकरण स्तर पर दो नई वार्ताओं की घोषणा की गई; प्रथम समुद्री मामले वार्ता जिसकी प्रथम बैठक जनवरी, 2013 में नई दिल्ली में आयोजित की गई और द्वितीय साइबर सुरक्षा से संबंधित वार्ता जिसकी प्रथम बैठक दिनांक 5 नवम्बर, 2012 को टोक्यो में आयोजित की गई। जापान और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ वरिष्ठ अधिकारी स्तर की त्रिपक्षीय वार्ता की द्वितीय और तृतीय बैठक क्रमशः अप्रैल, 2012 में टोक्यो तथा अक्टूबर, 2012 में नई दिल्ली में आयोजित की गई।

भारत और जापान ने नवम्बर, 2012 में टोक्यो में दुर्लभ भू-उद्योग से संबंधित सहयोग ज्ञापन और सामाजिक सुरक्षा करार पर हस्ताक्षर किए। भारतीय रिजर्व बैंक और जापान बैंक ने दिसम्बर, 2012 में मुम्बई में द्विपक्षीय स्वैप प्रबंधन करार पर हस्ताक्षर किए।

जनवरी-नवम्बर, 2012 के मध्य द्विपक्षीय व्यापार बढ़कर 16 मिलियन अमरीकी डॉलर का हो गया है। भारत पिछले 9 वर्षों से जापानी विदेशी विकास सहायता का सबसे बड़ा लाभार्थी बना हुआ है। इस सहायता का उपयोग मुख्य रूप से समर्पित फ्रेट कोरिडोर-पश्चिम

और दिल्ली तथा चैन्नई में मेट्रो रेल परियोजनाओं सहित भारत के विभिन्न भागों में अवसंरचना परियोजनाओं के लिए किया जा रहा है। इस वर्ष के दौरान दिल्ली, मुम्बई औद्योगिक कॉरीडोर परियोजना जैसी अग्रणी परियोजनाएं तीव्र प्रगति की साक्षी रही हैं। जापान की तकनीकी सहायता से चैन्नई-बंगलूरू औद्योगिक कॉरीडोर के विकास के लिए प्रारम्भिक अध्ययन किया जा रहा है।

कोरिया गणराज्य (आरओके): भारत और कोरिया गणराज्य ने जनवरी, 2010 में स्थापित रणनीतिक भागीदारी में हिस्सेदारी की। भारत के राष्ट्रपति की वर्ष 2011 में राजकीय यात्रा से द्विपक्षीय संबंधों को गति प्रदान की गई और मार्च, 2012 में प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की सियोल की यात्रा से इन संबंधों को वर्ष 2012-13 में और सुदृढ़ किया गया। इस दौरान संयुक्त वक्तव्य में भावी सहयोग के खाके की रूपरेखा का उल्लेख किया गया।

वर्ष 2012 में उच्च स्तर के आदान-प्रदान कार्यक्रम में नवम्बर, 2012 में वित्त मंत्री श्री पी. चिदम्बरम की यात्रा, नवम्बर, 2012 में कोरिया गणराज्य के रक्षा मंत्री की यात्रा और दिसम्बर, 2012 में कोरिया गणराज्य के शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री तथा कोरिया गणराज्य के संस्कृति मंत्री की यात्राएं शामिल हैं।

व्यापार और निवेश कोरिया गणराज्य के साथ भारत की सक्रियता का सुदृढ़ आधार है और इन्हें संबंधों के वाहक के रूप में बनाए रखा गया। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की यात्रा के दौरान द्विपक्षीय व्यापार को वर्ष 2015 तक बढ़ाकर 44 बिलियन अमरीकी डॉलर करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया।

मंगोलिया: मंगोलिया के साथ संबंधों को दोनों देशों के मध्य व्यापक भागीदारी के तहत विकसित किया गया है। रक्षा और रणनीतिक संबंधों में भी प्रगति हासिल की गई। इस वर्ष रक्षा सहयोग से संबंधित संयुक्त कार्य समूह की बैठक आयोजित की गई। भारत और मंगोलिया ने वार्षिक द्विपक्षीय सैनिक अभ्यास में भाग लिया। दिसम्बर, 2012 में कार्य समूह की बैठक आयोजित करके सिविल परमाणु ऊर्जा सहयोग के क्षेत्र में प्रगति हासिल की गई। भारत ने मंगोलिया के साथ अपने आर्थिक और व्यापारिक संबंधों का विस्तार करना जारी रखा।

यूरेशिया

रूस: भारत और रूस ने वर्ष 2012 में अपने राजनयिक संबंधों की स्थापना के 65 वर्ष पूरे किए हैं। दोनों देशों ने रक्षा, आतंकवाद रोधी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, सिविल परमाणु ऊर्जा और हाइड्रोकार्बन जैसे क्षेत्रों में अपने संबंधों को और सुदृढ़ बनाने के लिए अपनी सक्रियता को जारी रखा। वर्ष 2012 में व्यापार स्तर में 30 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दर्ज की गई है। रूस भारत की विदेश नीति की एक मुख्य प्राथमिकता है। दोनों देशों के बीच परम्परा के रूप में उच्च स्तरीय आदान-प्रदान जारी रहे, जिनमें विशेष सुविधाओं तथा रणनीतिक संबंध स्थापित है। प्रधान मंत्री दामित्री मेदवेदेव ने मार्च, 2012 में चौथे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के लिए अपनी नई दिल्ली यात्रा के दौरान प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के साथ द्विपक्षीय

बैठक की। राष्ट्रपति पुतिन ने 13वें वार्षिक शिखर सम्मेलन के लिए 24 दिसम्बर, 2012 को भारत की यात्रा की।

सैन्य तकनीकी सहयोग तथा व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय एवं सांस्कृतिक सहयोग पर अन्तर सरकारी आयोगों की वार्षिक बैठक अक्टूबर, 2012 में नई दिल्ली में आयोजित की गई थी। मध्य एशिया एवं दक्षिण पश्चिम एशिया में अप्रवार सहित कई मुद्दों पर विदेश मंत्रालय स्तरीय विचार-विमर्श आयोजित किए गए थे। दोनों देशों ने 2015 तक द्विपक्षीय व्यापार में 2 बिलियन अमरीकी डॉलर का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण पहल की।

बेलारूस: बेलारूस के साथ संबंध प्रगाढ़ एवं मैत्रीपूर्ण बने रहे। बेलारूस भारत के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में एक सहभागी देश था। प्रधान मंत्री श्री मिरवाइल वी माइसनीकोविच ने एक बड़े व्यापार प्रतिनिधिमंडल के नेतृत्व के रूप में 3-14 नवम्बर, 2012 को भारत की यात्रा की। व्यापार में बढ़ोत्तरी जारी रही। इस वर्ष रक्षा से संबंधित अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में सहयोग विकसित हुआ।

उक्रेन: 9-12 दिसम्बर, 2012 को उक्रेन के राष्ट्रपति श्री विक्टर यानुकोविच की यात्रा के साथ ही उक्रेन के साथ द्विपक्षीय संबंधों में तेजी आई। रक्षा, असेैनिक परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, उर्वरक, कृषि तथा खनन सहित कई क्षेत्रों में सहयोग संवर्धित हुआ। चौथे अंतरसरकारी आयोग (आईजीसी) की बैठक उक्रेन में आयोजित की गई थी। यह वर्ष राजनयिक संबंधों की स्थापना की 20वीं वर्षगांठ के रूप में मनाया गया। कीव विश्वविद्यालय में भारतीय अध्ययन पर आईसीसीआर की अल्पावधिक पीठ स्थापित की गई थी। द्विपक्षीय व्यापार में विगत वर्ष की अपेक्षा 8.26 प्रतिशत वृद्धि हुई।

मध्य एशिया

इस क्षेत्र के साथ भारत के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक अध्यात्मिक तथा व्यापार संबंध हैं तथा पूरे महाद्वीप में यह पुराना सिल्क मार्ग है। भारत मध्य एशिया को अपने विस्तारित पड़ोस के रूप में मानता है। भारत ने इस क्षेत्र के देशों—तजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, उजबेकिस्तान, कजाकस्तान तथा किर्गीज गणराज्य के साथ अपने संबंधों को सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया है। बिश्केक, किर्गीज गणराज्य में आयोजित सर्वप्रथम भारत-मध्य एशिया वार्ता के दौरान भारत की एक नई नीति “मध्य एशिया का जुड़ाव” घोषणा की गई थी। इस नीति के कारकों में उच्च स्तरीय यात्राओं का आदान-प्रदान, रणनीतिक एवं सुरक्षा सहयोग की प्रगाढ़ता, ई-नेटवर्किंग के माध्यम से बहुपक्षीय संबंधों में तेजी लाना, थल एवं वायु संपर्क तथा लोगों के आपसी संबंधों में सुधार शामिल है।

ऊर्जा इस क्षेत्र में भारत की नीति का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बिन्दु है। तुर्कमेनिस्तान, अफगानिस्तान-पाकिस्तान-भारत (तापी) गैस पाईप लाईन परियोजना में प्रगति हुई है, जो पूरा होने के पश्चात ऊर्जा क्षेत्र में मध्य एशिया और दक्षिण एशिया से जुड़ जाएगी।

उज्बेकिस्तान तथा तुर्कमेनिस्तान के साथ भारत की रणनीतिक सहभागिता है। तजाकिस्तान के राष्ट्रपति ईनामअली रहमान ने 1-4

सितम्बर, 2012 का भारत की यात्रा की, उसी समय रणनीतिक सहभागिता की घोषणा की गई।

इस क्षेत्र के साथ समग्र व्यापार वर्ष 2010 में 500 मिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर 2012 में 670 मिलियन अमरीकी डॉलर हो गया था। भारत के नागर विमानन मंत्रालय ने इस क्षेत्र के 5 देशों में से प्रत्येक देश के लिए एक-एक उड़ान सहित प्रति सप्ताह 14 उड़ानों की अनुमति दे दी है, जिसे वायु सेवा सम्पर्क में सुधार होने की आशा है। इस समय कजाकस्तान, उज्बेकिस्तान तथा तुर्कमेनिस्तान भारत के लिए अपनी उड़ानों का संचालन कर रहे हैं।

कौकासस

आर्मेनिया, अजरबैजान तथा जार्जिया के साथ भारत के ऐतिहासिक संबंध हैं। द्विपक्षीय संबंध सुदृढ़ हुए हैं। इस क्षेत्र के साथ आर्थिक कार्यकलाप बढ़े हैं।

क्षमता निर्माण में आर्मेनिया के साथ सहयोग सुदृढ़ हुआ है। आईसीसीआर द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम के अन्तर्गत येरेवान राज्य भाषा वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाई जा रही है।

जार्जिया में भारतीय व्यापारी एवं विद्यार्थी समुदाय का कल्याण सुनिश्चित करने के उपाय किए गए हैं जिसमें पर्याप्त विस्तार हुआ है।

भारत-अजरबैजान अन्तर-सरकारी आयोग की दूसरी बैठक 16 अप्रैल, 2012 को बाकु में आयोजित की गई थी एक नयाचार एवं वायु सेवा करार पर पर हस्ताक्षर किए गए थे तथा व्यापार एवं आर्थिक संबंधों में विस्तार पर चर्चा की गई थी। आईसीसीआर हिंदी पीठ बाकु में भाषा विश्वविद्यालय में हिन्दी की शिक्षा प्रदान कर रही है।

खाड़ी एवं पश्चिम एशिया

वर्ष के दौरान खाड़ी देशों के साथ भारत के निकट संबंधों में तीव्र गतिशीलता आई है। 2010-11 में द्विपक्षीय व्यापार लगभग 130 बिलियन अमरीकी डॉलर था जो वर्ष 2011-12 में बढ़कर 167 बिलियन अमरीकी डॉलर तक पहुंच गया जिससे खाड़ी क्षेत्र विश्व में हमारा सबसे बड़ा व्यापार सहभागी बन गया। वर्ष 2011-12 के दौरान भारत की 60 प्रतिशत तेल एवं गैस आवश्यकताओं को खाड़ी क्षेत्र द्वारा पूरा किया गया था जो 2010-11 से 50 प्रतिशत अधिक था और जिसने भारत की सुरक्षा ऊर्जा में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। खाड़ी क्षेत्र में इस समय लगभग 6.4 मिलियन प्रवासी भारतीय हैं। खाड़ी देशों में शांति, सुरक्षा, प्रगति तथा समृद्धि में भारत का एक महत्वपूर्ण हित है।

कुछ अरब देशों में आंतरिक विकास से संबंधित हमारी नीति इस क्षेत्र के साथ हमारे चिरस्थायी संबंधों, लोकतंत्र के प्रति हमारी प्रतिबद्धता, स्वतन्त्र अभिव्यक्ति, मानवाधिकार, विधित नियमों तथा अन्य राज्यों के आंतरिक कार्यों में हस्तक्षेप न करने की हमारी नीति द्वारा भी निर्देशित है।

भारत, मिश्र, ट्यूनिशिया और लीबिया के परिवर्तन में अन्य सरकारों के साथ मिलकर कार्य कर रहा है तथा लीबिया ने हर संभव सहयोग प्रदान करने की तत्परता व्यक्त की है। सीरिया के संबंध में भारत हर प्रकार की हिंसा तथा मानवाधिकार के उल्लंघन की निंदा करता है। भारत सीरिया के लिए भूतपूर्व संयुक्त विशेष दूत, कोफी अन्नान की छः सूत्री योजना तथा सीरियाई संकट के समाधान के लिए जेनेवा विज्ञप्ति का समर्थन करता है।

अफ्रीका

अफ्रीका के साथ भारत के ऐतिहासिक एवं सभ्यतापरक संबंध हैं जो वर्ष 2012-13 के दौरान बुरुंडी के राष्ट्रपति, पीयरे कुरुंजीजा (सितंबर 2012 में) तथा मॉरीशस के राष्ट्रपति राजकेश्वर पुरयाग (जनवरी 2013 में) की यात्राओं सहित कई यात्राओं के आदान-प्रदान से और सुदृढ़ हुए। तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटील ने क्रमशः 29 अप्रैल से 1 मई, 2012 को सेशल्स तथा 1-7 मई 2012 को दक्षिण अफ्रीका की यात्रा की। सहयोग कार्यक्रमों, क्षमता निर्माण, मानव संसाधन विकास पहल, रियायती ऋण श्रृंखलाएं प्रदान करने तथा भारत-अफ्रीका व्यापार एवं निवेश संवर्धन के क्षेत्रों में भारत-अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलनों के निर्णयों के कार्यान्वयन के माध्यम से भारत-अफ्रीका सहभागिता और सुदृढ़ हुई है।

पश्चिम अफ्रीका के साथ भारत के संबंधों में एक-दूसरे के क्षमताओं के परामर्श, प्रारंभन तथा पारस्परिक मूल्यांकन शामिल है। एक समान ऐतिहासिक अनुभवों से पूरे विश्व के बारे में सामान्य दृष्टिकोण स्थापित हुआ है। वर्ष 2012-13 में पश्चिम अफ्रीकी देशों के साथ भारत के संबंधों में वृद्धि होती रही है। इस क्षेत्र के साथ भारत का व्यापार इस समय 25 बिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक है।

यूरोप

पश्चिम यूरोप

इस वर्ष के दौरान पश्चिम यूरोप के देशों के साथ भारत के संबंध और प्रगाढ़ तथा सुदृढ़ होते रहे। इस क्षेत्र के साथ भारत के साझा सामान्य लोकतन्त्र मूल्य, विधित नियम तथा नागरिक स्वतंत्रता है। भारत के संबंधों की प्रगाढ़ता उच्चस्तरीय संसदीय आदान-प्रदान के अलावा संघीय एवं राज्य स्तर पर सरकारों के बीच बारंबार उच्चस्तरीय आदान-प्रदान से देखी जा सकती है। भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती के बारे में पश्चिम यूरोप की मान्यता बढ़ रही है तथा भारत में निवेश करने के मामले में उनकी रुचि में वृद्धि हो रही है। इस क्षेत्र में स्वतंत्र ऋण संकट के बावजूद यूरोपीय संघ भारत का सबसे बड़ा व्यापार सहभागी बना रहा। संयुक्त आर्थिक आयोगों की बैठकों तथा व्यापारिक प्रतिनिधिमंडलों के आदान-प्रदान के माध्यमों से इस क्षेत्र के साथ वाणिज्यिक एवं आर्थिक संबंधों को सुदृढ़ बनाने के प्रयास जारी रहे। मुख्य पश्चिम यूरोपीय देशों के साथ विदेश मंत्री स्तर पर नियमित आदान-प्रदान इस क्षेत्र के साथ हमारे संबंधों को प्रगाढ़ता प्रदान करते रहे। इस क्षेत्र के देशों में स्थित भारतीय मिशनो में भारतीय संस्कृति की समृद्धि तथा विविधता को प्रस्तुत करने के लिए कई कार्यक्रम आयोजित किए।

दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगांठ के अवसर पर आईसीसीआर ने जर्मनी में 'भारतीय दिवस' आयोजित किया। स्पेन के किंग जुआन कार्लोस-1 ने 26 अक्टूबर 2012 को भारत की यात्रा की। फरवरी, 2013 में फ्रांस तथा युनाइटेड किंगडम के राष्ट्राध्यक्षों/शासनाध्यक्षों की भारत यात्राएं होने की संभावनाएं हैं।

मध्य यूरोप

मध्य एवं पूर्वी यूरोप के साथ-साथ नोर्डिक तथा बाल्टिक देशों के साथ भारत के संबंधों की प्रगाढ़ता एवं विविधीकरण की प्रक्रियाएं जारी रहीं। द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय स्तर पर राजनैतिक मुद्दों के संबंध में आपसी सूझबूझ अच्छी रही। व्यापार तथा निवेश के लिए कई गुणा अवसर प्रदान करने वाले विश्व की तेजी से बढ़ती हुई एक अर्थव्यवस्था के रूप में भारत की पहचान के संबंध में इन देशों ने द्विपक्षीय संबंधों के आर्थिक पहलुओं पर निरंतर ध्यान केन्द्रित किया। भारत ने आर्थिक सहयोग संवर्धित करते हुए इस समग्र रूप से नियमित राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक आदान-प्रदानों के माध्यम से इस क्षेत्र के साथ व्यापक नीतिगत विचार-विमर्श जारी रखे। अवधि के दौरान जुलाई 2012 में भारत की ओर से बोसनिया एवं हर्जोगोविना तथा मेसेडोनिया की सर्वप्रथम मंत्री स्तरीय यात्रा हुई।

संयुक्त राज्य अमरीका

संयुक्त राज्य अमरीका: भारत तथा अमरीका ने द्विपक्षीय, क्षेत्रीय तथा वैश्विक मुद्दों पर दृष्टिकोण की बढ़ती समानता सहित 2012 में द्विपक्षीय आदान-प्रदान को और प्रगाढ़ बनाने के प्रयास जारी रखे। इस वर्ष के दौरान राजनैतिक एवं रणनीतिक परामर्श, अधिक से अधिक व्यापार एवं निवेश तथा विविध क्षेत्रों में संवर्धित सहयोग देखने को मिला।

वर्ष 2012 में तत्कालीन विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा तथा अमरीकी विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन के बीच तीन बार बैठक हुई। उन्होंने 13 जून 2012 को वाशिंगटन डी सी में आयोजित तीसरी भारत-अमरीका रणनीतिक वार्ता की सहअध्यक्षता की, इससे पहले मई 2012 में विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन ने भारत की यात्रा की थी। आतंकवाद रोध पर संयुक्त कार्यसमूह की 13वीं बैठक जून 2012 में वाशिंगटन में आयोजित की गई थी। दोनों देशों ने कई प्रकार की नयी पहलें कीं - भारत-अमरीका उच्चतर शिक्षा वार्ता (जून 2012 वाशिंगटन में) तथा अफगानिस्तान पर वार्ता, वैश्विक ऊर्जा प्रवृत्ति तथा ऊर्जा सहयोग परियोजनाएं, इंटरनेट अभिशासन तथा निम्न कार्बन विकास। नई रणनीतिक साइबर वार्ता जुलाई 2012 में आयोजित की गई थी। रक्षा उत्पादन एवं विकास में संयुक्त सहयोग के नए चरण के संबंध में द्विपक्षीय राजनैतिक सैन्य वार्ता फिर से शुरू की गई थी तथा विचार-विमर्श शुरू किए गए थे।

इस वर्ष के दौरान भारतीय तथा अमरीकी वित्तीय संस्थाओं की सहभागिता से 2 बिलियन अमरीकी डॉलर की अवसंरचना ऋणकोष, 20 मिलियन अमरीकी डॉलर की राशि से पांच वर्षीय स्वच्छ ऊर्जा

कार्यक्रम शुरू हुआ तथा द्विपक्षीय असैनिक ऊर्जा करार 2008 को लागू करने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कई नई सहयोग पहलकदमियों के साथ-साथ शिकागो विश्वविद्यालय में एक विवेकानंद पीठ स्थापित की गई थी तथा ओबामा सिंह ज्ञान पहल के अंतर्गत प्रथम आठ अनुदानों के साथ-साथ संयुक्त ऊर्जा अनुसंधान एवं विकास केन्द्र के अंतर्गत प्रथम परिसंघ पुरस्कार विजेताओं की घोषणा की गई थी।

अमरीका 2011 में 100 बिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक वस्तु एवं सेवा व्यापार सहित भारत का सबसे बड़ा व्यापार सहभागी बना रहा।

कनाडा: नवंबर 2012 में कनाडा के प्रधान मंत्री स्टीफेन हार्पर की भारत की राजकीय यात्रा के साथ ही इस वर्ष के दौरान भारत-कनाडा संबंधों में प्रगाढ़ता आई। दोनों देशों के निजी क्षेत्रों के बीच सहयोग के लिए संस्थागत ढांचे को संवर्धित करके रणनीतिक वार्ता एवं ऊर्जा वार्ता का समुन्नयन करने की वचनबद्धता दी।

भारत तथा कनाडा ने आतंकवाद रोध, ऊर्जा, कृषि, उच्चतर शिक्षा, आधुनिक प्रौद्योगिकी, खनन तथा अवस्थापना विकास जैसे क्षेत्रों में सहयोग संवर्धित करने के लिए आपसी हित के प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों की पहचान की। वर्ष 2010 में हस्ताक्षरित परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग में सहयोग के लिए करार के अंतर्गत वाणिज्यिक सहयोग के लिए उचित व्यवस्था पर वार्ता संपन्न हुई।

वर्ष के दौरान सामाजिक सुरक्षा, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, रक्षा शोध एवं सड़क परिवहन जैसे क्षेत्रों में द्विपक्षीय करारों पर हस्ताक्षर किए गए थे।

दोनों देशों ने व्यापक आर्थिक सहभागिता करार तथा द्विपक्षीय निवेश संवर्धन एवं सुरक्षा करार पर वार्ता में निरन्तर प्रगति के माध्यम से व्यापार तथा निवेश संबंधों को सुदृढ़ बनाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की।

लातिन अमरीका तथा कैरिबिया

पिछले वर्ष लातिन अमरीका तथा कैरिबियाई क्षेत्र के साथ भारत के संबंधों में उच्चस्तरीय वार्ताओं के आदान-प्रदान तथा सभी स्तरों पर संवर्धित विचार-विमर्श के माध्यम से विकास हुआ। कैरिबियाई क्षेत्र के साथ भारत के सशक्त ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संबंध हैं जिसमें बड़ी संख्या में भारतीय लोग मौजूद हैं। वर्ष के दौरान इस क्षेत्र से कई महत्वपूर्ण यात्राएं हुईं। जिसमें मार्च 2012 में ब्राजील की राष्ट्रपति सुश्री डिल्मा रोसेफ, मई 2012 में प्राग्वे के राष्ट्रपति फर्नेण्डो आर्मिण्डो ल्यूगो मेंडिज, अक्टूबर 2012 में गुआना के प्रधानमंत्री सेमुअल हिन्ड्स तथा कोस्टारिका के उपराष्ट्रपति रिका लुईस लिबरमैन जिसबर्ग की यात्राएं शामिल हैं। एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम में अगस्त 2012 में नई दिल्ली में आयोजित त्रिपक्षीय भारत-सिलैक विदेश मंत्री स्तरीय प्रथम बैठक के आयोजन के साथ ही इस क्षेत्र के साथ भारत के संबंध संस्थागत बने।

वर्ष 2012 में लातिन अमरीकी क्षेत्र के साथ द्विपक्षीय व्यापार 30 बिलियन डॉलर से अधिक होने की संभावना है तथा इस क्षेत्र में हमारा संचयी निवेश लगभग 16 बिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक होगा। यह क्षेत्र भारत की ऊर्जा सुरक्षा तथा खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है तथा हमारे प्रगतिशील उद्योग के लिए कच्चे माल का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। भारत ने अपने दक्षिण-दक्षिण सहयोग की प्रतिबद्धता के भाग के रूप में आईटीईसी कार्यक्रम तथा आईटी केंद्रों के माध्यम से इस क्षेत्र के कई विकासशील देशों की सहायता की है।

संयुक्त राष्ट्र संघ तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठन

वर्ष 2011-12 के दौरान संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने भारत की सदस्यता के कारण एक बड़े स्तर पर वर्ष 2012 संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत के लिए गहन राजनयिक कार्यकलापों तथा महत्वपूर्ण उपलब्धियों की अवधि है। मध्य पूर्व तथा उत्तरी अफ्रीकी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भौगोलिक राजनैतिक घटनाक्रमों के कारण तथा इसके साथ-साथ वैश्विक अर्थव्यवस्था में निरंतर संकट के कारण सुरक्षा परिषद में काफी संवर्धित कार्यकलाप देखने को मिले। परिषद के एक सदस्य के रूप में भारत ने रचनात्मक तथा सकारात्मक भूमिका निभाई तथा सीरिया, सूडान-दक्षिण सूडान, सोमालिया, फिलिस्तीन तथा अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, जलदस्युता तथा शांति स्थापना जैसे मुद्दों पर अत्यधिक महत्वपूर्ण तथा विकासशील बहस को सही स्वरूप देने में समर्थ रहा। भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने राज्य की सम्प्रभुता के सम्मान, विवादों के शांतिपूर्ण समाधान, अंतिम उपाय के रूप में बल प्रयोग तथा बाहर से सैन्य बलों से समाजों की पुर्नव्यवस्था जैसे भारतीय विदेश नीति के मूल सिद्धांतों के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के आधार पर परिषद ने संतुलित दृष्टिकोण अपनाया।

भारत ने सुरक्षा परिषद में अपने कार्यकाल के दौरान आतंकवादी गतिविधियों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा को खतरे से संबंधित परिषद के कार्य समूह के अलावा आतंकवाद निरोधी समिति तथा सोमालिया एवं इरिटीरिया से संबंधित समिति की अध्यक्षता की। आतंकवाद रोधी समिति के अध्यक्ष के रूप में भारत आतंकवाद निरोधी वैश्विक प्रयासों को नवीकृत गतिशीलता प्रदान करने में सफल रहा। संयुक्त राष्ट्र संघ में आतंकवाद के लिए शुन्य सहनशीलता के संबंध में अपने प्रयासों पर समर्थन जुटाते हुए भारत ने नवम्बर 2012 में परिषद की दूसरी सदस्यता के दौरान आतंकवाद वित्तपोषण के दमन के संबंध में सुरक्षा परिषद में एक विशेष बैठक आयोजित की। भारत ने नवम्बर 2012 में समुद्री जलदस्युता पर परिषद में एक खुली बहस भी आयोजित की जिसके परिणामस्वरूप अध्यक्ष की ओर से एक वक्तव्य पारित किया गया जिसमें जलदस्युता के दमन के लिए एक व्यापक प्रतिक्रिया की आवश्यकता पर जोर दिया गया तथा सभी राज्यों से यह आह्वान किया गया कि वे सूचना तथा खूफिया सूचनाओं के आदान-प्रदान सहित सभी माध्यमों से बंदियों की शीघ्र रिहाई के लिए सहयोग करें। संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना परिचालनों के सबसे बड़े तथा सर्वाधिक स्थाई सहायक के रूप में भारत ने संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना मिशनों के लिए अधिदेश तैयार करने के

लिए निर्णय लेने की प्रक्रिया में टुकड़ियां भेजने वाले देशों को अधिक से अधिक शामिल करने की मांग पर अपना समर्थन दिया। वर्ष 2012 के दौरान परिषद में भारत की भूमिका सहित आर्थिक एवं सुरक्षा दोनों की दृष्टि से वैश्विक शासन में भारत के बढ़ते महत्व की पुष्टि हुई तथा इससे संयुक्त राष्ट्र चार्टर में निर्धारित मूल्यों तथा सिद्धांतों के चैंपियन के रूप में भारत की प्रतिष्ठा भी बढ़ी।

तत्कालीन विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा ने 7 सितंबर से 2 अक्टूबर 2012 के दौरान न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के 67वें सत्र की आम बहस में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत ने फिलिपीन्स को संयुक्त राष्ट्र में एक गैर-पर्यवेक्षक सदस्य राष्ट्र के रूप में दर्जा दिलाने के लिए नवम्बर 2012 में पारित एक ऐतिहासिक संकल्प का सह-प्रायोजन तथा समर्थन किया। भारत ने जी-4 तथा एल-69 समूहों के समान विचारधारा वाले देशों के सहयोग से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के विस्तार एवं शीघ्र सुधार के लिए अपने प्रयास भी जारी रखे। संयुक्त राष्ट्र महासचिव श्री बान की मून ने 27-29 अप्रैल 2012 को भारत की सरकारी यात्रा की।

भारत ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन तथा राष्ट्रमंडल जैसे अन्य अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अग्रणी भूमिका भी निभाई। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने अगस्त 2012 में तेहरान में आयोजित 16वें गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। राष्ट्रमंडल महासचिव श्री कमलेश शर्मा ने फरवरी 2013 में भारत की सरकारी यात्रा की। भारत ने सितंबर-दिसम्बर 2012 के दौरान सोमालिया के अपतटीय क्षेत्रों में जलदस्युता पर संपर्क समूहों सहित 1 दिसम्बर 2012 को न्यूयार्क में आयोजित इस संपर्क समूह के पूर्ण सत्र की अध्यक्षता की जिसमें एक विज्ञप्ति पारित की जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ जलदस्युताओं द्वारा बंधक बनाए गए व्यक्तियों के कल्याण के लिए अधिक से अधिक उपाय करने की आवश्यकता दर्शायी गई। भारत ने लोकतंत्र समुदाय, बाली लोकतंत्र मंच के कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा संयुक्त राष्ट्र लोकतंत्र कोष और संघर्ष समाधान एवं संबंधित मुद्दों पर कार्यवाही करने वाले संयुक्त राष्ट्र राजनैतिक कार्य विभाग को अपना स्वैच्छिक योगदान भी दिया।

वर्ष 2012 संयुक्त राष्ट्र व्यवस्था में भारतीय मौजूदगी को सुदृढ़ बनाने की दृष्टि से महत्वपूर्ण था। डॉ. न्यायमूर्ति दलबीर भंडारी को अप्रैल 2012 में भारी बहुमत से अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के लिए निर्वाचित किया गया। जलमग्न तट की सीमाओं पर समिति में भारत द्वारा नामित डॉ. एस राजन को जून 2012 में पुनर्निर्वाचित किया गया था। भारत को संयुक्त राष्ट्र हैबिटेट, सतत विकास आयोग एवं अंतर्राष्ट्रीय समुद्र तल प्राधिकरण की शासी परिषद के लिए भी निर्वाचित किया गया था। सुश्री इशिता राय को जून 2012 में इसका महासचिव चुना गया था। भारत को अक्टूबर 2012 में प्रशासन परिषद तथा डाक संचालन परिषद अर्थात् सार्वभौमिक डाक संघ परिषदों के लिए भी पुनर्निर्वाचित किया गया था। इस समय भारत सभी मुख्य संयुक्त राष्ट्र निकायों- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, मानवाधिकार परिषद, आर्थिक एवं सामाजिक परिषद तथा अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय का भी सदस्य है।

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद कार्य समूह के संबंध में 24 मई 2012 को जेनेवा में आयोजित द्वितीय सार्वभौमिक आवधिक समीक्षा में लिए भारत की राष्ट्रीय रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व श्री गुलाम ई. वहानवती, भारत के महान्यायवादी द्वारा किया था। शरणार्थियों के संबंध में संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त ने भारत तथा यूएनएचसीआर के बीच चौथे वार्षिक खुले द्विपक्षीय परामर्श के लिए 19-20 दिसम्बर 2012 को भारत की यात्रा की।

यूनेस्को तथा भारत के बीच 10 जुलाई 2012 को पेरिस में महात्मा गांधी शांति एवं सतत विकास संस्थान (एमजीआईईपी) की स्थापना के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे तथा महात्मा गांधी शांति एवं सतत विकास संस्थान, जो कि एशिया प्रशांत संस्थान में श्रेणी एक का यूनेस्को संस्थान है, का उद्घाटन नवम्बर 2012 में किया गया था। यूनेस्को के महानिदेशक इरीना बोकोवा ने 9-13 नवम्बर 2012 को भारत की यात्रा की।

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 20-22 जून 2012 को रियो डी जेनेरियो में आयोजित संयुक्त राष्ट्र सतत विकास सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। इस सम्मेलन में सतत विकास लक्ष्यों का सैट तैयार करने के लिए प्रक्रिया शुरू करने का निर्णय लिया गया।

जैव सुरक्षा पर कार्टजिना प्रोटोकाल के पक्षकारों की छठी बैठक के बाद भारत ने 8-19 अक्टूबर 2012 को हैदराबाद में आयोजित जैव विज्ञान विविधता (सीबीडी) पर अभिसमय में पक्षकारों के सम्मेलन (सीओपी-1) की 11वीं बैठक की मेजबानी की।

आईपीयू तथा भारतीय संसद ने 3-4 अक्टूबर 2012 के दौरान नई दिल्ली में संयुक्त रूप से संसद की महिला अध्यक्षा की सातवीं बैठक का आयोजन किया।

दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संघ (सार्क)

वर्ष 2012-13 के दौरान भारत ने सार्क देशों के बीच क्षेत्रीय आदान-प्रदान के उत्प्रेरक के रूप में पूर्व सक्रिय दृष्टिकोण जारी रखा। इसने सार्क को प्रेरित करने वाले सहयोग, कृषि, सामाजिक विकास, पर्यावरण तथा सुरक्षा जैसे लक्ष्यों के अनूकूल विषयों पर ध्यान केन्द्रित किया। सार्क के महासचिव राजदूत अहमद सलीम ने अप्रैल, 2012 में प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह से मुलाकात की तथा विदेश सचिव के साथ बैठक की। भारत ने स्वास्थ्य तथा गृह मामलों के क्षेत्र में मंत्रालय स्तरीय बैठकों में भाग लिया। भारत ने नवम्बर, 2012 में इस्लामाबाद में आयोजित सार्क स्पीकर एवं सांसद संघ मंत्रालयी सम्मेलन में भाग लिया। भारत ने सार्क सांस्कृतिक उत्सव की मेजबानी की, जिसमें दक्षिण एशियाई बैंड उत्सव, सार्क कलाकारों द्वारा चित्रकला प्रदर्शनी शामिल थे तथा यह मार्च, 2013 में सार्क साहित्य महोत्सव की मेजबानी करेगा, भारत ने कृषि, पर्यावरण, स्वास्थ्य, सुरक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, चुनाव प्रबन्ध तथा तस्करी रोध जैसे क्षेत्रों में कई प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के अलावा सार्क के भीतर दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय, सार्क विकास को सार्क खाद्य बैंक जैसी कई मुख्य

परियोजनाओं तथा सामाजिक-आर्थिक विकास से संबंधित मध्य परियोजनाओं का संचालन भी जारी रखा। भारत सार्क तथा इससे संबंधित अन्य प्रक्रियाओं के समर्थन में जुटा रहा। इसने बुनियादी विकास पर केन्द्रित कई क्षेत्रीय तथा उप-क्षेत्रीय परियोजनाओं के कार्यान्वयन में तेजी लाने का कार्य जारी रखा।

निरस्त्रीकरण तथा अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा मामले

भारत ने द्विपक्षीय स्तर सहित कई संबंधित मंचों पर विशेष रूप से परमाणु निरस्त्रीकरण के प्राथमिकता प्राप्त मुद्दों पर अपनी नीतियों का कार्यान्वयन जारी रखा तथा बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्थाओं के साथ अपनी वार्ता जारी रखी। भारत ने सशस्त्र व्यापार संधि पर राजनयिक सम्मेलन में भाग लिया। भारत ने आसियान क्षेत्रीय मंच की बैठकों तथा एशिया ने विश्वास निर्माण तथा आदान-प्रदान सम्मेलन की बैठकों में सक्रिय रूप से भाग लिया। इस मंत्रालय ने भारत के निर्यात नियंत्रण नियमों तथा सामूहिक विनाश शस्त्र अधिनियम, 2005 के कार्यान्वयन के संबंध में अपने दायित्वों का निर्वहन जारी रखा। भारत ने "परमाणु सुरक्षा के मामलों में नई सहक्रिया के निर्माण पर 1540 कार्यशाला" का आयोजन किया। भारतीय विश्व कार्य परिषद ने वैश्विक परमाणु निरस्त्रीकरण पर राष्ट्रीय आउटरीच सम्मेलन आयोजित किया।

बहुपक्षीय आर्थिक संबंध

भारत ने मार्च, 2012 में चौथे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की मेजबानी की। इस शिखर सम्मेलन में समकालिक चुनौतियों का सामना करने के लिए वैश्विक प्रयासों में रचनात्मक योगदान देने के लिए ब्रिक्स देशों की क्षमताओं तथा सामूहिक इच्छा पर जोर दिया गया।

प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने जून, 2012 में लॉस काबोस, मैक्सिको में जी 20 सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की अतिरिक्त शाखा के लिए भारत द्वारा 10 मिलियन अमरीकी डॉलर के योगदान की घोषणा का स्वागत किया गया।

नवम्बर, 2012 में गुडगाँव में क्षेत्रीय सहयोग पर हिन्द महासागर रिम संघ के मंत्रिपरिषद की 12वीं बैठक में भारत की अध्यक्षता में भारतीय हिंद महासागर में इस शीर्ष संगठन के बढ़ते प्रभाव की अभिव्यक्ति की। कोमरोस संघ ने एक पूर्णकालिक सदस्य के रूप में आईओआर-एआरसी की सदस्यता प्राप्त की तथा यूएसए इस संघ का वार्ता सहभागी बना।

तत्कालीन विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा ने अप्रैल, 2012 में मास्को में आयोजित भारत तथा चीन के विदेश मंत्रियों की 11वीं बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। ब्रिक्स तथा जी 15 विदेश मंत्रियों ने सितम्बर, 2012 में न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के अवसर पर बैठक की। विदेश राज्य मंत्री श्री ई. अहमद ने फरवरी 2012 में जी-20 विदेश मंत्रियों की बैठक में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

दक्षिण पूर्वी एशिया राष्ट्र संघ (आसियान)

दक्षिण पूर्वी एशियाई राष्ट्र संघ (आसियान) 21-22 दिसम्बर, 2012 में नई दिल्ली में स्मारक शिखर सम्मेलन में आसियान के साथ भारत की वार्ता सहभागिता के 20 वर्ष तथा शिखर सम्मेलन स्तरीय वार्ता के 10 वर्ष मनाने के लिए स्मारक समारोह का आयोजन किया जिसमें रणनीतिक सहभागिता पर संबंधों का समुनयन हुआ। सेवाओं तथा निवेश के क्षेत्र में आसियान भारत एफटीए पर वार्ता सम्पन्न हुई। व्यापार की यात्रा में 37 प्रतिशत वृद्धि हुई, जोकि 70 बिलियन अमरीकी डॉलर का लक्ष्य पार करके 79.3 बिलियन अमरीकी पहुँच गया। वर्ष के दौरान 19 नवम्बर, 2012 को नोम पेन्ह में 10वें आसियान भारतीय शिखर सम्मेलन तथा 11 जुलाई, 2012 को नोम पेन्ह में विदेश मंत्री स्तरीय बैठक तथा संबंधित वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक आयोजित की गई थी। पर्यटन, कृषि तथा व्यापार के क्षेत्र में मंत्रालय स्तरीय परामर्श जारी रहे तथा पर्यावरण तथा नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में नई मंत्रिस्तरीय वार्ता प्रारम्भ की गई तथा परिवहन सम्पर्क एवं एस एम ई के क्षेत्र में अधिकारी स्तरीय वार्ता प्रारम्भ की गई, आंतरिक एजेंसियों की सर्वप्रथम बैठक, जलवायु परिवर्तन तथा कृषि एवं नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में प्रौद्योगिकियों के न्यूनीकरण एवं अनुकूलन पर कार्यशाला आयोजित की गई थी। मीडिया आदान-प्रदान कार्यक्रम, के संस्थाकरण, संवर्धित विद्यार्थी आदान-प्रदान कार्यक्रम, वार्षिक राजनयिक प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा किसान आदान-प्रदान कार्यक्रम के प्रारम्भ के साथ लोगों के आपसी सम्पर्क पर प्राथमिकता जारी रखी। पूरे एसियान देशों तथा भारत के लोगों ने स्मारक शिखर सम्मेलन से पहले मुख्य कार्यक्रम अर्थात् दूसरी आसियान कार रैली तथा आईएनएस सुदर्शनी द्वारा आसियान देशों के नौवहन अभियान के साथ-साथ व्यापार कार्यक्रमों, पर्यटन रोड शो तथा सांस्कृतिक प्रस्तुतीकरण में भाग लिया। दिल्ली वार्ता IV एवं V तथा आसियान भारत विचार केन्द्रों के नेटवर्क के माध्यम से ट्रैक वन एण्ड हाफ वार्तालाप जारी रहे।

मैकांग गंगा सहयोग पर छठी मंत्रालयी बैठक 4 सितम्बर 2012 को नई दिल्ली में आयोजित की गई थी। भारत ने भारत सीएलएमवी तीव्र प्रभाव परियोजना चक्रानुक्रम कोष के लिए वार्षिक रूप से एक मिलियन अमरीकी डॉलर की राशि के लिए वचनबद्धता की घोषणा की। ढाका में बिम्स्टैक के स्थायी कार्यालय की स्थापना के लिए आगे की कार्रवाई की गई।

भारत में 20 नवम्बर 2012 को नोम पेन्ह में आयोजित 7वें पूर्व एशिया सम्मेलन में भाग लिया जिससे पहले 12 जुलाई, 2012 को पूर्व एशिया विदेश मंत्रियों की दूसरी बैठक तथा संबंधित वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक आयोजित की गई थी। भारत ने 8-9 नवम्बर 2012 को भूकंप जोखिम प्रबन्धन के लिए क्षेत्रीय संरचना के निर्माण के संबंध में पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन-भारत कार्यशाला 2012 की मेजबानी की। भारत ने 5 जुलाई 2012 को योगयाकार्ता, इंडोनेशिया में आयोजित पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन के शिक्षा मंत्रियों की पहली बैठक, 13 सितम्बर, 2012 को नोम पेन्ह, कंबोडिया में आयोजित पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन के ऊर्जा मंत्रियों की छठी बैठक तथा 13 अक्टूबर 2012 को तोक्यो, जापान में आयोजित पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन के वित्त मंत्रियों की औपचारिक बैठक में भाग लिया।

भारत ने 11-13 अक्टूबर 2012 को नई दिल्ली में आयोजित एशिया यूरोप संघ के शासी बोर्ड की 9वीं बैठक की मेजबानी की तथा 5-6 नवम्बर, 2012 को विनशेन, लाओ पीडीआर तथा पूरे वर्ष में संबंधित आसेम बैठकों के साथ-साथ 18-19 सितम्बर, 2012 को योग्याकार्ता, इंडोनेशिया में आयोजित आसेम सांस्कृतिक मंत्रियों की पांचवीं बैठक तथा 14-15 अक्टूबर, 2012 को बैंकाक, थाईलैंड में आयोजित आसेम वित्त मंत्रियों की 10वीं बैठक में भाग लिया।

विकास सहयोग

भारत की विदेश नीति में विकास सहयोग को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। हाल ही के वर्षों में भौगोलिक प्रसार तथा क्षेत्रीय व्याप्ति दोनों की दृष्टि से विदेशों में भारतीय विकास कार्यक्रमों में पर्याप्त विस्तार हुआ है। इनमें ऋण श्रृंखला, अनुदान सहायता, तकनीकी परामर्श दायिता, आपदा राहत, मानवीय सहायता, शैक्षिक छात्रवृत्ति तथा अल्पावधिक असैनिक एवं सैन्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों सहित विभिन्न प्रकार के क्षमता निर्माण कार्यक्रम शामिल हैं।

जनवरी, 2012 में विदेश मंत्रालय में भारतीय विकासपूर्ण परियोजनाओं की परिकल्पना प्रारंभ, कार्यान्वयन तथा शुरुआत के चरणों में उनका सक्षम कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए विकास सहभागिता प्रशासन स्थापित करने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल की थी।

अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, म्यामां, नेपाल तथा श्रीलंका में अवसंरचना, जलविद्युत, विद्युतपारेषण, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा मेजबान सरकार द्वारा अपने विकास के लिए प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों के रूप में अभिज्ञात क्षेत्रों में कई विकास परियोजनाएं कार्यान्वयनाधीन हैं। भारत के पड़ोसी देशों के साथ सीमा पर संपर्क को सुदृढ़ बनाने की पहल पर प्रगति हो रही है। दक्षिण पूर्व एशिया, मध्य एशिया, अफ्रीका तथा लातिन अमरीका में पुरातत्व संरक्षण सूचना एवं कंप्यूटर प्रौद्योगिकी तथा लघु एवं मध्य उद्यमों के क्षेत्र में द्विपक्षीय परियोजनाएं शुरू की जा रही हैं।

हाल ही के वर्षों में भारत की विकास सहायता का मुख्य कारक अन्य विकासशील देशों को रियायती दरों पर ऋण श्रृंखला प्रदान करना रहा है।

वर्ष 2012-13 के दौरान 161 विकासशील देशों से नामितों के लिए भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आईटैक) कार्यक्रम, अफ्रीका कार्यक्रम के लिए विशेष राष्ट्रमंडल सहायता (एससीएएपी) तथा कोलम्बो योजना की तकनीकी सहयोग स्कीम (टीसीएस) के अंतर्गत 8500 से अधिक असैनिक प्रशिक्षण स्लॉट प्रदान किए गए थे। कई सहभागी देशों से लगभग 1500 रक्षा कार्मिकों को भारत के विभिन्न रक्षा संस्थानों में प्रशिक्षण दिया गया था। कई विकासशील देशों में क्षमता निर्माण के लिए असैनिक तथा रक्षा विशेषज्ञ प्रतिनियुक्त किए गए हैं।

निवेश तथा प्रौद्योगिकी संवर्धन (आईटीपी)

निवेश तथा प्रौद्योगिकी संवर्धन (आईटीपी) राजनयिक रणनीति को एक निश्चित दिशा और फोकस प्रदान करता है। यह मंत्रालय

विशेषज्ञ संवर्धन परिषदों, चैम्बर्स ऑफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्री, उद्योग संघों और सरकारी विभागों/मंत्रालयों के साथ व्यापार निवेश तथा प्रौद्योगिकी प्राप्ति के साझा उद्देश्यों को बढ़ावा देने के लिए नियमित संपर्क करता है। यह मंत्रालय भारत के अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों को आगे बढ़ाने के लिए अन्य महत्वपूर्ण सरकारी मंत्रालय/विभागों के साथ मिलकर नीतियां बनाने तथा लागू करने में सक्रिय भूमिका निभाता है।

यह मंत्रालय देश में निवेश के माहौल पर सूचना प्रदान करने, संवर्धन संबंधी कार्यकलापों के माध्यम से व्यवसाय के नए अवसरों की पहचान करने और कापीरेट क्षेत्र की प्रत्याशाओं पर प्रभावी प्रतिक्रिया करने में सक्षम बनाने के लिए विदेश स्थित भारतीय मिशनो को सहायता प्रदान करता है। भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) द्वारा तैयार किए गए कार्यनीति दस्तावेज द्वारा पहचान के अनुसार लैटिन अमरीकी, अफ्रीकी और एशिया प्रशांत क्षेत्रों में महत्वपूर्ण बाजारों के महत्व पर विचार करते हुए निर्यात कार्यनीति के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों को वृहत्तर महत्व प्रदान किया गया है।

मंत्रालय द्वारा शुरू किए गए वेबसाइट — इंडिया इन बिजनेस (<http://www.indiainbusiness.nic.in>) में भारत में निवेश अवसरों, क्षेत्रीय गतिविधियों, कानूनी तथा विनियामक फ्रेमवर्क पर सूचना प्रदान की जाती है। निवेशकों के पूछताछ पर प्रत्युत्तर देकर व्यावसायिक संबंध बनाए जाते हैं और मिशनो को बैकअप सहायता दी जाती है और इसे नियमित रूप से अपडेट किया जाता है।

‘इंडिया इन बिजनेस’ नामक एक सूचना पुस्तिका तथा मार्गदर्शिका वैश्विक समुदाय को भारत द्वारा प्रस्तावित निवेश के अवसरों तथा भारत की आर्थिक तथा प्रभावी व्यापार की समीक्षा उपलब्ध कराने के दृष्टिकोण से निकाली जाती है।

यह मंत्रालय निवेश के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकारों के साथ सक्रिय रूप से संपर्क बनाए रखता है। इस मंत्रालय द्वारा व्यापार तथा निवेश की बाधाओं/विवादों और अन्य द्विपक्षीय लंबित मुद्दों को सुलझाया जाता है।

ऊर्जा सुरक्षा

ऊर्जा सुरक्षा भारत के लिए महत्वपूर्ण गैर-परंपरागत सुरक्षा मुद्दों में से एक मुद्दे के रूप में उभरकर सामने आया है और यह इसकी अंतर्राष्ट्रीय कुटनीति का एक महत्वपूर्ण घटक है। वर्ष 2012 के दौरान संयुक्त राज्य, जापान, आस्ट्रेलिया तथा यूरोपिय संघ के साथ संरचनात्मक ऊर्जा वार्ता की गई। भारत तथा कनाडा ने कनाडा के प्रधान मंत्री की यात्रा के दौरान मंत्रियों के स्तर पर वार्ता करने का निर्णय किया। भारत ने अंतर्राष्ट्रीय पुनर्नवीकरण ऊर्जा एजेंसी (आईआरईएनए), इंटरनेशनल पार्टनरशीप फॉर एनर्जी इफिसीएन्सी एण्ड कापीरेशन (आईपीईसी), द क्लीन एनर्जी मिनिस्टीरियल (सीईएम), रिन्युअल एनर्जी पॉलिसी नेटवर्क फॉर द 21स्ट सेंचुरी (आरईएन21), एससीओ हाई एनर्जी क्लब, अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा मंच (आईईएफ), ज्वाइंट ऑयल डाटा इनिशिएटिव (जेओडीआई) और

यून-ईएससीएपी जैसे ऊर्जा से जुड़े अंतर्राष्ट्रीय निकायों के साथ विचार-विमर्श में सक्रिय भागीदारी करना जारी रखा।

मई, 2012 में तुर्कमेनिस्तान के साथ गैस बिक्री तथा खरीद करार पर हस्ताक्षर करने के साथ ही इस वर्ष के दौरान प्रस्तावित टीएपीआई पाइपलाइन परियोजना में प्रगति हुई। इसके बाद इस परियोजना के भागीदार देशों ने एकजुटता की पहचान करने के लिए एक रोडशो किया जो पाइपलाइन का वित्तपोषण में निर्माण तथा प्रचालन करेगा।

आयातित ऊर्जा संसाधनों पर निर्भरता को देखते हुए भारत ने विदेशों में ऊर्जा परिसंपत्तियों के अधिग्रहण सहित सतत राजनयिक हस्तक्षेपों और अंतर्राष्ट्रीय संपर्क बनाए रखा है। भारत ने विभिन्न सम्मेलन आयोजित किए जिसमें मार्च, 2012 में आयोजित एशिया गैस सहयोग शिखर सम्मेलन तथा अक्टूबर, 2012 में पेट्रोटेक सम्मेलन शामिल थे। भारत ने वर्ष 2020 में 36वें अंतर्राष्ट्रीय भौगोलिक कांग्रेस (आईजीसी) की मेजबानी के लिए सफलतापूर्वक बोली लगाई।

कौंसली, पासपोर्ट तथा वीजा सेवाएं

इस मंत्रालय ने विदेश स्थित 180 भारतीय मिशनों तथा केन्द्रों के माध्यम से प्रवासी भारतीय/विदेशी नागरिकों को कौंसली, वीजा तथा पासपोर्ट सेवाएं और देश भर में 37 पासपोर्ट कार्यालयों (मुख्यालय तथा अंडमान व निकोबार प्रशासन के अलावा) और 77 पासपोर्ट सेवा केन्द्रों के नेटवर्क तथा केन्द्रीय पासपोर्ट संगठन के माध्यम से भारतीय नागरिकों को पासपोर्ट सेवाएं प्रदान करता है।

वर्ष 2012 में 73.89 लाख पासपोर्ट सेवाएं रिकार्ड संख्या में प्रदान की गईं जो वर्ष 2000 से लगभग तीन गुनी ज्यादा है। जनवरी-दिसंबर, 2012 के दौरान, 37 पासपोर्ट कार्यालयों, मुख्यालय और अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह प्रशासन ने 59.40 लाख पासपोर्ट (2301 राजनयिक पासपोर्ट और 22010 सरकारी पासपोर्ट सहित) जारी किए और पुलिस अनापत्ति प्रमाणपत्र सहित 3.14 लाख पासपोर्ट संबंधी विभिन्न सेवाएं प्रदान की। विदेश स्थित 180 भारतीय मिशनों/केन्द्रों ने 11.35 लाख पासपोर्ट जारी किए तथा पासपोर्ट से संबंधित अन्य सेवाएं प्रदान कीं। वर्ष 2012-13 में पासपोर्ट शुल्क से एकत्र किया गया कुल राजस्व अनुमानतः 12 हजार करोड़ रुपए है। भारत ने साढ़े दस वर्ष के पश्चात एक अक्टूबर, 2012 से पासपोर्ट तथा संबंधित सेवा शुल्कों को संशोधित किया। केन्द्रीय पासपोर्ट संगठन संवर्ग की कुल संख्या 31 दिसंबर, 2012 को 2697 थी और वित्तीय वर्ष 2012-13 में केन्द्रीय पासपोर्ट संगठन को 559.72 करोड़ रुपए की राशि आबंटित की गई।

इस वर्ष की विशेषता मंत्रिमंडल की जनादेश वाली पासपोर्ट सेवा परियोजना का सफल कार्यान्वयन थी जिसे पासपोर्ट निर्गम तथा सुपुर्दगी प्रणाली का व्यापक आमूलचुल परिवर्तन करने के लिए चलाया गया था। यह परियोजना जो बेंगलूर में मई, 2010 में प्रायोगिक रूप से प्रारंभ की गई थी, वह जून, 2012 में तब अपने संपूर्ण परियोजना कार्यकरण के लक्ष्य तक पहुंची जब सार्वजनिक सेवा के लिए 77वें पासपोर्ट सेवा केन्द्र का दिल्ली में अनावरण

किया गया। इस परियोजना के समय पर पूरा होने के साथ ही सफल परियोजना कार्यान्वयन का एक नया मानदंड स्थापित हुआ। ऐसा प्रायोगिक चरण से शुरुआत करके दो वर्ष में महत्वपूर्ण प्रचालन के साथ किया गया। पासपोर्ट निर्गम प्रणाली को और अधिक आसान, तेज और सुरक्षित बनाने की दिशा में कुछ अन्य महत्वपूर्ण कदमों में जनशिकायत निवारण प्रणाली को मजबूत बनाना, 17 भाषाओं में कार्य करनेवाले एक राष्ट्रीय कॉल सेंटर की स्थापना करना, पोर्टल का नवीकरण, शिकायतों के निवारण के लिए पासपोर्ट मेला तथा अदालत लगाना, अपील के मामलों को समय पर निपटाना, पासपोर्ट कार्यालयों में भौतिक अवसंरचना में सुधार और पासपोर्ट पुस्तिकाओं में नई सुरक्षा विशेषताएं प्रारंभ करना शामिल हैं।

विदेश स्थित भारतीय मिशनों/केन्द्रों ने लगभग 5 मिलियन वीजा जारी किए। मिशनों/केन्द्रों द्वारा वीजा प्रदान करने की प्रक्रियाओं को और सरल बनाया गया है जिसमें निर्गम प्रणाली का कम्प्यूटरीकरण तथा वीजा सेवाओं की आउटसोर्सिंग शामिल है। विदेश स्थित भारतीय मिशनों/केन्द्रों में आईवीएफआरटी (प्रव्रजन, वीजा तथा विदेशी लोगों के पंजीकरण तथा ट्रेकिंग) प्रणाली के कार्यान्वयन के साथ ही बायोमेट्रिक प्रक्रिया की शुरुआत से विदेशी व्यक्तियों को वीजा जारी करने के लिए सुरक्षा पहलुओं में सुधार होगा। वर्तमान में आईवीएफआरटी योजना (बायोमेट्रिक रहित) विदेश स्थित 108 भारतीय मिशनों/केन्द्रों में प्रारंभ कर दी गई है।

वर्ष 2012 में भारत सरकार ने विभिन्न देशों से प्रत्यावर्तन के लिए 6 अनुरोध प्राप्त किए तथा बाहरी देशों की सरकारों से प्रत्यावर्तन के 13 अनुरोध किए। इस वर्ष के दौरान 3,07,672 व्यक्तिगत तथा शैक्षिक दस्तावेज तथा 1,86,926 व्यावसायिक दस्तावेज मंत्रालय द्वारा सत्यापित किए गए। इस अवधि के दौरान, 2,61,749 दस्तावेजों को एपोस्टिल सदस्य देशों में प्रयोग हेतु एपोस्टिलड किए गए। मंत्रालय ने कम्पनियों को सत्यापन हेतु दस्तावेजों के संग्रहण/प्रदायगी से संबंधित कार्य का आउटसोर्स किया। मंत्रालय ने कम्पनियों के बीच 16 जुलाई, 2012 को दो वर्ष के लिए एक करार पर हस्ताक्षर किए गए।

समन्वय

विदेश मंत्रालय ने मंत्रालय तथा भारत सरकार के अन्य मंत्रालयों तथा राज्य सरकारों/संघ शासित क्षेत्रों और गैर सरकारी संगठनों सहित स्वायत्त निकायों तथा निजी संस्थानों के बीच संपर्कों का समन्वय किया।

इस मंत्रालय ने मंत्रियों, चयनित प्रतिनिधियों और सरकारी पदाधिकारियों के सरकारी/निजी दौरों के लिए राजनीतिक अनापत्तियों पर कार्रवाई की। इस मंत्रालय ने भारत में सेमिनार, सम्मेलन तथा कार्यशालाओं, जिसमें विदेशी नागरिकों को भी आमंत्रित किया गया था, का आयोजन करने हेतु अनापत्तियों, सभी विदेशी गैर व्यावसायिक तथा राजनयिक उड़ानों तथा नौसैनिक जहाजों के दौरों के आने/जाने संबंधी हेतु अनापत्तियों पर भी कार्रवाई की।

मंत्रालय का शिक्षा अनुभाग इस मंत्रालय को क्रमशः स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आबंटित सीटों पर स्व-वित्तपोषित विदेशी छात्र योजना के अंतर्गत एमबीबीएस/बीडीएस/बीई/बी.फार्मसी और भारत की विभिन्न संस्थाओं से डिप्लोमा पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए 3 मित्र पड़ोसी एवं विकासशील देशों से विदेशी छात्रों के चयन, नामांकन और प्रवेश के संबंध में कार्रवाई करता है।

प्रशासन तथा स्थापना

प्रशासन

मंत्रालय ने विस्तार, क्षमता-निर्माण तथा मानव संसाधनों की इष्टतम तैनाती के अपने प्रमुख कार्य को जारी रखा। 10 वर्षीय भारतीय विदेश सेवा विस्तार योजना, जिसकी शुरुआत वर्ष 2008 में की गई थी, सभी महत्वपूर्ण चैनलों के कार्यरत हो जाने के साथ ही अपने आधे मुकाम पर सफलतापूर्वक पहुंच गया। इससे हटकर, वर्ष 2011 के अंत में भारतीय विदेश सेवा 'ख' बैचों की संवर्ग समीक्षा को अनुमोदित करके विभिन्न ग्रेडों में विस्तृत रूप से शामिल करने के माध्यम से व्यापक रूप से कार्यान्वित किया गया था। इन दो पहलों ने मंत्रालय की बढ़ती कार्मिक शक्ति की आवश्यकता को काफी हद तक पूरा करने में सफलता पाई है। समयबद्ध कैरियर प्रोन्नति के साथ-साथ मानव संसाधन की तैनाती के मामले में बेहतर मैचमेकिंग पर विशेष जोर दिया गया है। विभिन्न नियमों तथा विनियमों को सुचारु तथा सरल बनाने के लिए भी प्रयास प्रारंभ कर दिए गए हैं। सम्पूर्ण मंत्रालय के लिए व्यापक प्रशिक्षण फ्रेमवर्क विकसित करने की दिशा में भी काम प्रारंभ हो चुका है। समीक्षाधीन वर्ष जूबा में पूर्व प्रधान कौंसल के पूर्ण कार्यरत दूतावास के रूप में उन्नयन के साथ ही भारत के वैश्विक राजनयिक उपस्थिति के और अधिक विस्तार का साक्षी बना।

स्थापना

अकबर भवन में स्थित इस मंत्रालय के सभी कार्यालय तथा साउथ ब्लॉक, आईएसआईएल भवन और शास्त्री भवन स्थित सभी कार्यालय जवाहर लाल नेहरू भवन में स्थानांतरित कर दिए गए हैं। ओडी ए मर्दे, जिनका चयन विशिष्ट रूप से जवाहर लाल नेहरू भवन के लिए किया गया है, स्थापित कर दी गई हैं। सीपीडब्ल्यूडी ने साउथ ब्लॉक में स्थित विदेश मंत्रालय के कार्यालयों की संरचनात्मक सुदृढ़ता की जांच का कार्य प्रारंभ कर दिया है। चाणक्यपुरी तथा द्वारका स्थित मंत्रालय के भवन परिसरों के साथ-साथ के.जी. मार्ग तथा आर के आश्रम मार्ग स्थित छात्रावासों के रहन-सहन की स्थितियों का उन्नयन इन स्थानों पर उपलब्ध कराए गए भवनों तथा अन्य सुविधाओं का नियमित रूप से रख-रखाव करके किया गया है। विदेशों में तैनात भारत आस्थानी पदाधिकारियों के लिए बेहतर आवासीय रिहायशों को किराए पर लगाने के लिए अनेक मिशनों/केन्द्रों के किरायों की उपरी सीमा को संशोधित किया।

परियोजनाएं

वर्ष 2012-13 के दौरान मंत्रालय ने इसके चांसरी/आवासों के रूप में उपयोग के लिए विदेशों में सम्पत्तियों का निर्माण तथा अधिग्रहण जारी रखा। विश्व भर के रियल स्टेट सम्पत्ति के गिरते मूल्यों ने विदेशों में सम्पत्तियां अर्जित करने के अनेक अवसर प्रस्तुत किए हैं। अटलॉटा में एक निर्मित सम्पत्ति चांसरी के लिए अधिग्रहित किया गया और आवासीय परिसर के निर्माण के लिए बैंकाक में एक भूखंड खरीदा गया। येरेवन (आर्मेनिया) में किराए पर लिए गए चांसरी को भी खरीद लिया गया। ठोस प्रयासों के माध्यम से ब्राजीलिया, अबुजा, इस्लामाबाद, ढाका तथा काठमांडु में चल रही चांसरी/आवासीय परिसर निर्माण परियोजनाओं में अत्यधिक प्रगति हासिल हुई। मंत्रालय ने निविदा आमंत्रित करने की प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूरी कर लेने के बाद वार्सा में चांसरी-सह-आवास निर्माण परियोजना तथा दूबई में चांसरी पुनर्नवीकरण परियोजना के लिए ठेके प्रदान किए।

राजभाषा नीति का कार्यान्वयन तथा विदेशों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार

विदेश मंत्रालय ने विदेश स्थित भारतीय मिशनों/केन्द्रों के माध्यम से हिन्दी के संवर्धन तथा प्रचार-प्रसार के अनेक नियमित कार्यक्रमों के अतिरिक्त 22-24 सितंबर, 2012 के दौरान दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में 9वें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया। विश्व हिन्दी सम्मेलन के लिए भारतीय प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर ने की। दक्षिण अफ्रीका के वित्त मंत्री श्री प्रवीण गोर्धन उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि थे जिसमें मारिशस के कला तथा संस्कृति मंत्री श्री मुकेश्वर चुन्नी भी उपस्थित थे। इस सम्मेलन में भारत तथा विदेशों से लगभग 700 विद्वानों ने भाग लिया। विश्व हिन्दी दिवस भी 10 जनवरी, 2013 को दिल्ली में विदेश मंत्रालय तथा विदेश स्थित सभी भारतीय मिशनों/केन्द्रों में मनाया गया।

लोक राजनय

मंत्रालय ने सामान्य रूप से भारत के हितों तथा प्रशंसा तथा विशेष रूप से भारत की विदेश नीति के विभिन्न पहलुओं के सृजन के दृष्टिकोण से विभिन्न कार्यक्रमों तथा कार्यक्रमों का आयोजन तथा भागीदारी की। मंत्रालय ने रिच्छआउट टू वाइल्ड क्रॉससेक्शन ऑफ पीपल, जिसमें निर्णयकर्ता मीडिया, शिक्षाविद, विशेषज्ञ, छात्र तथा आम लोग शामिल थे। मंत्रालय द्वारा लोगों के अनेक आपसी संपर्कों हेतु कूटनीतिक पहलें प्रारंभ की गईं तथा इसका समर्थन किया गया जिससे सामाजिक मीडिया में इसकी उपस्थिति बनी रही। इस प्रयास की पहचान प्रौद्योगिकी के नए-नए उपयोग के लिए वेबरलन पुरस्कार के साथ की गई। विदेशों में भारत की सकारात्मक छवि दिखलाने में हमारे मिशनों को मदद करने के लिए डॉकुमेंट्री फिल्मों तथा किताबों का प्रारंभ, मासिक पत्रिका इंडिया पर्सपेक्टिव्स का मुद्रण तथा डिजिटल फार्मट में प्रकाशन भी किया गया।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की स्थापना वर्ष 1950 में की गई थी। इसकी स्थापना का प्राथमिक उद्देश्य भारत तथा अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों तथा परस्पर समझ स्थापित करना, पुनः संबंध कायम करना और सुदृढ़ करना है। परिषद ने विदेशों से भारत के सांस्कृतिक संबंधों से संबंधित नीतियों और कार्यक्रमों के विनिर्माण तथा कार्यान्वयन में हिस्सा लिया ताकि अन्य देशों तथा लोगों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया जा सके; भारत तथा अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों और परस्पर समझ को बढ़ावा दिया जा सके और इसे सुदृढ़ किया जा सके; तथा संस्कृति के क्षेत्र में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ संबंध विकसित किए।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद अपने आउटरीच कार्यक्रमों के माध्यम से विदेशों में 7 सांस्कृतिक केन्द्रों तथा भारत भर में 20 क्षेत्रीय कार्यालयों का रख-रखाव करता है। परिषद के पास विदेश स्थित विश्वविद्यालयों में 95 पीठ (चेयर्स) हैं। यह भारत सरकार तथा अन्य एजेंसियों की ओर से अप्रवासी छात्रों के लिए बड़ी संख्या में छात्रवृत्ति योजनाओं का संचालन करता है। यह भारत में अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के कल्याण के लिए नोडल एजेंसी है। इसने वर्ष के दौरान बड़ी संख्या में प्रदर्शनियों, सम्मेलनों तथा सेमिनारों का आयोजन किया, बाहरी देशों में भारत उत्सव आयोजित किया, मंचन करने वाले कलाकारों तथा समूहों के आदान-प्रदान की व्यवस्था की तथा संबंधित कला प्रदर्शनियों तथा व्याख्यान नमूनों (डिमान्स्ट्रेशन) का आयोजन किया। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा विदेशों में भेजे गए समूह क्लासिकल कलारूपों तथा लोक नृत्यों व संगीत से लेकर समकालीन मिश्रित मंचनों, रॉक/जॉज बैंडों, बालीवुड नृत्य आदि से भारत के बहुमुखी सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करते हैं। इस वर्ष के दौरान परिषद ने विदेशों में कार्यक्रमों के लिए लगभग 150 समूहों/कलाकारों का प्रायोजन किया तथा भारत में 100 से अधिक (कला) प्रदर्शनियों का आयोजन किया। परिषद ने लैटिन अमरीकी संगीत तथा नृत्य उत्सव, अफ्रीका उत्सव, डेज ऑफ रसिया, सार्क उत्सव, भारत आसियान उत्सव, दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय कला उत्सव, दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय जॉज उत्सव जैसे प्रतिष्ठित उत्सवों का आयोजन किया जो इसके द्वारा आयोजित अनेक उत्सवों में से कुछ हैं। इसके अलावा, परिषद अपने विशिष्ट आगंतुक कार्यक्रम के तहत प्रतिष्ठित व्यक्तियों को नियमित रूप से आमंत्रित करता है और यह किताबों तथा पांडुलिपियों के दुर्लभ संग्रह के साथ एक भरपूर भंडार वाले पुस्तकालय का रख-रखाव करने के अलावा 5 विभिन्न भाषाओं में छह पत्रिकाएं निकालता है।

भारतीय विश्व कार्य परिषद (आईसीडब्ल्यूए)

भारतीय विश्व कार्य परिषद ने एशिया, अफ्रीका, यूरोपिय संघ तथा लैटिन अमरीका में अनुसंधान के अपने सक्रिय कार्यक्रम तथा राजनीतिक, रणनीतिक तथा आर्थिक गतिविधियों के अध्ययन के साथ-साथ विस्तृत महत्व की अन्य क्षेत्रीय तथा वैश्विक गतिविधियों को चलाना जारी रखा। सप्रु हाउस पेपर्स, इश्यु ब्रीफ्स, पॉलिसी

ब्रीफ्स तथा रिपोर्टों के रूप में 100 से अधिक प्रकाशनों का प्रचार-प्रसार किया गया। अनेक प्रकार के सम्मेलनों, व्याख्यानों तथा आउटरीच कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। मालदीव, इंडोनेशिया, वियतनाम, मलेशिया, फिलीपिन्स, दक्षिण कोरिया, चीन, इरान, किर्गिजस्तान, यमन, तुर्की, मिस्र, ट्यूनिशिया, चीली जैसे अनेक देशों तथा यूरोपिय संघ के साथ अंतर्राष्ट्रीय वार्ताएं आयोजित की गईं। इस वर्ष के दौरान आईसीडब्ल्यूए के पुस्तकालय का उन्नयन किया गया।

विकासशील देशों के लिए अनुसंधान तथा सूचना प्रणाली (आरआईएस)

विकासशील देशों के लिए अनुसंधान तथा सूचना प्रणाली (आरआईएस) विदेश मंत्रालय के अधीन नई दिल्ली आधारित स्वायत्त थिंक टैंक है, जो अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों तथा विकास सहयोग में विशेषज्ञता प्राप्त है। विकासशील देशों के लिए अनुसंधान तथा सूचना प्रणाली (आरआईएस) को बहुपक्षीय आर्थिक तथा सामाजिक मुद्दों से जुड़े मामलों पर सरकार के सलाहकार निकाय के रूप में कार्य करने का भार दिया गया है (इस अवधि के दौरान विकासशील देशों के लिए अनुसंधान तथा सूचना प्रणाली (आरआईएस) ने प्रिपेरेटरी प्रोसेस ऑफ द यूएन कान्फरेंस ऑन सरस्टेनेबल डेवलपमेंट रियो + 20 सम्मेलन); वैश्विक शान्ति तथा सुरक्षा; ब्रिक्स की भूमिका, वहनीय दवाओं की उपलब्धता; ब्रिक्स के बीच सहयोग के अवसर; आईओआरएएसी में सहयोगात्मक क्षेत्रवाद की ओर तथा अक्टूबर, 2012 में हैदराबाद में आयोजित पक्षकारों के सम्मेलन की 10वीं बैठक के कार्यवृत्त की मदों पर भारत सरकार को इनपुट्स उपलब्ध कराया। इस संस्थान ने अनेक नीतिगत वार्ता, सम्मेलन कार्यशालाएं आदि आयोजित किए जिनमें अन्यो के साथ-साथ शामिल थे — भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र पर भारत-म्यामां व्यापार तथा संपर्क ब्रेन स्टॉर्मिंग सत्र; भारत-आसियान संपर्क तथा भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन; दक्षिण एशिया में व्यापार को आसान बनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन; नए विकास सहयोगियों के साथ वार्ता; गरीबी उन्मूलन पर सेमिनार, आसियान-भारत नेटवर्क ऑफ थिंकटैंक (एआईएनटीटी) पर गोलमेज सम्मेलन; भारत-आसियान सहयोग की 20वीं वर्षगांठ मनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन; जैव विविधता नयाचार के तहत सामाजिक-आर्थिक विचार पर चर्चा; छठा एशियाई जैव प्रौद्योगिकी तथा विकास सम्मेलन, प्रौद्योगिकी तथा पुनर्नवीकरण रिपोर्ट, 2012 पर कार्यशाला तथा वैश्विक वित्तीय संकट तथा सार्वजनिक ऋण से निपटने की चुनौतियां। विकासशील देशों के लिए अनुसंधान तथा सूचना प्रणाली (आरआईएस) ने व्यापार तथा आर्थिक सहयोग: वैश्विक तथा क्षेत्रीय परिदृश्य पर विदेश सेवा संस्थान (एफएसआई), विदेश मंत्रालय के सहयोग से क्षमता निर्माण कार्यक्रमों पर पैनल चर्चा।

विदेश प्रचार

मंत्रालय ने प्रेस सम्मेलनों, नियमित प्रेस ब्रीफिंग्स, बैकग्राउन्ड्स, वक्तव्यों के प्रचार-प्रसार, विदेश मंत्रालय की वेबसाइट के कारगर उपयोग तथा इलेक्ट्रॉनिक संपर्कों के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय तथा

घरेलू मीडिया में विदेश नीति संबंधी विभिन्न मुद्दों पर भारत सरकार के पक्ष को स्पष्ट करना जारी रखा। मंत्रालय द्वारा अपने नजदीकी पड़ोसी देशों के साथ-साथ विश्व के महत्वपूर्ण देशों के साथ भारत के संबंधों से संबंधित सूचनाओं के प्रचार-प्रसार के लिए विशेष प्रयास किए गए। मंत्रालय ने अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारों के लिए व्यापक परिचय कार्यक्रम का संचालन जारी रखा। मंत्रालय ने भारत में वृत्तचित्र फिल्मों हेतु अनुरोध पर कार्रवाई की तथा निरंतर बढ़ते भारत स्थित विदेशी पत्रकार वर्ग के सदस्यों को सुविधाएं प्रदान की। इस मंत्रालय ने राज्याध्यक्षों, शासनाध्यक्षों तथा विदेश मंत्री स्तर पर हुई भारत यात्राओं तथा विदेश यात्राओं हेतु मीडिया संबंधी सभी व्यवस्थाएं कीं। इस वर्ष मंत्रालय ने विदेश मंत्रालय के नए पुनर्नवीकृत तथा उपयोगकर्ताओं के लिए अनुकूल वेब पोर्टल की शुरुआत की जो सामाजिक मीडिया के लिए अति अनुकूल है और इसमें नवीनतम वेब 2.0 की विशेषताएं हैं। विदेश स्थित सभी भारतीय मिशनो तथा केन्द्रों के वेबसाइटों को सदृश्य बनाने की प्रक्रिया इस समय चल रही है। भारत तथा विदेश दोनों स्थानों के और अधिक दर्शकों तक पहुंच के लिए मंत्रालय ने यूट्यूब, फेसबुक, लिंकर और गुगल + जैसे सामाजिक मंचों पर भी अपनी उपस्थिति प्रारंभ की है। विदेश मंत्रालय का यूट्यूब चैनल अब प्रेस ब्रीफिंग्स/मीडिया के साथ बातचीत का लाईव वेबप्रसारण का आयोजन करता है। जहां एक ओर हिन्दी, उर्दू तथा अरबी में प्रेस रिलीजों तथा वक्तव्यों का अनुवाद समयबद्ध तरीके से उपलब्ध कराना जारी रखा, वहीं दूसरी ओर मंत्रालय ने इस वर्ष तमिल, मलयालम तथा बांग्ला जैसी क्षेत्रीय भाषाओं को शामिल करने के लिए उनका विस्तार भी किया है।

विदेश सेवा संस्थान

विदेश सेवा संस्थान (एफएसआई) ने विदेशी राजनयिकों के साथ-साथ विदेश मंत्रालय के भारतीय विदेश सेवा प्रोबेशनरों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना जारी रखा।

विदेश सेवा संस्थान (एफएसआई) के वर्ष 2010 के बैच ने मई, 2012 में विदेश सेवा संस्थान (एफएसआई) के प्रशिक्षण कार्यक्रम को पूरा किया और वर्ष 2011 के विदेश सेवा संस्थान (एफएसआई) प्रोबेशनरों का एक बैच एक वर्ष तक चलने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए दिसंबर, 2011 में विदेश सेवा संस्थान (एफएसआई) से जुड़ा।

संयुक्त सचिव स्तर के अधिकारियों के लिए चौथा सेवाकालीन (मिड-कैरियर) प्रशिक्षण कार्यक्रम (एमसीटीपी) 18-29 जून, 2012 को हुआ था। निदेशक स्तर के अधिकारियों के 1995 बैच के लिए ई-मेल पर आधारित एमसीटीपी वर्ष 2012 में पूरा किया गया था। विदेश स्थित भारतीय नागरिकों को प्रभावी कौसुली सेवाएं प्रदान करने संबंधी एक विशेष प्रशिक्षण मॉड्यूल विदेश मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों सहित अपर सचिवों के लिए 23 मई, 2012 को आयोजित किया गया।

मंत्रालय के अनुभाग अधिकारियों के लिए एक रिक्रेशर कोर्स और पदाधिकारियों के लिए 2 आधारभूत व्यावसायिक पाठ्यक्रम रिपोर्टेड अवधि के दौरान आयोजित किए गए। एफएसआई ने भी इंटीग्रेटेड मिशन एकाउन्टिंग सिस्टम (आईएमएस) में विदेश मंत्रालय के

पदाधिकारियों को प्रशिक्षण देने हेतु अप्रैल – दिसंबर, 2012 के दौरान 20 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए।

एफएसआई ने विदेशी राजनयों के लिए दो व्यावसायिक पाठ्यक्रम, आसियान राजनयों के लिए एक विशेष पाठ्यक्रम और आईओआर-एआरसी राजनयों के लिए एक और विशेष कार्यक्रम आयोजित किए। इन पाठ्यक्रमों के दौरान क्लास रूप प्रशिक्षण के अतिरिक्त विदेशी राजनयों को दिल्ली और इसके आस-पास के ऐतिहासिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व के विभिन्न स्थानों का अध्ययन दौरा कराया गया।

एफएसआई और कोरिया नेशनल डिप्लोमेटिक अकादमी, कोरिया गणराज्य के बीच 21 मार्च, 2012 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया।

विधि और संधियां

वर्तमान वर्ष के दौरान, मंत्रालय ने संयुक्त राष्ट्र महासभा (छठी समिति) और इसकी विभिन्न उप समितियों, संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय व्यापार आयोग (यूएनसीआईटीआरएएल), अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर तदर्थ समिति, संयुक्त राष्ट्र चार्टर समिति, इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट फॉर यूनिफिकेशन ऑफ लॉ (यूएनआईडीआरओआईटी), हेग कान्फरेंस ऑन प्राइवेट इंटरनेशनल लॉ, समुद्र संबंधी कानून (लॉ ऑफ सी) पर संयुक्त राष्ट्र अभिसमय पर राष्ट्र पक्षकारों की बैठक, अटलांटिक परामर्शदात्री समिति की 35वीं बैठक (एटीसीएम), दस्युता पर संपर्क समूह के साथ-साथ निरस्त्रीकरण मुद्दों पर हुई चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग लिया।

हॉलांकि भारत आईसीसी के रोम अध्यादेश (स्टेट्यूट) का पक्षकार नहीं है फिर भी मंत्रालय ने आईसीसी के कार्यों का अनुसरण किया और ऐसेम्बली ऑफ स्टेट पार्टिज (एएसपी) के 11वें सत्र में भाग लिया। मंत्रालय ने एशियन अफ्रीकन लीगल कंसलटेटिव ऑर्गेनाइजेशन के वार्षिक सत्रों तथा मुक्त व्यापार समझौता निवेश सुरक्षा समझौते तथा प्रत्यावर्तन तथा परस्पर कानूनी सहायता समझौते में भी भाग लिया।

मंत्रालय समुद्री सीमांकन से संबंधित मामले में बंगलादेश मेमोरियल को भारत के जवाब के संबंध में कानूनी परामर्श तथा अन्य विशेषज्ञों के साथ तैयारी संबंधी बैठकों में सक्रिय रूप से संलग्न था। भारत का जवाबी मेमोरियल जुलाई, 2012 में आरबिट्रल ट्रायबुनल के समक्ष दायर किया गया। मंत्रालय ने कश्मीर में किशन गंगा जल विद्युत परियोजना तथा पाक अधिकृत कश्मीर में नीलम जल विद्युत परियोजना स्थलों के दौरों में भाग लिया जिनमें अंतर्राष्ट्रीय ट्राइब्यूनल के सभी न्यायाधीशों के साथ-साथ भारत तथा पाकिस्तान के विशेषज्ञों ने भाग लिया। मंत्रालय ने हेग में परमानेंट कोर्ट ऑफ आरबिट्रेशन के “किशन गंगा आर्बिट्रेशन हियरिंग” में भी भाग लिया।

इलेक्ट्रानिक अभिशासन एवं सूचना प्रौद्योगिकी

वर्ष के दौरान अंतर्राष्ट्रीय साइबर मुद्दों ने मंत्रालय का ध्यान आकर्षित किया। भारत ने अंतर्राष्ट्रीय सूचना सुरक्षा पर सरकारी

विशेषज्ञों के यू एन ग्रुप की बैठक में भाग लिया और अमरीका, यूनाइटेड किंगडम, जापान तथा यूरोपीयन संघ के साथ अंतर्राष्ट्रीय साइबर मुद्दों पर द्विपक्षीय वार्ता आयोजित की। संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा द्वारा इंटरनेट गवर्नेन्स से संबंधित संवर्धित सहयोग पर सूचना सोसाईटी अधिदेश पर विश्व शिखर सम्मेलन के कार्यान्वयन के लिए जांच एवं सिफारिश करने के लिए एक कार्यकारी समूह का गठन करने संबंधी भारत का प्रस्ताव अंगीकार किया गया। मंत्रालय ने अपने अधिकारियों को साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण देने पर विशेष बल दिया। 108 मिशनो/केन्द्रों में वीजा ऑनलाईन कम्पोनेन्ट ऑफ इमिग्रेशन, वीजा एण्ड फोरेनर्स रजिस्ट्रेशन एण्ड ट्रेकिंग प्रोजेक्ट (आईवीएफआरटी) लागू किया गया। मिशनो/केन्द्रों में इंटेग्रेटेड मिशंस एकाउंटिंग सॉटवेयर (आई-मास) सॉटवेयर कार्यान्वित की गई और 10 मिशनो में वीजा/पासपोर्ट/कौंसली सेवाओं की आउटसोर्सिंग पूरी की गई जिसके परिणामस्वरूप मिशनो/केन्द्रों जहां पर ये सुविधाएं उपलब्ध कराई गई उनकी कुल संख्या क्रमशः 130,179 और 73 हो गई है।

नालंदा

नालंदा विश्वविद्यालय पर पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन पहल में तेजी आ गई है। 25 नवम्बर, 2010 को नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम 2010 के लागू हो जाने के बाद भारत के राष्ट्रपति विजिटर बने और शासी बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. अर्मत्य सेन को कुलाधिपति (चान्सलर) नियुक्त किया गया। कुलपति (वाइस चान्सलर) तथा अन्य स्टाफ नई दिल्ली स्थित विश्वविद्यालय के परियोजना कार्यालय के माध्यम से कार्य करते हैं। पुरातत्व डिजाइन प्रतियोगिता प्रारंभ कर दी गई है और राजगीर में निर्माण के चरण — I के वर्ष 2013 के उत्तरार्ध में प्रारंभ होने की आशा है। ऐतिहासिक अध्ययन और जलवायु तथा पर्यावरण अध्ययन के स्कूलों में शिक्षण सत्र 2014 में शिक्षण प्रारंभ किये जाने की आशा है।

20 दिसम्बर, 2012 को नई दिल्ली में आसियान-भारत स्मारक शिखर सम्मेलन में विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद ने नालंदा विश्वविद्यालय का प्रथम प्रकाशन 'सिविलाइजेशनल डाइलॉग: एशियन इंटर कनेक्सन्स एण्ड क्रॉस कलचरल एक्सचेन्जेज' लॉन्च किया।



अफगानिस्तान

भारत और अफगानिस्तान ने व्यापक एवं परस्पर लाभकारी संबंध स्थापित किये हैं, जो अक्टूबर, 2011 में हस्ताक्षरित रणनीतिक सहभागिता करार से परिलक्षित होते हैं। चूंकि अफगानिस्तान 2014 में राजनीतिक, सुरक्षा और आर्थिक क्षेत्र में बदलाव के लिए अपने को तैयार कर रहा है इसलिए भारत ने अफगानिस्तान की सुरक्षा एवं विकास के प्रति दीर्घावधिक वचनबद्धता के जरिए भविष्य के बारे में भय दूर करने का प्रयास किया है।

अफगानिस्तान के सतत विकास के लिए अफगानिस्तान में काफी समय तक निवेश की आवश्यकता है, जिससे इस देश को प्राकृतिक संसाधन संपत्ति का दोहन करने में सहायता मिलेगी। भारत अफगानिस्तान में निवेश को बढ़ावा देने में अग्रणी रहा है। अफगानिस्तान के खनन क्षेत्र, हाजीगाक लौह अयस्क रिजर्व में सर्वाधिक निवेश करने के लिए सार्वजनिक एवं निजी भारतीय कंपनियों के एक परिसंघ का चयन किया गया था। भारत सरकार ने निर्माणाधीन सलमा बांध परियोजना को पूरा करने के लिए बजट बढ़ा दिया है और साथ ही अफगानी छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की संख्या में भी वृद्धि कर दी है।

राष्ट्रपति हामिद करजई ने नवम्बर, 2012 में राजकीय यात्रा की, जिसके दौरान उन्होंने मौलाना अबुल कलाम आजाद स्मारक व्याख्यान दिया। राष्ट्रपति करजई ने प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह के साथ शिष्टमंडल स्तरीय बातचीत की। प्रधान मंत्री ने राष्ट्रपति करजई को भारत द्वारा लगातार सहायता देने का भरोसा दिया क्योंकि अफगानिस्तान 2014 तक निर्णायक संक्रमण की महत्वपूर्ण अवधि पूरा कर रहा है। दोनों नेताओं ने 1 मई, 2012 को सहभागिता परिषद की प्रथम बैठक बुलाने हेतु रणनीतिक सहभागिता करार के कार्यान्वयन में प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने राजनीतिक, सुरक्षा, आर्थिक और सांस्कृतिक सहयोग के संवर्धन सहित सभी क्षेत्रों में इस करार के कार्यान्वयन के प्रति अपनी पूर्ण वचनबद्धता दोहराई।

दोनों नेताओं ने भारत और अफगानिस्तान के बीच व्यापार संबंध बढ़ाने के लिए उठाये गए कदमों का स्वागत किया। उन्होंने 28 जून, 2012 को अफगानिस्तान पर दिल्ली निवेश शिखर सम्मेलन के माध्यम से अफगानिस्तान में निवेश को बढ़ावा देने में भारत के प्रयासों का समर्थन किया। इस शिखर सम्मेलन का उद्देश्य राजस्व और रोजगार सृजित करते हुए परिवर्तन दशक के दौरान स्थिरीकरण का एक वैकल्पिक आर्थिक मार्ग के रूप में इसके प्राकृतिक संसाधनों एवं अवसंरचना, कृषि और कृषि उद्योग, लघु एवं सीमांत उद्योगों, शिक्षा एवं प्रशिक्षण तथा स्वास्थ्य को विकसित करने में अफगानिस्तान

की आवश्यकताओं को पूरा करना है। दोनों नेताओं ने अफगानिस्तान की राजनीतिक और आर्थिक प्रगति के लिए क्षेत्रीय सहयोग और संपर्क को स्वीकार किया। उन्होंने इस्तांबुल प्रक्रिया के अधीन दो वाणिज्यिक क्षमता निर्माण उपायों से संबंधित भारतीय सहायता का स्वागत किया जिसमें 'एशिया के मध्य में' अफगानिस्तान की स्थिति को स्वीकारते हुए और इसे महत्व देकर क्षेत्र में नये भरोसा एवं विश्वास के लिए प्रेरित करने की बात कही गई है।

इस यात्रा के दौरान स्थानीय सरकारी निकायों, सामुदायिक संगठनों, चैरिटेबल ट्रस्टों तथा शैक्षणिक एवं व्यावसायिक संस्थानों के माध्यम से लघु विकास परियोजनाओं के क्रियान्वयन हेतु भारतीय अनुदान सहायता; उर्वरक के क्षेत्र में सहयोग; युवा मामलों में सहयोग; और कोयला खनिज संसाधनों के विकास के क्षेत्र में सहयोग से संबंधित 4 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किये गए।

अन्य उच्च स्तरीय राजनीतिक क्रियाकलापों में काबुल में हार्ट ऑफ एशिया कान्फ्रेंस में भाग लेने के लिए जून, 2012 में पूर्व विधि एवं न्याय मंत्री श्री सलमान खुर्शीद की यात्रा तथा लौह एवं इस्पात क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के लिए अप्रैल, 2012 में इस्पात मंत्री श्री बेनी प्रसाद वर्मा की यात्रा शामिल थी।

अफगानिस्तान पर दिल्ली निवेश शिखर सम्मेलन के लिए अफगानिस्तान की ओर से डा. जलमई रसूल, विदेश मंत्री श्री अनवार-उल हक अहादी, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री, श्री कमर जखिलवाल, वित्त मंत्री श्री वहीदुल्लाह शहरानी, खान मंत्री तथा श्री आसिफ रहीमी, कृषि मंत्री समेत एक उच्च स्तरीय शिष्टमंडल 28 जून, 2012 को दिल्ली में मौजूद था। विदेश मंत्री श्री जलमई रसूल ने 1 मई, 2012 को नई दिल्ली में प्रथम सहभागिता परिषद की बैठक की सहअध्यक्षता भी की, जबकि खान मंत्री श्री शहरानी ने सीआईआई वैश्विक खनन सम्मेलन में भाग लेने हेतु दिसम्बर, 2012 में कोलकाता की यात्रा की।

दिसम्बर, 2012 में नागर विमानन के क्षेत्र में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम हेतु अफगानिस्तान के परिवहन एवं नागर विमानन तथा एयरपोर्ट अथारिटी ऑफ इंडिया के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये गए।

बांग्लादेश

वर्ष के दौरान भारत और बांग्लादेश के बीच सहयोग संवर्धन से संबंधों में प्रगाढ़ता आई तथा सितम्बर, 2011 में प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह की बांग्लादेश यात्रा के दौरान लिये गए निर्णयों को कार्यान्वित किया गया।

श्री प्रणब मुखर्जी तत्कालीन वित्त मंत्री ने रवीन्द्रनाथ टैगोर के 150 वें जन्म दिवस पर वर्ष भर चलने वाले संयुक्त समारोहों के समापन समारोह तथा संयुक्त परामर्शदात्री समिति की बैठक में भाग लेने के लिए 5-6 मई, 2012 को ढाका की यात्रा की। पूर्व विधि एवं न्याय तथा अल्पसंख्यक मामले मंत्री श्री सलमान खुर्शीद की अगुवाई में एक शिष्टमंडल ने काजी नजरुल इस्लाम द्वारा 'बिद्रोही' के प्रकाशन की 90 वीं वर्षगांठ के संयुक्त समारोह में भाग लेने के लिए 24-27 मई, 2012 को बांग्लादेश की यात्रा की।

ग्रामीण विकास तथा पेयजल एवं सफाई मंत्री श्री जयराम रमेश ने लोगों के सशक्तिकरण एवं विकास पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए 4-6 अगस्त, 2012 को बांग्लादेश की यात्रा की। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद ने 'जनसंख्या विकास में सहभागी' की 17वीं वार्षिक बैठक एवं 21वीं कार्यकारी समिति बैठक में भाग लेने के लिए 10-12 नवम्बर, 2012 को ढाका की यात्रा की। गृह मंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे ने गृह मंत्रियों की चौथी बैठक में भाग लेने के लिए 28-29 जनवरी, 2013 को ढाका की यात्रा की और रक्षा राज्य मंत्री श्री एम.एस. पल्लमराजू ने भारतीय सशस्त्र सेना की ओर से फ्रेन्ड्स ऑफ लिबरेशन वार एवार्ड प्राप्त करने के वास्ते 25-26 मार्च, 2012 को बांग्लादेश की यात्रा की।

बांग्लादेश से, विदेश मंत्री डा. दीपु मोनी ने रवीन्द्रनाथ टैगोर की 150 वीं वर्षगांठ के समापन समारोह और संयुक्त परामर्शदात्री आयोग बैठक में भाग लेने के लिए 4-8 मई, 2012 को भारत की यात्रा की। सूचना एवं संस्कृति मंत्री श्री अबुल कलाम आजाद ने द्विपक्षीय परामर्श तथा क्रमशः विश्व भारती विश्वविद्यालय और रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय को पदमा और छपोला नौकाएं प्रस्तुत करने के लिए 10-13 सितम्बर, 2012 को भारत की यात्रा की। स्थानीय सरकार और ग्रामीण विकास मंत्री श्री सैयद अशरफुल इस्लाम ने ग्रामीण विकास मंत्री श्री जयराम रमेश के साथ द्विपक्षीय चर्चा करने के लिए 18-22 सितम्बर, 2012 को भारत की यात्रा की। कृषि मंत्री बेगम मतिया चौधरी ने कृषि और संबंधित क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग पर चर्चा करने हेतु 8-10 नवम्बर, 2012 को भारत की यात्रा की और गृह मंत्री डा. मुहीउद्दीन खान आलमगीर ने गृह मंत्रियों की तीसरी बैठक में भाग लेने के लिए 4-9 दिसम्बर, 2012 को भारत की यात्रा की।

बांग्लादेश में लोकतांत्रिक एवं बहुदलीय राज्य व्यवस्था से जुड़े भारत की जारी क्रियाकलाप के भाग के रूप में विपक्ष की नेता, बेगम खालिदा जिया और जातीय पार्टी अध्यक्ष जेनरल एच एम ईशार्द ने क्रमशः 28 अक्टूबर, 3 नवम्बर, 2012 तथा 13-18 अगस्त, 2012 को भारत की यात्रा की।

भारत-बांग्लादेश संयुक्त परामर्शदात्री आयोग (जेसीसी) की प्रथम बैठक 7 मई, 2012 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा और बांग्लादेश की विदेश मंत्री डा. दीपु मोनी ने अपने संबंधित शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। जेसीसी ने 2011 संयुक्त वक्तव्य और 2010 संयुक्त विज्ञप्ति के क्रियान्वयन में

प्रगति की समीक्षा की। जुलाई, 2012 में नई दिल्ली में विदेश सचिवों के स्तर पर विदेश मामलों पर परामर्श किये गए। जेसीसी की दूसरी बैठक 16-17 फरवरी, 2013 को ढाका में आयोजित किये जाने का कार्यक्रम है। जेसीसी की बैठक से पहले 9-11 फरवरी, 2013 को विदेश सचिव श्री रंजन मथाई ढाका की यात्रा करेंगे। राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी 2-4 मार्च, 2013 को बांग्लादेश की यात्रा करने वाले हैं। यह भारत के किसी राष्ट्रपति की अब तक पहली बांग्लादेश यात्रा होगी।

गृह मंत्री स्तर पर (फरवरी, 2012, दिसम्बर, 2012 और जनवरी, 2013) पर प्रारंभिक वार्ता के दौरान; गृह सचिव स्तरीय वार्ता (अक्टूबर, 2012) में तथा महानिदेशक, सीमा सुरक्षा बल और बोर्डर गार्ड आदि बांग्लादेश स्तरीय वार्ता (मार्च, 2012 और सितम्बर, 2012) में सुरक्षा एवं सीमा प्रबंधन के क्षेत्रों में सहयोग पर चर्चा की गई। भारत और बांग्लादेश की स्वापक नियंत्रण एजेंसियों के बीच महानिदेशक स्तरीय वार्ता तथा मानव तस्करी पर कार्य बल की दूसरी और तीसरी बैठकें भी आयोजित की गईं। जनवरी, 2013 में गृह मंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे की बांग्लादेश यात्रा के दौरान भारत और बांग्लादेश ने प्रत्यर्पण संधि तथा संशोधित यात्रा करार पर हस्ताक्षर किये।

दोनों पक्षों ने फरवरी, 2012 और अक्टूबर, 2012 में गंगा जल की मानीटरन संबंधी संयुक्त समिति की तकनीकी स्तरीय बैठकों के जरिए जल के बंटवारे तथा संबंधित मुद्दों के क्षेत्र में सहयोग पर चर्चा की। संयुक्त नदी आयोग के तत्वावधान में अगस्त, 2012 और फरवरी, 2013 में तिपाइमुख जल विद्युत परियोजना पर उप-समूह की बैठकें आयोजित की गईं।

मार्च, 2012 और दिसम्बर, 2012 में वाणिज्य सचिव स्तरीय वार्ता, जुलाई, 2012 में पोत परिवहन सचिव स्तरीय वार्ता, फरवरी, 2012 और जनवरी, 2013 में विद्युत सचिव स्तरीय वार्ता, अगस्त, 2012 में नवीकरणीय ऊर्जा सहयोग संबंधी संयुक्त कार्यकारी दल की पहली बैठक और जून, 2012 में सुन्दर बन के रॉयल बंगाल टाइगर के लिए संयुक्त संरक्षण प्रयासों पर वार्ता के माध्यम से व्यापार, वाणिज्य, संपर्क, विद्युत, नवीकरणीय ऊर्जा और रॉयल बंगाल टाइगर के संरक्षण के क्षेत्रों में सहयोग जारी रहा।

अंतर्देशीय जल परिवहन और व्यापार पर प्रोटोकाल तथा व्यापार पर द्विपक्षीय करार को क्रमशः तीन और दो वर्षों के लिए नवीकृत किया गया। भारत सरकार की 1 बिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला के कार्यान्वयन में प्रगति हुई। भारत सरकार ने 1 बिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला को 200 मिलियन अमरीकी डॉलर की अनुदान सहायता में परिवर्तित करने की घोषणा की।

रक्षा क्षेत्र में निरंतर आदान-प्रदान के भाग के रूप में वायु सेना अध्यक्ष एअर मार्शल एन.ए.के. ब्राउन और थल सेना अध्यक्ष जनरल बिक्रम सिंह ने क्रमशः मार्च, 2012 और अक्टूबर, 2012 में बांग्लादेश की यात्रा की। बांग्लादेश के नौसेना प्रमुख वाइस एडमिरल जहीरुद्दौदीन अहमद ने 9-13 जुलाई, 2012 को भारत की यात्रा की। भारतीय नौसैनिक जहाज, आई एन एस सुजाता और आई एन एस वरुण ने बांग्लादेश की सद्भावना यात्रा की।



अफगानिस्तान के राष्ट्रपति श्री हमिद करजई, 12 नवम्बर, 2012 को नई दिल्ली में राष्ट्रपति भवन में आयोजित औपचारिक स्वागत समारोह के दौरान प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह तथा राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के साथ



विदेश मंत्री की सलमान खुशीद द्वारा, 20 आर्टिकुलेटेड बस के प्रथम खेप की चाभी, बंगलादेश की प्रधान मंत्री श्रीमती शेख हसीना को विशेष समारोह के दौरान ढाका में 17 फरवरी, 2013 को सौंपते हुए।

भूटान

भारत और भूटान के बीच घनिष्ठ एवं मैत्रीपूर्ण संबंध है जो आपसी विश्वास और भरोसे पर आधारित है। वर्ष के दौरान जल विद्युत, परिवहन, संचार, अवसंरचना, स्वास्थ्य, शिक्षा और संस्कृति, आईटी उद्योग तथा कृषि इत्यादी सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग में लगातार प्रगति देखी गई।

भारत के राष्ट्रपति के निमंत्रण पर भूटान नरेश महामहिम जिग्मे खेसर नामग्याल वांगचुक के साथ भूटान की महारानी ने गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेने के लिए 23-30 जनवरी, 2013 को भारत की राजकीय यात्रा की।

भूटान के प्रधान मंत्री जिग्मे वाई थिनले 7-10 फरवरी, 2013 को दिल्ली की सरकारी यात्रा पर होंगे। प्रधान मंत्री थिनले ने भारत के महाबोधी समाज की 115 वार्षिक आम बैठक की अध्यक्षता करने के लिए 6-10 सितम्बर, 2012 को उड़ीसा की यात्रा की और साथ ही 21 सितम्बर, 2012 को सांची युनिवर्सिटी ऑफ बुद्धिस्ट एण्ड इंडियन स्टडीज के शिलान्यास समारोह में भाग लेने के लिए मध्य प्रदेश का दौरा किया।

क्वीन मदर डोर्जी वांग्मो वांगचुक ने जयपुर साहित्य उत्सव में भाग लेने के लिए 9-24 जनवरी, 2012 को भारत की यात्रा की। क्वीन मदर आशी संगेम छोदेन वांगचुक ने 9-18 जनवरी, 2013 को भारत की यात्रा की और 10 जनवरी, 2012 को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आईसीसीआर के सहयोग से आयोजित "टेक्सटाइल आर्ट्स फ्रॉम द लैंड ऑफ पीसफुल ड्रैगन" विषयक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

आर्थिक कार्य मंत्री लियोनपों खांडु वांगचुक ने तीन निर्माणधीन जल विद्युत परियोजनाओं के त्वरित विकास के लिए अधिकार प्राप्त संयुक्त समूह (ईजेजी) की बैठक में भाग लेने के लिए भारत की यात्रा की। उन्होंने भूटान के प्रधान मंत्री के विशेष दूत के रूप में 3-6 जून, 2012 को भी भारत की यात्रा की तथा प्रधान मंत्री और वित्त मंत्री से मुलाकात की।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीओओ) मेजर जनरल बाटू शेयरिंग ने 13-17 मार्च, 2012 को भारत की यात्रा की।

विदेश मंत्री श्री सलमान खुरशीद ने 14-15 जनवरी, 2013 को थिम्पु की यात्रा की। उनकी भूटान नरेश, भूटान चौथे नरेश से बातचीत हुई, उन्होंने भूटान के प्रधान मंत्री से मुलाकात की और उनकी आर्थिक कार्य मंत्री से चर्चा हुई।

भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्री श्री प्रफुल पटेल ने मार्च, 2012 में भूटान में यंग प्रेसिडेंट्स अर्गनाइजेशन (वाईपीओ), मुम्बई चैप्टर के 17 सदसीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। हरियाणा के मुख्यमंत्री ने 14-16 दिसम्बर, 2012 को भूटान में एक सरकारी शिष्टमंडल का नेतृत्व किया।

भारत भूटान का सबसे बड़ा व्यापार एवं विकास साझेदार बना रहा क्योंकि इसने भूटान की 10वीं पंचवर्षीय योजना (2008-13) के लिए

3400 करोड़ रुपये की सहायता दी। भारत सरकार भूटान में लगभग 3000 मे.वा. की कुल क्षमता वाली तीन विद्युत परियोजनाओं के निर्माण को भी वित्त पोषित कर रही है। जल विद्युत परियोजनाओं का अनुवीक्षण वाले अधिकार प्राप्त संयुक्त समूह (ईजेजी) ने वर्ष के दौरान नई दिल्ली और थिम्पु में तीन बैठकें की हैं।

भूटान की शाही सरकार के निमंत्रण पर सरकार ने भूटान के लिए स्टैंडबाई क्रेडिट 300 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 1000 करोड़ रुपये कर दिया। 300 करोड़ रुपये की प्रथम किस्त जून, 2012 में जारी की गई थी। स्टैंडबाई क्रेडिट सुविधा के अंतर्गत, भारत भूटान को पांच वर्षों के लिए 5 प्रतिशत की रियायत दर पर ऋण प्रदान करता है।

श्री दाशो दुपथोप के नेतृत्व में भूटान की राष्ट्रीय असेंबली की गरीबी उपशमन समिति के सदस्यों सहित एक 6 सदसीय शिष्टमंडल ने फरवरी, 2012 में बिहार और अरुणाचल प्रदेश की यात्रा की। स्पीकर के नेतृत्व में बिहार विधान सभा और विधान परिषद के एक 11 सदसीय शिष्टमंडल ने 22-29 मई, 2012 को भूटान की यात्रा की।

भूटान की 10 वीं पंचवर्षीय योजना (2008-2013) के दौरान भूटानी छात्रों के भारत में अध्ययन हेतु अधोस्नातक छात्रवृत्तियों के लिए 425 स्लाटों और स्नातकोत्तर के लिए 385 स्लाटों से शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में घनिष्ठ सहयोग परिलक्षित होता है। भूटान को 2012-13 में आईटीईसी के तहत 220 स्लाट और कोलंबो योजना के टीसीएस के तहत 60 स्लाट आबंटित किये गए हैं। कोलंबो योजना के टीसीएस के तहत रॉयल युनिवर्सिटी ऑफ भूटान में विभिन्न महाविद्यालयों को भारत से 30 व्याख्यान भी आबंटित किये गए हैं।

राजदूत छात्रवृत्तियां (2011-12 से 1 करोड़ रुपये) योग्य भूटानी छात्रों को भारत में अध्ययन करने के लिए दिया जाता है और 10 भूटानी छात्रों को भारत के सैनिक विद्यालयों में दाखिला दिया जाता है। नेहरू-वांगचुक छात्रवृत्ति योजना के तहत, 2011-13 में 20 छात्रवृत्तियां प्रदान की गईं, जिसके तहत भूटान के छात्रों को अग्रणी भारतीय विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों में पढ़ने की अनुमति प्रदान की गई।

भारत-भूटान फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित इंडिया-भूटान लिटरेरी फेस्टीवल "माउंटेन इकोज" की तीसरी श्रृंखला आयोजित की गई।

चीन

वर्ष 2012 के दौरान भारत-चीन संबंधों में चौतरफा प्रगति हुई है, इस वर्ष को भारत-चीन मैत्री और सहयोग का वर्ष कहा गया था। प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह ने ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के अवसर पर 29 मार्च, 2012 को नई दिल्ली में चीन के राष्ट्रपति हू जिन्ताओ से मुलाकात की। दोनों नेताओं ने 18 जून, 2012 को लॉस के बोस, मेक्सिको में जी 20 शिखर सम्मेलन के अवसर पर ब्रिक्स के नेताओं की बैठक भी की। प्रधान मंत्री और चीन के प्रधान मंत्री वेन जियाबाओ के बीच 21 जून, 2012 को रियो द जनेरो, ब्राजील



भूटान नरेश जिग्मे खेसेर नामग्याल वांग्चुक 25 जनवरी, 2013 को नई दिल्ली में प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह से मुलाकात करते हुए।



प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह 29 मार्च, 2012 को भारत-चीन मैत्री और सहयोग वर्ष की शुरुआत के दौरान नई दिल्ली में चीन के राष्ट्रपति हू जिन्ताओ के साथ

में रियो+20 शिखर सम्मेलन तथा नोमपेन्ह, कम्बोडिया में 19 नवम्बर, 2012 को 7वें पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन के अवसर पर बैठक हुई।

मंत्रालय स्तर की बैठकों में पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा और चीन के विदेश मंत्री श्री यांग जेची शामिल थे। श्री एस.एम. कृष्णा ने 7-8 फरवरी, 2012 को बिजिंग में नये भारतीय दूतावास परिषर का उद्घाटन करने तथा 5-7 जून, 2012 को प्रधान मंत्री के प्रतिनिधि के रूप में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के राष्ट्राध्यक्षों/शासनाध्यक्षों के 12वें शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए चीन की यात्रा की। विदेश मंत्री के निमंत्रण पर चीन के विदेश मंत्री ने 29 फरवरी- 1 मार्च, 2012 को नई दिल्ली की यात्रा की। दोनों नेताओं ने भारत-चीन-रूस त्रिपक्षीय वार्ता के दौरान जून, 2012 को मास्को में बैठक थी।

जनरल लियांग गुवांगली, चीन के राष्ट्रीय रक्षा मंत्री ने 2-6 सितम्बर, 2012 को भारत की सरकारी यात्रा की। श्री चेन डेमिंग, चीन के वाणिज्य मंत्री ने अपने समकक्ष श्री आनंद शर्मा के साथ भारत-चीन संयुक्त आर्थिक समूह (जेईजी) की 9वीं बैठक की संयुक्त रूप से अध्यक्षता करने के लिए 27 अगस्त, 2012 को भारत की यात्रा की। वाणिज्य और उद्योग एवं वस्त्र मंत्री तथा चीन के राष्ट्रीय विकास और सुधार आयोग के अध्यक्ष श्री झांग पिंग, ने श्री मोंटेक सिंह अहलुवालिया, उपाध्यक्ष, योजना आयोग के साथ दूसरी रणनीतिक आर्थिक वार्ता की सह अध्यक्षता हेतु 28 नवम्बर, 2012 को भारत की यात्रा की। चीन के रेल एवं वित्त मंत्रियों तथा सहायक वाणिज्य मंत्री ने भी रणनीतिक वार्ता में भाग लिया। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार एवं सीमा प्रश्न पर विशेष प्रतिनिधि श्री शिवशंकर मेनन ने 2-4 दिसम्बर, 2012 को बीजिंग की यात्रा की। उन्होंने चीन के विशेष प्रतिनिधि, स्टेट काउंसलर दाई बिंगो से औपचारिक वार्ता के लिए मुलाकात की तथा साथ ही चीन के नेशनल पीपल्स कांफ्रेंस के अध्यक्ष, श्री यु बांगो तथा चीन के विदेश मंत्री श्री यांग जेची से मुलाकात की। स्टेट काउंसलर दाई ने नई दिल्ली में राष्ट्रीय सुरक्षा पर उच्च प्रतिनिधियों की ब्रिक्स बैठक में भाग लेने के लिए 10-11 जनवरी, 2013 को भारत की यात्रा की।

मार्च, 2012 में बीजिंग में कार्यकारी तंत्र की पहली बैठक के साथ जनवरी, 2012 में सीमा प्रश्न पर 15 वें दौर की वार्ता के दौरान हस्ताक्षरित भारत-चीन सीमा मामलों पर परामर्श एवं समन्वय संबंधी कार्यकारी तंत्र की स्थापना संबंधी करार लागू किया गया। इस तंत्र की दूसरी बैठक 29-30 नवम्बर, 2012 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। दोनों शिष्टमंडलों ने दोनों पक्षों के बीच वृहत्तर विश्वास एवं भरोसा स्थापित करने के लिए अमन एवं शांति बहाल करने एवं आगे कदम उठाने के संबंध में विचारों का आदान-प्रदान किया। उन्होंने नाथुला सीमा व्यापार को हाल ही में उदारीकृत बनाने का स्वागत किया और कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए अतिरिक्त मार्ग की शुरुआत करने पर अपनी चर्चा जारी रखी।

यहते से बोलकर चीन वाणिज्य वस्तु क्षेत्र में भारत का सबसे बड़ा व्यापार साझेदार रहा। चीन के प्रधान मंत्री की 15-17 दिसम्बर, 2010 को भारत यात्रा के दौरान दोनों पक्षों ने वर्ष 2015 तक 100

बिलियन अमरीकी डॉलर का एक नया व्यापार लक्ष्य निर्धारित किया। 2011 में दोनों देशों के बीच कुल द्विपक्षीय व्यापार 73.90 बिलियन अमरीकी डॉलर था, (पिछले वर्ष की उसी अवधि के दौरान 19.71 प्रतिशत की वृद्धि) जोकि 27.08 बिलियन अमरीकी डॉलर का व्यापार घाटा हुआ। जनवरी-अक्टूबर, 2012 से कुल द्विपक्षीय व्यापार 55.75 बिलियन अमरीकी डॉलर था। (भारत का चीन को निर्यात- 16.36 बिलियन अमरीकी डॉलर और चीन से आयात- 39.39 बिलियन अमरीकी डॉलर), जिसकी वजह से पिछले वर्ष की उसी अवधि की तुलना में लगभग 81 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई और 20.15 बिलियन अमरीकी डॉलर का व्यापार घाटा हुआ। शीर्षस्थ पर वार्ता सहित चीन के साथ कई वार्ताओं में भारत ने पर्याप्त रूप से अन्टेड आर्थिक क्षमता जुटाने से संबंधित अधिक अनुकूल माहौल बनाने की दृष्टि से संतुलित व्यापार की आवश्यकता पर बल दिया है। भारतीय पक्ष ने इस बात पर बल दिया है कि इस सेवाओं, आईटी और थर्मोसिटिकल जैसे विशेष क्षेत्रों में भारतीय निर्यात के लिए वृहत बाजार पहुँच की आवश्यकता पर बल दिया है। भारत ने अवसंरचना क्षेत्र में चीनी निवेश का भी स्वागत किया है जिससे रोजगार सृजित करने में मदद मिलेगी और साथ ही दोनों देशों के बीच व्यापार घाटे की खाई को पाटा जा सकेगा।

भारत और चीन ने गहन और स्पष्ट विचारों के आदान-प्रदान, वैश्विक आर्थिक स्थिति, संबंधित घरेलू वृहत, आर्थिक स्थितियों, दोनों देशों की माध्यमिक एवं दीर्घावधि एवं आर्थिक एवं सामाजिक विकास योजनाओं के लक्ष्यों और कार्यान्वयन के लिए एक रणनीतिक आर्थिक वार्ता (एसईडी) स्थापित की है। एसईडी की दूसरी बैठक नई दिल्ली में 26 नवम्बर, 2012 को आयोजित की गई। इस बैठक के दौरान नीति समन्वय, अवसंरचना, ऊर्जा, पर्यावरण सुरक्षा तथा उच्च प्रौद्योगिकी पर एसईडी के 5 कार्यकारी समूहों द्वारा प्रस्तुत किये गए प्रस्तावों और सिफारिशों पर विचार किया गया। एसईडी की बैठक में संयुक्त अध्ययन, ऊर्जा दक्षता और रेल में सहयोग पर तीन द्विपक्षीय समझौता ज्ञापनों तथा साथ ही 8 बिजनेस-टू-बिजनेस समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किये गए। भारत-चीन संयुक्त आर्थिक समूह (जेईजी) की 9वीं बैठक 27 अगस्त, 2012 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। दोनों पक्षों ने (i) व्यापार संतुलन पर एक संयुक्त कार्यकारी समूह (जेडब्ल्यूजी); (ii) व्यापार और आर्थिक सहयोग पर पंचवर्षीय योजना पर जेडब्ल्यूजी; तथा (iii) सेवाओं पर जेडब्ल्यूजी का गठन किया।

भारत और चीन ने भारत-चीन के द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा करने के संबंध में एक व्यापक वार्ता तंत्र स्थापित किया है। 2012 में एसईडी और जेईजी के नवीनतम दौर की वार्ता के अतिरिक्त भारत और चीन ने मार्च, 2012 में आतंक विरोधी संयुक्त कार्यकारी समूह के छठे दौर की वार्ता, मई, 2012 में नीति नियोजन वार्ता का पाँचवें दौर, जुलाई, 2012 में सीमा पार नदियों पर विशेषज्ञ स्तरीय तंत्र के छठे दौर की वार्ता तथा नवम्बर, 2012 में विदेश मामलों पर परामर्श का आयोजन किया है। मार्च, 2012 में चीन के प्रधान मंत्री हू जिन्ताओ की प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह के साथ हुई बैठक के दौरान दोनों नेताओं ने अफ्रीका, मध्य एशिया और पश्चिम एशिया पर द्विपक्षीय वार्ता तंत्र स्थापित करने पर सहमति जताई। पश्चिम

एशिया पर भारत-चीन वार्ता का पहला दौर जुलाई, 2012 में आयोजित किया गया और अफ्रीका पर वार्ता का पहला दौर नवम्बर, 2012 में आयोजित किया गया।

सितंबर, 2012 में चीन के रक्षा मंत्री की यात्रा से रक्षा आदान-प्रदान में नई गति का संचार हुआ। 9-13 जुलाई, 2012 को एक भारतीय सीमा दल प्रतिनिधिमंडल ने चीन की यात्रा की। पीपुल्स लिबरेशन आर्मी नेवी (प्लान) प्रशिक्षण जहाज 'जेन ही' ने अपने दूसरी सद्भावना वैश्विक समुद्री यात्रा के दौरान 10-13 मई, 2012 को कोच्ची की यात्रा की। पूर्वी बेड़े के फ्लैग कमांडिंग ऑफिसर रियर एडमिरल अजीत कुमार पी. की कमांड में चार भारतीय नौसैनिक जहाजों, स्वदेश निर्मित मिसाइल स्टील्थ फ्रीगेट शिवालिक, निर्देशित मिसाइल विध्वंसक राणा, निर्देशित मिसाइल कोर्वेट कार्मुक और सक्षम टैंकर बेड़ा ने 13-17 जून, 2012 को शंघाई की यात्रा की।

भारत के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) और चीन के हनबन कन्फुशियस संस्थान मुख्यालय ने अगस्त, 2012 में मंडारिन चीनी के प्रशिक्षण और अध्यापन में सहयोग से संबंधित एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। वार्षिक युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत एक 100 सदस्यीय वाला भारतीय युवा प्रतिनिधिमंडल ने जुलाई, 2012 में चीन की यात्रा की। चीनी युवा प्रतिनिधिमंडल ने नवंबर, 2012 में प्रतिदेयता के आधार पर यात्रा की।

उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ जिले में लिपुलेख दर्रे से होकर कैलाश मानसरोवर यात्रा सुचारु रूप से आयोजित की गई जिसमें सर्वाधिक 774 भारतीय यात्रियों ने जून-सितंबर, 2012 में यात्रा की।

भारत और चीन ने वैश्विक वास्तुकला संबंधी मुद्दों पर सहयोग जारी रखा हुआ है। एक बड़े विकासशील देश और तीव्र विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के रूप में भारत और चीन ने आपसी हितों को साझा किया है जिससे वे ब्रिक्स, जी-20 और जलवायु परिवर्तन वार्ताओं के साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसे मंचों पर एकजुट हुए, जहां भारत वर्ष 2011-12 में एक अस्थायी सदस्य था। दोनों देशों ने विश्व व्यापार संगठन वार्ता के दोहा दौर, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं के सुधार, खाद्य सुरक्षा और ऊर्जा मुद्दों जैसे अन्य महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों पर भी सहयोग जारी रखा हुआ है।

मालदीव

लोकतंत्र को समर्थन देने और एक शांतिपूर्ण और स्थिर वातावरण को सुविधाजनक बनाने के लिए भारत मालदीव की सरकार तथा लोगों से आदान-प्रदान करता रहा है।

वर्ष के दौरान कई उच्च स्तरीय यात्राओं का आदान-प्रदान हुआ। मालदीव के राष्ट्रपति डा. मोहम्मद वाहिद ने 11-15 मई, 2012 तक भारत की राजकीय यात्रा की। अपनी यात्रा के दौरान राष्ट्रपति वाहिद ने 14 मई, 2012 को भारतीय विश्व कार्य परिषद में 'विधिक का नियम - सफल सुधार की पूंजी' पर एक व्याख्यान दिया।

मालदीव के रक्षा व राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्री श्री मोहम्मद नाजीम ने 'रक्षा मेला - भारत 2012' में भाग लेने हेतु 27-30 मार्च, 2012 तक भारत

की यात्रा की। उन्होंने 'ऐरो इंडिया प्रदर्शनी' में भाग लेने हेतु भी फरवरी, 2013 में भारत की यात्रा की। मालदीव के विदेश मंत्री डॉ. अबूल समद अब्दुल्लाह ने 01-4 अप्रैल, 2012 तक भारत की यात्रा की।

एक 3-सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 3-6 सितंबर, 2012 तक भारत की यात्रा की जिसमें परिवहन व संचार मंत्री श्री मोहम्मद शामहीद, आर्थिक विकास मंत्री श्री अहमद मोहम्मद और परिवहन व संचार उप मंत्री कैप्टन अब्दुल लतीफ मोहम्मद शामिल थे। अपनी यात्रा के दौरान प्रतिनिधिमंडल ने नागर विमानन मंत्री तथा जहाजरानी मंत्री से मुलाकात की। पूर्व में वित्त व कोष मंत्री श्री अब्दुल्ला जिहाद की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने भारतीय वित्तीय संस्थानों तथा वाणिज्य उपक्रमों से बैठकें आयोजित करने के लिए 26-29 अगस्त, 2012 तक मुंबई की यात्रा की।

रक्षा मंत्री श्री ए.के. एंटनी ने 15-17 सितंबर, 2012 तक मालदीव का राजकीय दौरा किया। उन्होंने भारत सरकार की सहायता से माले में निर्मित मालदीव राष्ट्रीय रक्षा बल(एम.एम.एन.डी.एफ) अस्पताल 'सेनाहिमा' का उद्घाटन किया और एम.एम.डी.एफ के संयुक्त प्रशिक्षण केन्द्र की आधारशिला रखी।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद ने चौथे सार्क स्वास्थ्य मंत्रियों की बैठक में भाग लेने के लिए 11-12 अप्रैल, 2012 तक मालदीव का दौरा किया।

गृह मंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे ने सार्क गृह मंत्रियों की 5वीं बैठक में भाग लेने हेतु 24-26 सितंबर, 2012 तक मालदीव का दौरा किया। इस अवसर पर मालदीव के गृहमंत्री डा. मोहम्मद जामील अहमद से मुलाकात की। इस यात्रा के दौरान भारत सरकार के सहयोग से मालदीव में राष्ट्रीय पुलिस अकादमी की स्थापना के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

अप्रैल, 2012 में श्रीलंका को शामिल करके भारत-मालदीव संयुक्त तटरक्षक अभ्यास- 'दोस्ती-XI' - एक त्रिपक्षीय रूप में माले तल पर संपन्न हुआ। दोनों देशों के सेनाओं के बीच संयुक्त सैन्य अभ्यास - इक्रूवेरिन-IV नवंबर, 2012 में बेलगाम (भारत) में संपन्न हुआ।

भारत और मालदीव के बीच जारी राजनैतिक आदान-प्रदान के भाग के रूप में मालदीव के पूर्व राष्ट्रपति और मालदीव की डेमोक्रेटिक पार्टी (एम.डी.पी) के नेता श्री मोहम्मद नशीद ने अप्रैल, 2012 में भारत की यात्रा की। सितंबर, 2012 में मालदीव के पूर्व राष्ट्रपति व प्रोग्रेसिव पार्टी ऑफ मालदीव (पी.पी.एम) के नेता श्री मौमून अब्दुल गयूम ने नई दिल्ली की यात्रा की और अगस्त, 2012 में धीवेदी रोगूथूण्डो पार्टी (डी.आर.पी) के नेता श्री अहमद थालमीन अली ने भारत की यात्रा की।

म्यामां

प्रधान मंत्री श्री मनमोहन सिंह ने 27-29 मई, 2012 तक म्यामां की राजकीय यात्रा किया। यात्रा के दौरान बारह करारों और समझौता

ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए। इनमें वायु सेवा करार और भारत द्वारा म्यामां को 500 मिलियन अमेरिकी डालर की ऋण श्रृंखला प्रदान करने के समझौता ज्ञापन, सीमा क्षेत्र विकास, कृषि अनुसंधान और शिक्षा के लिए उन्नत केन्द्र की स्थापना, चावल जैव पार्क की स्थापना, म्यामां सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना, सीमा हाट की स्थापना, एक संयुक्त व्यापार व निवेश मंच की स्थापना, 2012-2015 के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम और दोनों देशों के लिए विचार केन्द्रों और विश्वविद्यालयों के बीच सहयोग शामिल थे।

राष्ट्रीय लोकतंत्र लीग के अध्यक्ष आंग सांग सू की ने नेहरू स्मृति व्याख्यान देने हेतु नवंबर, 2012 में भारत की यात्रा की।

विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद ने 14-16 दिसंबर, 2012 तक म्यामां की यात्रा की। उन्होंने बुद्ध की सांस्कृतिक विरासत पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया, जोकि भारत और म्यामां द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था। विदेश मंत्री ने भारत सरकार द्वारा उपहार में दिए गए सारनाथ बुद्ध की 16 फुट की प्रतिकृति का भी अनावरण किया और उसे यांगून में शवेदागन परिसर में लगाया और बौद्ध सांस्कृतिक विरासत पर एक प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया। यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच रही-टिडीम सड़क परियोजना पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ। विदेश मंत्री ने राहत सहायता और म्यामां के राबिने राज्य में समुदाय निर्माण प्रयासों के लिए 01 मिलियन अमेरिकी डालर की भारतीय सहायता की भी घोषणा की।

योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री मोंटेक सिंह आहलूवालिया ने भारतीय अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंध अनुसंधान परिषद (आई.सी.आई.ई.आर) के शासी बोर्ड के अध्यक्ष डा. इशर जज आहलूवालिया के साथ 20-24 जुलाई, 2012 तक म्यामां की सरकारी दौरा किया। यांगून और नई पाई ताव में उपाध्यक्ष ने 'सुधारों में भारत के अनुभव' और 'राष्ट्रीय योजना प्रक्रिया, गरीबी उपशमन और ग्रामीण विकास' पर संगोष्ठियों को संबोधित किया।

वर्ष के दौरान आधिकारिक स्तर की बैठकों में दिसंबर, 2012 में गृह मंत्रालय की राष्ट्रीय स्तर की बैठक, मई और दिसंबर, 2012 में नव गठित क्षेत्रीय सीमा समिति की दो बैठकें, 2012 में विदेश कार्यालय परामर्श, अक्टूबर, 2012 में सीमा हाट पर संयुक्त बैठक, जून, 2012 में गृह मंत्रालय की क्षेत्रीय स्तर की बैठक और जनवरी, 2013 में रेल सहयोग पर जे.डब्ल्यू.जी की बैठक शामिल है।

भारतीय संसदीय अध्ययन ब्यूरो ने संसदीय कार्य प्रणाली में 30 म्यामी सांसदों और 200 संसदीय कर्मचारियों के लिए उन्मुखीकरण पाठ्यक्रम आयोजित किया। यह क्षमता निर्माण कार्यक्रम भारत का म्यामां में लोकतंत्र स्थान परिवर्तन प्रक्रिया को समर्थन देने की वचनबद्धता का एक हिस्सा था।

म्यामां सशस्त्र बलों के कमांडर-इन-चीफ उप वरिष्ठ जनरल मीन आंग हयंग ने अगस्त, 2012 में भारत का दौरा किया। चीफ ऑफ एयर स्टाफ और चीफ ऑफ स्टाफ कमिटी के अध्यक्ष एयर चीफ मार्शल एन. ए के ब्राउने ने 27 नवंबर-01 दिसंबर तक म्यामां का दौरा किया।

वर्ष के दौरान भारत-म्यामां वाणिज्यिक संबंध सुदृढ़ हुए। वर्ष 2011-12 के लिए द्विपक्षीय व्यापार 1.9 बिलियन अमेरिकी डालर रहा। सीमा व्यापार और लोगों के आपसी संपर्क को बढ़ावा देने के प्रयासों के फलस्वरूप भारत और म्यामां, भारत-म्यामां सीमा के साथ दस जगहों पर सीमा हाट स्थापित करने के लिए सहमत हुए हैं।

वर्ष के दौरान म्यामां में व्यापार और निवेश अवसरों को तलाशने में भारतीय उद्यमियों के बीच बढ़ते रुचि को देखा है। मई, 2012 में प्रधान मंत्री की यात्रा के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण सी.ई.ओ प्रतिनिधिमंडल ने म्यामां का दौरा किया। भारतीय निर्यात संगठन परिसंघ (एफ.आई.ई.ओ) ने 29 कंपनियों की प्रतिभा से यांगून में 3-7 सितंबर, 2012 तक सामान प्रदर्शनी का आयोजन किया। भारतीय वाणिज्य चैम्बर (आई.सी.सी), कोलकाता ने अरुणाचल प्रदेश के कृषि मंत्री की अध्यक्षता में एक व्यापार प्रतिनिधिमंडल जिसमें वरिष्ठ सरकारी कार्यकारी और उत्तर-पूर्वी राज्यों से व्यापारी वर्ग शामिल थे, को अगस्त, 2012 में भेजा। मार्च, 2012 का भारत सामान प्रदर्शनी और मार्च, 2012 में उत्तर-पूर्व अंतर्राष्ट्रीय व्यापार रैली परिसंघ 60 प्रतिभागियों के साथ जिसने यांगून और वापसी से व्यापारी समुदाय से 35 प्रतिनिधियों का शामिल, अन्य महत्वपूर्ण वाणिज्यिक संबंध थे।

भारतीय रिजर्व बैंक (आर.बी.आई) से एक प्रतिनिधिमंडल ने सितंबर, 2012 में म्यामां के सेंट्रल बैंक से बैंकिंग सेक्टर में सहयोग बढ़ाने पर चर्चा हेतु म्यामां का दौरा किया। अगस्त, 2012 में आयात-निर्यात बैंक (एकजिम) से भी एक प्रतिनिधिमंडल ने म्यामां का दौरा किया और बैंकिंग सेक्टर में सहयोग के लिए म्यामां फॉरेन ट्रेड बैंक और अन्य वित्तीय संस्थानों से चर्चा की। यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया ने यांगून में अपना प्रतिनिधि कार्यालय खोला। म्यामां में प्रतिनिधि कार्यालय स्थापित करने वाला वह पहला भारतीय बैंक बना।

भारत म्यामां के विकास संबंधी जरूरतों को प्रशिक्षण के प्रावधान, विशेषज्ञता, ऋण-श्रृंखला और अनुदान सहायता के माध्यम से पुरा करने के लिए वचनबद्ध है। असंख्य परियोजनाएं जिसमें औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र शामिल हैं, पूरे हो चुके हैं और नए परियोजनाएं कार्यान्वयन प्रक्रिया में हैं। इनमें मंडाले में म्यामां सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना, येजीन में शिक्षा और कृषि अनुसंधान के लिए उन्नत केन्द्र और चावल जैव पार्क शामिल हैं। मई 2012 में प्रधान मंत्री द्वारा म्यामां के अपने यात्रा के दौरान की गई घोषणाओं के अनुवर्ती में आईटेक के तहत म्यामां को असंख्य स्लाट प्रदान किए गए और अन्य योजनाओं को प्रति वर्ष 500 तक दोगुना कर दिया गया है।

नेपाल

भारत-नेपाल मित्रता और सहयोग खुली सीमा, लोगों के व्यापक आपसी संबंध और बहुमुखी सामाजिक आर्थिक आदान-प्रदान जैसी विशेषताएं हैं।

भारत, एक स्थिर दलीय लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में नेपाल के राजनैतिक बदलाव और सामाजिक आर्थिक विकास के उद्देश्य के लिए नेपाल सरकार और नेपाल के लोगों के प्रयासों को समर्थन देने



28 मई, 2012 को नए पार्स टॉ में राष्ट्रपति महल में प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह का स्वागत करते हुए म्यामां के राष्ट्रपति श्री टिन सीन।



14 नवंबर, 2012 को नई दिल्ली में विदेश सचिव श्री रंजन मथ्याई और म्यामां, नेशनल लीग फॉर डेमोक्रेसी की अध्यक्ष डाव आंग सांग सू की।

हेतु नेपाल सरकार और मुख्य राजनैतिक पार्टियों के साथ निरंतर काम कर रहा है।

नेपाल के राष्ट्रपति डा. राम बरन यादव 22-29 दिसंबर, 2012 तक भारत के सरकारी दौरे पर आए। उन्होंने भारतीय नेताओं से मुलाकात की। डा. राम बरन यादव ने महामाननीय पंडित मदन मोहन मालवीय की 150वीं जयंती पर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के विशेष दिक्षांत समारोह में भी भाग लिया। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें एल.एल.डी (मानद) उपाधि से सम्मानित किया गया।

10-13 जुलाई, 2012 तक थल सेना अध्यक्ष (सी.ओ.ए.एस) जनरल बिक्रम सिंह के नेपाल दौरे के दौरान नेपाल के राष्ट्रपति ने उन्हें नेपाली आर्मी के मानद जनरल की उपाधि से सम्मानित किया। नेपाली आर्मी के आर्मी स्टाफ चीफ जनरल गौरव एस.जे.बी राणा ने 6-15 जनवरी, 2013 तक भारत की यात्रा की और 08 जनवरी, 2013 को भारत के राष्ट्रपति ने उन्हें भारतीय सेना के मानद जनरल की उपाधि से सम्मानित किया।

सुरक्षा मुद्दों पर भारत-नेपाल द्विपक्षीय परामर्शदात्री समूह की 9वीं बैठक 26 अप्रैल, 2012 को पोखरा में संपन्न हुई। भारत और नेपाल के बीच सप्तकोशी उच्च बांध बहुउद्देश्यी परियोजना और सनकोशी भंडारण सह विचलन योजना पर संयुक्त विशेषज्ञ दल की 13वीं बैठक 23-24 दिसंबर, 2012 को नेपाल में आयोजित की गई। दोनों पक्षों ने मौजूदा कोसी परियोजना के परिचालन, रखरखाव और प्रशासनिक मुद्दों से संबंधित चर्चा की।

नेपाल सरकार को भारतीय सीमा शुल्क लौटाने के संबंध में महानिदेशक स्तर की 8वीं वार्ता 18-20 अप्रैल, 2012 को काठमांडू में आयोजित की गई।

पत्रकारों, विद्वानों, व्यापारियों, अधिकारियों और राजनैतिक नेताओं को सम्मिलित करते हुए वर्ष के दौरान नियमित रूप से यात्राओं/दौरों का आदान-प्रदान हुआ।

नेपाल को भारत द्वारा विकास सहायता के रूप में लघु विकास परियोजना (एस.डी.पी) को 2012 के दौरान और सुदृढ़ किया गया, जोकि नेपाल के साथ भारत द्वारा विकास सहयोग का एक मुख्य आधार है, जनवरी-नवंबर, 2012 के दौरान 65.88 करोड़ रुपए की लागत वाली 29 नए परियोजनाओं के लिए समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए। स्वास्थ्य केन्द्रों और शैक्षणिक संस्थानों को 40 एम्बुलेंस और 8 स्कूल बस भेंट किए गए।

नेपाल के विभिन्न भागों में रुपए 369.12 करोड़ की लागत से 225 एस.डी.पी पर कार्य प्रगति पर है। भारत और नेपाल सामूहिक रूप से लगभग 700 करोड़ रुपए की भारतीय वित्तीय सहायता से तेराई में प्रथम चरण में 6.5 कि.मी. सड़क के कार्यान्वयन पर तेजी से कार्य कर रहे हैं। परियोजना की समग्र समीक्षा अप्रैल, 2012 तथा अक्टूबर, 2012 में नेपाल में आयोजित परियोजना संचालन समिति (पी.एम.सी) की बैठकों में किया गया।

200 करोड़ रुपए की लागत से बीरगंज तथा बिराटनगर में दो एकीकृत जाँच चौकियों (आई.सी.पी) और 680 करोड़ रुपए की

लागत से जयनगर (भारत) से बरदीबास (नेपाल) तथा जोगवानी (भारत) से बिराटनगर (नेपाल) तक भारत सीमा पर दो सीमा पार रेलवे संपर्कों के निर्माण कार्यों में तेजी लाने हेतु प्रयास किए गए।

नेपाल को मानव संसाधन विकास सहयोग के भाग के रूप में भारत सरकार ने वर्ष के दौरान विभिन्न योजनाओं के तहत नेपाली छात्रों को भारत और नेपाल दोनों में ही लगभग 1800 छात्रवृत्तियां प्रदान की। इन छात्रवृत्तियों में नेपाल में महात्मा गांधी छात्रवृत्ति योजना के तहत 10+2 के विद्यार्थियों के लिए 1,000 और स्वर्ण जयंती छात्रवृत्ति योजना के तहत 100 एम.बी.बी.एम/बी.ई/बी.ए/बी.एस.सी शामिल है।

भारत नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारी भागीदार तथा एफ.डी.आई. का स्रोत बना हुआ है। जुलाई, 2012 को समाप्त नेपाली वित्तीय वर्ष के आंकड़ों के अनुसार भारत के साथ द्विपक्षीय व्यापार नेपाल के कुल बाह्य व्यापार का 65.1% दर्ज था। नेपाल में कुल विदेशी निवेश का 46% हिस्सा भारत का है।

भारतीय राजदूतावास, काठमाण्डू और बी.पी. कोइराला भारत-नेपाल आधारशिला (बी.पी.के.एफ) ने वर्ष के दौरान कई कार्यक्रम आयोजित किए। भारत-नेपाल युवा सम्मेलन, 13-14 मई, 2012 तक काठमाण्डू में संपन्न हुआ। जिसमें फिल्म, फैशन, संगीत, साहित्य और व्यापार से प्रतिष्ठित युवा व्यवसायियों ने भाग लिया 'देवानंद को श्रद्धांजलि' उत्सव के भाग के रूप में इस अभिनेता की दो प्रसिद्ध फिल्में - हरे रामा हरे कृष्णा और जॉनी मेरा नाम 08 जुलाई, 2012 को काठमाण्डू के कुमार सिनेमा में दिखाई गई। भारतीय दूतावास और बी.पी.के.एफ ने दक्षिण एशिया न्यास, नेपाल पर्यटन बोर्ड और गोवा सरकार से मिलकर भारत-नेपाल शिल्प प्रदर्शनी आयोजित की जिसका उद्घाटन 27 अप्रैल, 2012 को काठमाण्डू की नेपाल अकादमी में नेपाल के राष्ट्रपति डा. राम बरन यादव द्वारा किया गया। राष्ट्रपति डा. राम बरन यादव ने 30 नवंबर-01 दिसंबर, 2012 तक मान्य मदन मोहन मालवीय के 150वीं वर्षगांठ को मनाने के लिए आयोजित कार्यक्रम का भी उद्घाटन किया। यह कार्यक्रम काठमाण्डू में मान्य मालवीय मिशन द्वारा संस्कृति मंत्रालय, भारत तथा भारतीय दूतावास के सहयोग से आयोजित किया गया था।

पाकिस्तान

प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह ने 08 अप्रैल, 2012 को नई दिल्ली में पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसफ अली जरदारी से मुलाकात की। जब श्री जरदारी अजमेर में निजी यात्रा के दौरान कुछ पल वहां रुके। तब प्रधान मंत्री और राष्ट्रपति जरदारी ने द्विपक्षीय संबंधों और क्षेत्रीय तथा वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की। प्रधान मंत्री ने राष्ट्रपति जरदारी के समस्त आतंकवाद के प्रति भारत की चिंता की पुनरावृत्ति को दोहराया, खासतौर पर मुंबई हमलों के गुहनगारों को सजा दिलाने के संबंध में। दोनों नेता ने 30 अगस्त, 2012 को तेहरान में गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन के दौरान मुलाकात की।

पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम.कृष्णा से 08 सितंबर, 2012 को बहाल वार्ता प्रक्रिया के द्वितीय चरण की प्रगति की समीक्षा और भविष्य की बैठकों को तय करने के लिए पाकिस्तान की विदेश मंत्री श्रीमती



26 दिसंबर, 2012 को नई दिल्ली में नेपाल के राष्ट्रपति डॉ. राम बरन यादव, राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी से मुलाकात करते हुए।



पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी और प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह 08 अप्रैल, 2012 को नई दिल्ली में मुलाकात करते हुए।

हिना रब्बानी खार से इस्लामाबाद में मुलाकात की। बातचीत से पूर्व विदेश सचिवों की बैठक हुई। इस यात्रा के दौरान पांच वर्ष के अंतराल के बाद द्विपक्षीय संयुक्त आयोग और इसके आठ तकनीकी स्तरीय पर समूहों (जैसे— कृषि, शिक्षा, पर्यावरण, स्वास्थ्य, सूचना, आई.टी व टेलीकॉम, विज्ञान व प्रौद्योगिकी और पर्यटन) की एक बैठक संपन्न हुई। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद और पाकिस्तान राष्ट्रीय कला परिषद के बीच एक नए द्विपक्षीय वीजा करार और सांस्कृतिक सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए।

विदेश मंत्री ने मई, 2012 में आंतरिक गृह सचिव वार्ता के दौरान मुंबई आतंकी हमलों के गुनहगारों को उचित कानूनी प्रक्रिया के तहत जल्दी से न्याय दिलाने के संबंध में पाकिस्तान को उनके द्वारा दी गई वचनबद्धताओं का स्मरण कराया। दोनों विदेश मंत्रियों ने द्विपक्षीय व्यापार संबंधों को सामान्य करने हेतु अपनी वचनबद्धताओं की पुनरावृत्ति को दोहराया। दोनों पक्षों बहाल वार्ता प्रक्रिया के अगले दौर को शुरू करने और इसके आठ खण्डों को 2013 में नई दिल्ली में विदेश मंत्रियों के समीक्षा स्तर की होने वाली बैठक से पूर्व पूरा करने पर सहमत हुए मार्च-जुलाई, 2012 के बीच बहाल वार्ता प्रक्रिया के तहत सभी मुद्दों पर दूसरे गोलमेज में वार्ता हुई: (i) आर्थिक मुद्दे (वाणिज्य सचिव); (ii) वूलर बांध/तुलबुल नौवहन परियोजना (सचिव, जल संसाधन); (iii) आतंकवाद-रोध (मुंबई जांच पर प्रगति सहित) और मानवीय मुद्दे (गृह आंतरिक सचिव); (iv) सियाचिन (रक्षा सचिव); (v) सर क्रीक (महासर्वेक्षक-महा/अपर सचिव); (vi) जम्मू व कश्मीर (विशेष सचिव) और (vii) मैत्रीपूर्ण आदान-प्रदान का संवर्धन (विदेश सचिव) इत्यादि सभी मुद्दों पर बहाल वार्ता प्रक्रिया के तहत वार्ता का दूसरा दौर सम्पन्न हुआ।

बहाल वार्ता प्रक्रिया का तीसरा दौर सितंबर, 2012 में इस्लामाबाद में सचिव स्तरीय बातचीत के साथ शुरू हुआ। पाकिस्तान ने भारत द्वारा द्विपक्षीय निवेश पर प्रतिबंध हटाने के निर्णय का स्वागत किया है और सूचित किया है कि जमीनी मार्ग द्वारा व्यापार प्रतिबंध हटाने संबंधित सार मंत्रिमंडल को भेज दिया गया है और बताया गया है कि अक्टूबर, 2012 से पूर्व ही इस आशय से संबंधित निर्णय अधिसूचित होने की संभावना है। साटा के तहत प्रबंधनों अधिमानता प्राप्त व्यवस्थाओं को और मजबूती प्रदान करने और भारत द्वारा साटा के तहत सार्क क्षेत्र के अन्य देशों की तुलना में पाकिस्तानी निर्यातकों को सामान अवसर प्रदान करने के लिए छूट की अनुमति देकर दोनों देशों ने एक दीर्घावधिक योजना बनाई/विकसित की है। पाकिस्तान के पास साटा (संवेदनशील सूची) के तहत (जबकि भारत के साथ 6 अंकों की 614 शुल्क दरें हैं) 6 अंकों की कुल 936 शुल्क दरें हैं।

इस पर सहमति बनी कि पाकिस्तान द्वारा बाघा-अटारी जमीनी मार्ग द्वारा व्यापार पर सभी प्रतिबंधों के हटाने की अधिसूचना के बाद भारत पाकिस्तान के निर्यात हितों को देखते हुए दिसंबर, 2012 से पहले अपनी साटा संवेदनशील सूची को 30: तक नीचे ले आएगा। पूर्व में हुई सहमति के अनुसार, पाकिस्तान भारत को एम.एफ.एन पूर्ण दर्जा देगा। भारत इसके बाद अपनी साटा संवेदनशील सूची अप्रैल, 2013 तक 6 अंक स्तर पर 100 तारीफ नीचे कर देगा। जैसा

कि भारत घटा हुआ संवेदनशील सूची अधिसूचित करता है, पाकिस्तान मंत्रिमंडल का अनुमोदन लेने के पश्चात, 2017 के अंत तक अपने साटा संवेदनशील सूची को अधिकतम 100 शुल्क दौतिक लाने के लिए उसी समय अपने तिथियों को भी अधिसूचित करेगा। इस प्रकार 2017 के अंत से पूर्व भारत और पाकिस्तान दोनों के पास साटा संवेदनशील सूची में 100 (6 अंक स्तर) से अधिक शुल्क दरें से नहीं होगी। 2020 के अंत से पूर्व उनके साटा संवेदनशील सूची के तहत इन छोटी शुल्क दरों को छोड़कर अन्य सभी शुल्क दरों के लिए सर्वाधिक शुल्क दर 5: से अधिक नहीं होगी। बैठक के दौरान दोनों पक्षों ने तीन करारों जैसे सीमा शुल्क सहयोग करार, भारतीय मानक ब्यूरो (बी.आई.एस) और पाकिस्तान मानक व गुणवत्ता नियंत्रण प्राधिकरण (पी.एस.क्यू.सी.ए) के मानकों को पारस्परिक मान्यता प्रदान करना और व्यापार शिकायत निवारण करार पर हस्ताक्षर कर संतोष व्यक्त किया।

नए वीजा करार में व्यापारियों, पर्यटकों, तीर्थयात्रियों, बुजुर्गों और बच्चों की यात्रा को सुगम बनाने के लिए मौजूदा वीजा व्यवस्था को और उदार बनाया गया है। इसमें यात्रा वीजा श्रेणी के तहत स्वीकार्य यात्रा स्थानों को बढ़ाकर पांच (पूर्व में तीन में) करने, 65 वर्ष से ऊपर के व्यक्तियों और एक देश के राष्ट्रीय से विवाहित दूसरे देश के राष्ट्र कि से और 12 वर्ष से नीचे के उनके बच्चों को दो वर्ष का दीर्घावधिक वीजा प्रदान करना शामिल है। इसने 65 वर्ष के वृद्धों को अटारी/बाघा चौकियों पर आगमन पर वीजा और मान्यता/प्राप्त यात्रा संचालकों द्वारा दस से पचास सदस्यों के समूह में यात्रा करने वालों को लिए पर्यटक वीजा देना चालू किया है। इस करार ने पुलिस सत्यापन से छूट देते हुए व्यापारी वीजा प्रदान करता है। इस करार में 5 मिलियन से अधिक अथवा इसके समकक्ष पाकिस्तानी स्थलों को वार्षिक आय अथवा 30 मिलियन से अधिक पाकिस्तानी स्थलों से अधिक अथवा इसके समकक्ष कारोबार व्यापारियों को पुलिस रिपोर्ट से छूट सहित व्यापार वीजा प्रदान करने की व्यवस्था है।

अन्य उच्च स्तरीय द्विपक्षीय वार्ताओं में सियोल में आयोजित (27 मार्च, 2012) परमाणु सुरक्षा शिखर सम्मेलन के अवसर पर दोनों प्रधानमंत्रियों के बीच संक्षिप्त बैठक, 21-25 फरवरी, 2012 तक लोकसभा अध्यक्ष, श्रीमती मीरा कुमार का दौरा, 4-6 नवंबर, 2012 तक सार्क स्पीकर संघ के छठे सम्मेलन के अध्यक्ष के नेतृत्व में संसदीय प्रतिनिधिमंडल का पाकिस्तान दौरा, 5-9 नवंबर, 2012 तक पाकिस्तानी नेट के अध्यक्ष श्री सैयद नय्यर हुसैन बोखारी की अध्यक्षता में संसदीय प्रतिनिधिमंडल का भारत दौरा, 8 जुलाई, 2012 को अफगानिस्तान पर टोक्यो सम्मेलन के दौरान पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा और विदेश मंत्री हिना रब्बानी खार के बीच बैठक, पाकिस्तान के वाणिज्य मंत्री श्री मखदूम अमीन का 12-15 फरवरी, 2012 और 12-15 अप्रैल, 2012 तक फिर से दौरा, प्रधान मंत्री के सलाहकार/पेट्रोलियम और प्राकृतिक संसाधन मंत्री डा. असीम हुसैन का 25-27 जनवरी, 2012 तक और 15-16 अक्टूबर, 2012 तक भारत का दौरा, पाकिस्तान के पंजाब में 'पंजाब अंतर्राष्ट्रीय खेल' में भाग लेने के लिए पंजाब के उप मुख्य मंत्री की अध्यक्षता में एक प्रतिनिधिमंडल का 5-9 नवंबर, 2012 तक

का दौरा, 4-7 मार्च, 2012 तक हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष की अध्यक्षता में एक प्रतिनिधिमंडल का दौरा और 9-16 नवंबर, 2012 तक बिहार के मुख्यमंत्री का कराची, इस्लामाबाद और लाहौर का दौरा शामिल है।

पाकिस्तान द्वारा पाकिस्तान में चल रहे मुंबई आतंकी हमलों की जांच और मुकदमों के संबंध में और बहुत कुछ किया जाना है, ताकि तेजी और सार्थक परिणाम तक पहुँचा जा सके। सरकार ने उच्चतम स्तर पर इस बात को उठाया है कि पाकिस्तान मुंबई आतंकी हमले के गुनहगारों को सजा दिलाने और इन हमलों के पीछे की बड़ी साजिश का फर्दाफाश करने की अपनी वचनबद्धता को जरूर पूरा करे। सरकार ने निरंतर जोर दिया है कि पाकिस्तान की वचनबद्धता का समयानुसार पूरा होने से (दोनों देशों के बीच) न केवल विश्वास और भरोसा स्थापित होगा बल्कि व्यापक रूप से आतंकवाद से लड़ने की पाकिस्तान की वचनबद्धता भी प्रदर्शित होगी।

भारत और पाकिस्तान के बीच संबंध आतंक और हिंसा के मुक्त वातावरण में बढ़ सकते हैं। भारत पाकिस्तान के साथ बल्कि सभी मुद्दों का द्विपक्षीय वार्ता के जरिए समाधान करने के लिए वचनबद्ध है। पाकिस्तान आतंकी समूहों और इसके जमीन पर संबंधित ढांचों पर विश्वसनीय कार्रवाई की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए की गई प्रगति को आगे बढ़ाने की आशा करता है और दोनों देशों द्वारा सहमत सहमान से निर्धारित विश्वजोख्यापक उपाधि को कार्यान्वयन करता है। नियंत्रण रेखा के 8 जनवरी, 2013 को घटित इस प्रकार की घटनाएं ऐसे प्रयासों के लिए चुनौतियां बनी रहेंगी।

श्रीलंका

श्रीलंका के राष्ट्रपति श्री महिंदा राजपक्षे ने सितंबर, 2012 में भारत का सरकारी दौरा किया। दौरे के दौरान उन्होंने राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री से मुलाकात की। उन्होंने सांची अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध विश्वविद्यालय की आधारशिला रखने के लिए आयोजित समारोह में भाग लेने के लिए सांची का भी दौरा किया। 8-9 फरवरी, 2013 को बोधगया और तिरुपति में भी श्रीलंका के राष्ट्रपति की यात्रा प्रस्तावित है।

विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद और श्रीलंका के विदेश मंत्री प्रो. जी. एल. पियरिस की सहअध्यक्षता में 22 जनवरी, 2013 को नई दिल्ली में संयुक्त आयोग की आठवीं बैठक संपन्न हुई। इससे पूर्व 21 जनवरी, 2013 को वरिष्ठ अधिकारियों की विदेश सचिव स्तर पर बैठक हुई। संयुक्त आयोग बैठक के दौरान दोनों पक्षों ने अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद से लड़ने और संशोधित दोहरा कराधान परिहार करार पर हस्ताक्षर किया।

पूर्व में श्रीलंका के विदेश मंत्री प्रो. जी.एल. पियरिस ने आई.ओ. आर-एआरसी मंत्रियों की परिषद की 12वीं बैठक में हिस्सा लेने के लिए 1-3 नवंबर, 2012 तक भारत का दौरा किया। आई.ओ. आर-एआरसी बैठक के साथ-साथ भारत और श्रीलंका के विदेश मंत्रियों के बीच द्विपक्षीय बैठक भी संपन्न हुई।

लोक सभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज की अध्यक्षता में एक 12 सदस्यीय भारतीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल और दोनों सदनों

से विभिन्न प्रमुख राजनैतिक दलों के प्रतिनिधिमंडल सहित 16-21 अप्रैल, 2012 तक श्रीलंका का दौरा किया।

वाणिज्य, उद्योग और वस्त्र मंत्री श्री आनंद शर्मा ने भारतीय उद्योग संघ (सीआईआई) द्वारा सियलोन वाणिज्य मंडल की भागीदारी के साथ 3-5 अगस्त, 2012 तक कोलंबो में आयोजित 'भारतीय प्रदर्शनी-असीम अवसरों की भूमि' के उद्घाटन हेतु 2-5 अगस्त, 2012 तक श्रीलंका का दौरा किया। भारत-श्रीलंका सीईओ के मंच का उद्घाटन सत्र यात्रा के दौरान संपन्न हुआ।

260वीं 'सम्बुद्धत्वा जयंती' को मनाने हेतु संस्कृति, आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्री, कुमारी शैलजा, पवित्र कपिलावस्तु स्मृतिचिह्न को 19 अगस्त, 2012 ले गई। कपिलावस्तु स्मृतिचिह्न का प्रदर्शन श्रीलंका के विभिन्न भागों में 19 अगस्त-11 सितंबर, 2012 तक आयोजित हुआ। यह अनुमानित है कि प्रदर्शनी के दौरान इन स्मृतिचिह्नों को 3.5 मिलियन से भी अधिक भक्तों ने दर्शन किया।

लोक सभा की अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार ने 58वीं राष्ट्रमंडल संसदीय सम्मेलन (सीपीसी) में भाग लेने हेतु 11-15 सितंबर, 2012 तक श्रीलंका का दौरा किया। ग्रामीण विकास और जल व स्वच्छता मंत्री श्री जयराम रमेश ने 11-13 जुलाई, 2012 तक श्रीलंका का दौरा किया। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री शिवशंकर मेनन ने 29 जून, 2012 को कोलंबो का दौरा किया।

तमिल राष्ट्रीय गठबंधन (टीएनए) श्रीलंका का एक सात सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने श्री आर. समपनथन के नेतृत्व में 10-13 अक्टूबर, 2012 तक भारत का दौरा किया। भारत उत्तरी और पूर्वी श्रीलंका में आंतरिक रूप से विस्थापित व्यक्तियों (आईडीपी) के पुनर्वास और पुनःस्थापन प्रयासों और पुनर्निर्माण प्रक्रिया में सममिलित है। श्रीलंका में भारत की आवास, खनन, शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, संपर्क और संस्कृति के क्षेत्र में सहायता इन प्रयासों का ही एक भाग है।

श्रीलंका में आईडीपी के लिए 50,000 मकानों का निर्माण करने संबंधी भारत सरकार की परियोजना कार्यान्वयाधीन है। जुलाई, 2012 में (पायलट परियोजना के तहत) 10,000 मकानों का निर्माण कार्य सफलतापूर्वक पूरा हो गया था। 02 अक्टूबर, 2012 को श्रीलंका के उत्तरी प्रांत के सभी पांच जिलों में आवास निर्माण (बल्कि 49,000 मकानों के लिए) के दूसरे चरण को शुरू किया और वह प्रक्रियाधीन है।

विकास सहायता कार्यक्रम के तहत भारत सरकार उत्तरी श्रीलंका में आधारभूत अवसरचना संबंधी अनेक विकास परियोजनाएं भी चला रही है। इनमें कनकेशनथूराई समुद्र तट का पुनर्वास, जाफना में एक सांस्कृतिक केन्द्र का निर्माण और डीकोमा में 150 बिस्तरों वाले अस्पताल का निर्माण शामिल है। श्रीलंका को भारत सरकार की 167.4 अमरीकी डालर की ऋण श्रृंखला सुनामी से क्षतिग्रस्त कोलंबो-मटारा रेल संपर्क के उन्नयन और मरम्मत कार्य के लिए इस्तेमाल किया गया। कालूतरा-गाले-मटारा के बीच चल रही तटीय रेलवे पटरी का 800 मिलियन अमरीकी डालर की अलग ऋण।

श्रीलंका के उत्तरी प्रांत में रेलवे की पुनर्वास परियोजना कार्यान्वयनाधीन है। इसमें मेदावाहिमा-तलाईमनार रेलवे लाइन, ओमानथार्ई-पलाई-कनकेशननथूराई रेलवे लाइन पर पटरी बिछाना और उत्तरी रेलवे लाइन के लिए सिग्नल और दूरसंचार संयंत्र को स्थापित करना शामिल है। भारत अपने अनुदान पोषण के माध्यम से जीवनोपार्जन बढ़ाना, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन संपर्क, लघु और मध्यम उद्यम विकास और प्रशिक्षण जैसे क्षेत्रों में बड़ी संख्या में लघु विकास परियोजनाओं (एसडीपी) को क्रियान्वित करने के लिए निरंतर सहायता प्रदान कर रहा है। दूराईपाह स्टेडियम का नवीकरण, अत्तुवेली औद्योगिक क्षेत्र का पुनरुत्थान, उत्तरी प्रांत में स्कूलों की मरम्मत में सहायता, साइकिलों की आपूर्ति, व्यवसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना, युद्ध विधवाओं के लिए व्यवसायिक प्रशिक्षण, मन्नार जिले में आईडीपी को मत्स्य उपकरणों की आपूर्ति और किनलोघी तथा मूलाइतीवू साधारण अस्पतालों को उपकरणों की आपूर्ति पूरा किया जा चुका है या फिर क्रियान्वयन के विभिन्न चरणों में है।

भारत और श्रीलंका एक स्वस्थ/मजबूत व्यापार और निवेश संबंध निभा रहे हैं। दक्षिण एशिया में श्रीलंका अब भारत का सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है। दोनों देशों के बीच व्यापार 2000 में 600 मिलियन अमरीकी डालर की साधारण राशि से तेजी से बढ़ा है। वर्ष 2012 में 5 बिलियन अमरीकी डालर तक पहुंचने में जब द्विपक्षीय मुक्त व्यापार करार (एफटीए लागू हुआ। भारत श्रीलंका में सीधे विदेशी निवेश और पर्यटकों का आगमन के रूप में एक बड़े स्रोत के रूप में उभरा है।

भारत श्रीलंका के सांस्कृतिक विरासत के महत्वपूर्ण प्रतिभाओं को पुनः बहाल करने में लगा हुआ है। यह कैंडी के अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध संग्रहालय में एक भारतीय कला भवन को स्थापित कर रहा है और मन्नार में थीरुकेथीसरम मंदिर के पुनः बहाल का कार्य कर रहा है। भगवान बुद्ध द्वारा ज्ञान की प्राप्ति की 2600वीं जयंती (समबुद्धत्व जयंती) मनाने के लिए भारत ने 16वीं शताब्दी की सारनाथ बुद्ध की 16 फिट की प्रतिमूर्ति उपहार में दिया, जोकि विश्व बौद्ध के लिए श्री दलदा मनीगवा अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय में स्थापित किया गया है।





राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी श्रीलंका के राष्ट्रपति श्री महिन्द्रा राजपक्षे से 20 सितंबर, 2012 को नई दिल्ली में राष्ट्रपति भवन में मुलाकात करते हुए



अफगानिस्तान पर दिल्ली निवेश शिखर सम्मेलन के दौरान 28 जून 2012 को अफगानिस्तान के विदेश मंत्री जलमाई रसूल तथा तत्कालीन विदेश मंत्री श्री एस. एम. कृष्णा

ऑस्ट्रेलिया

ऑस्ट्रेलिया के साथ भारत की रणनीतिक साझेदारी को इस वर्ष के दौरान और मजबूत किया गया।

ऑस्ट्रेलिया की प्रधानमंत्री सुश्री जूलिया गिलार्ड ने 15-17 अक्टूबर, 2012 के दौरान भारत की राजकीय यात्रा की, जिसके दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के साथ प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता की। ऊन और ऊनी उत्पाद, गतिशीलता और छात्र कल्याण, सिविल अंतरिक्ष विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा शिक्षा और व्यावसायिक कौशल पर सहयोग करने के लिए इस यात्रा के दौरान 4 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए थे और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए अनेक नई पहलें की गईं। भारत को यूरेनियम की बिक्री किए जाने पर ऑस्ट्रेलियाई सरकार के निर्णय का भारत ने स्वागत किया और एक द्विपक्षीय असैनिक परमाणु सहयोग समझौते पर बातचीत शुरू करने पर सहमत हुआ। प्रधानमंत्री गिलार्ड ने भारत में ऑस्ट्रेलिया के सबसे बड़े सांस्कृतिक उत्सव ओजेड फेस्ट (OZ Fest) का उद्घाटन किया, जो अक्टूबर 2012 और फरवरी 2013 के बीच विभिन्न भारतीय शहरों में आयोजित किया गया था।

अन्य यात्राओं में ऑस्ट्रेलिया के संसाधन, ऊर्जा और पर्यटन मंत्री श्री मार्टिन फर्ग्यूसन की 1-5 दिसम्बर, 2012 के दौरान योजना आयोग के उपाध्यक्ष डॉ. मोंटेक सिंह अहलूवालिया के साथ पहली मंत्रिस्तरीय ऊर्जा वार्ता हेतु यात्रा शामिल है। श्री वेन हंस, कोषाध्यक्ष और उप प्रधानमंत्री ने भी 11 दिसम्बर 2012 को भारत का दौरा किया और वित्त मंत्री पी. चिदंबरम से मुलाकात की। श्री साइमन क्रेन, क्षेत्रीय ऑस्ट्रेलिया, क्षेत्रीय विकास और स्थानीय सरकार तथा संस्कृति मंत्री 3-11 नवम्बर, 2012 के दौरान भारत में थे और उन्होंने क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर को *ऑर्डर ऑफ ऑस्ट्रेलिया* के एक मानद सदस्य के रूप में सम्मानित किया। श्री रिचर्ड माल्स, विदेश मामलों के संसदीय सचिव ने 2 नवम्बर, 2012 को गुडगांव में आयोजित आईओआर - एआरसी मंत्रियों की परिषद की बैठक में ऑस्ट्रेलिया का प्रतिनिधित्व किया। ऑस्ट्रेलिया 2013-2015 के दौरान आईओआर - एआरसी की अध्यक्षता करेगा।

भारत से, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री, श्री सचिन पायलट ने 22-24 मई, 2012 के दौरान सिडनी में सीईबीआईटी ऑस्ट्रेलिया में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया जहां भारत को भागीदार देश का दर्जा प्रदान किया गया। श्री संजय सिंह, सचिव (पूर्व), विदेश मंत्रालय की 21 सितम्बर 2012 को ऑस्ट्रेलिया यात्रा के दौरान वरिष्ठ अधिकारियों की वार्ता (एसओटी) हेतु द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा की गई। नौसेना प्रमुख एडमिरल निर्मल वर्मा ने

29 अप्रैल, 2012 को ऑस्ट्रेलिया की सद्भावना यात्रा की। महानिदेशक, सीएसआईआर ने सीएसआईआर और वॉलॉन्गॉन्ग विश्वविद्यालय के बीच विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग पर चर्चा करने के लिए 1-4 मई, 2012 के दौरान ऑस्ट्रेलिया का दौरा किया और ग्लोबल रिसर्च एलायंस की एक बैठक में भाग लिया, भारत जिसका संस्थापक सदस्य है। डॉ. कौशिक बसु, तत्कालीन मुख्य आर्थिक सलाहकार, वित्त मंत्रालय ने 30 मई - 2 जून, 2012 के दौरान अपनी ऑस्ट्रेलिया यात्रा के दौरान 'द इंडियन इकोनामी: राइजिंग टू ग्लोबल चैलेंजेज' वार्षिक के.आर. नारायणन व्याख्यान दिया।

व्यापक आर्थिक सहयोग समझौते पर वार्ता का चौथा दौर नई दिल्ली में 8-9 नवम्बर, 2012 के दौरान आयोजित किया गया। पहले ऑस्ट्रेलिया - भारत कौशल सम्मेलन द्वारा आयोजित 'कौशल ऑस्ट्रेलिया' सम्मेलन 10-11 जुलाई, 2012 के दौरान पर्थ में 500 से अधिक स्टेकहोल्डरों की भागीदारी के साथ आयोजित किया गया। भारत ने 2020 में ब्रिस्बेन में 5-10 अगस्त 2012 के दौरान आयोजित 34वें आईजीसी में 36वें अंतर्राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक आईजीसी मेजबानी सम्मेलन की बोली जीती।

पूर्व एशिया पर भारत - ऑस्ट्रेलिया वार्ता कैनबरा में 20 सितंबर 2012 को आयोजित की गई। 19-20 जुलाई, 2012 के दौरान पर्थ में एक ट्रेक 1.5 रक्षा सामरिक वार्ता, भारत के रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (आईडीएसए) और ऑस्ट्रेलिया के यूचर डाइरेक्शन इंटरनेशनल (एफडीआई) के नेतृत्व में की गई थी। रवीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती के अवसर पर आईसीसीआर और मडीक विश्वविद्यालय द्वारा 'रवीन्द्रनाथ टैगोर: ए मेरिण्ड माईन्डेड जिनिअस' शीर्षक से एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 7-8 मई 2012 के दौरान पर्थ में आयोजित किया गया था।

ब्रुनेई दारुसलाम

ब्रुनेई दारुसलाम ने 11 जुलाई, 2012 को 10वें आसियान-भारत मंत्रीस्तरीय बैठक में अगले तीन वर्ष के लिए भारत से आसियान देश के संयोजक की जिम्मेदारी ली और नवंबर, 2012 में नोम पेन्ह में आसियान के अध्यक्ष का पदभार संभाला।

प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 19-21 दिसंबर, 2012 के दौरान नोम पेन्ह, कंबोडिया में आयोजित 10वें भारत-आसियान शिखर सम्मेलन के अतिरिक्त समय में ब्रुनेई के सुल्तान से मुलाकात की। ब्रुनेई के सुल्तान ने आसियान-भारत स्मारक शिखर सम्मेलन के लिए 19-21 दिसंबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली का दौरा किया।

श्री एस.एम. कृष्णा, तत्कालीन विदेश मंत्री ने 19-20 अक्टूबर, 2012 के दौरान ब्रुनई का दौरा किया। यह किसी विदेश मंत्री की अब तक की पहली द्विपक्षीय ब्रुनई यात्रा थी। विदेश मंत्री ने ब्रुनई के सुलतान से मुलाकात की और ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग तथा निकट क्षेत्रीय और बहुक्षेत्रीय सहयोग के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग की भारत की इच्छा व्यक्त की।

ब्रुनई के विकास मंत्री, पेहीन एचजे. सुवोई हाजी ओस्मान ने 6-7 सितंबर, 2012 के दौरान आसियान-भारत पर्यावरण मंत्रियों की बैठक में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया; दातिन हीज्ज मासराईनाह, राजदूत (विशेष कार्य) विदेश तथा व्यापार मंत्रालय ने कोची में 16-22 सितंबर, 2012 के दौरान आसियान-भारत विख्यात व्यक्तियों के समूह (एआईईपीजी) की चौथी बैठक में भाग लिया; पेहीन दातो याहया, उद्योग तथा प्राथमिक संसाधन मंत्री ने नई दिल्ली में 17 अक्टूबर, 2012 को आसियान-भारत मंत्रियों की बैठक में भाग लिया; ऊर्जा मंत्री पेहीन यासमीन बिन हाजी उमर ने नई दिल्ली में 5-7 नवंबर, 2012 के दौरान नवीन तथा नवीकरणीय ऊर्जा पर आसियान-भारत मंत्रिस्तरीय बैठक में भाग लिया। ब्रुनई के एक दल ने नवंबर-दिसंबर, 2012 के महीने के दौरान इंडोनेशिया से भारत की आसियान-भारत कार रैली में हिस्सा लिया।

आईसीसीआर ने 30 नवंबर, 2012 को एक मणिपुरी नृत्य गायन और ब्रुनई में 6-13 दिसंबर, 2012 के दौरान आसियान और भारतीय कलाकारों की पेंटिंग की प्रदर्शनी 'विलय रूपक' की मेजबानी की। एक भारतीय सूचना-प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ को दूरसंचार क्षेत्र में प्रतियोगी नीतियों पर कार्य करने के लिए ब्रुनई भेजा गया। भारतीय सेना के एक अधिकारी ने ब्रुनई में जनवरी से अक्टूबर, 2012 के दौरान द्वितीय कमान्ड एण्ड स्टॉफ कोर्स में भाग लिया।

कम्बोडिया

इस वर्ष के दौरान भारत तथा कम्बोडिया ने अपने संबंधों को विस्तार तथा गहराई दी।

प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने नॉम पेन में आयोजित 10वें आसियान-भारत शिखर सम्मेलन और 7वें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (इएएस) में भाग लेने के लिए 18-20 नवंबर, 2012 के दौरान कम्बोडिया जाने वाले एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई की। कम्बोडिया के प्रधान मंत्री ने 8 मंत्रियों के साथ आसियान-भारत स्मारक शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए 19-21 दिसंबर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया। दोनों प्रधान मंत्रियों ने शिखर सम्मेलन के अतिरिक्त समय में द्विपक्षीय बैठक की।

पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम.कृष्णा ने 10वें आसियान-भारत विदेश मंत्रियों की बैठक, दूसरे पूर्वी एशियाई विदेश मंत्रियों के शिखर सम्मेलन की बैठक और 19वें आसियान क्षेत्रीय मंत्रीस्तरीय बैठक में भाग लेने के लिए 10-12 जुलाई, 2012 के दौरान नॉम पेन की यात्रा की। श्री आनंद शर्मा, वाणिज्य, उद्योग तथा वस्त्र मंत्री ने 44वें आसियान आर्थिक मंत्रियों (ईएएम) की बैठक में भाग लेने के लिए 29-31 अगस्त, 2012 के दौरान सिएम रिप, कम्बोडिया की यात्रा की और कम्बोडिया के वाणिज्य मंत्री श्री चाम प्रासिद्ध सहित अपने

समकक्षों के साथ मुलाकात की। श्री आरपीएन सिंह, पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस मंत्रालय में राज्य मंत्री ने 10-13 सितंबर, 2012 के दौरान 30वें आसियान ऊर्जा मंत्रियों की बैठक (एमएमईएम) में भाग लिया।

कम्बोडिया के उप प्रधान मंत्री तथा विदेश व अंतर्राष्ट्रीय सहयोग मंत्री श्री हार नामहेंग ने नई दिल्ली मेंकांग गंगा सहयोग की छठी मंत्रिस्तरीय बैठक में भाग लेने के लिए 3-4 सितंबर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया। उनकी विदेश मंत्री के साथ एक द्विपक्षीय बैठक हुई। डॉ. चाम प्रासिद्ध, कम्बोडिया के वरिष्ठ मंत्री तथा वाणिज्य मंत्री ने गुवाहाटी में आसियान-भारत कार रैली, 2012 के उद्घाटन समारोह के साथ-साथ नई दिल्ली में द्वितीय आसियान-भारत व्यापार मेला और व्यापार निर्वाचिका सभा (आईएबीएफ) में भाग लेने के लिए 17-21 नवंबर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया। वाणिज्य, उद्योग तथा वस्त्र मंत्री श्री आनंद शर्मा से उनकी द्विपक्षीय बैठक हुई।

भारत और कम्बोडिया ने सूचना प्रौद्योगिकी, अंग्रेजी भाषा तथा उद्यमशीलता के लिए संस्थानों की स्थापना सहित कृषि जल प्रबंधन ऊर्जा तथा संचार और क्षमता निर्माण में तकनीकी सहायता परियोजनाओं के माध्यम से सहयोग को सुदृढ़ किया। सीएम रिप में टा प्रोहम विरासत स्थल पर पुनर्उत्थान परियोजना भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा चलाए जाने के साथ ही वर्ष के दौरान सांस्कृतिक सहयोग विकसित हुए। शांति तथा बारूदी सुरंगें हटाने के कार्यक्रमों में रॉयल कम्बोडियन सशस्त्र सेना (आरसीएएफ) को भारत द्वारा प्रशिक्षण प्रदान करने के साथ ही रक्षा सहयोग में तेजी आई।

फिजी

इस वर्ष के दौरान फिजी के साथ भारत के पारंपरिक और मित्रवत संबंधों को और मजबूत किया गया।

फिजी के अंतरिम मंत्री कोमोडोर जोसाइया बोरेक बैनीमारामा ने नई दिल्ली में 24-25 अप्रैल, 2012 के दौरान हुई अंतर्राष्ट्रीय चीनी संगठन/अंतर्राष्ट्रीय चीनी परिषद की बैठक हेतु फिजी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करते हुए भारत का दौरा किया। प्रधान मंत्री बेनीमारामा ने प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह से मुलाकात की और तत्कालीन वित्त मंत्री श्री प्रणव मुखर्जी तथा कृषि मंत्री श्री शरद पवार से मिले। फिजी के प्रधान मंत्री सितंबर, 2012 में पुनः एक निजी दौरे पर भारत आए जिसके दौरान वे पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा से मिले।

फिजी के राष्ट्रपति रातु इपेली नाइला तिकाउ 5-8 अगस्त, 2012 के दौरान भारत की निजी यात्रा पर आए और 7 अगस्त, 2012 को राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से मुलाकात की और वे विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री ई. अहमद से मिले।

डॉ. जीको फताफेही लुबेनी, सामाजिक कल्याण, महिला तथा गरीबी उन्मूलन मंत्री ने जून, 2012 में बेयर फूट कॉलेज, तिलोनिया, राजस्थान का दौरा किया जहां फिजी की 10 ग्रामीण महिलाओं ने आईटीईसी कार्यक्रम के तहत छह महीने के एक पाठ्यक्रम में भाग लेते हुए 'सोलर इंजिनियर्स' प्रशिक्षण प्राप्त किया।

भारत ने फिजी के कीडनी फाउन्डेशन को डायलिसिस मशीनों की व्यवस्था, फिजी के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय को एक मशीनीकृत गन्ना पिसाई एकक की आपूर्ति, सुवा शहर में मोबाइल पुस्तकालय वाहन हेतु सहायता और महिलाओं के लिए सिलाई मशीनों की आपूर्ति सहित फिजी में सामाजिक क्षेत्रों में क्षमता निर्माण के लिए फिजी सरकार तथा अन्य संगठनों के साथ मिलकर काम किया। भारत सरकार ने पश्चिमी प्रभाग जो अप्रैल, 2012 में बाढ़ से बरबाद हो गया था, में राहत कार्यों के लिए 200,000 अमरीकी डॉलर का अंशदान भी दिया।

इंडोनेशिया

सांस्कृतिक और वाणिज्यिक संपर्कों की नींव पर आधारित भारत-इंडोनेशिया रणनीतिक भागीदारी को सुदृढ़ किया गया।

इंडोनेशिया के राष्ट्रपति डॉ. एच. सुशीलो बांगबांग युद्धोयोने भारत – आसियान स्मारक शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए 19-21 दिसंबर, 2012 के दौरान 6 मंत्रियों, सांसदों और पदाधिकारियों के साथ भारत के दौरे पर आए। इंडोनेशिया के व्यापार मंत्री श्री गीता विरजवान ने 18 दिसंबर, 2012 को नई दिल्ली में द्वितीय भारत-आसियान व्यापार मेले में भाग लिया।

इंडोनेशिया के विदेश मंत्री डॉ. मार्टी एम. नातालेगावा ने पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा के साथ संयुक्त आयोग के चौथे दौर की बैठक के लिए 27 जुलाई, 2012 को भारत का दौरा किया जिसके दौरान दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय संबंधों में विकासों का जायजा लिया और आगे सहयोग के लिए क्षेत्रों की पहचान की। इंडोनेशिया के विदेश मंत्री ने प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह से मुलाकात की और इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स में भाषण दिया। इस यात्रा के दौरान एक संशोधित दोहरे कराधान बचाव समझौते पर हस्ताक्षर किया गया।

रक्षा मंत्री श्री ए.के.एंटेनी ने पहली मंत्रीस्तरीय द्विवार्षिक रक्षा वार्ता का उद्घाटन करने के लिए 15-17 अक्टूबर, 2012 के दौरान इंडोनेशिया की यात्रा की। इससे पहले तीसरे संयुक्त रक्षा सहयोग समिति की बैठक में रक्षा क्षेत्र में सहयोग पर चर्चा हुई।

संस्कृति मंत्री, कुमारी शैलजा ने 18-19 सितंबर, 2012 के दौरान योग्यकर्ता में पांचवे एएसईएम संस्कृति मंत्रियों की बैठक में भाग लिया। स्वास्थ्य मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री सुदीप बंदोपाध्याय ने 4 सितंबर, 2012 को योग्यकर्ता में स्वास्थ्य मंत्रियों की 30वीं बैठक और डब्ल्यूएचओ दक्षिणपूर्व एशिया के लिए क्षेत्रीय समिति के 65वें सत्र में भाग लिया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री डॉ. (श्रीमती) डी. पुंदेश्वरी ने 5 जुलाई, 2012 को योग्यकर्ता में आयोजित पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन, शिक्षा मंत्रियों की पहली बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई की जिसके दौरान शिक्षा पर संयुक्त कार्य दल की दूसरी बैठक हुई।

इंडोनेशिया की संसद के अध्यक्ष मार्जुबी अली ने नई दिल्ली में 29 जुलाई – 1 अगस्त, 2012 के दौरान आसियान-भारत संसदीय संघ प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई की और वे अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार

से मिले। इंडोनेशिया के रिजनल हाउस आफ रिप्रजेंटेटिव से अन्य संसदीय प्रतिनिधिमंडलों के दौरे में 8-11 अगस्त, 2012 के दौरान लेजिस्लेटिव काउन्सिल, 22-29 मई, 2012 के दौरान ला फार्मुलेशन कमिटी और 29 मई से 4 जून, 2012 के दौरान उद्योग, ऊर्जा तथा खान समिति के दौरे शामिल थे।

बाली में 4-5 जून, 2012 के दौरान आयोजित तेल एवं गैस पर संयुक्त कार्य दल की पहली बैठक में नीति, प्रौद्योगिकी तथा अनुसंधान एवं विकास के मुद्दे पर सूचना के आदान-प्रदान में सहयोग पर सहमति हुई। समुद्र और मत्स्य पालन पर संयुक्त तकनीकी समिति की पहली बैठक 6-7 दिसंबर, 2012 के दौरान जकार्ता में हुई।

वर्ष 2011-12 में द्विपक्षीय व्यापार बैठक 21.30 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया जिससे इंडोनेशिया आसियान में भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापार भागीदार बन गया। भारत इंडोनेशिया से ताड़ के कच्चे तेल का सबसे बड़ा खरीदार है। इंडोनेशिया भारतीय कंपनियों के लिए विशेषकर वस्त्र, इस्पात, आटोमोटिव, बैंकिंग और संसाधनों के क्षेत्रों में निवेश का एक बड़ा देश बना रहा। सीआईआई और वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय ने 6-8 मार्च, 2012 के दौरान जकार्ता में एक 'इंडिया शो' का आयोजन किया। जुलाई, 2012 में एक भारतीय व्यापार मंच की शुरुआत की गई और इंडोनेशिया चैंबर्स ऑफ कामर्स, कोलकाता और जकार्ता चैंबर्स ऑफ कामर्स की भागीदारी से जकार्ता में 24 अक्टूबर, 2012 को एक भारत आसियान व्यापार सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

रविन्द्र नाथ टैगोर की एक आवक्ष मूर्ति 26 नवंबर, 2012 को योग्यकर्ता के बोरोबदूर मंदिर में संस्थापित की गई। महात्मा गांधी की 143वीं जयंती और अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाने के लिए प्रथम महात्मा गांधी मेमोरियल व्याख्यान 2 अक्टूबर, 2012 को उप राष्ट्रपति प्रो. डॉ. बुदियोनो द्वारा दिया गया।

आईएनएस, सुदर्शनी भारतीय नौसेना का पाल प्रशिक्षण जहाज ने आसियान देशों के साथ भारत के ऐतिहासिक समुद्री संपर्कों का उत्सव मनाने के लिए भारत आसियान स्मारक वर्ष कार्यक्रम के एक भाग के रूप में अक्टूबर-नवंबर, 2012 में इंडोनेशिया के पदांग, बाली और मनाडो की यात्रा की और योग्यकर्ता में भारत आसियान कार रैली को झंडा दिखलाकर रवाना किया गया।

लाओ पीडीआर

इस वर्ष के दौरान द्विपक्षीय संबंध विकसित होते रहे।

प्रधान मंत्री थेंगसिंग थम्मापुंग ने भारत आसियान शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए 20-21 दिसंबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली की यात्रा की और प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के साथ एक द्विपक्षीय बैठक की। वे बोधगया भी गए।

श्री सलमान खुरशीद ने 5-6 नवंबर, 2012 के दौरान बीएनटीयेन में सम्पन्न एसएसईएम9 शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया और वैश्विक मामले तथा एसएसईएम की भविष्य की



प्रधान मंत्री डॉ मनमोहन सिंह 17 अक्टूबर, 2012 को आस्ट्रेलिया की प्रधान मंत्री श्रीमती जुलिया गिलार्ड के साथ उनकी भारत यात्रा के दौरान

दिशा पर भाषण दिया। लाओ के उप प्रधान मंत्री तथा विदेश मंत्री डॉ. युंगलोउन सिसोउलिथ और लाओ के प्रधान मंत्री श्री थेंगसिंग थम्माबोंग के साथ द्विपक्षीय बैठक की।

डॉ. योंगलाउन सिसोउलिथ, उप प्रधान मंत्री और विदेश मंत्री ने 4 सितंबर, 2012 को नई दिल्ली में आयोजित मेकांग गंगा सहयोग पर 6ठी मंत्रीस्तरीय बैठक में भाग लिया और वे विदेश मंत्री से मिले।

2 मई, 2012 को बिएनतियान में आयोजित भारत तथा लाओ पीडीआर के बीच पहली विदेश कार्यालय परामर्शों का नेतृत्व श्री संजय सिंह, सचिव (पूर्वी) विदेश मंत्रालय और श्री बुऑंगकेयुट सांगसोमासाक, लाओस के उप विदेश मंत्री द्वारा किया गया। सचिव (पूर्वी) ने डॉ. थोआंगलोउन सिसोउलिथ, उप प्रधान मंत्री तथा विदेश मंत्री से मुलाकात की तथा आसियान मामलों का कार्य देख रहे उप विदेश मंत्री श्री आलुंकेव कीट्टीखोउन के साथ परामर्श किया।

श्री एम. कृष्णास्वामी की अगुवाई में एक 5 सदस्यीय भारतीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने 'सतत विकास हेतु भागीदारी' नामक विषय पर 3-4 अक्टूबर, 2012 के दौरान बिएनतियान में आयोजित 7वें एशिया यूरोप संसदीय भागीदारी (एएसईपी7) में भाग लिया।

सड़क परिवहन तथा राजमार्ग मंत्रालय के एक प्रतिनिधिमंडल ने भारत म्यामां और थाइलैण्ड के बीच त्रिपक्षीय राजमार्ग पर चर्चा के लिए और लाओस तथा कम्बोडिया तक इसके विस्तार के लिए और भारत-म्यामां-लाओस-वियतनाम राजमार्ग के विकास के लिए 3-5 जुलाई, 2012 के दौरान बीएन्तीयान, लाओ पीडीआर में आयोजित 21वें आसियान सड़क परिवहन कार्यसमूह की बैठक में हिस्सा लिया।

मलेशिया

पारंपरिक मित्रता की विशेषता वाले मलेशिया के साथ द्विपक्षीय संबंधों को इस वर्ष के दौरान और सुदृढ़ किया गया। मलेशिया के प्रधान मंत्री नजीब तुन रजाक ने आसियान-भारत स्मारक सम्मेलन के लिए 20-21 दिसंबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली का दौरा किया और प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के साथ द्विपक्षीय बातचीत की।

श्री एन.एन. मीणा, वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री ने भारतीय अंतर्राष्ट्रीय बैंक की शुरुआत और सामान्य बीमा निगम के प्रचालन के लिए 11-12 जुलाई, 2012 के दौरान मलेशिया की यात्रा की। श्री सत्य नारायण सर्वेक्षण, सड़क परिवहन तथा राजमार्ग मंत्रालय में राज्य मंत्री ने पुतराजया में द्वितीय आसियान-भारत कार रैली को झंडा दिखलाकर रवाना करने के लिए और मलेशिया के कनफेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्रिज एण्ड एशियन स्ट्रैटजी लीडरशीप इंस्टिट्यूट द्वारा आयोजित आसियान-भारत संपर्क शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए 28-30 नवंबर, 2012 के दौरान मलेशिया का दौरा किया। श्री वयालार रवि, प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री ने भारतीय कामगारों से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए तथा प्रवासी भारतीय दिवस, 2013 को बढ़ावा देने के लिए 25-26 दिसंबर, 2012 के दौरान क्वालालंपुर का दौरा किया।

टैन श्री वनार्ड डोमपोक, मलेशिया के वृक्षारोपण, उद्योग तथा उपभोक्ता वस्तु मंत्री ने ताड़ के तेल, प्राकृतिक रबर, लकड़ी तथा फाइबर के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए एक कार्यात्मक दौरे पर 3-8 जून, 2012 के दौरान दिल्ली और मुंबई आने वाले एक प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई की। मलेशिया के कृषि मंत्री दातुक सेरी नोह बिन उमर ने आसियान भारत कृषि मंत्रियों की दूसरी बैठक के लिए और आसियान इंडिया एग्री एक्सपो के लिए 17-19 अक्टूबर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया। मलेशिया के प्राकृतिक संसाधन, तथा पर्यावरण मंत्री श्री डगलस उग्गाह एमबास ने हैदराबाद में संपन्न हुए जैव विविधता पर पक्षकारों के 11वें अभिसमय के लिए 17-19 अक्टूबर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया। मलेशिया के ऊर्जा हरित प्रौद्योगिकी तथा जल मंत्री दातो श्री पीटर सिन पाह कुई ने पुनर्नवीकरणीय ऊर्जा पर भारत-आसियान मंत्रियों की बैठक के लिए 5-9 नवंबर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया जिसके दौरान भारत और मलेशिया के बीच पुनर्नवीकरणीय ऊर्जा में सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। मलेशिया के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार तथा उद्योग मंत्री दातो श्री मुस्तपा मुहम्मद ने 12-16 दिसंबर, 2012 के दौरान हैदराबाद तथा मुंबई आनेवाले एक व्यापार तथा निवेश मिशन की अगुवाई की।

इस वर्ष के दौरान भारत मलेशिया रक्षा संबंध और मजबूत हुए। मलेशिया की थल सेना तथा नौसेना के प्रमुखों ने अप्रैल, 2012 में भारत की यात्रा की। भारतीय नौसैनिक जहाजों - अप्रैल, 2012 में आईएनएस महादेई; जून, 2012 में आईएनएस राणा, आईएनएस शक्ति, आईएनएस शिवालिक और आईएनएस कार्मुख और अक्टूबर, 2012 में आईएनएस सुजाता और आईसीजीएस, वरुणा ने मलेशिया के बंदरगाहों पर नियमित ठहराव (पोर्टऑफकाल) किया। प्रथम द्विपक्षीय कमांड पोस्ट अभ्यास हरीमोउशक्ति, अक्टूबर, 2012 में क्वालालंपुर में आयोजित किया गया। पांचवी आईएएफ - आरएमएएफ एयर स्टॉफ वार्ता दिसंबर, 2012 में हुई और तीसरी आर्मी टू आर्मी स्टाफ वार्ता दिसंबर, 2012 में क्वालालंपुर में आयोजित की गई।

1 जुलाई, 2011 को भारत मलेशिया व्यापक आर्थिक सहयोग करार (सीईसीए) लागू होने के साथ ही आर्थिक और व्यापारिक संबंध जो द्विपक्षीय संबंधों के बड़े स्तंभ बने रहे हैं, को प्रोत्साहन मिला। वर्ष 2011 में 32.7 प्रतिशत की वृद्धि के साथ द्विपक्षीय व्यापार में अत्यधिक वृद्धि हुई। यह 12.5 बिलियन अमरीकी डॉलर की उंचाई तक पहुंच गया। भारत मलेशिया सीईओ मंच की चौथी बैठक 8 जून, 2012 को इस्कंदार में हुई और 5वीं बैठक 19 दिसंबर, 2012 को नई दिल्ली में हुई।

आतंकवाद का मुकाबला करने और अंतर्राष्ट्रीय अपराधों पर पहली संयुक्त कार्य दल की बैठक 4-5 अक्टूबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली में हुई और यह इन महत्वपूर्ण क्षेत्र में आगामी आदान-प्रदानों और सहयोग के लिए संस्थानिक तंत्र का कार्य करेगा।

भारत तथा मलेशिया ने पुत्तराजया में 9 मई, 2012 को संशोधित दोहरा कराधान बचाव करार (डीटीएए) पर हस्ताक्षर किए। संशोधित डीटीएए दिसंबर, 2012 से लागू हो गया है।

न्यूजीलैण्ड

श्रीमती मीरा कुमार, अध्यक्ष, लोक सभा ने 13-17 अप्रैल, 2012 के दौरान न्यूजीलैण्ड जाने वाले एक संसदीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया जिसके दौरान वे अध्यक्ष डॉ. लॉकवुड स्मिथ, कार्यकारी प्रधान मंत्री बिल इंग्लिश और वेलिंग्टन की मेयर सेलीआ वाड-ब्राउन से मिलीं तथा गुटनिरपेक्ष महिला सांसदों से बातचीत की।

श्री स्टेवन जोयसे, तृतीयक शिक्षा, कौशल तथा रोजगार मंत्री ने भारत-न्यूजीलैण्ड शिक्षा परिषद (आईएनजेडईसी) के उद्घाटन बैठक के लिए भारत का दौरा किया। व्यावसायिक प्रशिक्षण, संयुक्त अनुसंधान, छात्रों के आदान-प्रदान, आईसीटी और वेलिंग्टन के विक्टोरिया विश्वविद्यालय में एक नए न्यूजीलैण्ड-भारत अनुसंधान संस्थान की स्थापना करने संबंधी पांच समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए। मंत्री जोयसे और नागर विमानन मंत्री श्री अजीत सिंह भारत-न्यूजीलैण्ड विमानन व्यवस्था करार पर हस्ताक्षर के साक्षी बने। सुश्री केट विल्किंसन, संरक्षण मंत्री ने जैव विविधता पर अभिसमय पर पक्षकारों के ग्यारहवें सम्मेलन के लिए तथा द्विपक्षीय बातचीत के लिए 15-23 अक्टूबर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया। श्री डेविड कार्टर, प्राथमिक उद्योगों के मंत्री ने 24 नवंबर - 2 दिसंबर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया और वे कृषि मंत्री श्री शरद पवार तथा वाणिज्य, उद्योग तथा वस्त्र मंत्री श्री आनंद शर्मा से मिले। उन्होंने कृषि सहयोग बढ़ाने के लिए पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश का भी दौरा किया।

भारत - न्यूजीलैण्ड विदेश कार्यालय परामर्श श्री सजय सिंह, सचिव (पूर्वी), विदेश मंत्रालय तथा श्री जॉन एलेन, मुख्य कार्यकारी, विदेश तथा व्यापार मंत्रालय के बीच 24 सितंबर, 2012 को विलिंग्टन में सम्पन्न हुए।

सचिव, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने 21-22 अगस्त, 2012 के दौरान विलिंग्टन में आयोजित हुए अंतर्राष्ट्रीय महाद्वीपीय वैज्ञानिक ड्रीलिंग कार्यक्रम के गवर्नर्स के एसेंबली के 17वें वार्षिक बैठक के लिए न्यूजीलैण्ड का दौरा किया। कृषि मंत्रालय के एक प्रतिनिधिमंडल ने वार्षिक तकनीकी क्वारंटाइन बैठक के लिए 30 अक्टूबर से 3 नवंबर, 2012 के दौरान न्यूजीलैण्ड का दौरा किया। रक्षा मंत्रालय-विदेश मंत्रालय के एक प्रतिनिधिमंडल ने आसियान क्षेत्रीय मंच रक्षा पदाधिकारियों के वार्तालाप तथा आत्मविश्वास वर्धक उपाय तथा निवारक राजनय की अंतर-सत्रीय समर्थन समूह की बैठक के लिए 6-10 मई, 2012 के दौरान विलिंग्टन का दौरा किया। उप महानिदेशक की अगुवाई में एक आईडीएसए प्रतिनिधिमंडल ने एशिया-न्यूजीलैण्ड फाउन्डेशन की मेजबानी में क्षेत्रीय तथा द्विपक्षीय मुद्दों पर ट्रैक - II बातचीत के लिए 24-25 अक्टूबर, 2012 के दौरान न्यूजीलैण्ड का दौरा किया।

भारत तथा न्यूजीलैण्ड के बीच मुक्त व्यापार करार के लिए 8वें दौर की बातचीत जून, 2012 में हुई।

एक 15-सदस्यीय आईसीसीआर गुजराती लोक नृत्य दल ने दीवाली उत्सव, 2012 के दौरान कला के प्रदर्शन के लिए 11-12

अक्टूबर, 2012 के दौरान न्यूजीलैण्ड का दौरा किया तथा न्यूजीलैण्ड के प्रधान मंत्री जॉल केई द्वारा ऑकलैण्ड दीवाली उत्सव का उद्घाटन किया गया।

पापुआ न्यू गिनी

भारत तथा पापुआ न्यू गिनी के बीच गर्मजोशी भरा संबंध है। इस वर्ष के दौरान द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ाने के लिए कदम उठाए गए।

पीएनजी के व्यापार मंत्री श्री रिचर्ड मारु ने आगरा में भागीदारी शिखर सम्मेलन में हिस्सा लिया और जनवरी, 2013 में वाणिज्य, उद्योग तथा वस्त्र मंत्री श्री आनंद शर्मा से मिले। इस वर्ष के दौरान द्विपक्षीय व्यापार का विस्तार 240 मिलियन अमरीकी डॉलर तक हो गया। एक व्यापार संवर्धन सप्ताह तथा भारतीय उत्पादों की प्रदर्शनी आयोजित की गई। पीएनजी के एक व्यापार/निवेश प्रतिनिधिमंडल ने नवंबर, 2012 में नई दिल्ली का दौरा किया। पेट्रोनेट, ओवीएल तथा इंडियन ऑयल का एक संयुक्त प्रतिनिधिमंडल प्राकृतिक गैस क्षेत्र में सहयोग की संभावनाओं का पता लगाने के लिए दिसंबर, 2012 में पीएनजी गया।

भारत ने पीएनजी को बायोमैट्रिक यूआईडी कार्ड तैयार करने में सहयोग का प्रस्ताव किया है।

भारत ने पीएनजी को 30 आईटीईसी और टीसीएस छात्रवृत्तियां दी हैं।

फिलीपीन्स

प्रधान मंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने नॉम पेन में 18-20 नवंबर, 2012 के दौरान आयोजित भारत-आसियान शिखर सम्मेलन के अवसर पर राष्ट्रपति बेनिग्नो अक्विनो से मुलाकात की। फिलीपीन्स के उप राष्ट्रपति श्री जेजोमार सी. विनय ने आसियान भारत स्मारक शिखर सम्मेलन के लिए एक उच्च अधिकारप्राप्त प्रतिनिधिमंडल के साथ 18-21 दिसंबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली का दौरा किया।

श्री प्रणव मुखर्जी, तत्कालीन वित्त मंत्री ने एशियाई विकास बैंक के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स की 45वीं वार्षिक बैठक में भाग लेने के लिए 4-5 मई, 2012 के दौरान मनीला का दौरा किया। श्री आनंद शर्मा, वाणिज्य, उद्योग तथा वस्त्र मंत्री ने नॉम पेन में 18-20 नवंबर, 2012 के दौरान आयोजित भारत-आसियान शिखर सम्मेलन के अवसर पर ग्रेगरी एल डोमिंगो, सचिव, व्यापार तथा उद्योग से मुलाकात की।

श्री टी.के.ए. नायर, प्रधान मंत्री के सलाहकार ने भारतीय चैंबर्स ऑफ कामर्स, कोलकाता तथा इलेक्ट्रॉनिक्स तथा कम्प्यूटर साफ्टवेयर निर्यात परिषद द्वारा आयोजित एक व्यापार बाजार कार्यक्रम के लिए फिलीपीन्स का दौरा किया। श्री विनोद रॉय, भारत के नियंत्रक तथा महालेखाकार ने एशियाई विकास बैंक के साथ बातचीत के लिए 9-12 सितंबर, 2012 के दौरान मनीला का दौरा किया। सचिव, कृषि ने 9-12 नवंबर, 2012 के दौरान अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

डॉ रोहेलानो एम ब्रियोने, वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता, फिलीपीन्स विकास संस्थान (पीआईडीएस) ने नई दिल्ली में 7-8 अगस्त, 2012 के दौरान भारत-आसियान थिंक टैंक नेटवर्क के प्रथम गोलमेज में भाग लिया। फिलीपीन्स के एक प्रतिनिधिमंडल ने 8-19 अक्टूबर, 2012 के दौरान हैदराबाद में आयोजित जैव विविधता पर पक्षकारों के अभिसमय के 11वें सम्मेलन के लिए भारत का दौरा किया। फिलीपीन्स के विदेश सेवा अधिकारियों ने नई दिल्ली में विदेश सेवा संस्थान में आसियान डिप्लोमैट पाठ्यक्रम में भाग लिया।

पर्यटन सहयोग पर द्वितीय संयुक्त कार्य दल की बैठक 7 सितंबर, 2012 को नई दिल्ली में हुई जिसकी अगुवाई अवर सचिव तथा सचिव, पर्यटन मंत्रालय ने की।

9-12 सितंबर, 2012 के दौरान एक एनडीसी प्रतिनिधिमंडल 15-19 अक्टूबर, 2012 के दौरान आर्मी वार कॉलेज प्रतिनिधिमंडल और 19-23 मई, 2012 के दौरान भारतीय नौसेना तथा तटरक्षक जहाजों आईएनएस शक्ति तथा आईएनएस राणा ने नियमित दौरे, 8-12 नवंबर, 2012 के दौरान आईएनएस सम्राट, 1-5 दिसंबर, 2012 के दौरान सेबु में भारतीय प्रशिक्षक जहाज सुदर्शनी और 9-24 दिसंबर, 2012 के दौरान मनीला के दौरे से रक्षा सहयोग में विस्तार हुआ।

वर्ष 2011-12 के दौरान भारत तथा फिलीपीन्स के बीच द्विपक्षीय व्यापार 1.4 बिलियन अमरीकी डॉलर था जिसमें फिलीपीन्स को भारतीय निर्यात लगभग 1 बिलियन अमरीकी डॉलर था।

भारत में प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए 50 से अधिक स्लॉटों के साथ आईटीईसी और कोलम्बो योजना के तहत कार्यक्रमों में फिलीपीन्स एक मजबूत सहयोगी है।

वर्ष के दौरान सांस्कृतिक आदान-प्रदानों में 8-12 दिसंबर, 2012 के दौरान एक 10 सदस्यीय तालवाद्य समूह "सौरंगी ऑन्सोम्बल" का फिलीपीन्स दौरा तथा आसियान-भारत स्मारक शिखर सम्मेलन में मंचन के लिए 13-21 दिसंबर, 2012 के दौरान एक छह सदस्यीय सिन्डाओ, फिलीपीन्स के परफार्मिंग आर्ट्स गिल्ड के एक छह सदस्यीय संस्कृति मंडली के दौरे शामिल थे। फिलीपीन्स के 25 नौजवान छात्रों के एक समूह ने यूथ एक्सचेंज कार्यक्रम के तहत जयपुर, मुंबई, दिल्ली तथा आगरा का 10 दिनों का दौरा किया और फिलीपीन्स के पत्रकारों ने परिचय यात्रा पर भारत का दौरा किया।

सिंगापुर

इस वर्ष के दौरान गहन बातचीत को अनेक उच्चस्तरीय दौरे तथा अन्य आदान-प्रदानों के परिणामस्वरूप और गति मिली जो भारत - सिंगापुर द्विपक्षीय संबंधों की विशेषता है।

प्रधान मंत्री ली सेन लुंग 10-12 जुलाई, 2012 के दौरान भारत की राजकीय यात्रा पर आए जिसमें उनके साथ सिंगापुर संसद के अध्यक्ष श्री मिशेल पालमर अपनी पत्नी और शिक्षा मंत्री श्री हेग स्वी कीयात सहित, एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल के साथ आए। प्रधान मंत्रियों ने द्विपक्षीय वार्ताएं की और व्यावसायिक शिक्षा तथा कौशल विकास केन्द्र की स्थापना करने और सशस्त्र सेनाओं के

संयुक्त प्रशिक्षण तथा अभ्यासों को जारी रखने पर 3 करारों को अंतिम रूप दिया। प्रधान मंत्री लुंग वे ने एक व्यापार बैठक में भाषण दिया। लोक सभाध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार और सिंगापुर की अध्यक्ष ने भारत-सिंगापुर संसदीय मित्रता समूह की औपचारिक शुरुआत की संयुक्त अध्यक्षता की।

सिंगापुर के प्रधान मंत्री ने आसियान-भारत स्मारक शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए 20-21 दिसंबर, 2012 के दौरान पुनः नई दिल्ली की यात्रा की। प्रधान मंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने 18-20 नवंबर, 2012 के दौरान नॉम पेन में भारत-आसियान शिखर सम्मेलन के अतिरिक्त समय में सिंगापुर के प्रधान मंत्री के साथ द्विपक्षीय वार्ता की।

रक्षा मंत्री श्री ए के एंटोनी ने 1-3 जून, 2012 के दौरान वार्षिक संग्री - ला वार्ता के लिए सिंगापुर का दौरा किया और सिंगापुर सहित अनेक देशों के अपने समकक्षों के साथ द्विपक्षीय बैठकें भी कीं। श्री वायालर रवि, प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री ने 27-28 अप्रैल, 2012 के दौरान सिंगापुर की यात्रा की और परिवहन मंत्री तथा विदेश द्वितीय मिनिस्टर्स फोरम अफेयर्स श्री लुई टूक यो और द्वितीय मिनिस्टर फॉर ट्रेड एण्ड इंडस्ट्री श्री एस. इश्वरन से मुलाकात की। उन्होंने सिंगापुर के पूर्व राष्ट्रपति श्री एस. आर. नाथान को प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार प्रदान किया। डॉ मांटेक सिंह अहलुवालिया, उपाध्यक्ष, योजना आयोग ने 4-5 अप्रैल, 2012 के दौरान सिंगापुर का दौरा किया और "जी-20 के समक्ष चुनौतियां" पर ली क्युन यू स्कूल आफ पब्लिक पॉलिसी में एक व्याख्यान दिया। वे उप प्रधान मंत्री तथा वित्त मंत्री श्री थारनान शानमुगरत्नम से मिले और सिंगापुर में अवस्थित चुनिंदा वित्तीय संस्थाओं के वरिष्ठ प्रबंधन के साथ बातचीत की।

डॉ नग एत्र हेन, रक्षा मंत्री ने 19-22 नवंबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली का दौरा किया और रक्षा मंत्री श्री ए के एंटोनी के साथ प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता की। वे राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री शिवशंकर मेनन से मिले और राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से मुलाकात की। उन्होंने रक्षा अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान में एक वार्ता भी की। श्री थारमान शानमुगरत्नम, सिंगापुर के उप प्रधान मंत्री तथा वित्त मंत्री ने नई दिल्ली इकोनामिक निर्वाचिका सभा में भाग लेने के लिए 13-16 दिसंबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली का दौरा किया। इससे पहले श्री शानमुगरत्नम 25-28 सितंबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली और मुंबई आए थे। दोनों अवसरों पर उन्होंने नई दिल्ली में वित्त मंत्री से मुलाकात की और आपसी हित के मुद्दों पर चर्चा की।

सिंगापुर के विदेश तथा कानून मंत्री श्री के. षाणमुगम 7-10 मई, 2012 के दौरान भारत के सरकारी दौरे पर आए जिसके दौरान उन्होंने द्विपक्षीय सहयोग पर संयुक्त मंत्री स्तरीय समिति की दूसरी बैठक की सह-अध्यक्षता विदेश मंत्री श्री एस एम कृष्णा के साथ की।

वरिष्ठ विदेश तथा गृह राज्य मंत्री मासागाओ जुल्कीली ने 1-2 नवंबर, 2012 के दौरान गुडगांव में भारतीय ओसोन रिम एसोशिएशन

फॉर रिजनल कोऑपरेशन (आईओआर-एआरसी) की 12वीं मंत्रियों की परिषद की बैठक के लिए सिंगापुर के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

तृतीय भारत-सिंगापुर राष्ट्रीय सुरक्षा गोलमेज सम्मेलन 28-29 मई, 2012 के दौरान सिंगापुर में आयोजित हुआ। भारतीय प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई उप राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने की और सिंगापुर पक्ष की अगुवाई राष्ट्रीय सुरक्षा समिति सचिवालय के स्थायी सचिव ने की। 5वीं रणनीतिक वार्ता, जो ट्रैक II तंत्र है, जिसका समन्वय हमारी ओर से सीआईआई ने किया तथा सिंगापुर पक्ष की ओर से दक्षिण एशियाई अध्ययन संस्थान द्वारा किया गया, भी 28-29 मई, 2012 के दौरान हुआ और इसकी सह अध्यक्षता श्री एस के लाम्बा, प्रधान मंत्री के विशेष दूत और प्रोफेसर टोमी को एम्बेसडर एट लार्ज, विदेश मंत्रालय सिंगापुर ने की।

रक्षा सहयोग के क्षेत्र में अपने-अपने रक्षा मंत्रियों के दौरों के अलावा नीतिगत वार्ताएं स्टॉफ वार्ताएं और संयुक्त अभ्यास किए गए। सिंगापुर और भारत की नौसेनाओं के बीच वार्षिक सिंगापुर-भारत समुद्री द्विपक्षीय अभ्यास (एसआईएमबीईएक्स) 21 मार्च- 1 अप्रैल, 2012 के दौरान अण्डमान के समुद्र में आयोजित किया गया।

विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग के एक प्रतिनिधिमंडल ने 2-3 अगस्त, 2012 के दौरान सिंगापुर की यात्रा की और द्विपक्षीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी सहयोग करार के तहत सहयोग कार्यक्रम पर हस्ताक्षर किए।

थाईलैण्ड

भारत तथा थाईलैण्ड के बीच घनिष्ठ संबंध है जो सदियों पुराने सामाजिक-सांस्कृतिक संबंधों में प्रदर्शित होता है। गणतंत्र दिवस, 2012 पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रधान मंत्री सुश्री इंग्लुक शिनावत्रा के दौरे द्वारा इसे प्रदान की गई गति ने बहुफलकीय संबंधों तथा लोगों के आपसी संपर्क के साथ संबंधों को आगे बढ़ाया है।

प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और प्रधान मंत्री सुश्री इंग्लुक शिनावत्रा ने 18-20 नवंबर, 2012 के दौरान नोम पेन में 10वें भारत-आसियान शिखर सम्मेलन के अवसर पर द्विपक्षीय तथा क्षेत्रीय मुद्दों पर बातचीत की। प्रधान मंत्री सुश्री इंग्लुक शिनावत्रा ने 20-21 दिसंबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली में आसियान-भारत स्मारक शिखर सम्मेलन में भी हिस्सा लिया।

विदेश मंत्री श्री सलमान खुशीद और श्री सुरापोंग तोवीचाक्चाईकुल, विदेश मंत्री ने 7 नवंबर, 2012 को बैंकाक में द्विपक्षीय संबंधों में प्रगति की समीक्षा की। श्री आनंद शर्मा, वाणिज्य, उद्योग तथा वस्त्र मंत्री भारत-थाईलैण्ड व्यापक मुक्त व्यापार करार (एफटीए) पर चल रही बातचीत की स्थिति पर चर्चा करने के लिए सिएम रिप, कम्बोडिया में श्री बूनसोंग थेरीयापीरोम, थाईलैण्ड के वाणिज्य मंत्री से 31 अगस्त, 2012 को मिले। श्री शरद पवार, कृषि मंत्री ने खाद्य तथा कृषि संगठन द्वारा आयोजित 'एशिया प्रशांत क्षेत्र में उच्च खाद्य मूल्यों के प्रत्युत्तर के लिए नीतियों पर उच्च स्तरीय क्षेत्रीय परामर्श

में भाग लेने के लिए 1-2 अक्टूबर, 2012 के दौरान बैंकाक का दौरा किया। श्री पी. चिदंबरम, वित्त मंत्री ने 14-15 अक्टूबर, 2012 के दौरान बैंकाक में एशिया यूरोप वित्त मंत्रियों की बैठक में भाग लिया।

भारत - थाईलैण्ड विदेश कार्यालय परामर्श श्री संजय सिंह, सचिव (पूर्वी) विदेश मंत्रालय और श्री सिहासाक फुआंगकेट्केयू, स्थायी सचिव, विदेश मंत्रालय द्वारा 10 अगस्त, 2012 को बैंकाक में संपन्न भारत-थाईलैण्ड विदेश कार्यालय परामर्श की अगुआई की गई जिन्होंने आपसी हितों के द्विपक्षीय, क्षेत्रीय तथा बहुपक्षीय मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। अवसरचयना तथा संपर्क पर भारत-थाईलैण्ड संयुक्त कार्यदल ने अपनी पहली बैठक 11 सितंबर, 2012 को नई दिल्ली में की और त्रिपक्षीय राजमार्ग पर भारत-म्यामां-थाईलैण्ड संयुक्त समिति की बैठक भी नई दिल्ली में हुई।

थाईलैण्ड के रक्षा मंत्री एयर चीफ मार्शल सुकुम्पोल सुवानातात ने 21-23 दिसंबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली का दौरा किया और रक्षा मंत्री श्री ए.के. एंटोनी के साथ बातचीत की।

सीनेटर श्री क्रीच आतीत्काएव, अध्यक्ष, थाई-भारत सांसद मित्रता समूह की अगुवाई में एक आठ सदस्यीय थाई प्रतिनिधिमंडल ने 28 अगस्त - 3 सितंबर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया और श्रीमती मीरा कुमार, लोक सभाध्यक्ष से मुलाकात की।

विशेष सचिव, पर्यटन मंत्रालय ने चिआंग माई में आयोजित हुए हरित पर्यटन पर यूएन विश्व पर्यटन संगठन के सम्मेलन में भाग लेने के लिए 2-5 मई, 2012 के दौरान थाईलैण्ड का दौरा किया। डॉ. विजार्न सिमाचाया, महासचिव, प्राकृतिक संसाधन तथा पर्यावरण मंत्रालय ने 6-7 सितंबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली में आयोजित भारत-आसियान पर्यावरण मंत्रियों की बैठक में भाग लिया; श्री अम्नुआय थोंगसाथीया, मुख्य इंस्पेक्टर जनरल, वैकल्पिक ऊर्जा विभाग, डिपार्टमेंट ऑफ एफिसीएंसि ने 7 नवंबर, 2012 को पुनर्नवीकरणीय ऊर्जा पर भारत-आसियान मंत्री स्तरीय बैठक में भाग लिया।

रक्षा तथा सुरक्षा के क्षेत्रों में सतत द्विपक्षीय सहयोग के भाग के रूप में, 18-19 जुलाई, 2012 के दौरान हुआ हीन, थाईलैण्ड में आयोजित सुरक्षा सहयोग पर संयुक्त कार्य दल की सातवीं बैठक का नेतृत्व सुश्री विजया लाथा रेड्डी, उप राष्ट्रीय सुरक्षा उप सलाहकार तथा पुलिस जनरल विशियन पोतेफोस्टे थाई, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद द्वारा किया गया।

12-14 मार्च, 2012 के दौरान भारतीय वायु सेना चिकित्सा अधिकारियों के दौरे, भारतीय वायु सेना रॉयल थाई वायु सेना मध्यम/कनिष्ठ स्तर के आदान-प्रदान दौरे के लिए 2 सितंबर, 2012 को एक भारतीय वायु सेना प्रतिनिधिमंडल का बैंकॉक दौरा 15-19 अक्टूबर, 2012 के दौरान कॉलेज ऑफ एयर वेलफेयर से हायर एयर कमांड कोर्स प्रतिनिधिमंडल का थाईलैण्ड दौरे के साथ वायु सेना आदान-प्रदानों को सुदृढ़ किया गया जबकि 25-27 अप्रैल, 2012 के दौरान एयर स्टॉफ वार्ताओं के लिए

एयर मार्शल श्री फोंतेमोदस्युवाना, असिस्टेंट चीफ ऑफ एयर स्टॉफ फॉर ऑपरेशन्स के नेतृत्व में थाई वायु सेना अधिकारियों के एक प्रतिनिधिमंडल ने भारत का दौरा किया। भारतीय नौसेना और रायल थाई नौसेना ने पोर्ट ब्लेयर में 23-26 अप्रैल, 2012 के दौरान आईएनएस बंगाराम और थाई जहाज एचटीएमएस कामरोन सिन की भागीदारी से समेकित पेट्रोलिंग (सीओआरपीटी) का 14वां दौर संपन्न किया गया। 15वां कार्पेट 6-9 नवंबर, 2012 के दौरान आईएनएस बत्तीमालवाभ और भारतीय डॉर्नीयर एयरक्राफ्ट की फुकेट यात्रा के दौरान किया गया। 13-15 जून, 2012 के दौरान बैंकॉक में ऑर्डर एट सी की स्थापना पर संयुक्त कार्य दल की नौवीं बैठक और पांचवीं भारतीय नौसेना - रॉयल थाई नौसेना स्टॉफ वार्ताएं हुईं। 1-7 मई, 2012 के दौरान भारतीय नौसैनिक सेलिंग यार्ड की फुकेट यात्रा हुई और 10-13 अक्टूबर, 2012 के दौरान दो भारतीय नौसेना प्रशिक्षण जहाजों आईएनएस सुजाता और आईसीजीएस वरुणा का फुकेट दौरा संपन्न हुआ।

द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौते के लिए व्यापार वार्ता समिति की 24वीं बैठक 6-8 अगस्त, 2012 के दौरान बैंकॉक में हुआ और इसकी 25वीं बैठक नई दिल्ली में 17-18 सितंबर, 2012 के दौरान हुई। वर्ष 2012 (जनवरी-नवंबर) में थाईलैण्ड के साथ भारत का द्विपक्षीय व्यापार 8 बिलियन अमरीकी डॉलर था और 900000 से अधिक भारतीय पर्यटक थाईलैण्ड गए। एक थाई व्यापार प्रतिनिधिमंडल 18-20 दिसंबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली में भारत-आसियान व्यापार मेले में हिस्सा लिया।

तिमोर लास्ते

भारत तिमोर लास्ते के साथ गर्मजोशी भरा संबंध रखता है और इसने तिमोर लास्ते के राष्ट्रनिर्माण की ओर विकासआत्मक प्रयासों में सहयोग दिया।

भारत के राष्ट्रपति ने श्री ताउरमतान रुआक को तिमोर लास्ते का राष्ट्रपति चुने जाने पर बधाई दी। इसके बदले तिमोर लास्ते के राष्ट्रपति ने श्री प्रणव मुखर्जी को भारत का राष्ट्रपति चुने जाने पर बधाई दी।

न्यूयार्क में भारत के डिप्युटी पर्मनेंट रेप्रेजेंटेटिव उस सुरक्षा परिषद के मिशन के सदस्य थे जिन्होंने यूएनएमआईटी के वापस आने और यूएनएमआईटी के बाद की स्थिति पर जमीनी हकीकत की बाधाओं को दूर करने के लिए 3-6 नवंबर, 2012 के दौरान तिमोर लास्ते का दौरा किया।

भारत ने तिमोर लास्ते को सामान्य छात्रवृत्ति योजना के तहत 10 स्लॉटों का प्रस्ताव देना जारी रखा जिसमें भारतीय उच्चतर शिक्षण संस्थाओं में स्नातक से लेकर पोस्ट डॉक्टोरल तक के पाठ्यक्रम शामिल हैं। भारत ने विभिन्न लघु तथा मध्यम अवधि के पाठ्यक्रमों के लिए आईटीईसी के तहत 10 स्लॉटों का भी प्रस्ताव किया जो पूरी तरह से भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित है।

तिमोर लास्ते में विभिन्न क्षेत्रों में लगभग 50 भारतीय नागरिक कार्य कर रहे हैं।

वियतनाम

भारत-वियतनाम संबंध मित्रवत और सद्भावना से भरपूर रहे हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में मजबूत नींव तथा सहयोग पर आधारित हैं जिसने दोनों देशों के बीच रणनीतिक भागीदारी को और गहरा किया है। इस वर्ष को पूर्ण राजनय संबंधों की 40वीं वर्षगांठ तथा राजनीतिक भागीदारी के स्थान की पांचवीं वर्षगांठ मनाने के लिए भारत-वियतनाम मित्रता वर्ष के रूप में मनाया गया।

उप राष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी ने भारत-वियतनाम मित्रता वर्ष 2012 के समापन समारोह के लिए 14-17 जनवरी, 2012 के दौरान वियतनाम की यात्रा की। इससे पहले विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री ई. अहमद ने 'भारत-वियतनाम मित्रता वर्ष' के उद्घाटन के लिए 4-7 जनवरी, 2012 के दौरान वियतनाम का दौरा किया था। वियतनाम की यात्रा करने वाले अन्य महत्वपूर्ण गणमान्य व्यक्तियों में श्री आनंद शर्मा, वाणिज्य, उद्योग तथा वस्त्र मंत्री, जिन्होंने 7-9 मार्च, 2012 के दौरान वियतनाम की यात्रा की; कृषि मंत्री श्री शरद पवार ने 1-5 अक्टूबर, 2012 के दौरान; डॉ. के चिरंजीव, पर्यटन मंत्रालय में राज्य मंत्री ने 3-5 जनवरी, 2013 के दौरान वियतनाम की यात्रा की।

वियतनाम के प्रधान मंत्री श्री गुयेन तान डूंग ने 20-21 दिसंबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली की यात्रा की और भारत-आसियान स्मारक शिखर सम्मेलन में भाग लिया तथा प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के साथ द्विपक्षीय बैठक की थी। वियतनाम के उप प्रधान मंत्री श्री गुएन थिएन हॉन 25 मार्च - 2 अप्रैल, 2012 के दौरान भारत आए। एक 40 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्री से मिले और बैंगलूरु में आईएसआरओ (इसरो) गए। श्री हुएन दाम फादरलैण्ड फ्रंट के अध्यक्ष ने आईसीसीआर के विशिष्ट आगंतुक कार्यक्रम के तहत 29 नवंबर - 7 दिसंबर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया तथा विदेश मंत्री से मिले और राष्ट्रपति से मुलाकात की। उप विदेश मंत्री श्री त्रान वान ह्यु ने 13-17 अगस्त, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया और कृषि मंत्री श्री शरद पवार, कोयला मंत्री श्री प्रकाश जायसवाल और रसायन तथा उर्वरक मंत्री श्री एम.के. अलागीरी से मिले। श्री गुएनकामत्यु, उद्योग तथा व्यापार उप मंत्री ने हैदराबाद में 11-13 जनवरी, 2012 के दौरान आयोजित हुए भागीदारी शिखर सम्मेलन में हिस्सा लिया। उप प्रधान मंत्री श्री वुनवान निह ने 7-10 जनवरी, 2013 के दौरान भारत की यात्रा की।

वर्ष 2012 में हस्ताक्षरित करारों/समझौता ज्ञापनों में शामिल थे - भारत - वियतनाम मित्रता वर्ष, 2012 पर समझौता ज्ञापन, संयंत्र क्वारंटाइन पर व्यवस्था, आरबीआई और स्टेट बैंक ऑफ वियतनाम के बीच समझौता ज्ञापन, वियतनाम के उच्च निष्पादन कम्युनिटी के उन्नयन में सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन और सुक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन।



नॉम पेन में 10वें आसियान-भारत शिखर सम्मेलन तथा 7वें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन के अवसर पर प्रधान मंत्री डॉ मनमोहन सिंह, थाईलैण्ड की प्रधान मंत्री सुश्री यिंग्लुक शिनावत्रा के साथ द्विपक्षीय बैठक के दौरान



नाम पेन्ह में दिनांक 19 नवम्बर 2012 को प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह 10 वें आसियान भारत शिखर सम्मेलन में

सितंबर, 2012 में नई दिल्ली में 7वीं वार्षिक सुरक्षा वार्ता सम्पन्न हुई। नौसेना प्रमुख एडमिरल डीके जोशी ने 20 – 30 नवंबर, 2012 के दौरान वियतनाम का दौरा किया। एक भारतीय नौसेना पाल प्रशिक्षण जहाज आईएनएस सुदर्शन ने आसियान सेलिंग एक्सपेडिशन के भाग के रूप में 31 दिसंबर, 2012 से 3 जनवरी, 2013 के दौरान डांग पोर्ट का दौरा किया और सीजीएस सम्राट ने 2–6 दिसंबर, 2012 के दौरान होचिमिन शहर का दौरा किया।

जनवरी – दिसंबर, 2012 के दौरान व्यापार टर्न ओवर पिछले वर्ष की तुलना में 1.1 प्रतिशत बढ़कर 3.94 बिलियन अमरीकी डॉलर तक पहुंच गया। भारत के निर्यात में 7.9 प्रतिशत की कमी आई और यह 2.1 बिलियन अमरीकी डॉलर रहा और वियतनाम से आयात 14.6 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 1.7 बिलियन अमरीकी डॉलर रहा।

विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी पर 9वीं संयुक्त समिति की बैठक नवंबर, 2012 में हनोई में हुई जिसमें दोनों पक्षों द्वारा वर्ष 2013–2014 के लिए विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में सहयोग कार्यक्रम (पीओसी) को अंगीकार किया गया।

पूर्ण राजनय संबंधों की स्थापना के 40वीं जयंती के अवसर पर वियतनाम सामाजिक विज्ञान अकादमी के तत्वावधान में भारत तथा दक्षिण-पश्चिमी एशियाई अध्ययन संस्थान का उद्घाटन हनोई में 7 जनवरी, 2012 को किया गया। आईसीडब्ल्यू द्वारा आयोजित भारत-वियतनाम राजनैतिक भागीदारी पर एक सेमिनार का आयोजन हनोई में जुलाई, 2012 में किया गया। भारत ने हनोई में एक भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र खोलने का निर्णय लिया।

चाम संस्कृति तथा सभ्यता में भारत तथा वियतनाम के अग्रणी विद्वानों तथा विशेषज्ञों ने भारतीय दूतावास, भारतीय संस्कृतिक संबंध परिषद और वियतनाम सांस्कृतिक तथा कला अध्ययन संस्थान द्वारा जून, 2012 में दानांग में आयोजित एक सेमिनार में भाग लिया।

भारतीय रिजर्व बैंक और वियतनाम स्टेट बैंक ने एक करार पर हस्ताक्षर किए जिससे वियतनाम में कार्य करने के लिए भारतीय बैंकों को लाइसेंस के लिए आवेदन करने का रास्ता खुला। वियतनाम के विदेश मंत्रालय के एक प्रतिनिधिमंडल ने दोनों देशों के बीच राजनय विशेषताओं/सम्पत्ति के आदान-प्रदान पर एक भारतीय पक्ष के साथ चर्चा करने के लिए नवंबर, 2012 में भारत का दौरा किया।

प्रशान्त द्वीपसमूह

भारत तथा प्रशान्त द्वीपसमूह के देशों के बीच संबंध इस वर्ष के दौरान विकसित तथा विस्तारित होते रहे जिसमें प्रशान्त द्वीपसमूह मंच (पीआईएफ) देशों के साथ अगस्त, 2003 में भारत की वार्ता भागीदारी के संस्थानीकरण तथा उसके बाद नियमित भागीदारी से सहयोग मिला।

श्री ई. अहमद, विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री ने 43वें प्रशान्त द्वीपसमूह मंच की बैठक के बाद रारतोंग, द कुक आईलैण्ड में 31 अगस्त, 2012 को चौबीसवें पोस्ट फोरम वार्ता भागीदारों की बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई की। उन्होंने 125000 अमरीकी डॉलर की वार्षिक सहायता अनुदान से और क्षेत्रीय मुद्दों पर घनिष्ठ सहयोग से पीआईएफ देशों को उनकी विकास परियोजनाओं में सहायता जारी रखने की भारत की प्रतिबद्धता की पुनःपुष्टि की। वे कुक द्वीपसमूह के स्वास्थ्य मंत्री से भी मिले और कुक द्वीपसमूह तथा प्रशान्त क्षेत्र के देशों के साथ घनिष्ठ संबंध विकसित करने में हमारी रुचि को दोहराया।

भारत न्यूयेन के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना के लिए एक करार पर न्यूयेन के प्रधान मंत्री टोके तलागी और विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री ई अहमद द्वारा 30 अगस्त, 2012 को हस्ताक्षर किए गए और एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया।

श्रीमती मीरा कुमार, लोक सभाध्यक्ष ने गुटनिरपेक्ष संसदीय एसेंबली मीड इयर कार्यकारी समिति की बैठक में भाग लेने के लिए अप्रैल, 2012 में तोंग का दौरा किया। नागालैण्ड तथा राजस्थान विधान सभाओं के अध्यक्षों ने भी भाग लिया। श्रीमती कुमार ने तोंग में रहने के दौरान कोलोमोतवा सौर्य परियोजना को प्रारंभ किया।

समोआन के कृषि व मत्स्य पालन तथा कृषि भंडारण सहयोग मंत्री ने कोचीन में आयोजित 45वीं कोकोटेक एपीसीसी की बैठक के लिए जुलाई, 2012 में भारत का दौरा किया।

भारत ने भारतीय तकनीकी तथा आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) कार्यक्रम के तहत परियोजनाओं, क्षमता निर्माण तथा मानव संसाधन विकास द्वारा प्रशान्त द्वीपसमूह के देशों को सामाजिक-आर्थिक विकास में सहयोग देना जारी रखा।

किरीबाती के राष्ट्रपति श्री अतोंततोंग ने 31 जनवरी-2फरवरी, 2012 के दौरान दिल्ली सतत विकास शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया।





उप राष्ट्रपति श्री मो. हमीद अंसारी 15 जनवरी, 2013 को हनोई में वियतनाम समाजवादी गणराज्य के राष्ट्रपति श्री तुओंग तान सांग के साथ

जापान

यह वर्ष भारत और जापान के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगांठ और द्विपक्षीय संबंधों में स्थाई प्रगति दर्शाने वाला रहा।

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 18 नवम्बर, 2012 को नोम पेन्ह, कम्बोडिया में पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन से समय निकाल कर जापान के प्रधानमंत्री श्री योशीहीको नोदा से मुलाकात की। प्रथम भारत-जापान मंत्री-स्तरीय आर्थिक संवाद पूर्व विदेश मंत्री श्री एस एम कृष्णा और जापान के विदेश मंत्री श्री कोईचीरो गेम्बा के बीच दिनांक 30 अप्रैल, 2012 को नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग के लिए इस संवाद को महत्व देते हुए दोनों ओर से अनेक मंत्रियों ने सहभागिता की जिसमें हमारी ओर से योजना, वाणिज्य और उद्योग एवं रेल राज्य-मंत्रियों के साथ जापान के आर्थिक, व्यापार एवं उद्योग मंत्री, वित्तीय सेवाओं के मंत्री तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे। उसी दिन नीतिवार्ता और वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री आनंद शर्मा एवं जापान के आर्थिक, व्यापार तथा उद्योग मंत्री श्री यूकिओ एदानो के बीच सर्जनात्मक उद्योगों में सहयोग पर संवाद की प्रथम बैठक हुई। 5वीं और 6वीं भारत-जापान उच्चस्तरीय ऊर्जा संवाद की बैठकें योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री मोंटेक सिंह अहलूवालिया जापान के आर्थिक, व्यापार एवं उद्योग मंत्री श्री यूकिओ एदानो की सह-अध्यक्षता में क्रमशः 30 अप्रैल, 2012 और 10 अक्टूबर, 2012 को सम्पन्न हुई। बातचीत के दायरे में ऊर्जा कार्यक्षमता व संरक्षण, पुनर्नवीकरणीय ऊर्जा, विद्युत, कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस तथा नाभिकीय ऊर्जा शामिल थे।

नियमित मंत्री-स्तरीय संवाद तंत्र के अलावा भारत सरकार के निम्नलिखित मंत्रियों ने वर्ष 2012 में जापान के दौरे किए: पर्यटन मंत्री (फरवरी), शहरी विकास मंत्री (मई), गुजरात के मुख्य मंत्री (जुलाई), रसायन एवं उर्वरक मंत्री (जुलाई) और वित्त मंत्री (अक्टूबर, फंड-बैंक बैठक के लिए)। जापान की ओर से आर्थिक, व्यापार व उद्योग मंत्री, श्री यूकिओ एदानो और भूमि, संरचना, पर्यटन व परिवहन मंत्री श्री तकेशी माइदा ने जनवरी, 2012 में भारत दौरा किया। इसके बाद मंत्री स्तरीय प्रतिनिधिमंडल के साथ अप्रैल, 2012 में विदेश मंत्री और आर्थिक, व्यापार व उद्योग मंत्री ने दौरा किया।

भारत-जापान संबंधों का मूलभूत मंत्र आर्थिक मुद्दों पर बातचीत है। भारत-जापान से सरकारी विकास सहायता (ओडीए) प्राप्त करने वाला सबसे बड़ा देश बना हुआ है। वित्तीय वर्ष 2011-12 में ओडीए का भुगतान 139.22 बिलियन येन (लगभग 8497 करोड़ रुपये) के रिकॉर्ड स्तर तक पहुँच गया। इसका उपयोग संपूर्ण भारत की

विभिन्न महत्वपूर्ण परियोजनाओं, बड़े पैमाने पर ढाँचागत परियोजनाओं जैसे कि विभिन्न महानगरों में मेट्रो रेल परियोजनाओं के लिए किया जा रहा है। जापान ने दो परियोजनाओं नामशः समर्पित फ्रेट कॉरीडोर पश्चिम परियोजना फेज-II और चेन्नै मेट्रो रेल परियोजना के लिए कुल 184.81 बिलियन येन (लगभग 11000 करोड़ रुपये) ओडीए से उधार देने की घोषणा भी की है।

विशेष आर्थिक सहभागिता प्रयास (एसईपीआई) दिसम्बर, 2006 में प्रधानमंत्री की जापान की यात्रा का एक महत्वपूर्ण परिणाम था। एसईपीआई के प्रमुख संघटकों में निर्धारित मालदुलाई कॉरीडोर-पश्चिम (डीएफसी-डब्ल्यू) परियोजना, दिल्ली-मुम्बई औद्योगिक कॉरीडोर (डीएमआईसी) परियोजना, बहु-उत्पाद विशेष आर्थिक क्षेत्र/समूहों की स्थापना, चयनित स्थानों पर मुक्त व्यापार और भंडारण क्षेत्र और एसईजेड और औद्योगिक सम्पदाओं इत्यादि से संबंधित आधारभूत ढाँचे के विकास में सहायता सहित भारत में जापानी कंपनियों द्वारा निवेश को बढ़ावा देना शामिल हैं। भारत-जापान की प्रमुख ढाँचागत परियोजनाओं में वर्ष 2012 में निरन्तर प्रगति हुई है। मुम्बई और दिल्ली के बीच निर्धारित मालदुलाई कॉरीडोर (पश्चिम) वर्तमान योजना अवधि के दौरान वर्ष 2017 में पूरा होने के मार्ग पर है।

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए जापान बैंक (जेबीआईसी) द्वारा दिनांक 23 अगस्त, 2012 को स्पेशल परपज व्हीकल डीएमआईसी विकास सहयोग (डीएमआईसीडीसी) में 26 प्रतिशत इक्विटी दावे के मंत्रिमंडल अनुमोदन से दिल्ली-मुम्बई औद्योगिक कॉरीडोर (डीएमआईसी) परियोजना शुरू हो चुकी है। डीएमआईसी परियोजना के संबंध में 2011 में जापान की ओर से अनुरोध किया गया था कि पूँजी विनिमय एवं नियंत्रण में ढील दी जाए, जिसे मोटे तौर पर स्वीकार कर लिया गया है और लागू कर दिया गया है। डीएमआईसी टास्क फॉर्स जो 19 अक्टूबर, 2011 को टोक्यो में मिला था, ने कुछ शीघ्र शुरू होने वाली परियोजनाओं की सूची भी दी है, जिसे सरकार द्वारा उपलब्ध कराए गए वित्तपोषण से डीएमआईसी के साथ शुरू किया जाएगा। "डीएमआईसी परियोजना कार्यान्वयन निधि" जो एक आवर्ती निधि होगी और एक ट्रस्ट के रूप में भारत सरकार का वित्तीय सहायता खजाना होगा। चेन्नै-बेगलूर औद्योगिक कॉरीडोर के विकास में आने वाली ढाँचागत अड़चनों और संभावनाओं के मूल्यांकन का प्राथमिक अध्ययन शुरू कर दिया गया है, जो वार्षिक शिखर सम्मेलन-2011 में लिए गए निर्णय के अनुसार क्षेत्रीय विकास के लिए व्यापक एकीकृत मास्टर प्लान होगा।

भारत-जापान व्यापक आर्थिक भागीदारी करार (सेपा) को लागू करने के लिए सचिव-उपमंत्री स्तर की द्वितीय संयुक्त बैठक, जो



तत्कालीन विदेश मंत्री श्री एस एम कृष्णा और उनके जापानी समकर्ता श्री कोईचीरो गेम्बा की सह-अध्यक्षता में छठी भारत-जापान रणनीतिक वार्ता और पहली मंत्री स्तरीय आर्थिक वार्ता 30 अप्रैल 2012 को नई दिल्ली में।



प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति श्री ली मुयांग बाक के साथ 24 मार्च 2012 को सियोल में

01 अगस्त, 2011 को अस्तित्व में आयी 17 अक्टूबर, 2012 को टोक्यो में आयोजित हुई थी। जनवरी-नवम्बर, 2012 में भारत-जापान द्विपक्षीय व्यापार 16.03 बिलियन यूएस डॉलर का था, जिसमें 2011 की तदनुसूची अवधि की तुलना में 0.99 प्रतिशत की थोड़ी गिरावट दिखाई दी। इस अवधि के दौरान 2011 की अवधि की तुलना में जापान को किए गए 6.4 बिलियन यूएस डॉलर के निर्यात में 2.4 प्रतिशत की वृद्धि दिखाई दी और 2011 की उसी अवधि के दौरान जापान से कुल 9.6 बिलियन यूएस डॉलर के निर्यात में लगभग 3 प्रतिशत की कमी दिखाई दी। पिछले वर्ष में भारत में अवस्थित और क्रियाशील जापानी फर्मी की संख्या में सतत वृद्धि हुई है और यह 144 की वृद्धि के साथ 926 हो गई है। दोनों देशों के बीच विशेष रूप से टोक्यो और दिल्ली के बीच सीधी उड़ानों की संख्या में वृद्धि हुई है।

द्विपक्षीय सेपा में दिए गए अनुसार 16 नवम्बर, 2012 को टोक्यो में सामाजिक सुरक्षा करार (एसएसए) पर हस्ताक्षर किए गए। उसी दिन भारत में रेचर अर्थस इंडस्ट्री में सहयोग पर जापान पर भी हस्ताक्षर किए गए। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) और बैंक ऑफ जापान (बीओजे) के बीच 4 दिसम्बर, 2012 को मुम्बई में द्विपक्षीय स्वैप करार पर हस्ताक्षर किए गए जिससे जून, 2008 के पहले करार की 3 बिलियन यूएस डॉलर की स्वैप राशि को बढ़ाकर 15 बिलियन यूएस डॉलर कर दिया गया।

आर्थिक समस्याओं पर वित्त सचिव और जापान के उप विदेश मंत्री के बीच उच्च स्तरीय रणनीतिक संवाद स्थापित किया गया, जिससे सभी आर्थिक समस्याओं के निराकरण के लिए एक तंत्र विकसित किया जा सके। इस संवाद पर छठी बैठक टोक्यो में 01 अक्टूबर, 2012 को हुई थी। आर्थिक विकास पर द्विपक्षीय उच्च स्तरीय नीति परामर्श भी अप्रैल, 2012 में टोक्यो में किए गए। अन्य द्विपक्षीय अधिकारी स्तर की बैठकों में 4 अक्टूबर, 2012 को दिल्ली में हुई शहरी विकास में सहयोग पर वर्किंग ग्रुप की छठी बैठक तथा 5 अक्टूबर, 2012 को दिल्ली में हाई स्पीड रेलवे के लिए वर्किंग ग्रुप की पहली बैठकें शामिल हैं।

वर्ष 2009 की कार्य योजना द्वारा अधिकारिक राजनीतिक और सुरक्षा सहयोग पर 2012 में निरन्तर प्रगति दिखाई देती है। अक्टूबर, 2012 में भारत के विदेश और रक्षा सचिवों तथा जापानी वार्ताकारों के बीच टोक्यो में भारत-जापान 2+2 की दूसरी वार्ता हुई। पहला भारत-जापान द्विपक्षीय नेवी अभ्यास जो जून, 2012 में होना निश्चित था, आयोजित किया गया, 4 भारतीय नेवी के जल पोतों के जापान दौरे साथ पूरा हुआ। अप्रैल, 2012 में दूसरी आर्मी-टू-आर्मी वार्ता टोक्यो में हुई और नेवी-टू-नेवी वार्ता नवम्बर, 2012 में टोक्यो में हुई। द्विपक्षीय सहयोग पर 2006 में हस्ताक्षरित समझौता जापान के फ्रेमवर्क के तहत कोस्ट गार्डों के बीच नियमित सहयोग जारी रहा। 5 नवम्बर, 2012 को एक नया साइबर सुरक्षा संवाद टोक्यो में हुआ, जबकि एक नया मेरीटाइम संवाद स्थापित किया गया, जो 29 जनवरी, 2013 को टोक्यो में होना निश्चित है। विदेश सचिव स्तर पर विदेश अधिकारी परामर्श फरवरी, 2012 में दिल्ली तथा अक्टूबर, 2012 में टोक्यो में किए गए। निरस्त्रीकरण और परमाणु अप्रसार संवाद के

तहत 25 मई, 2012 को दिल्ली में बैठकें हुई और आतंकवाद विरोध पर 6 नवम्बर, 2012 को टोक्यो में संयुक्त वर्किंग ग्रुप की बैठकें हुई। अधिकारी स्तर पर भारत-जापान-अमरीका के दूसरे और तीसरे द्विपक्षीय दौर के संवाद 23-24 अप्रैल, 2012 को टोक्यो में और 29 अक्टूबर, 2012 को दिल्ली में हुए।

भारत और जापान के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगांठ भारत और जापान दोनों देशों में विविध प्रकार के आयोजनों के द्वारा मनाई गई। दोनों देशों के लोगों के बीच नजदीकियाँ बढ़ाने के लिए सरकारी स्तर पर और निजी संस्थानों द्वारा शैक्षणिक संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं, व्यापार सम्मेलनों एवं व्यापार प्रतिनिधियों के दौरो, सांस्कृतिक कार्यक्रम व कला प्रदर्शनियों, पेंटिंग व फोटोग्राफी प्रदर्शनियों तथा संयुक्त श्रव्य-दृश्य प्रस्तुतियों का आयोजन किया गया।

हैदराबाद में एक नए आईआईटी संस्थान की स्थापना में भारत-जापान संयुक्त परियोजना में वर्ष 2012 में प्रगति देखने को मिली। जापान सरकार द्वारा जुलाई, 2010 में अपनाई गई "राष्ट्रीय आपदा उपशमन और समुत्थान परियोजना" विषय पर पंचवर्षीय संयुक्त अनुसंधान कार्यक्रम की शुरुआत की गई। अभी तक भारत-जापान विज्ञान परिषद की पन्द्रह बैठकें हो चुकी हैं। अंतिम बैठक मार्च, 2012 में कोलकाता में हुई थी।

कोरिया लोकतांत्रिक जनवादी गणराज्य (डीपीआरके)

कोरिया लोकतांत्रिक जनवादी गणराज्य (डीपीआरके) के साथ भारत के संबंध सौहार्दपूर्ण रहे, जिसका मुख्य ध्यान मानवीय तथा मानव संसाधन विकास पर रहा। डीपीआरके में मानव संसाधन विकास हेतु भारत का समर्थन जारी रहा, जिसमें वर्ष 2012-13 के लिए भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग प्रशिक्षण कार्यक्रम (आईट्रेक) के तहत अंग्रेजी भाषा पाठ्यक्रम में इसके अधिकारियों को 10 स्लॉट और रक्षा कार्मिकों को 2 स्लॉट आबंटित किए गए। भारत ने सितम्बर, 2012 में 13वें प्योंगयांग अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भाग लिया।

कोरिया गणराज्य (आरओके)

भारत-कोरिया गणराज्य संबंधों ने पिछले कुछ वर्षों में व्यापक आधार बना लिया है। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने जनवरी, 2010 में आरओके के राष्ट्रपति ली म्युंग-बाक की राजकीय यात्रा और जुलाई, 2011 में राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटिल की यात्रा द्वारा शुरु किए गए प्रयासों को गति प्रदान करने के लिए 25 मार्च, 2012 को आरओके की ऐतिहासिक द्विपक्षीय यात्रा की। राष्ट्रपति ली म्युंग-बाक की जनवरी, 2010 में भारत यात्रा के दौरान दोनों देशों के संबंध "रणनीतिक भागीदारी" स्तर तक ऊपर उठे। और तब से विभिन्न क्षेत्रों, जिसमें रक्षा, सुरक्षा, संस्कृति और शिक्षा शामिल हैं, में गुणवत्ता आधार पर सहयोग में विस्तार हुआ है।

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 25 मार्च, 2012 को सियोल की एक द्विपक्षीय सरकारी यात्रा की। इस यात्रा के दौरान, वीजा प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए एक करार और विदेश मंत्रालय के विदेश सेवा

संस्थान (एफएसआई) तथा कोरियाई विदेश मामले एवं उद्योग मंत्रालय के कोरियाई राष्ट्रीय राजनयिक अकादमी के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया, जिसमें पारस्परिक महत्त्व के क्षेत्र में भविष्य में सहयोग के लिए रोडमैप तैयार किया गया था। प्रधानमंत्री ने कोरियाई सीईओ के साथ बातचीत की और उन्होंने 26-27 मार्च, 2012 को सियोल में आयोजित द्वितीय परमाणु सुरक्षा शिखर सम्मेलन में भी भाग लिया।

निवेश और व्यापार द्विपक्षीय संबंधों के लिए आधारशिला का काम करते हैं। भारत में लगभग 400 कोरियाई कंपनियों में 40000 लोगों को काम मिला हुआ है। जनवरी 2010 में व्यापक आर्थिक भागीदारी करार (सेवा) के लागू हो जाने से द्विपक्षीय आर्थिक और वाणिज्यिक संबंधों को प्रोत्साहन मिला है। प्रधानमंत्री की मार्च 2012 में आरओके की यात्रा के दौरान 2015 तक 40 बिलियन यूएस डॉलर का एक नया लक्ष्य रखा गया। वैश्विक आर्थिक मंदी के कारण 2012 में द्विपक्षीय व्यापार धीमा रहा। जनवरी-नवम्बर, 2012 में कुल द्विपक्षीय व्यापार 17.4 बिलियन यूएस डॉलर का था। इस अवधि के दौरान भारत में से कुल निर्यात 6.33 बिलियन यूएस डॉलर था, जिसने 13.6 प्रतिशत की कमी दर्शाई, जबकि आरओके से 11.07 बिलियन यूएस डॉलर का आयात हुआ, जिसमें 4.4 प्रतिशत की कमी दिखाई गई। दोनों ओर से सेपा को उन्नत करने के लिए बातचीत की जा रही है। श्री पी. चिदम्बरम, वित्त मंत्री ने 1-2 नवम्बर, 2012 को वित्त मंत्रियों की तीसरी वार्षिक बैठक में भाग लेने के लिए आरओके की यात्रा की।

आरओके के साथ राजनीतिक और सुरक्षा सहयोग में प्रगति हुई। भारतीय नौ सेना के जलपोतों के द्वारा मई-जून, 2012 में बसान पोर्ट की सौहार्दपूर्ण यात्रा की गई। 30 नवम्बर, 2012 को दिल्ली में रक्षा मंत्रियों की बैठक हुई। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) तथा आरओके के रक्षा अर्जन कार्यक्रम प्रशासन (डीएपीए) के बीच फरवरी, 2012 में संचालन समिति की पहली बैठक हुई। रक्षा मंत्री श्री ए.के. एंटनी की सितम्बर, 2010 में आरओके यात्रा के बाद लिए गए निर्णय के अनुसरण में सियोल दूतावास में एक रक्षा स्कंध की स्थापना की गई। रेजीडेंट रक्षा अताशे/रक्षा स्कंध ने अक्टूबर, 2012 से अधिकारी स्तर पर जून, 2012 में भारत आरओके विदेश नीति और सुरक्षा संवाद नई दिल्ली में सचिव/ उपमंत्री स्तर किए गए। विदेश कार्यालय परामर्श फरवरी, 2012 में किए गए।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग को और आगे ले जाने के लिए दोनों ओर से इच्छा प्रकट की गई। भारत-कोरिया विज्ञान प्रौद्योगिकी मंत्री-स्तरीय संचालन समिति की दूसरी बैठक 12 दिसम्बर, 2012 को दिल्ली में हुई। विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री, श्री एस जययाल रेड्डी तथा आरओके के शिक्षा, विज्ञान व प्रौद्योगिकी मंत्री श्री ली-जू-हो के द्वारा एक संयुक्त विज्ञापित पर हस्ताक्षर किए गए। पुनर्नवीकरणीय ऊर्जा और पदार्थ विज्ञान पर अनुसंधान में सहयोग के लिए तथा वर्तमान परियोजनाओं में सहयोग जारी रखने के लिए दोनों पक्ष सहमत हुए। स्वास्थ्य व चिकित्सा विज्ञान और प्रौद्योगिकी शिखर सम्मेलन के साथ

सार्वजनिक-निजी वार्ता को आगे बढ़ाने व बढ़ावा देने के लिए द्विपक्षीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी बैठक को मिलाते हुए एक संयुक्त कार्यशाला आयोजित की गई।

कोरिया में भारत पर्व 30 जून, 2011 को शुरू हुआ था, जो 7 मार्च, 2012 को अंतिम समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। प्रधानमंत्री की मार्च, 2012 में कोरिया यात्रा के दौरान सहमति प्रकट की गई थी कि दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 40वीं वर्षगांठ उपयुक्त तरीके से मनाई जाएगी। कोरिया गणराज्य के संस्कृति मंत्री 13 दिसम्बर, 2012 को भारत यात्रा पर आए और संस्कृति मंत्री श्रीमती चन्द्रेश कुमारी कटोच से मुलाकात की। 13 दिसम्बर, 2012 को ही दोनों मंत्रियों ने संयुक्त रूप से दिल्ली में कोरियाई संस्कृति केन्द्र का उद्घाटन किया। शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग पर मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री डॉ. शशि थरूर और आरओके से आने वाले शिक्षा विज्ञान व प्रौद्योगिकी मंत्री द्वारा 12 दिसम्बर, 2012 को दिल्ली में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

मंगोलिया

भारत और मंगोलिया के बीच बहुत पुराने सांस्कृतिक संबंध रहे हैं और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में सुदृढ़ राजनयिक संबंध हैं। भारत और मंगोलिया के बीच विद्यमान व्यापक भागीदारी के तहत द्विपक्षीय संबंध विशेष रूप से विकसित हुए हैं। भारत और मंगोलिया के बीच रक्षा और सामरिक महत्त्व के संबंधों में नियमित प्रगति हुई है। दोनों देशों ने परम्परागत रूप से संयुक्त राष्ट्र एवं अन्य विविध अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर एक दूसरे का समर्थन किया है। दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग में संतोषजनक प्रगति हुई है और दोनों ओर से आर्थिक सहयोग में परिवर्तन लाने की कोशिश की जा रही है। दोनों देशों के बीच सभी संबंधों का जायजा लेने के लिए सहयोग पर भारत-मंगोलिया संयुक्त समिति की चौथी बैठक वर्तमान वित्तीय वर्ष के दौरान की जाने की योजना है।

भारत ने मंगोलिया को विभिन्न क्षेत्रों में विकास सहायता देना जारी रखा। इसमें आईटेक कार्यक्रम के तहत सरकारी कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने के लिए 150 स्लॉट्स, स्नातक और परास्नातक पाठ्यक्रमों के लिए 50 आईसीसीआर छात्रवृत्तियाँ, आईटेक/स्कैप के तहत भारतीय रक्षा संस्थानों में मंगोलियाई रक्षा कर्मियों को प्रशिक्षण और सीमा सुरक्षा बल कर्मियों को प्रशिक्षण शामिल है। उलानबटोर में "भारत मंगोलिया संयुक्त सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षा तथा आउटसोर्सिंग केन्द्र" की स्थापना के लिए सरल शर्तों पर 20 मिलियन अमरीकी डॉलर के ऋण श्रृंखला करार को अगस्त, 2012 में प्रभाव में लाया गया। उलानबटोर में राजीव गांधी कला और निर्माण विद्यालय के उन्नयन और आधुनीकरण की प्राथमिक प्रक्रिया पूरी हो गई। भारत सरकार ने 6 व्यवसायों को चरणबद्ध तरीके से लागू करने का निर्णय लिया है। पहले चरण के अन्तर्गत दो व्यवसायों कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग और सूचना प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रमों तथा मुद्रण प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रमों को वर्तमान वित्तीय वर्ष 2012-13 में लागू किया जाएगा।

भारत और मंगोलिया के बीच रक्षा और सामरिक महत्त्व के संबंधों में निरन्तर प्रगति हुई है। रक्षा सहयोग पर भारत-मंगोलिया संयुक्त कार्य समूह की 5वीं बैठक नवम्बर, 2012 में उलानबटोर में हुई। "नोमेडिक एलीफेंट" नामक संयुक्त भारत-मंगोलिया सैन्य अभ्यास, जो एक नियमित वार्षिक कार्यक्रम है, का आयोजन अगस्त, 2012 में भारत में किया गया। भारत ने अगस्त 2012 में मंगोलिया में हुए बहुदेशीय सैन्य अभ्यास खान क्वेस्ट 2012 में भाग लिया।

भारत के परमाणु ऊर्जा विभाग और मंगोलिया की नाभिकीय ऊर्जा एजेंसी ने नाभिकीय सहयोग पर अपने कार्य समूह की दूसरी बैठक दिसम्बर 2012 में भारत में करने का निर्णय लिया जिससे सितम्बर 2009 में हस्ताक्षरित रेडियोधर्मी खनिजों तथा नाभिकीय ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग के क्षेत्र में सहयोग संबंधी समझौता ज्ञापन के तहत

द्विपक्षीय सिविल सहयोग को सुदृढ़ बनाया जा सके। भारत की स्टील ऑथोरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) ने मंगोलियाई खनिज संसाधन एवं ऊर्जा मंत्रालय के साथ मई, 2012 में खनिज संसाधनों पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। सेल ने मंगोलिया में 3 मिलियन टन प्रतिवर्ष का स्टील प्रोसेसिंग प्लांट लगाने का प्रस्ताव किया है।

भारत और मंगोलिया दोनों लोकतांत्रिक समुदाय के सदस्य हैं। भारत मंगोलिया के साथ लोकतंत्र के लिए शिक्षा पर लोकतांत्रिक समुदाय के क्षेत्रीय सम्मलेन की 17-18 जनवरी, 2013 को दिल्ली में सह-मेजबानी कर रहा है। भारत के मानव संसाधन विकास मंत्री और मंगोलिया के विदेश मंत्री इस सम्मेलन की सह-अध्यक्षता करेंगे। इस क्षेत्र के लगभग 25 देश इसमें भाग ले रहे हैं।



रूसी परिसंघ

भारत और रूसी परिसंघ ने अप्रैल 2012 में राजनयिक संबंधों की 65वीं वर्षगांठ मनाई। दोनों देशों ने नियमित आदान-प्रदान और सभी स्तरों पर बातचीत की परम्परा को जारी रखा। रूसी राष्ट्रपति दमित्री मेदवेदेव चौथे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन (28-29 मार्च, 2012) के लिए दिल्ली आए और प्रधान मंत्री के साथ एक द्विपक्षीय बैठक की। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने जून 2012 में मैक्सिको में जी-20 शिखर सम्मेलन के समय अलग से राष्ट्रपति पुतिन से मुलाकात की। राष्ट्रपति पुतिन उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल के साथ 13वें वार्षिक शिखर सम्मेलन के लिए 24 दिसम्बर, 2012 को भारत आए।

वर्ष के दौरान अन्य महत्वपूर्ण द्विपक्षीय यात्राओं में शामिल हैं:-

पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा ने 11वीं भारत-रूस-चीन त्रिपक्षीय विदेश मंत्रियों की बैठक (13 अप्रैल, 2012) के लिए मॉस्को की यात्रा की। विदेश मंत्री भारत और सोवियत संघ/रूसी परिसंघ के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 65वीं वर्षगांठ के स्मरणोत्सव में उपास्थित रहे। रूसी परिसंघ की रक्षा व सुरक्षा परिसंघ परिषद समिति के उपाध्यक्ष श्री आर.जी इस्कुज़िन की अगुवाई में रूसी संसदीय शिष्टमंडल नई दिल्ली (15-17 मई, 2012) आया। शिष्टमंडल 15 मई को संसद गया और रक्षा मामलों की संसदीय स्थाई समिति के अध्यक्ष श्री सतपाल महाराज से मुलाकात की। वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री आनंद शर्मा ने 16वें सेंट पीटर्सबर्ग अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक मंच (21-23 जून, 2012) में भाग लेने के लिए सेंट पीटर्सबर्ग की यात्रा की। उन्होंने इस अवसर पर हुए भारत-रूस व्यापार संवाद पर रूसी उप प्रधान मंत्री दमित्री रोगोजिन के साथ सह-अध्यक्षता की। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री शिवशंकर मेनन ने उच्च प्रतिनिधिमंडल, प्रभारी सुरक्षा मामलों की तीसरी अन्तर्राष्ट्रीय बैठक (6-8 जून, 2012) के लिए सेंट पीटर्सबर्ग की यात्रा की। उप प्रधानमंत्री और भारत-रूस अंतर रोगोजिन सरकारी आयोग के सह-अध्यक्ष, दमित्री ने नई दिल्ली (16-17 जुलाई 2012) की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान भारत-रूस अंतर-सरकारी आयोग की सह-अध्यक्षता के अंतर- सत्र की बैठक का आयोजन किया गया। रक्षा राज्य मंत्री श्री एम.एम पल्लम राजू ने 18-20 सितम्बर, 2012 तक रूस की यात्रा की और तुला आर्म्स प्लांट की 300 वीं वर्षगांठ में भाग लिया। उन्होंने रूसी उप प्रधानमंत्री दमित्री रोगोजिन और उप मंत्री उद्योग एवं व्यापार, श्री आई करावाया से भी मुलाकात की। भारत संबंधी संसदीय समूह के प्रधान, श्री पवेल दोरोखिन की अगुआई में एक पाँच सदस्य के बहुपार्टी रूसी

संसदीय शिष्टमंडल (स्टेट, ड्यूमा-लोअर हाऊस) ने 4-8 दिसम्बर, 2012 को दिल्ली और मुम्बई का दौरा किया और भारत-रूस संसदीय मैत्री समूह तथा संसद में विदेश मामलों की स्थायी समिति के भारतीय प्रतिपक्षियों से भी मुलाकात की। उन्होंने विभिन्न व्यापार मंडलों के साथ भी बातचीत की।

रूसी उप प्रधानमंत्री दमित्री रोगोजिन और पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम कृष्णा की सह-अध्यक्षता में व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी व सांस्कृतिक सहयोग (आईआरआईजीसी-टीईसी) के 18वीं अंतर सरकारी आयोग की बैठक 15 अक्टूबर, 2012 में नई दिल्ली में हुई। आयोग का एक संयुक्त प्रोटोकॉल अपनाया गया। व्यापार एवं निवेश पर 6वाँ भारत-रूसी फोरम 15 अक्टूबर, 2012 को आयोजित हुआ और इसे रूसी उप प्रधानमंत्री दमित्री रोगोजिन एवं वाणिज्य, उद्योग एवं मंत्री श्री आनंद शर्मा द्वारा संबोधित किया गया। आईआरआईजीसी-टीईसी की बैठक से पहले अंतर-सरकारी आयोग के अन्तर्गत विभिन्न कार्य समूह की बैठकें हुई, जिनके प्रधान दोनों देशों के संबंधित मंत्रियों में वरिष्ठ अधिकारी होते हैं। इनमें व्यापार व आर्थिक सहयोग के कार्य समूह, ऊर्जा व ऊर्जा क्षमता तथा विज्ञान व प्रौद्योगिकी (नई दिल्ली में 12 अक्टूबर, 2012); आधुनिकीकरण एवं औद्योगिक सहयोग के कार्य समूह (दिल्ली में 28-29 अक्टूबर, 2012); पर्यटन एवं संस्कृतिक (नई दिल्ली में 17 अप्रैल, 2012) बैंक और वित्तीय मामलों के उप समूह (सेंट पीटर्सबर्ग में 27 से 29 जून, 2012) और बाध व वन्य जीवन पर संरक्षण के उप समूह (मास्को में 17-18 सितम्बर, 2012) शामिल हैं।

रक्षा मंत्री श्री ए.के. एंटनी ने रूसी रक्षा मंत्री श्री अनातोले ई सरदयूकोव के साथ सैन्य तकनीकी सहयोग पर भारत-रूस अंतर-सरकारी आयोग (आईआरआईजीसी- एमटीसी) की 12वीं बैठक की 10 अक्टूबर, 2012 को नई दिल्ली में सह-अध्यक्षता की।

वायुसेना अध्यक्ष एन ए के ब्राउन ने 12 अगस्त, 2012 को रूसी वायुसेना की 100वीं वर्षगांठ के आयोजन में भाग लिया। उप राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार व सचिव, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय, सुश्री विजय लता रेड्डी ने रूसी सुरक्षा परिषद में उप सचिव श्री येवगेनी लुक्यानोव के साथ 27 जनवरी, 2012 को नई दिल्ली में, एनएससीएस और रूसी सुरक्षा परिषद के बीच 11वीं संयुक्त समन्वय समूह (जेसीजी) की बैठक के रूप में बातचीत की। बाद में उन्होंने आईजीसी के 12वें दौर के लिए 10-12 अक्टूबर, 2012 को मॉस्को की यात्रा की।

वर्ष के दौरान निम्नलिखित विषयों पर विदेश कार्यालय से परामर्श किए गए:-

(i) विदेश सचिव श्री रंजन मथाई और रूसी उप विदेश मंत्री श्री ए. देनिसोव (फरवरी 2012 नई दिल्ली) के स्तर पर भारत-रूस संबंधों के प्राथमिक कार्य (ii) रणनीतिक स्थायित्व, डब्ल्यूएमडी अप्रसार और बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण मामले (अगस्त 2012 मॉस्को में) (iii) आतंकवाद-रोधी 7वें संयुक्त कार्य समूह (अप्रैल 2012 नई दिल्ली में) (iv) मध्य एशिया की स्थिति (सितम्बर 2012 नई दिल्ली में) (v) जी-20 संबंधित मामले (अक्टूबर, 2012 नई दिल्ली में) (vi) दक्षिण पश्चिम एशिया संबंधी मामले (जनवरी 2012 दिल्ली में और सितम्बर 2012 मॉस्को में) (vii) राजनयिक सम्पत्ति से संबंधित मामले (सितम्बर 2012 नई दिल्ली में)। द्विपक्षीय व्यापार में वर्ष 2011 की अपेक्षा 2012 में 30 प्रतिशत से अधिक वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई देती है। कलैण्डर वर्ष 2012 में 11 बिलियन यूएस डॉलर के व्यापार का अनुमान है। वर्ष 2015 के लिए बनाए गए 20 बिलियन अमरीकी डॉलर के व्यापार लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से दोनों ओर से महत्वपूर्ण शुरुआत की गई है। आधुनिकीकरण और औद्योगिक सहयोग पर रूस के साथ पहली संयुक्त कार्य समूह की बैठक 29 अगस्त, 2012 को नई दिल्ली में हुई। जेडब्ल्यूजी से पहले आधुनिकीकरण, नागर विमानन, खान और उर्वरक पर इसके चार उप समूहों की बैठकें हुईं।

यूक्रेन

यूक्रेन के राष्ट्रपति विक्टर यानुकोविच की 9-11 दिसम्बर, 2012 तक भारत की राजकीय यात्रा से भारत-यूक्रेन संबंध गुणात्मकता के साथ आगे बढ़ते हुए दिखाई दिए। राष्ट्रपति यानुकोविच ने प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह से बातचीत की। राष्ट्रपति यानुकोविच ने राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, विदेश मंत्री और नेता विपक्ष के साथ भी बैठकें कीं। उन्होंने भारत-यूक्रेन व्यापार मंच को सम्बोधित किया, जिसकी मेजबानी संयुक्त रूप से भारतीय उद्योगों परिसंघ (सीआईआई), भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग परिसंघ (फिक्की) और भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग का संबद्ध मंडल (एसोचैम)। संयुक्त राष्ट्रसंघ में विस्तारित सुरक्षा परिषद में स्थाई सदस्ता के लिए यूक्रेन ने भारत की उम्मीदवारी पर समर्थन व्यक्त किया। भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में 2016-17 के लिए अस्थायी सीट की यूक्रेन के उम्मीदवारी पर अपना समर्थन व्यक्त किया। यात्रा के दौरान पाँच करारों पर हस्ताक्षर किए गए-सिविल और वाणिज्यिक मामलों में पारस्परिक कानूनी सहायता पर संधि; रक्षा के क्षेत्र में सहयोग पर करार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग पर करार; नाभिकीय रक्षा और रेडिएशन बचाव में सहयोग तथा तकनीकी सूचना के आदान-प्रदान पर करार; समरूपता और गुणवत्ता के मानकीकरण और निर्धारण के क्षेत्र में पारस्परिक समझौता ज्ञापन। 'भारत और यूक्रेन के बीच व्यापक भागीदारी को आगे बढ़ाना' विषय पर एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया।

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री ई. अहमद ने 30 मई-1 जून, 2012 को व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी, उद्योग और सांस्कृतिक सहयोग (आईयूआईसी-टीईसी) पर भारत-यूक्रेन अंतर सरकारी

आयोग की चौथी बैठक में सह अध्यक्षता के लिए कीव की यात्रा की। उन्होंने यूक्रेन के राष्ट्रपति से मुलाकात की। भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) की अगुवाई में आईजीसी में सहभागी व्यापार प्रतिनिधिमंडल ने यूक्रेन के वाणिज्य व उद्योग चैम्बर में संयुक्त व्यापार परिषद एवं क्रेता-विक्रेता बैठक आयोजित की। व्यापार और आर्थिक सहयोग पर संयुक्त कार्य समूह की पहली बैठक 12-13 अप्रैल, 2012 को कीव में हुई। वाणिज्य मंत्रालय ने फिक्की के माध्यम से 5 से 9 सितम्बर, 2012 को कीव में सबसे पहले एक कीव-भारत समारोह का आयोजन किया। भारत समारोह के दौरान क्रेता-विक्रेता मिलन एवं संयुक्त व्यापार परिषद के आयोजन हुए।

द्विपक्षीय व्यापार में वर्ष 2010-11 में 1932.73 मिलियन अमरीकी डॉलर के मुकाबले वर्ष 2011-12 में 2865.45 मिलियन अमरीकी डॉलर की बढ़ोतरी से 48.26 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई (भारत का निर्यात 491.22 मिलियन अमरीकी डॉलर था और आयात 2374.23 मिलियन अमरीकी डॉलर था) जैसाकि कीव शिखर सम्मेलन के दौरान नाभिकीय ऊर्जा के सुरक्षित व प्रवर्तित प्रयोग के लिए 19 अप्रैल, 2011 (चेरनोबिल त्रासदी की 25वीं वर्षगांठ) को घोषित किया गया था; भारत ने यूरोपीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक के माध्यम से चेरनो बिडल शेल्टर फण्ड के लिए यूक्रेन को वर्ष 2012 में 1 मिलियन अमरीकी डॉलर का अंशदान दिया।

भारत और यूक्रेन के बीच राजनयिक संबंधों की 20वीं वर्षगांठ के अवसर पर कीव में भारतीय दूतावास द्वारा विविध प्रकार के आयोजन किए गए। अन्तर्राष्ट्रीय संबंध संस्थान, तारस, शेवचेंको राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, कीव, यूक्रेन में वर्ष 2012 में भारतीय अध्ययन के लिए लघु अवधि आईसीसीआर पीठ की स्थापना की गई। भारतीय नृत्यों का सभी यूक्रेनियाई उत्सवों में यूक्रेनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आये 25 नृत्य समूहों के साथ 22 सितम्बर, 2012 को कीव में आयोजन किया गया। संसद सदस्य और वर्तमान में मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री डॉ. शशी थरूर एवं श्री माणिकर अय्यर, संसद, ने 14-15 सितम्बर, 2012 को याल्टा यूरोपीय रणनीतिक सम्मेलन, याल्टा में सहभागिता की। भारत-वितानियों के ऑल यूक्रेनियन एसोसिएशन ने अक्टूबर, 2012 में एक गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया। पूर्व विदेश सचिव श्री कंवल सिब्ल ने 19-20 अप्रैल, 2012 को कीव में 5वें कीव सुरक्षा मंच के अग्र पैनल में सहभागिता की।

तारस शेवचेंको राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, कीव के एक हिंदी अध्यापक को सितम्बर 2012 में दक्षिण अफ्रीका के जोहांसबर्ग में आयोजित 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन में विश्व हिंदी सम्मान से पुरस्कृत किया गया। भारत ने भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग के अन्तर्गत (15) और सांस्कृतिक संबंध परिषद स्कीम के तहत (2) छात्रवृत्तियाँ यूक्रेन को दिए जाने जारी रखा।

बेलारूस

भारत-बेलारूस संबंध उत्साही और मैत्रीपूर्ण बने हुए हैं। प्रधानमंत्री मिखाइल म्यासनीकोविच ने 13-14 नवम्बर, 2012 को भारत का कार्यपरक दौरा किया। उन्होंने प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, कोयला



प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और रूसी राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन ने 25 दिसम्बर, 2012 को भारत-रूस द्विपक्षीय सहयोग का विस्तार से समीक्षा की।



राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में 10 दिसम्बर, 2012 को औपचारिक स्वागत के समय प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी के साथ यूक्रेन के राष्ट्रपति श्री विक्टर यानुकोविच।

मंत्री श्री प्रकाश जायसवाल, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री जयपाल रेड्डी, वाणिज्य व उद्योग और वस्त्र मंत्री श्री आनंद शर्मा से मुलाकात की। उन्होंने भारत-अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला 2012 (आईआईटीएफ) के उद्घाटन में हिस्सा लिया और वहाँ भारत के महामहिम राष्ट्रपति से बात भी की। बेलारूस भारत अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले का भागीदार देश था।

संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री सचिन पायलट ने 11-13 जनवरी, 2012 तक बेलारूस का दौरा किया। उन्होंने मिंस्क में स्वर्गीय श्री राजीव गांधी के नाम पर बने डिजिटल शिक्षण केन्द्र का उद्घाटन किया। आर्थिक, व्यापार, उद्योग, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक सहयोग के लिए भारत-बेलारूस अंतर-सरकारी आयोग की 5वीं बैठक में भाग लेने के लिए वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री ज्योतिरादित्य एम.सिंधिया की अगुआई में एक सरकारी प्रतिनिधिमंडल ने 30-31 जनवरी, 2012 को बेलारूस का दौरा किया। विदेश कार्यालय के परामर्शों का तीसरा दौर 22 फरवरी, 2012 को नई दिल्ली में चला। बेलारूस ने 24-28 फरवरी, 2012 को नई दिल्ली में 20वें विश्व पुरस्कृत मेले में भागीदारी की।

आर्थिक और वाणिज्यिक सहयोग वर्ष 2010 के मुकाबले 13.5 प्रतिशत की वृद्धि के साथ वर्ष 2011 में 506 मिलियन अमरीकी डॉलर के कुल व्यापार के साथ सही राह पर बना रहा। फार्मास्यूटिकल सेक्टर में सहयोग के लिए संभावनाओं की तलाश में फार्मेक्सिल द्वारा आयोजित फार्मास्यूटिकल कम्पनियों के 18 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 8-11 दिसम्बर, 2012 को मिंस्क का दौरा किया और क्रेता-विक्रेता सम्मेलन भी हुआ।

सैन्य और तकनीकी सहयोग पर भारत-बेलारूस संयुक्त समिति की 5वीं बैठक 2-3 सितम्बर, 2012 को मिंस्क में हुई। भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटेक) कार्यक्रमों के तहत बेलारूस को 45 स्टॉल दिए गए। चांसरी में 28 सितम्बर, 2012 को आईटेक दिवस समारोह, जिसमें बेलारूस के शिक्षा मंत्री मुख्य अतिथि थे, 125 आईटेक पूर्वछात्रों ने भाग लिया।

सुश्री प्रतिभा प्रहलाद की अगुआई में 11 सदस्यीय नृत्य मंडली, पंडित सतीश श्री व्यास की अगुआई में 5 सदस्यीय शास्त्रीय संगीत समूह और सुश्री मितुल सेनगुप्ता की अगुआई में एक नृत्य मंडली ने मिंस्क एवं बेलारूस के अन्य शहरों में नृत्य पेश किया। मिंस्क में समसामायिक संग्रहालय ने 10 जुलाई, 2012 को भारतीय ग्राफिक कलाकार श्री राकेश बानी के कार्यों को दर्शाने के लिए एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। यह भारतीय कलाकार की इस प्रकार की पहली प्रदर्शनी थी।

भारत-बेलारूस राजनयिक संबंधों के 20 वर्ष पूरे होने पर कई समारोह आयोजित किए गए।

जॉर्जिया

जॉर्जिया के साथ भारत के संबंध मैत्रीपूर्ण रहे हैं। त्वीलिसी राज्य विश्वविद्यालय में पीठ समसामायिक भारतीय अध्ययन की आईसीसीआर अक्टूबर, 2011 से सितम्बर 2012 तक परिचालित रही।

मानव संसाधन विकास और क्षमता निर्माण में भारत के सहयोग को जॉर्जिया में बहुत सराहा गया। भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम (आईटेक) के तहत जॉर्जिया को 2012-13 के लिए 25 प्रशिक्षण स्लॉट आबंटित किए गए।

येरेवान में दूतावास भारतीय समुदाय, जिसमें विद्यार्थी और व्यापारी शामिल हैं और पिछले कुछ वर्षों में जिनकी संख्या में वृद्धि हुई है, उनके कल्याण और सुरक्षा के हितों को सुनिश्चित करने के लिए जॉर्जिया सरकार के संपर्क में रहा है।

अर्मेनिया

वर्ष 1992 में राजनयिक संबंधों की स्थापना से लेकर अबतक भारत-अर्मेनिया के द्विपक्षीय संबंधों में सार और संदर्भ जुड़ चुके हैं। 1995 की मैत्री संधि और 30 से अधिक द्विपक्षीय करार द्विपक्षीय सहयोग के लिए एक कारगर सुदृढ़ ढाँचा उपलब्ध कराते हैं।

भारत की विकास सहायता बहुत प्रशंसनीय रही है। तबुश क्षेत्र के 72 विद्यालयों (शहरी और अर्द्धशहरी क्षेत्रों के 19 विद्यालय एवं ग्रामीण इलाकों के 53 विद्यालय) में प्रयोगशालाओं को स्थापित करने अथवा विद्यमान कम्प्यूटर प्रयोगशालाओं को उन्नत करने की परियोजना सफलतापूर्वक पूरी की जा चुकी है। इस परियोजना से क्षेत्र के 14000 विद्यार्थियों और 500 अध्यापकों को लाभ पहुँचेगा। भारत सरकार की सहायता से 2011 में पूरी हुई दो महत्वपूर्ण परियोजनाएं नामशः येरेवान की संचार और सूचना प्रौद्योगिकी में भारत-अर्मेनियाई प्रतिभा केन्द्र तथा येरेवान का जनगणना डाटा संवर्धन केन्द्र हैं, जो अच्छी तरह कार्य रही हैं। पहले वाला क्षेत्र का अकेला ऐसा केन्द्र है, जिसमें भारत निर्मित सुपर कम्प्यूटर परम लगा हुआ है। प्रतिभा केन्द्र में आईटी केन्द्र स्थापित करने के लिए नवम्बर 2011 से मई 2012 तक दो भारतीय आईटी प्रशिक्षक प्रतिनियुक्त किए गये थे, जिन्होंने दिया गया कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया।

भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग कार्यक्रम (आईटेक) के तहत 2012-13 में अर्मेनिया को आबंटित 45 प्रशिक्षण स्लॉटों में से 40 स्लॉट अर्मेनिया में इस कार्यक्रम की बढ़ती हुई लोक प्रियता को दर्शाते हुए पहले ही बुक हो चुके हैं। येरेवान राज्य विश्वविद्यालय में समसामायिक भारतीय अध्ययन के लिए आईसीसीआर की लघु अवधि पीठ ने फरवरी-जून 2012 से काम करना शुरू कर दिया है। येरेवान राज्य भाषायी विश्वविद्यालय (वाईएसएलयू) में वर्तमान में 40 से अधिक अर्मेनियाई विद्यार्थी हिंदी भाषा सीख रहे हैं। वाईएसएलयू में आईसीसीआर प्रयोजित हिंदी पीठ के तहत भारतीय अध्यापक द्वारा हिंदी सिखाई जा रही है।

वर्ष 2012 को भारत-अर्मेनिया के बीच राजनयिक संबंधों की 20वीं वर्षगांठ के वर्ष का महत्त्व दिया गया। आईसीसीआर- प्रयोजित 5 सदस्यीय भारतनाट्यम नृत्य समूह ने 28 सितम्बर-02 अक्टूबर 2012 तक अर्मेनिया का दौरा किया/अर्मेनियाई चित्रकार संघ के 4 चित्रकारों ने भारत दौरा किया और 21 नवम्बर, 2012 तक भारत के विभिन्न इलाकों में तुरन्त (ऑन द स्पॉट) चित्रकारी की। दूतावास ने अर्मेनिया के सांस्कृतिक मंत्रालय के सहयोग से अर्मेनियाई भाषा में रामायण का संक्षिप्त पाठान्तर निकाला। भारतीय दूतावास ने जनवरी 2013 में येरेवान में भारतीय फिल्म सप्ताह का आयोजन किया।



14 नवम्बर, 2012 को नई दिल्ली में बेलारूस गणराज्य के प्रधानमंत्री डॉ. मिखाइल म्यास्नीकोविच के साथ प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह।



विश्व मामलों की भारतीय परिषद (आईसीडब्ल्यूए) तथा विश्व राजनयिक अकादमी, बिश्केक के संयुक्त तत्वावधान में जून 2012 को "प्रथम भारत-मध्य एशिया संवाद" का उद्घाटन करते हुए विदेश राज्य मंत्री श्री ई अहमद।

भारत-अर्मेनिया के बीच जनवरी-अक्टूबर 2012 में द्विपक्षीय व्यापार 57.3 मिलियन अमरीकी डॉलर का रहा जो 2011 में उतनी ही अवधि के लिए 54.8 बिलियन अमरीकी डॉलर से थोड़ा अधिक है।

अजरबैजान

भारत-अजरबैजान अंतर सरकारी आयोग (आईएजीसी) की दूसरी बैठक में प्रतिपादित किए गए दिशानिर्देशों के आधार पर भारत के अजरबैजान से संबंध सुदृढ़ बने। आखिरी 9 महीनों के दौरान निम्नलिखित दौरों का आदान-प्रदान किया गया: वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय में राज्यमंत्री श्री ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया दूसरे भारत-अजरबैजान अंतर सरकारी आयोग (आईएजीसी) के लिए अप्रैल, 2012 में एक प्रतिनिधि मंडल को लेकर गए। श्री अजय माकन, खेल-कूद और युवा मामलों के राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जून 2012 में एक प्रतिनिधि मंडल को लेकर गए; श्री प्रफुल्ल पटेल, भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्री ने जुलाई 2012 में दौरा किया और श्री कपिल सिब्बल, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री, नवम्बर 2012 में एक भारतीय प्रतिनिधि मंडल को लेकर गए। अजरबैजान गणराज्य की सरकार के ऊर्जा और उद्योग मंत्री श्री नतिग अलीयेव ने 9-10 अक्टूबर 2012 को नई दिल्ली में 'ऊर्जा उपलब्धता' अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार में भाग लेने के लिए भारत दौरा किया।

आईएजीसी की बैठक के दौरान दोनों अध्यक्षों द्वारा एक प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए गए। अजरबैजान और भारत ने हवाई सेवाओं के लिए भी एक करार पर हस्ताक्षर किए। वाणिज्य और

उद्योग मंत्रालय में राज्यमंत्री श्री ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया ने राष्ट्रपति अलीयेव से मुलाकात की और अजरबैजान के आर्थिक विकास मंत्री श्री शाहीन मुस्तफयेव एवं उप विदेश मंत्री श्री खलाफ खलाफोव के साथ बैठकें कीं। दोनों ओर से दोनों देशों के बीच संस्थागत ढांचे को सुदृढ़ करने पर सहमति जताई गई।

वर्ष 2012 के पहले 9 महीनों के दौरान, अजरबैजान के साथ द्विपक्षीय व्यापार वर्ष 2011 की उतनी ही अवधि के मुकाबले 315 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 1.35 बिलियन अमरीकी डॉलर को पार कर गया और इसका पहला कारण अजेरी कच्चा तेल, आयोडीन एवं ऑयल कोक का आयात रहा। ओएनजीसी ने अजरबैजान के तेल क्षेत्र एवं पाइपलाइन संबंधी 1 बिलियन अमरीकी डॉलर की परिसंपत्ति को खरीदने के लिए अजरबैजान सरकार के साथ एक करार किया।

भारत सरकार ने भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आईटेक) के तहत 2011-12 के लिए अजरबैजान को 15 स्लॉट आबंटित किए। सरकारी पर्यटन कार्यालय, फ्रैंकफर्ट ने भारत के कुछ दूर ऑपरेटरों के साथ 12-14 अप्रैल, 2012 तक बाकू में आयोजित 11वें अजरबैजान अन्तर्राष्ट्रीय ट्रेवल एण्ड टूरिज्म फेयर (एआईटीएफ) में भागीदारी की। अजरबैजान के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री ने 'अतुल्य भारत' पवेलियन का उद्घाटन किया गया। बाकू में अजरबैजान भाषाई विश्वविद्यालय में वर्ष 2010 में आईसीसीआर द्वारा स्थापित 'हिंदी पीठ' 24 अजरबैजानियाई विद्यार्थियों को वैकल्पिक विषय के रूप में हिंदी पढ़ा रही है।

मध्य एशिया

कजाकिस्तान

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की 15-16 अप्रैल, 2011 की अस्ताना यात्रा के बाद वर्ष के दौरान भारत-कजाकिस्तान के संबंधों का संवेग बना हुआ है।

संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री सचिन पायलट 4 सदस्यीय शिष्टमंडल को लेकर स्मारक शिखर सम्मेलन और एशिया में बातचीत एवं विश्वास निर्माण उपायों (सीका) पर चौथे सम्मेलन में भाग लेने के लिए गए। 12 सितम्बर, 2012 को अस्ताना में विदेश मंत्रियों की बैठक हुई। उन्होंने कजाकिस्तान के परिवहन एवं संचार मंत्री श्री अशकर जुमागालिव के साथ द्विपक्षीय वार्ता की। भारत और कजाकिस्तान के बीच 8-9 जनवरी, 2013 को नई दिल्ली में अंतर-सरकारी आयोग की 10वीं बैठक हुई।

भारत-कजाक अंतर-सरकारी परामर्श बैठक का आयोजन 9 जनवरी, 2013 को नई दिल्ली में किया गया। इस बैठक के दौरान, अस्ताना में एक आईटी केंद्र स्थापित करने के लिए कजाकिस्तान के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर भी किए गए।

कजाकिस्तान के साथ द्विपक्षीय व्यापार जनवरी-अक्टूबर 2011 की तुलना में 205.60 मिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर जनवरी-अक्टूबर 2012 में 422.10 मिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। इस प्रकार 105.30 प्रतिशत की वृद्धि दिखाई दी। आईटेक कार्यक्रम के तहत कजाकिस्तान को 55 स्टॉट अबांटित किए गए।

किर्गिज गणराज्य

वर्ष के दौरान भारत-किर्गिस्तान के संबंधों में निरंतर वृद्धि दिखाई दी।

दोनों देशों ने भारत-किर्गिज राजनयिक संबंधों की 20वीं वर्षगांठ पर आयोजन किए। इस अवसर को यादगार बनाने के लिए वर्ष 2012 के दौरान भारतीय दूतावास ने भारतीय फिल्म महोत्सव, भारतीय लोकनृत्य, एक स्वागत समारोह और अग्रणी किर्गिज इलैक्ट्रॉनिक व प्रिंट मीडिया में लेख एवं साक्षात्कारों का प्रसारण करवाया।

एक 4-सदस्यीय भारतीय सैन्य प्रशिक्षण दल ने अप्रैल 2012 में संयुक्त राष्ट्र शांति कार्यवाही में किर्गिज सैन्य कार्मिकों को 9 महीने का प्रशिक्षण पूरा कराया।

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री ई. अहमद ने 10-13 जून, 2012 को किर्गिस्तान की यात्रा की और सबसे पहले भारत-एशिया ट्रेक-II संवाद का उद्घाटन किया तथा भारतीय सहयोग के तहत एक आलू संवर्धन प्लांट लगाया। मंत्री महोदय ने भारत की 'मध्य एशिया सम्पर्क नीति' का अनावरण किया और दूरभाष दवा व दूरस्थ शिक्षा को बढ़ावा देने, भारतीय केन्द्रीय एशियाई विश्वविद्यालय खोलने एवं किर्गिस्तान में सुपरस्पेशियलिटी अस्पताल डायग्नोस्टिक केन्द्र की स्थापना करने के लिए एक ई-नेटवर्क स्थापित करने के लिए अन्य बातों के साथ-साथ भारत के आशय का उल्लेख किया।

प्रणाली भारतीय कार्य मंत्रालय के सचिव ने किर्गिस्तान की यात्रा की और 'मेकेन्ड्रेस्टर' हमवतन मंच को संबोधित किया, जो लाखों गैर-आवासीय किर्गिज नागरिकों को सहायता प्रदान करने के लिए 2-3 अगस्त, 2012 को आयोजित किया गया था।

श्री एस.एस. गुप्ता, विकास आयुक्त (हस्ताशिल्प) की अगुवाई में 4 सदस्यीय हस्ताशिल्प निर्यात प्रोत्साहन परिषद दल ने 21-22 सितम्बर, 2012 को बिश्केक की यात्रा की और किर्गिज वाणिज्य उद्योग चैम्बर के समन्वय में दूतावास द्वारा आयोजित व्यापार प्रोत्साहन बैठक में भाग लिया।

श्री संजय सिंह, सचिव (पूर्व) ने श्री अजय बिसारिया, संयुक्त सचिव (ईआरएस) के साथ 4-5 दिसम्बर, 2012 को बिश्केक में सरकार के एससीओ प्रधानों की बैठक में भाग लिया और किर्गिज उप विदेश मंत्री के साथ द्विपक्षीय वार्ता की।

कुल व्यापार, वर्ष 2010-11 में 23.56 मिलियन अमरीकी डॉलर की तुलना में वर्ष 2011-12 में 31.22 मिलियन अमरीकी डॉलर के साथ द्विपक्षीय व्यापार में आगे बढ़ती हुई प्रवृत्ति देखने को मिली।

ताजिकिस्तान

राष्ट्रपति इमोमाली रहमोन की 1-4 सितम्बर, 2012 तक भारत यात्रा के दौरान ताजिकिस्तान के साथ 'सामरिक महत्त्व की भागीदारी' की घोषणा के साथ वर्ष 2012 के दौरान भारत-ताजिकिस्तान के बीच द्विपक्षीय संबंधों में प्रगाढ़ता आई। यात्रा के दौरान, निम्नलिखित द्विपक्षीय करारों/समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए:- वर्ष 2012-15 के लिए सांस्कृतिक क्षेत्र में सहयोग के लिए कार्यक्रम; शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग पर कार्यक्रमों का आदान-प्रदान; खेलकूद के क्षेत्र में समझौता ज्ञापन; ताजिकिस्तान के ऊर्जा व उद्योग मंत्रालय एवं भारत के वस्त्र मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन; ताजिकिस्तान के श्रम व जनसंख्या सामाजिक सुरक्षा मंत्रालय एवं भारत के श्रम व रोजगार मंत्रालय के बीच पारस्परिक सहयोग पर करार; भारत के स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय एवं ताजिकिस्तान के स्वास्थ्य मंत्रालय के बीच करार।

पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम कृष्णा ने दुशांबे की यात्रा की और विदेश मंत्री जैफ्री तथा राष्ट्रपति रहमोन से क्रमशः 2-3 जुलाई, 2012 को मुलाकात की। विदेश मंत्री ने 3 जुलाई, 2012 को भारतीय दूतावास में हुई यूरेशिया मिशन के प्रधानों की वार्षिक बैठक को भी संबोधित किया।

वारजोब-I हाइड्रोप्लांट की दो यूनिटों को 2 गुणा 4.75 मेगावाट की क्षमता के साथ अद्यतित करके सफलतापूर्वक अधिकृत किया गया। भारत सरकार ने बीचईईएल एवं एनएचपीसी के माध्यम से इस पावर प्लांट का नवीकरण और आधुनीकरण किया। ताजिकिस्तान के ऊर्जा और उद्योग मंत्री श्री शुल सेराली एवं भारतीय राजदूत ने 28 दिसम्बर, 2012 को वारजोब-I हाइड्रो पावर स्टेशन का उद्घाटन किया। भेल (बीचईईएल) द्वारा इस अद्यतित प्लांट को 31 जनवरी, 2013 को औपचारिक रूप से ताजिकिस्तान को सौंप दिया गया।

भारत-ताजिकिस्तान के बीच द्विपक्षीय व्यापार 2010-11 में 40.79 मिलियन अमरीकी डॉलर की तुलना में 2011-12 में 28.37 मिलियन अमरीकी डॉलर रहा।

आईटेक कार्यक्रम के तहत ताजिकिस्तान को कुल 150 प्रशिक्षण स्लॉट आबंटित किए गए हैं।

तुर्कमेनिस्तान

वर्ष के दौरान भारत-तुर्कमेनिस्तान के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 20वीं वर्षगांठ पर अगस्त-सितम्बर, 2012 में अशगाबाद में 'भारत के इस्लामिक स्मारकों' की फोटो प्रदर्शनी और तुर्कमेनिस्तान के विभिन्न भागों में भारतीय फिल्मों की प्रस्तुति जैसे आयोजनों को किया गया।

तुर्कमेनिस्तान-अफगानिस्तान-पाकिस्तान-भारत (तापी) गैस पाइपलाइन परियोजना में प्रगति हुई। पूर्व पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्री श्री एस.जयपाल रेड्डी ने तापी स्थायी समिति की बैठक (एससीएम) में भाग लेने के लिए 23 मई, 2012 को अवाज की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान भारत-तुर्कमेनिस्तान के बीच गैस क्रय और विक्रय करार (जीएसपीए) पर हस्ताक्षर किए गए। वर्ष के दौरान भारत द्वारा पाकिस्तान और अफगानिस्तान को देय ट्रांजिट शुल्क को भी अंतिम रूप दिया गया। सितम्बर 2012 में सिंगापुर, न्यूयार्क और लंदन में तापी रोड-शो किए गए, जिससे कि एक अन्तर्राष्ट्रीय सिंध का गठन किया जा सके, जो तापी गैस पाइप लाइन को बनायेगा और संचालित करेगा। पेट्रोलियम व गैस मंत्रालय में अपर सचिव श्री सुधीर भार्गव ने 23 सितम्बर, 2012 में अशगाबाद में तापी स्थायी समिति की बैठक (एससीएम) में भाग लिया। तुर्कमेनिस्तान के तेल/गैस उद्योग व खान संसाधन कार्यकारी मंत्री श्री के अब्दुलेव इव ने 14-17 अक्टूबर, 2012 तक पेट्रोटैक-2012 में भाग लेने के लिए दिल्ली की यात्रा की।

श्री कपिल सिब्बल, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री ने आईटी सेक्टर में द्विपक्षीय सहयोग को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए 16-19 सितम्बर, 2012 तक अशगाबाद की यात्रा की। भारत ने वर्ष 2011 में अशगाबाद में आईटी केन्द्र स्थापित करने के लिए तुर्कमेनिस्तान की मदद की। फार्मास्यूटिक्स निर्यात प्रोत्साहन परिषद (फार्मास्यूटिक्स) से 23 सदस्यीय शिष्टमंडल ने इस सेक्टर में द्विपक्षीय संबंधों को आगे सुदृढ़ करने के लिए 12-15 दिसम्बर, 2012 तक अशगाबाद की यात्रा की। आईटेक प्रशिक्षण कार्य के अन्तर्गत 2011-12 में तुर्कमेनिस्तान को 35 शिक्षण स्लॉट उपलब्ध कराए गए। विदेश मंत्री श्री राशिद मेरेदोव ने 22 जनवरी 2013 को नई दिल्ली में हुए अंतर सरकारी परामर्शी हेतु शिष्टमंडल की अगुवाई की।

द्विपक्षीय व्यापार 2010-11 में 35.87 मिलियन अमरीकी डॉलर से 2011-12 में बढ़कर 60.74 अमरीकी डॉलर हो गया।

उजबेकिस्तान

भारत और उजबेकिस्तान ने मार्च 2012 में राजनयिक संबंधों की स्थापना की 20वीं वर्षगांठ मनाई।

नियमित विदेश कार्यालय परामर्शी का 11वाँ दौर नवम्बर 2012 में नई दिल्ली में आयोजित किया गया। विदेश मंत्रालय के सचिव (पूर्व), श्री संजय सिंह और उजबेक उपमन्त्री ओइबेक आरिफ उस्मानोव ने अपने शिष्टमंडलों की अगुवाई की। यूएनएससी की स्थाई सदस्यता के लिए भारत की कोशिश के समर्थन के लिए उजबेकिस्तान की ओर से पुनः पुष्टि की गई। श्री ओइबेक आरिफ ने विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद से मुलाकात की। सूचना प्रौद्योगिकी पर भारत-उजबेक संयुक्त कार्यसमूह की दूसरी बैठक 26-28 फरवरी, 2013 को हुई।

उजबेकिस्तान ने अगस्त 2012 में आईजीसी की बैठक में 361वीं अन्तर्राष्ट्रीय भू-विज्ञान कांग्रेस की मेजवानी की कोशिश के लिए भारत के प्रयत्न का समर्थन किया।

जनवरी-सितम्बर, 2012 की अवधि के दौरान भारत को निर्यात 116.8 मिलियन अमरीकी डॉलर एवं आयात 22.6 मिलियन अमरीकी डॉलर के साथ द्विपक्षीय व्यापार 139.4 मिलियन अमरीकी डॉलर का हुआ। वर्ष 2012 में परस्पर स्तर की कुछ यात्राएं हुई जिनमें शामिल हैं:-

संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री सचिन पायलट की अक्टूबर 2011 में हुई यात्रा के अनुसरण में जनवरी 2012 में एचसीएल शिष्टमंडल द्वारा ताशकंद की यात्रा; उजबेक एजेंसी के साथ संचार सहयोग के पहलुओं पर फरवरी 2012 में बातचीत के लिए एक इन्फोसिस शिष्टमंडल द्वारा यात्रा; उजबेक संचार व सूचना एजेंसी एवं उजबेकिस्तान के आईटी संगठन के साथ सहयोग के पहलुओं पर बातचीत के लिए अप्रैल 2012 में नासकोम अध्यक्ष की अगुवाई में 'शिष्टमंडल द्वारा' आईटी सेक्टर में सहयोग पर संभावनाओं की तलाश के लिए अप्रैल 2012 में एक एनआईआईटी शिष्टमंडल द्वारा यात्रा; फिक्की कारपोरेट रीट्रीट के घटक के रूप में 20-23 जुलाई, 2012 में 46 सदस्यीय शिष्टमंडल द्वारा और वाणिज्य व उद्योग के इंडो-सीआईएस चैम्बर से 11 सदस्यीय व्यापार शिष्टमंडल द्वारा सितम्बर 2012 में नई दिल्ली की यात्रा।

उजबेकिस्तान के राष्ट्रपति, इस्लाम करीमोव की मई 2011 में भारत यात्रा के अवसर पर आईटेक कार्यक्रम के तहत उजबेकिस्तान के लिए वार्षिक स्लॉटों की संख्या को 125 से बढ़ाकर 150 कर दिया गया। पिछले 3 वर्षों में स्लॉट की लगभग शतप्रतिशत उपयोगिता के साथ उजबेकिस्तान में आईटेक कार्यक्रमों को अच्छी तरह ग्रहण किया गया। आईसीसीआर के छात्रवृत्ति कार्यक्रम के तहत भारतीय विश्वविद्यालयों में विविध पाठ्यक्रमों के लिए उजबेकिस्तान को वार्षिक 20 छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जा रही हैं।



खाड़ी

खाड़ी क्षेत्र के देशों के साथ भारत के पारंपरिक रूप से घनिष्ठ राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संपर्क रहे हैं। इस क्षेत्र के देश विश्व में भारत के सबसे बड़े व्यापार भागीदार हैं, जिनके साथ वर्ष 2011-12 के दौरान 167 बिलियन अमरीकी डॉलर का व्यापार किया गया। भारत के कच्चे तेल की जरूरतों का लगभग 60 प्रतिशत इसी क्षेत्र से पूरा होता है। खाड़ी देश में 6 मिलियन से अधिक भारतीय रहते हैं जो इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में योगदान देते हैं। तदनुसार, खाड़ी देशों की शांति और स्थिरता तथा सतत प्रगति एवं समृद्धि में भारत का महत्वपूर्ण हित है।

बहरीन

बहरीन के निर्माण में पिछले कई दशकों से भारतीय पेशेवरों, व्यावसायिकों तथा कामगारों ने सकारात्मक भूमिका निभाई है, जिसकी बहरीन की सरकार तथा जनता, दोनों ने सराहना की है तथा यह भारत तथा बहरीन के बीच आपसी विश्वास तथा समझ-बूझ के श्रेष्ठ संबंधों को दर्शाता है।

भारत के उपराष्ट्रपति, श्री हामिद अंसारी के निमंत्रण पर बहरीन के युवराज तथा सशस्त्र सेना के उप मुख्य कमाण्डर सलमान बिन हामद एल खलीफा की मई, 2012 में भारत की सरकारी यात्रा इस दिशा में एक महत्वपूर्ण घटना है। उपराष्ट्रपति के साथ द्विपक्षीय संबंधों पर विचार-विमर्श के अलावा युवराज ने राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह तथा पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा को भी बातचीत के लिए आमंत्रित किया। इस यात्रा से भारत तथा बहरीन के बीच पहले से ही स्थापित नजदीकी तथा श्रेष्ठ संबंधों को नई प्रेरणा मिली है।

7-9 दिसम्बर, 2012 तक युद्ध कौशल शिक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय सामरिक अध्ययन संस्थान, मनामा, बहरीन में आयोजित वार्षिक आयोजन में उप राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने भाग लिया।

ईरान

इस वर्ष के दौरान भारत तथा ईरान के बीच उच्च स्तरीय वार्ता के माध्यम से आपसी संबंध सुदृढ़ हुए हैं। प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए 28-31 अगस्त, 2012 तक तेहरान की यात्रा की। अपनी यात्रा के उपरांत, प्रधान मंत्री ने प्रमुख नेता आयतुल्लाह खमनेई तथा राष्ट्रपति महमूद अहमदीनेजाद के साथ अलग-अलग बैठक की।

भारत तथा ईरान के बीच 2012 का अन्य उच्च स्तरीय विनिमय/आदान-प्रदान इस प्रकार है:-

एशिया तथा ओशियानिया क्षेत्र के लिए ईरान के उप विदेश मंत्री डॉ. सईद अब्बास अरागची ने विदेश कार्यालय परामर्श के लिए अक्टूबर, 2012 में भारत की यात्रा की।

उप राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्रीमती लता रेड्डी ने 9-11 मई, 2012 के दौरान ईरान की यात्रा की।

नवीन तथा नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री डॉ. फारुख अब्दुल्ला ने व्यावसायी प्रतिनिधिमण्डल के साथ मार्च, 2012 में ईरान की यात्रा की।

ईरान के विदेश मंत्री डॉ. अली अकबर सालेही ने राष्ट्रपति के विशेष दूत के रूप में 16वें गुटनिरपेक्ष आंदोलन शिखर सम्मेलन के लिए प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को न्यौता देने के लिए मई, 2012 में भारत की यात्रा की।

जल संसाधन तथा अल्पसंख्यक कार्य राज्य मंत्री श्री विनसेंट एच. पाला ने शहरी जल प्रबंधन संबंधी क्षेत्रीय केंद्र (आरसीयूडब्ल्यूएम) की आठवीं शासी बोर्ड बैठक में भाग लेने के लिए सितम्बर, 2012 में तेहरान की यात्रा की।

अक्टूबर, 2012 में नई दिल्ली में आयोजित "ऊर्जा उपलब्धता पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन" में भाग लेने के लिए ऊर्जा मंत्री माजिद नामज ने भारत की यात्रा की।

ईरान के उपराष्ट्रपति तथा पर्यावरण विभाग के प्रमुख डॉ. मोहम्मद जावेद मोहम्मदीजादेह ने जीव विविधता पर संयुक्त राष्ट्र संघ के पक्षों के 11 वें अधिवेशन (सीओपी) में भाग लेने के लिए नवम्बर, 2012 में हैदराबाद की यात्रा की।

सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद, ईरान के सचिव डॉ. सईद जालीली ने 2-4 जनवरी, 2013 तक भारत की यात्रा की। उन्होंने विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद तथा वित्त मंत्री श्री पी. चिंदबरम के साथ मुलाकात की तथा राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री शिवशंकर मेनन के साथ बैठक की। दोनों राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालयों के बीच सहयोग के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

इराक

आधुनिक तथा लोकतांत्रिक इराक के पुनर्निर्माण के लिए भारत कृतसंकल्प है। क्षमता निर्माण के इस क्षेत्र में अपनी वचनबद्धता को देखते हुए भारत ने भारतीय प्रौद्योगिकी तथा आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) कार्यक्रम के तहत इराकी सरकारी कार्यालयों को

प्रशिक्षित करने के लिए वर्ष 2012 में 150 स्लॉट प्रदान किए हैं तथा सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम छात्रवृत्ति योजना (सीईपी) और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) की सामान्य सांस्कृतिक छात्रवृत्ति योजना (जीसीएसएस) के तहत भारत में उच्च शिक्षा के लिए इराकी छात्रों को 55 छात्रवृत्तियां दी गईं।

उपराष्ट्रपति तथा राज्य सभा के पदेन अध्यक्ष, श्री हामिद अंसारी और लोकसभा अध्यक्ष, श्रीमती मीरा कुमार के संयुक्त निमंत्रण पर इराक के प्रतिनिधिमण्डल परिषद (संसद) के अध्यक्ष (स्पीकर) श्री ओसामा अल नुर्जेफी की अध्यक्षता में 28 सदस्यों के संसदीय प्रतिनिधिमण्डल ने 15 से 20 दिसम्बर, 2012 तक भारत की यात्रा की। इस प्रतिनिधिमण्डल ने उपराष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी, लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार, विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद तथा विदेश मंत्रालय की स्थायी समिति के अध्यक्ष के साथ मुलाकात की।

भारत को कच्चे तेल की आपूर्ति करने वाला दूसरा सबसे बड़ा देश इराक है। वित्तीय वर्ष 2011-12 में, द्विपक्षीय व्यापार 19.7 बिलियन अमरीकी डॉलर रहा। भारत से इराक को 763.97 मिलियन अमरीकी डॉलर का निर्यात किया गया, जबकि इराक से 18.94 बिलियन अमरीकी डॉलर का आयात हुआ।

इजरायल

संचार, सूचना तकनीकी तथा मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल ने 3 से 8 अप्रैल, 2012 तक इजरायल की यात्रा की। मंत्री जी ने इजरायल के राष्ट्रपति श्री शिमोन पेरेस को आमंत्रित किया तथा संचार मंत्री मोशे काहलोन, वित्त मंत्री डॉ. यूवाल स्टेनीट्ज तथा शिक्षा मंत्री श्री गिडियोन सार से मुलाकात की। दोनों पक्षों में टेलीकॉम एवं सूचना तकनीकी में सहयोग के लिए संयुक्त कार्य दल बनाने पर सहमति बनी। नवीकरणीय एवं सतत ऊर्जा, बायो-मेडिकल साईंसेज, साइबर सुरक्षा, मानविकी तथा समाज विज्ञान में संयुक्त अनुसंधान किए जाने के लिए तीन वर्ष की अवधि में 5 मिलियन अमरीकी डॉलर के कुल योगदान से एक संयुक्त निधि बनाई गई है।

पर्यटन मंत्री श्री सुबोध कांत सहाय ने असम तथा उत्तराखण्ड के पर्यटन मंत्रियों के साथ 23 से 26 जून, 2012 तक इजरायल की यात्रा की। यात्रा के दौरान पर्यटन पर संयुक्त कार्य दल की पहली बैठक भी हुई। भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए "अतुल्य भारत" संघ्या का आयोजन किया गया। पर्यटन मंत्री ने रविंद्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती के अवसर पर जेरुसलेम के हिब्रू विश्वविद्यालय में रविंद्रनाथ टैगोर की मूर्ति का अनावरण किया।

वस्त्र मंत्रालय के सचिव ने तेल अवीव में आयोजित प्रथम भारत अंतर्राष्ट्रीय पोशाक एवं वस्त्र प्रदर्शनी के उद्घाटन के लिए 04 से 08 सितम्बर, 2012 तक इजरायल की यात्रा की। इस क्षेत्र में सहयोग के लिए संकल्प पत्र पर हस्ताक्षर किए गए।

महानिदेशक (अर्जन), रक्षा मंत्रालय के नेतृत्व में एक सात-सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने रक्षा अधिप्राप्ति, उत्पादन एवं विकास पर भारत-इजरायल उप कार्य दल की 7वीं बैठक के लिए 3 से 7 जून, 2012 तक इजरायल की यात्रा की।

भारत की ओर से इजरायल की अन्य महत्वपूर्ण यात्राओं में, क्रमशः हरियाणा, आंध्र प्रदेश एवं महाराष्ट्र के कृषि मंत्रियों यथा, श्री परमवीर सिंह, श्री कन्ना लक्ष्मी नारायण तथा श्री विखेपाटील एकनाथ राव द्वारा 15 से 17 मई, 2012 तक एग्रीटेक-2012 की अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए इजरायल की यात्रा का समावेश है। उत्तर प्रदेश के सिंचाई मंत्री श्री शिवपाल यादव ने 8 से 10 सितम्बर, 2012 तक इजरायल की यात्रा की।

भारतीय जल सेना के चार जलयानों आईएनएस मुंबई, आईएनएस त्रिशूल, आईएनएस गोमती तथा आईएनएस आदित्य ने भारतीय नौसेना के रियर एडमिरल ए.आर. कर्वे, फ्लैग ऑफिसर कमांडिंग वेस्टर्न फ्लीट के नेतृत्व में हाइफा बंदरगाह की 30 जुलाई से 02 अगस्त, 2012 तक सद्भावना यात्रा की।

भारत और इजरायल के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 20वीं वर्षगांठ मनाने के लिए भारत महोत्सव का द्वितीय संस्करण 'इजरायल में भारत उत्सव' मई, 2012 में आयोजित किया गया तथा इसमें भारतीय संगीत, फिल्म, कला, साहित्य, योग व पकवान को दर्शाया गया। दोनों देशों के डाक विभाग द्वारा जारी दो डाक टिकटों के सेट का 5 नवम्बर, 2012 को अनावरण किया गया।

भारत-इजरायल मुक्त व्यापार करार वार्ताओं का छठा दौर 20 से 23 जनवरी, 2013 तक इजरायल में आयोजित किया गया।

जार्डन

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के विशेष निदेशक (एस) ने तीसरे वैश्विक फोकल प्वाइंट सम्मेलन में भाग लेने के लिए 16 से 18 जुलाई, 2012 तक अमान की यात्रा की।

भारतीय दूतावास, अमान द्वारा भारतीय पर्यटन कार्यालय, दुबई के सहयोग से 27 जून, 2012 को अमान में 'अतुल्य भारत पर्यटन' रोड शो का आयोजन किया गया। पर्यटन मंत्री श्री सुबोध कांत सहाय के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

पंजाब विधान सभा के अध्यक्ष डॉ. चरणजीत सिंह अटवाल ने 22 से 25 सितम्बर, 2012 तक अमान की सरकारी यात्रा की।

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष जस्टिस श्री के.जी. बालकृष्णन की अध्यक्षता में एक 4-सदस्यों के प्रतिनिधिमण्डल ने अमान में 5 से 8 नवम्बर, 2012 तक आयोजित राष्ट्रीय मानवाधिकार संस्थानों के 11वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन एशिया पैसिफिक फोरम (एपीएफ) के क्षेत्रीय समूह बैठक तथा व्यवसाय महिला एवं बाल अधिकार के अन्य कार्यक्रमों में हिस्सा लिया।

मेजर जनरल अहमद महमूद अल बहाबे के नेतृत्व में जार्डन सशस्त्र सेना के तीन सदस्यीय रक्षा प्रतिनिधिमण्डल ने 27 मार्च से 3 अप्रैल, 2012 तक नई दिल्ली में आयोजित रक्षा एक्सपो 2012 में भाग लिया।

इंजीनियरी निर्यात संवर्धन परिषद, भारत द्वारा प्रयोजित 12 सदस्यों के व्यावसायिक प्रतिनिधिमण्डल ने 4 से 7 जून, 2012 तक आयोजित जिमेक्स 2012 में भाग लिया।

कुवैत

भारत और कुवैत के बीच पहली विदेश कार्यालय मंत्रणा नई दिल्ली में 7 मई, 2012 को आयोजित की गई। कुवैत में आयोजित पहले एशिया सहयोग वार्ता (एसीडी) सम्मेलन में भाग लेने के लिए विदेश राज्य मंत्री श्री ई. अहमद ने 14-17 अक्टूबर, 2012 तक कुवैत की यात्रा की। सम्मेलन के अतिरिक्त, श्री ई. अहमद ने कुवैत के प्रधान मंत्री शेख जबर अल मुबारक अल हमद अल सबाह से भी मुलाकात की। भारतीय प्रवासी कार्य मंत्री श्री व्यालार रवि ने 7-9 जनवरी, 2013 तक कोच्ची में आयोजित 11 वें प्रवासी भारतीय दिवस (पीबीडी) को बढ़ावा देने के लिए 10 से 11 नवम्बर, 2012 तक कुवैत की यात्रा की।

हाइड्रोकार्बन के क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देने के लिए हाइड्रोकार्बन पर भारत-कुवैत के संयुक्त कार्यकारी दल की दूसरी बैठक में भाग लेने के लिए एक कुवैती प्रतिनिधिमण्डल ने 22-23 नवम्बर, 2012 तक नई दिल्ली की यात्रा की। भारत तथा कुवैत ने 23 अप्रैल, 2012 को नई दिल्ली में स्वास्थ्य संबंधी समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। उस समझौता ज्ञापन में द्विपक्षीय सहयोग के विस्तार तथा स्वास्थ्य संबंधी संयुक्त कार्यकारी समूह स्थापित करने की परिकल्पना की गई।

कुवैत पत्रकार संघ के अध्यक्ष अहमद यूसुफ बेहबेहानी की अध्यक्षता में 11 सदस्यीय के प्रतिनिधिमण्डल ने 14-18 मई, 2012 तक भारत की यात्रा की।

“भारत अतुल्य निवेश गंतव्य स्थल” शीर्षक पर 13 जून, 2012 को नुक्कड़ नाटक में भाग लेने के लिए वित्त मंत्रालय के एक प्रतिनिधिमण्डल ने कुवैत की यात्रा की।

आबू धाबी में स्थित भारतीय दूतावास तथा भारतीय पर्यटन कार्यालय ने भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 31 अक्टूबर, 2012 को “अतुल्य भारत” नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया। अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

विशेष कुवैत सेल

विशेष कुवैत सेल (एसकेसी) का गठन खाड़ी युद्ध (1990-91) के बाद वापस आने वाले लोगों को मुआवजा प्रदान करने के लिए किया गया था। सभी जायज दावों का निपटारा किया जा चुका है। संयुक्त राष्ट्र मुआवजा पहले ही आयोग (यूएनसीसी) ने उसके बाद से दावा संवितरण कार्यों को समाप्त कर दिया है और किसी भी भारतीय दावेदार का कोई भी दावा लंबित नहीं है। फिलहाल विशेष कुवैत सेल बकाया न्यायालय मामलों और विशेष कक्ष दावेदारों के आरटीआई मामलों को भी देखता है। दावे की राशि की लेखा परीक्षा इत्यादि जैसे शेष मुद्दों को देखता है।

लेबनान

लेबनान के निवेश विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष सहित राज्य मंत्री मारवान खेरेडीन के नेतृत्व में लेबनानी प्रतिनिधिमण्डल ने 22-23 मई, 2012 को आबू धाबी में आयोजित अरब-भारत साझेदारी सम्मेलन के तीसरे संस्करण में भाग लिया। बैठक के अतिरिक्त श्री खेरेडीन ने विदेश राज्य मंत्री श्री ई. अहमद से भी मुलाकात की तथा द्विपक्षीय संबंधों एवं लेबनानी अपतटीय गैस अन्वेषण में भारतीय साझेदारी की संभावना पर विचार-विमर्श किया।

तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम विदेश लिमिटेड (ओवीएल) के प्रतिनिधिमण्डल ने 3-4 जुलाई, 2012 को लेबनान की यात्रा की तथा लेबनान अंतर्राष्ट्रीय पेट्रोलियम अन्वेषण प्रदर्शनी (एलआईपीई) 2012 में भाग लिया एवं लेबनान में अपतटीय प्राकृतिक गैस अन्वेषण कार्य के शुभारंभ के लिए अपने लेबनानी पक्ष के साथ बातचीत की। ओवीएल के प्रतिनिधियों ने इस संबंध में अनुवर्ती विचार-विमर्श के लिए 2-3 अगस्त, 2012 को फिर से लेबनान की यात्रा की।

ओमान

ठोस सामाजिक-आर्थिक संपर्कों के साथ भारत और ओमान के मध्य घनिष्ठ संबंध रहे हैं। भारतीय प्रवासी कार्य मंत्री श्री व्यालार रवि की अध्यक्षता में 7 से 9 जनवरी, 2013 तक आयोजित किए जाने वाले गयारहवें प्रवासी भारतीय दिवस का प्रचार करने के लिए तथा भारतीय प्रवासी समुदाय से बातचीत करने के लिए 13 नवम्बर, 2012 को प्रतिनिधिमण्डल ने ओमान की यात्रा की। पंजाब विधान सभा के अध्यक्ष ने शिक्षा दौरा के लिए 17 से 18 सितम्बर, 2012 तक ओमान की यात्रा की तथा मैनपावर श्रमशक्ति मंत्री और मजलिस-ए-शूरा व मजलिस-ए-दावला के अध्यक्ष से मुलाकात की। विदेश राज्य मंत्री श्री ई. अहमद ने 7 से 8 नवम्बर, 2012 तक ओमान की यात्रा की तथा ओमान के भारतीय प्रवासी समुदाय से बातचीत की।

भारत ओमान रणनीतिक परामर्शी दल (एसओएससीजी) की नौवीं बैठक मस्कट में 2 दिसम्बर, 2012 को आयोजित की गई। भारत की ओर से श्री संजय सिंह, सचिव (पूर्व), विदेश मंत्रालय तथा ओमान की ओर से श्री अहमद यूसुफ बिन ओबैद अलाहारथी विदेश मंत्रालय में राजनयिक कार्य के लिए अवर सचिव द्वारा इसकी सह-अध्यक्षता की गई।

कृषि संबंधी भारत-ओमान संयुक्त कार्यकारी दल ने 6 से 8 नवम्बर, 2012 तक मस्कट में मुलाकात की तथा 2012-13 के दौरान सहयोग संबंधी कार्य योजना को अंतिम रूप दिया। 25-26 नवम्बर, 2012 को द्विपक्षीय नागरिक उड़्डयन वार्ता भारत व ओमान ने आयोजित की तथा दोनों ओर से संवर्धित यात्री सीटों तथा साप्ताहिक उड़ानों पर संशोधित समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

वित्त मंत्रालय, सेबी तथा आर.बी.आई. के सम्मिलित अधिकारियों के 6-सदस्यीय दल ने “भारत अतुल्य निवेश गंतव्य स्थल” शीर्षक पर 12 जून, 2012 को मस्कट में प्रस्तुतीकरण देने के लिए यात्रा की। सीआईआई के दस-सदस्यीय दल ने 22-26 जून, 2012 तक

ओमान की यात्रा की तथा ओमान के उद्योग एवं वाणिज्य संघ के साथ मुलाकात की। भारतीय उद्योग एवं वाणिज्य संघ (फिक्की) ने 4-6 सितम्बर, 2012 तक ओमान के लिए 27 सदस्यों का व्यापार प्रतिनिधिमण्डल प्रायोजित किया। इंडेक्सपो मस्कट 2012 का मस्कट में 4-6 सितम्बर, 2012 तक आयोजन किया गया जिसमें 70 भारतीय कंपनियों तथा व्यापार घरानों ने भाग लिया। पर्यटन मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग ने 14 अक्टूबर, 2012 को मस्कट में "अतुल्य भारत 2012" नुकड़ नाटक का आयोजन किया। रक्षा सचिव ने 5-6 जनवरी, 2013 को मस्कट में 5-सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया तथा अवर सचिव, रक्षा मंत्रालय, ओमान सल्तनत के साथ संयुक्त सैन्य सहयोग समिति की छठी बैठक की सह अध्यक्षता की, जिसमें रक्षा सहयोग के विस्तार पर सहमति बनी।

ओमान की ओर से विदेश मंत्री युसूफ बिन अलावी बिन अब्दुल्लाह ने 2 नवम्बर, 2012 को आईओआर-एआरसी मंत्री परिषद की बैठक के लिए भारत की यात्रा की तथा विदेश मंत्री के साथ द्विपक्षीय विचार-विमर्श किया। भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के निमंत्रण पर ओमान के राज्य वित्तीय तथा प्रशासनिक लेखा परीक्षा संस्थान के अध्यक्ष ने 1-3 मई, 2012 तक भारत में प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया। ओमान के मानव शक्ति मंत्रालय के प्रतिनिधिमण्डल ने भारत की यात्रा की तथा 11-12 सितम्बर, 2012 को मुम्बई में मानव शक्ति पर भारत ओमान के संयुक्त कार्यकारी दल के तीसरे सत्र में भाग लिया।

आईएनएस तलवार तथा आईएनएस गंगा के साथ वायुयान वाहक आईएनएस विराट ने मस्कट बंदरगाह का 21-23 जून, 2012 तक दौरा किया।

फिलिस्तीन

फिलिस्तीनी राष्ट्रपति महमूद अब्बास ने 10 से 12 सितम्बर, 2012 तक भारत की सरकारी यात्रा की। यात्रा के दौरान उन्होंने नई दिल्ली में फिलिस्तीनी दूतावास का उद्घाटन किया। भारत ने फिलिस्तीन को 10 मिलियन अमरीकी डॉलर की बजट सहायता की घोषणा की। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा स्कूलों के निर्माण के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच तीन समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए। भारत ने फिलिस्तीनी उद्देश्य के लिए अपनी मजबूत एवं अटल सहायता को दुहराया।

भारत ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में फिलिस्तीन की स्थिति गैर सदस्यीय प्रेक्षक संस्था से बढ़ाकर 'गैर सदस्यीय प्रेक्षक राज्य' किए जाने के प्रारूप संकल्प को सह-प्रायोजित किया।

सऊदी अरब

भारत और सऊदी अरब के मध्य घनिष्ठ संबंध हैं। सऊदी अरब भारत के लिए कच्चे तेल का सबसे बड़ा निर्यातक है। सऊदी अरब में रहने वाले 2 मिलियन से अधिक भारतीयों का उस देश में अकेला सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय है। शौरा परिषद के अध्यक्ष डॉ. अब्दुल्लाह बिन मोहम्मद बिन इब्राहिम अल शेख के नेतृत्व में सऊदी अरब संसदीय प्रतिनिधिमण्डल ने 7-10 मई, 2012 तक भारत की

यात्रा की तथा उपराष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, लोकसभा अध्यक्ष तथा विदेश मंत्री के साथ मुलाकात की।

विदेश राज्य मंत्री श्री ई. अहमद ने रियाद में 23-26 मई, 2012 तक आयोजित फ्रेंड्स ऑफ यमन की बैठक में भाग लेने के लिए यमन अधिराज्य की यात्रा की तथा बैठक के अतिरिक्त यमनी प्रधान मंत्री मोहम्मद बसिंदावा और यमनी विदेश मंत्री डॉ. अबु बक्र अब्दुल्लाह अल कीरबी के साथ मुलाकात की। उन्होंने रक्षा मंत्री प्रिंस सलमान बिन अब्दुलाजीज अल सऊद, विदेश मंत्री प्रिंस सऊद अल फैज़ल तथा हज मंत्री डॉ. बांदर बिन मोहम्मद अल हज्जर के साथ भी मुलाकात की। उस समय के कानून मंत्री श्री सलमान खुर्शीद के नेतृत्व में तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने 17-18 जून, 2012 को युवराज नैफ बिन अब्दुलाजीज अलसऊद के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करने के लिए सऊदी अधिराज्य की यात्रा की।

विदेश राज्य मंत्री श्री ई. अहमद ने 17-20 सितम्बर, 2012 तक जेद्दाह की यात्रा की तथा सऊदी हज मंत्री डॉ. बांदर बिन मोहम्मद अल हज्जर से मुलाकात की और हज से संबंधित मुद्दों पर विचार-विमर्श किया। बाद में उन्होंने हज 2012 के सद्भावना प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया तथा 21 अक्टूबर से 1 नवम्बर, 2012 तक राज्य की यात्रा की और सऊदी हज मंत्री से जेद्दाह में मुलाकात की।

राष्ट्रीय संग्रहालय तथा सऊदी विरासत संरक्षण सोसायटी की सभापति (राजा अब्दुल्लाह की बेटी) राजकुमारी अदेलाह बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अजीज के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने आईसीसीआर के विशिष्ट आगंतुक कार्यक्रम के तहत 18-23 सितम्बर, 2012 तक भारत की यात्रा की।

सऊदी श्रम मंत्री श्री अदेल फाकीह ने 'रोजगार तथा विकास' शीर्षक पर विश्व बैंक द्वारा आयोजित अधिवेशन में भाग लेने के लिए 5-6 नवम्बर, 2012 को भारत की यात्रा की तथा इसके अतिरिक्त भारतीय प्रवासी कार्य मंत्री श्री व्यालार रवि से भी मुलाकात की।

भारत-सऊदी अरब के संयुक्त आयोग की नवीं समीक्षा बैठक में भाग लेने के लिए सचिव (पूर्व) श्री संजय सिंह के नेतृत्व में तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 23 दिसम्बर, 2012 को रियाद की यात्रा की।

इस वर्ष के दौरान भारत तथा सऊदी अरब के मध्य द्विपक्षीय व्यापार में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। द्वि-पक्षीय व्यापार जो वर्ष 2006-07 में 15.94 बिलियन अमरीकी डॉलर था, वह वर्ष 2011-12 में बढ़कर 36.74 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया है। सऊदी अरब के भारतीय निर्यात में अप्रैल से नवम्बर, 2012 तक 2011 की तदनुसूची अवधि की तुलना में 71.48 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

रत्न एवं आभूषण निर्यात संवर्धन परिषद (जीजेईपीसी) के तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने 27 से 29 मई, 2012 तक रियाद तथा जेद्दाह की यात्रा की तथा दोनों जगहों पर रोड शो का आयोजन किया। भारतीय मसाला संघ के निदेशक (विपणन) के नेतृत्व में इलायची उत्पादकों तथा निर्यातकों के 7-सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल



दिनांक 8-11 अप्रैल 2012 को भारत के राजकीय दौरे के दौरान कतर के अमीर शेख हमद बिन खलीफा अल तबानी प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह के साथ



विदेश राज्य मंत्री तथा भारत सरकार के हज सदभावना प्रतिनिधिमण्डल के नेता श्री ई. अहमद ने सऊदी अरब राज्य के हज मंत्री श्री बांदार बिन मोहम्मद अल हज्जर से 23 अक्टूबर, 2012 को मुलाकात की।

ने 3 से 5 जून, 2012 तक रियाद तथा जेद्दाह की यात्रा की तथा रियाद एवं जेद्दाह उद्योग तथा वाणिज्य संघ के परिसर में सऊदी अरब के व्यापारियों के साथ विक्रेता व क्रेता (खरीददार) की मुलाकात आयोजित की। वित्त मंत्रालय के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय अंतर-मंत्रालयी सरकारी प्रतिनिधिमण्डल ने 10 जून, 2012 को सऊदी अरब की यात्रा की तथा रियाद में 'भारत में निवेश अवसर' शीर्षक पर रोड शो आयोजित किया। इस प्रतिनिधिमण्डल ने सऊदी अरब मोनीटरी एजेंसी (एसएएमए) तथा सऊदी अरब सामान्य निवेश प्राधिकरण (एसएजीआईए) के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ सौहार्दपूर्ण मुलाकात की।

भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन ने रियाद में 24 से 27 सितम्बर, 2012 तक आयोजित सऊदी एग्रो फूड 2012 में भाग लिया। 3 से 7 नवम्बर, 2012 तक रियाद में 'भारतीय सांस्कृतिक सप्ताह' का आयोजन किया गया, जिसका सऊदी अरब के संस्कृति एवं सूचना उपमंत्री डॉ. अब्दुल्लाह बिन सालेह अल जांसर ने उद्घाटन किया।

कतर राज्य

भारत और कतर के मध्य इस वर्ष के दौरान बहुफलकीय द्विपक्षीय कार्यकलापों का लगातार विस्तार होता रहा है। कतर के अमीर शेख हमद बिन खलीफा अल थानी की उच्च स्तरीय सरकारी प्रतिनिधिमण्डल के साथ अप्रैल, 2012 में भारत की सरकारी यात्रा बड़ी बात रही। इस यात्रा ने दोनों देशों के नेतृत्व के मध्य उच्च स्तर के द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा करने का अवसर प्रदान किया। प्रशासनिक नियंत्रण एवं पारदर्शिता प्राधिकरण के अध्यक्ष एवं संयुक्त राष्ट्र संघ के जलवायु परिवर्तन अधिवेशन के सभापति श्री अब्दुल्लाह बिन हमद अल अततियाह ने पर्यावरण एवं वन राज्य मंत्री (स्वाधीन प्रभार) श्रीमती जयंती नटराजन के निमंत्रण पर सितम्बर, 2012 में नई दिल्ली की यात्रा की। दोहा में 26 नवम्बर- 8 दिसम्बर, 2012 तक आयोजित संयुक्त राष्ट्र संघ के जलवायु परिवर्तन अधिवेशन सीओपी 18 और सीएमपी 8 में भारत ने सक्रिय रूप से भाग लिया। पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के अपर सचिव ने सरकारी प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया।

वाणिज्य, उद्योग एवं वस्त्र मंत्री श्री आनंद शर्मा ने अप्रैल, 2012 में दोहा में व्यापार एवं विकास (यूएनसीटीएडी) पर अधिवेशन में भाग लिया; संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री सचिन पायलट ने 24 वीं विश्व डाक संघ (यूपीओ) कांग्रेस के प्रतिनिधिमण्डल के नेता के रूप में अक्टूबर, 2012 में दोहा की यात्रा की।

भारत सरकार ने नवम्बर, 2012 में दोहा में आयोजित फेरेशियस फॉलथन (3) अभ्यास में भाग लेने के लिए तीन वरिष्ठ अधिकारियों को भेजा। भारत एवं कतर के मध्य व्यापार सहयोग ने सकारात्मक प्रवृत्ति को दर्शाया है। दोनों देशों ने भारत में कतर के निवेश के वर्तमान स्तर को बढ़ाने के तरीकों पर विचार-विमर्श किया। भारतीय उद्योग एवं वाणिज्य संघ (फिक्की) के 20-सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल की सितम्बर, 2012 में दोहा में हुई बैठक फलदायी रही।

दोहा त्रिबेका फिल्म समारोह (डीटीएफएफ) का चौथा संस्करण 17-24 नवम्बर, 2012 तक दोहा में आयोजित किया गया तथा भारतीय सिनेमा की कई जानी मानी हस्तियों ने इसमें भाग लिया। दोहा त्रिबेका फिल्म समारोह का शुभारंभ मीरा नायर की फिल्म "दिलकटेंट फंडामेंटलिस्ट" की स्क्रीनिंग के साथ हुआ। कटारा सांस्कृतिक ग्राम के समापन समारोह में संगीतज्ञ कलामण्डलम श्री सी. गोपालाकृष्णन के नेतृत्व में कथकली दल ने नृत्य का प्रदर्शन किया।

सीरिया

भारत ने सीरिया में हुई निरंतर हिंसा पर गहरी चिंता व्यक्त की है तथा सभी ओर से हिंसा त्यागने और सीरिया की जनता की इच्छा को देखते हुए शांतिपूर्ण बातचीत से मसले को हल करने की इच्छा जताई है। भारत ने समान रूप से संयुक्त राष्ट्र संघ तथा सीरियाई पार्टियों का समर्थन करने वाले अन्य अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों का साथ दिया है, जिससे वहाँ की समस्या हल हो तथा सीरियाई नेतृत्व में राजनैतिक वार्तालाप प्रक्रिया से शांति बहाल हो। भारत ने इस वर्ष के दौरान संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद तथा महासभा संकल्प के पक्ष में मत दिया है तथा यू-यूएन के संयुक्त के विशेष दूत कोफी अन्नान के मध्यस्थता प्रयासों को समर्थन दिया है, जिससे सीरिया में सभी पार्टियों द्वारा हिंसा समाप्त हो तथा सभी एकमत होकर समझौते का प्रयास करें। भारत ने कोफी अन्नान के प्रस्थान के पश्चात् सितम्बर, 2012 में श्री लाखदार ब्राहिमी की सीरिया के लिए संयुक्त विशेष प्रतिनिधि के पद पर नियुक्ति का भी स्वागत किया है।

भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) के अंतर्गत सीरिया के साथ भारत का सहयोग इस वर्ष भी जारी रहा।

संयुक्त अरब अमीरात (यू.ए.ई)

संयुक्त अरब अमीरात वर्ष 2012 में भारत का सबसे बड़ा नॉन आइल मरकैंडाइज ट्रेड भागीदार बना है। भारत भी यू.ए.ई. का सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है। 2011-12 में द्विपक्षीय व्यापार 72 बिलियन अमरीकी डॉलर था, जिसमें 2012-13 के पहले छः महीने में ही 38 बिलियन अमरीकी डॉलर की वृद्धि हो गई है। यू.ए.ई. 1.8 मिलियन अनुमानित भारतीयों के लिए अब घर है।

भारत-यू.ए.ई. संयुक्त आयोग का दसवां सत्र 15 तथा 16 अप्रैल, 2012 को अबु धाबी में आयोजित किया गया। पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा द्वारा भारतीय प्रतिनिधिमण्डल तथा विदेश मंत्री शेख अब्दुल्लाह बिन जायद उल नहयन द्वारा यू.ए.ई. प्रतिनिधिमण्डल की अगुआई की गई। इस यात्रा के दौरान, विदेश मंत्री ने अबु धाबी में मिशनों के क्षेत्रीय प्रमुखों के सम्मेलन की भी अध्यक्षता की।

निवेश संबंधी भारत यू.ए.ई. उच्च स्तरीय कार्य बल की स्थापना मई, 2012 में की गई। इस कार्य बल की अध्यक्षता वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री आनंद शर्मा तथा यू.ए.ई. की ओर से कार्यकारी परिषद सदस्य शेख हामेद बिन जायद अल नहयन द्वारा की गई। सरकारी स्तर पर कार्य बल की प्रारंभिक बैठक 11 नवम्बर, 2012 को आबू धाबी में आयोजित की गई।

संयुक्त रक्षा सहयोग समिति की पाँचवी बैठक नई दिल्ली में 1 से 3 मई 2012 तक हुई।

अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं में, तीसरा अरब-भारत साझेदारी सम्मेलन—“व्यापार तथा निवेश द्वारा विकास” 22–23 मई, 2012 को आबू धाबी में आयोजित किया गया, जिसमें विदेश राज्य मंत्री ई. अहमद, ने भाग लिया। यू.ए.ई. की ओर से विदेश व्यापार मंत्री शेख लुब्ना तथा आर्थिक मंत्री सुल्तान बिन सईद अल मंसूरी ने भाग लिया। फिक्की से एक बड़े व्यापारी प्रतिनिधिमण्डल के अलावा, राजदूत अहमद बिन हेली, उप महासचिव अरब राज्य लीग तथा अरब देशों के मंत्रियों सहित जिबूती-मिश्र, लेबनान, मौरीटैनिया, कतर तथा सूडान के मंत्रियों ने भी भाग लिया।

यू.ए.ई. के विदेश मंत्री शेख अब्दुल्लाह बिन जायद अल नहयन की 17–18 मई, 2012 को नई दिल्ली यात्रा तथा विदेश राज्य मंत्री डॉ. अनवर मोहम्मद गरगाश के नेतृत्व में आईओआर-एआरसी की 12 वीं मंत्रालयी बैठक में यू.ए.ई. के प्रतिनिधिमण्डल की 2 नवम्बर, 2012 को नई दिल्ली यात्रा यू.ए.ई. की ओर से की गई महत्वपूर्ण यात्राओं में शामिल हैं। भारत की ओर से अन्य यात्राओं में भारतीय प्रवासी कार्य मंत्री श्री व्यालार रवि की 3–4 अप्रैल, 2012 तथा 11–13 नवम्बर, 2012 को, मानव संसाधन एवं विकास तथा संचार एवं सूचना तकनीकी मंत्री, श्री कपिल सिब्बल जिन्होंने दुबई में 14–18 अक्टूबर, 2012 तक आयोजित आईटीयू टेलीकॉम वर्ल्ड, 2012 में भेजे गए प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया तथा पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री श्री एस. जयपाल रेड्डी की 21–24 अक्टूबर, 2012 तक दुबई में आयोजित विश्व ऊर्जा फोरम के भारतीय प्रतिनिधिमण्डल के नेतृत्व में की गई यात्राओं का समावेश है।

भारत तथा यू.ए.ई. ने सीमा शुल्क सहयोग के करार; भारत यू.ए.ई. के दोहरे कर बचाव करार को संशोधित करने के लिए प्रोटोकॉल; इलेक्ट्रॉनिक अनुबंध रजिस्ट्रेशन तथा प्रामाणिकता प्रणाली के माध्यम से भारतीय अनुबंध मजदूरों के प्रवेश को व्यवस्थित करने के लिए समझौता ज्ञापन; तथा कौंसुलर कार्य पर संयुक्त समिति की स्थापना के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। दोनों देशों ने सजायापता लोगों के स्थानांतरण पर नवम्बर, 2011 में हस्ताक्षरित करार की भी पुष्टि की।

सांस्कृतिक क्षेत्र में, अक्टूबर, 2012 में श्याम बेनेगल की फिल्मों का पुनरावलोकन आयोजित किया गया।

यमन

भारत-यमन के घनिष्ठ ऐतिहासिक संबंधों का सर्वश्रेष्ठ सुबूत तथा हैदराबाद में यमनी मूल डायस्पोरा के लोगों के बीच परस्पर संबंध तथा भारतीय मूल के यमनी अदन तथा यमन के अन्य शहरों में बसे हुए हैं।

भारत-यमन के मित्र (एफओवाई) दल से मई, 2012 में जुड़ा तथा रियाद में यमन के मित्र की तीसरी मंत्री स्तरीय बैठक में भाग लिया।

यमन के विदेश उपमंत्री ने विदेश कार्यालय परामर्श हेतु जून, 2012 में भारत की यात्रा की। यमन के विदेश मंत्री डॉ. अबू-बकर-अल-किरबी ने हिंद महासागर परिधि क्षेत्रीय सहयोग संघ (आईओआर-एआरसी) की 12वीं बैठक में भाग लेने के लिए नवम्बर, 2012 में भारत की यात्रा की।

भारत ने विश्व खाद्य कार्यक्रम के द्वारा 10 करोड़ रुपए का करीब 2500 टन चावल भेज कर अपने लोकोपकारी सहयोग का यमन तक विस्तार किया है। भारत 10 करोड़ रुपए मूल्य के गोहूँ भी प्रदान करने पर विचार कर रहा है।

अरब लीग

तीसरा इंडो-अरब साझेदारी सम्मेलन 22–23 मई, 2012 को आबू धाबी में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का केंद्र बिन्दु कौशल विकास, उच्च शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल तथा खाद्य सुरक्षा थी। विदेश राज्य मंत्री श्री ई. अहमद ने इस सम्मेलन के प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया।

हज

वर्ष 2012 के दौरान 1,70,000 से अधिक भारतीय मुस्लिमों ने हज यात्रा की। इनमें से 1,25,000 हज यात्रियों ने भारतीय हज समिति के माध्यम से तथा शेष ने निजी दूर ऑपरेटरों के माध्यम से हज यात्रा की।

2 दिसम्बर, 2012 को सऊदी अरब से भारतीय हज यात्रियों के अंतिम जल्थे की वापसी के साथ ही 74 दिन के हज कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समापन हो गया। सऊदी अरब के लिए 2-सदस्यीय भारतीय हज सद्भावना प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व विदेश राज्यमंत्री, श्री ई-अहमद ने किया।



इस वर्ष के दौरान, अफ्रीका के साथ भारत के ऐतिहासिक और विकसित होते संबंधों को आपसी यात्राओं, सहयोग कार्यक्रमों, रियायती ऋण शृंखलाओं, क्षमता निर्माण तथा मानव संसाधन विकास पहलों और व्यापार व निवेश संवर्धनों के माध्यम से और विस्तारित करके ठोस बनाया गया।

अंगोला

भारत – अंगोला संबंध मित्रवत और सहयोगात्मक बने रहे। कपड़ा क्षेत्र और एक औद्योगिक पार्क को विकसित करने के लिए क्रमशः 30 मिलियन और 15 मिलियन अमरीकी डॉलर की दो ऋण शृंखलाओं वाली दो परियोजनाएं कार्यरत हैं। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस के क्षेत्र और अन्य द्विपक्षीय समझौतों, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस के क्षेत्र के साथ-साथ गैर – तेल क्षेत्र में दोनों देशों के सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं के बीच सहयोग के लिए दोनों देशों के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के प्रयास जारी हैं। अंगोला में भारत के निर्यात और निवेश में प्रत्यक्ष वृद्धि देखने को मिली है। द्विपक्षीय व्यापार वर्ष 2006–07 के दौरान 446.60 मिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर 2010–11 में 5795.11 मिलियन अमरीकी डॉलर हो गया है। सितम्बर 2012 तक, यह आंकड़ा पहले ही 7,077.24 मिलियन अमरीकी डॉलर तक पहुंच गया तथा अंगोला से भारत को निर्यात मुख्य रूप से तेल के साथ 6622.90 मिलियन अमरीकी डॉलर रहा। भारत द्वारा निर्यात की प्रमुख मर्दे ट्रैक्टर और परिवहन वाहन, कृषि मशीनरी और औजार, भोजन और मांस उत्पाद, औषधि और प्रसाधन सामग्री, चाय, चावल (बासमती) और स्प्रिट्स तथा पेय पदार्थ, तैयार किए गए चमड़े, कागज/लकड़ी उत्पाद आदि रहे हैं।

बेनिन

चयनित अफ्रीकी देशों (कपास-टीएपी) में कपास क्षेत्र के लिए भारत के तकनीकी सहायता कार्यक्रम के तहत, आईएल एंड एफएस से भारत के एक प्रतिनिधिमंडल ने मई, 2012 में बेनिन का दौरा किया और 24 मई, 2012 को बेनिन के कृषि मंत्री के साथ बैठक की। इसके बाद, बेनिन से तीन उम्मीदवारों ने अक्टूबर 2012 में हैदराबाद में आयोजित कपास-टीएपी के तहत आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

कृषि उपकरण विनिर्माण संयंत्र की स्थापना के लिए भारत सरकार की 15 मिलियन अमरीकी डॉलर की एक ऋण शृंखला पर अक्टूबर 2012 में हस्ताक्षर किए गए थे।

बोत्स्वाना

बोत्स्वाना के साथ भारत के संबंध घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण रहे हैं। बोत्स्वाना के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्री श्री जोनी के-स्वार्डज ने 1–2 मार्च, 2012 के दौरान नई दिल्ली में सम्पन्न भारत-अफ्रीका विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया।

बोत्स्वाना के राष्ट्रपति मामले तथा लोक प्रशासन मंत्री श्री एम.के. मासीसी ने एक 5-सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ 17–22 जून, 2012 के दौरान भारत की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान, वे भारत के ग्रामीण विकास मंत्री श्री जयराम रमेश से मिले। राष्ट्रीय एसेम्बली के अध्यक्ष डॉ. मार्गरेट एन.नाशा ने 3–4 अक्टूबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली में आयोजित हुए वीमन स्पीकर्स ऑफ पार्लियामेंट ऑन जेंडर सेंसेटिव पार्लियामेंट्स की 7वीं बैठक में भाग लिया।

विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में घनिष्ठ सहयोग के लिए कार्यविधि तैयार करने के लिए दोनों देशों के बीच विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी पर पहली संयुक्त समिति की बैठक में हिस्सा लेने के लिए एक 9-सदस्यीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रतिनिधिमंडल ने 26 जून, 2012 को भारत की यात्रा की।

बुरुन्डी

बुरुन्डी गणराज्य के राष्ट्रपति श्री पियरे कुरुंजिजा, ने 17–19 सितंबर, 2012 के दौरान भारत की राजकीय यात्रा की, जिसमें उनके साथ विदेश संबंध तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, कृषि तथा पशुधन और ऊर्जा तथा खनन मंत्रियों के साथ-साथ एक उच्च-स्तरीय आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल साथ आया। इस यात्रा के दौरान निम्नलिखित करारों पर हस्ताक्षर किए गए— (i) शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग हेतु आदान-प्रदान कार्यक्रम (ii) ग्रामीण विकास के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन और (iii) स्वास्थ्य तथा दवाइयों के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन। भारत सरकार ने बुरुन्डी में फार्म मेकेनाईजेशन तथा समेकित खाद्य संसाधन परिसर के लिए 42.38 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण शृंखला की घोषणा की। भारत ने बुरुन्डी में एचआईवी/एड्स का सामना करने के लिए अवसंरचना तथा क्षमता सुदृढ़ करने हेतु आईबीएसए ट्रस्ट निधि के माध्यम से योगदान दिया।

कैमरून

कैमरून के अर्थव्यवस्था और योजना मंत्री गानु जायुमेसी ऐमेनुएल ने 12–16 सितम्बर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया, जिसके

दौरान कसावा प्लांटेशन परियोजना के लिए भारत सरकार की 42 मिलियन अमरीकी डॉलर की एक ऋण श्रृंखला के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे। मंत्री महोदय ने कृषि मंत्री श्री शरद पवार से मुलाकात की।

सामाजिक कल्याण मंत्री बान्कांग म्बोक कैथरीन ने 11-16 सितम्बर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया।

केप वर्डे

केप वर्डे को अक्टूबर 2012 में एक करोड़ रुपए मूल्य के कंप्यूटर सहायता के रूप में प्रदान किए गए।

श्री मारियो लुसीओ माटीयास सुसा मेंडेस, संस्कृति मंत्री ने भारत का दौरा किया और गोवा मुक्ति की स्वर्ण जयंती मनाने के अवसर पर 3-5 जून, 2012 के दौरान गोवा में आयोजित गैर-उपनिवेशवाद, विकास और डायसपोरा रु द एफ्रो - इंडियन एक्सपेरिएंस पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में उद्घाटन भाषण दिया।

चाड

भारत के तकनीकी सहायता कार्यक्रम, कपास-टीएपी के तहत, चाड से तीन उम्मीदवारों ने हैदराबाद में अक्टूबर 2012 में आयोजित कपास क्षेत्र में प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

आर्थिक और वित्त मंत्री श्री बेदोयुम्सा कार्डेज ने 23-24 जुलाई, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया। भारत सरकार की 18.08 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। मंत्री महोदय ने विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री, श्रीमती प्रनीत कौर के साथ द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा की।

कोमोरोस

वर्ष 2001 में अफ्रीकी संघ द्वारा रोटेशन प्रणाली प्रारंभ करने के पश्चात 26 मई, 2011 को मोरोनी में कोमोरोस संघ के राष्ट्रपति के रूप में श्री इकीलीलु धोइनीन ने पदभार सम्हाला।

गुडगांव, भारत में आयोजित हुई मंत्रियों की परिषद की बैठक के दौरान 2 नवंबर, 2012 को कोमोरोस संघ इंडिया ओसन रिम-एसोसिएशन फॉर रिजनल कोऑपरेशन (आईओआर-एआरसी) में शामिल हुआ।

भारत ने इस देश के ऊर्जा संकट को दूर करने के लिए मोरोनी में एक 18 मेगावाट विद्युत परियोजना के संस्थापन के लिए 41.60 मिलियन अमरीकी डॉलर की रियायती ऋण श्रृंखला प्रदान की। भारत कोमोरोस के लिए अतिरिक्त हितकारी योजनाओं पर विचार करना चाहेगा। टेली-मेडिसिन तथा टेली-एजुकेशन में पैन अफ्रीकी ई-नेटवर्क परियोजना पहले से ही कोमोरोस में चल रही है।

कोत दीव्वार

राष्ट्रपति आलासाने ओयात्तारा ने कोत दीव्वार में नवंबर, 2012 में अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के रेजिडेंट राजदूतों तथा प्रतिनिधियों को दिए

अपने वार्षिक भाषण के दौरान भारत को फोकस कंट्री के रूप में घोषित किया और सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी), कृषि, खनन और अवसंरचना के क्षेत्र में सहयोग पर जोर दिया।

एक आईसीटी प्रतिनिधिमंडल ने नवंबर, 2012 में कोत दीव्वार का दौरा किया जिसका स्वागत आवरी के सूचना और संचार प्रौद्योगिकी मंत्री श्री ब्रूनो नाबान्य कोने द्वारा किया गया था।

कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (डीआरसी)

23-27 जुलाई, 2012 के दौरान एक 12-सदस्यीय राजस्थानी संगीत और नृत्य समूह ने गुन्गु, बांदुंदु प्रांत के राष्ट्रीय महोत्सव में भाग लेने के लिए कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (डीआरसी) का दौरा किया। इस समूह ने 18 जुलाई, 2012 को किंशासा में मंचन भी किया।

डीआरसी के 87 विद्वानों ने आईटीईसी कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण का लाभ उठाया है जबकि 3 विद्वानों ने अफ्रीका - भारत मंच शिखर सम्मेलन कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण का लाभ उठाया।

जिबूती

दो भारतीय नौसेना जहाजों, आईएनएस, तीर और आईएनएस शार्दूल तथा एक तटरक्षक जहाज वीरा ने विदेश में तैनाती होने पर 8-11 अप्रैल, 2012 के दौरान जिबूती का दौरा किया। फ्लिट कमांडर रियर एडमिरल कर्वे के नेतृत्व में भारतीय नौसेना के पश्चिमी बेड़े के चार भारतीय नौसेना जहाजों, आईएनएस मुंबई, आईएनएस त्रिशुल, आईएनएस गोमती और आईएनएस आदित्य ने आपरेशन 'ब्रिज ऑफ फ्रेंडशीप' नामक आपरेशन के भाग के रूप में 8-10 अगस्त 2012 के दौरान विदेशी तैनाती के लिए जिबूती बंदरगाह की यात्रा की।

मिस्र

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री मंत्री श्री ई. अहमद ने 8-10 मई, 2012 के दौरान शर्म अल शेख में गुट निरपेक्ष आंदोलन की मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए मिस्र का दौरा किया।

जल संसाधन राज्य मंत्री श्री विंसेंट एच. पाला ने 14-15 मई, 2012 के दौरान काहिरा में आयोजित चौथे अफ्रीका जल सप्ताह और पानी के संबंध में अफ्रीका के मंत्रियों की परिषद (एएमसीओडब्ल्यू) के आठवें सामान्य सत्र में भाग लिया।

श्री महमूद अब्दुल आर. ईसा, मिस्र के उद्योग और विदेश व्यापार मंत्री ने अबू धाबी में 22-23 मई, 2012 के दौरान फिक्की द्वारा आयोजित तीसरे भारत - अरब निवेश कॉन्क्लेव में भाग लिया।

भारत के उप. निर्वाचन आयुक्त डॉ. आलोक शुक्ला और राजस्थान के मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री अशोक जैन ने 21-26 मई, 2012 के दौरान राष्ट्रपति चुनाव के पहले दौर के लिए पर्यवेक्षक के रूप में मिस्र का दौरा किया।

भारतीय नौसेना जहाज आईएनएस मुंबई, आईएनएस आदित्य, आईएनएस गोमती और आईएनएस त्रिशूल ने विदेश में तैनाती के हिस्से के रूप में 2-5 जुलाई, 2012 के दौरान एलेक्जेंड्रिया के बंदरगाह का दौरा किया। इन जहाजों की अगुवाई लैंग ऑफिसर कमांडिंग, रियर एडमिरल ए.आर. करवे ने की।

मिस्र की सर्वोच्च राष्ट्रपति चुनाव समिति के महासचिव, न्यायाधीश हतिय बागातो ने 16-19 सितम्बर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान भारतीय निर्वाचन आयोग और मिस्र की सर्वोच्च राष्ट्रपति चुनाव समिति के बीच चुनावी प्रबंधन और प्रशासन के क्षेत्र में सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे।

हरियाणा राज्य विधानसभा के अध्यक्ष श्री कुलदीप शर्मा ने 23-26 सितम्बर, 2012 के दौरान मिस्र का दौरा किया और शूरा काउंसिल के अध्यक्ष के साथ एक बैठक की।

एक 10-सदस्यीय सीआईआई व्यापार प्रतिनिधिमंडल ने 3-5 नवम्बर, 2012 के दौरान काहिरा का दौरा किया।

नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के संयुक्त सचिव के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने सौर ऊर्जा का उपयोग करके मिस्र में एक गांव, सीवा के विद्युतीकरण के लिए एक संयुक्त परियोजना लागू करने हेतु 15-18 नवम्बर, 2012 के दौरान मिस्र का दौरा किया।

भारत - मिस्र के विदेश कार्यालय परामर्श के 9वें दौर की वार्ता नई दिल्ली में 24 जनवरी 2013 को आयोजित की गई।

इक्वेटोरियल गिनी

इक्वेटोरियल गिनी के साथ वर्ष 2011 में अफ्रीकी संघ की अध्यक्षता में उच्च स्तर की भागीदारी देखने को मिली। आईएफएस प्रक्रिया के तहत, भारत ने इक्वेटोरियल गिनी में ग्रामीण विकास के लिए जियोइन्फार्मेटिक अनुप्रयोग पर एक केंद्र स्थापित करने की पेशकश की है।

इरिट्रिया

भारत और इरिट्रिया के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध हैं। इस वर्ष के दौरान भारत में हुए भारत-अफ्रीकी मंच शिखर सम्मेलन में इरिट्रिया के नागरिकों ने भाग लिया। मई तथा जुलाई, 2012 में अस्मारा में ओरोट्टा नेशनल रेफरल अस्पताल में पैन अफ्रीकी ई-नेटवर्क परियोजना के तहत विशेष व्याख्यानों के दो सत्र आयोजित किए गए।

इथियोपिया

मई, 2011 में भारत के प्रधान मंत्री की आज तक की पहली इथियोपिया यात्रा के पश्चात द्विपक्षीय संबंध और प्रगाढ़ तथा सुदृढ़ हुए हैं।

सेंटर फॉर डब्ल्यूटीओ स्टडीज़, नई दिल्ली से भारत के डब्ल्यूटीओ विशेषज्ञों के एक दो सदस्यीय दल ने इथियोपिया

के व्यापार मंत्री द्वारा आईटीइसी कार्यक्रम के तहत आमंत्रण पर 16-21 अप्रैल, 2012 के दौरान इथियोपिया की यात्रा की। इस दल ने इथियोपिया के विभिन्न साझेदारों को प्रशिक्षण दिया ताकि वर्ष 2014 तक डब्ल्यूटीओ में उनकी पहुंच में सहायता दी जा सके।

विदेश मंत्री के विशेष दूत ने 11-14 जुलाई, 2012 के दौरान अदीस अबाबा में अफ्रीकी संघ शिखर सम्मेलन में एक प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई की। इस प्रतिनिधिमंडल ने तत्कालीन उप प्रधानमंत्री हेलमारियम देसालेन और विदेश मंत्री डॉ. टेडरोस एदहानोम घेब्रेइसुस से तथा भारतीय ऋण शृंखला के माध्यम से वित्तपोषित इथियोपिया में चीनी के विकास तथा रेल परियोजनाओं से संबंधित अधिकारियों से मुलाकात की।

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर की अगुवाई में एक प्रतिनिधिमंडल ने स्वर्गीय प्रधानमंत्री मेलेस जेनाबी के राजकीय अंतिम संस्कार में भाग लेने के लिए 1-2 सितंबर, 2012 के दौरान अदीस अबाबा का दौरा किया।

प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने नए प्रधान मंत्री हेलमारियम देसालेन को बधाई संदेश भेजा।

इस वर्ष के दौरान द्विपक्षीय वाणिज्यिक तथा आर्थिक संबंध सुदृढ़ हुए। भारत इथियोपिया में सबसे बड़े निवेशकों में से एक है और इसने 1 बिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक के प्रतिबद्धता वाले निवेश के साथ-साथ 4.7 बिलियन अमरीकी डॉलर का निवेश किया है। जनवरी-अक्टूबर, 2012 की अवधि के लिए द्विपक्षीय व्यापार की मात्रा 921.4 अमरीकी डॉलर थी।

फिक्की के एक प्रतिनिधिमंडल ने इसके अध्यक्ष श्री आर.वी. कनोडिया की अगुवाई में 19-20 नवंबर, 2012 के दौरान अदीस अबाबा का दौरा किया। उन्होंने इथियोपिया के प्रधान मंत्री, हेलमारियम देसालेन, उद्योग मंत्री अतो मेकोनेन और कृषि मंत्री अतो तेफेरा देरबेव से मुलाकात की। यह प्रतिनिधिमंडल इथियोपिया के राष्ट्रीय बैंक के उप गवर्नर, इथियोपिया निवेश एजेंसी के महा निदेशक, इथियोपिया के चेंबर ऑफ कामर्स और भारतीय व्यापार मंच से भी मिला।

इथियोपियाई पक्ष के अनुरोध पर पूर्व दल के सफलतापूर्वक कार्य पूरा कर लेने के पश्चात भारतीय सेना के चार अधिकारियों के एक नए दल को मेकेले सैनिक अकादमी के लिए प्रशिक्षकों के रूप में चुना गया।

विदेश मंत्री के विशेष दूत के रूप में श्री सुधीर व्यास, सचिव (पश्चिम), विदेश मंत्रालय ने 23-25 जनवरी, 2013 के दौरान अदीस अबाबा में अफ्रीकी संघ शिखर सम्मेलन कार्यक्रम के लिए भारतीय दल की अगुवाई की।

आईसीसीआर द्वारा प्रायोजित एक यूजियन बैंड "श्वास" ने इथियोपिया का दौरा किया और 21-28 मई, 2012 के दौरान विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम प्रस्तुत किए।



तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील 1-7 मई, 2012 के दौरान अपनी दक्षिण अफ्रीका यात्रा के दौरान राष्ट्रपति जेकब जुमा के साथ



विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर 18 सितंबर, 2012 को नई दिल्ली में बुरुन्डी गणराज्य के राष्ट्रपति श्री पियरे निकुरुंज़िज़ा के साथ।

घाना

श्री आनंद शर्मा, वाणिज्य, उद्योग और वस्त्र मंत्री ने जुलाई 2012 में घाना का दौरा किया। उन्होंने 9 जुलाई 2012 को घाना की अपनी समकक्ष सुश्री हन्नान तेत्तेह के साथ संयुक्त रूप से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला केंद्र, अकरा में तीन दिवसीय व्यापार शो का उद्घाटन किया। भारत से 200 से अधिक सदस्यों के एक व्यापार प्रतिनिधिमंडल ने इस शो में भाग लिया।

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री, श्रीमती प्रनीत कौर ने स्वर्गीय राष्ट्रपति जॉन इवांस अट्टा मिल्स के अंतिम संस्कार में भाग लेने के लिए 9-10 अगस्त, 2012 के दौरान घाना का दौरा किया।

मूल रसायन और औषधि व प्रसाधन सामग्री निर्यात संवर्धन परिषद (सीएचईएमईएक्ससीआईएल) ने अकरा में 2 अगस्त, 2012 को एक क्रेता - विक्रेता सम्मेलन (बीएसएम) का आयोजन किया।

उर्वरक विभाग के सचिव के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने 8-13 जुलाई के दौरान घाना का दौरा किया। इस प्रतिनिधिमंडल ने एक संयुक्त उद्यम अमोनिया - यूरिया उर्वरक संयंत्र की स्थापना में तेजी लाने के लिए घाना के हितधारकों के साथ व्यापक विचार-विमर्श किया।

भारत सरकार ने घाना में डाक संबंधी बुनियादी ढांचा परियोजना का समर्थन करने के लिए 'प्रोजेक्ट एरो' का प्रस्ताव किया। घाना की सरकार ने इसकी स्वीकृति की पुष्टि की और इस परियोजना के कार्यान्वयन के लिए इसकी संभावनाएं तलाशने के कार्य को आसान बनाने के लिए घाना के एक प्रतिनिधिमंडल ने 28 नवंबर- 02 दिसम्बर 2012 के दौरान भारत का दौरा किया।

भारत सरकार ने अकरा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए भारत - घाना कोफी अन्नान केंद्र को दो और वर्ष (वर्ष 2014 तक) के लिए अपना समर्थन दिया। भारत सरकार द्वारा काम पर लगाई गई एजेंसी, सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कम्यूनिंग (सीडीएसी) इस केन्द्र को आवश्यक तकनीकी सहायता प्रदान कर रही है।

प्रोफेसर माइक ओक्युआए, घाना की संसद के द्वितीय उपाध्यक्ष और लाभ के पद धारण कर रहे सदस्यों की संसदीय समिति के अध्यक्ष के नेतृत्व में एक 7-सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 30 अप्रैल से 5 मई, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया। इस प्रतिनिधिमंडल ने घाना में लोकतंत्र को मजबूत बनाने के उद्देश्य से उन्हें घाना में लागू करने के लिए भारत में लागू सवीतम प्रथाओं से खुद को परिचित कराने के लिए भारत की संसद के साथ विचार-विमर्श किया।

घाना की एक 10-सदस्यीय नृत्य मंडली 'एनटीईएनटीएएन' ने 14-22 जून, 2012 के दौरान नई दिल्ली और अहमदाबाद में आईसीसीआर द्वारा आयोजित अफ्रीका समारोह में भाग लिया।

'मैत्रेयी पहाड़ी समूह' की एक 15-सदस्यीय भारतीय सांस्कृतिक मंडली से 9-11 जुलाई, 2012 के दौरान घाना का दौरा किया और अकरा में राष्ट्रीय थियेटर, इंडिया हाउस और युनिवर्सिटी ऑफ घाना

स्कूल ऑफ परफार्मिंग आर्ट्स सहित विभिन्न स्थानों पर कला का प्रदर्शन किया।

विदेश मंत्रालय द्वारा भारतीय जन संचार संस्थान (आईआईएमसी), नई दिल्ली में 24 सितंबर से 05 अक्टूबर 2012 के दौरान आयोजित पत्रकारों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में अफ्रीका के दो पत्रकारों ने भाग लिया।

केन्या

2 नवंबर, 2012 को गुडगांव में संपन्न हुए आईओआर-एआरसी के मंत्रियों की परिषद की 12वीं बैठक में विदेश मंत्री प्रो. सैमसोन ऑंगेरी ने केन्याई प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। वे 2 नवंबर, 2012 को विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद से मिले।

ऊर्जा मंत्री श्री कीराईतु मुरुंगी ने 14-15 अक्टूबर, 2012 के दौरान पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा आयोजित किए गए पेट्रोटेक 2012 सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया।

विदेश मंत्री प्रो. सैमसोन ऑंगेरी ने मई 2012 में शार्म-अल-शेख में आयोजित 17वें गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के मंत्री-स्तरीय सम्मेलन के अतिरिक्त समय में विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री ई. अहमद से मुलाकात की।

दो भारतीय नैसैनिक जहाजों- आईएनएस दिल्ली तथा आईएनएस दीपक ने दक्षिण अफ्रीका में आईबीएसएमएमआर ।।। अभ्यास में भागीदारी के पश्चात 12-15 नवंबर, 2012 के दौरान मोंबोसा का दौरा किया।

नेशनल डिफेंस कॉलेज (एनडीसी) के एक प्रतिनिधिमंडल ने एक अध्ययन दौरे के लिए 14-19 मई, 2012 के दौरान केन्या का दौरा किया।

केन्या नेशनल ब्यूरो ऑफ स्टैटिस्टिक्स द्वारा जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2012 के प्रथम छह महीने के दौरान भारत केन्या के लिए सर्वाधिक बड़ा निर्यातक था। केन्या को किया जाने वाला भारतीय निर्यात 1 बिलियन अमरीकी डॉलर (वर्ष 2012 के प्रथम छह महीने में) के आंकड़े तक पहुंच गया, जो पिछले वर्ष इसी अवधि के दौरान किए गए निर्यात से 13 प्रतिशत अधिक था।

केन्या में आयोजित हाल के व्यापार संवर्धन संबंधी कार्यक्रमों में शामिल थे : केन्या प्लास्ट 2012 (सितंबर, 2012 में नैरोबी में), मुद्रण तथा पैकेजिंग प्रदर्शनी (सितंबर, 2012 में नैरोबी में), भारतीय चिकित्सा पर्यटन गंतव्य स्थल कार्यक्रम (अगस्त, 2012 में नैरोबी में), गुजरात से एक व्यापार प्रतिनिधिमंडल का दौरा (जुलाई, 2012), 5वां अफ्रीका निर्यात व आयात मेला, 2012 में ईओयुज/ईपीजेडज भागीदारी के लिए एसोचेम, एफआईआईओ और ईपीसी (जून, 2012), अखिल भारतीय प्लास्टिक विनिर्माण संगठन प्रतिनिधिमंडल का दौरा (जून, 2012), और 15वें बिल्ड एक्सपो अफ्रीका (मई, 2012) में सीआईआई के माध्यम से 15 भारतीय कंपनियों की भागीदारी।

48 केन्यायी लोगों ने उच्चतर शिक्षा के लिए आईसीसीआर छात्रवृत्तियों का उपयोग किया, 26 केन्यायी लोगों ने आईटीईसी कार्यक्रम के

तहत आयोजित प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का लाभ उठाया, और 11 केन्यायी लोगों ने भारत-अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन छात्रवृत्ति का उपयोग किया।

भारतीय उच्चायोग के साथ मिलकर प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय तथा प्रवासी भारतीय सुविधा केन्द्र (ओआईएफसी) द्वारा 13-14 अप्रैल, 2012 के दौरान नैरोबी में पूर्वी अफ्रीका में एक इंडियन डायसपोरा एंगेजमेंट मिट का आयोजन किया गया।

केन्या एयरवेज ने 15 मई, 2012 को नैरोबी तथा नई दिल्ली के बीच सप्ताह में तीन दिन सीधी उड़ानें प्रारंभ की।

आईसीसीआर द्वारा प्रायोजित 14-सदस्यीय भांगड़ा नृत्य समूह ने नैरोबी में 21वें वार्षिक केन्याट्टा विश्वविद्यालय सांस्कृतिक सप्ताह में भाग लेने के लिए अक्टूबर, 2012 के दौरान केन्या का दौरा किया। इस दल ने मोम्बासा की भी यात्रा की।

लेसोथो

भारत-लेसोथो उन्नत सूचना प्रौद्योगिकी केन्द्र ने लेसोथो में छात्रों तथा सिविल सर्वेंट्स को प्रशिक्षण दिया। लेसोथो की सरकार के अनुरोध पर, लेसोथो घुड़सवार पुलिस बल के प्रशिक्षण में सहायता करने के लिए लेसोथो में फरवरी - मई, 2012 के दौरान एक भारतीय पुलिस प्रशिक्षण दल तैनात किया गया था।

लेसोथो में वर्ष 2001 से तैनात भारतीय सैन्य प्रशिक्षण बल ने लेसोथो रक्षा बल व्यावसायिकीकरण में और प्रगति की है। भारत-लेसोथो विकास सहयोग ने 100 को भारतीय तकनीकी तथा आर्थिक सहयोग कार्यक्रम के तहत और भारत-अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन के तहत प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के माध्यम से सिविल सर्वेंट्स के प्रशिक्षण के लिए लेसोथो को उन्नत प्रशिक्षण स्लॉटों के साथ सुदृढ़ किया।

भारत ने लेसोथो सरकार के लिए 10 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला की घोषणा की।

लाइबेरिया

लाइबेरिया की राष्ट्रपति, श्रीमती एलेन जॉनसन सीर्लियाफ को इंदिरा गांधी मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा शांति, निरस्त्रीकरण और विकास के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार, 2012 से सम्मानित किया गया था।

लीबिया

भारत-लीबिया संबंध मित्रवत बने रहे।

एक 5-सदस्यीय लीबियाई प्रतिनिधिमंडल ने राजदूत रमजान रहीम, महानिदेशक (एशिया और ऑस्ट्रेलिया), विदेश मंत्रालय के नेतृत्व में 25-28 सितम्बर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया और राजनयिकों के लिए लीबियाई अकादमी तथा विदेश सेवा संस्थान के बीच सहयोग बढ़ाने के लिए विदेश मंत्रालय में और विदेश सेवा संस्थान में विचार विमर्श किया। विदेश सेवा संस्थान और राजनयिकों के लिए लीबिया अकादमी के बीच राजनयिकों के प्रशिक्षण पर एक समझौता ज्ञापन को अंतिम रूप दिया गया था।

मुख्य कार्यकारी अधिकारियों के एक 14-सदस्यीय सीआईआई प्रतिनिधिमंडल ने 30 अक्टूबर - 1 नवम्बर, 2012 के दौरान लीबिया का दौरा किया और लीबिया के व्यापारियों के साथ बातचीत की। इस प्रतिनिधिमंडल ने लीबिया के तत्कालीन प्रधानमंत्री अब्दूरहीम अल-कीब से भी मुलाकात की।

भारत निर्वाचन आयोग के निमंत्रण पर, लीबिया के उच्च राष्ट्रीय निर्वाचन आयोग के उपाध्यक्ष श्री नजीब अब्दुसलाम मोहम्मद अराबीती के नेतृत्व में एक 4-सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 26-30 नवम्बर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया और मुख्य निर्वाचन आयुक्त, निर्वाचन आयुक्तों और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ प्रतिनिधिमंडल स्तर की बातचीत की। इस प्रतिनिधिमंडल ने विदेश मंत्रालय में सचिव (पूर्व) श्री संजय सिंह से भी मुलाकात की। इस यात्रा के दौरान चुनावी प्रबंधन और प्रशासन के क्षेत्र में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे।

मेडागास्कर

विदेश मंत्री पिएरो जे. राजाओनारिवेलो ने 28 अक्टूबर - 02 नवंबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली में संपन्न इंडिया ओसन रिम एसोसिएशन फॉर रिजनल कोऑपरेशन (आईओआर-एआरसी) के मंत्रियों की 12वीं परिषद बैठक में भाग लिया।

मलावी

भारत के उच्चायोग को मार्च, 2012 में लियोंगवे में पुनर्स्थापित किया गया था और यह 2 अप्रैल, 2012 से कार्य करने लगा। मलावी के विकास में भारत के योगदान के एक भाग के रूप में, ऋण श्रृंखला के रूप में आर्थिक सहायता की घोषणा की गई। भारत में विभिन्न संस्थानों में अल्पकालिक प्रशिक्षण के लिए भारत-अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन (आईएएफएस) कार्यक्रम तथा आईटीईसी कार्यक्रम के तहत मलावीवासियों को भारत भेजा जा रहा है। आईटीईसी कार्यक्रम के तहत स्लॉटों की संख्या को वर्तमान वर्ष में 56 से बढ़ाकर 70 कर दिया गया है।

मलावी ने वर्ष 2008 तथा वर्ष 2010 में क्रमशः 30 मिलियन अमरीकी डॉलर तथा 50 मिलियन अमरीकी डॉलर की दो ऋण श्रृंखलाओं का सफलतापूर्वक उपयोग किया। पहली ऋण श्रृंखला का उपयोग सिंचाई, अनाज भंडारण तथा तम्बाकू श्रैशिंग परियोजनाओं के लिए किया गया था। 50 मिलियन अमरीकी डॉलर की दूसरी ऋण श्रृंखला का उपयोग कॉटन प्रॉसेसिंग सुविधाओं (20 मिलियन अमरीकी डॉलर), ग्रीनबेल्ट पहल (15 मिलियन अमरीकी डॉलर) तथा वन विलेज वन प्रोडक्ट परियोजना (15 मिलियन अमरीकी डॉलर) के लिए किया गया था। मई 2012 में इंधन भंडारण सुविधाओं के विकास, सिंचाई नेटवर्क और ग्रीनबेल्ट पहल के तहत सलिमा में रिफाइनड शुगर प्रोसेसिंग उपकरण की स्थापना के लिए 76.5 मिलियन अमरीकी डॉलर मूल्य की एक अन्य परियोजना का प्रस्ताव दिया गया था और इसे अनुमोदित किया गया था तथा नवंबर, 2012 में मलावी की संसद द्वारा एक बिल पारित किया गया था।

1.5 मिलियन अमरीकी डॉलर मूल्य के विज्ञान तथा प्रयोगशाला उपकरण भारत सरकार द्वारा मलावी सरकार को दानस्वरूप दिए गए थे। यह दान वर्ष 2010 में मलावी को भारत सरकार द्वारा दिए गए 5 मिलियन अमरीकी डॉलर के अनुदान के भाग के रूप में दिया गया था।

भारत सरकार ने चिकित्सा उपकरणों के दान की भी घोषणा की है जिसमें 1.5 मिलियन अमरीकी डॉलर की मैमोग्राफी मशीनें तथा अल्ट्रासाउंड मशीनें शामिल हैं।

मारीशस

राष्ट्रपति राजकैस्वुर पुर्रियाग ने 3-10 जनवरी, 2013 के दौरान भारत की राजकीय यात्रा की। उनके साथ उनकी पत्नी तथा तीन केन्द्रीय मंत्री – कला और संस्कृति मंत्री मूकेस्वर चूत्रे, स्वास्थ्य तथा जीवन गुणवत्ता मंत्री लोरमुस बुंधू और सामाजिक एकता तथा आर्थिक अधिकारिता मंत्री सुरेन दयाल साथ आए थे। राष्ट्रपति पुर्रियाग कोची में सम्पन्न 11वें प्रवासी भारतीय दिवस (पीबीडी) सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे जहां उन्हें प्रवासी भारतीय सम्मान अवार्ड दिया गया। पीबीडी, कोची में लगभग 100 मारिशिया वासियों के एक बड़े समूह ने भागीदारी की।

प्रधान मंत्री डॉ. नवीनचंद्र रामगुलाम ने द्विपक्षीय संबंधों को एक नई गति प्रदान करते हुए 6-10 फरवरी, 2012 के दौरान भारत की राजकीय यात्रा की। प्रधान मंत्री रामगुलाम राष्ट्रपति तथा उपराष्ट्रपति से मिले और प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के साथ प्रतिनिधिमंडल स्तरीय बातचीत की तथा 8 फरवरी, 2012 को नई दिल्ली में तथा 9 फरवरी, 2012 को मुंबई में व्यापार मंच की अध्यक्षता की। वे वित्त मंत्री, पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस मंत्री तथा विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री से भी मिले। विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी, शिक्षा, खेलकूद तथा युवा, वस्त्र के क्षेत्रों में तथा राजीव गांधी विज्ञान केन्द्र (आरजीएससी) में एक हाइब्रीड तारामंडल की स्थापना के लिए पांच समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए। भारत द्वारा 250 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला वाले एक आर्थिक पैकेज तथा 20 मिलियन अमरीकी डॉलर के एक अनुदान की घोषणा की गई।

भारत मारीशस के लिए आयातों का सबसे बड़ा स्रोत बना रहा, जबकि मारीशस भारत में एफडीआई का सबसे बड़ा स्रोत बना रहा। वर्ष 2011-12 के लिए मारीशस को भारत का निर्यात 1.4 बिलियन अमरीकी डॉलर मूल्य का रहा जबकि आयात 39.13 मिलियन अमरीकी डॉलर का रहा। अप्रैल, 2000 से अगस्त, 2012 की अवधि के दौरान मारीशस से भारत को संचित एफडीआई इक्विटी अंतःप्रवाह 66.701 बिलियन अमरीकी डॉलर तक पहुंच गया, जो भारत में कुल एफडीआई अंतःप्रवाह का 37 प्रतिशत था। मारीशस से वर्ष 2011-12 के लिए वार्षिक एफडीआई इक्विटी अंतःप्रवाह 9.942 बिलियन अमरीकी डॉलर अथवा कुल का 27.25 प्रतिशत तक पहुंच गया। भारत से मारीशस को बाह्य प्रवाह वर्ष 2010-11 के लिए 5.08 बिलियन अमरीकी डॉलर था।

विदेश मंत्री डॉ. अरविन बूलेल्ल ने 4-7 जुलाई, 2012 के दौरान नई दिल्ली तथा मुंबई की यात्रा की। वे प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह

से मिले और तत्कालीन विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा, वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री श्री आनंद शर्मा, योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री मोन्टेक सिंह अहलुवालिया और प्रधान मंत्री आर्थिक सलाहकार परिषद के अध्यक्ष श्री सी. रंगराजन से भी मिले। वे लोकसभा में विपक्ष के नेता से भी मिले। उन्होंने 7 जुलाई को मुंबई में इंटरनेशनल टैक्स – द इमरजिंग लैण्डस्केप पर अंतर्राष्ट्रीय राजकोषीय सहयोग सम्मेलन में हिस्सा लिया और अंतर्राष्ट्रीय कराधान में हाल की गतिविधियों पर सत्र को संबोधित किया।

वाणिज्य, उद्योग तथा वस्त्र (सीआईटीएम) मंत्री श्री आनंद शर्मा 8-10 जनवरी, 2013 के दौरान मारीशस के सरकारी दौरे पर थे। सीआईटीएम ने प्रधान मंत्री डॉ. नवीनचन्द्र रामगुलाम, उप प्रधान मंत्री राशिद बीबीजाउन, उप प्रधान मंत्री तथा वित्त मंत्री, विदेश मंत्री अरविन बूलेल्ल और उद्योग, वाणिज्य तथा उपभोक्ता संरक्षण कैडर सयिद-होसेन से मिले। 35 छात्रवृत्तियां (अप्पारेल प्रबंधन (आईएएम) संस्थान में 15, राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी) में 10, और अप्पारेल प्रशिक्षण तथा डिजाइन केन्द्र (एटी एण्ड डीसी) में 10) का प्रस्ताव दिया गया। मारीशस के 1000 प्रशिक्षुओं को वस्त्र क्षेत्र में कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण दिया जाएगा, गुणवत्ता वाले प्रमाणन की अपेक्षाओं के अनुपालन के लिए अप्पारेल निर्यात आवर्धन परिषद द्वारा मारीशस में 10 फैक्ट्रियों को लिया जाएगा, आईआईएफटी में डब्ल्यूटीओ-संबंधित मामलों में प्रशिक्षण के लिए पांच छात्रवृत्तियों का प्रस्ताव किया गया था। सीआईटीएम ने भी मारीशस-भारत व्यापार परिषद के लिए पुनर्जीवन तथा नवीकरण की आवश्यकता व्यक्त की।

मारीशस से अन्य उच्च स्तरीय यात्राओं में शामिल थे –

तत्कालीन राष्ट्रीय असेंबली के अध्यक्ष कैलाश पुर्रियाग की अगुवाई में एक छह-सदस्यीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल।

तृतीयक शिक्षा, विज्ञान, अनुसंधान तथा प्रौद्योगिकी मंत्री राजेश जीताह का 1-2 मार्च, 2012 के दौरान नई दिल्ली में भारत-अफ्रीका विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्रीस्तरीय सम्मेलन के लिए दौरा।

पर्यटन मंत्री मिशेल सिक युवेन ने 11-14 जुलाई, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया। वे पर्यटन मंत्री श्री सुबोध कान्त सहाय से मिले और भारतीय टूर आपरेटर्स के साथ चर्चा की।

लिंग समानता, बाल विकास तथा परिवार कल्याण मंत्री श्रीमती मिरेईले मार्टिन ने 2-8 सितंबर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया और वे महिला तथा बाल विकास राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभाग) श्रीमती कृष्णा तीरथ और सूक्ष्म उद्योगों तथा लघु एवं मध्यम उद्यम के तत्कालीन मंत्री श्री व्यालार रवि से मिलीं।

उप प्रधान मंत्री डॉ. रशिद बीबीजाउन ने ऊर्जा उपलब्धता पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार तथा प्रेट्रोटेक सम्मेलन में भाग लेने के लिए 8-18 अक्तूबर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया। उनकी द्विपक्षीय बैठक तत्कालीन पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस मंत्री श्री एस.जयपाल रेड्डी, तत्कालीन ऊर्जा मंत्री श्री वीरप्पा मोईली और नवीन तथा पुनर्नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री डॉ. फारुख अब्दुल्ला के साथ हुई।

कृषि उद्योग मंत्री सत्य व्याश फाउगू ने 8-11 अक्टूबर, 2012 के दौरान हैदराबाद में जैवविविधता पर अभिसमय हेतु पक्षकारों के XI वें सम्मेलन में भाग लिया।

जीआरएसई, कोलकाता के निर्माणाधीन अपतटीय पेट्रोल पोत की नींव का पत्थर रखने के लिए मारीशस के एक चार-सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 23-24 अप्रैल, 2012 के दौरान कोलकाता का दौरा किया।

भारत से मारीशस के दौरों में शामिल थे -

संचार तथा सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री सचिन पायलट ने अखिल भारतीय प्रबंधन संगठन (एआईएमए) के ग्लोबल लीडर्स सीरीज सम्मेलन में भाग लेने के लिए 29 मई - 1 जून, 2012 के दौरान मारीशस की यात्रा की। वे प्रधान मंत्री रामगुलाम और अन्य नेताओं से मिले।

डॉ. कर्ण सिंह, अध्यक्ष, आईसीसीआर ने 30 सितंबर - 3 अक्टूबर, 2012 के दौरान मारीशस तथा रियुनियन आईलैंड का दौरा किया।

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री श्री व्यालार रवि ने प्रवासी भारतीय दिवस, मारीशस के लिए 26-27 फरवरी, 2012 के दौरान मारीशस की यात्रा की।

पुनर्नवीकरणीय ऊर्जा में सहयोग पर द्विपक्षीय समझौता ज्ञापन के तहत विंड फार्म्स के अनुवीक्षण पर मारीशस के कार्मिकों को प्रशिक्षण देने के लिए 13-17 फरवरी, 2012 के दौरान सी-वेट, चेन्नई का एक दो-सदस्यीय विशेषज्ञ दल मारीशस में था।

ई-गवर्नेंस पर तीसरे संयुक्त कार्यदल की बैठक में भाग लेने के लिए 13-15 मार्च, 2012 के दौरान एनआईसीएसआई और एनआईसी, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग का एक 4-सदस्यीय दल मारीशस के दौरे पर गया।

भारतीय तटरक्षक जहाज विजीत तथा आईएनएस सावित्री ने मारीशस पुलिस फोर्स के साथ मिलकर मारीशस के जलक्षेत्र में एक्सक्लूसिव इकोनॉमिक जोन सर्विलेंस एण्ड ज्वॉइन्ट पेट्रोल प्रारंभ करने के लिए क्रमशः 17-26 मार्च, 2012 तथा 27 जून - 30 जुलाई, 2012 के दौरान मारीशस की यात्रा की। आईएनएस सावित्री ने निवासियों के लिए रोडरिग्स आईलैंड में एक निःशुल्क चिकित्सा जांच का आयोजन किया। और यह जहाज 13 जुलाई, 2012 को जनता के लिए खुला था।

महानिदेशक, आईसीसीआर ने 2 अप्रैल, 2012 को पोर्ट लुईस में आईओआर-एआरसी के सांस्कृतिक सहयोग पर कार्यदल की बैठक के लिए 29 मार्च - 2 अप्रैल, 2012 के दौरान मारीशस का दौरा किया।

आप्रवासी विश्व विरासत स्थल के संरक्षण प्रयासों पर सलाह देने के लिए 8-14 अप्रैल, 2012 के दौरान भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के एक विशेषज्ञ ने मारीशस का दौरा किया।

भारतीय हाइड्रोग्राफी जहाज आईएनएस दर्शक ने 22 अप्रैल - 17 मई, 2012 के दौरान मारीशस की यात्रा की और मारीशस में फरवरी, 2012 में हुई 7वीं संयुक्त हाइड्रोग्राफी समिति की बैठक के परिणामों के अनुरूप हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण किया।

श्री सुधीर व्यास, सचिव, (ईआर), विदेश मंत्रालय ने आईओआर-एआरसी के वरिष्ठ पदाधिकारियों की समिति (सीएसओ) की दूसरी अर्धवार्षिक बैठक, जो 7-8 मई, 2012 के दौरान हुई थी, में भारतीय प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई की।

मारीशस सरकार द्वारा प्रारंभ किए गए ड्यु डेलिजेंस एक्सर्साइज के एक भाग के रूप में प्रस्तावित लाईट रेल परियोजना पर एक सिंगापुरी फिल्म की रिपोर्ट की जांच करने के लिए एक राईट्स विशेषज्ञ श्री संजय श्रीवास्तव ने 10-16 जून, 2012 के दौरान मारीशस का दौरा किया।

श्री मधुसूदन गणपति, सचिव (पश्चिम), विदेश मंत्रालय ने 24-26 जून, 2012 के दौरान मारीशस का दौरा किया। उन्होंने विश्व हिन्दी सचिवालय के तीसरी कार्यकारी बोर्ड की बैठक की सह-अध्यक्षता की और आईओआर-एआरसी विशेष निधि के लिए 1 मिलियन अमरीकी डॉलर का एक चेक सौंपा।

निदेशक, वित्तीय आसूचना एकक, श्री प्रवीण कुमार तिवारी ने जुलाई, 2012 में 'काम्बैटिंग मनी लॉन्ड्रिंग: न्यु डेवलपमेंट एण्ड पर्सपेक्टिव्स' शीर्षक से एक सेमिनार में भाग लेने के लिए मारीशस का दौरा किया।

श्री सुधीर व्यास, सचिव (ईआर) के नेतृत्व में एक चार-सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 22-24 अगस्त, 2012 के दौरान डीटीएसी पर भारत-मारीशस जेडब्ल्यूजी के 8वें सत्र के लिए मारीशस का दौरा किया।

हिन्द महासागर रिज क्षेत्रों में भूवैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए अक्टूबर, 2012 से ही तैनात पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के दो अनुसंधान समुद्री जहाजों ने पोर्ट लुईस बंदरगाह की यात्रा की।

श्री अनुंदप्रिया नीवूर, विदेश मामले सचिव ने 28 अक्टूबर - 2 नवंबर, 2012 के दौरान गुडगांव में आईओआर-एआरसी मंत्रियों के परिषद की 12वीं बैठक में भाग लिया। मारीशस के दो पत्रकारों और सरकारी सूचना सेवा के एक अधिकारी ने भी एक्सपी प्रभाग के निमंत्रण पर भारत का दौरा किया।

भारत के राजदूत द्वारा रवींद्रनाथ मेमोरियल व्याख्यान मई, 2012 में रवींद्रनाथ भवन में दिया गया।

भारत मारीशस संयुक्त उद्यम सुजलोन-पेडग्रीन ने 29.4 मेगावाट पवन ऊर्जा परियोजना के लिए केन्द्रीय विद्युत बोर्ड के साथ विद्युत क्रय करार पर हस्ताक्षर किए।

प्रवासी भारतीय दिवस, मारीशस 26-28 अक्टूबर, 2012 के दौरान आयोजित किया गया। प्रधान मंत्री नवीनचन्द्र रामगुलाम ने 27 अक्टूबर, 2012 को इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया और राष्ट्रपति राजेश्वर पुर्रियाग समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे। प्रवासी

भारतीय कार्य मंत्री श्री व्यालार रवि ने इस कार्यक्रम के संबंध में 26-27 अक्टूबर, 2012 के दौरान मारीशस का दौरा किया।

मोरक्को

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री ई. अहमद ने 14-17 जून, 2012 के दौरान मोरक्को का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री अब्देलीलाह बेन्कीराने, विदेश मंत्री साद इद्दीने ओत्मानी, विदेश मंत्री के मंत्री-प्रतिनिधि युसुफ अमरानी, उद्योग व्यापार तथा नवीन प्रौद्योगिकी मंत्री अब्देलकादेर अमारा और राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री मोहम्मद एल उयाफा सहित मोरक्को के राजनीतिक नेतृत्व के साथ द्विपक्षीय और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर विचार - विमर्श किया।

मोरक्को के विदेश और सहयोग मंत्रालय में महासचिव श्री नासिर बूरीता 2-3 अप्रैल, 2012 के दौरान भारत की सरकारी यात्रा पर आए और विदेश सचिव के साथ वार्ता की और विदेश मंत्री से मुलाकात की। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों तथा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सहयोग पर विचार - विमर्श किया गया।

एक 18 सदस्यीय नेशनल डिफेंस कॉलेज (एनडीसी) प्रतिनिधिमंडल ने 13-18 मई, 2012 के दौरान 52वें एनडीसी कोर्स पर बाहरी देशों के स्टडी टूर के भाग के रूप में मोरक्को का दौरा किया।

मोजाम्बिक

दोनों देशों के बीच उच्च स्तरीय यात्राएं जारी रहीं। मोजाम्बिक से आनेवाले मंत्रीस्तरीय दौरे में शामिल थे - कृषि मंत्री श्री जोस पाचेको, रक्षा उप मंत्री श्री अगस्तीन मोंडलेन, ऊर्जा उप मंत्री श्री जैम हिमेडे, खनिज संसाधन उप मंत्री श्री अब्दुल रजक नूरमोहम्मद, विदेश मामले तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग उप मंत्री श्री हेनरिक बन्जे और शिक्षा उप मंत्री सुश्री लेडा ह्यूगो। भारत से वाणिज्य, उद्योग व वस्त्र मंत्री श्री आनंद शर्मा, गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री मुल्लापाल्ली रामचन्द्रन और कोयला मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री प्रातिक प्रकाशबापू पाटिल ने मोजाम्बिक का दौरा किया। तीन भारतीय नौसैनिक जहाजों आईएनएस दर्शक, आईएनएस दीपक और आईएनएस दिल्ली ने मोजाम्बिक का दौरा किया। आईएनएस दर्शक ने बेरा पत्तन का हाईड्रोग्राफिक सर्वेक्षण किया, अन्य दो सद्भावना दौरे पर थे।

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री मुल्लापाल्ली रामचन्द्रन की 13-15 जुलाई, 2012 तक यात्रा के दौरान सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग पर एक करार पर हस्ताक्षर किए गए।

मापूतो तथा इसके आस-पास के क्षेत्रों में ऊर्जा की आपूर्ति में सुधार करने के लिए 250 मिलियन अमरीकी डॉलर की एक ऋण श्रृंखला पर भारत के एक्विजम बैंक तथा मोजाम्बिक ने हस्ताक्षर किए। यह वर्ष 2010 में राष्ट्रपति अरमान्दो गुएबुजा की भारत की राजकीय यात्रा के दौरान भारत सरकार द्वारा घोषणा की गई 500 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला का एक भाग है। भारत की राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (एनएसआईसी) ने नई दिल्ली में वर्ष 2008 में

आयोजित हुए भारत अफ्रीका शिखर सम्मेलन में लिए गए निर्णय के तहत मोजाम्बिक में व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना के लिए मोजाम्बिक के उद्योग तथा व्यापार मंत्रालय के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। हिन्दुस्तान मशीन टूल्स (आई) ने भारत से अनुदान के तहत मोजाम्बिक में एक काजु प्रसंस्करण संयंत्र की स्थापना की।

वर्ष 2011-12 के दौरान भारत तथा मोजाम्बिक के बीच द्विपक्षीय व्यापार 631.77 मिलियन अमरीकी डॉलर तक पहुंच गया। वर्ष 2012-13 के पहले आठ महीनों के दौरान द्विपक्षीय व्यापार 895.55 मिलियन अमरीकी डॉलर तक पहुंच गया।

नामीबिया

भारत और नामीबिया के बीच द्विपक्षीय संबंध इस अवधि के दौरान घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण रहे। भूविज्ञान और खनिज संसाधनों पर भारत-नामीबिया संयुक्त कार्य दल (जेडब्ल्यूजी) की दूसरी बैठक 21 मई, 2012 को नई दिल्ली में हुई। नामीबिया के प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई नामीबिया के खान तथा ऊर्जा मंत्रालय के स्थायी सचिव ने की जबकि भारतीय प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई खान मंत्रालय में सचिव ने की।

भारत-नामीबिया विदेश कार्यालय परामर्श 20 नवंबर, 2012 को नई दिल्ली में हुए थे। नामीबियायी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व राजदूत वेईक्कोह घीवाटे, नामीबिया के विदेश मामले मंत्रालय में स्थायी सचिव ने किया जबकि भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विदेश मंत्रालय में सचिव (पश्चिम) श्री एम. गणपति ने किया।

डेयरी के क्षेत्र में संभावित सहयोग के लिए तकनीकी मूल्यांकन करने के लिए सितंबर, 2012 में नामीबिया के दौरे पर गए एनडीडीबी के एक चार-सदस्यीय दल के दौरे के अनुवर्ती के रूप में 7-14 नवंबर, 2012 के दौरान अध्यक्ष, राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) आनंद ने अध्यक्ष, एनडीडीबी डेयरी सेवा के साथ नामीबिया का दौरा किया।

मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) चार्ल्स डी.एन.पी. नामोलोह, रक्षा मंत्री ने राष्ट्रपति हिफिकेपुने पोहाम्बा के विशेष दूत के रूप में 7-9 अक्टूबर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया।

नई दिल्ली में आयोजित 9-10 अक्टूबर, 2012 के दौरान ऊर्जा उपलब्धता पर अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के लिए श्री विलेम इजाक्स ने एक पांच-सदस्यीय नामीबियाई दल का नेतृत्व किया।

एक नामीबियाई प्रतिनिधिमंडल ने 1-19 अक्टूबर, 2012 के दौरान हैदराबाद में आयोजित जैविक विविधता अभिसमय पर 11वें सम्मेलन में भाग लिया। नामीबिया की पर्यावरण और पर्यटन मंत्री, सुश्री नेतुंबो नंदी- दायित्वा ने 16-19 अक्टूबर 2012 के दौरान हैदराबाद में आयोजित सीओपी-11 के उच्च स्तरीय खंड में नामीबिया के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

मई 2012 में, तीन हेलीकाप्टर जिसमें एक चीता और दो चेतक थे, जिन्हें नामीबिया के रक्षा मंत्रालय द्वारा हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स

लिमिटेड (एचएएल) से हासिल किया गया था, को आधिकारिक तौर पर नामीबिया वायु सेना को सौंप दिया गया।

नाइजर

भारत ने नाइजर की सरकार के विदेश मंत्रालय को क्षमता निर्माण के उद्देश्य से और आगे उसके कामकाज में और कार्यकुशलता तथा प्रभावशीलता बढ़ाने हेतु 100 कंप्यूटर सिस्टम का दान दिया।

नाइजीरिया

मेजर जनरल राजीव भल्ला के नेतृत्व में एक 19-सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 14-19 अक्टूबर, 2012 के दौरान नाइजीरिया का दौरा किया और नाइजीरिया की रक्षा राज्य मंत्री श्रीमती एर्लियु ओल्युसोला ओबादा के साथ बैठक की। श्रीमती ओबादा ने डेफेक्सपो इंडिया, 2012 में भाग लेने के लिए नाइजीरियाई प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

एक छह-सदस्यीय नाइजीरियाई प्रतिनिधिमंडल ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री प्रो. इटा ओकोन बासेई इवा के नेतृत्व में 12-15 सितम्बर, 2012 के दौरान तीसरे बेंगलुरु स्पेस एक्सपो में भाग लिया।

नाइजीरियाई कृषि और प्राकृतिक संसाधन मंत्री डॉ. अकीन्नुन्मी आईयो आदेसीना ने हैदराबाद में आईसीआरआईएसएटी के 40वें वार्षिकोत्सव में भाग लेने के लिए 24-26 सितम्बर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया।

नाइजीरियाई शिक्षा मंत्री प्रोफेसर (श्रीमती) रुकाईयातु ए. रुफाई ने 08-10 नवम्बर, 2012 के दौरान नई दिल्ली में सम्पन्न नौवीं ई-9 मंत्रिस्तरीय समीक्षा बैठक में भाग लेने के लिए एक 11-सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

नाइजीरिया के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार, कर्नल (सेवानिवृत्त) साम्बो दासुकी ने 26-28 नवम्बर, 2012 के दौरान भारत की सरकारी यात्रा के लिए एक छह-सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री शिवशंकर मेनन, विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद और रक्षा मंत्री श्री ए.के. एंटनी के साथ बैठक की।

अप्रैल - नवंबर 2012 की अवधि के दौरान नाइजीरिया-भारत द्विपक्षीय व्यापार 10.87 बिलियन अमरीकी डॉलर तक पहुंच गया।

भारतीय उद्योग परिसंघ ने लागोस में 2-11 नवम्बर 2012 के दौरान आयोजित अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में भारतीय कंपनियों की भागीदारी प्रायोजित की।

कांगो गणराज्य

कांगो गणराज्य ने वर्ष 2012 में नई दिल्ली में अपना रेजिडेंट मिशन खोला।

भारत सरकार ने 4 मार्च, 2012 को कांगो गणराज्य की राजधानी ब्राज़ाविल में हुई विनाशकारी आकस्मिक आग की घटना से उत्पन्न

स्थिति से निबटने के लिए मानवीय सहायता के रूप में 500,000 अमेरिकी डॉलर का अनुदान प्रदान किया।

गिनी गणराज्य

गिनी गणराज्य ने नई दिल्ली में मई 2012 में अपना रेजिडेंट दूतावास खोला।

रवांडा

रवांडा के रक्षा मंत्री, जनरल जेम्स काबेरेबे ने नई दिल्ली में 29 मार्च से 1 अप्रैल 2012 के दौरान आयोजित डेफेक्सपो इंडिया, 2012 में भाग लेने हेतु भारत आने वाले एक तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। इस यात्रा के दौरान वे रक्षा मंत्री से मिले।

जून 2012 में, रवांडा ने ओपन गवर्नमेंट पर भारत - अमेरिका वार्ता के तहत भारत - अमेरिका - रवांडा त्रिपक्षीय ओपन गवर्नमेंट प्लेटफॉर्म स्वीकार किया, जो मुत सॉटवेयर डाउनलोड करने के लिए और एक साइट का सृजन करने में भाग लेने वाले राष्ट्रों को सक्षम बनाता है, और जो अपने नागरिकों के लिए नवाचार, आर्थिक विकास और पारदर्शिता हेतु सरकारी आंकड़ों तक पहुंच उपलब्ध कराता है।

रवांडा की संसद की अध्यक्ष सुश्री रोज मुकान्ताबाना ने 3-4 अक्टूबर 2012 को नई दिल्ली में आयोजित संसद की महिला अध्यक्षा की 7वीं बैठक में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया।

डॉ. एग्नेस मतील्दा कालिबाता, कृषि और पशु संसाधन मंत्री, रवांडा ने 22-25 जनवरी, 2013 के दौरान भारत का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय सहयोग पर रवांडा के कृषि और पशु संसाधन मंत्रालय और भारत के जल संसाधन मंत्रालय के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे।

द्वितीय भारत - अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन के निर्णय के अनुसार भारत ने रवांडा के लिए भारत - अफ्रीका उद्यमिता विकास केंद्र की स्थापना की पेशकश की है। परियोजना कार्यान्वयन एजेंसी, भारत के उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद के एक प्रतिनिधिमंडल की फरवरी 2013 के दूसरे सप्ताह में अपने समकक्ष रवांडा के उद्यमिता और सहकारी अध्ययन संस्थान के अधिकारियों के साथ विचार विमर्श करने के लिए रवांडा यात्रा निर्धारित है।

सेनेगल

भारत सरकार ने सेनेगल की सरकार के लिए मत्स्य पालन विकास परियोजना के दूसरे चरण हेतु 19 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला को मंजूरी दी।

एक सेनेगल नृत्य मंडली ला लिंग्युर ने आईसीसीआर द्वारा 18-19 जून, 2012 के दौरान नई दिल्ली में आयोजित अफ्रीका समारोह में कला-प्रदर्शन के लिए भारत का दौरा किया।

डकार स्थित फान्न अस्पताल को पैन अफ्रीकी ई - नेटवर्क परियोजना के तहत क्षेत्रीय सुपर विशेषता वाले क्षेत्रीय अस्पताल के रूप में नामित किया गया था।

सेशल्ल्स

राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटिल की 29 अप्रैल से 1 मई 2012 के दौरान सेशल्ल्स की यात्रा से भारत और सेशल्ल्स के बीच संबंधों को और मजबूती मिली। सुरक्षा में सहयोग, सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति और खेलकूद सहित आपसी हित के मुद्दों पर विचार – विमर्श किया गया। सेशल्ल्स की सरकार के लिए 25 मिलियन अमरीकी डॉलर के अनुदान तथा 50 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला की घोषणा की गई थी। पुलिस अनुसंधान/पुलिस अनुसंधान और विकास ब्यूरो के प्रशिक्षण पर समझौता ज्ञापनों तथा युवा मामले और खेलकूद में सहयोग पर समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए।

राष्ट्रपति जेम्स एलिक्स मिशेल ने विदेश मंत्री जीन – पॉल एडम के साथ 2–4 फरवरी, 2012 के दौरान दिल्ली सतत विकास शिखर सम्मेलन 2012 के 12वें संस्करण में भाग लिया। इस यात्रा के दौरान राष्ट्रपति मिशेल ने प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह से मुलाकात की और क्षेत्रीय सुरक्षा और द्विपक्षीय सहयोग पर विचार-विमर्श किया। राष्ट्रपति मिशेल को पर्यावरण मामलों पर उनके योगदान के लिए टेरी विश्वविद्यालय द्वारा दर्शनशास्त्र में डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया।

विदेश मंत्री जीन – पॉल एडम ने 13–16 फरवरी, 2012 के दौरान भारत की यात्रा की। यह सेशल्ल्स के किसी विदेश मंत्री की पहली द्विपक्षीय यात्रा थी। इस यात्रा के दौरान उन्होंने तत्कालीन विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा और रक्षा मंत्री श्री ए.के. एंटनी से मुलाकात की। इनकी चर्चाएं रक्षा, समुद्री दस्युता और शिक्षा पर केंद्रित रहीं। सेशल्ल्स के दक्षिणी आर्थिक क्षेत्र (ईजेडजेड) को कवर करने के लिए 10 मिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य की एक तटीय रडार प्रणाली की स्थापना के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे।

भारतीय नौसेना पोत सावित्री ने 'सेशल्ल्स के अनन्य आर्थिक क्षेत्र (15–21 जनवरी, 2012) की गश्त के लिए जनवरी 2012 में सेशल्ल्स का दौरा किया। इस जहाज ने 14–25 जून, 2012 के दौरान सेशल्ल्स की राष्ट्रीय दिवस परेड में भाग लेने के लिए और सेशल्ल्स ईईजेड निगरानी के लिए सेशल्ल्स का पुनः दौरा किया। भारतीय नौसेना पोत ब्रह्मपुत्र ने 23–27 नवम्बर, 2012 के दौरान और 3–6 दिसम्बर, 2012 के दौरान सेशल्ल्स के ईईजेड की निगरानी के लिए सेशल्ल्स का दौरा किया।

वित्त, व्यापार और निवेश मंत्री पियरे लापोर्ट के नेतृत्व में एक चार-सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 25 सितम्बर 2012 को नई दिल्ली में हिंद महासागर वैश्विक मंच में भाग लिया।

पेट्रो सेशल्ल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सहित पर्यावरण मंत्री डॉ. रोलफ पयट ने अक्टूबर 2012 में नई दिल्ली में आयोजित 10वें पेट्रोटेक में भाग लिया और नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री डॉ. फारुक अब्दुल्ला से मुलाकात की।

विदेश मंत्री जीन – पॉल एडम ने 29 अक्टूबर – 02 नवंबर, 2012 के दौरान भारत में आयोजित आईओआर – एआरसी सम्मेलन में

भाग लिया और 1 नवम्बर, 2012 को विदेश मंत्री सलमान खुरशीद से मुलाकात की।

दिल्ली सतत विकास शिखर सम्मेलन, 2013, जो 31 जनवरी, 2013 से 2 फरवरी, 2013 के दौरान दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है, में भाग लेने के लिए राष्ट्रपति जेम्स मिशेल की भारत की यात्रा निर्धारित है।

सिएरा लियोन

सिएरा लियोन गणराज्य के ऊर्जा और जल संसाधन मंत्री, श्री रोबिन-कोकेर ओल्युनीई ने नई दिल्ली में 9–10 अक्टूबर, 2012 के दौरान आयोजित विश्व मंत्रिस्तरीय "ऊर्जा पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी" में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया।

विदेश मंत्रालय द्वारा 24 सितम्बर से 05 अक्टूबर 2012 के दौरान भारतीय जन संचार संस्थान (आईआईएमसी), नई दिल्ली में आयोजित अफ्रीका के पत्रकारों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में सिएरा लियोन के दो पत्रकारों ने भाग लिया।

सोमालिया

सोमालिया के एक राज्य पुन्तलैण्ड के राष्ट्रपति, श्री अब्दुर्रहमान मोहम्मद महमूद फारोले ने 13–16 मई, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान, श्री फारोले ने विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री ई. अहमद से मुलाकात की।

दक्षिण अफ्रीका

भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच द्विपक्षीय संबंध ऐतिहासिक संपर्क और आदान-प्रदान पर आधारित हैं जो गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका में राजनीतिक संघर्ष के साथ-साथ रंगभेद के खिलाफ एएनसी-नेतृत्व वाले आंदोलन के लिए हमारे सैद्धांतिक और लगातार समर्थन से प्रारंभ हुए हैं।

राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल ने 1–7 मई 2012 के दौरान दक्षिण अफ्रीका की सरकारी यात्रा की। राष्ट्रपति पाटिल ने राष्ट्रपति जूमा, उप राष्ट्रपति मोल्लान्थे और दक्षिण अफ्रीकी संसद के दोनों सदनों के सदस्यों के समूह के साथ द्विपक्षीय विचार – विमर्श किया। इस यात्रा के दौरान, राष्ट्रपति पाटिल ने कांस्टिट्यूशन हिल, जोहानसबर्ग में महात्मा गांधी की मूर्ति का अनावरण किया और डरबन में फीनिक्स बस्तियों (सेटेलमेंट्स) में एक सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र की स्थापना हेतु नींव का पत्थर रखा।

नेशनल असेंबली के अध्यक्ष श्री मैक्स सीसुलु और प्रांतों की राष्ट्रीय परिषद के अध्यक्ष श्री म्नीन्वा माह्लान्गु के नेतृत्व में दक्षिण अफ्रीका के एक संयुक्त संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने 8–14 जुलाई 2012 के दौरान भारत का दौरा किया।

दक्षिण अफ्रीका की व्यापार और उद्योग उप मंत्री, सुश्री एलिजाबेथ थाबेथे ने 32वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में भाग लेने के लिए नवम्बर 2012 में भारत आने वाले दक्षिण अफ्रीका के व्यापारियों के एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। उन्होंने सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम राज्य मंत्री श्री के.एच. मुनियप्पा से मुलाकात की।

श्री पवन कुमार बंसल, तत्कालीन संसदीय कार्य तथा जल संसाधन मंत्री के नेतृत्व में सांसदों के एक भारतीय सद्भावना प्रतिनिधिमंडल ने 10-16 अक्टूबर, 2012 के दौरान दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया।

वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री आनंद शर्मा 21-22 सितम्बर 2012 के दौरान दक्षिण अफ्रीका की द्विपक्षीय यात्रा पर गए। उन्होंने राष्ट्रपति जैकब जुमा से मुलाकात की और दक्षिण अफ्रीका के व्यापार और उद्योग मंत्री श्री रोब डेविस के साथ द्विपक्षीय बैठक की।

कोयला मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री प्रतीक प्रकाशबाबु पाटिल ने 29-31 अक्टूबर, 2012 के दौरान दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया। उन्होंने सुश्री सुसान शाबांगु, दक्षिण अफ्रीका की खनिज संसाधन मंत्री से मुलाकात की और कोयला क्षेत्र में सहयोग का विस्तार करने के अवसरों तथा दोनों देशों के बीच संयुक्त उद्यम की संभावनाओं पर चर्चा की।

9वें विश्व हिंदी सम्मेलन जिसमें 800 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जोहानसबर्ग में 22-24 सितम्बर, 2012 के दौरान हिन्दी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ्रीका के सहयोग से आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन का उद्घाटन विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्रीमती प्रणीत कौर और दक्षिण अफ्रीका के वित्त मंत्री, डॉ. प्रवीण गोर्धन द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

भारत - ब्राजील - दक्षिण अफ्रीका समुद्री (आईबीएसएएमएआर) अभ्यास अक्टूबर, 2012 में दक्षिण अफ्रीका में आयोजित किया गया था। दो भारतीय नौसेनिक जहाजों ने आईबीएसएएमएआर में भाग लेने के लिए डरबन, केप टाउन और सिमंस टाउन की बंदरगाहों का दौरा किया। रक्षा क्षेत्र में 10 सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों ने प्रिटोरिया में सितम्बर 2012 में आयोजित अफ्रीकी एयरोस्पेस रक्षा प्रदर्शनी में भाग लिया। नौसेना प्रमुख एडमिरल निर्मल वर्मा ने 10-13 अप्रैल, 2012 के दौरान केप टाउन में आयोजित तीसरी हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी में भाग लेने के लिए एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

2012-13 के पहले छह महीनों में द्विपक्षीय व्यापार, एक अनुमान के अनुसार 5.86 बिलियन अमरीकी डॉलर था जिसमें दक्षिण अफ्रीका को भारत द्वारा निर्यात 2,423.16 मिलियन अमेरिकी डॉलर और आयात 3,445.09 मिलियन अमरीकी डॉलर था। वार्षिक आयुर्वेद सम्मेलन का आयोजन 3 अक्टूबर 2012 को नेल्सन मंडेला बाल अस्पताल के सहयोग से आयुष विभाग द्वारा किया गया था। इंडिया एक्सपो 15-17 जून 2012 के दौरान केप टाउन इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित किया गया।

सांस्कृतिक आदान - प्रदान भारत - दक्षिण अफ्रीका के रिश्तों की एक प्रमुख विशेषता रही है। एक युवा कलाकार कला प्रदर्शनी जुलाई से सितम्बर 2012 के दौरान आयोजित की गई। साझा इतिहास महोत्सव सितम्बर, 2012 में आयोजित किया गया था।

दक्षिण सूडान

जुबा में भारतीय कॉन्सुलेट जनरल का मार्च 2012 में दूतावास के रूप में उन्नयन किया गया है और उस देश में भारत के पहले राजदूत ने जनवरी, 2013 में कार्यभार संभाला। दक्षिण सूडान ने जुलाई 2012 में नई दिल्ली में अपना दूतावास खोला और इसके पहले राजदूत ने सितम्बर 2012 में भारत के राष्ट्रपति को प्रत्यय पत्र प्रस्तुत किया।

सूडान और दक्षिण सूडान के लिए भारत के विशेष दूत ने दोनों देशों के बीच मजबूत आर्थिक और विकासात्मक सहयोग की स्थापना के लिए मार्च, मई और दिसंबर, 2012 में जुबा में दक्षिण सूडान की सरकार के साथ विचार विमर्श किया।

सूडान

सूडान और दक्षिण सूडान के लिए भारत के विशेष दूत ने मार्च, मई और दिसंबर, 2012 में सूडान का दौरा किया, जिसके दौरान द्विपक्षीय आर्थिक और विकासात्मक सहयोग को मजबूत बनाने पर व्यापक विचार - विमर्श किया गया।

सूडान के तीन मंत्रियों ने अक्टूबर 2012 में भारत का दौरा किया: बिजली और जल संसाधन राज्य मंत्री डा. ताबीता बुट्रोस ने नई दिल्ली में नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा आयोजित ऊर्जा पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया; पेट्रोलियम मंत्री अवाद अल-जाज़ ने नई दिल्ली में 10वें अंतरराष्ट्रीय तेल तथा गैस सम्मेलन और 'पेट्रोटेक' प्रदर्शनी में भाग लिया; और पर्यावरण वानिकी और विकास मंत्री, हसन अब्देल्लादीर हिलाल ने हैदराबाद में जैव विविधता कन्वेंशन के पक्षकारों (सीओपी) के 11वें सम्मेलन और कार्टाजेना प्रोटोकॉल के पक्षकारों (एमओपी) की 6ठी बैठक में भाग लिया।

स्वाजीलैंड

श्रीमती जेलाने टी. ज्वाने, स्वाजीलैंड की संसद के सीनेट की अध्यक्ष ने नई दिल्ली में लिंग संवेदनशील संसद पर महिला वक्ताओं की आईपीयू की सातवीं बैठक में भाग लेने के लिए 3-4 अक्टूबर, 2012 के दौरान भारत का दौरा किया।

भारत के एक्जिम बैंक और स्वाजी सरकार ने स्वाजीलैंड में कृषि विकास और कृषि परियोजना के यांत्रिकीकरण के लिए 37.9 करोड़ अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला के एक करार पर हस्ताक्षर किए।

भारत ने मानव संसाधन विकास और क्षमता निर्माण के क्षेत्र में स्वाजीलैंड की सहायता करना जारी रखा। इस वर्ष के दौरान, 12 स्वाजी नागरिक आईटीईसी कार्यक्रम के तहत भारत सरकार के प्रशिक्षण के लिए भारत आए।

तंजानिया

2 अक्टूबर, 2012 को भारत के एक्जिम बैंक और तंजानिया के वित्त मंत्रालय ने जलापूर्ति सुधार परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए

178.125 मिलियन अमरीकी डॉलर की एक ऋण शृंखला पर हस्ताक्षर किए। इस ऋण शृंखला को 21 नवम्बर, 2012 को प्रचालित किया गया।

भारत के एक्विजम बैंक द्वारा तंजानिया की सरकार के लिए 40 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण शृंखला के अधीन 1846 एस्कॉर्ट्स ट्रैक्टर और संबंधित फर्म हेतु उपकरण की आपूर्ति वर्ष 2012 के मध्य में की गई। एक अन्य 36.56 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण शृंखला के तहत, तंजानिया पीपुल्स रक्षा बल (टीपीडीएफ) द्वारा उपयोग के लिए 299 अशोक लीलैंड ट्रकों और कुल 723 अन्य वाहनों को इस देश में नवम्बर 2012 में लाया गया था।

अरुशा में नेल्सन मंडेला विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी अफ्रीकी संस्थान में एक आईसीटी संसाधन केन्द्र की स्थापना के लिए भारत सरकार ने 1.3 मिलियन अमरीकी डॉलर के अनुदान को मंजूरी दी है। इस परियोजना का व्यवहार्यता अध्ययन डीआईटी/सी - डैक दल द्वारा अक्टूबर, 2012 में किया गया।

डॉ. हुसैन अली म्वीनी, रक्षा एवं राष्ट्रीय सेवा मंत्री ने एक सैन्य अधिकारी के साथ 29 मार्च - 01 अप्रैल, 2012 के दौरान नई दिल्ली में डेफेक्सपो में भाग लिया।

डॉ. तेरेजीआ ह्युवीसा, राज्य मंत्री (पर्यावरण), उपराष्ट्रपति का कार्यालय ने 17-19 अक्टूबर, 2012 के दौरान जैव विविधता पर अभिसमय (सीबीडी) के पक्षों के 11 वें सम्मेलन (सीओपी-11) और हैदराबाद में कार्टाजेना प्रोटोकॉल में पक्षों की छठी बैठक (एमओपी-6) में भाग लिया।

डॉ. अब्दुल्लाह ओमारी कीगोडा, व्यापार और उद्योग मंत्री ने 29 अक्टूबर - 2 नवम्बर, 2012 के दौरान गुडगांव में आईओआर - एआरसी मंत्रिस्तरीय बैठक में भाग लेने के लिए एक 22-सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन (आईटीपीओ) ने 28 जून - 8 जुलाई, 2012 के दौरान 36वें दारेस्सलाम अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में भाग लिया जिसमें अटार्इस भारतीय कंपनियों ने भाग लिया था।

भारत चिकित्सा पर्यटन गंतव्य स्थल (आईएमटीडी, 2012) प्रदर्शनी और सम्मेलन, जिसे पर्यटन मंत्रालय और फिक्की द्वारा सह प्रायोजित किया गया था, 30-31 अगस्त, 2012 के दौरान दारेस्सलाम में आयोजित किया गया।

तंजानिया नेशनल असेंबली के नौ सदस्यों और ज़ांज़ीबार के हाउस आफ रिप्रजेंटेटिव्स ने 23-28 सितम्बर, 2012 के दौरान तंजानिया मीडिया परिषद (एमसीटी) द्वारा प्रायोजित दौरे में भारत की यात्रा की। यह यात्रा भारत में सूचना के अधिकार (आरटीआई) अधिनियम के कार्यकरण के बारे में विधायकों को बताने के उद्देश्य हेतु एक अवसर के रूप में की गई थी। इसी प्रकार का एक कानून तंजानिया की संसद के विचाराधीन है।

गाम्बिया

गाम्बिया की ऊर्जा मंत्री श्रीमती तेनेंग एमबीए जाईतेह ने 9-12 अक्टूबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली में नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

भारत सरकार ने गाम्बिया को प्रतिष्ठित नेशनल असेंबली के निर्माण के पूरा करने के लिए 16.88 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण शृंखला की मंजूरी दी है।

टोगो

सचिव, उर्वरक विभाग के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने 10-11 जुलाई, 2012 के दौरान टोगो का दौरा किया और फोस्फेटिक उर्वरकों के क्षेत्र में सहयोग की संभावनाओं का पता लगाने के लिए विदेश मंत्री श्री एलीओत्तो तथा खान मंत्री श्री नोयुपोको दामिपी से मुलाकात की। उन्होंने टोगो के राष्ट्रपति श्री फाउरा ई. नासींग्बे से भी मुलाकात की।

ट्यूनीशिया

भारत - ट्यूनीशिया संयुक्त समिति की 11 वें सत्र की बैठक नई दिल्ली में 23 अप्रैल, 2012 को हुई थी। विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री ई. अहमद और ट्यूनीशिया के विदेश मामलों के राज्य मंत्री, श्री हेदी बेन अब्बेस ने बैठक की सह अध्यक्षता की। इस बैठक के दौरान अन्य बातों के साथ - साथ कार्यक्रमों और कलाकारों के आदान-प्रदान पर ट्यूनीशियाई रेडियो और ऑल इंडिया रेडियो के बीच एक सहयोग करार पर हस्ताक्षर किए गए थे।

राज्य मंत्री श्री ई. अहमद ने 5-7 नवम्बर, 2012 के दौरान ट्यूनीशिया का दौरा किया जिसके दौरान उन्होंने ट्यूनीशिया के राष्ट्रपति मोन्सेफ एम. माजीकी, प्रधानमंत्री हमदी जाबेली, विदेश मंत्री राफीक अब्देस्सलेम, राष्ट्रीय संविधान सभा के अध्यक्ष मुस्तफा बेन जाफार और विदेश मंत्रालय में राज्य सचिव हेदी बेन अब्बेस के साथ भारत और ट्यूनीशिया के बीच द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाने पर चर्चा की।

यूगांडा

31 मार्च - 5 अप्रैल, 2012 के दौरान अंतर - संसदीय संघ के 126वें एसेंबली में भाग लेने के लिए 29 मार्च - 6 अप्रैल, 2012 के दौरान श्रीमती मीरा कुमार, अध्यक्ष, लोकसभा के नेतृत्व में एक संसदीय प्रतिनिधिमंडल तथा संसद सदस्यों ने कंपाला का दौरा किया। श्रीमती रेबेका बतीलवाला काडागा, अध्यक्ष, युगांडा की संसद ने 3-4 अक्टूबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली में आयोजित संसद की महिला अध्यक्षा की 7वीं बैठक में भाग लेने के लिए एक 13-सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। यात्रा पर आए शिष्टमंडल के सदस्यों ने 1-8 अक्टूबर, 2012 के दौरान लोक सभा सचिवालय के संसदीय अध्ययन तथा प्रशिक्षण ब्यूरो में आयोजित एक अध्ययन यात्रा में भी भाग लिया।

सीआईआई के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों के एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने इसके अध्यक्ष श्री आदि गोदरेज के नेतृत्व में निवेश के अवसरों का पता लगाने तथा युगांडा के भागीदारों की पहचान करने के लिए 15-16 अक्टूबर, 2012 के दौरान कंपाला का दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान इस प्रतिनिधिमंडल ने युगांडा के राष्ट्रपति के साथ एक बैठक की। भारतीय उच्चायोग के सहयोग से यूएनसीसीआई द्वारा एक संगोष्ठी/सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें व्यापार, उद्योग और सहकारिता मंत्री, ऊर्जा और खनिज विकास राज्य मंत्री, वित्त राज्य मंत्री तथा युगांडा में प्रमुख युगांडाई/भारतीय व्यावसायिकों ने भाग लिया था।

भारतीय रासायनिक और अलायड प्रोडक्ट्स निर्यात संवर्धन परिषद (सीएपीईएक्सआईएल) के एक 12 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 15-18 जुलाई, 2012 के दौरान कंपाला का दौरा किया और एक बहु उत्पाद क्रेता-विक्रेता सम्मेलन सह प्रदर्शनी का आयोजन किया।

इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) के एक प्रतिनिधिमंडल ने इसके अध्यक्ष श्री आर.वी. कनोरिया के नेतृत्व में 21 नवम्बर 2012 को 8वें कोमेसा बिजनेस फोरम में भाग लेने के लिए कंपाला का दौरा किया, जिसकी सह मेजबानी कोमेसा व्यापार परिषद और युगांडा के निजी क्षेत्र फाउंडेशन (पीएसएफयू) द्वारा की गई थी।

भारत ने एक खाद्य प्रसंस्करण व्यापार ऊष्मायन केंद्र स्थापित करने में युगांडा को सहयोग की पेशकश की है और एबीआई-आईसीआरईएसएटी को कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में कार्य करने के लिए नियुक्त किया है।

जाम्बिया

वाणिज्य, व्यापार और उद्योग मंत्री रॉबर्ट के.के. सीशींगा ने द्वितीय भारत - अफ्रीका व्यापार मंत्रियों की बैठक के साथ-साथ पहली भारत - अफ्रीका व्यापार परिषद की बैठक में भाग लेने के लिए 16-20 मार्च, 2012 के दौरान हमारे वाणिज्य, उद्योग और वस्त्र मंत्री श्री आनंद शर्मा के निमंत्रण पर 17 मार्च, 2012 को भारत का दौरा किया।

देश भर में 650 स्वास्थ्य केन्द्रों के निर्माण के लिए 50 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला (एलओसी) पर लुकासा में 29 मार्च, 2012 को भारत के एक्जिम बैंक और जाम्बिया के वित्त मंत्री श्री अलेक्जेंडर बी. चीक्वान्डा द्वारा हस्ताक्षर किए गए।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा प्रायोजित एक नृत्य मंडली ने 30-31 जनवरी, 2012 को लुकासा का दौरा किया। डॉ. केनेथ कोन्डा, जाम्बिया के प्रथम राष्ट्रपति 30 जनवरी के स्वागत कार्यक्रम में मौजूद थे, जो गणतंत्र दिवस कार्यक्रम का हिस्सा था।

जिम्बाब्वे

जिम्बाब्वे गणराज्य की सीनेट की अध्यक्ष, सुश्री एडना माड्जोन्वे ने 3-4 अक्टूबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली में आयोजित लिंग संवेदनशीलता पर संसद की महिला अध्यक्षा की 7वीं बैठक में भाग लेने के लिए एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

जिम्बाब्वे में डेका पम्पिंग स्टेशन और रिवर वाटर इनटेक प्रणाली के उन्नयन के लिए सितम्बर, 2012 में 28.6 मिलियन अमरीकी डॉलर की एक ऋण श्रृंखला भारत सरकार द्वारा अनुमोदित की गई थी।

हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद, भारत द्वारा भारतीय हस्तशिल्प की एक प्रदर्शनी 21-26 नवम्बर, 2012 के दौरान हरारे में आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन जिम्बाब्वे के लघु तथा मध्यम उद्यम और सहकारी विकास मंत्री द्वारा किया गया।

हरारे में भारत के दूतावास ने, भारतीय पर्यटक कार्यालय, जोहानसबर्ग के सहयोग से, 21-25 नवंबर, 2012 के दौरान होटल मेक्लेस, हरारे में एक भारतीय खाद्य महोत्सव का आयोजन किया।

आईसीसीआर प्रायोजित पंजाबी नृत्य मंडली तथा आईसीसीआर प्रायोजित अन्य गुजराती नृत्य मंडली ने क्रमशः मई, 2012 और नवंबर, 2012 में जिम्बाब्वे का दौरा किया।

विश्व मामलों की भारतीय परिषद (आईसीडब्ल्यू), नई दिल्ली और अफ्रीका में शांति पहल केंद्र, हरारे (सीपीआईए) के बीच सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन पर हरारे में 22 मई, 2012 को हस्ताक्षर किए गए थे।

भारत-अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन के अंतर्गत घटनाक्रम

बुरुंडी में भारत - अफ्रीका व्यावसायिक प्रशिक्षण / ऊष्मायन केन्द्र (वीटीसी/आईसी) की स्थापना के लिए बुजुंबरा एनएसआईसी टीम की साक्षरता यात्रा के दौरान राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम और प्राथमिक व बुरुंडी के माध्यमिक शिक्षा, शिल्प और व्यावसायिक प्रशिक्षण मंत्रालय के बीच एक कट्टी समझौते पर 8-10 सितम्बर, 2012 के दौरान हस्ताक्षर किए गए थे।

पैन अफ्रीकी परियोजना के तहत लिए गए निर्णयों के भाग के रूप में, भारत ने हीरा क्षेत्र में एक संस्थान, भारतीय हीरा संस्थान, सूरत द्वारा बोत्सवाना में स्थापित किए जाने हेतु भारत - अफ्रीका हीरा संस्थान (आईएडीआई) की स्थापना करने के लिए अफ्रीकी संघ के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। पूरी तरह से स्थापित हो जाने पर, आईएडीआई हीरे के क्षेत्र में छँटाई, कटाई और पॉलिश की कला में अफ्रीकियों को प्रशिक्षण कौशल प्रदान करेगा।

भारत सरकार ने स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में 10 मिलियन अमरीकी डॉलर की सहायता दी है। अनुदान सहायता के तहत, भारत ने शिक्षा के क्षेत्र के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी उपकरण के दो लॉट्स, स्वास्थ्य और चिकित्सा उपकरणों के दो लॉट्स और स्वास्थ्य के क्षेत्र में बोत्सवाना की सहायता के लिए 50000 कीटनाशक-संशोधित मच्छरदानी की आपूर्ति की है।

भारत - अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन-II के तहत, भारत ने क्षमता निर्माण और मानव संसाधन विकास में इस देश को सहायता देने के लिए कोमोरोस के लिए दीर्घकालिक और अल्पकालिक छात्रवृत्तियां बढ़ा दी हैं। भारत ने कोमोरोस में एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना के लिए भी प्रतिबद्धता व्यक्त की है।

आईएफएस-II के परिणाम के बाद, इथियोपिया के लिए आईटीईसी स्लॉट 120 से बढ़ाकर 135 कर दिए गए हैं। इसे आगे और बढ़ाकर इस साल 160 कर दिया गया है। इथियोपिया ने भी आईएफएस के तहत 68 आईसीसीआर छात्रवृत्ति में से 54 और 15 सी.वी. रमन विज्ञान छात्रवृत्ति में से 13 का उपयोग किया है।

17 मार्च, 2012 को नई दिल्ली में द्वितीय भारत – अफ्रीका व्यापार मंत्रियों के सम्मेलन के दौरान, वाणिज्य, उद्योग और वस्त्र मंत्री श्री आनंद शर्मा ने अफ्रीका के लिए कपास तकनीकी सहायता कार्यक्रम (सीटीएपी) का शुभारंभ किया। यह कार्यक्रम सात अफ्रीकी देशों, नामतः बेनिन, बुर्किना फासो, चाड, मलावी, माली, नाइजीरिया और युगांडा में लागू किया गया।

उच्च मांग की वजह से आईटीईसी (आईटीईसी-I के तहत 100 और आईटीईसी-II के तहत 170) के तहत 2012-13 के लिए, मॉरीशस के लिए बड़ी संख्या में स्लॉटों की पेशकश की गई थी। मॉरीशस के स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट के छात्रों ने 100 आईसीसीआर छात्रवृत्ति का लाभ उठाना जारी रखा।

भारत ने चालू वर्ष के दौरान प्रशिक्षण के क्षेत्र में मोजाम्बिक को सहायता देना जारी रखा। सरकार के आईटीईसी कार्यक्रम और भारत – अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन निर्णय के तहत मोजाम्बिक के 21 नागरिकों को भारत भेजा गया था।

भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) के तहत, दक्षिण अफ्रीका के लिए 150 स्लॉट्स आवंटित करके विकास के क्षेत्र में सहयोग को और आगे बढ़ाया गया।

आईटीईसी/एससीएपी कार्यक्रम के तहत वर्ष 2012-13 हेतु, रवांडा के लिए 40 स्लॉट्स आवंटित किए गए हैं।

आईटीईसी/एससीएपी कार्यक्रम के तहत वर्ष 2012-13 के लिए युगांडा के लिए 85 स्लॉट आवंटित किए गए थे। मध्यावधि समीक्षा के बाद, 2012-13 वर्ष के दौरान आईटीईसी/एससीएपी कार्यक्रम के तहत अतिरिक्त 15 स्लॉटों का आबंटन किया गया है, जिससे कुल स्लॉटों की संख्या 100 हो गई। आज की तारीख में 66 स्लॉटों का उपयोग किया गया है।

आईटीईसी/आईसीसीआर कार्यक्रम के तहत, 2012-13 के दौरान भारत द्वारा जिम्बाब्वे के लिए बढ़ाए गए प्रशिक्षण स्लॉट्स/छात्रवृत्तियों की संख्या 225 से अधिक हो जाने की संभावना है। इसके सहायता कार्यक्रम के तहत, भारत ने उच्च घनत्व वाले क्षेत्रों में बच्चों के लिए तीन अत्याधुनिक (होल इन द वॉल) कंप्यूटर शिक्षण केन्द्रों की स्थापना की है। भारत आईएफएस – II के तहत जिम्बाब्वे में एक खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला (एफटीएल) और एक ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क (आरटीपी) स्थापित करने की दिशा में अग्रसर है। एफटीएल प्रतिनिधिमंडल ने एफटीएल की अवस्थिति के लिए स्थान की पहचान करने के लिए और एक संभाव्यता रिपोर्ट तथा एक व्यापार योजना तैयार करने के लिए जुलाई – अगस्त, 2012 में और फिर नवम्बर 2012 में जिम्बाब्वे का दौरा किया। राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान (एनआईआरडी),

हैदराबाद और राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (एनएसआईसी), दिल्ली से एक-एक प्रतिनिधिमंडल ने क्रमशः अक्टूबर और नवम्बर, 2012 में जिम्बाब्वे में एक ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क और एक ऊष्मायन केंद्र की स्थापना के संबंध में जिम्बाब्वे का दौरा किया।

अफ्रीकी संघ के साथ भारत के संबंधों से संबंधित गतिविधियां

विदेश मंत्रालय में विदेश मंत्री के विशेष दूत, अपर सचिव (डीपीए) ने 11-14 जुलाई 2012 के दौरान अदीस अबाबा में आयोजित अफ्रीकी संघ शिखर सम्मेलन की कार्यकारी परिषद की बैठक के लिए एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। इस प्रतिनिधिमंडल ने अफ्रीकी संघ आयोग (एयूसी) के अध्यक्ष डॉ. जीन पिंग और कई देशों के विदेश मंत्रियों के साथ द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान किया था।

एयूसी को आईटीईसी स्लॉटों की पेशकश पर अत्यधिक प्रतिक्रियाएं आई हैं। वर्ष 2012-13 के लिए स्लॉटों की संख्या पिछले वर्ष के 30 से बढ़ाकर 35 कर दी गई थी।

पैन-अफ्रीकी-ई-नेटवर्क परियोजना

भारत सरकार की मार्गदर्शी परियोजना, जिसके तहत भारत 53 अफ्रीकी देशों के लिए सेटेलાईट संपर्क – दूरस्थ चिकित्सा (टेली मेडिसिन) तथा दूरस्थ शिक्षा (टेली एजुकेशन) उपलब्ध कराने के लिए एक फाइबर-ऑप्टिक नेटवर्क स्थापित करने में सहायता दे रहा है, को इस परियोजना में भाग लेने के लिए टीसीआईएल से करार पर हस्ताक्षर करने वाले 48 देशों में से 47 देशों में स्थापित कर दिया गया है। इस समय यह परियोजना दक्षिणी सूडान में लागू की जा रही है। यह परियोजना निम्नलिखित 47 देशों में स्थापित की जा चुकी है— बेनिन, बोत्स्वाना, बुर्किना फासो, बुरुन्डी, कैमरून, कप वर्ड, मध्य अफ्रीकी गणराज्य, चाड, कोमोरस, कोंगो, कोत दिवोर, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, जिबुती, मिस्र, इरिट्रिया, इथियोपिया, गैबोन, द गाम्बिया, घाना, गिनी, गिनी – बिसाऊ, केन्या, लेसोथो, लाइबेरिया, लीबिया, मेडागास्कर, मलावी, माली, मॉरिटानिया, मारीशस, मोजाम्बिक, नामीबिया, नाइजर, नाइजीरिया, रवांडा, साओ तोम एण्ड प्रिंसिप, सेनेगल, सेशल्स, सिएरा लियोन, सोमालिया, सूडान, स्वाजीलैण्ड, तंजानिया, टोगो, यूगान्डा, जाम्बिया और जिम्बाब्वे।

टेली-एजुकेशन हिस्से के तहत, अफ्रीकी देशों के 9960 छात्रों को पहले ही भारतीय विश्वविद्यालयों में पंजीकृत किया जा चुका है और उन्हें भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा दूरस्थ शिक्षा दी जा रही है। अक्टूबर, 2012 तक 3577 दूरस्थ-शिक्षा सत्र आयोजित करके 465 दूरस्थ-चिकित्सा परामर्श दिए जा चुके हैं।

सुपर स्पेशलिटी अस्पतालों के नियमित सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) सत्र 22 अप्रैल, 2009 से प्रारंभ हो चुके हैं। अक्टूबर, 2012 तक सुपर स्पेशलिटी अस्पतालों द्वारा अंग्रेजी में 2496 सीएमई सत्र और फ्रांसीसी में 181 सीएमई सत्र आयोजित किए जा चुके हैं।



अल्बानिया

विदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर ने 7 से 10 जुलाई 2012 तक अल्बानिया की यात्रा की। उनके साथ सीआईआई से एक व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडल गया था। उन्होंने अल्बानिया के प्रधानमंत्री सॉली बेरिशा, विदेश मंत्री श्री पनारिती, उप प्रधानमंत्री और अर्थव्यवस्था मंत्री श्री एडमण्ड हैक्सीनेस्तो, व्यापार और ऊर्जा मंत्री तथा संसद की अध्यक्ष श्रीमती जोजेफिना तोपाली से द्विपक्षीय बैठकें की। 9 जुलाई 2012 को सीआईआई और अल्बानियाई वाणिज्य संघ के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

14 गायकों और नर्तकों की एक मणिपुरी नृत्य मंडली ने तिराना में 17 नवम्बर, 2012 को संगीत कार्यक्रम आयोजित किया। उनका यह कार्यक्रम अल्बानिया की स्वतंत्रता की 100वीं वर्षगांठ को समर्पित था। इस नृत्य मंडली की सह मेजबानी अल्बानिया के संस्कृति मंत्रालय के साथ अल्बानियाई संसद की अध्यक्ष श्रीमती तोपाली और बुखारेस्ट में भारतीय राजदूत द्वारा की गई थी।

आईसीसीआर और अल्बानियाई राजदूतावास द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित मदर टेरेसा की फोटो प्रदर्शनी 14 से 20 फरवरी, 2013 को ललित कला अकादमी में आयोजित की जाएगी।

आस्ट्रिया

वर्ष के दौरान उच्च स्तरीय दौरों, व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडलों और सांस्कृतिक मंडली के आदान-प्रदान के माध्यम से भारत-आस्ट्रिया संबंध मजबूत किए गए।

आस्ट्रियाई संसद की अध्यक्ष श्रीमती बारबरा प्रामेर ने 1 से 4 अक्टूबर, 2012 तक लोक सभा सचिवालय द्वारा आयोजित 'लिंग-भेद जागरूक संसद' विषय पर संसद के महिला अध्यक्षाओं की सातवीं बैठक में हिस्सा लेने के लिए भारत की यात्रा की।

आस्ट्रियाई परिसंघ परिवहन, नवाचार और प्रौद्योगिकी मंत्री सुश्री डोरिस ब्रूरेस ने सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री डॉ. सी.पी. जोशी के निमंत्रण पर 1 से 4 अक्टूबर 2012 तक नई दिल्ली की यात्रा की। उन्होंने भारतीय रेलवे, सड़क परिवहन और राजमार्ग, शहरी विकास, नागरिक उड्डयन और जहाजरानी मंत्रियों के साथ ही योजना, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री से मुलाकात की। उन्होंने जहाजरानी मंत्री के साथ-साथ भारत-आस्ट्रियाई

संगोष्ठी की सह अध्यक्षता की। जहाजरानी और पतन अवसंरचना क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन और सड़क अवसंरचना तथा सड़क परिवहन प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में दीर्घकालिक संबंध और द्विपक्षीय सहयोग के लिए एक संयुक्त आशय वक्तव्य पर दौरे के दौरान हस्ताक्षर किए गए।

आस्ट्रियाई परिसंघ पर्यावरण, वानिकी, कृषि और जल प्रबंधन मंत्री, निकोलस बेरलाकोविक ने हैदराबाद में आयोजित जैविक विविधता संबंधी अभिसमय के सरकारी पक्षकारों के सम्मेलन की बैठक में भाग लेने के लिए 16 से 19 अक्टूबर 2012 तक भारत की यात्रा की।

भारत-आस्ट्रियाई विज्ञान और प्रौद्योगिकी संबंधी संयुक्त समिति की द्वितीय बैठक 23-24 अप्रैल, 2012 को नई दिल्ली में आयोजित की गई थी। 2012-14 की अवधि के लिए एक सहयोग कार्यक्रम (पीओसी) को बैठक के दौरान अंगीकार किया गया था।

राष्ट्रीय रक्षा कालेज से एक 16 सदस्यों वाले प्रतिनिधिमंडल ने 20-25 मई 2012 तक आस्ट्रिया की यात्रा की।

पूर्व पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री श्री एस. जयपाल रेड्डी की अगुवाई में एक 9 सदस्यों वाले प्रतिनिधिमंडल ने 5वें ओपेक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लेने के लिए 12-16 जून 2012 तक आस्ट्रिया की यात्रा की।

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री श्री व्यालार रवि की अगुवाई में एक दो सदस्यों वाला प्रतिनिधिमंडल 3-6 फरवरी, 2013 तक आस्ट्रिया की यात्रा करेगा। दोनों देशों के बीच एक सामाजिक सुरक्षा करार पर यात्रा के दौरान हस्ताक्षर किए जाने का प्रस्ताव है। विदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर की अगुवाई में एक प्रतिनिधिमंडल संयुक्त राष्ट्र सभ्यताओं के गठजोड़ संबंधी वैश्विक मंच की 5वीं बैठक में हिस्सा लेने के लिए 26-28 फरवरी 2013 तक आस्ट्रिया का दौरा कर सकता है।

बोस्निया और हरजेगोविना

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर ने सीआईआई के 5 सदस्यों वाले व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडल के साथ 11 से 14 जुलाई 2012 को बोस्निया की यात्रा की। यह भारत से बोस्निया और हरजेगोविना की मंत्रिस्तरीय पहली बार की गई यात्रा थी।

बोस्निया और हरजेगोविना के विदेश मंत्री श्री ज्लातको लैगूस्डीजीज के साथ सरकारी वार्ता के अतिरिक्त श्रीमती कौर ने अध्यक्ष श्री बाकीर इजेथगोविक और प्रेसीडेंसी के सदस्य श्री नेवोजसा रेडमानोविक से भी मुलाकात की।

व्यापार और आर्थिक सहयोग पर द्विपक्षीय संयुक्त समिति की तीसरी बैठक 25 सितम्बर 2012 को साराजेवा में आयोजित की गई थी।

विदेश व्यापार और आर्थिक संबंध मंत्री श्री मिरको सारोविक ने नई दिल्ली में 9-10 अक्टूबर 2012 को आयोजित ऊर्जा उपलब्धता संबंधी अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में हिस्सा लेने के लिए भारत की यात्रा की और इस दौरान नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री फारूख अब्दुल्ला से मुलाकात की।

सजायाता व्यक्तियों के अंतरण पर भारत और बोस्निया और हरजेगोविना के बीच एक करार पर साराजेवो में 13 दिसम्बर 2012 को हस्ताक्षर किए गए थे।

बुल्गारिया

दोनों विदेश कार्यालयों के बीच मध्यावधि द्विपक्षीय परामर्श 8 मई 2012 को आयोजित किए गए।

रक्षा मंत्रालय के एक प्रतिनिधिमंडल ने भारत- बुल्गारिया रक्षा सहयोग पर संयुक्त समिति के 16वें सत्र में हिस्सा लेने के लिए 28-29 जून 2012 को बुल्गारिया की यात्रा की।

बुल्गारियाई अर्थव्यवस्था, ऊर्जा और पर्यटन मंत्री श्री डेल्यान डोब्रेव ने आंतरिक मामलों के उप मंत्री श्री वेसेलिन वूचको और एक व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडल के साथ भारत-बुल्गारिया संयुक्त आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग के 17वें सत्र के लिए भारत की यात्रा की, जिसका आयोजन 15-16 अक्टूबर 2012 को नई दिल्ली में किया गया था।

भारत-बुल्गारिया संयुक्त विज्ञान और प्रौद्योगिकी समिति के 7वें सत्र का आयोजन 6-7 दिसम्बर, 2012 को सोफिया में किया गया था।

क्रोएशिया

17 अक्टूबर 2012 को भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) और जगरेब विश्वविद्यालय के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे, जिसके द्वारा विश्वविद्यालय के भारत विज्ञान विभाग में हिंदी की एक पीठ की स्थापना को औपचारिक रूप दिया गया है। इस दस्तावेज़ पर आईसीसीआर की ओर से क्रोएशिया में भारत के राजदूत द्वारा और जगरेब विश्वविद्यालय के रेक्टर द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे।

2 अक्टूबर 2012 को भारतीय राजदूतावास ने एक स्थानीय एनजीओ-महात्मा गांधी सांस्कृतिक केंद्र, जगरेब के सहयोग से - गांधी जयंती और जगरेब में एक आयोजन में अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस का आयोजन किया। महात्मा गांधी के चुनिंदा फोटोचित्रों और संदेशों की एक प्रदर्शनी 1-3 अक्टूबर 2012 तक आयोजित की गई थी। इस अवसर पर महात्मा गांधी पर एक लघु वृत्तचित्र भी प्रदर्शित किया गया।

नवम्बर 2012 तक भारत और क्रोएशिया के बीच द्विपक्षीय व्यापार 129.23 मिलियन यूरो तक था। इसी अवधि के दौरान भारत से और में क्रोएशिया से निर्यात और आयात की कीमत क्रमशः 112.93 मिलियन यूरो और 16.30 मिलियन यूरो थी।

क्रोएशिया ने वर्ष 2012-13 के दौरान भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटेक) के अंतर्गत उसे आबंटित सभी पांच स्लाटों का उपयोग किया, इसे ध्यान में रखते हुए इस अवधि के लिए क्रोएशिया को दो अतिरिक्त स्लॉट प्रदान किए गए थे।

साइप्रस

साइप्रस भारत संयुक्त आर्थिक समिति के 7वें सत्र का आयोजन निकोशिया में 27-28 सितम्बर 2012 को किया गया। व्यापार, उद्योग, अर्थव्यवस्था, निवेश, प्रौद्योगिकी, पर्यटन, ऊर्जा, परिवहन, स्वास्थ्य और संस्कृति के क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग की समीक्षा की गई और एक प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए गए।

साइप्रस के अनन्य आर्थिक क्षेत्र में तेल और गैस की खोज और गैस की संभावना भारत-साइप्रस सहयोग के लिए नए अवसर प्रदान करते हैं, जो गैस/पेट्रोरसायन क्षेत्र में अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम दोनों तरह की परियोजनाओं के लिए होंगे।

चेक गणराज्य

चेक रक्षा मंत्री डॉ. एलेक्जैण्डर वोण्ड्रा ने एक 46 सदस्यों वाले व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडल के साथ 29-30 मार्च 2012 को थल और नौ सेना प्रणाली पर 7वीं अंतरराष्ट्रीय रक्षा प्रदर्शनी (डेफएक्सपो भारत 2012) में हिस्सा लेने के लिए भारत की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान चेक रक्षा मंत्री ने रक्षा मंत्री श्री ए.के. एंटोनी, विदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री शिवशंकर मेनन और रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार श्री विजय कुमार सारस्वत से मुलाकात की। ये बैठकें रक्षा मामलों पर द्विपक्षीय मुद्दों से संबंध रही।

अप्रैल 2012 में प्राग की यात्रा के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) और चेक शिक्षा, युवा और खेल मंत्रालय के बीच वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी सहयोग संबंधी एक कार्यक्रम और वर्ष 2013-15 के दौरान भारत-चेक संयुक्त परियोजनाओं के सहयोग के लिए एक कार्य योजना पर हस्ताक्षर किए गए थे।

अगस्त 2012 में परमाणु विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत के भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र और इस्तव जाडेर्नेहो व्यजकुमु ए.एस. चेक गणराज्य के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

वाणिज्य, उद्योग और वस्त्र मंत्री (सीआईटीएम) श्री आनंद शर्मा ने बर्नो अंतर्राष्ट्रीय अभियांत्रिकी मेले, जिसमें भारत के भागीदार देश के रूप में शामिल होने के लिए 9-11 सितम्बर 2012 को एक उच्च स्तरीय व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई करते हुए चेक गणराज्य की यात्रा की। सीआईटीएम और उनके चेक समकक्ष ने भारत चेक संयुक्त आयोग बैठक (जेसीएम) के 9वें सत्र में हिस्सा लिया। दोनों मंत्री कौशल और नवाचार, भारी अभियांत्रिकी और खनन के क्षेत्रों में संयुक्त कार्य समूह (जेसीएम) शुरू करने के लिए सहमत हुए। जेसीएम प्रोटोकॉल के साथ ही भारत के एकिजम बैंक और सेस्का एक्सपोर्टनी बैंका (सीईबी) के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर ने 31 अक्टूबर से 3 नवम्बर 2012 तक चेक गणराज्य की यात्रा की। प्रधान मंत्री पीटर नेकास, उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री कारेल शेवारेजेबर्ग, और चेक संसद के उप मंत्रियों के चैंबर की अध्यक्ष सुश्री मिरोस्लेवा नेमकोवा के साथ हुई बैठकों के दौरान द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा की गई। प्रथम उप विदेश मंत्री जिरी शेनीडर के साथ हुई चर्चा का केंद्र द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मुद्दे रहे।

डेनमार्क

भारत-डेनमार्क संबंध 1995 के पुरुलिया हथियार गिराने के मामले में संलिप्तता के लिए डेनमार्क के राष्ट्रिक नील्स हॉक बनाम किम डेवी को भारत को प्रत्यर्पित न किए जाने के कारण प्रभावित बने रहे।

आरहस विश्वविद्यालय में भारत-विज्ञान अध्ययन हेतु पीठ की स्थापना के लिए आईसीसीआर की ओर से भारत के राजदूत द्वारा 11 सितम्बर 2012 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। कापेनहेगन बिजनेस स्कूल में भी भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज के लिए एक पीठ पहले से कार्य कर रही है।

एक 10 सदस्यों वाली आईसीसीआ सांस्कृतिक मंडली ने कापेनहेगन की यात्रा की और 20-21 अक्टूबर 2012 को डैनिश रायल थिएटर में 'स्वान लेक-रिविजिटेड' नामक दो कार्यक्रमों का आयोजन किया। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन डैनिश हॉक-लारसेन फाउंडेशन द्वारा राजदूतावास के सहयोग से प्रायोजित 'भारत आज-कोपेनहेगन कल' की ओर से किया गया था।

एस्टोनिया

एस्टोनिया के प्रधानमंत्री श्री एण्डरस अनसिप ने एक निजी यात्रा पर जुलाई, 2012 में भारत की यात्रा की। उन्होंने विदेश मंत्रालय में

राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर से मुलाकात की और दोनों देशों में आर्थिक स्थिति पर चर्चा की।

एस्टोनिया के शिक्षा और अनुसंधान मंत्री श्री जाक आविकोस ने वरिष्ठ अधिकारियों के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ 28 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2012 के दौरान नई दिल्ली और मुंबई की यात्रा की। यात्रा के दौरान उन्होंने मानव संसाधन विकास और संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री कपिल सिब्बल और साथ ही संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री सचिन पायलट से मुलाकात की।

एस्टोनिया ने मार्च 2012 में नई दिल्ली में प्रभारी अधिकारी की अगुवाई में अपना राजदूतावास खोला। भारत में एस्टोनिया के पहले स्थानिक राजदूत जनवरी, 2013 में भारत पहुंचे।

भारतीय दूतावास ने जून 2012 में टैलिन में अपना वीजा केंद्र खोला जिसका उद्घाटन एस्टोनिया के विदेश मंत्री श्री उरमॉस पैट ने किया।

भारत-एस्टोनिया विदेश कार्यालय परामर्श मई 2012 में टैलिन में आयोजित किए गए।

एस्टोनिया ने मार्च 2012 में नई दिल्ली में अपना राजदूतावास खोला।

4 संसद सदस्यों सहित एक 27 सदस्यों वाले प्रतिनिधिमण्डल ने ई-गवर्नेंस अकादमी में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए एस्टोनिया की यात्रा की।

आईटेक कार्यक्रम के अंतर्गत एस्टोनिया को वर्ष में 20 स्लॉट प्रस्तावित किए जाते हैं। आईटेक दिवस 24 अक्टूबर 2012 को आयोजित किया गया। अमृता स्टूडियो के स्थानीय कलाकारों ने भरतनाट्यम का प्रदर्शन किया। आईसीसीआर द्वारा प्रायोजित मणिपुरी नृत्य मंडली रंगनिकेतन ने जून 2012 में टैलिन की यात्रा की और नृत्य प्रदर्शन किया।

एस्टोनिया के विदेश मंत्री श्री उरमास पैट ने 13 फरवरी 2013 को नई दिल्ली में एस्टोनियाई राजदूतावास के औपचारिक उद्घाटन के लिए भारत की यात्रा की।

फिनलैण्ड

फिनलैण्ड की संसद के अध्यक्ष श्री ईरो हीनालोमा ने 3 सदस्यों वाले संसदीय प्रतिनिधिमण्डल के साथ 23-26 अप्रैल 2012 को भारत की यात्रा की। उन्होंने उप राष्ट्रपति और राज्य सभा के सभापति श्री हामिद अंसारी, लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार, संसदीय कार्य मंत्री श्री पवन कुमार बंसल, प्रतिपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज, विदेश मंत्रालय में राज्यमंत्री श्रीमती प्रनीत कौर और विदेश मामलों की स्थायी समिति से मुलाकात की।

ग्रामीण विकास मंत्री श्री जयराम रमेश ने 9-11 अप्रैल 2012 को फिनलैण्ड की यात्रा की। उन्होंने फिनलैण्ड के संसद के सतत विकास विषय दिवस में हिस्सा लिया और प्राकृतिक संसाधन के सतत और प्रभावी उपयोग पर एक व्याख्यान दिया। श्री जयराम रमेश ने फिनलैण्ड के विदेश मंत्री श्री जायरी हकामी से भी मुलाकात की।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और फिनलैण्ड अकादमी के बीच नई दिल्ली में नवम्बर 2012 में जैव चिकित्सा अनुसंधान पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

संयुक्त नवाचार आयोग का आयोजन हेलसिंकी में 5-7 सितम्बर 2012 को किया गया।

ऊर्जा और संसाधन संस्थान (टीईआरआई) एवं पूर्वी फिनलैण्ड विश्वविद्यालय ने जोएनसू में टीईआरआई नोरडिक कार्यालय खोला। कार्यालय वैश्विक परिप्रेक्ष्य के बोरियल और आर्कटिक क्षेत्रों में अनुसंधान और विकास एवं उनकी चुनौतियों में विशेषज्ञता प्रदान करेगा। कार्यालय में प्रमुख अनुसंधान क्षेत्र सतत वानिकी और जैव-अर्थव्यवस्था होंगे।

आईसीसीआर द्वारा प्रायोजित मणिपुरी नृत्य मण्डली रंगनिकेतन ने जून 2012 में कुओपियो नृत्य उत्सव में हिस्सा लेने के लिए फिनलैण्ड की यात्रा की।

आवास और संचार मंत्री सुश्री क्रिस्टा किउरु ने 15-21 जनवरी 2013 तक भारत की यात्रा की। उनके साथ एक सरकारी और व्यावसायिक प्रतिनिधिमण्डल भी आया था। मंत्री किउरु ने अपनी यात्रा के दौरान शहरी विकास मंत्री श्री कमल नाथ से मुलाकात की और बेंगलुरु एवं आगरा की यात्रा की। पूर्व राष्ट्रपति सुश्री तारजा हैलोनन 30 जनवरी से 5 फरवरी, 2012 तक दिल्ली सतत विकास शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने दिल्ली आएंगी।

ग्रीस

भारतीय राजदूतावास, एथेन्स ने हलान्द्री नगरपालिका के युवा केन्द्र में अप्रैल 2012 में एक तीन-दिनों के भारतीय फिल्मोत्सव का आयोजन किया।

राजदूतावास के सहयोग से हेलेनिक फेडरेशन ऑफ इण्टरप्राइजेज (एसईवी), यूरोपीय व्यवसाय और प्रौद्योगिकी केन्द्र ने 21-22 मई, 2012 को एथेन्स और थेसालोनिकी में 'भारत में व्यवसाय करना' विषय पर एक-दिवसीय कार्यशाला आयोजित की।

2011-12 में दोनों के बीच द्विपक्षीय व्यापार अत्यधिक बढ़ा और ग्रीस में विकट आर्थिक संकट के बावजूद यह 906.13 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया।

भारत से एक आईसीसीआर प्रायोजित 'लवनी' लोक नृत्य मण्डली ने स्वतंत्रता के 100 वर्ष के आयोजन हेतु 28 जून से 7 जुलाई

2012 तक कावाला अंतरराष्ट्रीय उत्सव ("कास्मोपोलिस") में हिस्सा लिया।

गुजरात से एक 22 सदस्यों वाली लोकनृत्य मण्डली ने 13-17 अगस्त 2012 को ईजियो में आयोजित 8वें विश्व पारम्परिक नृत्य महोत्सव में और 19-26 अगस्त 2012 के दौरान 50वें लेकास अंतरराष्ट्रीय फॉकलोर महोत्सव में हिस्सा लिया। भारतीय सूफी गायक श्री राजा खान ने एक स्थानीय कार्यक्रम आयोजक 'स्पेक्स-एन-आर्ट' के निमंत्रण पर 16 अक्टूबर 2012 को एथेन्स में अपनी गायकी पेश की।

होली सी

भारत से आर्कबिशप जार्ज एलेन्वेरी और आर्कबिशप मार बेसलियोज को क्रमशः फरवरी 2012 और नवम्बर, 2012 में वेटिकन में आयोजित अभिषेक उत्सवों में कार्डिनल्स कालेज में नामित किया गया था। दोनों ही उत्सवों के लिए उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में राज्य मंत्री प्रोफेसर के.वी. थॉमस और राज्य सभा के उप सभापति प्रोफेसर पी.जे. कुरियन की अगुवाई में एक छह सदस्यों वाले प्रतिनिधिमण्डल ने क्रमशः दोनों उत्सवों में भारत की ओर से प्रतिनिधित्व किया।

हंगरी

हंगरी के उप प्रधान मंत्री डॉ. ज्योल्ट सिमजेन और हंगरियाई राष्ट्रीय एसेम्बली के उपाध्यक्ष डॉ. जैनोस लैटोरकाई ने 3-7 मई 2012 तक भारत की यात्रा की।

संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री सचिन पायलट की अगुवाई में एक तीन सदस्यों वाले प्रतिनिधिमण्डल ने 4-5 अक्टूबर 2012 को बुडापेस्ट साइबरस्पेस सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए बुडापेस्ट की यात्रा की। उन्होंने हंगरी के विदेश मंत्री श्री जानोस मारटोनी और राष्ट्रीय विकास मंत्री सुश्री लेसजियोन नेमेल से भी मुलाकात की।

हंगरी की राष्ट्रीय सभा के अध्यक्ष डॉ. लास्लो कोवर ने 24-30 नवम्बर, 2012 तक भारत के लिए 6-सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया। यह प्रतिनिधिमण्डल राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी, उप राष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी से मिला और लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार, प्रतिपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज और विदेश मामलों की स्थायी समिति के साथ इसने बैठकें की।

रक्षा उत्पादन सचिव श्री शेखर अग्रवाल की अगुवाई में एक 5 सदस्यों वाला रक्षा प्रतिनिधिमण्डल भारत-हंगरी संयुक्त रक्षा समिति की 5वीं बैठक में हिस्सा लेने 23-25 मई, 2012 तक हंगरी गया।

आईसीसीआर के सहयोग से 19–20 मार्च 2012 को ईएलटीई विश्वविद्यालय के समर्थन से बुडापेस्ट में 'हिज राइटिंग ऐंड आर्ट बियांड बंगाल' शीर्षक से रवीन्द्र नाथ टैगोर पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया था। शर्मिष्ठा मुखर्जी की अगुवाई में एक कथक नृत्य मण्डली ने अगस्त 2012 में हंगरी के चार नगरों में नृत्यकी पेश की।

हंगरी के विदेश मंत्रालय के वैश्विक मामलों के उप विदेश मंत्री श्री स्जाबोल्क्स ताकाक्स ने भारत की यात्रा की और 15 जनवरी, 2013 को विदेश मंत्रालय में सचिव (ईआर) श्री पिनाक चक्रवर्ती के साथ द्विपक्षीय परामर्श किया।

आइसलैण्ड

3–4 अक्टूबर 2012 को नई दिल्ली में आयोजित लिंग-भेद संवेदनशील संसद पर संसद के महिला अध्यक्षा की 7वीं बैठक और 20–26 नवम्बर, 2012 तक अध्यक्ष श्रीमती मीराकुमार के निमंत्रण पर द्विपक्षीय दौरे के लिए आइसलैण्ड की संसद की अध्यक्षा सुश्री आस्ता आर.जोहनेस्डोटिर की दो यात्राओं के दौरान द्विपक्षीय संबंधों को गति प्रदान की गई।

आइसलैण्ड के पर्यावरण मंत्री सुश्री स्वांडिस स्वावारसडोटिर ने 8–19 अक्टूबर 2012 को हैदराबाद में भारत द्वारा मेजबानी किए गए जैव-विविधता अभिसमय (सीबीडी) के पक्षकारों के 11वें सम्मेलन (कॉप-11) में हिस्सा लेने भारत की यात्रा की।

लातविया

लातविया संसद, सीमिया की अध्यक्षा सुश्री सोल्विता अबोल्टिना ने लिंग-भेद संवेदनशील संसद पर संसद की महिला अध्यक्षा की 7वीं बैठक में हिस्सा लेने के लिए 3–4 अक्टूबर, 2012 तक भारत की यात्रा की।

26 जून 2012 को रिगा में भारत बाल्टिक संस्कृति और वाणिज्य परिसंघ के सहयोग से भारतीय राजदूतावास द्वारा पंडित राजेन्द्र गंगानी की कथक नृत्यकी पेश की गई।

लिथुआनिया

इस वर्ष के दौरान भारत और लिथुआनिया के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना के बीस वर्षों का स्मरण किया गया।

भारतीय संसद में नवम्बर 2012 में एक 25 सदस्यों वाले भारत-लिथुआनिया संसदीय मित्रता समूह का गठन किया गया।

लिथुआनिया की संसद ने भी अपनी नव निर्वाचित सीमास में भारत गणराज्य के साथ अंतर-संसदीय संबंधों के लिए एक 34 सदस्यों वाले समूह को पंजीकृत किया।

मकदूनिया

उप प्रधान मंत्री और वित्त मंत्री श्री जोरान स्टैवरस्की सूचना सोसाइटी मंत्री और विदेशी निवेश मंत्री के साथ अक्टूबर 2012 में भारत आए और त्रिवेन्द्रम, बंगलौर, गुडगांव, लखनऊ, हैदराबाद और चेन्नै में व्यवसाय मंचों को संबोधित किया।

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर ने सीआईआई के एक व्यावसायिक प्रतिनिधिमण्डल के साथ 10–11 जुलाई, 2012 को मकदूनिया की यात्रा की और विदेश मंत्री निकोला पोपोस्की, उप प्रधान मंत्री और वित्त मंत्री जोरान स्टैवरस्की और मकदूनिया एसंबली की विदेश नीति संबंधी समिति के अध्यक्ष और पूर्व विदेश मंत्री एण्टोनियो मिलोसोस्की से मुलाकात की। यह किसी भारतीय मंत्री द्वारा मकदूनिया की पहली यात्रा थी। यात्रा के दौरान सीआईआई और मकदूनिया उद्योग के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

विदेश कार्यालयों के बीच मध्यकालिक डीजी-स्तरीय परामर्श 7 मई 2012 को स्कीपजे में आयोजित किया गया।

अध्यक्ष श्री ट्राजको वेलजनोव्स्की की अगुवाई में एक मकदूनियाई संसदीय प्रतिनिधिमण्डल मार्च 2013 में भारत की यात्रा कर सकता है।

माल्डोवा

एक 17 सदस्यों वाला भारतीय औषधि निर्यात संवर्द्धन परिषद् (फार्मेक्सिल) प्रतिनिधिमण्डल 5–8 दिसंबर 2012 को माल्डोवा गया। उन्होंने माल्डोवा के स्वास्थ्य मंत्रालय, नियामक प्राधिकरण, वाणिज्य और उद्योग मंडल के अधिकारियों से मुलाकात की।

माल्डोवा-भारत व्यवसाय मंच/क्रेता-विक्रेता सम्मेलन 6 दिसम्बर 2012 को आयोजित किया गया।

माण्टेनेग्रो

माण्टेनेग्रो के साथ भारत के संबंध यूगोस्लाव समाजवादी परिसंघ गणराज्य के दिनों से गहरे और मित्रवत रहे, जिसका यह एक घटक गणराज्य था। माण्टेनेग्रो में भारत के लिए अत्यधिक सद्भावना और मित्र भावना है।

माण्टेनेग्रो के विदेश और यूरोपीय एकीकरण मंत्री श्री मिलान रोकैन ने विदेश मंत्री के निमंत्रण पर 10–12 अप्रैल 2012 को भारत की यात्रा की थी। यह माण्टेनेग्रो की 2006 में स्वतंत्रता के बाद दोनों में से किसी पक्ष की ओर से पहली उच्च स्तरीय यात्रा थी। 11 अप्रैल

2012 को पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा ने विदेश मंत्री रोकने के साथ प्रतिनिधिमण्डल स्तरीय बैठक की। इस यात्रा से उच्च स्तर पर राजनैतिक सम्पर्क स्थापित करने में सहायता मिली।

नार्वे

केन्द्रीय जनजातीय मामले और पंचायती राज मंत्री श्री वी.किशोर चन्द्र देव ने 10-14 सितम्बर 2012 तक नार्वे की यात्रा की। ओस्लो में उन्होंने स्थानीय सरकार और क्षेत्रीय विकास मंत्री सुश्री लिव सिग्ने नवरसेत और सरकारी प्रशासन, सुधार और चर्च मामले मंत्रालय में सामी मामलों की प्रभारी मंत्री सुश्री रैनहिल्ड वासविक कलस्टैड से मुलाकात की। उन्होंने करासजोक, फिनमार्क स्थित सामी संसद की भी यात्रा की।

नार्वे के व्यापार और उद्योग मंत्री श्री ट्रोंड गिस्के ने दो बार क्रमशः अप्रैल 2012 और मई 2012 में भारत की यात्रा की। नार्वे के कृषि मंत्री श्री ट्रिग्वे एस. वेदुम 15-18 अगस्त 2012 को भारत आए थे और उन्होंने चेन्नै में एम.एस. स्वामीनाथन अनुसंधान फाउण्डेशन में और हैदराबाद में जल और भूमि प्रबंधन प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान में वार्ता की। नार्वे के अंतरराष्ट्रीय विकास उप मंत्री श्री अर्विन ई. गैडगिल ने 'एनर्जी एक्सेस फॉर ऑल' विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा उपलब्धता कार्यशाला में हिस्सा लेने के लिए 7-9 अक्टूबर, 2012 तक नई दिल्ली की यात्रा की। उन्होंने नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री डॉ. फारुख अब्दुल्ला और विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर के साथ द्विपक्षीय बैठक की। पर्यावरण मंत्री श्रीमती बार्ड वेगर सोल्हजेल ने जैवविविधता पर अभिसमय के पक्षकारों के सम्मेलन की 11वीं बैठक (कोप 11) में हिस्सा लेने 17-19 अक्टूबर 2012 को हैदराबाद की यात्रा की। उन्होंने पर्यावरण और वन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती जयंती नटराजन से भी द्विपक्षीय बैठक की।

भारत नार्वे हाइड्रोकार्बन संबंधी संयुक्त कार्य समूह की छठी बैठक पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय में सचिव श्री जी.सी. चतुर्वेदी और नार्वे के पेट्रोलियम और ऊर्जा मंत्रालय में महासचिव सुश्री एलिजाबेथ बर्ज की सहअध्यक्षता में 19 सितम्बर, 2012 को ओस्लो में आयोजित की गई थी। हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय और नार्वे के पेट्रोलियम निदेशालय के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

भारत-नार्वे विज्ञान और प्रौद्योगिकी संबंधी संयुक्त कार्यसमूह की चौथी बैठक 18-19 अक्टूबर 2012 को बरजेन में आयोजित की गई थी, जिसमें 2012-15 की अवधि के लिए 'सहयोग कार्यक्रम' को अंतिम रूप दिया गया।

अंतरराष्ट्रीय विकास उप मंत्री श्री अर्विन गैडगिल दिल्ली सतत-विकास शिखर सम्मेलन 2013 में हिस्सा लेने आ सकते हैं। रक्षा मंत्री सुश्री

एन-ग्रेट स्ट्रॉम-एरिचसेन का 19-23 मार्च, 2013 तक भारत यात्रा का कार्यक्रम है।

पोलैंड

पोलैंड के विदेश मंत्रालय में उप विदेश मंत्री श्री जरजी पोमियानबस्की ने 11-12 जून 2012 को दिल्ली की यात्रा की और विदेश मंत्रालय में सचिव (पश्चिम) श्री मधुसूदन गणपति से वार्ता की।

सूचना और प्रसारण मंत्री श्रीमती अंबिका सोनी ने 2-4 जुलाई, 2012 तक पोलैंड की यात्रा की और पोलैंड के संस्कृति और राष्ट्रीय धरोहर मंत्री श्री बोगदान ज़्ड्रोजेवस्की से मुलाकात की। श्रव्य-दृश्य सह निर्माण पर एक करार पर हस्ताक्षर भी किए गए।

पोलैंड के संस्कृति और राष्ट्रीय धरोहर मंत्री श्री बोगदान ज़्ड्रोजेवस्की ने गोवा अंतराष्ट्रीय फिल्म समारोह में हिस्सा लेने के लिए नवम्बर, 2012 में भारत की यात्रा की।

भारत और पोलैंड के बीच विदेश कार्यालय परामर्श 6 नवम्बर 2012 को वारसा में आयोजित किए गए।

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर का 27-30 जनवरी, 2013 तक पोलैंड जाने का कार्यक्रम है।

रोमानिया

रोमानिया ने 14 जून 2012 को क्लुज नेपोका में अंतराष्ट्रीय रेशम उत्पादन आयोग पर सम्मेलन की मेजबानी की और इस अवसर पर भारतीय उम्मीदवार सुश्री इशिता रॉय आयोग के अगले महासचिव के रूप में निर्वाचित की गईं। यह भी निर्णय लिया गया कि अंतराष्ट्रीय रेशम-उत्पादन आयोग का मुख्यालय बंगलौर में होगा।

आईसीसीआर और रोमानिया के संस्कृति मंत्रालय द्वारा सह-प्रायोजित एक मणिपुरी नृत्य मंडली द्वारा 10 अक्टूबर 2012 को टिमिसोरा में नृत्यकी पेश की गई।

रोमानिया पर्यटन मेले के 28वें संस्करण का आयोजन रोमेक्सपो बुखारेस्ट में 15-18 नवम्बर, 2012 तक किया गया, जिसमें भारत पर्यटन कार्यालय फ्रैंकफर्ट ने हिस्सा लिया।

संयुक्त सचिव/महानिदेशक स्तर पर विदेश कार्यालय परामर्श 14 दिसम्बर 2012 को बुखारेस्ट में आयोजित किए गए।

सर्बिया

भारत-सर्बिया विदेश कार्यालय परामर्श 5-7 जुलाई 2012 तक बेलग्रेड में आयोजित किए गए।

बंगलौर स्थित रियल एस्टेट कंपनी एम्बेसी ग्रुप ने इंडजीजा, वोजवोडिना नगरों में एक आईटी पार्क के निर्माण के लिए 19 अप्रैल

2012 को नींव डालने का समारोह आयोजित किया, जिसमें सर्बिया के प्रधानमंत्री उपस्थित थे।

एक सात-सदस्यों वाला आईसीसीआर द्वारा प्रायोजित कथक नृत्य समूह 1-6 सितम्बर, 2012 तक सर्बिया गया था और उसकी राजधानी बेलग्रेड, नोवी सॉड और क्रैगुजेवक में नृत्यकी प्रस्तुत की। सर्बिया के राष्ट्रपति तोमिस्लेव निकोलिक अपने गृह नगर क्रैगुजेवक में आयोजित समारोह में भाग लिया। भारतीय राजदूतावास ने सर्बिया के कई नगरों में आईसीसीआर से प्राप्त 'कल्पना-कालजयी भारतीय समकालिक चित्रकारी की प्रमुख कृतियां' प्रदर्शनी का पूरे देश में आयोजन किया।

28 भारतीय कंपनियों वाले एक एसोचैम प्रतिनिधिमंडल ने 12-18 मई, 2012 तक नोवी सॉड में आयोजित 79वें अंतर्राष्ट्रीय कृषि मेले में हिस्सा लिया।

स्लोवैक गणराज्य

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर ने 29-31 अक्टूबर, 2012 तक स्लोवैक की यात्रा की और उप प्रधानमंत्री तथा विदेश एवं यूरोपीय मामलों के मंत्री श्री मिरोस्लैव लॉजकैक, विदेश एवं यूरोपीय मामलों के स्टेट सेक्रेटरी श्री पीटर बरियन, अर्थव्यवस्था के स्टेट सेक्रेटरी श्री पावोल पावलिस एवं रक्षा के स्टेट सेक्रेटरी मिलोस कोटेरेक से मुलाकात की। द्विपक्षीय सहयोग की समीक्षा की गई और आर्थिक आदान-प्रदान को सघन बनाने एवं रक्षा में परम्परागत सहयोग को और विविध बनाने पर सहमति हुई।

स्लोवैक गणराज्य के पर्यावरण मंत्रालय में स्टेट सेक्रेटरी श्री जान लावस्की की अध्यक्षता में एक प्रतिनिधिमंडल ने 16-19 अक्टूबर, 2012 तक हैदराबाद में आयोजित जैव विविधता पर अभिसमय के पक्षकारों के सम्मेलन की 11वीं बैठक में हिस्सा लिया।

स्लोवेनिया

भारत और स्लोवेनिया ने 9 नवम्बर 2012 को ल्युबियाना में 2004 वायु सेना करार में संशोधन के लिए प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए। नागरिक उड़्डयन सचिव और स्लोवेनिया के अवसंरचना और स्पेटियल प्लानिंग मंत्री द्वारा इस प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए गए।

भारत की ओर से की गई यात्राओं में प्रधान मंत्री के विशेषदूत, राजदूत एस.के. लाम्बा द्वारा जुलाई 2012 में ब्लीड सामरिक मंच के लिए, लोक उद्यम विभाग के सचिव द्वारा आईसीपीई वार्षिक बैठक (जुलाई, 2012) और नागरिक उड़्डयन सचिव द्वारा (नवम्बर, 2012) के दौर शामिल थे।

12 भारतीय कम्पनियों ने सेलजे अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले (सितम्बर, 2012) में हिस्सा लिया। उनकी हिस्सेदारी का समन्वयन राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम और भारतीय राजदूतावास द्वारा किया गया था।

उप प्रधान मंत्री और आर्थिक विकास एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री राडोवान जेरजाव का 27-31 जनवरी, 2013 तक भारत आने का कार्यक्रम है।

स्वीडन

स्वीडन की ओर से भारत की मंत्रिस्तरीय यात्राओं में स्वीडन की पर्यावरण मंत्री सुश्री लेना एक, जो कोप-XI हैदराबाद शिखर सम्मेलन (जैव विविधता पर अभिसमय के पक्षकारों के 11वें सम्मेलन) के लिए 16-19 अक्टूबर, 2012 तक भारत आई, स्वीडन की उद्यम मंत्री सुश्री उनी लूफ 29-30 अक्टूबर, 2012 को दिल्ली में भारत-स्वीडन संयुक्त आर्थिक, औद्योगिक और वैज्ञानिक सहयोग के 16वें सत्र के लिए भारत आयीं, स्वीडन के सामाजिक सुरक्षा मंत्री श्री उल्फ क्रिस्टरसन द्विपक्षीय सामाजिक सुरक्षा करार पर हस्ताक्षर करने 26-28 नवम्बर, 2012 तक भारत आए, की यात्राएं और स्वीडन की अवसंरचना मंत्री सुश्री कैथरीन एल्मसेटर-स्वार्ड द्वारा 2-5 दिसम्बर, 2012 तक की गई यात्रा शामिल थी।

स्वीडन की ओर से भारत की गई अन्य यात्राओं में रक्षा संबंधी रिकसडोग (संसद) समिति द्वारा 4-8 सितम्बर, 2012 तक की गई भारत यात्रा, स्वीडन के स्थानीय प्राधिकारी और क्षेत्र संघ (सोलार) की उसके अध्यक्ष एण्डर्स क्नेप के नेतृत्व में 8-15 सितम्बर, 2012 तक की गई यात्रा, अध्यक्ष लोट्टा हाकानसन हारजू के नेतृत्व में सोलार की 14 सदस्यों वाली अंतर्राष्ट्रीय समिति की 28 अक्टूबर से 3 नवम्बर, 2012 तक की गई भारत यात्रा और स्वीडन के विदेश मंत्री के स्टॉफ चीफ/सलाहकार श्री ओलोफ एहरेन्क्रोना द्वारा 14-15 सितम्बर, 2012 को नई दिल्ली में आयोजित जर्मन मारशल फण्ड द्वारा आयोजित तृपक्षीय मंच में हिस्सा लेने की गई भारत यात्रा शामिल थीं। भारत की ओर से स्वीडन की की गई यात्राओं में 18-20 अप्रैल, 2012 को रक्षा संबंधी संयुक्त कार्यसमूह की दूसरी बैठक के लिए रक्षा मंत्रालय के प्रतिनिधिमण्डल की यात्रा शामिल थी। एक 20 सदस्यों वाले राष्ट्रीय रक्षा कॉलेज प्रतिनिधिमण्डल ने 20-25 मई, 2012 तक स्वीडन की यात्रा की। भारतीय संसद से विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के 6 युवा सांसदों के समूह ने 10-16 जून, 2012 तक स्वीडन की यात्रा की। गुजरात सरकार के एक व्यावसायिक प्रतिनिधिमण्डल ने स्टॉकहोम की यात्रा की और निवेश संवर्द्धन कार्यक्रम गुजरात शिखर सम्मेलन, 2013 में हिस्सा लेने के लिए स्वीडन की कम्पनियों को आकृष्ट करने के लिए 1 अक्टूबर 2012 को रोड-शो पेश किया।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद और अन्य भागीदारों के सहयोग से भारतीय राजदूतावास ने 29 अक्टूबर 2012 को स्टॉकहोम में 'स्वान लेक रिविजिटेड' कार्यक्रम पेश किया।

स्विट्जरलैण्ड

विश्व आर्थिक मंच, 2012 में भारत का प्रतिनिधित्व सरकारी भारतीय प्रतिनिधिमण्डल द्वारा किया गया था, जिसमें वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री आनन्द शर्मा, योजना, विज्ञान और पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री डॉ. अश्विनी कुमार, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री सचिन पायलट, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री ज्योतिरादित्य एम.सिंधिया, संसद सदस्य श्री एन.के. सिंह और श्रीमती शोभना भरतीया के साथ-साथ भारतीय उद्योग का एक मजबूत प्रतिनिधिमण्डल और भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) का एक प्रतिनिधिमण्डल शामिल था।

पहली भारत-स्विट्जरलैण्ड वित्तीय वार्ता 6 जुलाई, 2012 को बर्न में आयोजित की गई थी। दोनों पक्षों की ओर से सामान्य आर्थिक स्थिति, विपणन, निवेश वातावरण और कर संबंधी विषयों पर विचारों का आदान-प्रदान किया गया। अप्रैल 2012 में दोहरे कराधान से बचने संबंधी भारत और स्विट्जरलैण्ड के बीच करार के प्रोटोकॉल के नए पैराग्राफ 10 के उप-पैराग्राफ (ख) की व्याख्या के संबंध में एक परस्पर करार पर हस्ताक्षर किए गए, ताकि सूचना के आदान-प्रदान संबंधी खण्ड को और सरल बनाया जा सके।

भारत 13 से 22 अप्रैल 2012 तक आयोजित दस दिनों के एम्यूबीए (बैसेल में आयोजित उपभोक्ता सामग्री मेले) में 'अतिथि देश' था।

गृह मामलों (स्वास्थ्य, सामाजिक मामले, शिक्षा अनुसंधान और संस्कृति) के परिसंघीय पार्षद एलेन बरसेट ने 1-3 अक्टूबर, 2012 तक भारत की यात्रा की। परिसंघीय सलाहकार बरसेट ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, संस्कृति और विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रियों से मुलाकात की और 3 अक्टूबर, 2012 को विज्ञान और प्रौद्योगिकी संबंधी द्वितीय संयुक्त समिति बैठक की अध्यक्षता की। एक संयुक्त घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए गए, जिसमें कहा गया था कि भारत और स्विट्जरलैण्ड 2013 से 2016 के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपना सहयोग बढ़ाने और उसे व्यापक करना चाहेंगे।

पर्यावरण, परिवहन, संचार और ऊर्जा की परिसंघीय पार्षद सुश्री डोरिस लीथार्ड हैदराबाद में जैवविविधता पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में स्विट्जरलैण्ड का प्रतिनिधित्व करने के लिए 18-20 अक्टूबर, 2012 तक अपने भारत दौरे के दौरान पर्यावरण और वन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती जयंती नटराजन, नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री डॉ. फारुख अब्दुल्ला, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री डॉ. सी.पी. जोशी और शहरी विकास मंत्री श्री कमल नाथ से भी मुलाकात की।

तेरहवीं भारत-स्विट्जरलैण्ड संयुक्त आर्थिक आयोग बैठक 5 अक्टूबर 2012 को नई दिल्ली में आयोजित की गई।

विदेश कार्यालय परामर्श 17 दिसम्बर 2012 को बर्न में आयोजित किए गए।

टर्की

पूर्व युवा मामले और खेल राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री अजय माकन ने 5-7 जून, 2012 तक टर्की की यात्रा की और युवा मामलों एवं खेल के क्षेत्र में सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

मध्य एशिया, काकसेस और ऊर्जा पर विदेश कार्यालय परामर्श जुलाई 2012 में अंकारा में आयोजित किए गए।

भारत और टर्की के बीच सजायाता व्यक्तियों के हस्तांतरण संबंधी करार पर 30 अक्टूबर, 2012 को भारत के राजदूत और टर्की के न्याय मंत्री श्री सादुल्ला एरगिन द्वारा अंकारा में हस्ताक्षर किए गए थे।

राष्ट्रीय रक्षा कालेज (एनडीसी) से एक प्रतिनिधिमंडल सरकारी दौरे पर 13-19 मई 2012 को टर्की गया था। टर्की की नौसेना के कमांडर एडमिरल एमिन मुरात बिलजेल ने 4-7 नवम्बर, 2012 तक भारत की यात्रा की।

अंकारा और इस्तांबुल में 16-18 अक्टूबर, 2012 तक 'भारत पर्यटन रोड शो' पेश किए गए।

वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री आनंद शर्मा ने जनवरी, 2012 में दावोस शिखर सम्मेलन के दौरान अर्थव्यवस्था मंत्री जफर कागलायन से मुलाकात की। टर्की के विज्ञान, उद्योग और प्रौद्योगिकी मंत्री श्री निहात एरगुन ने 27-29 जनवरी, 2013 तक भागीदारी शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने भारत की यात्रा की।

यूरोपीय संघ

यूरोपीय संघ भारत का एक सबसे बड़ा व्यापार भागीदार और निवेश का महत्वपूर्ण स्रोत रहा है। विगत कुछ वर्षों में खासतौर से 2009 में लिस्बन संधि के बाद संबंधों में विविधता आई और बहुत सघन आर्थिक संबंधों के साथ-साथ राजनैतिक और सुरक्षा सहयोग पर जोर दिया गया। द्विपक्षीय संबंधों को बहुआयामी बनाया गया और साथ ही व्यापार, औद्योगिक सहयोग, वित्तीय और मुद्रा संबंधी मामलों, पर्यावरण, ऊर्जा, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी संवर्धन, लोगों के बीच संपर्क का संवर्धन और संस्कृति आदान-प्रदान सहित सभी क्षेत्रों में वार्ताएं और सहयोग को बढ़ावा दिया गया।

भारत-यूरोपीय संघ विस्तृत-आधार वाले व्यापार और निवेश करार (बीटीआईए) को संपन्न करने के लिए वार्ता वर्ष के दौरान जारी रखी गई। वाणिज्य, उद्योग और वस्त्र मंत्री श्री आनंद शर्मा ने इस प्रक्रिया को गति प्रदान करने के लिए ब्रसेल्स में 26 जून 2012 को यू.सं. व्यापार आयुक्त श्री कैरेल डे गुट्ट से मुलाकात की। बीटीआईए के लिए वार्ता के शेष मुद्दों पर चर्चा के लिए वाणिज्य सचिव ने ब्रूसेल्स में 25 जून 2012 को महानिदेशक (व्यापार) से मुलाकात की।

आईसीटी पर एक भारत यू.सं. संयुक्त समूह की नई दिल्ली में 28-29 मार्च, 2012 तक बैठक हुई और उसमें हार्डवेयर विनिर्माण, साइबर सुरक्षा और आईसीटी में अनुसंधान एवं विकास पर द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने के उपायों पर चर्चा की गई। कार्य समूह ने दो उप कार्य समूहों के गठन का निर्णय लिया एक भारत – यू.सं. द्विपक्षीय इलैक्ट्रॉनिक हार्डवेयर विनिर्माण और दूसरा साइबर सुरक्षा संबंधी है।

फरवरी 2012 में 12वें भारत यू.सं. शिखर सम्मेलन में जारी की गई अनुसंधान और नवाचार सहयोग पर संयुक्त घोषणा के अनुसरण में 31 मई से 1 जून, 2012 के दौरान ब्रूसेल्स में एक भारत यू.सं. पणधारकों का सम्मेलन आयोजित किया गया था। सम्मेलन के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री श्री विलास राव देशमुख और यू.सं. की अनुसंधान, नवाचार और विज्ञान आयुक्त सुश्री मायरे जिओगेगन-कुनीन के बीच एक भारत-यू.सं. मंत्रिस्तरीय बैठक आयोजित की गई थी। एक ब्रूसेल्स विज्ञप्ति जारी की गई जिसमें भावी सहयोग की रूपरेखा रेखांकित की गई थी, जिसमें एसएमई के मध्य सामरिक एजेण्डे को पारिभाषित करने और अभिनव प्रयासों को समर्थन प्रदान करने हेतु सहयोग का मार्गदर्शन करने और एवं उद्योग पणधारी समूह की स्थापना करने के लिए एक वरिष्ठ अधिकारियों का समूह स्थापित करने का निर्णय शामिल था।

परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग के लिए भारत-यू.सं. अनुसंधान और विकास करार पर पहले दौर की वार्ता 31 मई से 1 जून 2012 का ब्रूसेल्स में आयोजित की गई। वार्ता में काफी प्रगति हुई और दोनों पक्ष निकट भविष्य में करार को सम्पन्न करने के प्रति आशावान हैं।

उप्रवास और आवाजाही पर एक उच्चस्तरीय वार्ता 2 जुलाई 2012 को नई दिल्ली में आयोजित की गई थी, जिसमें उन पहलों की पहचान की गई जो इस विषय पर भारत यू.सं. सहयोग के भावी ढांचे के लिए महत्वपूर्ण हो सकती हैं।

द्वितीय भारत-यू.सं. विदेश नीति परामर्श 20 जुलाई 2012 को ब्रूसेल्स में आयोजित किए गए। भारतीय प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई विदेश मंत्रालय में सचिव (पश्चिम) श्री एम. गणपति द्वारा और यू.सं. प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई यूरोपीय बाह्य कार्रवाई सेवा (ईईएएस) के मुख्य संचालन अधिकारी श्री डेविड ओ' सुल्लिवान द्वारा की गई थी।

छठी भारत यू.सं. सुरक्षा वार्ता 25 अक्टूबर 2012 को ब्रूसेल्स में आयोजित की गई।

भारत के साथ एक संयुक्त यूरोजस्ट/यूरोपोल व्यवसायी कार्यशाला 11-12 दिसम्बर 2012 को हेग में आयोजित की गई थी। यू.सं. की ओर से भाग लेने वालों में यूरोपोल, यूरोजस्ट और यूरोपीय आयोग के अधिकारी शामिल थे, जबकि भारतीय पक्ष से राष्ट्रीय अन्वेषण एजेंसी केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो और दि हेग एवं ब्रूसेल्स स्थित

राजदूतावासों के अधिकारी और प्रतिनिधि शामिल थे।

भारत – यू.सं. साइबर सुरक्षा परामर्श 26 अक्टूबर 2012 को नई दिल्ली में आयोजित किए गए।

भारतीय और यूरोपीय संसद के बीच आदान-प्रदान वर्ष के दौरान जारी रहा। यूरोपीय संसद के सदस्य (एमईपी) और भारत के साथ संबंधों के प्रतिनिधिमंडल के अध्यक्ष श्री ग्राहम वाटसन ने एमईपी के एक प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई करते हुए 30 अप्रैल से 4 मई, 2012 तक भारत की यात्रा की। राज्य सभा के अधिकारियों का एक प्रतिनिधिमंडल 08-12 अक्टूबर, 2012 को यूरोपीय संसद गया था।

भारत विदेश कार्य परिषद और यूरोपीय संघ सुरक्षा अध्ययन संस्थान ने 23-24 अक्टूबर 2012 को ब्रूसेल्स में प्रभावी बहु-पक्षीयता पर चौथे भारत-यू.सं. मंच का आयोजन किया।

यूरोपीय संघ भारत का एक सबसे बड़ा व्यापार भागीदार रहा है। 2009-11 के दौरान व्यापार बढ़ा किंतु उसमें 2012 के पूर्वार्द्ध में गिरावट देखी गई। जनवरी-जून 2012 के दौरान यू.सं.-भारत द्विपक्षीय व्यापार 37.7 बिलियन यूरो था।

भारत यू.सं. बृहद आर्थिक वार्ता और वित्तीय सेवा वार्ता 24-25 जनवरी, 2013 को ब्रूसेल्स में आयोजित की गई।

पश्चिमी यूरोप

बेल्जियम

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर ने 15-19 अप्रैल 2012 को ब्रूसेल्स की यात्रा की। उन्होंने बेल्जियम के उप प्रधानमंत्री और विदेश मामलों, विदेशी व्यापार और यूरोपीय मामले के मंत्री श्री डिडियर रेण्डर्स से मुलाकात की। राज्य मंत्री एंटवर्प भी गईं जहां उन्होंने एंटवर्प की गवर्नर सुश्री कैथी बर्क्स से मुलाकात की।

जहाजरानी मंत्री श्री जी. के. वासन समुद्री क्षेत्र में भारत-बेल्जियम सहयोग पर एक सम्मेलन में हिस्सा लेने 3-5 अप्रैल 2012 को बेल्जियम गए और जहाजरानी क्षेत्र में भारत और बेल्जियम के बीच चल रहे सहयोग को बढ़ाने के संबंध में चर्चा की।

बेल्जियम के उप प्रधानमंत्री और विदेश मामलों, विदेशी व्यापार और यूरोपीय मामलों के मंत्री श्री डिडियर रेण्डर्स ने 2-12 अगस्त, 2012 तक भारत की यात्रा की। उन्होंने पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा, वाणिज्य, उद्योग और वस्त्र मंत्री श्री आनंद शर्मा, पूर्व रेल मंत्री श्री मुकुल राय और आईसीसीआर के अध्यक्ष श्री कर्ण सिंह से मुलाकात की। रेलवे क्षेत्र में प्रभावी विकास और आधुनिकीकरण के लिए द्विपक्षीय सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन पर भारत सरकार के रेल मंत्रालय और बेल्जियम अधिराज्य के परिवहन मंत्रालय के बीच 2 अगस्त, 2012 को हस्ताक्षर किए गए थे।

असैनिक परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए जून 2012 में भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र और बेल्जियम परमाणु अनुसंधान केंद्र (एससीके-एसईएनन) के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इसमें परमाणु कचरा के भूवैज्ञानिक निपटान की प्रबंधन तकनीक, उन्नत अनुसंधान रिएक्टर प्रणाली और आईआईए की इन्फो परियोजना के संदर्भ में सहयोग की व्यवस्था की गई है।

एक वैश्विक भारत व्यवसाय बैठक 24-25 जून 2012 को होरासिस द्वारा एंटरप्राइज में आयोजित की गई जिसे वाणिज्य, उद्योग और वस्त्र मंत्री श्री आनंद शर्मा द्वारा संबोधित किया गया।

रवीन्द्र नाथ टैगोर की 150वीं वर्षगांठ मनाई गई, जिसमें टैगोर की पेंटिंग के डिजिटल प्रिंटों की प्रदर्शनी आयोजित की गई। टैगोर के नृत्य नाटकों पर आधारित दो फिल्मों का विश्व प्रीमियर भी ब्रूसेल्स में आयोजित किया गया।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) और यूरोपेलिया अंतर्राष्ट्रीय ने अप्रैल 2012 में मुंबई में एक ढांचा करार पर हस्ताक्षर किए जिसके अनुसार 2013-14 में बेल्जियम और पड़ोसी देशों में यूरोपेलिया उत्सव में भारत एक भागीदार देश होगा।

बेल्जियम यूरोपीय संघ के भीतर भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बना रहा है।

विदेश मंत्री श्री सलमान खुरशीद ने 30-31 जनवरी 2013 को बेल्जियम की यात्रा की।

फ्रांस

द्विपक्षीय आदान-प्रदान का एक ज्ञापन राष्ट्रपति फ्रैंकोइस होलांदे के नेतृत्व वाले नए फ्रेंच प्रशासन में सर्वोच्च स्तर पर संपोषित किया गया। राष्ट्रपति होलांदे और प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के बीच पहली बैठक 19 जून 2012 को लास कैबोस में जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान हुई।

भारत-फ्रांस सामरिक वार्ता का 24वां दौर 4 सितम्बर 2012 को नई दिल्ली में संपन्न हुआ। आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में सहयोग की बैठक 19 नवम्बर 2012 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। रक्षा सचिवों के स्तर पर रक्षा सहयोग के लिए उच्च स्तरीय समिति (एचसीडीसी) की 14वीं बैठक 26-27 अप्रैल 2012 को नई दिल्ली में आयोजित हुई। तीन उप-समूहों अर्थात् सेना उप समिति (एमएससी), रक्षा उद्योग, खरीद और अनुसंधान तथा प्रौद्योगिकी (आरएंडटी) उप समिति ओर सेवा थल। नौ/वायु सेना स्टाफ वार्ता ने अपनी बैठकें 12 से 14 दिसम्बर, 2012 को आयोजित की।

भारत-फ्रेंच नौसैनिक अभ्यास, वरुणा 19-22 जुलाई, 2012 तक तूलोन पतन के तट पर भूमध्यसागर में आयोजित किया गया।

जैतापुर परियोजना से जुड़े सभी बकाया मुद्दों पर वर्ष 2012 के दौरान वार्ता में प्रगति हुई।

इसरो और सीएनईएस (सेंटर नेशनल डी एटूडेस स्पेटियल्स) संयुक्त रूप से अरगोस और अलटिका (सरल) के लिए उपग्रह विकसित कर रहे हैं, जिसमें समुद्र की सतही ऊंचाई काबैंड अल्टीमीटर अलटिका के अध्ययन के लिए एक रडार अल्टीमीटर लगा होगा और जिसमें एक डेटा संग्रह प्लेटफार्म होगा, जो समुद्री तरंगों और मौसम डेटा केंद्रों (अरगोस) से डेटा एकत्र करेगा। सीएनईएस पेलोड की व्यवस्था करेगा और इसरो उपग्रह प्लेटफार्म की व्यवस्था करने के लिए पीएलएसवी का प्रयोग करके प्रक्षेपण और संचालन करने के लिए जिम्मेदार होगा। एकीकृत सरल उपग्रह को 2013 की पहली तिमाही के दौरान प्रक्षेपित किया जाना है।

एण्टरिक्स कारपोरेशन लिमिटेड (एण्टरिक्स) और ईएडीएस, फ्रांस की एक कंपनी ऐस्ट्रियम एसएस के बीच वाणिज्यिक लांच सेवा करार के अंतर्गत ऐस्ट्रियम एसएस द्वारा निर्मित एक उन्नत सुदृढ़ संवेदी उपग्रह-एसपीओटी-6 9 सितम्बर 2012 को इसरो के ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी-सी 21) द्वारा सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया गया।

28 सितम्बर 2012 को भारत के जी सैट-10 को कोरू फ्रेंच गुआना से एरिएन-पांच प्रक्षेपक द्वारा सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया गया।

भारत-फ्रेंच उन्नत अनुसंधान संवर्द्धन केंद्र (सीईएफआईपीआरएस) की 25वीं वर्षगांठ का आयोजन 6 मार्च 2012 को नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में औपचारिक रूप से शुरू किया गया।

सेंटर नेशनल डि ला रिसर्च साइंटिफिक (सीएनआरएस) और विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के बीच आईआईएससी में अनुप्रयुक्त गणित केंद्र की स्थापना के लिए 12 जनवरी 2012 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। एक और समझौता ज्ञापन पर भी चेन्नै गणित संस्थान, गणित विज्ञान संस्थान और आईआईएससी इन्फार्मेटिक्स की स्थापना के लिए जनवरी 2012 में हस्ताक्षर किए गए।

2011 में द्विपक्षीय व्यापार में 6 प्रतिशत बढ़ोतरी हुई और वह 7.46 बिलियन यूरो पहुंच गया। 2012 के पहले 10 महीनों में 2011 की उसी अवधि की तुलना में द्विपक्षीय व्यापार में 3.71 प्रतिशत की कमी हुई थी।

पूर्व शहरी मंत्री श्री कमलनाथ की 3-6 अक्टूबर 2012 तक फ्रांस की यात्रा के दौरान भारत और फ्रांस ने सतत शहरी विकास के क्षेत्र में सहयोग के लिए एक करार पर हस्ताक्षर किए।

भारत-फ्रेंच सीईओ मंच की पांचवी बैठक 22-23 नवम्बर 2012 को नई दिल्ली में आयोजित की गई थी।

पेरिस के मध्य में स्थित गौरवशाली पेटिट पलाइम्यूजियम में 26 जनवरी से 11 मार्च 2012 तक 'दि लास्ट हारवेस्ट-पेण्टिंग ऑफ टैगोर' प्रदर्शनी आयोजित की गई थी। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन संस्कृति, आवास और शहरी गरीबी उन्मूलन मंत्री कुमारी शैलजा और पेरिस के मेयर श्री बरट्रैण्ड डेलानो द्वारा संयुक्त रूप से गणतंत्र दिवस के अवसर पर किया गया था। भारत के संस्कृति मंत्रालय और लाउरे म्यूजियम के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे, जिसका उद्देश्य सक्षमता और विशेषज्ञता खासतौर से संग्रहालय विज्ञान, अस्थायी प्रदर्शनियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आदान-प्रदान के क्षेत्र में सक्रिय भागीदारी स्थापित करना था।

5 मई 2012 को महात्मा गांधी के नाम पर एक सड़क का उद्घाटन पेरिस के उप नगरीय क्षेत्र ट्रेम्बले - एन फ्रांस में किया गया।

पहली बार चार भारतीय फिल्मों का चयन 2012 कांस फिल्म महोत्सव की विभिन्न श्रेणियों में प्रदर्शन के लिए किया गया, जिनके नाम थे 'मिस लवली' (अनसरटेन रिगार्ड में) कल्पना (सिने क्लासिक में), पेड्डलर्स (ला सेमेन डे ला क्रिटिक में) और गैंग्स ऑफ वासेयपुर (ला क्विजन डेस रियलिसेटर में)।

जर्मनी

भारत और जर्मनी के बीच द्विपक्षीय संबंध वर्ष के दौरान लगातार बढ़ते रहे। इन संबंधों को दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगांठ के आयोजन के साथ गति मिली।

जून 2012 में लास कैबोस में जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह चांसलर एंजेला मर्केल के बीच बैठक हुई।

जर्मनी के विदेश मंत्री गाइडो वेस्टरवेल्ले ने 22-23 जून 2012 को भारत की यात्रा की और बंगलुरु में पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा से द्विपक्षीय वार्ता की। विदेश मंत्री वेस्टरवेल्ले ने भारत-जर्मन शहरी मेले का भी उद्घाटन किया और बंगलुरु में जर्मन कौंसलावास के नए भवन का भी उद्घाटन किया।

वाणिज्य, उद्योग और वस्त्र मंत्री श्री आनंद शर्मा ने एक उच्च स्तरीय सीआईआई व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई करके 8-12 मई 2012 तक जर्मनी की यात्रा की और जर्मनी में 'भारत के दिन' का उद्घाटन किया और अर्थव्यवस्था एवं प्रौद्योगिकी परिसंघीय मंत्री डॉ. फिलिप रोएजलर, परिवहन, भवन और शहरी विकास परिसंघीय मंत्री डॉ. पीटर रामसोर, बर्लिन के मेयर श्री क्लास वोवरीट और हैम्बर्ग के प्रथम मेयर श्री ओलोफ शोल्डज से मुलाकात की। उन्होंने बर्लिन में कर्टेन रेजर में हिस्सा लिया और 823वें हैम्बर्ग पोर्ट उत्सव जिसमें भारत 'सहभागी देश' था, में हिस्सा लेने के लिए हैम्बर्ग की यात्रा की। भारत और जर्मनी के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगांठ मनाने के

लिए दोनों सरकारों ने 'भारत में जर्मनी वर्ष' और जर्मनी में "भारत के दिन" कार्यक्रमों का आयोजन किया।

जर्मनी में भारत के दिन के चार विषय हैं: 'संस्कृतियों का जुड़ाव', 'क्षमताओं का जुड़ाव', 'विचारों का जुड़ाव' और 'मस्तिष्क का जुड़ाव' और यह कार्यक्रम अप्रैल 2013 तक चलेंगे। चार प्रमुख केंद्रीय विचार रहे:-

- क) आर्थिक और वाणिज्यिक
- ख) विज्ञान और प्रौद्योगिकी
- ग) विश्वविद्यालय और व्यावसायिक शिक्षा
- घ) सांस्कृतिक

वर्ष के दौरान इनमें से प्रत्येक क्षेत्र में कई कार्यक्रम जर्मनी के सभी राज्यों और बड़े शहरों में आयोजित किए गए। इनमें प्रमुख कलाकारों जैसे पंडित हरि प्रसाद चौरसिया, डॉ. एल सुब्रमण्यम, राजा एवं राधा रेड्डी और शर्मिष्ठा मुखर्जी शामिल रही। 'भारत के दिन' के अंतर्गत भोजन प्रदर्शनी, आधुनिक कला और फोटा चित्रकारी प्रदर्शनी, कई तरह के एस और टी कार्यक्रम और आर्थिक एवं वाणिज्यिक संवर्द्धन कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। टैगोर और पंचतंत्र पर दो अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन भी क्रमशः मार्टिन लूथर विश्वविद्यालय, हेल-विरनबर्ग और लीपजिग विश्वविद्यालय में आयोजित किए गए।

बर्लिन स्थित टैगार सेंटर द्वारा तरह-तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहे, जिनमें भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को जर्मनी की जनता के लिए प्रदर्शित किया गया।

जर्मनी के वाइस चांसलर और अर्थव्यवस्था एवं प्रौद्योगिकी मंत्री फिलिप रोएजलर ने गुडगांव में 1-3 नवम्बर, 2012 तक आयोजित जर्मन व्यवसाय की 13वीं एशिया-प्रशांत बैठक में एक उच्च शक्ति प्राप्त व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई की।

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री तारिक अनवर ने बर्लिन में आयोजित कृषि मंत्रियों के शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए 17-19 जनवरी, 2013 तक बर्लिन की यात्रा की।

विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद ने 27-29 जनवरी 2013 तक बर्लिन की यात्रा की। उन्होंने चांसलर मर्केल से मुलाकात की और विदेशी मंत्री गाइडो वेस्टरवेल एवं शिक्षा एवं अनुसंधान मंत्री एनेट्टे शावन के साथ बैठक की। उन्होंने महत्वपूर्ण राजनैतिक नेताओं से मुलाकात की और प्रमुख विचार मंचों-कोएरबर स्टिफ्टिंग और ड्यूचश जेसलंचट फॉर आस्वर्टिज पोलिटिक में अपना वक्तव्य दिया।

भारत और जर्मनी के बीच अन्य महत्वपूर्ण द्विपक्षीय आदान-प्रदानों में शामिल थे:-

जर्मनी के परिवहन, भवन और शहरी विकास परिसंघीय मंत्री डॉ. पीटर रामसाउर ने 9 से 14 अप्रैल 2012 तक एक उच्च स्तरीय व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई करते हुए नई दिल्ली,

कोलकाता और मुंबई की यात्रा की और सतत शहरी विकास के क्षेत्र में एक संयुक्त घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किए।

मिशन निदेशक और भारतीय अनन्य पहचान प्राधिकरण (यूआईडीआई) के महानिदेशक ने 29 मई 2012 को बर्लिन की यात्रा की और विभिन्न फ्रानहोफर संस्थाओं के साथ गोलमेज वार्ता की।

विद्युत मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री के.सी. वेणुगोपाल ने 3-9 जून 2012 तक जर्मनी की यात्रा की और ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग पर चर्चा की।

रक्षा उत्पादन सचिव ने 11-13 सितम्बर 2012 तक बर्लिन वायु शो (आईएलए) में एक प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई की।

जर्मन विदेश कार्यालय में निःशस्त्रीकरण और शस्त्र नियंत्रण के महानिदेशक श्री रोलफ निकेल ने 10 अक्टूबर 2012 को नई दिल्ली की यात्रा की और अब तक के पहली बार के निःशस्त्रीकरण और अप्रसार परामर्श में हिस्सा लिया।

सचिव स्तरीय विदेश कार्यालय परामर्श 29 अक्टूबर 2012 को नई दिल्ली में आयोजित किया गया। जर्मन विदेश कार्यालय में स्टेट सेक्रेटरी सुश्री एमिली हेबर ने विदेश मंत्रालय में सचिव (पश्चिम) श्री मधुसूदन गणपति के साथ द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने भारतीय विदेश सचिव श्री रंजन मथाई और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री शिवशंकर मेनन से भी मुलाकात की।

जर्मन विदेश कार्यालय में उप महानिदेशक (निर्यात नियंत्रण और प्रौद्योगिकी) श्री जोर्ज रानाऊ और अर्थव्यवस्था एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय में उप महानिदेशक श्री कार्ल वेंडलिंग ने 1-2 नवम्बर 2012 को अब तक के पहली बार के द्विपक्षीय निर्यात नियंत्रण परामर्श में नई दिल्ली में एक प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई की।

औद्योगिक और आर्थिक सहयोग पर संयुक्त आयोग के अंतर्गत कई संयुक्त कार्य समूहों की बैठकें 2012 में हुईं। वार्षिक उच्च रक्षा समिति (एचडीसी) बैठक भारतीय और जर्मन पक्षों के उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल के बीच 17-19 जून 2012 तक बर्लिन में आयोजित की गई। एस और टी पर भारत-जर्मनी समिति की नौवीं बैठक ज्यूलिब में 17-18 सितम्बर, 2012 को आयोजित की गई। विकास सहयोग पर द्विपक्षीय वार्ता बैठक 27-28 सितम्बर 2012 को बर्लिन में आयोजित की गई। भारत-जर्मन परामर्शदात्री समूह की 21वीं बैठक 28-30 सितम्बर 2012 को फ्रैंकफर्ट में आयोजित की गई थी।

व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण पर संयुक्त कार्य समूह की बैठक 11-12 अक्टूबर 2012 को उदयपुर में आयोजित की गई, जिसमें दोनों पक्षों ने व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र में सहयोग को और सुदृढ़ करने पर चर्चा की।

जर्मनी भारत का यूरोप में सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बना रहा और भारत में 10 शीर्ष निवेशकों में से भी एक रहा। द्विपक्षीय व्यापार चलता रहा और जनवरी से नवम्बर 2012 के दौरान व्यापार की मात्रा 16.09 बिलियन यूरो पहुंच गई। इसी अवधि के दौरान जर्मनी से भारत में कम आयात 9.55 बिलियन यूरो था, जबकि जर्मनी को निर्यात 6.54 बिलियन यूरो रहा। जर्मनी भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश करने वाला 8वां सबसे बड़ा देश है। जनवरी से अक्टूबर 2012 के दौरान भारत को जर्मन एफडीआई 675 मिलियन अमेरिकी डालर पहुंच गया। अप्रैल 2000 से अक्टूबर 2012 के दौरान भारत में कुल एफडीआई 5068 मिलियन पहुंच गया, जो भारत को कुल अमरीकी डॉलर एफडीआई का लगभग 3 प्रतिशत था।

आयरलैंड

नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री डॉ. फारुख अब्दुल्ला ने 14-15 जून 2012 को आयरलैंड की यात्रा की और अपने आयरिश समकक्ष संचार, ऊर्जा और प्राकृतिक संसाधन मंत्री श्री पैट रैबिट से द्विपक्षीय वार्ता की और आयरलैंड के संभावित निवेशकों एवं भारतीय समुदाय के सदस्यों से भी मुलाकात की। विदेश सचिव श्री रंजन मथाई ने आयरिश विदेश विभाग में वरिष्ठ अधिकारियों के साथ द्विपक्षीय परामर्श के लिए 15 जून 2012 को आयरलैंड की यात्रा की।

नवम्बर 2012 में आयरलैंड के प्रशिक्षण और कौशल राज्य मंत्री सियरन कैन्नन की अगुवाई में एक शिक्षा प्रतिनिधिमंडल भारत आया जिसके साथ आयरलैंड में उच्चतर शिक्षा की 16 संस्थाओं के प्रतिनिधि थे।

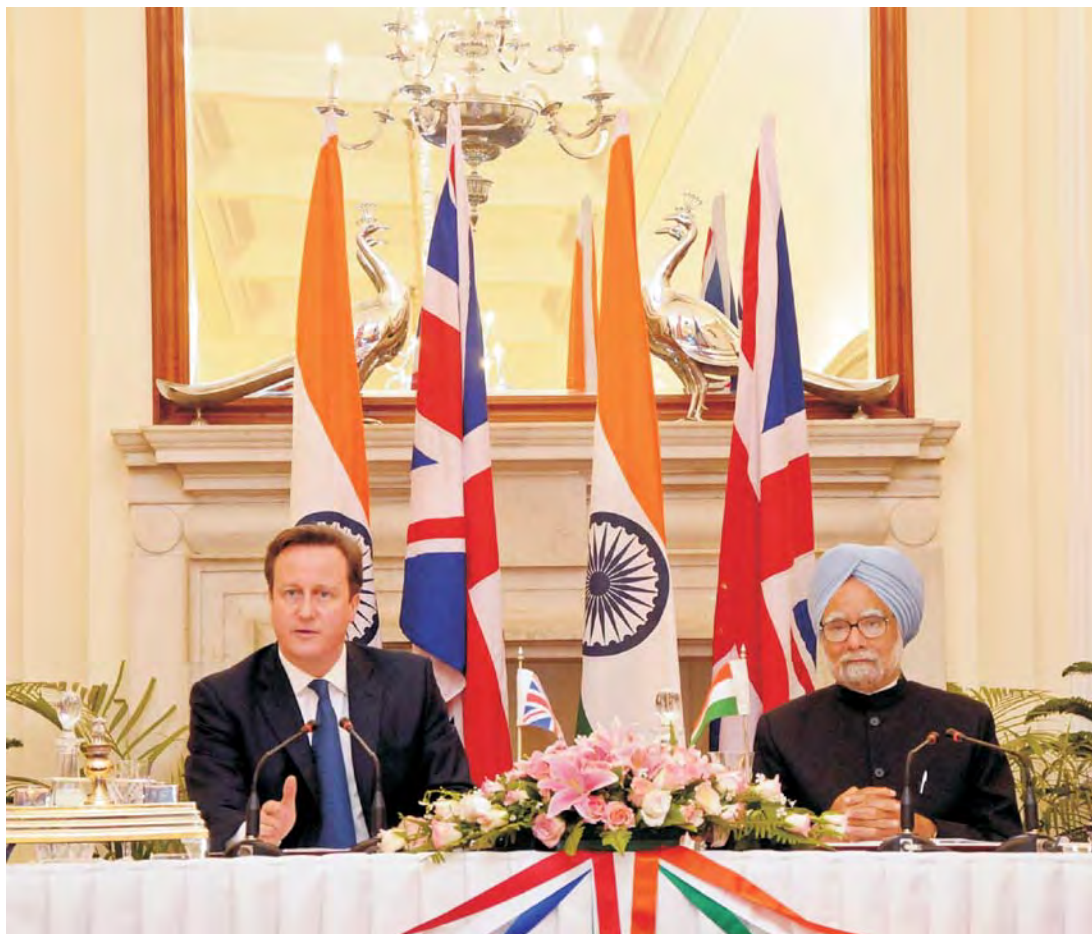
आयरलैंड की अर्थव्यवस्था में मंदी के बावजूद व्यापार पिछले कुछ वर्षों के स्तर पर रहा; माल और सेवा व्यापार मिलकर एक बिलियन यूरो से अधिक था।

भारत और आयरलैंड के बीच सांस्कृतिक संबंधों को नए आयाम दिए गए, जब टैगोर के 'पोस्ट आफिस' नामक नाटक का मंचन डब्लिन स्थित प्रतिष्ठित बेकेट थियेटर में गोवा के एक थियेटर समूह द्वारा किया गया।

इटली

भारत और इटली के बीच द्विपक्षीय संबंध प्रगाढ़ और मैत्रीपूर्ण बने रहे। केंद्रीय गृह मंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे ने 4-5 नवम्बर, 2012 को त्रिपक्षीय इंटरपोल मंत्रिस्तरीय बैठक में हिस्सा लेने रोम के लिए यात्रा की। सीबीआई के निदेशक की अगुवाई में एक सरकारी भारतीय प्रतिनिधिमंडल 6-8 नवम्बर, 2012 तक रोम में आयोजित 81वीं इंटरपोल महासभा में हिस्सा लेने गया।

सजायाता व्यक्तियों के अंतरण पर भारत और इटली के बीच एक करार पर रोम में 10 अगस्त 2012 को हस्ताक्षर किए गए।



ग्रेट ब्रिटेन तथा उत्तरी आयरलैंड के प्रधान मंत्री श्री डेविड कैमरन के साथ प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह नई दिल्ली में, 19 फरवरी, 2013



विदेश मंत्री श्री सलमान खुरशीद 28-31 जनवरी, 2013 तक अपनी जर्मनी यात्रा के दौरान बर्लिन में जर्मन चांसलर डॉ. एंजेला मरकेल के साथ

जनवरी-सितम्बर, 2012 की अवधि के दौरान द्विपक्षीय व्यापार 5.28 बिलियन यूरो, जिसमें 2011 की तदनुसूची अवधि की तुलना में 17.7 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं वर्षगांठ के हिस्से के रूप में 29 मार्च से 27 मई 2012 को संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रायोजित एक पेंटिंग प्रदर्शनी रोम में आयोजित की गई थी।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा प्रायोजित "समसामयिक भारतीय मास्क प्रदर्शनी 2012" नामक एक भारतीय मास्क प्रदर्शनी जिसे 300 भारतीय कलाकारों द्वारा चित्रित किया गया था, 1-18 नवम्बर, 2012 तक पेरुजिया, इटली में आयोजित की गई थी।

रीवर-टु-रीवर भारतीय फिल्मोत्सव का 12वां संस्करण 7 से 16 दिसम्बर, 2012 तक लोरेंस और रोम में आयोजित किया गया, जिसमें फिल्मोत्सव निदेशालय और राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, भारत के सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने सहयोग प्रदान किया। इस उत्सव में भारतीय फिल्म उद्योग का शताब्दी समारोह मनाया गया था।

लक्सम्बर्ग

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर ने 18 अप्रैल 2012 को लक्सम्बर्ग की यात्रा की। उन्होंने लक्सम्बर्ग के ग्रांड ड्यूक से मुलाकात की और उप प्रधान मंत्री एवं विदेश मंत्री श्री जीन एसेलबार्न, व्यापार और अर्थव्यवस्था मंत्री श्री इटीन रनीडर और लक्सम्बर्ग संसद के उप चैंबर के अध्यक्ष श्री लारेण्ट मोजर से मिलीं। भारत ने अक्टूबर 2012 में आयोजित चुनाव में 2013-14 की अवधि के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की अस्थायी सदस्यता के लिए सफल प्रयास हेतु लक्सम्बर्ग की उम्मीदवारी का समर्थन किया।

दि नीदरलैण्ड्स

जहाजरानी मंत्री श्री जे.के. वासन ने पत्तनों, समुद्री परिवहन और संभारतंत्र में सहयोग पर चर्चा के लिए 1-3 अप्रैल 2013 तक नीदरलैण्ड्स की यात्रा की।

कृषि मंत्री श्री शरद पवार ने कृषि और विदेश व्यापार मंत्री डॉ. हेन्क ब्लेकर से मुलाकात की और उद्यान, मांस और सब्जी प्रशीतन गृह श्रृंखला में सहयोग पर चर्चा की। संयुक्त कृषि कार्य समूह ने 2012-15 की अवधि के लिए भारत-डच कृषि सहयोग हेतु एक कार्य योजना को अंतिम रूप प्रदान किया और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) एवं डच आर्थिक मामले, कृषि और नवाचार मंत्रालय के बीच कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग के लिए एक कार्य योजना तैयार की गई।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद ने 3 अक्टूबर 2012 को 'दवाओं के जिम्मेदारीपूर्ण उपयोग के लाभ-बेहतर,

किफायती स्वास्थ्य देखरेख के लिए परम्पराएं निर्धारित करना' विषय पर एमस्टरडम में आयोजित मंत्रिस्तरीय शिखर सम्मेलन में हिस्सा लिया और डच स्वास्थ्य, कल्याण और खेल मंत्री सुश्री एडिथ/शिपर्स से मुलाकात की। सुश्री शिपर्स ने इसके पहले एक व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडल के साथ 7 से 11 मई 2012 तक नई दिल्ली, बंगलुरु और पुणे की यात्रा की थी।

एमस्टरडम के मेयर श्री ई वान डेर लॉन ने एक व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडल के साथ 25 से 31 मार्च 2012 तक मुंबई, पुणे और बंगलुरु की यात्रा की।

भारतीय अंतर्देशीय मार्ग प्राधिकरण (आईडब्ल्यूआई) की अध्यक्ष सुश्री भूपिन्दर प्रसाद ने 12 जून 2012 को नीदरलैण्ड्स की यात्रा की और अवसंरचना एवं पर्यावरण मंत्रालय में समुद्री मामलों के निदेशक श्री रॉब हीसर से मुलाकात की।

दिल्ली विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष की अगुवाई में शहरी विकास मंत्रालय का एक प्रतिनिधिमंडल 9-14 सितम्बर 2012 तक नीदरलैण्ड्स गया था।

आय और पूंजी पर करों के संबंध में दोहरे कराधान से बचने और वित्तीय अपवंचन की रोकथाम पर एक संशोधित प्रोटोकॉल पर भारतीय राजदूत सुश्री भास्वती मुखर्जी और वित्त के डच स्टेट सेक्रेटरी श्री फ्रेंस वीकर्स द्वारा 10 मई 2012 को हस्ताक्षर किए गए।

भारत और नीदरलैण्ड्स के बीच द्विपक्षीय व्यापार की गति बढ़ती रही। 2012 के पहले सात महीनों में भारत का निर्यात 9.6 प्रतिशत बढ़ा जबकि कुल द्विपक्षीय व्यापार 9.45 प्रतिशत बढ़ा। नीदरलैण्ड्स से भारत में वित्त वर्ष 2011-12 के दौरान एफडीआई आगम 1.409 बिलियन अमेरिकी डालर था और नीदरलैण्ड्स भारत में एफडीआई आगम के लिए छठे सबसे बड़े देश के रूप में उभरा।

वार्षिक डायस्पोरा सम्मेलन 30 सितम्बर 2012 को एमस्टरडम में आयोजित किया गया। नीदरलैण्ड्स में सुरीनामी-हिन्दुस्तानी समुदाय ने 14 अक्टूबर 2012 को दि हेग में गांधी केंद्र में वार्षिक हिंदी दिवस मनाया।

भारत के न्यायमूर्ति दलवीर भंडारी ने 19 जून 2012 को दि हेग में अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के नए सदस्य के रूप में शपथ ग्रहण की। रासायनिक हथियारों के प्रतिबंध के लिए संगठन के भारत की स्थायी प्रतिनिधि राजदूत भास्वती मुखर्जी को 12 मई 2012 से 11 मई 2013 की एक वर्ष की अवधि के लिए कार्यकारी परिषद् की अध्यक्ष चुना गया।

पुर्तगाल

पुर्तगाल के पर्यटन स्टेट सेक्रेटरी डॉ. सिसिलिया मीरेलेस ने 19-21 नवम्बर 2012 तक पर्यटन क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देने



प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह फ्रांस गणराज्य के राष्ट्रपति श्री फ्रैंकोइस होलैण्डे, 14 फरवरी, 2013 को नई दिल्ली में



विदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर और
बेल्जियम के विदेश मंत्री डिडियर रेण्डर्स, 16 अप्रैल, 2012

के लिए भारत की यात्रा की। गोवा के उप मुख्य मंत्री श्री फ्रांसिस डिस्सूजा और प्रवासी भारतीय मामलों के आयुक्त ने व्यवसायियों और सांस्कृतिक कलाकारों के समूह के साथ 10-14 अक्टूबर 2012 तक पुर्तगाल की यात्रा की।

इण्डस उद्यमी (टीआईई), जो कि भारतीयों और भारतीय मूल के उद्यमियों का एक वैश्विक नेटवर्क है, ने नवम्बर 2012 में अपने पुर्तगाली चैप्टर का उद्घाटन किया जिससे युवा और उभरते पुर्तगाली उद्यमियों के साथ सहयोग को संस्थागत स्वरूप प्राप्त हुआ।

स्पेन

वर्ष के दौरान भारत और स्पेन के बीच द्विपक्षीय संबंध प्रगाढ़ बने।

वर्ष की विशेष घटना स्पेन के समार जुआन कारलोस द्वारा 24-27 अक्टूबर 2012 तक भारत की राजकीय यात्रा रही। समार के साथ एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल आया था जिसमें स्पेन के विदेश, रक्षा, उद्योग, ऊर्जा और पर्यटन, अवसंरचना और परिवहन मामलों के मंत्री शामिल थे। समार ने राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी और प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह से मुलाकात की। निम्नलिखित करारों/समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए:-

आय और पूंजी पर करों के संबंध में दोहरे कराधान से बचाव करने और वित्तीय अपवंचन की रोकथाम के लिए अभिसमय के संशोधन हेतु प्रोटोकॉल और इस संबंध में प्रोटोकॉल जिस पर नई दिल्ली 8 फरवरी 1993 को हस्ताक्षर किए गए थे।

रक्षा सहयोग पर समझौता ज्ञापन।

सड़कों और सड़क परिवहन क्षेत्र पर समझौता ज्ञापन।

श्रव्य-दृश्य सहनिर्माण के क्षेत्र में भारत और स्पेन के बीच करार।

रेलवे सेक्टर के क्षेत्र में तकनीकी सहयोग पर भारतीय रेल और स्पेन के आरईएनएफई-ओपेराडोरा और एडिफ के बीच समझौता ज्ञापन।

पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा ने 19-22 अप्रैल 2012 तक स्पेन की यात्रा की और स्पेन के प्रिंस फेलिप से मुलाकात की।

राष्ट्रीय रक्षा कालेज, नई दिल्ली के एक 16 सदस्यों वाले प्रतिनिधिमंडल ने 20-25 मई 2012 तक स्पेन की यात्रा की।

26 मई 2012 को स्पेन की महारानी सोफिया ने वालेंसिया में आयोजित एक समारोह में श्री जुबिन मेहता को स्पेन - भारत परिषद प्रतिष्ठान पुरस्कार से सम्मानित किया।

पर्यटन मंत्रालय के सचिव ने संयुक्त राष्ट्र विश्व व्यापार संगठन कार्यकारी परिषद के 93वें सत्र की बैठक में हिस्सा लेने के लिए 11-13 जून 2012 तक स्पेन की यात्रा की।

स्पेन के विदेश मामलों के स्टेट सेक्रेटरी ने 12 जुलाई 2012 को भारत की यात्रा की और विदेश मंत्रालय में सचिव (पश्चिम) के साथ भारत-स्पेन विदेश कार्यालय परामर्श की सहअध्यक्षता की।

एफओसी-इन-सी (पश्चिम) वाइस एडमिरल डी.के. जोशी की अगुवाई में वेस्टर्न लीट के चार भारतीय नौ सैनिक जहाज भूमध्य सागर में अपनी समुद्री तैनाती पर 11-14 जुलाई 2012 तक कार्टाजेना पोर्ट गए।

शहरी विकास मंत्रालय में सचिव 8 से 10 अक्टूबर 2012 तक बार्सीलोना स्पेन में विश्व बैंक द्वारा आयोजित 6ठी अनुसंधान और ज्ञान संगोष्ठी (यूआरकेएस 6) में हिस्सा लेने गए।

वाणिज्य सचिव ने आईएफईएमए प्रदर्शनी मैदान में 9-11 अक्टूबर 2012 तक मैड्रिड में आयोजित सीफिल विश्वव्यापी औषधि प्रदर्शनी में हिस्सा लिया, जिसमें भारत केंद्र का देश था। 'भारत एन कानसीर्टो' समारोह का आयोजन मैड्रिड में 19-21 जून 2012 तक आयोजित किया गया। आईसीसीआर द्वारा प्रायोजित तीन मंडलियों ने इस समारोह में हिस्सा लिया। 19 जून 2012 को पंडित हरिप्रसाद चौरसिया द्वारा प्रस्तुत किए गए उद्घाटन कार्यक्रम में महारानी सोफिया मुख्य अतिथि थीं।

वल्लोडोलिड के 57वें एसईएमआईएनसीआई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में 20-27 अक्टूबर 2012 तक 'दि अदर बालीवुड' नामक एक फिल्म चक्र के साथ भारतीय सिनेमा की झलक पेश की गई।

भारत-स्पेन सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (सीईपी) के अंतर्गत आईसीसीआर के माध्यम से शैक्षिक वर्ष 2012-13 के लिए स्पेन के राष्ट्रियों को पांच छात्रवृत्तियां प्रदान की गईं।

ब्रिटेन

ब्रिटेन के साथ भारत के संबंध वर्ष के दौरान बढ़ते रहे। ब्रिटेन ने हैदराबाद और चंडीगढ़ स्थित अपने व्यापार कार्यालयों का दर्जा बढ़ाकर उप उच्चायोग कर दिया, जिससे भारत में ब्रिटेन के केंद्रों की संख्या सात हो गई।

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने मैक्सिको में जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान 19 जून 2012 को ब्रिटेन के प्रधान मंत्री श्री डेविड कैमरोन से मुलाकात की। ब्रिटेन के विदेश और राष्ट्रमंडल कार्यालयों में स्टेट सेक्रेटरी श्री विलियम हेग ने 8 नवम्बर 2012 को भारत की राजकीय यात्रा की और विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद से मुलाकात की। साइबर मुद्दों में सहयोग पर एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया।

वाणिज्य उद्योग और वस्त्र मंत्री श्री आनंद शर्मा ने 16 अप्रैल 2012 को भारत-ब्रिटेन संयुक्त आर्थिक और व्यापार समिति की बैठक के 8वें दौर के लिए लंदन की यात्रा की। योजना आयोग के उपाध्यक्ष

श्री मोंटेक सिंह अहलूवालिया ने तृतीय स्वच्छ ऊर्जा मंत्रियों के सम्मेलन के लिए 24–26 अप्रैल 2012 तक ब्रिटेन की यात्रा की। नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री डॉ. फारूख अब्दुल्ला ने 12 जून, 2012 को लंदन की यात्रा की और एक निवेशकों की बैठक को संबोधित करते हुए भारत में नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश के लिए न्यौता दिया। लंदन ओलम्पिक्स के दौरान आयोजित आर्थिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेने तीन मंत्रियों ने लंदन की यात्रा की—वाणिज्य, उद्योग और वस्त्र मंत्री श्री आनंद शर्मा ने 25–28 जुलाई 2012 तक वैश्विक निवेश सम्मेलन में हिस्सा लिया, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद ने 1–2 अगस्त 2012 को वैश्विक स्वास्थ्य नीति मंच शिखर सम्मेलन में हिस्सा लिया और महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा तीरथ ने 12–13 अगस्त 2012 को वैश्विक भूख कार्यक्रम में हिस्सा लिया। शहरी विकास मंत्री श्री कमल नाथ ने शहरी पुनर्निर्माण और विकास पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के लिए 19 सितम्बर 2012 को लंदन की यात्रा की और भारत अवसंरचना मंच के लिए 5–6 नवम्बर 2012 को फिर से लंदन की यात्रा की। पूर्व विधि और न्याय और कंपनी मामलों के मंत्री श्री सलमान खुर्शीद ने 9–14 अक्टूबर 2012 तक लंदन की यात्रा की। पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. चिरंजीवी ने विश्व यात्रा बाजार प्रदर्शन के लिए 5–8 नवम्बर 2012 तक लंदन की यात्रा की।

ब्रिटेन की ओर से की गई महत्वपूर्ण यात्राओं में शामिल थीं 5वीं ब्रिटेन-भारत आर्थिक और वित्तीय वार्ता हेतु वित्त मंत्री श्री ग्रेगरी जार्ज ओसबोर्न की 1 अप्रैल, 2012 यात्रा: भारत-ब्रिटेन व्यवसाय नेतृत्व जलवायु समूह शिखर सम्मेलन के लिए 18–22 अप्रैल 2012 तक ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन विभाग में राज्य मंत्री श्री ग्रेगरी बार्कर; वेल्स के प्रथम मंत्री श्री कार्बिन होवेल जॉस की 10–14 अप्रैल 2012 तक यात्रा और उत्तरी आयरलैंड के प्रथम मंत्री श्री पीटर रोबिनसन की 17–21 अप्रैल 2012 तक यात्रा; अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम के लिए स्टेट सेक्रेटरी सुश्री जस्टिन ग्रीनिंग की 5–7 नवम्बर 2012 तक यात्रा; गृह के लिए स्टेट सेक्रेटरी सुश्री थेरेसा की 26 नवम्बर 2012 की यात्रा; लंदन नगर के लार्ड मेयर की 6–10 अक्टूबर 2012 तक यात्रा और लंदन के मेयर श्री बोरिस की 25 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2012 तक की यात्रा।

ब्रिटेन भारत के प्रमुख व्यापारिक भागीदारों में बना रहा। अप्रैल से नवम्बर 2012 की अवधि के दौरान कुल द्विपक्षीय व्यापार 9.78 बिलियन अमेरिकी डालर रहा, जिसमें भारत से निर्यात 5.36 बिलियन अमेरिकी डालर का रहा और भारत को आयात 4.42 बिलियन अमेरिकी डालर का रहा। ब्रिटेन भारत में तीसरा सबसे बड़ा निवेशक है। भारत ब्रिटेन में शीर्ष निवेशकों में से एक है।

भारत और ब्रिटेन के बीच साइबर मुद्दों पर सहयोग वर्ष के दौरान स्थापित किया गया। साइबर मुद्दों पर प्रथम भारत-ब्रिटेन वार्ता 18–19 अक्टूबर 2012 को लंदन में आयोजित की गई।

तृतीय भारत-ब्रिटेन विज्ञान और नवाचार परिषद के लिए 16–18 अप्रैल 2012 तक विज्ञान और प्रौद्योगिकी और पृथ्वी विज्ञान मंत्री श्री विलास राव देशमुख की लंदन की यात्रा के साथ ही विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सहयोग को आगे बढ़ाया गया। भारत के नौसेना स्टाफ प्रमुख एडमिरल निर्मल कुमार वर्मा की 25–26 जून 2012 की ब्रिटेन यात्रा के साथ ही रक्षा सहयोग को आगे बढ़ाया गया। वार्षिक विदेश कार्यालय परामर्श 1 जून 2012 को नई दिल्ली में आयोजित किया गया।

विदेश सचिव श्री रंजन मथाई ने 5वें एमईए-आईआईएसएस वार्ता के लिए 3–4 अक्टूबर 2012 को लंदन की यात्रा की, इस दौरान उन्होंने ब्रिटेन के विदेश कार्यालय में मंत्री श्री ह्यूगो स्वायर से मुलाकात की और सीआईआई-भारत व्यवसाय मंच को भी संबोधित किया।

महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के सिंहासनारोहण के हीरक जयंती समारोह को यादगार बनाने के लिए शाही परिवार के हिस्से के रूप में प्रिंस एण्ड्रू ड्यूक ऑफ यॉर्क ने 30 अप्रैल से 6 मई 2012 तक भारत की यात्रा की।

युवा मामले और खेल राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री अजय माकन की अगुवाई में एक प्रतिनिधिमंडल ने लंदन ओलम्पिक्स के लिए 27 जुलाई से 1 अगस्त 2012 तक लंदन की यात्रा की।

भारत और ब्रिटेन ने दोहरे कराधान से बचाव और वित्तीय अपवंचन की रोकथाम पर 1993 द्विपक्षीय अभिसमय में संशोधन के लिए 30 अक्टूबर 2012 को एक प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए।



संयुक्त राज्य

वर्ष 2012 के दौरान एक-दूसरे के यहाँ सौ से भी अधिक यात्राओं से भारत-संयुक्त राज्य संबंध का आधार व्यापक हुआ है और अनेक क्षेत्रों में द्विपक्षीय विनियोजन सुदृढ़ हुआ है।

पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा तथा अमरीकी राज्य मंत्री हिलेरी क्लिंटन की वर्ष 2012 के दौरान तीन बार मुलाकात हुई—क्लिंटन की यात्रा (मई, 2012) के दौरान, द्विपक्षीय रणनीतिक वार्ता के लिए विदेश मंत्री द्वारा संयुक्त राज्य की यात्रा (जून 2012) तथा न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के अवसर (अक्टूबर 2012) पर। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री शिवशंकर मेनन ने अपने अमरीकी समकक्षी टॉम डोनीलान से बहुपक्षीय सम्मेलनों के अवसर (2012) पर, सिसोल (मार्च 2012), मेक्सिको (जून 2012) तथा नोम पेन्ह (नवम्बर 2012) में मुलाकात की।

तृतीय रणनीतिक वार्ता (वाशिंगटन डीसी, जून 2012) की सह-अध्यक्षता तत्कालीन विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा तथा अमरीकी राज्य मंत्री सुश्री हिलेरी क्लिंटन द्वारा की गई थी और इस वार्ता में दोनों पक्ष के उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडलों की भागीदारी रही थी। इसके परिणामस्वरूप रणनीतिक परामर्श से संबंधित एक करार निष्पन्न किया गया तथा अफगानिस्तान के साथ त्रिपक्षीय वार्ता की शुरुआत की गई; हिन्द महासागर से संबंधित मामलों में परामर्श में वृद्धि हुई; असैनिक परमाणु ऊर्जा सहयोग की प्रतिबद्धता की पुनरावृत्ति की गई; सभी चार बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्था में भारत की सदस्यता के लिए संयुक्त राज्य के समर्थन को दोहराया गया; आतंकवाद के विरुद्ध जंग, आन्तरिक सुरक्षा तथा साइबर सुरक्षा क्षेत्र में सहयोग को सुदृढ़ करने पर बातचीत की गई।

रणनीतिक वार्ता के साथ-साथ अनेक द्विपक्षीय वार्ताओं तथा बैठकों का आयोजन किया गया जिनमें वैश्विक मामलों से संबंधित मंच, एस व टी संयुक्त आयोग की बैठकें, आतंकवाद से संघर्ष हेतु संयुक्त कार्यचालन समूह, उच्च शिक्षा विषयक वार्ता, साइबर सुरक्षा से संबंधित परामर्श, सूचना व संचार प्रौद्योगिकी विषयक कार्यचालन समूह, महिला सशक्तिकरण से संबंधित वार्ता तथा आंतरिक सुरक्षा संबंधी परामर्श शामिल हैं।

अफगानिस्तान के साथ त्रिपक्षीय वार्ता (सितम्बर 2012), राजनीतिक सैन्य वार्ता के पुनरारम्भ (अप्रैल में नई दिल्ली में) तथा पूर्व एशिया वार्ता की पांचवीं बैठक (नई दिल्ली में अप्रैल में) जापान के साथ त्रिपक्षीय वार्ता से संबंधित दूसरी व तीसरी बैठक (अप्रैल में टोक्यो में तथा अक्टूबर में नई दिल्ली में) के आयोजन के जरिए राजनीतिक व रणनीतिक परामर्श को और अधिक सुदृढ़ बनाया गया।

भारत तथा संयुक्त राज्य ने आतंकवाद तथा अफगानिस्तान व पाकिस्तान में हिंसक उग्रवाद के लिए सुरक्षित समझे जाने वाले क्षेत्रों तथा उनकी आधारभूत संरचना को समाप्त किए जाने की आवश्यकता की पुनर्पुष्टि की। उन्होंने सुरक्षित एवं सभी खतरों से मुक्त व स्थिर एशिया—प्रशान्त बनाने तथा अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री क्षेत्रों में नौवहन की स्वतंत्रता तथा अबाधित विधिसम्मत व्यापार सुनिश्चित करने की दिशा में अपनी रुचि की पुनर्पुष्टि की। दोनों देशों ने स्वापक पदार्थों की तस्करी, समुद्री डकैती से रक्षा तथा समुद्री सुरक्षा, मानवीय सहायता तथा आपदा राहत से संबंधित विषयों पर आदान-प्रदान तथा सूचनाओं की भागीदारी की। उन्होंने समुद्री डकैती का मुकाबला करने संबंधी प्रयासों में समन्वयन बढ़ाने पर भी अपनी सहमति प्रकट की।

आतंकवाद विरोध से संबंधित संयुक्त कार्यचालन समूह, आतंकवाद विरोधी सहयोग विषयक पहल, आन्तरिक सुरक्षा संबंधी वार्ता तथा आसूचना एवं विधि प्रवर्तन अभिकरणों के बीच नियमित आदान-प्रदान के माध्यम से आतंकवाद का विरोध करने के क्षेत्र में सहयोग का सुदृढ़ीकरण जारी रखा गया। अमरीका के उप आंतरिक सुरक्षा मंत्री जेन ल्यूट ने अप्रैल 2012 में भारत की यात्रा की। गृह मंत्री ने जून 2012 में संयुक्त राज्य की यात्रा की। आतंकवाद के विरोध से संबंधित संयुक्त कार्यचालन समूह की 13वीं बैठक जून 2012 में वाशिंगटन डीसी में आयोजित की गई थी। भारत-संयुक्त राज्य आंतरिक सुरक्षा वार्ता के अन्तर्गत विषयगत उप-समूहों की बैठकें फरवरी 2012 में नई दिल्ली में आयोजित की गई जिससे कि सूचना के आदान-प्रदान, प्रचालनात्मक सहयोग, समुन्नत प्रौद्योगिकी की उपलब्धता तथा क्षमता सृजन के क्षेत्र में सहयोग किया जा सके।

संयुक्त राज्य ने विदेशी आतंकवादी समूहों को लक्षित करते हुए अपने कानून में पाकिस्तान स्थित अनेक आतंकवादी समूहों और उनके नेताओं को विनिर्दिष्ट किया है जिनमें लश्करे तोईबा शामिल हैं। अप्रैल 2012 में संयुक्त राज्य ने न्याय हेतु पुरस्कार विषयक अपने कार्यक्रम के अन्तर्गत हाफिज मोहम्मद सईद की गिरफ्तारी तथा दोषसिद्धि के लिए 10 मिलियन अमरीकी डॉलर तथा अब्दुल रहमान मक्की के लिए 2 मिलियन अमरीकी डॉलर का पुरस्कार घोषित किया है। संयुक्त राज्य कोषागार ने अमरीकी कानूनों के अन्तर्गत लश्करे तोईबा के आठ नेताओं को आतंकवादी व्यक्ति के रूप में नामोदिष्ट किया है।

गृह मंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे भारत-संयुक्त राज्य आन्तरिक सुरक्षा वार्ता की वाशिंगटन डीसी में 4-7 फरवरी, 2013 तक आयोजित की जाने वाली बैठक के लिए संयुक्त राज्य की यात्रा करने वाले प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व करेंगे।

साइबर परामर्श ढाँचे के अन्तर्गत 4 जून, 2012 को वाशिंगटन में साइबर सुरक्षा सहयोग बढ़ाया गया। दोनों देशों की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषदों ने बहुविध साइबर मुद्दों के संबंध में विचारों तथा सर्वोत्तम पद्धतियों का आदान-प्रदान किया। भारत एवं संयुक्त राज्य के कम्प्यूटर आपातकालीन अनुक्रिया दल (सीईआरटी) ने साइबर सुरक्षा विषयक चुनौतियों के संबंध में परस्पर अन्तः किया तथा सूचनाओं का आदान-प्रदान जारी रखा। दोनों देशों ने एक नए कार्यचालन समूह का गठन किया ताकि साइबर अंतरिक्ष तथा वैश्विक इंटरनेट अभिशासन के मुद्दों पर विचार-विमर्श किया जा सके। इस समूह की पहली बैठक 31 जुलाई, 2012 को नई दिल्ली में आयोजित की गई थी।

अधिकाधिक रक्षा व्यापार, संयुक्त सैनिक अभ्यासों, कार्मिकों के विनिमय, प्रौद्योगिकी अंतरण तथा समुद्री सुरक्षा एवं समुद्री डकैती के विरुद्ध संघर्ष जैसे क्षेत्रों में सहयोग के जरिए रक्षा सहयोग में वृद्धि की गई। भारतीय संयुक्त राज्य रक्षा नीति समूह की 12वीं बैठक फरवरी 2012 में नई दिल्ली में आयोजित की गई थी और संयुक्त राज्य के अवर रक्षा नीति मंत्री जेम्स मिलर ने इस बैठक में भाग लिया था। संयुक्त तकनीकी समूह की 14वीं बैठक नई दिल्ली में मार्च, 2012 में आयोजित की गई थी। संयुक्त राज्य के रक्षा मंत्री लियोन पनेटा ने जून 2012 में भारत की यात्रा की। उप रक्षा मंत्री एशटन कार्टर ने जुलाई, 2012 में भारत की यात्रा की। वरिष्ठ प्रौद्योगिकी सुरक्षा समूह की बैठक सितम्बर 2012 में वाशिंगटन डी सी में आयोजित की गई थी।

व्यापार एवं पूँजीनिवेश: संयुक्त राज्य भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बना रहा और वर्ष 2011 में माल एवं सेवाओं का कुल व्यापार 100 बिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक रहा। माल व सेवाओं का व्यापार संतुलित रहा और हाल के वर्षों में दो अंकों में वृद्धि का रुख बना रहा। वर्ष 2011 में मालों का द्विपक्षीय व्यापार 57.7 बिलियन अमरीकी डॉलर था और भारत का व्यापार अधिशेष 47.5 बिलियन अमरीकी डॉलर था। इस प्रकार गत वर्ष की संगत अवधि की तुलना में इसमें करीब 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई। जून 2012 में दोनों पक्षों ने नई दिल्ली में द्विपक्षीय व्यापार संधि के बारे में भी परामर्श किया।

संयुक्त राज्य के वाणिज्य मंत्री जॉन एम. ब्रायसन ने मार्च 2012 में भारत की यात्रा की और उन्होंने एक व्यापारिक प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया। उक्त व्यापारिक प्रतिनिधि मंडल ने अपना ध्यान मुख्य तौर पर आधारभूत संरचना पर केंद्रित रखा था। दोनों पक्षकारों ने अगले दो वर्षों अर्थात् मार्च 2014 तक के लिए वाणिज्यिक वार्ता के नवीकरण पर अपनी सहमति व्यक्त की। वे विनिर्माण वार्ता का प्रारम्भ करने पर भी सहमत हुए और इसमें सतत विनिर्माण एवं मानकों को भी शामिल किया गया था। मार्च 2012 में भारत में 2 बिलियन अमरीकी डॉलर के अवसंरचना ऋण कोष का प्रारम्भ किया गया और इसमें भारत तथा संयुक्त राज्य के वित्तीय संस्थानों की भागीदारी थी। संयुक्त राज्य के कोषागार मंत्री टिमोथी गिथनर तथा फेडरल रिजर्व बैंक के अध्यक्ष बेन बरनानके ने अक्टूबर 2012 में भारत की यात्रा की। वित्त मंत्री श्री पी. चिदम्बरम तथा कोषागार मंत्री श्री

गिथनर ने भारतीय संयुक्त राज्य आर्थिक एवं वित्तीय भागीदारी की नई दिल्ली में आयोजित तीसरी बैठक की सह-अध्यक्षता की। दिसम्बर, 2012 में संयुक्त राज्य के व्यापारिक प्रतिनिधि डिमेट्रिओ मेरांटिस ने द्विपक्षीय व्यापार एवं पूँजी निवेश से संबंधित विचार-विमर्श के लिए भारत की यात्रा की।

असैनिक परमाणु ऊर्जा सहयोग: भारत तथा संयुक्त राज्य ने असैनिक परमाणु ऊर्जा सहयोग और द्विपक्षीय असैनिक परमाणु करार के शीघ्र वाणिज्यिक प्रचालन की दिशा में अपनी प्रतिबद्धता की पुनर्पुष्टि की। जून 2012 में एनपीसीआईएल तथा वेस्टिंग हाऊस, एक अमरीकी कंपनी, ने एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए और कार्य शीघ्र प्रारम्भ करने के लिए वार्ता करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। संयुक्त राज्य की परमाणु कंपनियों के एक प्रतिनिधिमंडल ने दिसम्बर 2012 में भारत की यात्रा की और भारतीय अधिकारियों तथा निजी क्षेत्र की कंपनियों से विचार-विमर्श किया। भारत से छः सदस्यों के एक प्रतिनिधिमंडल ने जुलाई 2012 में संयुक्त राज्य में परमाणु सुरक्षा प्रशिक्षण सुविधाओं का अवलोकन किया और परमाणु ऊर्जा भागीदारी हेतु वैश्विक केन्द्र की स्थापना में जारी सहयोग के एक भाग के रूप में संबंधित क्षेत्र में प्रशिक्षण गतिविधियों का अध्ययन किया।

सुश्री क्रिस्टाइन स्विसिकी, आयुक्त, संयुक्त राज्य परमाणु ऊर्जा विनियामक आयोग ने अक्टूबर 2012 में मुम्बई में आयोजित द्वितीय भारत-संयुक्त राज्य परमाणु ऊर्जा सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत की यात्रा की।

रणनीतिक सुरक्षा वार्ता: रणनीतिक सुरक्षा वार्ता से संबंधित दो बैठकें-फरवरी 2012 में वाशिंगटन डी सी में तथा अक्टूबर 2012 में नई दिल्ली में-आयोजित की गई थीं। ये बैठकें विदेश सचिव तथा संयुक्त राज्य के अवर शस्त्र नियंत्रण तथा अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्री स्तर पर आयोजित की गई थीं। इन बैठकों में परमाणु अप्रसार, द्विपक्षीय असैनिक परमाणु सहयोग, विखण्ड्य सामग्री व्यवच्छेदन तथा वैश्विक सुरक्षा से संबंधित मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया।

ऊर्जा सहयोग: भारत संयुक्त राज्य ऊर्जा वार्ता से संबंधित बैठक सितम्बर 2012 में वाशिंगटन डीसी में आयोजित की गई थी। ऊर्जा वार्ता से संबंधित चार कार्यचालन समूह हैं जो कोयला, प्राकृतिक गैस, नवीकरणीय ऊर्जा तथा विद्युत दक्षता से संबंधित हैं। इन समूहों ने जारी सहयोग की समीक्षा के लिए बैठकों का आयोजन किया था। दोनों पक्षकारों ने कार्बन की अल्प वृद्धि के बारे में एक नया कार्यचालन समूह गठित करने पर सहमति व्यक्त की। दोनों देशों ने ऊर्जा सुरक्षा से संबंधित मुद्दों पर वार्ता प्रारम्भ की और इसमें तेल व गैस के बाजारों में दीर्घावधिक भूराजनैतिक रुख, शिला गैस सहयोग, नवीकरणीय ऊर्जा तथा विद्युत क्षेत्र के वित्तीयन से संबंधित मुद्दों को भी शामिल किया गया। ये बैठकें मई 2012 तथा नवम्बर 2012 में नई दिल्ली में आयोजित की गई थी।

भारत तथा संयुक्त राज्य ने अप्रैल, 2012 में संयुक्त स्वच्छ ऊर्जा अनुसंधान व विकास केन्द्र के अन्तर्गत प्रथम संघ अधिनिर्णायक की घोषणा की जिससे कि ऊर्जा दक्षता, सौर ऊर्जा एवं उन्नत जैव

ईंधनों के मामले में रूपान्तर प्रौद्योगिक समाधान के क्षेत्र में काम किया जा सके। स्वच्छ ऊर्जा को आगे बढ़ाने के लिए भारत-संयुक्त राज्य की भागीदारी के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी स्रोतों से 1.7 बिलियन अमरीकी डॉलर का संग्रहण किया जा चुका है और इससे भारत में स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं को बढ़ावा दिया जाएगा। नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में प्रौद्योगिकीय सहयोग तथा ऊर्जा दक्षता में सौर संसाधन मूल्यांकन व आलेखन, बेहतर वायु संसाधन प्राक्कलन तथा ऊर्जा संरक्षण निर्माण कोड कार्यान्वयन को शामिल किया गया था। संयुक्त राज्य भारत के साथ अपने अनुभवों की भागीदारी कर रहा है क्योंकि भारत शिला गैस के गवेषण के लिए एक विनियामक ढाँचा तैयार कर रहा है। विद्युत मंत्रालय, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय तथा यूएसएआईडी ने जून 2012 में 20 मिलियन अमरीकी डॉलर से पंचवर्षीय तकनीकी सहायता कार्यक्रम की शुरुआत की ताकि ऊर्जा दक्षता के अंत्य उपयोग में सुधार किया जा सके, नवीकरणीय ऊर्जा की आपूर्ति बढ़ाई जा सके और स्वच्छतर जीवाश्म ईंधन प्रौद्योगिकी के विकास को गति प्रदान की जा सके।

कृषि: कृषि एवं खाद्य सुरक्षा सहयोग हेतु वर्ष 2010 के समझौता ज्ञापन तथा द्विपक्षीय वार्ता के अन्तर्गत दोनों पक्षकारों ने खाद्य प्रसंस्करण, उपभोक्ता पदार्थों के पूर्वानुमान, अनुसंधान सहयोग, तथा नई प्रौद्योगिकी अंगीकरण तथा प्रबंध पद्धतियों एवं खेत-बाजार संबद्धता के सुदृढीकरण के लिए अनेक परियोजनाओं की शुरुआत की। संयुक्त राज्य पशु एवं पादप स्वास्थ्य निरीक्षण सेवा (एपीएचआईएस) राष्ट्रीय पादप स्वास्थ्य संस्थान, हैदराबाद के साथ मिलकर कार्य कर रहा है ताकि उत्तरवर्ती को उत्कृष्ट क्षेत्रीय केन्द्र के रूप में विकसित किया जा सके।

उच्च शिक्षा: मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल तथा संयुक्त राज्य की राज्य मंत्री हिलेरी क्लिंटन ने जून, 2012 में वाशिंगटन में आयोजित भारत संयुक्त राज्य उच्च शिक्षा वार्ता की पहली बैठक की सह-अध्यक्षता की। दोनों पक्षकारों ने ओबामा-सिंह ज्ञान पहल के अन्तर्गत पहली बार आठ अनुदान दिए जाने की घोषणा की जिसका उद्देश्य विश्वविद्यालय सहबद्धता एवं कनिष्ठ संकाय विकास के माध्यम से शिक्षण, अनुसंधान तथा भारत व संयुक्त राज्य दोनों के संस्थानों में प्रशासन को सुदृढ बनाना है। उच्च शिक्षा वार्ता के अन्तर्गत की गई अन्य महत्वपूर्ण पहलों में भारत में 100 लक्षित समुदायों के कॉलेजों की स्थापना करना अमरीकी संस्थानों में उत्तर-डॉक्टरेट अनुसंधान के लिए 300 भारतीय कनिष्ठ संकाय सदस्यों को सी.वी.रमण अध्येतावृत्ति की घोषणा, सूचना के प्रसार तथा शैक्षिक व अनुसंधान सहयोग में वृद्धि के लिए भारतीय उच्चतर शिक्षा वेबपोर्टल की शुरुआत और भारतीय विश्वविद्यालयों में अमरीकी छात्रों को आकृष्ट करने के लिए 'भारत से जुड़ो' कार्यक्रम प्रारंभ करना शामिल है। संयुक्त राज्य ने भारत में संयुक्त राज्य के पासपोर्ट संबंधी पहल के लिए निजी क्षेत्र के समर्थन की बचनबद्धता की भी घोषणा की जिसका उद्देश्य भारत में इंटरशिप करने वाले अमरीकी छात्रों की संख्या बढ़ाना है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी: विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहयोग के संबंध में भारत-संयुक्त राज्य के संयुक्त आयोग की दूसरी बैठक जून 2012 में वाशिंगटन डी सी में आयोजित की गई थी। इस बैठक में आधारभूत व प्रयुक्त विज्ञानों, वायुमंडल, पर्यावरण तथा पृथ्वी विज्ञान, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवाओं, विज्ञान प्रौद्योगिकी इंजीनियरी व गणित (एसटीईएम) शिक्षा, सामाजिक प्रभावकारिता के लिए प्रौद्योगिकी का वाणिज्यिकीकरण सरल करने तथा विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिलाओं को बनाए रखने तथा उनकी संख्या बढ़ाने के क्षेत्र में द्विपक्षीय अनुसंधान सहयोग पर विचार-विमर्श किया गया। इस सहयोग को अनेक द्विपक्षीय वित्तपोषित प्रणालियों, यथा सिंह-ओबामा ज्ञान पहल तथा विज्ञान व प्रौद्योगिकी मंच के माध्यम से सरलीकृत किया जाना जारी रखा गया। विज्ञान व प्रौद्योगिकी मंच से संबंधित पहला वृत्तिदान मई 2012 में किया गया था।

संयुक्त राज्य राष्ट्रीय विज्ञान संस्थान द्वारा वित्तप्रदत्त वैश्विक ग्लोरियाड (जीएलओआरआईएडी) नेटवर्क के एक भाग के रूप में जून 2012 में प्रथम प्रत्यक्ष भारत-संयुक्त राज्य उन्नत विज्ञान एवं शिक्षण नेटवर्क का प्रारंभ किया गया था जिससे कि संयुक्त राज्य तथा भारत के बीच डेटा प्रवाह में सहायता मिल सके। भारत सहस्त्राब्दि संधि, जो यूएसएआईडी तथा फेडरेशन ऑफ इंडिया चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्री की संयुक्त पहल है, के लिए 5 मिलियन अमरीकी डॉलर के भुगतान के लिए बचनबद्धता है जिससे कि नवोन्मेष, क्रीड़ा-परिवर्तन तथा भारत में विकासात्मक चुनौतियों का समाधान कम लागत पर करने संबंधी प्रयासों का निर्धारण व समर्थन किया जा सके। विवेच्य वर्ष के दौरान सहयोग विषयक कई अन्य पहल भी की गई।

स्वास्थ्य: संयुक्त राज्य की स्वास्थ्य एवं मानव सेवा मंत्री सुश्री केथलीन सेबेलियस ने जनवरी 2012 में भारत की यात्रा की तथा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद से विचार-विमर्श किया ताकि स्वास्थ्य प्रणालियों, जैव चिकित्सा अनुसंधान तथा खाद्य एवं औषधि सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग को सुदृढ किया जा सके। रणनीतिक वार्ता के अवसर पर इन दोनों नेताओं ने पुनः मुलाकात की।

सितम्बर, 2012 में टीका कार्रवाई कार्यक्रम, विगत 25 वर्षों से चला आ रहा सहयोगात्मक अनुसंधान उद्यम है और सितम्बर, 2012 में इस कार्यक्रम को और पाँच वर्षों के लिए नवीकृत किया गया था। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने संयुक्त राज्य के स्वास्थ्य एवं मानव सेवा विभाग के सहयोग से मधुमेह अनुसंधान के क्षेत्र में एक नई पहल की। जैव प्रौद्योगिकी विभाग संयुक्त राज्य के स्वास्थ्य एवं मानव सेवा विभाग को स्टेम कोशिकाओं के पुनरुत्पादन हेतु औषधि के क्षेत्र में सहयोग कर रहा है। जैव प्रौद्योगिकी विभाग तथा संयुक्त राज्य राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान ने कम लागत के स्वास्थ्य नैदानिक औजारों, तंत्रिका विज्ञान में मस्तिष्क अनुसंधान सहयोगात्मक भागीदारी तथा अन्तर्राष्ट्रीय कैंसर जीनोम संघ की दिशा में एक नए द्विपक्षीय सहयोग की शुरुआत की है। भारत तथा संयुक्त राज्य ने जून 2012 में वाशिंगटन डीसी में कार्रवाई कार्यक्रम आह्वान का सह-आयोजन किया ताकि 'पूरी की जाने वाली



6 नवम्बर, 2012 को नई दिल्ली में हस्ताक्षर समारोह के बाद संयुक्त प्रेस कांफ्रेंस के दौरान प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और कनाडा के प्रधान मंत्री श्री स्टीफेन हार्पर।



तत्कालीन विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा यू एस सैक्रेटरी ऑफ स्टेट सुश्री हिलेरी किलगॉन के साथ, 1 अक्टूबर, 2012 को

प्रतिज्ञा' (ए प्रॉमिस टू कीप) नामक वैश्विक आन्दोलन की शुरुआत की जा सके, बच्चों की निरोध्य मृत्यु को समाप्त करने के लिए आगामी दो दशकों में लक्षित पूँजीनिवेश से कारगर औषधियों जीवन रक्षक प्रयासों का विकास किया जा सके।

अंतरिक्ष: राष्ट्रीय महासागरीय तथा वायुमंडलीय प्रशासन तथा भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने मार्च 2012 में एक कार्यान्वयन करार पर हस्ताक्षर किए ताकि ओसियन सैट-2 तथा वैश्विक अवक्षेपण मापन/मेघा-ट्रॉपिक्स सेटेलाइट मिशन से प्राप्त आँकड़ों का औपचारिक आदान-प्रदान संभव हो सके।

महिला सशक्तिकरण: भारत-संयुक्त राज्य महिला सशक्तिकरण वार्ता की तीसरी बैठक फरवरी, 2012 में न्यूयार्क में आयोजित की गई थी। दोनों पक्षों ने महिला उद्यमियों तथा निम्नतम स्तर की महिला व कर्मियों व राजनीतिक नेताओं के प्रशिक्षण, राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान (एनआईपीसीसीडी) तथा संयुक्त राज्य में इसके समकक्ष संस्थान के बीच संस्थानिक सहबद्धता निर्माण, महिलाओं एवं लड़कियों के लिए सूचना प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अभिकल्पन और वंचित वर्ग की महिलाओं के लिए यू एस अर्ली हेड स्टार्ट प्रोग्राम के अध्ययन हेतु एक भारतीय प्रतिनिधिमंडल को अमरीका भेजने के लिए सहयोग करने पर सहमति व्यक्त की।

श्रम: श्रम एवं रोजगार मंत्री श्री मल्लिकार्जुन खड़गे ने जनवरी/फरवरी 2012 में संयुक्त राज्य की यात्रा की और श्रम सहयोग संबंधी एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जिसमें कौशल्य विकास, युवा विकास, व्यावसायिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य तथा खान सुरक्षा एवं स्वास्थ्य पर मुख्य जोर दिया गया था। समझौता ज्ञापन के अन्तर्गत कार्यचालन समूह की पहली बैठक अप्रैल 2012 में नई दिल्ली में आयोजित की गई थी जिसमें दोनों पक्षकार क्षेत्रीय श्रम संस्थान, फरीदाबाद में एक एकीकृत विश्लेषणात्मक प्रयोगशाला की स्थापना पर सहमत हुए।

संस्कृति: स्वामी विवेकानंद की 150वीं जन्म तिथि स्मरणोत्सव के एक भाग के रूप में संस्कृति मंत्रालय ने 1.5 मिलियन अमरीकी डॉलर से शिकागो विश्वविद्यालय में 'भारतीय संस्कृति मंत्रालय विवेकानंद पीठ' की स्थापना की। श्रम मंत्रालय ने शिकागो कला संस्थान से 'संग्रहालय उष्कृष्टता हेतु विवेकानंद स्मारक कार्यक्रम' से संबंधित एक समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किए। इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य भारत में संग्रहालय व्यावसायिकों के कौशल को समुन्नत बनाना है।

कौंसुली मुद्दे: कौंसुली मुद्दों के संबंध में भारत संयुक्त राज्य कार्यचालन समूह के दूसरे दौर का आयोजन मार्च 2012 में नई दिल्ली में किया गया था। जिन मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया था उनमें एच-एल, एल-1 तथा एफ-1 वीजा के लिए भारतीय वीजा आवेदकों के आवेदनों को रद्द किए जाने की संख्या में वृद्धि, संयुक्त राज्य वीजा शुल्क में बढ़ोत्तरी, संयुक्त राज्य में सामाजिक सुरक्षा में भारतीयों का योगदान तथा संयुक्त राज्य में अवैध रूप से प्रवेश करने वाले भारतीयों की वापसी आदि शामिल थे।

कनाडा: विवेच्य वर्ष के दौरान नवम्बर, 2012 में कनाडा के प्रधान मंत्री स्टीफन हार्पर की भारत की राजकीय यात्रा तथा अन्य अनेक उच्च स्तरीय सम्पर्क कार्यक्रमों से भारत-कनाडा संबंध को एक नया बल मिला है। पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम कृष्णा तथा सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री डॉ. सी.पी. जोशी ने जून, 2012 में कनाडा की यात्रा की और लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार के नेतृत्व में एक संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने अन्तर संसदीय संघ (आईपीयू) के 127वें सत्र में भाग लेने के लिए अक्टूबर 2012 में भारत की यात्रा की।

कनाडा की ओर से कनाडा के विदेश मंत्री जॉन बेयर्ड ने सितम्बर 2012 में; अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा सहायक उप मंत्री केरी बक ने सितम्बर 2012 में; श्री मार्क कोरे, ऊर्जा क्षेत्र सहायक उप मंत्री, प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने अक्टूबर 2012 में; प्राकृतिक संसाधन मंत्री श्री जो ओलिवर ने अक्टूबर ने अक्टूबर 2012 में; प्रिवी कौंसिल में क्लर्क तथा मंत्रिमंडल के सचिव डॉ. वायने वूटर्स ने अक्टूबर 2012 में; और वरिष्ठ सहायक उपमंत्री, जन सुरक्षा, सुश्री लिंगा क्लेयरमोंट ने 27 अक्टूबर-02 नवम्बर तक भारत की यात्रा की।

प्रधान मंत्री स्टीफन हार्पर की यात्रा के दौरान तीन करारों पर हस्ताक्षर किए गए थे— सामाजिक सुरक्षा विषयक करार, सूचना संचार प्रौद्योगिकी तथा इलेक्ट्रॉनिक्स में सहयोग संबंधी समझौता ज्ञापन तथा रक्षा विज्ञान व प्रौद्योगिकी में संयुक्त अनुसंधान व विकास संबंधी समझौता ज्ञापन।

दोनों पक्षकारों ने परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग में सहयोग के बारे में वर्ष 2010 में हस्ताक्षरित भारत-कनाडा करार को लागू करने की समुचित व्यवस्था करने के बारे में वार्ता भी की। अन्य महत्वपूर्ण परिणामों में विदेश मंत्री स्तर पर एक वार्षिक रणनीतिक वार्ता का संस्थापन करना, मंत्री स्तर पर ऊर्जा वार्ता, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय तथा प्रधान मंत्री के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार के कनाडा कार्यालय के बीच सुरक्षा वार्ता, वरिष्ठ अधिकारियों के स्तर पर निरस्त्रीकरण वार्ता, मुख्य कार्यपालक अधिकारियों के एक समुन्नत मंच की स्थापना तथा मैक गिल विश्वविद्यालय में आईसीसीआर पीठ की स्थापना शामिल थे। यात्रा के दौरान 2.5 बिलियन कनेडियन डॉलर के वाणिज्यिक करार भी निष्पन्न किए गए थे।

यात्रा के दौरान दोनों पक्ष तेल एवं गैस से लेकर नए हाइड्रोकार्बन संसाधनों यथा ऑयल सैण्ड्स, शिला गैस तथा नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों सहित ऊर्जा के अन्य स्रोतों के अधिकतम उपयोग हेतु क्षमता विकसित करने पर ध्यान देने पर भी सहमत हुए। यह निर्णय किया गया था कि भारत की ओर से योजना आयोग के उपाध्यक्ष के नेतृत्व में मंत्रालय स्तर तथा कनाडा की ओर से प्राकृतिक संसाधन मंत्री स्तर पर वार्ता की जाए।

भारत-कनाडा ऊर्जा मंच की दूसरी बैठक अक्टूबर 2012 में नई दिल्ली में आयोजित की गई थी। इसकी सह-अध्यक्षता भारत के विद्युत मंत्रालय के अपर सचिव तथा कनाडा के सहायक उप मंत्री, ऊर्जा क्षेत्र, प्राकृतिक संसाधन द्वारा की गई थी।

भारत कनाडा के साथ खनन सहयोग संबंधी कार्य भी जोर-शोर से करता रहा। खान मंत्रालय ने कनाडा के पर्यवेक्षक व विकासक संघ (पीडीएसी) सम्मेलन में भागीदारी हेतु अबतक का सबसे बड़ा प्रतिनिधिमंडल भेजा। खनन क्षेत्र में सहयोग हेतु क्यूबेक प्रान्त के साथ एक करार पर भी हस्ताक्षर किए गए। सास्कचवान प्रान्त तथा ब्रिटिश कोलंबिया के साथ उद्घाटन बैठकों का भी आयोजन किया गया।

उर्वरक मंत्रालय सरकारी तथा निजी क्षेत्र की कंपनियों के एक समूह को दिसम्बर 2012 में अपने नेतृत्व में कनाडा ले गया ताकि पोटाश के क्षेत्र में व्यापार, पूँजीनिवेश तथा दीर्घावधिक खरीद के अवसरों की जानकारी प्राप्त की जा सके।

विज्ञान व इंजीनियरी के अत्याधुनिक क्षेत्र में अनुसंधान से संबंधित आठ परियोजनाएं विवेच्य वर्ष के दौरान पूरी कर ली गई। इन परियोजनाओं का वित्तपोषण संयुक्त रूप से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), कॉन्फेडरेशन ऑफ इंडस्ट्री (सीआईआई) तथा ग्लोबल इनोवेशन एण्ड टेक्नोलाजी एलांस (जीआईटीए) द्वारा किया गया था। प्रधानमंत्री हार्पर की यात्रा के दौरान दोनों पक्ष भारत-कनाडा विज्ञान व प्रौद्योगिकी सहयोग करार के अन्तर्गत एक कार्रवाई योजना तैयार करने पर सहमत हुए जिससे कि आधारभूत अनुसंधान को और सुदृढ़ किया जा सके, अकादमिक व औद्योगिक कार्मिकों का आदान-प्रदान सरल बनाया जा सके तथा प्रौद्योगिकी के वाणिज्यिकीकरण को बढ़ाया जा सके।

आतंकवाद के विरोध से संबंधित भारत-कनाडा कार्यचालन समूह की 11वीं बैठक 29 नवम्बर, 2012 को नई दिल्ली में आयोजित की गई थी। भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विशेष सचिव (पोल. पीपी एण्ड आर), विदेश मंत्रालय द्वारा किया गया था जबकि कनाडा पक्ष का नेतृत्व सुरक्षा एवं आसूचना ब्यूरो के महानिदेशक, विदेशी मामले व अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार विभाग द्वारा किया गया था। दोनों देशों ने साइबर सुरक्षा के संबंध में भी द्विपक्षीय विचार-विमर्श किया।

वर्ष 2012 में भी द्विपक्षीय व्यापार में बढ़ोत्तरी जारी रही और जनवरी-सितम्बर की अवधि के दौरान यह व्यापार 4.060 बिलियन अमरीकी डॉलर के स्तर पर रहा जो वर्ष 2011 की संगत अवधि से करीब 10 प्रतिशत अधिक है। इस अवधि के दौरान कनाडा को भारत का निर्यात 2.202 बिलियन अमरीकी डॉलर रहा जो वर्ष 2011 की अपेक्षा 15 प्रतिशत अधिक है।

व्यापक आर्थिक भागीदारी करार के लिए वर्ष 2012 में तकनीकी वार्ता के चौथे, पाँचवें व छठे दौर का आयोजन तथा विचार-विमर्श किया गया। मई 2012 में डॉ.सी.पी.जोशी, सड़क एवं राजमार्ग मंत्री की क्यूबेक सिटी की यात्रा के दौरान सड़क परिवहन में सहयोग बढ़ाने संबंधी एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) बी.एन. श्रीकृष्णा, अध्यक्ष, वित्तीय क्षेत्र विधायी सुधार आयोग (एफएस एलआरसी) ने कनाडा के वित्तीय क्षेत्र के नीति निर्माताओं एवं विनियामक प्राधिकारियों से बातचीत करने वाले चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। राज्य वित्त मंत्रियों

की अधिकार प्राप्त समिति के उच्चाधिकार प्राप्त एक प्रतिनिधिमंडल ने भी भारत में माल एवं सेवा कर (जीएसटी) की शुरुआत करने के परिप्रेक्ष्य में वर्ष 2012 में कनाडा में सुमेलित बिक्री कर का अध्ययन करने के लिए वहाँ की यात्रा की।

ब्रिटिश कोलंबिया प्रान्त के वित्त मंत्री, श्री माइकल डी जोंग ने 2-15 दिसम्बर, 2012 के दौरान भारत की यात्रा की। उन्होंने चण्डीगढ़ तथा मुम्बई में दो नए व्यापार एवं पूँजीनिवेश कार्यालयों का उद्घाटन किया ताकि भारत के साथ वाणिज्यिक सहयोग को सुदृढ़ किया जा सके।

कनाडा के नागरिकता, आप्रवासन तथा बहुसंस्कृतिवाद मंत्री श्री जेसन केनी ने 7-12 जनवरी, 2013 के दौरान भारत की यात्रा की। उन्होंने कोच्चि में प्रवासी भारतीय दिवस को संबोधित किया, पंजाब की यात्रा की तथा गाँधी नगर में प्रगतिशील गुजरात सम्मेलन में भाग लिया। उन्होंने विदेश मंत्री तथा गृह मंत्री से भी मुलाकात की।

कनाडा पक्ष की ओर से की गई अन्य यात्राओं में श्री टिम उप्पल, राज्य मंत्री, लोकतांत्रिक सुधार की 27 दिसम्बर-12 जनवरी 2013 तक की यात्रा, सांसद श्री पार्म गिल की 2-14 जनवरी, 2013 तक की यात्रा तथा सीनेट सदस्य सुश्री आशा सेठ की 7-15 जनवरी, 2013 तक की यात्रा शामिल है। विदेश राज्य मंत्री सुश्री एब्लॉन्जी की 20-22 जनवरी, 2013 तक श्री रॉबर्ट फोनबर्ग, उप मंत्री, राष्ट्रीय रक्षा और श्री फ्रैंकोइस गुडमोंट, उप मंत्री, जन सुरक्षा की 20-25 जनवरी, 2013 तक की यात्रा तथा वाइस एडमिरल पॉल मैडिसन, कमाण्डर रॉयल कनेडियन नेवी की 21-27 जनवरी, 2013 तक की यात्रा भी उल्लेखनीय है।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी से संबंधित भारत-कनाडा कार्यचालन समूह की पहली बैठक 11 फरवरी, 2013 को नई दिल्ली में आयोजित की जानी है।

लातिन अमेरिका और कैरीबियाई देश

अर्जेंटीना

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान भारत व अर्जेंटीना का सक्रिय संबंध बना रहा।

विदेश मंत्री ने 7 फरवरी, 2013 को ब्यूनोस एयर्स की यात्रा की और राष्ट्रपति क्रिस्टीना फर्नांडीज और उप राष्ट्रपति अमादो बाउदु, भारत-अर्जेंटीना संसदीय समूह के सदस्यों तथा अर्जेंटीना के विदेश मंत्री हेक्टर टिमरमैन से मुलाकात की जिनके साथ उन्होंने द्विपक्षीय संबंधों के संपूर्ण पहलू की समीक्षा की और अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रमों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। दोनों पक्षों ने 'रणनीतिक सहभागिता' स्थापित करने के उद्देश्य से साझे लक्ष्य के भाग के रूप में चयन क्षेत्रों में मौजूदा संस्थागत तंत्रों को सक्रिय करने पर सहमति व्यक्त की। इस बात पर भी सहमति व्यक्त की गई कि दोनों देश वृहत्तर द्विपक्षीय व्यापार और निवेश का आदान-प्रदान करने हेतु बिजनेस वीजा, टैरिफ स्ट्रक्चर और विनियमित ढांचे को उदारीकृत बनाने के लिए कार्य करेंगे।

श्री अभिजीत सेन, सदस्य, योजना आयोग ने वार्षिक मौद्रिक तथा बैंकिंग सेमिनार के लिए 1-2 अक्टूबर, 2012 के दौरान ब्यूनोस एयर्स की यात्रा की। भारी उद्योग एवं लोक उद्यम मंत्री श्री प्रफुल पटेल ने युवा राष्ट्रपति संगठन (वाईपीओ) की बैठक में भाग लेने के लिए 30 सितम्बर-4 अक्टूबर, 2012 तक ब्यूनोस एयर्स की यात्रा की। अपर सचिव एवं महानिदेशक (सीजीएचएस), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने घटिया/अप्रामाणिक/गलत लेबल वाले/अवास्तविक/नकली चिकित्सा उत्पादों (एसएसएफएफसी) के बारे में विश्व स्वास्थ्य संगठन के सदस्य राष्ट्रों के तंत्र की पहली बैठक में भाग लेने के लिए 19-21 नवम्बर, 2012 तक अर्जेण्टीना की यात्रा की।

ब्यूनोस एयर्स ने 1 नवम्बर, 2012 को भारतीय पर्यटन सड़क प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था जिसमें भारतीय राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। भारतीय पर्यटन एजेंसियों ने भी लातिन अमरीकी पर्यटन उद्योग के लिए 3-6 नवम्बर, 2012 तक आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय मेला में भाग लिया।

ब्यूनोस आयर्स प्रान्त के विप्लेंट लोपेज नगरपालिका में 16-24 नवम्बर, 2012 तक 'भारतीय संस्कृति सप्ताह' का आयोजन किया गया था।

बोलीविया

भारत का बोलीविया के साथ उत्साहपूर्ण और मित्रवत संबंध जारी है। बोलीविया ने अक्टूबर 2012 में नई दिल्ली में अपना आवासीय मिशन आरंभ किया है। बोलीविया के प्रथम भारतीय राजदूत ने 8 नवंबर, 2012 को अपना प्रत्यय पत्र प्रस्तुत किया।

जानी मानी ओडिसी नृत्यांगना मासकों ओनो ने 2-7 मई, 2012 तक बोलीवियन के ला पेज, कोचाबाम्बा तथा सेंटा क्रूज शहरों में अपना नृत्य प्रस्तुत किया।

ब्राजील

भारत-ब्राजील 'सामरिक भागीदारी' सभी स्तरों पर उच्च स्तरीय यात्राओं तथा परस्पर मेल-जोल के मील के पत्थर से चिह्नित हुआ था। ब्राजील की राष्ट्रपति सुश्री दिलमा रोजेफ ने 28-30 मार्च, 2012 तक भारत की राजकीय यात्रा की तथा कई करारों/समझौता ज्ञापनों पर निर्णय लिए। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 20-21 जून, 2012 को ब्राजील के रियो डी जेनारियो में आयोजित रियो+20 संयुक्त राष्ट्र भू-शिखर बैठक में भाग लिया। पर्यावरण एवं वन मंत्री श्रीमती जयंती नटराजन भी इस प्रतिनिधिमंडल की सदस्य थीं।

वायु सेनाध्यक्ष श्री एन अनिल कुमार ब्राउन ने 20-24 अगस्त, 2012 तक ब्राजील की यात्रा की तथा ब्राजील के अपने समकक्ष वायु लेफ्टिनेंट ब्रिगेडियर जुनीति साइतो के साथ विचार विमर्श किया। उन्होंने ब्राजील के रक्षा मंत्री श्री सेलसो अमोरिम को आमंत्रित किया, ब्राजील के थल सेना प्रमुख, जनरल एंजो मार्टिस पेरी से मुलाकात की तथा साओ जोस कैपोस स्थित एंब्राएर वायुयान सुविधा की यात्रा की। यात्रा के दौरान रक्षा उपकरणों के संयुक्त सह-उत्पादन से संबंधित प्रस्तावों पर चर्चा की गई।

भारत-ब्राजील विज्ञान परिषद की आठवीं बैठक 14 सितंबर, 2012 को बेंगलूरु में आयोजित की गई। प्रधानमंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार परिषद के अध्यक्ष, प्रोफेसर सी.एन.आर.राव तथा ब्राजीली विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष प्रोफेसर जेकब पालीस ने इस बैठक की सह-अध्यक्षता की थी।

वर्ष 2010 के लिए शांति, निरस्त्रीकरण एवं विकास के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार से ब्राजील के पूर्व राष्ट्रपति श्री लुईस इनेसियो लूला दा सिल्वा को 22 नवंबर, 2012 को राष्ट्रपति भवन में पुरस्कृत किया गया। इन्होंने नई दिल्ली में 23 नवंबर, 2012 को जवाहर लाल नेहरू स्मारक का व्याख्यान भी दिया। इस यात्रा के दौरान उन्होंने राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी तथा प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को भी आमंत्रित किया।

चिली

इस वर्ष के दौरान भारत-चिली के मध्य संबंधों में प्रगति जारी रही। प्रथम भारत-सीलैक (लातिनी अमरीका एवं कैरीबियाई राज्यों का समुदाय) विदेश मंत्रियों की त्रिभुजा बैठक के अतिरिक्त पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा ने चिली के विदेश मंत्री, श्री अलफ्रेडो मोरेनो चार्म के साथ 7 अगस्त, 2012 को नई दिल्ली में द्विपक्षीय मुलाकात की। चिली के विदेश मंत्री ने नई एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री डॉ. फारुख अब्दुल्ला तथा वाणिज्य, उद्योग एवं वस्त्र मंत्री श्री आनंद शर्मा से भी मुलाकात की।

संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री सचिन पायलट ने 5-10 अप्रैल, 2012 तक चिली की यात्रा की तथा विदेश मंत्री श्री अलफ्रेडो मोरेनो चार्म, परिवहन एवं टेलीसंचार मंत्री तथा सीओएनआईसीवाईटी (वैज्ञानिक तथा तकनीकी अनुसंधान राष्ट्रीय आयोग, चिली) के अध्यक्ष से भी मुलाकात की। चिली के कृषि मंत्री श्री लुई मेयोल पर ने 4-7 मई, 2012 तक भारत की यात्रा की तथा द्विपक्षीय सहयोग पर कृषि मंत्री श्री शरद पवार के साथ विचार विमर्श किया। उन्होंने ग्रामीण विकास मंत्री श्री जयराम रमेश से भी मुलाकात की। हस्तशिल्प के लिए निर्यात संवर्धन परिषद (ईपीसीएच) के व्यापारी प्रतिनिधिमंडल ने 19-20 नवंबर को सेंट पियागो में क्रेता-विक्रेता बैठक के लिए चिली की यात्रा की।

कोलंबिया

हाल के वर्षों में कोलंबिया के साथ भारत के संबंध अधिक सुदृढ़ तथा विविधतापूर्ण हुए हैं। कोलंबिया की उपविदेश मंत्री सुश्री पट्टी लोंडोनों ने 12-14 मार्च, 2012 तक भारत की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान उन्होंने वर्ष 2012-16 के लिए सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम (सीईपी) पर सचिव (संस्कृति) के साथ हस्ताक्षर किए। वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने 5-8 जुलाई, 2012 तक कोलंबिया के लिए सीआईआई व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया तथा अपने कोलंबियाई समकक्ष श्री कार्लोस डी हार्ट तथा वित्त उपमंत्री श्री जर्मन आर्से के साथ विचार विमर्श किया। उन्होंने भारत-कोलंबिया व्यापार मंच की पहली बैठक को भी संबोधित किया तथा 7 जुलाई, 2012 को बोगोटा में कारों

एवं क्यूबी संस्थान (येरबाबुएना) में गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर की अर्धप्रतिमा का अनावरण भी किया। संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री सचिन पायलट ने 11-13 अप्रैल, 2012 तक कोलंबिया की यात्रा की तथा कोलंबियाई संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री, श्री डिएगो मोलानो के साथ द्विपक्षीय वार्ता की। एक 14 सदस्यीय पोशाक निर्यात संवर्धन परिषद प्रतिनिधिमंडल ने 19-20 नवम्बर, 2012 को कोलंबिया की यात्रा की तथा सफल क्रेता-विक्रेता (बीएसएम) बैठक की। भारत के रसायन एवं समवर्गी उत्पाद निर्यात संवर्धन परिषद (सीएपीईएक्ससीआईएल) के 9 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने भी क्रेता-विक्रेता बैठक (बीएसएम) के लिए 23 नवम्बर, 2012 को कोलंबिया की यात्रा की भारतीय रसायन, फार्मास्यूटिकल्स एवं सौंदर्य प्रसाधन निर्यात संवर्धन परिषद (सीएचईएमईएक्ससीआईएल) नेबोगोटा में 4 सितंबर, 2012 को क्रेता-विक्रेता बैठक आयोजित की। भारतीय प्लास्टिक निर्यात संवर्धन परिषद (पीएलईएक्ससीओएनसीआईएल) के दस सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने मार्च 2012 में कोलंबिया की यात्रा की। भारतीय कपास वस्त्र निर्यात संवर्धन परिषद (टीईएक्सपीआरओसीआईएल) के प्रतिनिधिमंडल ने 28 फरवरी, 2012 को मेडोलिन की यात्रा की तथा 01 मार्च, 2012 को बोगोटा की यात्रा की। मसाला बोर्ड के प्रतिनिधिमंडल ने 19-23 जून तथा 19-23 सितम्बर, 2012 के दौरान कोलंबिया की यात्रा की कोलंबिया से एक बहु-क्षेत्रक व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल ने नवंबर 2012 में भारत की यात्रा की तथा भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला में भाग लिया। एक 15 सदस्यों के एनडीसी प्रतिनिधिमंडल ने 20-15 मई, 2012 तक कोलंबिया की यात्रा की।

आईसीसीआर द्वारा प्रायोजित 'बाउल लोक गीत' दल ने सितंबर 2012 के दौरान कोलंबिया की यात्रा की।

कोलंबिया के ला सबाना विश्वविद्यालय से एमबीए छात्रों के 40 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने नवंबर-दिसंबर 2012 में भारत की यात्रा की।

इक्वाडोर

इस वर्ष के दौरान इक्वाडोर के साथ द्विपक्षीय संबंधों में वृद्धि हुई है। विदेश व्यापार एवं एकीकरण उपमंत्री श्री फ्रांसिसको रिवाडिनेरा ने 23 अप्रैल, 2012 को भारत की यात्रा की तथा वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ व्यापार सहयोग करार, संयुक्त आर्थिक समिति की स्थापना, दोहरे कर परिहार करार, भारतीय विशेषज्ञता के साथ इक्वाडोर में सॉटवेयर एवं बायोतकनिकी पार्कों के साथ फार्मास्यूटिकल इकाइयों की स्थापना की संभावनाओं पर हस्ताक्षर पर भी विचार विमर्श किया।

भारतीय रसायन एवं समवर्गी उत्पाद निर्यात संवर्धन परिषद (सीएपीईएक्ससीआईएल) के नौ सदस्यीय दल ने इक्वाडोर की यात्रा की तथा 25-27 अक्टूबर, 2012 तक बहुत ही सफल क्रेता-विक्रेता बैठक का आयोजन किया। भारतीय प्लास्टिक निर्यात संवर्धन परिषद (पीएलईएक्ससीओएनसीआईएल) के दस सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 26 मार्च, 2012 को गुयाकुईल की यात्रा की। भारतीय रसायन, फार्मास्यूटिकल्स एवं सौंदर्य प्रसाधन निर्यात संवर्धन परिषद (सीएचईएमईएक्ससीआईएल) ने 6 सितम्बर, 2012 को क्यूटो में क्रेता-विक्रेता बैठक का आयोजन किया।

गयाना

भारत एवं गयाना के बीच द्विपक्षीय संबंधों ने एक नई गति हासिल की है। गयाना के प्रधानमंत्री श्री सैमुअल हिंड्स ने नई दिल्ली ऊर्जा अभिगम पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लेने के लिए 8-12 अक्टूबर, 2012 तक भारत की यात्रा की। नई एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री डॉ. फारूख अब्दुल्ला ने प्रधानमंत्री श्री हिंड्स को आमंत्रित किया। गयाना के राष्ट्रपति डोनाल्ड रेमोटार ने 31 जनवरी से 30 सितम्बर, 2012 तक टेरी द्वारा नई दिल्ली में आयोजित दिल्ली सम्पौषण विकास सम्मेलन में भाग लिया। उनके साथ पूर्व राष्ट्रपति भारत जगदेओ भी आए थे। यात्रा के दौरान, उन्होंने प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह से मुलाकात कर आपसी हित के मुद्दों पर विचार-विमर्श किया।

विज्ञान संग्रहालय के राष्ट्रीय परिषद् द्वारा 20 अगस्त से 30 सितम्बर, 2012 तक गयाना के जार्जटाउन में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीय उपलब्धि को दर्शाता हुआ 'भारत-विज्ञान की संस्कृति' शीर्षक पर भारतीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। गयाना के राष्ट्रपति डोनाल्ड रेमोटार ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। 19 मिलियन अमरीकी डॉलर के भारतीय ऋण श्रृंखला के उपयोग से गयाना सरकार भारतीय कंपनी के माध्यम से जार्ज टाउन में एक सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल का निर्माण कर रही है।

आईटीईसी कार्यक्रम के तहत कृषि क्षेत्र में अनुसंधान के लिए दो वर्ष की प्रतिनियुक्ति पर एक भारतीय विशेषज्ञ का गयाना में आगमन हुआ है।

मेक्सिको

मेक्सिको के साथ विशेषीकृत लौस भागीदारी को कई उच्च स्तरीय यात्राओं से गति मिली। 18-19 जून, 2012 को मेक्सिको के कैंबोस में जी-20 लीडर्स सम्मेलन के अतिरिक्त प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने मेक्सिको के राष्ट्रपति श्री फेलिप काल्डेरॉन के साथ मुलाकात कर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा नवीकरणीय ऊर्जा में द्विपक्षीय सियोग को सुदृढ़ करने तथा पारस्परिक निवेश को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर विचार-विमर्श किया। 18-20 अप्रैल, 2012 तक प्यूएर्टो क्लार्टा में जी-20 व्यापार मंत्रियों की बैठक के अलावा वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री आनंद शर्मा ने मेक्सिको के आर्थिक मंत्री श्री ब्रूनो फेरारी के साथ 18 अप्रैल, 2012 को द्विपक्षीय बैठक की। योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री मोंटेक सिंह आहलूवालिया ने तीसरी जी-20 शेरपा बैठक के लिए 22-23 मई, 2012 तक मेक्सिको की यात्रा की। वित्त मंत्री श्री पी चिदम्बरम ने जी-20 वित्त मंत्रियों की बैठक में भाग लेने के लिए 4-5 नवम्बर, 2012 को मेक्सिको सिटी की यात्रा की।

विदेश मंत्रालय के सचिव (पश्चिम) श्री एम गणपति तथा मेक्सिको की उप विदेश मंत्री सुश्री लार्डस अरेंडा बेजाउरी ने 15-16 अप्रैल, 2012 को मेक्सिको सिटी में आयोजित पाँचवें भारत-मेक्सिको संयुक्त समिति बैठक (जेसीएम) की सह-अध्यक्षता की तथा 2012-15

के लिए सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम पर इस जेसीएम के दौरान हस्ताक्षर किए गए। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, आयुष विभाग के सचिव के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने 15-17 अक्टूबर, 2012 तक मेक्सिको सिटी की यात्रा की। यात्रा के दौरान पारंपरिक भारतीय औषधि प्रणाली पर सूचना प्रदान करने के लिए गुरुदेव टैगोर भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में आयुष सूचना केंद्र का उद्घाटन किया गया। दोनों ओर से सहयोग के कई क्षेत्रों में पहचान पर आशय पत्र तथा होमियोपैथी में शैक्षिक पीठ स्थापित करने के लिए आशय पत्र पर अंतिम निर्णय लिया गया।

भारत के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव तथा प्रोमेक्सिको के महानिदेशक ने 30 अक्टूबर, 2012 को नई दिल्ली में व्यापार निवेश तथा आर्थिक सहायता पर द्विपक्षीय उच्च स्तरीय दल की तीसरी बैठक की सह-अध्यक्षता की। दोनों ओर से द्विपक्षीय व्यापार तथा निवेश को बढ़ाने के तरीकों पर विचार-विमर्श किया गया। भारतीय केंद्रीय उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क बोर्ड तथा कर प्रशासनिक सेवा के सीमा शुल्क महाप्रशासक, मेक्सिको के मध्य नई दिल्ली में 10 सितंबर, 2012 को सीमा शुल्क मामलों में पारस्परिक प्रशासनिक सहयोग पर करार हस्ताक्षरित किया गया।

विश्व व्यापार केंद्र मेक्सिको सिटी में 30-31 अगस्त, 2012 को भारतीय रसायन प्रदर्शनी के लिए भारतीय रसायन, फार्मास्यूटिकल्स तथा सौंदर्य प्रसाधन निर्यात संवर्धन परिषद् (सीएचईएमईएक्ससीआईएल) के नेतृत्व में एक व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल मेक्सिको गया। मेक्सिको सिटी में 18-20 जुलाई, 2012 तक पेस ऑटोमोबिलिका (ऑटोमोटिक ट्रेड शो) में सीआईआई के नेतृत्व में एक व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल मेक्सिको गया तथा भारतीय रसायन एवं समवर्गी उत्पाद निर्यात परिषद् (सीएपीईएक्सआईएल) ने 24-29 नवंबर, 2012 तक गुआडालाजारा अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला में भाग लिया।

गुरुदेव टैगोर भारतीय सांस्कृतिक केंद्र द्वारा दुरंगो राष्ट्रीय मेला (29 जून-23 जुलाई 2012) तथा मेक्सिको सिटी में प्रथम एशियाई सांस्कृतिक उत्सव (26-29 अप्रैल, 2012) भारतीय भागीदारी को अतिथि देश की भागीदारी के रूप में आयोजित किया। केंद्र ने पंडित हरिप्रसाद चौरसिया द्वारा संगीत-वाद्य समारोह का आयोजन किया; सुश्री मीरा प्रसाद के नेतृत्व में आईसीसीआर द्वारा आयोजित चार सदस्यों के सितार दल ने 8-28 अक्टूबर, 2012 तक मेक्सिको में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेरावांटिनो समारोह में हिस्सा लिया; महात्मा गांधी के प्रपौत्र श्री तुषार गांधी द्वारा वार्ता तथा 'गांधी: एक अहिंसावादी क्रांतिकारी' पर मेक्सिको के पूर्व भारतीय राजदूत श्री पास्कल एलन नजारेथ द्वारा व्याख्यान दिया गया।

पराग्वे

पराग्वे के राष्ट्रपति श्री फर्नांडो अरमाइण्डो लूगो मेंडेज की 23-25 मई, 2012 तक की अब तक की पहली यात्रा से द्विपक्षीय संबंधों को एक नई प्रेरणा मिली है। यात्रा के दौरान विदेश मंत्री, कृषि पशुपालन तथा वाणिज्य मंत्री ने उनका साथ दिया। यात्रा के दौरान राष्ट्रपति लूगो ने राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल तथा प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह से मुलाकात की तथा आगरा की भी यात्रा की।

भारतीय व्यापार तथा निवेश के लिए अवसरों की खोज में 23-26 सितम्बर, 2012 तक सीआईआई के आठ सदस्यों के प्रतिनिधिमंडल ने पराग्वे की यात्रा की। इस प्रतिनिधिमंडल ने पराग्वे के कृषि मंत्री श्री एंजो कारडोजो, पर्यटन मंत्री सुश्री लिज कनेमेर, उपविदेश मंत्री श्री मैनुएल मारिया सासेरस तथा उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री श्री फ्रांसिस्को रिवास से असुंसियों में मुलाकात की।

पेरु

भारत और पेरु के बीच घनिष्ठ एवं मैत्रीपूर्ण द्विपक्षीय संबंध बरकरार हैं। विदेश मंत्रालय के सचिव (पश्चिम) श्री मधुसूदन गणपति तथा पेरु के विजीटिंग विदेश मंत्री श्री जोस बेराउन एरानिबार ने 13 जुलाई, 2012 को विदेश कार्यालयन परामर्श के चौथे चरण की सह-अध्यक्षता की तथा द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा की। भू-गर्भ विज्ञान एवं खनिज संसाधनों की स्थापना हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

पेरु ने इस वर्ष के दौरान पहला रिसिडेन्ट अटैची भारत में नियुक्त किया है। भारत की ओर से, महानिदेशक, स्वापक नियंत्रण ब्यूरो ने 25-26 जून, 2012 को लीमा में आयोजित विदेश मंत्रियों के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन तथा विश्व नशा समस्या के विरुद्ध विशेषीकृत राष्ट्रीय एजेंसियों के प्रमुखों के लिए भाग लेने के लिए पेरु की यात्रा की। पेरु में लौह अयस्क खदान प्राप्त करने की संभावना तलाशने के लिए स्टील मंत्रालय के 3 सदस्यों के सरकारी प्रतिनिधिमंडल ने 7-8 नवम्बर, 2012 को पेरु की यात्रा की।

आईसीसीआर द्वारा आयोजित किए जाने पर ओडिसी नर्तकी सुश्री मासाको ओनो ने 19-25 अप्रैल, 2012 को पेरु की यात्रा की तथा लीमा, सूस्को एवं अरीक्यूपा में नृत्य प्रदर्शन किया।

पर्यटन मंत्रालय के सहयोग से भारतीय दूतावास ने 13 जून, 2012 को पर्यटन व्यापार पर संकेंद्रित 'नो इंडिया इवनिंग' का आयोजन किया गया।

उरुग्वे

भारत तथा उरुग्वे के बीच द्विपक्षीय संबंधों में वृद्धि जारी है। कृषि अनुसंधान तथा शिक्षा विभाग, कृषि मंत्रालय के सचिव ने 29 अक्टूबर से 2 नवम्बर, 2012 तक आयोजित विकास-II के लिए कृषि अनुसंधान पर वैश्विक सम्मेलन (जीसीएआरडी) में भाग लेने के लिए उरुग्वे की यात्रा की।

उरुग्वे में भारतीय व्यापार तथा निवेश के लिए अवसर तलाशने के लिए सीआईआई के छः सदस्यों के प्रतिनिधिमंडल ने 26-29 सितम्बर, 2012 तक मोंटेवीडियो की यात्रा की। उरुग्वे के उद्योग, एवं खनन मंत्री श्री रॉबर्ट क्रीमरमैन तथा कृषि मंत्रालय, पशुधन एवं मछली पालन के अन्तर्राष्ट्रीय प्रधान डॉ. अलीसिया मार्टिंस ने इस प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया।

वेनेजुएला

भारत और वेनेजुएला के बीच घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंधों को इस अवधि के दौरान विनिमय यात्राओं के द्वारा महत्वपूर्ण गति मिली है।

नई दिल्ली में 7 अगस्त, 2012 को आयोजित प्रथम भारतीय सीलैक विदेश मंत्रियों की त्रोज्का बैठक के अतिरिक्त भारत के पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम कृष्णा तथा वेनेजुएला के विदेश मंत्री श्री निकोलस माडुरो ने द्विपक्षीय मुद्दों पर विचार-विमर्श किया। पूर्व पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री श्री जयपाल रेड्डी ने यात्रा करने वाले गणमान्य व्यक्तियों से मुलाकात की।

वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के नेतृत्व में एक व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडल ने 8-9 जुलाई, 2012 को वेनेजुएला की यात्रा की तथा वेनेजुएला के उप विदेश मंत्री श्री डेविड वेलासकुएज, स्वास्थ्य मंत्री श्रीमती इयुजीनिया साडार कार्स्टेलेनोस तथा वाणिज्य उप मंत्री श्री एडमी बेट्टेनकोर्ट से विचार-विमर्श किया। दोनों ओर से द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा की गई तथा द्विपक्षीय व्यापार को विविधता प्रदान करने की आवश्यकता पर बल दिया जो वर्तमान में हाइड्रोकार्बन द्वारा प्रभावित है। स्वास्थ्य एवं फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्रों में सहयोग पर भी विचार-विमर्श किए गए।

स्वचालित मतदान प्रणाली पर अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लेने के लिए वेनेजुएला के राष्ट्रीय चुनाव परिषद (सीएनई) के अध्यक्ष डॉ. डीबी से लूसेना रामीरेज के निमंत्रण पर भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त श्री वी.एस.सम्पत ने 27 अगस्त से 01 सितम्बर, 2012 तक काराकास की यात्रा की। इनके राष्ट्रीय चुनावी निकायों के बीच सहयोग तथा सूचना विनिमय को सुदृढ़ करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

रिलायंस इंडिया लिमिटेड (आरआईएल) को प्रतिदिन 400,000 बैरल भारी कच्चा तेल आपूर्ति करने के लिए 26 सितम्बर, 2012 को आरआईएल ने पीडीवीएसए (वेनेजुएला की तेल कम्पनी) के साथ करार पर हस्ताक्षर किए।

मध्य अमेरिका

बेलिज

भारत-बेलिज के बीच मैत्रीपूर्ण द्विपक्षीय संबंधों में विस्तार जारी है। शहरी विकास मंत्री श्री कमलनाथ ने कॉमनवेल्थ स्थानीय सरकारी मंच की बैठक में भाग लेने के लिए 16-18 मई, 2012 तक बेलिज की यात्रा की। यात्रा के दौरान श्री कमलनाथ ने बेलिज के प्रधानमंत्री श्री डीन बैरो को आमंत्रित किया तथा पारस्परिक हित के मुद्दों पर विचार-विमर्श किया। भारत ने बेलिज के सेंट जॉस कॉलेज में भारत-बेलिज मैत्री कंप्यूटर केंद्र स्थापित करने के लिए आईटीईसी कार्यक्रम के तहत 50 कंप्यूटर देने का वचन दिया है।

कोस्टा-रीका

उच्च स्तरीय यात्रा विनिमय तथा संस्थानिय तंत्र के साथ कोस्टा-रीका से द्विपक्षीय संबंधों को एक नई गति मिली है। कोस्टा-रीका के द्वितीय उपराष्ट्रपति श्री लुई लीबरमैन जिंसबर्ग ने नई दिल्ली में आयोजित चौथे विश्व आईसीडी मंच में भाग लेने के लिए 16-19 अक्टूबर, 2012 तक भारत की यात्रा की। उन्होंने भारत के उपराष्ट्रपति

श्री हामिद अंसारी को आमंत्रित किया। साथ में यात्रा करने वाले कोस्टा-रीका के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री एलेजेंड्रो क्रूज मोलिना तथा योजना की उपमंत्री सुश्री सिल्विया हेरनांडेज सांचेस ने भारतीय सहायता से कोस्टा-रीका में उत्कृष्टता के सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र की स्थापना के लिए प्रस्ताव पर विचार-विमर्श के लिए विदेश मंत्रालय के सचिव (ईआर) श्री सुधीर व्यास से मुलाकात की।

कोस्टा-रीका की विदेश व्यापार मंत्री सुश्री एजाबेल गोंजालेज ने कोस्टा-रीका के ठेकेदारों के 25 सदस्यों के प्रतिनिधिमंडल के साथ हैदराबाद में आयोजित 'इंडियासॉट' में भाग लेने के लिए 19-23 मार्च, 2012 तक भारत की यात्रा की। डवोस में डब्ल्यूईएफ के साथ ही साथ पर उन्होंने वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री आनंद शर्मा से 23 जनवरी, 2013 को मुलाकात की।

विदेश मंत्रालय के सचिव (पश्चिम) श्री मधुसूदन गणपति ने प्रथम विदेश कार्यालय परामर्श में भाग लेने के लिए 18-20 सितम्बर, 2012 तक कोस्टा-रीका की यात्रा की।

भारतीय निर्यात संवर्धन परिषद (ईएससी) के प्रतिनिधिमंडल (16 कम्पनियों) ने जुलाई, 2012 में कोस्टा-रीका सूचना प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी में भाग लिया। भारतीय फार्मास्यूटिकल्स निर्यात संवर्धन परिषद (फारमेक्सिल) के प्रतिनिधिमंडल ने सितम्बर 2012 में कोस्टा-रीका की यात्रा की।

अल सल्वाडोर

अल सल्वाडोर के साथ गर्मजोशी एवं मैत्रीपूर्ण संबंधों में वर्ष के दौरान वृद्धि जारी रही। विदेश मंत्रालय के सचिव (पश्चिम) श्री मधुसूदन गणपति ने प्रथम विदेश कार्यालय परामर्श (एफओसी) के लिए 21 अगस्त, 2012 को अल सल्वाडोर की यात्रा की। दोनों ओर से विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं परिवर्तन के क्षेत्र में सहयोग पर करार पर अंतिम निर्णय लिया गया। यात्रा के दौरान सचिव (पश्चिम) ने अल सल्वाडोर के विदेश मंत्री श्री ह्यूगो मार्टिनेज़ा को आमंत्रित किया तथा भारतीय विदेश नीति पर साल्वाडोरान राजनयिक अकादमी-आईईईएसएफओआरडी को संबोधित किया।

ग्वाटेमाला

भारत ग्वाटेमाला के बीच मैत्रीपूर्ण द्विपक्षीय संबंधों में विस्तार जारी है। ग्वाटेमाला के साथ भारत के आर्थिक एवं वाणिज्यिक संबंध भारत से दो व्यापारिक प्रतिनिधिमंडलों की यात्रा से चिन्हित किया गया; 24-25 सितम्बर, 2012 को टेक्सप्रोसिल की 8 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल तथा 5-9 सितम्बर, 2012 तक फार्मेक्सिल की 20 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल की यात्रा। इस प्रतिनिधिमंडल ने क्रेता-विक्रेता बैठक (बीएसएम) में भाग लिया तथा ग्वाटेमाला पोशाक निर्माता संघ (वेस्टेक्स) तथा स्वास्थ्य मंत्रालय ग्वाटेमाला से मुलाकात की।

हॉंडुरास

भारत एवं हॉंडुरास के बीच गर्मजोशी एवं मैत्रीपूर्ण संबंधों में इस वर्ष के दौरान आगे विस्तार हुआ है। हॉंडुरास के कृषि मंत्री जैकोबो रीगालाडो ने 8-13 जनवरी, 2013 तक आयोजित 'वैश्वीकरण के

युग में अग्रणी' शीर्षक पर सेमिनार में भाग लेने के लिए 6-15 जनवरी, 2013 तक भारत की यात्रा की।

होंडूरास से 15 सदस्यीय रक्षा प्रतिनिधिमंडल ने सितम्बर, 2012 में बेंगलूरु में आयोजित वीईएल सुविधा में दो बैचों में प्रशिक्षण के लिए भारत की यात्रा की।

होंडूरास विदेश मंत्रालय से प्रोटोकॉल अधिकारी श्री जोस ऐंज़ेस एंड्रेड अलवारडो ने 22 अगस्त से 21 सितम्बर, 2012 तक आयोजित 55वें विदेशी राजनयिकों के लिए व्यवसायिक पाठ्यक्रम (पीसीएफडी) में भाग लिया।

निकारागुआ

भारत तथा निकारागुआ के बीच मित्रवत संबंध इस वर्ष के दौरान और सुदृढ़ हुए हैं। निकारागुआ के राष्ट्रपति के आर्थिक एवं वित्तीय मामले के सलाहकार कमांडर बेआर्डो आर्से कास्टानो ने 25 नवम्बर से 1 दिसम्बर, 2012 तक भारत की यात्रा की। उन्होंने विदेश राज्य मंत्री श्री ई अहमद, नई एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री फारुख अब्दुल्ला तथा संचार, सूचना प्रौद्योगिकी एवं शिपिंग राज्य मंत्री श्री मिलिंद देओरा से मुलाकात की। इस यात्रा के दौरान भारतीय नागरिकों के लिए वीजा नीतियों में और सरलीकरण की घोषणा की गई।

पनामा

यह द्विपक्षीय संबंधों के विविधीकरण एवं एकीकरण का साक्षी है। अप्रवासी भारतीय कार्य मंत्री श्री व्यालार रवि ने 29-30 जुलाई, 2012 को पनामा की यात्रा की तथा पनामा के कार्यकारी विदेश मंत्री श्री अलवार्रेज डे सोटो से मुलाकात की। इन्होंने भारतीय डायस्पोरा के साथ भी मुलाकात की। पनामा में भारतीय डायस्पोरा का आकार 15000 के करीब है। संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री सचिन पायलट ने 10-11 अप्रैल, 2012 को पनामा की यात्रा की तथा विदेशी मामले, वाणिज्य एवं उद्योग वित्त एवं आर्थिक मंत्रियों तथा विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा नवाचार के राष्ट्रीय सचिव से मुलाकात की और द्विपक्षीय सहयोग पर विचार-विमर्श किया। संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी एवं जहाजरानी राज्य मंत्री श्री मिलिंद मुरली देओरा ने 22-23 जनवरी, 2013 को पनामा की सरकारी यात्रा की। पनामा के विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार के राष्ट्रीय सचिव डॉ. रुबेन बेरोकल के नेतृत्व में 5 सदस्यों के पनामाई प्रतिनिधिमंडल ने 3 अगस्त, 2012 को भारत की यात्रा की। पनामा में टेलीमेट्री, ट्रेकिंग तथा क्मोडिंग (टीटीसी) केंद्र स्थापित करने के इसरो के प्रस्ताव पर पनामा सरकार ने सहमति जताई है।

एक 14 सदस्यों के राष्ट्रीय रक्षा प्रतिनिधिमंडल ने 20-26 मई, 2012 तक शिक्षा दौरे पर पनामा की यात्रा की।

भारतीय रसायन, फार्मास्यूटिकल्स तथा सौंदर्य प्रसाधन संवर्धन परिषद (सीएचईएमईएक्ससीआईएल) के 12 सदस्यों के प्रतिनिधिमंडल ने 3 सितम्बर, 2012 को पनामा की यात्रा की; भारतीय फार्मास्यूटिकल्स निर्यात संवर्धन परिषद (फार्मेक्सल) के 22 सदस्यों के प्रतिनिधिमंडल

ने 10 सितम्बर, 2012 को तथा आईपीसी के 10 सदस्यों के प्रतिनिधिमंडल ने 20-21 नवम्बर, 2012 तक पनामा की यात्रा की 128-29 सितम्बर, 2012 को पनामा में एकस्पो टूरिस्मो में भारतीय एजेंसियों ने भाग लिया।

टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी पनामा में 28 जून से 6 जुलाई, 2012 तक भारतीय फिल्मोत्सव का आयोजन किया गया।

कैरीबियाई देश

क्यूबा

पूर्व भारतीय विदेश मंत्री श्री एस.एम कृष्णा की 15-16 जून, 2012 को क्यूबा यात्रा से भारत-क्यूबा संबंधों को प्रेरणा मिली। उन्होंने क्यूबा के विदेश मंत्री श्री ब्रूनो रोडरीगज पारील्ला के साथ द्विपक्षीय संबंधों पर विचार-विमर्श किया। विदेश मंत्री ने क्यूबा के राष्ट्रपति श्री राऊल कास्ट्रो को आमंत्रित किया तथा क्यूबा राष्ट्रीय असेंबली के अध्यक्ष श्री रिकार्डो अलारकन डे क्वेसाडा से मुलाकात की। विदेश मंत्रालय ने 4 क्यूबाई परियोजनाओं के लिए 15 मिलियन अमरीकी डॉलर जमा श्रृंखला की घोषणा की तथा सार्वजनिक परिवहन बसों की आपूर्ति का प्रस्ताव रखा। विदेश मंत्री ने 16 जून, 2012 को हवाना में आयोजित एलएसी क्षेत्रीय प्रमुखों के मिशन सम्मेलन की अध्यक्षता की।

वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने क्यूबा में 10-13 जुलाई, 2012 तक कार्यकारियों, सीईओएस तथा व्यापारियों के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

प्रथम भारतीय-सीलैक विदेश मंत्रियों की त्रिभुज बैठक ने हाशिए पर 7 अगस्त, 2012 को विदेश मंत्री ने क्यूबा के उपविदेश मंत्री श्री रोजेलियो सिएरा डियाज से मुलाकात की। एक अलग बैठक में सचिव (पश्चिम) श्री एम गणपति और श्री रोजेलियो ने 7 अगस्त, 2012 को द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा की।

क्यूबा में दूध पाउडर संयंत्र स्थापित करने के लिए 5 मिलियन अमरीकी डॉलर की जमा श्रृंखला प्रदान करने के लिए भारतीय एक्विजिशन बैंक तथा क्यूबा के सेंट्रल बैंक के बीच नई दिल्ली में 10 अक्टूबर, 2012 को करार पर हस्ताक्षर किए गए।

खेल गुरुओं को प्रदान किया जाने वाला उच्चतम सम्मान द्रोणाचार्य अवार्ड क्यूबा के बॉक्सिंग गुरु क्लास इग्लेसियास फर्नांडीज को 29 अगस्त, 2012 को प्रदान किया गया। ऐसा पहली बार हुआ जब किसी विदेशी गुरु को यह सम्मान दिया गया।

डोमिनिका गणराज्य

विदेश मंत्रालय के सचिव (पश्चिम) श्री मधुसूदन गणपति के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने प्रथम विदेश कार्यालय परामर्श (एफओसी) के लिए 23 अगस्त, 2012 को डोमिनिका गणराज्य की यात्रा की, जहाँ विदेश मंत्री कार्लोस मोरालेस ट्रोंकोसो के साथ द्विपक्षीय संबंधों के समग्र सप्ताह की समीक्षा की। इस यात्रा के दौरान द्विपक्षीय सांस्कृतिक सहयोग करार पर हस्ताक्षर किए गए।



तत्कालीन विदेश मंत्री श्री एस.एम.कृष्णा अपने चिली के समकक्ष अलफ्रेडो मोरेनो चार्म के साथ, (दाएं से दूसरे), वेनेजुएला के समकक्ष निकोलस माडुरो मोरोस (बाएं से दूसरे), क्यूबा के उप विदेश मंत्री रोजेलियो सिएरा डियाज, (एकदम बाएं), विदेश राज्य मंत्री श्री ई.अहमद, 7 अगस्त, 2012 को नई दिल्ली में आयोजित भारत एवं लातिनी अमरीका तथा कैरीबियाई राज्य समुदाय (सीलेक) की पहली बैठक में।



प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह 30 मार्च, 2012 को नई दिल्ली में हैदराबाद हाऊस में ब्राजील की राष्ट्रपति सुश्री डिल्मा रौसेफ के साथ।

हैती

जनवरी 2010 के भू-कंप पीड़ितों के लिए कम लागत पर करीब 500 रिहायशी इकाइयों के निर्माण के लिए भारत ने 5 मिलियन अमरीकी डॉलर हैती को दान किया है। भारत के तीन अर्ध-सैनिक बलों की इकाइयों सीआईएसएफ, बीएसएफ तथा असम राइफल्स के जवान संयुक्त राष्ट्र के हैती में स्थिरता मिशन (एमआईएनयूएसहीएच) के तहत तैनात हैं जिसकी हैती के प्राधिकरणों एवं संयुक्त राष्ट्र, दोनों द्वारा सराहना की गई है। यूएनजीए के संकल्प के भारतीय समर्थन से अक्टूबर 2013 तक इनकी तैनाती अवधि-बढ़ाई गई है। केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के महानिदेशक के नेतृत्व में एक भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने 1-4 अक्टूबर 2012 तक हैती की यात्रा की तथा राष्ट्रपति मार्टेली से मुलाकात की जिन्होंने तैनाती के लिए हैती की सराहना की सूचना दी।

जमैका

इस वर्ष के दौरान भारत-जमैका के बीच गर्मजोशी एवं मित्रवत द्विपक्षीय संबंध जारी है। दाण्डी मार्च को दर्शाते हुए महात्मा गांधी की प्रतिमा आईसीसीआर द्वारा प्रदान की गई जिसका प्रधानमंत्री श्री पोर्टिया सिंपसन तथा विदेश मंत्री श्री ए.जे.विकोलसन की उपस्थिति में वेस्ट इंडीज विश्वविद्यालय, मोना कैपस में भारतीय राजदूत द्वारा अनावरण किया गया। वेस्टइंडीज विश्वविद्यालय (यूडब्ल्यूआई) में चेयर ऑन इंडोलॉजी/गांधीयन स्टीडीज की स्थापना के लिए 30 अगस्त, 2012 को आईसीसीआर तथा यूडब्ल्यूआई के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। भारतीय वर्ल्डवाइड इवेंट द्वारा अप्रैल-जून 2012 तक जमैका में भारतीय ग्रामीण शिल्प मेले का आयोजन किया गया था।

सूरीनाम

रक्षा मंत्रालय, सूरीनाम के स्थायी सचिव श्री जॉन अचोंग के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने डेफेक्सपो-2012 में भाग लेने के लिए 29 मार्च, 01 अप्रैल, 2012 तक भारत की यात्रा की। अभिलेखों के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत तथा सूरीनाम के राष्ट्रीय अभिलेखागारों के बीच समझौता ज्ञापन पर 21 दिसम्बर, 2012 को पारामारिबो में हस्ताक्षर किए गए। भारतीय दूतावास, भारतीय संस्कृति केंद्र तथा अल्फामैक्स अकादमी, सूरीनाम ने संयुक्त रूप से 6 मई, 2012 को रविन्द्रनाथ टैगोर का जन्म दिवस मनाया। भारतीय दूतावास, भारतीय संस्कृति केंद्र ने आर्गेनाइजेशन हिंडो मीडिया (ओएचएम), पारामारिबो के सहयोग से 6 सूरीनाम में भारतीय डायस्पोरा पर 11 मई, 2012 को पीआईओ बैठक का आयोजन किया।

सेंट किट्स एवं नेविस

सेंट किट्स एवं नेविस के प्रधानमंत्री श्री डेजेल डगलस ने 5-9 अप्रैल, 2012 तक भारत की यात्रा की तथा दिल्ली, चडीगढ़, लुधियाना एवं अमृतसर में भारतीय व्यापारिक समुदाय के साथ मुलाकात की।

त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो

भारत एवं त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 50वीं वर्षगांठ के रूप में यह वर्ष चित्रित किया गया है। पोर्ट ऑफ स्पेन में 'भारतीय स्वाद' शीर्षक पर भारतीय भोजन मेले के साथ भारत एवं त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो के संबंधों के 50 वर्ष विरासत, नवाचार तथा पुनरारम्भ शीर्षक पर दो दिनों के लिए सम्मेलन सह प्रदर्शनी का कार्यक्रम आयोजित किया गया। गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर की 150वीं वर्षगांठ के स्मरणोत्सव के लिए टैगोर फिल्मोत्सव का आयोजन किया गया श्री जय शंकर पेरावाली के नेतृत्व में 9 सदस्यों के आघात दल ने वार्षिक स्टीलफेस्ट तथा भारतीय आगमन दिवस में भाग लेने के लिए 6-21 मई, 2012 तक त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो की यात्रा की। आईसीसीआर द्वारा प्रायोजित 17 सदस्यों के अयोध्या रामलीला दल ने जून 2012 में त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो की दस दिनों की यात्रा की। आईसीसीआर द्वारा प्रायोजित एक अन्य 7 सदस्यों के शास्त्रीय वाद्ययंत्र दल ने 14-31 अगस्त, 2012 तक त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो की यात्रा की। सुश्री शर्मिला पाण्डे के नेतृत्व में 8 सदस्यों के भोजपुरी संगीत दल ने दिवाली आयोजन के दौरान विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए 5-13 नवम्बर, 2012 तक त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो की यात्रा की। कानून एवं न्याय मंत्रालय, कानून विभाग के सचिव ने पोर्ट ऑफ स्पेन में 'कॉमेमोरेटिव नार्थ अटलांटिक कॉमनवेल्थ' कानून मंत्रियों की बैठक में भाग लेने के लिए 23-27 जून, 2012 तक त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो की यात्रा की। संस्कृति मंत्रालय के सचिव ने 6 भारत-विज्ञान की संस्कृति प्रदर्शनी के उद्घाटन में भाग लेने के लिए त्रिनिदाद की यात्रा की। कार्यकारी प्रधानमंत्री जैक वार्नर द्वारा इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। आयुष विभाग के सक्रिय सहयोग से भारतीय उच्चायोग में स्थापित आयुष सूचना केंद्र त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो के स्थानीय सरकार मंत्री श्री सूरजरतन रामबचन ने केन्द्र का उद्घाटन किया। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री श्री एस.गांधीसेलवन द्वारा यह केंद्र त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो की जनता को समर्पित किया गया।

त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो के योजना मंत्री डॉ. भोएंद्रदत्त तिवारी ने 6-10 नवम्बर, 2012 तक भारत की यात्रा की तथा योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री मोंटेक सिंह अहलूवालिया तथा विदेश मंत्रालय के सचिव (पश्चिम) श्री मधुसूदन गणपति से मुलाकात की।

भारत-सीलैक (सी एलएसी)

प्रथम भारत-सीलैक (लैटिन अमेरिकी एवं कैरीबियाई राज्यों के समुदाय) विदेश मंत्रियों की त्रोइका बैठक 7 अगस्त, 2012 को नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम कृष्णा ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल तथा चिली के विदेश मंत्री श्री अलफ्रेडो मोरेनो चार्म ने सीलैक-त्रोइका का नेतृत्व किया। विदेश राज्य मंत्री श्री ई.अहमद तथा विदेश मंत्रालय में सचिव (पश्चिम) श्री मधुसूदन गणपति ने विदेश मंत्री की सहायता की तथा त्रोइका के अन्य सदस्य श्री निकोलस मादुरो, वेनेजुएला के विदेश मंत्री श्री रोजेलियो सिएरा डियाज, क्यूबा के उप विदेश मंत्री तथा त्रोइका के रेजिडेंट राजदूतों ने चिली के विदेश मंत्री की सहायता की दोनों ओर से व्यापारिक



विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद विली के विदेश मंत्री श्री अलफ्रेदो मोरिनो के साथ 5 फरवरी 2013 को विली में।

परिषद, सीईओ मंच, ऊर्जा मंच कृषि विशेषज्ञ दल, विज्ञान मंच तथा थिंक टैंक स्थापित करने पर सहमति बनी। दोनों ओर से निकट भविष्य में संबंधों के स्तर को शिखर सम्मेलन स्तर तक बढ़ाने पर भी सहमति बनी। प्रथम भारत-सीलैक त्रोइका बैठक के दौरान विदेश मंत्री ने यात्रा पर आये तीनों विदेश मंत्रियों के साथ द्विपक्षीय बैठक की।

भारत-सीलैक पर राष्ट्रीय स्तर का सेमिनार 10 जुलाई, 2012 को आईसीडब्ल्यूए द्वारा आयोजित किया गया। विदेश मंत्रालय में सचिव

(पश्चिम) श्री मधुसूदन गणपति ने मुख्य मुद्दों पर सेमिनार को संबोधित किया। पूरे दिन चले इस सेमिनार में एलएसी क्षेत्र के साथ भारतीय वचनबद्धता के विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श हुआ। सीआईआई ने 17 जुलाई, 2012 को चेन्नई में तथा 19 जुलाई, 2012 को अहमदाबाद में भारत-एलएसी व्यापारिक सेमिनार का आयोजन किया। 26 सितम्बर, 2012 को, प्रधानमंत्री के जन सचूना, संरचना तथा नवाचार सलाहकार श्री सैम पित्रोदा ने ज्ञान एवं नवाचार पर नई दिल्ली रह रहे लैटिन अमेरिकी तथा कैरीबियाई रेजिडेंट राजदूतों को संबोधित किया।



संयुक्त राष्ट्र में भारत

संयुक्त राष्ट्र महासभा का 67वां अधिवेशन

पूर्व विदेश मंत्री, श्री एस.एम. कृष्णा ने 27 सितम्बर से 2 अक्टूबर, 2012 के दौरान न्यूयार्क में आयोजित संयुक्त राष्ट्र महासभा के 67वें अधिवेशन में उच्च स्तर पर भारतीय आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

विदेश मंत्री ने महासभा की दिनांक 1 अक्टूबर, 2012 को हुई आम बहस के दौरान अपने वक्तव्य में संयुक्त राष्ट्र की कार्यप्रणाली में तुरंत सुधार किए जाने की मांग की ताकि समसामयिक वास्तविकताओं और उभरती वैश्विक चुनौतियों का प्रभावी रूप से सामना किया जा सके। विदेश मंत्री ने कहा, “संयुक्त राष्ट्र तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के मानक, जिन्हें संयुक्त राष्ट्र द्वारा पोषित किया गया है, वे मौजूदा चुनौतियों को अवसरों में परिवर्तित करने के अत्यधिक प्रभावी माध्यम हैं। तथापि, हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि वैश्विक अभिशासन संरचना समसामयिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करे। केवल द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति पर अभिकल्पित संरचनाओं से ही जुड़े रहना बहुपक्षीयता का वातावरण तैयार करने के उसके वायदों को बाधित करता है। इस स्थिति में सुधार से संबंधित सबसे महत्वपूर्ण और निर्णायक कदम संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से संबंधित है जिसका स्थायी तथा अस्थायी दोनों श्रेणियों में निश्चित रूप से विस्तार किया जाना चाहिए। इस प्रकार की सुधारात्मक परिषद में ऐसे देशों को अवश्य शामिल किया जाना चाहिए जो अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बनाए रखने से संबंधित अतिरिक्त भार का वहन करने में समर्थ हों तथा उसके इच्छुक हों और जो नए और उभरते वैश्विक खतरों के खिलाफ वैश्विक अभियानों को जारी रखने में सक्षम हों।” उन्होंने अफ्रीका की स्थायी सदस्यता के अभाव की असंगतता पर तत्काल ध्यान दिए जाने की आवश्यकता पर भी बल दिया।

विदेश मंत्री ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से “आतंकवाद के खिलाफ ‘किसी भी कीमत पर बर्दाश्त न किए जाने’ वाली पद्धति अपनाने का अनुरोध किया और उन्होंने आतंकवाद के घुणित केंद्रों के नेटवर्क, प्रशिक्षण सुविधाओं और वित्त-पोषण सहित आतंकवाद की आधारभूत संरचना को तहस-नहस किए जाने के प्रयासों पर बल दिया।” उन्होंने तेजी से बढ़ रहे कृत्रिम तथा वैश्विक आतंकवादी चुनौती के खिलाफ एक मानक ढांचे को मजबूत बनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक सम्मेलन बुलाए जाने पर सहमति बनाए जाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

विदेश मंत्री ने जलदस्युता की चुनौती के संबंध में यह उल्लेख किया कि “समय की आवश्यकता यह है कि समुद्री यात्रियों तथा उनके परिवारों की सलामती पर विशेष ध्यान देते हुए एक बार फिर संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में समेकित अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई की जाए।”

विदेश मंत्री ने निःशस्त्रीकरण के संबंध में नाभिकीय हथियार-मुक्त विश्व की स्थापना करने के संबंध में भारत की प्रतिबद्धता व्यक्त की। उन्होंने “समयबद्ध, सार्वभौमिक, गैर-विभेदमूलक, चरणबद्ध व प्रामाणिक रूप से नाभिकीय निःशस्त्रीकरण का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए राजीव गांधी कार्ययोजना, 1988 के सिद्धांतों को याद दिलाया जो कि दो दशकों के पश्चात भी अभी तक प्रासंगिक बने हुए हैं।” विदेश मंत्री ने परमाणु अप्रसार तथा नाभिकीय निःशस्त्रीकरण पर नवीकृत आम सहमति बनाए जाने की आवश्यकता का उल्लेख किया। नाभिकीय हथियार रखने वाले सभी राष्ट्रों के बीच सार्थक वार्तालाप किए जाने की भी आवश्यकता है ताकि उनके बीच भरोसा और विश्वास का माहौल बनाया जा सके और अंतर्राष्ट्रीय मामलों व सुरक्षा सिद्धांतों में नाभिकीय हथियारों की प्रमुखता को कम किया जा सके। सार्वजनिक विनाश के हथियारों को प्राप्त करने वाले आतंकवादियों द्वारा प्रस्तुत किए गए गंभीर खतरों सहित नाभिकीय खतरों को कम करने के लिए उपाय अवश्य किए जाने चाहिए ताकि इस प्रकार, नाभिकीय सुरक्षा को सुदृढ़ किया जा सके। निःशस्त्रीकरण संबंधी सम्मेलन – अंतर्राष्ट्रीय निःशस्त्रीकरण एजेंडा से संबंधित मुद्दों पर समझौता-वार्ता करने के अपने अधिदेश को निष्पादित करने में हमारे सहयोग की आवश्यकता है।”

पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर विदेश मंत्री ने कहा, “आरआईओ + 20 सम्मेलन में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने गरीबी उन्मूलन को सबसे बड़ी वैश्विक चुनौती के रूप में स्वीकार करते हुए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने सतत विकास की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया और इस दिशा में कार्य करने के लिए उन्होंने एकमत रूप से आरआईओ सिद्धांतों की पवित्रता की पुनः पुष्टि की। भारत समता और साझा परंतु अलग-अलग जिम्मेदारियों के सिद्धांतों पर आधारित समग्र, न्यायसंगत और संतुलित निर्गम के जरिए जलवायु परिवर्तन से संबंधित मुद्दों पर ध्यान देने के लिए प्रतिबद्ध बना हुआ है।”

विदेश मंत्री ने यह भी कहा कि एमडीजी की वर्ष 2015 की लक्षित तारीख की तीन वर्ष की अवधि के लिए यह भी आवश्यक है कि एमडीजी की प्राप्ति की दिशा में सभी प्रयास सुनिश्चित किए जाएं। वर्ष 2015 के पश्चात के विकासपरक एजेंडा पर वैश्विक चर्चा में ‘विकास’ शब्द पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। आरआईओ + 20 के विचारों और सिद्धांतों में इस बात को दृढ़ता से रखा जाना

चाहिए और संयुक्त राष्ट्र की अंतर-सरकारी प्रक्रिया में उसे प्रमुखता से रखा जाना चाहिए। गरीबी, रोजगार, खाद्य और ऊर्जा, जल, स्वास्थ्य, पर्यावरणीय संपोषणीयता, आधारणीय जीवनपद्धति और सबसे अधिक आर्थिक संवृद्धि की चुनौतियों पर प्रमुखता से ध्यान दिया जाना चाहिए।

दिनांक 1 अक्टूबर, 2012 को ही आयोजित “रासायनिक हथियारों के सम्मेलन का पंद्रहवां वर्ष: सफलता का समारोह, भविष्य के प्रति प्रतिबद्धता” पर रासायनिक हथियारों के निषेध संबंधी संगठन की उच्च स्तरीय बैठक में बोलते हुए विदेश मंत्री ने कहा कि भारत रासायनिक हथियारों के सम्मेलन को एक विशिष्ट, बहुपक्षीय रूप से विचार-विमर्शित तथा गैर-विभेदमूलक निशस्त्रीकरण के उपकरण के रूप में देखता है जोकि सामूहिक विनाश के हथियारों की संपूर्ण श्रेणी के विलोपन के लिए एक मॉडल के रूप में कार्य करता है।”

नई वास्तविकताओं के अनुरूप समायोजित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र पीसकीपिंग की आवश्यकता पर बल देते हुए विदेश मंत्री ने यह कहा कि आज अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के समक्ष चुनौती संयुक्त राष्ट्र पीसकीपिंग को पर्याप्त रूप से संसाधनों से लैस करना सुनिश्चित करना है और उसे विवाद के पश्चात तथा शांति बनाने वाले मामलों सहित आज की वास्तविकताओं का सामना करने में सक्षम बनाना है।

विदेश मंत्री ने सीरिया में भारत की सुविख्यात और सैद्धांतिक स्थिति तथा फिलिस्तीन के मामले में हमारे समर्थन को भी दोहराया।

यूएनजीए के 67वें अधिवेशन में विदेश मंत्री की यूएसए तथा नेपाल के समक्षों के साथ द्विपक्षीय बैठकों का आयोजन किया गया था। उन्होंने मालदीव द्वारा आयोजित प्रीतिभोज में भाग लिया जिसमें उन्होंने सार्क के अपने सहयोगी विदेश मंत्रियों के साथ विचार-विमर्श किया।

विदेश राज्य मंत्री श्री ई.अहमद ने 7-12 अक्टूबर, 2012 के दौरान न्यूयार्क का दौरा किया। उन्होंने सियरा लियोन में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक में भाग लिया और 9 अक्टूबर, 2012 को भारत की ओर से वक्तव्य दिया। उन्होंने वैश्विक विकास से जुड़े मुद्दों के संबंध में संयुक्त राष्ट्र महासभा की दूसरी बैठक की आम बहस में भी भाग लिया और 8 अक्टूबर, 2012 को बहस के दौरान भारत की ओर से वक्तव्य दिया। उन्होंने दिनांक 9 अक्टूबर, 2012 को ‘संगठन के कार्यकरण पर महासचिव की रिपोर्ट’ पर हुई बहस के दौरान संयुक्त राष्ट्र महासभा को भी संबोधित किया।

विदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर ने 15-19 अक्टूबर, 2012 के दौरान न्यूयार्क की यात्रा की और उन्होंने महासभा और सुरक्षा परिषद की चर्चाओं में भाग लिया। उन्होंने सोमालिया पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में हुई बहस में भाग लिया और 16 अक्टूबर, 2012 को भारत की ओर से वक्तव्य दिया। उन्होंने ‘अफ्रीका के विकास के लिए नई साझेदारी’ नामक विषय पर 17 अक्टूबर को संयुक्त राष्ट्र महासभा को भी संबोधित किया।

संयुक्त राष्ट्र महासभा के 67वें अधिवेशन में भाग लेने के लिए अक्टूबर-नवंबर, 2012 के दौरान 7 संसद सदस्यों वाले एक

गैर-आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल ने तीन खेपों में न्यूयार्क का दौरा किया।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव श्री बान की मून ने 27-29 अप्रैल, 2012 के दौरान आधिकारिक तौर पर भारत की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह तथा लोक सभा अध्यक्ष, श्रीमती मीरा कुमार के साथ विचार-विमर्श किया तथा पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री, श्री गुलाम नबी आजाद तथा संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी के साथ बैठकें कीं। संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने 28 अप्रैल, 2012 को मुंबई का भी दौरा किया और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री पृथ्वीराज चौहान से मुलाकात की।

विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा ने आतंकवाद को अंतर्राष्ट्रीय शांति के लिए एक सर्वाधिक “शक्तिशाली खतरा” बताते हुए दिनांक 01 अक्टूबर, 2012 को न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा में यह उल्लेख किया कि “अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को निश्चित रूप से आतंकवाद के खिलाफ ‘किसी भी कीमत पर बर्दाश्त न किए जाने’ वाली पद्धति अपनानी चाहिए और उन्हें आतंकवाद के घुणित केंद्रों के नेटवर्क, प्रशिक्षण सुविधाओं और उनके वित्तपोषण सहित आतंकवाद की आधारभूत संरचना को तहस-नहस करने के प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।”

श्री एल.के.आडवाणी, संसद सदस्य तथा भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य ने 08 अक्टूबर, 2012 को न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा में “अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद को समाप्त करने के उपायों” पर अपना वक्तव्य दिया।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार

राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर कानून के शासन पर संयुक्त राष्ट्र महासभा की एक उच्च-स्तरीय बैठक में की गई घोषणा में यह उल्लेख किया गया कि राष्ट्रों के प्रमुख व सरकार और प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख जोकि 24 सितम्बर, 2012 को न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र के मुख्यालय में उपस्थित हुए थे, इस बात से सहमत थे कि कानून के शासन को सुदृढ़ करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सुशासन एक मूलभूत और अत्यावश्यक तत्व है और उन्होंने अन्य बातों के साथ-साथ, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार की आवश्यकता पर जोर दिया।

संयुक्त राष्ट्र महासभा के 67वें अधिवेशन के उद्घाटन समारोह के दौरान 25 सितम्बर, 2012 को जी-4 देशों की एक बैठक का भी आयोजन किया गया जहां सुरक्षा परिषद में सुधार से जुड़े विचारों का आदान-प्रदान हुआ। ब्राजील के विदेश मंत्री, जर्मनी के संघीय विदेश मंत्री, जापान के विदेश मंत्री और भारत के विदेश सचिव ने इस बैठक में भाग लिया।

इस बैठक के समापन के पश्चात जारी किए गए संयुक्त प्रेस वक्तव्य में यह उल्लेख किया गया कि मंत्रियों ने अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बनाए रखने तथा संगठन के अन्य उद्देश्यों और

मौजूदा भू-राजनीतिक वास्तविकताओं को बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित करने के उद्देश्य से दोनों श्रेणियों में विकासशील देशों के बढ़े हुए प्रतिनिधित्व की आवश्यकता के मद्देनजर कई देशों द्वारा दिए जा रहे योगदान को ध्यान में रखते हुए सुरक्षा परिषद में सुधार संबंधी अपने साझा दृष्टिकोण को दोहराया। जी-4 देशों ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के नए आगामी स्थायी सदस्यों के रूप में अपनी प्रतिबद्धताओं को दोहराया। साथ ही, इस संबंध में एक दूसरे की उम्मीदवारी का भी समर्थन किया। उन्होंने संवर्द्धित सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता में अफ्रीका के प्रतिनिधित्व की आवश्यकता संबंधी अपने मत की भी पुनः पुष्टि की। मंत्रियों ने यह मत व्यक्त किया कि सदस्य राष्ट्रों के बीच वार्ता प्रक्रिया में दोनों श्रेणियों में विस्तार के लिए मजबूत समर्थन प्रतिबिंबित होना चाहिए और उन्होंने अध्यक्ष महोदय की सिफारिशों के अनुरूप आगे किए जाने वाले विचार-विमर्श के लिए मूलभूत रूप से एक संक्षिप्त कार्यकारी दस्तावेज का मसौदा तैयार करने की मांग की।

शांति स्थापना

भारत पीसकीपिंग संबंधी विशेष समिति के भीतर पूर्ण वक्तव्यों तथा बहसों सहित संयुक्त राष्ट्र में शांति स्थापना नीति के साथ सक्रिय रूप से संलग्न था। भारत ने सैन्य प्रतिपूर्ति दरों की लंबे समय से लंबित रही समीक्षा संबंधी मुद्दे का निदान करने में संयुक्त राष्ट्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। भारत ने शांति स्थापना संबंधी अभियानों के लिए अधिदेश तैयार करने की प्रक्रिया में सुरक्षा परिषद में सक्रिय रूप से भाग लिया। भारत ने शांति स्थापना संबंधी गतिविधियों में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के कार्यकारी समूह के साथ अपनी संलग्नता को जारी रखा तथा शांति स्थापना के क्षेत्र में अन्य बहुपक्षीय पहलों में भी भाग लिया।

भारत संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना संबंधी गतिविधियों में एक बड़े और लगातार सहयोग देने वाले सदस्य के रूप में कार्य कर रहा है। वर्ष 2012 में भारत शांति स्थापना से जुड़े 10 अभियानों में 8093 सैन्यदलों के साथ सहयोग प्रदान करने वाला तीसरा सबसे बड़ा सैन्यदल सहायक राष्ट्र था जिसमें 4026 सैन्यदलों के साथ कांगो का प्रजातांत्रिक गणराज्य (एमओएनयूएससीओ) जोकि भारत का सबसे बड़ा शांति स्थापना से जुड़ा अभियान था, लेबनान (यूएनआईएफआईएल), सीरिया-इजराइल सीमा पर गोलन हाइट्स, लाइबेरिया (यूएनएमआईएल), कोटे डी इवोरी (यूएनओसीआई), साइप्रस (यूएनएफआईसीवाईपी), ईस्ट तिमोर (यूएनएमआईटी), हैती (एमआईएनयूएसटीएएच), अबेई (यूएनआईएसएफए) और हाल में दक्षिण सुडान (यूएनएमआईएसएस) के संबंध में 2244 सैन्यदलों के साथ सहायता प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त, एमओएनयूएससीओ और यूएनडीओएफ में भारत का एक फोर्स कमांडर और वरिष्ठ नेतृत्व के स्तर पर दक्षिणी सुडान में डिप्टी फोर्स कमांडर भी है। संयुक्त राष्ट्र से जुड़े अभियानों में नियोजित भारतीय सैन्यदलों तथा पुलिस कार्मिकों द्वारा चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में दिखाए गए उच्चस्तरीय पराक्रम ने संपूर्ण विश्व में अत्यधिक प्रशंसा प्राप्त की है।

जलदस्युता

सोमालिया के तटों पर की जाने वाली जलदस्युता ने न केवल संबंधित राष्ट्रों के समुद्री नौसंचालन और आर्थिक हितों को प्रभावित किया है अपितु इसने समुद्री यात्रियों, जोकि समुद्री नौसंचालन की जीवनरेखा है, की सलामती और सुरक्षा को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया है। हालांकि भारत सोमालिया के तट पर होने वाली जलदस्युता का सामना करने में गत कई वर्षों से प्रचालनात्मक स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों में सक्रिय रूप से सहयोग प्रदान करता आ रहा है। इस कार्य हेतु वह पायरेसी के विरुद्ध चलाए जा रहे अंतर्राष्ट्रीय अभियानों में अपने नौ-परिसंपत्तियों और संसाधनों को भी नियोजित करता है। भारत ने समुद्री यात्रियों की सलामती सुनिश्चित करते हुए इससे जुड़े कारणों पर भी विशेष ध्यान दिया है ताकि इसे नवंबर, 2012 में परिषद की भारतीय अध्यक्षता के दौरान सुरक्षा परिषद के संगत प्रस्तावों तथा जलदस्युता से जुड़े सुरक्षा परिषद के अध्यक्षीय वक्तव्य में स्वीकार किया जा सके।

सोमालिया के अपतटीय क्षेत्रों में जलदस्युता से जुड़ा कान्टेक्ट समूह

भारत ने सोमालिया के अपतटीय क्षेत्रों में जलदस्युता से जुड़े कान्टेक्ट समूह (सीजीपीसीएस), जोकि इच्छुक राष्ट्रों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का एक अनौपचारिक समूह है, की स्थापना जलदस्युता-विरोधी अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों के बीच समन्वय स्थापित करने हेतु जनवरी, 2009 में की। वर्ष 2012 के दौरान, भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने सीजीपीसीएस की सभी पूर्ण बैठकों तथा उसके पांच कार्यकारी समूह की चर्चाओं में भाग लिया। भारत ने 11 दिसम्बर, 2012 को न्यूयार्क में आयोजित किए गए 13वें पूर्ण अधिवेशन सहित सितम्बर-दिसंबर, 2012 में सीजीपीसीएस की बैठकों की भी अध्यक्षता की। सीजीपीसीएस द्वारा अन्य बातों के साथ-साथ, पारित सरकारी विज्ञापित में बंधकों को शीघ्रातिशीघ्र छोड़े जाने तथा उनका कल्याण सुनिश्चित करने के लिए व्यापक अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता पर जोर दिया।

आतंकवाद का विरोध

भारत संयुक्त राष्ट्र में चलाए जा रहे आतंकवाद विरोधी प्रयासों की अगुवाई कर रहा था। सुरक्षा परिषद की आतंकवाद विरोधी समिति (सीटीसी), जिसकी अध्यक्षता जनवरी, 2011 से भारत द्वारा की जाती रही है, की एक विशेष बैठक का 20 नवंबर, 2012 को आयोजन किया गया जिसमें आतंकवादी संगठनों के वित्तपोषण को रोकने और उस पर अंकुश लगाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। यह भारत की अध्यक्षता में समिति की ऐसी तीसरी विशेष बैठक थी। इस बैठक में वित्तीय कार्रवाई कार्यबल (एफएटीएफ), एफएटीएफ स्टाईल क्षेत्रीय निकाय (एफएसआरबी), आईएमएफ तथा विश्व बैंक सहित सदस्य राष्ट्रों और अंतर्राष्ट्रीय, क्षेत्रीय तथा उप-क्षेत्रीय संगठनों ने भाग लिया। इस बैठक का आयोजन सीटीसी द्वारा दिनांक 28 सितंबर, 2011 को आयोजित की गई उसकी विशेष बैठक में अंगीकृत परिणामी दस्तावेज प्राप्त होने की सफलता के उपलक्ष्य में



तत्कालीन विदेश मंत्री श्री एस एम कृष्णा 1 अक्टूबर, 2012 को न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा में



श्री एल के आडवाणी, संसद सदस्य तथा भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा में "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद को खत्म करने के उपाय" पर अपना वक्तव्य देते हुए दिनांक 8 अक्टूबर, 2012 को

किया गया जिसने आतंकवाद विरोधी क्षेत्र में “किसी भी कीमत पर बर्दाश्त न किए जाने” संबंधी तात्त्विक और गुणात्मक उच्चतर बेंचमार्क की शुरुआत की।

गुट निरपेक्ष आंदोलन

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 30–31 अगस्त, 2012 के दौरान ईरान के तेहरान में आयोजित राष्ट्रों तथा गुट निरपेक्ष आंदोलन (एनएएम) से जुड़ी सरकारों के प्रमुखों की XVI वें शिखर बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। इस सम्मेलन, जिसका विषय ‘संयुक्त वैश्विक अभिशासन के जरिए चिरस्थायी शांति’ था, का आयोजन पश्चिम एशिया तथा उत्तरी अफ्रीका में गंभीर राजनीतिक उथल-पुथल के बीच किया गया। इस सम्मेलन में प्रधान मंत्री की उपस्थिति ने सम्मेलन की रूपरेखा तथा उसके स्तर को ऊँचा उठाने में विशेष योगदान दिया जिसमें भारत के प्रत्यय-पत्रों को आंदोलन के अग्रणी देश के रूप में स्थापित किया गया।

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने सम्मेलन में दिए गए अपने भाषण के दौरान स्थायी खाद्य और ऊर्जा आपूर्ति, गरीबी उपशमन, भूख और अभाव का उन्मूलन, महामारी का सामना करने, साक्षरता स्तर सुनिश्चित करते हुए तथा सतत विकास सुनिश्चित करते हुए और जलवायु परिवर्तन का सामना करते हुए वैश्विक अर्थव्यवस्था तथा वित्त के प्रबंधन से संबंधित हमारे समय की केंद्रीय चुनौतियों का विशेष रूप से उल्लेख किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि “यह आंदोलन ऐसी अभिशासन संरचनाओं का प्रणेता बने जोकि प्रतिनिध्यात्मक, विश्वसनीय और प्रभावी हो।”

पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा ने इस सम्मेलन से पूर्व दिनांक 28–29 अगस्त, 2012 को आयोजित गुट निरपेक्ष देशों की मंत्रिस्तरीय बैठक में भाग लिया।

गुट निरपेक्ष आंदोलन से पूर्व शर्म-अल-शेख में 7–10 मई, 2012 के दौरान एक प्रारंभिक मंत्रिस्तरीय बैठक का आयोजन किया गया जिसमें विदेश मंत्रालय में विदेशी राज्य मंत्री श्री ई. अहमद ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई की।

राष्ट्रमंडल

संगठन की कुल आबादी के लगभग 60 प्रतिशत के साथ भारत ने राष्ट्रमंडल के सबसे बड़े सदस्य-राष्ट्र के रूप में संगठन के कार्यकलापों में अपनी संलग्नता को बनाए रखा है। भारत राष्ट्रमंडल के बजट तथा कार्यक्रमों के संबंध में चौथा सबसे बड़ा अंशदाता है और वह तकनीकी सहयोग संबंधी राष्ट्रमंडल निधि (सीएफटीसी) के संबंध में पांचवां सबसे बड़ा अंशदाता है।

विदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर ने लंदन में 14 जून, 2012 को आयोजित मंत्रिस्तरीय कार्य बल (एमटीएफ) की बैठक में भाग लिया। मंत्रिस्तरीय कार्यबल ने राष्ट्रमंडल के लक्ष्यप्रतिष्ठ व्यक्तियों के समूह की उन सिफारिशों पर विचार किया जिन्हें अधिक विस्तारित सलाह हेतु 2011 सीएचओजीएम द्वारा उन्हें संदर्भित किया गया था।

भारत ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के अधिवेशन के आयोजन के अवसर पर न्यूयार्क में 29 सितम्बर, 2012 को आयोजित की गई राष्ट्रमंडल के विदेश मंत्रियों की बैठक (सीएफएएमएम) में भी भाग लिया।

राष्ट्रमंडल महासचिव श्री कमलेश शर्मा का फरवरी, 2013 में आधिकारिक तौर पर भारत दौरे का कार्यक्रम है।

छठा अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस

संयुक्त राष्ट्र ने न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में एक विशेष कार्यक्रम के अवसर पर 2 अक्टूबर, 2012 को छठा अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाया। पूर्व विदेशी मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा ने इस समारोह की अध्यक्षता की तथा संयुक्त राष्ट्र महासभा के अध्यक्ष श्री बुक जेरेमिक इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। राजदूत (सेवानिवृत्त) पार्सकल एलेन नजारेथ द्वारा “गांधी- अहिंसावादी क्रान्तिकारी” नामक विषय पर आधारभूत व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

संयुक्त राष्ट्र प्रजातांत्रिक कोष (यूएनडीईएफ)

संयुक्त राष्ट्र प्रजातांत्रिक कोष की स्थापना भारत और संयुक्त राष्ट्र की बीच हुई सहभागिता के परिणामस्वरूप की गई थी और उसे प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज बुश तथा संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान द्वारा संयुक्त रूप से 14 सितम्बर, 2005 को न्यूयार्क में प्रारंभ किया गया था। वर्तमान में भारत यूएनडीईएफ में मार्च, 2012 तक 29.71 मिलियन अमेरिकी डॉलर का योगदान देने वाला दूसरा सबसे बड़ा अंशदाता है। भारत इस कोष को प्रजातांत्रिक मूल्यों और प्रक्रियाओं के संवर्द्धन का एक प्रभावी उपकरण समझता है और भारत ने यूएनडीईएफ में उसके शीर्षस्थ अभिशासी निकाय- सलाहकार बोर्ड के सदस्य के रूप में एक प्रभावशाली भूमिका निभायी है।

‘कल्याण और खुशहाली : एक नए आर्थिक प्रतिमान को परिभाषित करते हुए’ नामक विषय पर एक उच्चस्तरीय बैठक।

श्रीमती जयंती नटराजन, पर्यावरण और वन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ने 2 अप्रैल, 2012 को संयुक्त राष्ट्र में “कल्याण और खुशहाली : एक नए आर्थिक प्रतिमान को परिभाषित करते हुए” नामक विषय पर आयोजित की गई एक उच्चस्तरीय बैठक में भाग लिया। इस बैठक की अध्यक्षता भूटान के प्रधानमंत्री ने की।

77 देशों का समूह- विदेश मंत्रियों की वार्षिक बैठक

77 देशों के समूह के विदेश मंत्रियों की 36वीं वार्षिक बैठक का आयोजन 28 सितम्बर, 2012 को न्यूयार्क में किया गया। इस बैठक में पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई की। इस अवसर पर अंगीकृत किए गए मंत्रिस्तरीय घोषणा- पत्र में सतत विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के निष्कर्षों का स्वागत किया गया और वैश्विक समुदाय से गरीबी का सामना करने और विकासशील देशों की विकासपरक आकांक्षाओं को पूरा करने जैसे मुद्दों को वरीयता प्रदान करने की अपील की गई।

चुनाव

यह वर्ष संयुक्त राष्ट्र प्रणाली में भारत की उपस्थिति के सुदृढीकरण के रूप में एक महत्वपूर्ण वर्ष था। डॉ. न्यायमूर्ति दलवीर भंडारी संयुक्त राष्ट्र महासभा में फिलीपीन्स के प्रत्याशी को प्राप्त 58 मतों की तुलना में 122 मत प्राप्त करते हुए अप्रैल, 2012 में बहुमत द्वारा अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के लिए चुने गए (उन्होंने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में 15 मतों में से 13 मत प्राप्त किए)।

एक अन्य महत्वपूर्ण मुकाबले में, कमिटी ऑन दि लिमिट्स ऑफ कन्टीनेंटल शेल्फ (सीएलसीएस) के लिए भारत के प्रत्याशी डॉ. एस. राजन को जून, 2012 में पुनः चुन लिया गया।

यून- हेबिटेट की शासी परिषद, सतत विकास आयोग और अंतर्राष्ट्रीय समुद्र तल प्राधिकरण (आईएसबीए) के लिए भी भारत का चयन किया गया। अंतर्राष्ट्रीय रेशम उत्पादन आयोग (आईएससी) के लिए भारत की प्रत्याशी सुश्री इशिता रॉय को जून, 2012 में अंतर्राष्ट्रीय रेशम उत्पादन आयोग (आईएससी) का महासचिव चुना गया। यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन अर्थात् प्रशासन परिषद के लिए अक्टूबर, 2012 में रिकार्ड 146 मतों के साथ तथा पोस्टल ऑपरेशन्स परिषद के लिए 126 मतों के साथ भारत को पुनः चुन लिया गया।

आर्थिक और विकासशील मुद्दे

ईसीओएसओसी

आर्थिक और सामाजिक परिषद (ईसीओएसओसी) के वर्ष 2012 के महत्वपूर्ण अधिवेशन का आयोजन न्यूयार्क में 2-27 जुलाई, 2012 के दौरान किया गया। भारत के स्थायी प्रतिनिधि राजदूत हरदीप सिंह पुरी ने अधिवेशन के उच्चस्तरीय खंड में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया और उन्होंने "सहस्राब्दि विकासपरक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सभी स्तरों पर समावेशी, सतत और समतामूलक आर्थिक विकास के परिदृश्य में गरीबी का उन्मूलन करने हेतु उत्पादक क्षमता और उचित कार्य को बढ़ावा देना" नामक विषय पर मंत्रिस्तरीय वार्षिक समीक्षा बैठक को संबोधित किया। इस अधिवेशन के दौरान अंगीकृत किए गए मंत्रिस्तरीय घोषणा-पत्र में बेरोजगारी के बढ़ते उच्च स्तरों के प्रति गंभीर चिंता व्यक्त की गई और विकासशील देशों की उत्पादक क्षमता को बढ़ाने के लिए प्रभावी उपायों की मांग की गई।

ईसीओएसओसी की विशेष मंत्रिस्तरीय बैठक

यह विचार-विमर्श करने के लिए कि परिषद को सामाजिक, आर्थिक और विकासपरक मुद्दों पर संयुक्त राष्ट्र के प्रमुख समन्वयकारी प्लेटफॉर्म के रूप में किस प्रकार सुदृढ किया जाए, न्यूयार्क में 24 सितम्बर, 2012 को ईसीओएसओसी की एक विशेष मंत्रिस्तरीय बैठक का आयोजन किया गया। अपर सचिव (आईओ), विदेश मंत्रालय ने इस बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया और उन्होंने परिषद से वैश्विक अभिशासन संरचना में विकासशील देशों की भागीदारी बढ़ाने के लिए प्रयास किए जाने का अनुरोध किया।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ)

भारत ने 21-26 मई, 2012 के दौरान जेनेवा में आयोजित की गई 65वीं विश्व स्वास्थ्य सभा (डब्ल्यूएचए) में भाग लिया। भारत ने इस बात पर बल दिया कि प्रत्येक नागरिक अनिवार्य स्वास्थ्य रक्षा सेवाओं का हकदार है और उन्हें राष्ट्र द्वारा प्रत्याभूत कराया जाना चाहिए। पोलियो उन्मूलन में भारत की सफलता की डब्ल्यूएचए द्वारा व्यापक रूप से प्रशंसा की गई है।

भारत ने 2 नवंबर, 2012 को वैश्विक मानसिक स्वास्थ्य कार्ययोजना (2012-2013) पर सदस्य राष्ट्रों और संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों के साथ आयोजित पहली अनौपचारिक परामर्श बैठक में भी भाग लिया जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ, यह कहा गया था कि योग, ध्यान और परामर्श को मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन और मानसिक रोग व आत्महत्या के रोकथाम के लिए अपनायी गई समग्र कार्ययोजना का एक भाग होना चाहिए।

विश्व मौसमविज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ)

जलवायु सेवाओं संबंधी वैश्विक रूपरेखा (जीएफसीएस) तैयार करने के लिए मसौदा कार्यान्वयन योजना (डीआईपी) और मसौदा अभिशासन संरचना पर विचार करने के लिए 29-31 अक्टूबर, 2012 के दौरान डब्ल्यूएमओ कांग्रेस के एक असाधारण अधिवेशन [कांग्रेस के 62 वर्ष पुराने इतिहास में अब तक का ऐसा पहला अधिवेशन] का आयोजन किया गया जैसा कि वर्ष 2009 में विश्व जलवायु सम्मेलन-3 (एचएलडी- डब्ल्यूसीसी-3) में उच्च स्तरीय घोषणा-पत्र में निदेशित किया गया था। सचिव, भू विज्ञान मंत्रालय ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। डब्ल्यूएमओ की कार्यकारी परिषद और ईसीटीटी के सदस्य के रूप में भारत ने आगे यह सुनिश्चित करते हुए कि (i) सीएफसीएस के सभी पहलुओं में सरकारों की एक केंद्रीय भूमिका थी। (ii) अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, नागरिक समाज और निजी दाताओं को शामिल करते हुए नॉन-स्टेट एक्टर्स की संलग्नता पर्यवेक्षकों के रूप में स्थापित संयुक्त राष्ट्र तंत्र के अनुरूप था और (iii) आंकड़ों का आदान-प्रदान राष्ट्रों के संप्रभुता संबंधी विशेषाधिकार के अनुसार होगा, मसौदा दस्तावेज में अपने और अन्य विकासशील देशों के हितों को ध्यान में रखा। इस असाधारण अधिवेशन में यह भी निर्णय लिया गया कि सीएफसीएस के लिए निधियन डब्ल्यूएमओ के कोर बजट से किया जाएगा। जीएफसीएस को अब स्थापित कर दिया गया है।

संयुक्त राष्ट्र एशिया और प्रशांत आर्थिक एवं सामाजिक आयोग (यूएनईएससीएपी)

भारत ने 17-23 मई, 2012 के दौरान बैंकॉक में आयोजित किए गए यूएनईएससीएपी के 68वें वार्षिक अधिवेशन में भाग लिया। इस अधिवेशन का विषय 'एशिया तथा प्रशांत में क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देना' था। भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री श्री ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया ने किया जिन्होंने भारत की ओर से वक्तव्य दिया। विषयगत शीर्षक पर मंत्रिस्तरीय गोलमेज सम्मेलन, जी-20 मैक्सिको सम्मेलन- एशिया-पेसिफिक

का संदर्भ और ईएससीएपी क्षेत्रीय संस्थाओं पर एक सेमिनार सहित 68वें अधिवेशन के भाग के रूप में कई समारोहों का आयोजन किया गया। वार्षिक अधिवेशन के दौरान विभिन्न मुद्दों पर 11 प्रस्तावों को स्वीकार किया गया। इस अधिवेशन के दौरान यूएनएपीसीआईएम और एपीसीआईसीटी की शासी परिषदों के चुनाव हुए। इन दोनों चुनावों में अधिसंख्यक मतों के साथ भारत को पुनः चुन लिया गया।

संयुक्त राष्ट्र ड्रग्स और अपराध कार्यालय (यूएनओडीसी)

सचिव, कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग तथा सचिव, केंद्रीय सतर्कता आयोग वाले 2 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 18-22 जून, 2012 को भ्रष्टाचार के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन कार्यान्वयन समीक्षा समूह (यूएनसीएससी) की बैठक में भाग लेने के लिए वियना की यात्रा की।

सतर्कता आयुक्त ने संयुक्त राष्ट्र ड्रग्स और अपराध कार्यालय और अंतर्राष्ट्रीय भ्रष्टाचार निरोधी अकादमी (आईएसीए) के विशेषज्ञ समूह की 23-26 सितम्बर, 2012 के दौरान आयोजित की गई बैठक में भाग लेने के लिए लक्जमबर्ग, आस्ट्रिया की यात्रा की।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ)

भारत ने 29 मई - 12 जून, 2012 के दौरान जेनेवा में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अंतर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन (आईएलसी) के 101 वें अधिवेशन में भाग लिया। श्रम और रोजगार मंत्री श्री मल्लिकार्जुन खड़गे ने अंतर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया। बिहार, हरियाणा और केरल के श्रम मंत्रियों ने भी इस सम्मेलन में भाग लिया। भारत ने आईएलओ कन्वेंशन के पुराने हो जाने के कारण उसमें संशोधन किए जाने की आवश्यकता पर जोर दिया ताकि विविध सामाजिक-आर्थिक दशाओं पर ध्यान देते हुए सभी आईएलओ सदस्य राष्ट्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप भविष्य के लिए शीर्षकों के चयन के विकल्प का विस्तार किया जा सके।

भारत ने 5-15 नवंबर, 2012 के दौरान जेनेवा में आयोजित आईएलओ की शासी परिषद (जीबी) के 316 वें अधिवेशन में भी भाग लिया। सचिव, श्रम और रोजगार मंत्रालय के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने शासी परिषद और आईएलसी के कार्यकरण में सुधार लाने के लिए 16 सदस्यों में से एक सदस्य के रूप में कार्यकारी दल में भाग लिया। (कार्यकारी दल में 8 वर्कर्स और 8 नियोक्ता- सदस्य हैं)। भारत ने वर्ष 2015 के पश्चात विकासपरक एजेंडा में उचित कार्य से संबंधित चर्चाओं में भी भाग लिया और उसने अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन सामाजिक न्याय घोषणा-पत्र, 2008 के अनुसार सामाजिक न्याय के साथ समावेशी वैश्वीकरण के उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

अंतर-संसदीय संघ (आईपीयू)

डब्ल्यूटीओ पर अंतर-संसदीय सम्मेलन(आईपीसी) के वर्ष 2012 के वार्षिक अधिवेशन का आयोजन 15-16 नवंबर 2012 के दौरान जेनेवा में किया गया। इस बैठक के पूर्व 26 सितम्बर 2012 को जेनेवा में डब्ल्यूटीओ पर आईपीसी की संचालन समिति के 26वें

अधिवेशन का आयोजन किया गया। संसद सदस्य श्री पी.सी. चाको ने आईपीसी संचालन समिति की बैठक में भाग लिया और उन्होंने आईपीसी के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने के लिए 3 सदस्यीय भारतीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल का भी नेतृत्व किया।

आईपीयू की 127वीं सभा का आयोजन 21-26 अक्टूबर, 2012 के दौरान क्यूबेक शहर में किया गया। लोक सभा अध्यक्ष के नेतृत्व में भारत के संसद सदस्यों के एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने इस सभा में भाग लिया।

आईपीयू तथा भारत की संसद द्वारा संयुक्त रूप से 3-4 अक्टूबर 2012 के दौरान नई दिल्ली में संसद के महिला अध्यक्षा की 7वीं बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा किया गया। भारत के उप राष्ट्रपति तथा राज्य सभा के सभापति श्री एम. हामिद अंसारी, लोक सभा अध्यक्षा श्रीमती मीरा कुमार और अंतर-संसदीय संघ (आईपीयू) के अध्यक्ष श्री अब्देलवहद राडी ने उद्घाटन समारोह को संबोधित किया।

यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन (यूपीयू)

यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन (यूपीयू) के 25वें सम्मेलन का आयोजन 24 सितम्बर- 15 अक्टूबर, 2012 के दौरान दोहा, कतर में किया गया। इस सम्मेलन के दौरान यूपीयू के महानिदेशक, यूपीयू के उप महानिदेशक, प्रशासन परिषद (सीए) और पोस्टल ऑपरेशंस परिषद (पीओसी) के लिए चुनाव हुए और शासी परिषद तथा पोस्टल ऑपरेशंस परिषद के लिए पर्याप्त बहुमत के साथ भारत का सफलतापूर्वक चयन कर लिया गया।

इस सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व संचार और सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री सचिन पायलट ने किया जिन्होंने आर्थिक और सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देने में पोस्टल क्षेत्र की भूमिका पर आयोजित किए गए अधिवेशनों में से एक में मंत्रिस्तरीय खंड में पेनेलिस्ट के रूप में भी भाग लिया।

संयुक्त राष्ट्र - हैबिटेट

वर्ल्ड अर्बन फोरम (डब्ल्यूयूएफ) के छठे अधिवेशन का आयोजन 3-7 सितम्बर 2012 के दौरान नेपल्स, इटली में किया गया। इस अधिवेशन का विषय 'शहरी भविष्य' था। संयुक्त राष्ट्र-हैबिटेट की रिपोर्ट '2012 के शहरों वाले राष्ट्र' का 17 अक्टूबर 2012 को नई दिल्ली में एक समारोह में औपचारिक रूप से प्रकाशन किया गया। सचिव, आवास और शहरी गरीबी उन्मूलन मंत्रालय इस अवसर पर उपस्थित थे।

पर्यावरणीय मुद्दे

सतत विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (आरआईओ +20)

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 20-22 जून 2012 के दौरान रियो डी जिनेरो में सतत विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में भारतीय



तेहरान ईरान में 30 अक्टूबर 2012 में हुए XVI गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह अन्य राज्य प्रमुख/सरकारों के प्रतिनिधियों के प्रमुखों के साथ



प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह जी-20 के शिखर सम्मेलन में लॉस काबोस मैक्सिको में 18 जून 2012 को

प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। प्लीनरि में बोलते हुए उन्होंने सतत विकास के संबंध में भारत की स्थायी प्रतिबद्धता से अवगत कराया तथा यह उल्लेख किया कि “हम जो भविष्य चाहते हैं उसे एक ऐसा भविष्य होना चाहिए जिसमें सतत विकास हेतु सभी के लिए पारिस्थितिक और आर्थिक गुंजाइश हो।” पर्यावरण और वन मंत्रालय में राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती जयंती नटराजन ने भी इस सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन ने सतत विकास हेतु वैश्विक प्रतिबद्धता को दोहराते हुए रियो के सिद्धांतों, खासतौर पर साझा और अलग-अलग जिम्मेदारियों वाले सिद्धांत की दृढ़ता के साथ पुनः पुष्टि की। इसने समता के साथ वैश्विक विकास की प्रक्रिया का अनुसरण करने की पुरजोर मांग की और इसने गरीबी उन्मूलन को सतत विकास प्राप्त करने की दिशा में सबसे बड़ी वैश्विक चुनौती के रूप में स्वीकार किया। इस सम्मेलन में उत्तर एमडीजी अवधि में कार्यान्वयन हेतु सतत विकास संबंधी लक्ष्यों (एसडीजी) के एक समुच्चय का विकास करने की प्रक्रिया शुरू करने का निर्णय लिया गया। सतत विकास संबंधी एजेंडा के समर्थन में, इसने एक वित्तीय रणनीति तैयार करने और प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण को सुविधाजनक बनाने तथा विकासशील देशों को पहचानने के लिए एक प्रौद्योगिकी तंत्र के विकल्पों को खोजने की मांग की।

जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन

जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन के लिए सदस्य राष्ट्रों (सीओपी- 18) का 18वां सम्मेलन 8 दिसम्बर, 2012 को दोहा, कतर में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में क्योटो प्रोटोकाल के सदस्य राष्ट्रों (सीएमपी-8) की 8वीं बैठक को भी शामिल किया गया। सीओपी-18 तथा सीएमपी -8 के लिए भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विशेष सचिव, पर्यावरण और वन मंत्रालय ने किया।

दोहा सम्मेलन द्वारा पारित किए गए मूलभूत निर्णयों में क्योटो प्रोटोकाल की दूसरी प्रतिबद्धता अवधि, बाली कार्ययोजना (मन्दी, अनुकूलीकरण, वित्त, प्रौद्योगिकी तथा क्षमता निर्माण पर) के कार्यक्रम पर निर्णयों के एक समुच्चय तथा डरबन प्लेटफार्म के अंतर्गत कार्ययोजना को अंतिम रूप प्रदान किया जाना शामिल था। दोहा सम्मेलन की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि दूसरी प्रतिबद्धता अवधि जोकि विकासशील देशों की एक प्रमुख मांग थी, को कार्यशील बनाने के लिए क्योटो प्रोटोकाल में संशोधन करना था।

बीएसआईसी समूह के भाग के रूप में भारत, चीन, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका के बीच एक घनिष्ठ समन्वय नई दिल्ली (फरवरी, 2012), जोहान्सबर्ग (जुलाई, 2012), ब्रासीलिया (सितम्बर, 2012) और बीजिंग (नवंबर, 2012) में हुई बैठकों के साथ दोहा सम्मेलन में भी लगातार बना रहा। भारत ने एकसमान विचार वाले विकासशील देशों के समूह के साथ भी घनिष्ठता के साथ कार्य किया जिसने दोहा सम्मेलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

जैव विविधता पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन

जैव सुरक्षा पर कार्टाजेना प्रोटोकाल के लिए सदस्य राष्ट्रों (सीओपी/एमओपी-6) की छठी बैठक के अनुसरण में भारत ने

8-19 अक्टूबर, 2012 के दौरान हैदराबाद में जैव विविधता पर कन्वेंशन (सीबीडी) के लिए सदस्य राष्ट्रों (सीओपी-11) के सम्मेलन की 11वीं बैठक का आयोजन किया। इन बैठकों की अध्यक्षता सीओपी-11 के अध्यक्ष के रूप में पर्यावरण और वन मंत्री श्रीमती जयंती नटराजन ने की। 170 सदस्य राष्ट्रों, अन्य सरकारों, संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों, अंतर-सरकारी, गैर सरकारी, देशज तथा स्थानीय सामुदायिक संगठनों, शैक्षिक जगत तथा निजी क्षेत्र के लगभग 6000 सदस्यों वाले प्रतिनिधिमंडल ने सीओपी-11 में भाग लिया। सीबीडी सीओपी-11 ने रणनीतिक, वास्तविक, प्रशासनिक, वित्तीय और बजटीय मुद्दों पर 33 निर्णय दिए। सीओपी-11 की उच्च स्तरीय खंड बैठक का आयोजन 16-19 अक्टूबर, 2012 के दौरान किया गया। इसका उद्घाटन प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा 16 अक्टूबर, 2012 को किया गया। प्रधान मंत्री ने अपने भाषण में नगोया प्रोटोकाल के संबंध में भारत की ओर से अभिपुष्टि की। भारत अब इस प्रोटोकाल की अभिपुष्टि करने वाला सातवां देश है। प्रधान मंत्री ने ‘हैदराबाद प्लेज’ की भी शुरुआत की जिसमें उन्होंने यह घोषणा की कि भारत सरकार ने संस्थागत तंत्र को सुदृढ़ करने के लिए सीओपी की भारतीय अध्यक्षता के दौरान 50 मिलियन अमेरिकी डालर की राशि उद्दिष्ट करने तथा भारत में जैव विविधता के संरक्षण हेतु तकनीकी और मानव क्षमताओं का विकास करने और अन्य विकासशील देशों में सदृश क्षमता को बढ़ावा देने का निर्णय लिया है। सीओपी-11 के अध्यक्ष द्वारा 19 अक्टूबर, 2012 को समापन समारोह के अवसर पर प्लेनरि अधिवेशन के निष्कर्ष तथा चार पैनल परिचर्चा बैठकों को चेयर्स समरी के रूप में प्रकाशित किया गया। सीओपी-11 वर्ष 2015 तक विकासशील देशों को दिए जा रहे जैव विविधता संबंधी अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संसाधनों के निर्गम को दोगुना करने के अंतरिम लक्ष्य पर किए गए करार के संबंध में तथा इस स्तर को कम से कम वर्ष 2020 तक बनाए रखने के संबंध में विशेष रूप से उल्लेखनीय था।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूनेप)

16 से 21 अप्रैल, 2012 तक पनामा शहर में आयोजित आईपीबीईएस निर्माण के द्वितीय पूर्ण सत्र में भारत का प्रतिनिधित्व किया गया जिसने औपचारिक तौर पर जैव विविधता और पारिस्थितिक सेवाओं (आईपीबीईएस) पर अंतरसरकारी मंच स्थापित किया। आईपीबीईएस सचिवालय की मेजबानी करने के लिए जर्मनी के शहर बोन का चयन किया गया। इस समय आईपीबीईएस सचिवालय का काम यूनेप करता है।

पारे (मर्करी) के बारे में कानूनी रूप से बाध्य संधि पर पुंटा डेल ऐस्ट, उरुग्वे में जून, 2012 में आयोजित अंतरसरकारी समझौता समिति (आईएनसी-4) की चौथी बैठक में भारत का प्रतिनिधित्व किया गया। यूनेप आईएनसी के लिए सचिवालय का कार्य करता है।

सामाजिक और मानवाधिकार मुद्दे

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (यूएनएचआरसी)

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (यूएनएचआईसी) वैश्विक आवधिक समीक्षा (यूपीआर) का द्वितीय चक्र मई, 2012 में यूएनएसआरसी के

13वें सत्र के साथ आरंभ हुआ। यूपीआर के 13वें एवं 14वें सत्र में बीस देशों के मानवाधिकार की स्थितियों की संवीक्षा की गई। भारत का द्वितीय यूपीआर 24 मई, 2012 को आयोजित किया गया। भारत के शिष्ट मंडल की अगुवाई भारत के महाधिवक्ता श्री गुलाम ई वहनावती द्वारा की गई। भारत के यूपीआर निष्कर्षों का अंगीकरण सितंबर, 2012 में मानवाधिकार परिषद के 21वें में सत्र किया गया।

प्रतिष्ठित भारतीय महत्वपूर्ण संधि— मॉनीटरिंग निकायों और मानवाधिकार तंत्रों के सदस्यों के रूप में निरंतर कार्य करते रहे जिसमें श्री दिलीप लाहिरी (जाति भेदनिवारण समिति के सदस्य); श्रीमती इंदिरा जयसिंह (महिलाओं के प्रति भेद निवारण समिति के सदस्य; श्री चन्द्रशेखर दासगुप्ता (आर्थिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक अधिकारों की समिति के सदस्य) शामिल थे।) जब अधिकार पर विशेष रिपोर्टर के रूप में श्री आनंद ग्रोवर ने शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के उच्चतम अत्यावधिक साध्य मानक का उपयोग करते हुए श्री किशोर सिंह ने भी शिक्षा के अधिकार पर विशेष रिपोर्टर के रूप में अपना अधिदेश जारी रखा।

इतर—न्यायिक सार या विवाचन—निष्पादन के विशेष रिपोर्टर श्री क्रिस्टाफ हेंस ने 19 से 30 मार्च, 2012 तक भारत का दौरा किया। उन्होंने गुजरात केरल, जम्मू एवं कश्मीर, असम और पश्चिम बंगाल की यात्रा की। उन्होंने गृह सचिव, विदेश सचिव, विधि एवं न्याय सचिव, 5 राज्यों के प्रमुख सचिवों से मुलाकात की। वे राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग एवं राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्षों, संयुक्त सचिव (मानवाधिकार) और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से मिले। वे दिल्ली में राष्ट्र संघ की एजेंसियों के सदस्यों से भी मिले।

शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त (यूएनएचसीआर)

यूएनएचसीआर (एक्स काम) का 63वां सत्र 1 से 5 अक्टूबर, 2012 में आयोजित किया गया। यूएनएचसीआर के कार्यक्रमों और संचालनों का अंतर्राष्ट्रीय संरक्षण के प्रमुख अधिदेश का चरम बिन्दु तक अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए भारत ने बैठक में रचनात्मक भूमिका निभायी और अन्य विकासशील देशों के साथ मिलकर काम किया।

शरणार्थियों के संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त ने भारत और यूएनएचसीआर के बीच चौथी वार्षिक खुले द्विपक्षीय परामर्शों के लिए 19 से 20 दिसम्बर, 2012 तक भारत का दौरा किया। ये परामर्श 2008 में आरंभ किए गए थे। भारतीय शिष्ट मंडल का नेतृत्व अपर सचिव (आईओ) विदेश मंत्रालय द्वारा किया जाएगा।

प्रव्रजन के लिए अंतर्राष्ट्रीय संगठन (आईओएम)

आईएम परिषद का 101 वां सत्र 27 से 30 नवम्बर, 2012 के बीच किया गया। सत्र आईओएम प्रव्रजन संकट के संचालन रूपरेखा (आईएमसीओएफ) के संकल्प के अंगीकरण के लिए उल्लेखनीय था। भारत ने इस संकल्प के वार्तालाप में प्रमुख भूमिका निभायी और दूसरे समान सोच रखने वाले देशों के साथ मिलकर राष्ट्रीय कानूनों

को मान्यता देने की आवश्यकता को प्रदर्शित करने के संकल्प को फिर से खड़ा करते और "प्रव्रजन का मानवीय एवं सही ढंग से प्रबंधन" करने के लिए आईएमसीओएफ का अनुपालन करते हुए संतुलन सुनिश्चित किया।

प्रव्रजन और विकास पर वैश्विक मंच (जीएफएमडी)

जीएफएमडी 2012 की छठी वार्षिक शिखर बैठक 21–22 सितम्बर, 2012 को मॉरीशस के पेलीस में आयोजित की गयी। संयुक्त राष्ट्र संघ, जेनेवा के स्थायी प्रतिनिधि श्री दिलीप सिंहा ने शिष्ट मंडल का नेतृत्व किया। भारत ने वर्तमान अध्यक्ष के अनुरोध पर एकबारगी और प्रथम बारगी अनुदान के रूप में 50,000 अमेरिकी डालर दिए। बैठक में चर्चाओं के लिए मंच के रूप में फोरम बनाए रखने प्रेषक एवं गंतव्य देशों के बीच प्रव्रजन की सूचना की स्वैच्छिक साझेदारी करने के लिए साधनों की जांच की गयी। 2012 जीएफएमडी शिखर बैठक में जो विचार विमर्श शामिल थे उनमें अक्टूबर, 2013 में प्रव्रजन पर यूएन उच्च स्तरीय संवाद की न्यूयार्क में आयोजित की जाने वाली द्वितीय बैठक के फोरम के भविष्य पर शिखर सम्मेलन की सिफारिशों को प्रेषित करना शामिल था। इन सिफारिशों में अन्य के साथ—साथ शामिल था : (i) चर्चाओं की अनौपचारिक और स्वैच्छिक प्रकृति बरकरार रखना (ii) पुरालेखीय और प्रशासनिक सूचना के भंडार के रूप में जीएफएमडी की इकाई को मजबूती देना और (iii) जीएफएमडी के निधियन के अंशांकन भविष्य सूचना का प्रस्ताव रखना।

सम्यताओं का यूएन सहयोग

भारत ने 31 मई से 1 जून, 2012 के बीच इस्तानबुल में यूएनएओसी भागीदारों के मंच भाग लिया जिसमें अंकारा में भारत के राजदूत ने भी 28 सितम्बर 2012 को संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्यालय, न्यूयार्क में 28 सितम्बर 2012 को आयोजित मित्रों के यूएनएओसी समूह (मंत्रि स्तरीय) बैठक में भाग लिया। इस अवसर पर, संयुक्त सचिव (यूएनपी) ने लिखित मध्यस्थता सार तैयार किया जिसमें उन्होंने पश्चिम—इस्लाम विभाजन पर यूएनएओ के प्राथमिक केन्द्र बिन्दु का मुद्दा उठाया। मध्यस्थता में उन्होंने कहा कि यूएनएओ को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने दृष्टिकोण को अत्यधिक संकीर्णता के साथ नहीं रखना चाहिए क्योंकि अन्य ऐसी सम्यताएं, धर्म और संस्कृतियां भी हैं जो एओसी के चालू पहलुओं पर सार्थक ढंग से योगदान दे सकेंगी।

यूएनसीएलओएस

समुद्री कानून पर संयुक्त राष्ट्र संघ की 1982 की बैठक के भागीदार राज्यों की 22वीं बैठक 4 से 11 जून 2012 को आयोजित की गयी थी। भारतीय शिष्टमंडल ने सम्मेलन के प्रावधानों के कार्यान्वयन के महत्व पर विशेष बल दिया जो समुद्र के सीमांकन से लेकर पर्यावरण नियंत्रण, वैज्ञानिक अनुसंधान, आर्थिक एवं वाणिज्यिक गतिविधियां, प्रौद्योगिकी और विवाद व्यवस्था तक सभी पहलुओं को विनियमित करता है। कांटेनेंटल शेल्फ (सीएलसीएस) की सीमाओं पर आयोग के कार्यकलापों में प्रगति को ध्यान में रखते हुए, भारत

ने साधारण सभा के उस निर्णय का स्वागत किया जिसमें सीएलसीएस के कार्यक्रम की अवधि को वर्ष में 15 सप्ताह से बढ़ाकर 21-26 सप्ताह कर दिया गया है। बढ़ाई गई समय सीमा के साथ, सीएलसीएस बढ़ाए गए कंटीनेंटल शेल्फ के लिए प्रस्तुत दावों पर तीव्रता से विचार करने में समर्थ होगा। भारत ने समुद्र में हो रही डकैती की घटनाओं पर गहरी चिंता व्यक्त की और साझीदार देशों के बीच अधिक सहयोग, समर्थन और समन्वय के साथ इस स्थिति से प्रभावकारी ढंग से निपटने की आवश्यकता पर बल दिया। भागीदार देशों की बैठक के दौरान, सीएलसीएस के सदस्यों के चुनाव आयोजित किए गए। भारत के नामित सदस्य डा. एस राजन को वोटों के पहले दौर में फिर से चयनित किया गया जिसमें उन्होंने 161 में से 112 वोट हासिल किए।

यूनेस्को

यूनेस्को के साथ भारत के सहयोग के संबंध में वर्ष के दौरान हुई एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी पेरिस में 10 जुलाई 2012 को मानव संसाधन और विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल और यूनेस्को के महानिदेशक सुश्री इरिना बोकोवा की उपस्थिति में शांति एवं निरंतर विकास के लिए महात्मा गांधी संस्थान (एमजीआईपी) की स्थापना के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करना। इसके पश्चात 11 नवंबर 2012 को नई दिल्ली में एमजीआईपी के औपचारिक उद्घाटन किया गया। एमजीआईपी, एशिया प्रशांत क्षेत्र में प्रथम श्रेणी के यूनेस्को संस्थान, से यह अपेक्षा की जाती है कि यह एक प्रमुख क्षेत्रीय संस्थान के रूप में विकसित होगा और शांति एवं सतत विकास के मुद्दों पर विचारक मंडल का काम करेगा।

महानिदेशक सुश्री इरिना बोकोवा ने नई दिल्ली में आयोजित 9वें ई-9 मंत्री स्तर की समीक्षा बैठक में भाग लेने के लिए 9-13 नवंबर 2012 को भारत का दौरा किया जिसमें ई-9 देशों के मंत्रियों ने भाग लिया। एक दिल्ली प्रतिज्ञा जारी की गयी जिसमें सभी के लिए अंतर्वेश, संगत और गुणता शिक्षा (ईएफए) प्रदान किए जाने पर बल दिया गया। बैठक ईएफए संचालन में गतिरोध का पता लगाने में सफल रही और इसमें सभी के लिए शिक्षा की उपलब्धि हेतु एक उत्तर- 2015 कार्यसूची तैयार करने का संकल्प लिया गया।

यूनेस्को ने 14-16 मई 2012 को शंघाई में तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण (टीवीईटी) पर तीसरी अंतर्राष्ट्रीय बैठक आयोजित की, जिसमें 107 देशों से 540 भागीदार एकत्रित हुए और "शंघाई मतैक्य" का अंगीकार किया गया जिसमें टीवीईटी के परिवर्तन एवं विस्तार के साथ-साथ सतत विकास और भागीदारियों पर अत्यधिक ध्यान देने का आह्वान किया गया। मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय के राज्य मंत्री डा. डी पुरन्देश्वरी के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय शिष्ट मंडल ने शंघाई में यूनेस्को बैठक में भाग लिया। शंघाई मतैक्य के अंगीकार में भारतीय शिष्टमंडल एक मत था और उसने विश्व में बढ़ती हुई बेरोजगारी को हल करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा अवसरों को बढ़ाने के लिए अधिक प्रयास किए जाने की मांग की।

यूनेस्को के मानव एवं जीवन मंडल के समन्वय परिषद की अंतर्राष्ट्रीय समन्वय परिषद का 24वां सत्र यूनेस्को मुख्यालय में 9-13 जुलाई, 2012 को आयोजित किया गया। परिषद ने भारत में अचानकमार-अमरकंटक जीवमंडल रिजर्व के नामांकन का जीवमंडल के विश्व नेटवर्क के लिए अनुमोदन किया।

संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक प्रभाव (यूएनएआई)

भारत ने डीपीआई के शैक्षणिक संघात (यूएनएआई) पहल में वृद्धि करने और योगदान देने के लिए सार्वजनिक सूचना के यूएन विभाग के साथ मिलकर काम किया। भारतीय मिशन ने यूएनएआई के साथ सहयोग करके 30 अप्रैल 2012 को सूचना समिति के तत्वावधान में एक अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाने के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया। भारतीय मिशन ने "विश्वास, संवाद और एकीकरण" नामक अंतर-धार्मिक संवाद पर एक सेमिनार का समर्थन किया और यूएनएआई के "अज्ञान असहिष्णुता" कार्यक्रम के भाग के रूप में 26 नवंबर 2012 को एक सूफी संगीत-गोष्ठी की मेजबानी की। इसके अलावा, भारत ने मई 2012 में यूएनएआई को 100,000 अमेरिकी डालर का वित्तीय योगदान दिया।

आर्कटिक परिषद

भारत ने 6 नवंबर 2012 को आर्कटिक परिषद में पर्यवेक्षक पद प्राप्त करने के लिए आवेदन किया जो सामान्य आर्कटिक मुद्दों में विशेष रूप से आर्कटिक में सतत विकास और पर्यावरणीय संरक्षण के मुद्दों में आर्कटिक स्वदेशी समुदायों और अन्य आर्कटिक निवासियों के साथ सहयोग, समन्वय और आर्कटिक राज्यों के बीच पारस्परिक तालमेल बढ़ाने के लिए साधन मुहैया करने वाला एक उच्च स्तरीय अंतर सरकारी फोरम है।

युवा व्यावसायिक कार्यक्रम

भारत में पहली बार राष्ट्र संघ युवा व्यावसायिक कार्यक्रम (वाईपीपी) परीक्षा 5 दिसम्बर, 2012 को दिल्ली विश्व विद्यालय के कला संकाय में आईसीसीआर और विदेश मंत्रालय के सहयोग से संचालित की गई। परीक्षा छः कार्य स्ट्रीम में ली गयी और परीक्षा में 164 पूर्व-चयनित अभ्यर्थियों ने भाग लिया।

कानून और व्यवहार संधि

01 मई 2012 को भारत ने संबंधी प्रस्तुत किये और अंतर्राष्ट्रीय वैक्सीन संस्थान स्थापना करार संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव, इस करार के न्यासी की हैसियत से काम कर रहे थे। भारत ने मई, 1997 में करार पर हस्ताक्षर किए थे।

भारत ने राष्ट्र संघ के महासचिव के पास आनुवंशिक संसाधनों के अभिगम संबंधी नगोया प्रोटोकॉल और जीव वैज्ञानिक विविधता से संबंधित कानून के उपयोग से प्रोद्भूत होने वाले लाभों की उचित और समान भागीदारी की अभिपुष्टि के दस्तावेज जमा किए, जिन्हें 29 अक्टूबर, 2010 को अंगीकृत किया गया और जिस पर भारत ने 11 मई, 2011 को हस्ताक्षर किए।

विधिक और संधि प्रभाग

राष्ट्र संघ अंतर्राष्ट्रीय कानून

अंतर्राष्ट्रीय उग्रवाद के उन्मूलन के उपाय

विश्व प्रति उग्रवाद रणनीति के भाग के रूप में, राष्ट्र संघ (यूएन) की आम सभा ने राज्यों से जहां उपयुक्त हो वहां उग्रवाद से संबंधित तथ्यों पर सूचना आदान-प्रदान में तीव्रता लाने का अनुरोध किया ताकि गलत या बिना जांच की गयी सूचना के प्रसारण में रोक लगायी जा सके। राष्ट्र संघ की साधारण सभा ने राज्यों से फिर से यह अनुरोध किया कि वे अपने क्षेत्रों में उन नागरिकों या व्यक्तियों पर कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित करें जिन्होंने किसी भी उग्रवादी गतिविधि को वित्तीय समर्थन दिया हो। जहां तक उग्रवाद पर तदर्थ समिति का संबंध है, यह निर्णय लिया गया था कि तदर्थ समिति वर्ष 2013 के आरंभ में बैठक करेगी ताकि अंतर्राष्ट्रीय उग्रवाद पर व्यापक सम्मेलन (सीसीआईटी) के विभिन्न प्रावधानों के विस्तार को जारी रखा जा सके और साथ ही विश्व उग्रवाद को एक व्यापक और आयोजित ढंग से हल करने के लिए एक उच्च स्तरीय समिति बुलाने के प्रश्न पर विचार किया जा सके।

अंतर्राष्ट्रीय विधि आयोग (आईएलसी)

आईएलसी सदस्यों का 2012-2016 की अवधि के लिए चुनाव 17 नवंबर, 2011 को राष्ट्र संघ के मुख्यालय, न्यूयार्क में राष्ट्र संघ की साधारण सभा के 66वें सत्र के दौरान आयोजित किया गया। एशिया क्षेत्र के लिए आवंटित सीटों के खिलाफ तेरह देशों ने भागीदारी प्रस्तुत की और इस प्रकार यह एक कठिन प्रतियोगिता थी। भारत के अभ्यर्थी श्री नरिन्दर सिंह, जो विदेश मंत्रालय के विधि एवं संधि प्रभाग के पूर्व अपर सचिव थे, का फिर से आईएलसी सदस्य के रूप में चयन किया गया।

राष्ट्र संघ चार्टर पर विशेष समिति

राष्ट्र संघ के चार्टर और संगठन की भूमिका के सुदृढीकरण संबंधी विशेष समिति अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बनाए रखने, अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बनाए रखने से संबंधित कार्य में शामिल अन्य समितियों/निकायों के साथ समन्वय, विशेष तौर पर प्रतिबंधों द्वारा प्रतिकूल रूप से प्रभावित तीसरे राज्यों को सहायता पहुंचाने जैसे अनेक संबंधित प्रस्तावों पर विचार कर रही है। सभा ने विशेष समिति से राष्ट्र संघ के चार्टर के अंतर्गत लगाए गए प्रतिबंधों के प्रयोग से प्रभावित तीसरे राज्यों की सहायता के संबंध में और साथ ही भावी कार्यान्वयन के लिए विस्तृत रूप से स्वीकार्य उपायों का पता लगाने की इसकी कार्य प्रणाली को सुधारने हेतु इस विषय को प्राथमिकता देने पर विचार करने का अनुरोध किया। भारत का विगत वर्षों से यही मत रहा है कि प्रतिबंध लगाने के निर्णयों के भाग के रूप में प्रभावित तीसरे राज्यों के प्रति सुरक्षा परिषद प्राथमिक तौर पर उत्तरदायी है।

सुरक्षा परिषद के कार्य को अद्यतन रखने के लिए न्यास निधियों में स्वैच्छिक योगदान करने और संयुक्त राष्ट्र के अंगों के कार्य के रिपोर्टरी में संचय का विलोप करने के लिए राज्यों का आह्वान किया गया है। भारत ने रेपटवॉ और रिपोर्टों के अद्यतन/प्रकाशन से संबंधित इन प्रयासों का समर्थन किया है।

एशिया - अफ्रीकी विधिक परामर्शीय संगठन (एएएलसीओ)

विधायी और संधि प्रभाग ने अबुजा, नाइजीरिया में 18-22 जून, 2012 को आयोजित एशियाई-अफ्रीकी विधायी परामर्शी संगठन (एएएलसीओ) के 51वें वार्षिक सत्र में भाग लिया। एएएलसीओ एक अंतर सरकारी निकाय है जिसे अंतर्राष्ट्रीय कानून के क्षेत्र में एशिआई-अफ्रीकी राज्यों के बीच परस्परिक सहयोग बढ़ाने और परामर्श के लिए स्थापित किया गया है। एएएलसीओ द्वारा वर्ष के दौरान अंतर्राष्ट्रीय कानून आयोग से संबंधित मामलों पर चर्चा करने के लिए विधायी विशेषज्ञों की अंतर-सत्रीय बैठक आयोजित की गयी।

अंतर्राष्ट्रीय - अपराधिक न्यायालय (आईसीसी)

यद्यपि भारत आईसीसी के रोम संविधि का पक्षकार नहीं है फिर भी विदेश मंत्रालय के विधि और संधि प्रभाग ने आईसीसी के कार्य का अनुसरण किया और न्यायालय द्वारा की गयी पूछताछ के साथ-साथ न्यायालय के डाकेट में मामलों पर तैयार किए गए सारों में सहयोग के अनुरोध पर कानूनी राय दी। विदेश मंत्रालय के विधि और संधि प्रभाग ने 14 से 21 नवंबर, 2012 के बीच हेग में आयोजित असेंबली ऑफ स्टेट पार्टीज (एएसपी) में भागीदारी की।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कानून पर राष्ट्र संघ आयोग (अनसिट्राल)

भारत ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कानून पर राष्ट्र संघ आयोग (अनसिट्राल) की बैठक में भाग लिया। इसके कार्य करने वाले समूह क्रमशः विवाचन और समाधानों, सुरक्षा हितों और ऑन लाइन विवाद संकल्प से संबंधित कार्य करते हैं। विवाचन और समाधान पर कार्यकारी समूह का 57वां वत्र 1-5 अक्टूबर, 2012 को आयोजित किया गया था। ऑन लाइन विवाद संकल्प का 25वां सत्र न्यूयार्क में 21-25 मई 2012 को आयोजित किया गया था। कार्यकारी समूह ई-कामर्स विवादों के लिए ऑन लाइन विवाद संकल्प तंत्र पर कानूनी मानक तैयार करने के लिए अधिदेशित है क्योंकि विवाद व्यवस्था के पारंपरिक साधन में समय लगता है और खर्चीले होते हैं। ई कामर्स के सीमा-पार विवादों के लिए ऐसी अनुकूल, शीघ्र और किफायती व्यवस्था की आवश्यकता होती है जिससे उसकी वें कीमतें विलंब और भारत दूर हो जाएंगे जो उसके आर्थिक मूल्य के अनुपातिक होते हैं। सुरक्षा हितों पर कार्यकारी समूह का 21वां और 22 वां सत्र न्यूयार्क और वियना में क्रमशः 14 से 18 मई 2012 और 10 से 14 दिसंबर, 2012 को आयोजित किया गया। यह कार्यकारी समूह चल संपत्ति पर सुरक्षा हितों के पंजीकरण के लिए रजिस्ट्री की स्थापना करना चाह रहा था। इससे संपत्ति से अधिक संभावित साख उठाने/उपलब्ध करने में समर्थ होगा और साख दाता को सुरक्षा और प्राथमिकता दे सकेगा।

प्राइवेट लॉ पर एकीकरण संबंधी अंतर्राष्ट्रीय संस्थान (यूनीट्राइट)

भारत ने यूनीट्राइट राजनयिक सम्मेलन में भागीदारी की जिसने अंतरिक्ष परिसंपत्तियों के विशिष्ट मामलों संबंधी मोबाइल उपस्कर में अंतर्राष्ट्रीय हितों के सम्मेलन के लिए नवाचार अंगीकृत किया (जिसे संक्षेप में स्पेस असेट्स प्रोटोकाल कहा जाता है।) यह सम्मेलन बर्लिन, जर्मनी में 27 फरवरी से 9 मार्च 2012 तक आयोजित किया गया। इस प्रोटोकॉल का उद्देश्य निजी निवेशों का संरक्षण करते हुए विश्व में अंतरिक्ष गतिविधियों और सेवाओं के निजीकरण और वाणिज्यीकरण को सुविधाजनक बनाना है ताकि अंतरिक्ष उद्योग की वृद्धि की प्रोन्नत किया जा सके। इसके अलावा ऐसे अनेक देशों में अंतरिक्ष आधारित सेवाएं उपलब्ध कराने की अपेक्षा की जाती है जो वर्तमान में अपनी अंतरिक्ष गतिविधियां नहीं करते हैं। भारत ने यूनीट्राइट राजनयिक सम्मेलन द्वारा माध्यमिक सुरक्षाओं के संबंध में महत्वपूर्ण नियमों पर एक प्रथा अंगीकृत करने के लिए उभरते बाजारों, मुद्दों, अनुवर्ती और कार्यान्वयन समिति की दूसरी बैठक में भाग लिया। यह बैठक रियो दि जेनेरियो, ब्राजील में 27 से 28 मार्च, 2012 के बीच आयोजित की गयी।

निजी अंतर्राष्ट्रीय कानून पर हेग सम्मेलन (एचसीसीएच)

हेग सम्मेलन की सामान्य मामलों और नीति संबंधी परिषद की बैठक हेग में 17 से 20 अप्रैल, 2012 के बीच आयोजित की गयी। भारत ने इस परिषद की इस बैठक में भाग लिया जिसमें अन्य के साथ-साथ यह निर्णय लिया गया कि एक कार्यकारी समूह की स्थापना की जाएगी। इसमें न्यायाधीशों, केंद्रीय अधिकारियों और अंतर-अनुशासनिक विशेषज्ञों सहित अनेक विशेषज्ञ होंगे जो शिशु अपहरण अभिसमय 1980 के अनुच्छेद 13 (1) (बी) की व्याख्या और उपयोग पर उचित कार्य करने के लिए दिशा निर्देश देंगे और विशेष तौर पर न्यायिक प्राधिकारियों का मार्गदर्शन करेंगे। परिषद ने चीन गणराज्य के हांग कांग विशेष प्रशासनिक क्षेत्र में निजी अंतर्राष्ट्रीय कानून में हेग सम्मेलन के लिए एक एशिया प्रशांत क्षेत्रीय कार्यालय के प्रस्ताव का भी समर्थन किया।

अंटार्कटिका

भारत ने 10 से 20 जून, 2012 के बीच आस्ट्रेलिया के होबार्ट (तस्मानिया) में आयोजित अंटार्कटिका परामर्शीय समिति (एटीसीएम) की 35वीं बैठक में भाग लिया जिसने विभिन्न कार्यकारी समूहों के अंतर्गत मुद्दे उठाए थे : (क) अंटार्कटिका की सीईपी (पर्यावरण संरक्षण संबंधी समिति); (ख) पर्यटन संबंधी कार्यकारी समूह; (ग) कानूनी और संस्थागत मामलों संबंधी कार्यकारी समूह; और (घ) संचालनात्मक मामलों संबंधी कार्यकारी समूह।

विभिन्न समूहों के वार्तालाप का निष्कर्ष यह निकला कि कुछेक संकल्पों का अंगीकरण किया गया। चर्चा के पश्चात एटीसीएम की प्लेनरी बैठक में विधायी और संस्थागत समूह का अंगीकरण किया गया। यद्यपि कार्यकारी समूह द्वारा अंगीकृत सभी मसौदा संकल्पों और विकल्पों को विधायी एवं संस्थागत कार्यकारी समूह में भेजा

गया है फिर भी तीन प्रमुख मुद्दे जिन पर विस्तार से चर्चा की गयी वे थे (क) क्षेत्राधिकार मुद्दा (ख) दायित्व परिशिष्ट और (ग) मैड्रिड प्रोटोकॉल के लिए समर्थन को मजबूती प्रदान करना।

तंबाकू प्रोटोकॉल

भारत ने 2012 में तंबाकू उत्पाद में गैर कानूनी व्यापार को अंतिम रूप देने और इसके प्रोटोकॉल को अंगीकरण करने के लिए भाग लिया।

जल संसाधन

भारत ने सिंधु जल संधि के अंतर्गत स्थापित स्थायी सिंधु आयोग की बैठक में भाग लिया। भारत द्वारा बनाए जा रहे किशनगंगा जल विद्युत परियोजना के डिजाइन के बारे में उठायी गयी आपत्तियों के संबंध में विदेश मंत्रालय सिंधु जल संधि के अंतर्गत स्थापित विवाचन न्यायालय के समक्ष समन्वय करने और भारत की स्थिति प्रस्तुत करने में सक्रिय रूप से व्यस्त रहा।

अंतर्राष्ट्रीय अधिकरण के सभी न्यायाधीशों और भारत में पाकिस्तान के विशेषज्ञों ने कश्मीर में किशनगंगा विद्युत परियोजना और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में नीलम जल विद्युत परियोजना के स्थलीय दौरे में भाग लिया। भारत ने शांति स्थल हेग में आयोजित विवाचन के स्थायी न्यायालय में "किशनगंगा विवाचन सुनवाई" में भी भाग लिया। सिंधु जल किशनगंगा विवाचन (पाकिस्तान बनाम भारत) के मामले में विवाचन न्यायालय गठित किया गया और इसने 20-31 अगस्त 2012 के बीच शांति स्थल, हेग में दो हफ्ते की सुनवाई को गुण-दोष के आधार पर समाप्त किया। विवाचन नियम प्रक्रिया के न्यायालय के अनुसार, इससे अपेक्षा की जाती है कि यह अपना पंचाट अंतिम सुनवाई की तारीख से छः महीने के भीतर दे देगा।

समुद्रीय सीमांकन के संबंध में बांग्लादेश के साथ विवाद

बांग्लादेश ने भारत के साथ समुद्रीय कानून के संबंध में राष्ट्र संघ कानून के परिशिष्ट VII के अनुच्छेद 287 और अनुच्छेद 1 के अंतर्गत बंगाल की खाड़ी में समुद्री सीमा के सीमांकन के संबंध में विवाचन शुरू किया। फरवरी 2010 में, यूनक्लोस के अनुबंध VII के अनुच्छेद 3 के अनुसार 5 सदस्यों वाला एक विवाचन पैनल गठित किया। भारत की ओर से जुलाई 2012 में विवाचन अधिकरण के साथ प्रति स्मरण पत्र दायर किया गया।

प्रत्यर्पण और अन्य अंतर्राष्ट्रीय न्यायिक सहायता

विधि और संधि प्रभाग ने प्रत्यर्पण संधियों, सिविल मामलों में अन्योन्य सहायता और विदेशों से सजा मिले व्यक्तियों के मामले को अंतिम रूप देने के लिए विभिन्न द्विपक्षीय वार्तालाप में भाग लिया। सफल वार्तालाप के परिणामस्वरूप थाईलैंड और बंगलादेश के साथ प्रत्यर्पण संधि के मूल पाठ में हस्ताक्षर कर लिए गए हैं। मास्को एवं कतर के साथ सजा मिले व्यक्तियों के स्थानांतरण संबंधी संधि

के मूल पाठों को अंतिम रूप दे दिया गया है। मृत्युदंड के मुद्दे की वजह से पोलैण्ड एवं जर्मनी के साथ आपराधिक मामलों में अन्योन्य कानूनी सहायता के मसौदे लंबित हैं। कुवैत, इथिओपिया, नाइजीरिया और स्पेन से सजा मिले व्यक्तियों का स्थानांतरण के मसौदों को अंतिम रूप देने के लिए जांच की गयी थी।

पुनरीक्षण

विदेश मंत्रालय ने अनेक रक्षा सहयोग करारों और साथ ही बाह्य अंतरिक्ष मुद्दों, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, अंतर्राष्ट्रीय उग्रवाद, विदेशों से आयोजित अपराध एवं मादक अवैध व्यापार/स्वापक, विश्वसनीयता

संबंधी करार, जल विज्ञान आंकड़ों की भागीदारी, गैर एवं ऊर्जा, सांस्कृतिक सहयोग पर द्विपक्षीय करार, शिक्षा, पर्यटन, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, लाभकारी रोजगार, हाइड्रोग्राफी और सीमा शुल्क सहयोग आदि से संबंधित अनेक अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के करारों की जांच की। भारत ने वर्ष के दौरान विदेशों के साथ अनेक बहुपक्षीय/द्विपक्षीय संधियों/करारों पर हस्ताक्षर किए/उनकी अभिपुष्टि की। एक विस्तृत सूची परिशिष्ट I पर दी गयी है। वर्ष 2012 के दौरान जारी की गई विस्तृत शक्तियां परिशिष्ट II में दी गई हैं और वर्ष 2012 के दौरान अभिपुष्टि किए गए दस्तावेजों की सूची परिशिष्ट III में दी गयी है।



भारत ने निरस्त्रीकरण और अप्रसार पर खास तौर से परमाणु निरस्त्रीकरण पर अपनी नीति को विभिन्न निरस्त्रीकरण और अप्रसार संबंधी मंचों पर बढ़ावा देना जारी रखा। भारत ने संयुक्त राष्ट्र प्रथम समिति, संयुक्त राष्ट्र निरस्त्रीकरण आयोग (यूएनडीसी), निरस्त्रीकरण आयोग (सीडी), जैविक और विषैले हथियार अभिसमय (बीटीडब्ल्यूसी), रासायनिक हथियार अभिसमय (सीडब्ल्यूसी), कतिपय परम्परागत हथियार संबंधी अभिसमय (सीसीडब्ल्यू) और संयुक्त राष्ट्र लघु शस्त्र और हल्के हथियार संबंधी कार्यवाई कार्यक्रम (एसएएलडब्ल्यू पर यूएनपीओए) की बैठकों में सक्रियता से हिस्सा लिया। भारत ने एक अस्त्र व्यापार संधि (एटीटी) संबंधी राजनय सम्मेलन में भी हिस्सा लिया।

भारत ने आसियान क्षेत्रीय मंच (एआरएफ) की बैठकों और एशिया में परस्पर वार्ता और भरोसा निर्माण उपायों पर सम्मेलन (सीआईसीए) में सक्रियता से हिस्सा लिया। भारत ने विभिन्न देशों के साथ निरस्त्रीकरण और अप्रसार पर द्विपक्षीय परामर्श आयोजित किया और अपनी वार्ता को बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्था से अपनी वार्ता को आगे बढ़ाया। मंत्रालय ने भारत के निर्यात नियंत्रण कानूनों और व्यापक विनाश के हथियार अधिनियम, 2005 के कार्यान्वयन में अपनी जिम्मेदारी निभाई। जैसा कि प्रधानमंत्री द्वारा मार्च 2012 में सियोल में द्वितीय परमाणु सुरक्षा शिखर सम्मेलन के दौरान घोषणा की गई थी, भारत ने संयुक्त राष्ट्र निरस्त्रीकरण कार्य कार्यालय (यूएनओडीए) के सहयोग से 30 नवम्बर- 1 दिसम्बर, 2012 के दौरान नई दिल्ली में “परमाणु सुरक्षा पर नई सहक्रिया के निर्माण पर 1540 कार्यशाला” की मेजबानी की। निरस्त्रीकरण और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा मामलों में भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय सिविल सोसाइटी के साथ नियमित संपर्क स्थापित किए जाते रहे। वैश्विक परमाणु निरस्त्रीकरण पर एक राष्ट्रीय आउटरीच सम्मेलन विदेश मंत्रालय के सहयोग से 21 अगस्त 2012 को भारतीय विश्व कार्य परिषद (आईसीडब्ल्यू) द्वारा आयोजित किया गया।

संयुक्त राष्ट्र

भारत वैश्विक, भेदभाव रहित और सत्यापन किए जाने योग्य परमाणु निरस्त्रीकरण के लक्ष्य के प्रति वचनबद्ध रहा। यूएनजीए की पहली समिति के 2012 सत्र में जिसका आयोजन 8 अक्टूबर से 7 नवम्बर 2012 को किया गया था, भारत ने परमाणु निरस्त्रीकरण के प्राथमिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अपने निरंतर समर्थन को रेखांकित किया और एक परमाणु हथियार मुक्त एवं हिंसा रहित विश्व व्यवस्था के लिए राजीव गांधी कार्यवाई योजना के उद्देश्य के प्रति वचनबद्ध रहा ताकि परमाणु निरस्त्रीकरण का लक्ष्य एक समयबद्ध, सार्वभौमिक,

भेदभावरहित, चरणबद्ध और सत्यापन योग्य ढंग से पूरा किया जा सके।

भारत ने जोर दिया कि इस लक्ष्य को चरणबद्ध प्रक्रिया से प्राप्त किया जा सकता है जिसके लिए विश्वव्यापी वचनबद्धता और एक स्वीकार्य वैश्विक और भेदभाव रहित बहुपक्षीय ढांचे का होना जरूरी है। इसके लिए परमाणु हथियार रखने वाले सभी राष्ट्रों के बीच एक सार्थक वार्ता होनी जरूरी है ताकि विश्वास और भरोसा बने और अंतर्राष्ट्रीय मामलों और सुरक्षा सिद्धांतों में परमाणु हथियारों का प्रभुत्व कम हो। परमाणु हथियारों का आनुक्रमिक ढंग से वैधता कम करने के उपाय जरूरी हैं तब ही उसे पूरी तरह समाप्त करने का लक्ष्य पूरा हो सकता है। परमाणु निरस्त्रीकरण को जो प्राथमिकता दी जाती रही है, उसके बावजूद भारत ने निरस्त्रीकरण पर सम्मेलन में वार्ता के लिए अपने समर्थन की पुनः पुष्टि की ताकि एक सार्वभौमिक, भेदभाव रहित और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सत्यापन योग्य संधि की जाए जो परमाणु हथियारों के लिए विखंडन सामग्री के उत्पादन पर रोक लगाए और दूसरे परमाणु विस्फोटक यंत्रों को बनाए जाने पर भी रोक लगे जो भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा हितों के अनुरूप हों।

भारत ने 2012 में यूएनजीए की पहली समिति के समक्ष तीन प्रस्ताव पेश किए। भारत का ‘आतंकियों द्वारा महाविनाश के हथियारों को पाने से रोकने के उपाय’ पर संकल्प को सर्वसम्मति से अंगीकार कर लिया गया और 67 देशों द्वारा इसे एक साथ समर्थन प्रदान किया गया जो इस संकल्प को अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा दिए गए महत्व को प्रकट करता है। प्रस्ताव में संयुक्त राष्ट्र सदस्य राष्ट्रों का आह्वान किया गया कि आतंकवादी को महाविनाश के हथियार पाने और उनकी सुपुर्दगी के तरीके से रोकने के अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों का समर्थन किया जाए। इस संबंध में संकल्प में सदस्य राष्ट्रों से आग्रह किया गया कि राष्ट्रीय उपायों को मजबूत किया जाए और राष्ट्रीय क्षमताओं को मजबूत करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित किया गया।

भारत द्वारा पेश किए गए दूसरे दो संकल्प अर्थात् परमाणु हथियार के उपयोग का निषेध संबंधी अभिसमय और ‘परमाणु खतरा कम करना’ ध्वनिमत से अंगीकरण किए गए। इन संकल्पों को दिए गए समर्थन से यह पता चलता है कि इनके द्वारा उठाए गए मुद्दों को आधिकाधिक समर्थन मिल रहा है और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में इन्हें स्वीकारा जा रहा है। पहले संकल्प में यह विश्वास प्रकट किया गया कि परमाणु हथियारों का उपयोग प्रतिषिद्ध करने वाला एक बहुपक्षीय, सार्वभौमिक और कानूनी रूप में बाध्यकारी दस्तावेज

परमाणु हथियारों की वैधता समाप्त करने और परमाणु हथियारों को प्रतिषिद्ध करने के संबंध में वार्ता और करार के लिए अनुकूल वातावरण बनाने में योगदान करेगा जिसे निरस्त्रीकरण सम्मेलन में पेश किया जाना चाहिए। दूसरे संकल्प में परमाणु सिद्धांतों की समीक्षा करके परमाणु हथियारों के गैर-इरादतन या दुर्घटनावश प्रयोग होने के खतरे को कम करने के तत्काल उपाय करने की जरूरत को प्रमुखता दी गई है जिसमें परमाणु हथियारों को चौकसी या लक्ष्य से हटाया जाना भी शामिल होगा। पहली समिति ने भारत द्वारा 'अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा और निरस्त्रीकरण के संदर्भ में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका' पर प्रस्तावित एक प्रारूप निर्णय भी अंगीकरण किया गया।

संयुक्त राष्ट्र निरस्त्रीकरण आयोग

संयुक्त राष्ट्र निरस्त्रीकरण आयोग ने वर्ष 2012 के लिए अपने सार सत्र का आयोजन न्यूयार्क में 2 से 20 अप्रैल 2012 को किया। भारत ने यूएनडीसी बैठक के नए तीन वर्षीय चक्र में परमाणु निरस्त्रीकरण को सबसे महत्वपूर्ण एजेंडे के रूप में शामिल किए जाने का समर्थन किया जो 2012 से 2014 तक चलेगी। भारत ने यह भी जोर दिया कि यूएनडीसी का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह यूएन निरस्त्रीकरण तंत्र का विशेषरूप से अभिव्यक्ति खंड है, जो बहुपक्षीय निरस्त्रीकरण एजेंडे को खासतौर से यूएनडीसी की सार्वभौमिक प्रकृति को रेखांकित करते हुए आगे बढ़ाता है।

निरस्त्रीकरण सम्मेलन

भारत ने निरस्त्रीकरण सम्मेलन (सीडी) के विचार-विनिमयों में अपनी भागीदारी बनाए रखी जो कि एकल बहुपक्षीय निरस्त्रीकरण संधि वार्ता का निकाय है। भारत ने जोर दिया कि कार्य कार्यक्रम अंगीकरण द्वारा सीडी में सारवान कार्य शुरू किया जाना जरूरी है। वर्ष के दौरान सीडी में आयोजित विभिन्न विचार-विमर्श के दौरान भारत ने सीडी के एजेंडे के सभी बिंदुओं पर अपना दृष्टिकोण रखा जिनमें चार प्रमुख बिंदुओं—परमाणु निरस्त्रीकरण, फिसाइल मैटेरियल कट-ऑफ संधि (एफएमसीटी) बाहरी अंतरिक्ष में हथियारों की होड़ की रोकथाम (पैरोस) और नकारात्मक सुरक्षा आश्वासन (एनएसए) को भी शामिल किया गया। भारत ने विशेष रूप से उल्लेख किया कि परमाणु निरस्त्रीकरण अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता रहा है। भारत ने निरस्त्रीकरण सम्मेलन में बहुपक्षीय भेदभावरहित और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, सत्यापन योग्य मिसाइल सामग्री कट-आफ संधि (एफएमसीटी) के लिए वार्ता को अपने समर्थन की जानकारी भी दी जो भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा हितों के अनुरूप है। निरस्त्रीकरण सम्मेलन को पुनः सजीव किए जाने पर चर्चा के संदर्भ में भारत ने जोर देकर कहा कि निरस्त्रीकरण सम्मेलन अपनी जिम्मेदारी पूरी करने के लिए अधिदेश, सदस्यता, विश्वसनीयता और प्रक्रिया नियम रखता रहा है। भारत ने आशा भी प्रकट की कि एक बहुपक्षीय निरस्त्रीकरण वार्ता मंच के रूप में सीडी की महत्वपूर्ण भूमिका की पुनरुपुष्टि की जाएगी ताकि बहुपक्षीय एजेंडे को राजनैतिक गति प्राप्त हो सके जिसमें सहमत अधिदेश के आधार पर निरस्त्रीकरण सम्मेलन में एफएम सीटी पर वार्ता शीघ्र शुरू करना भी शामिल है।

परमाणु सुरक्षा और संरक्षा

भारत ने यूएनओडीए के सहयोग से 30 नवम्बर — 1 दिसम्बर 2012 को नई दिल्ली में परमाणु सुरक्षा पर निर्माण नई सहभागिता पर 1540 कार्यशाला की मेजबानी की। कार्यशाला के आयोजन की पहल की 2012 सियोल परमाणु रक्षा शिखर सम्मेलन में प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा घोषणा की गई। कार्यशाला का उद्घाटन विदेश सचिव द्वारा किया गया जो परमाणु सुरक्षा शिखर सम्मेलन (एनएसएस) प्रक्रिया के लिए भारत के शेरपा भी हैं। कार्यशाला में सं.रा. सुरक्षा परिषद में प्रतिनिधित्व करने वाले सभी देशों ने और साथ ही इसके नए सदस्यों, यूएनओडीए, आईईईए, यूएनएससी संकल्प 1540 के अधीन स्थापित समिति के प्रतिनिधियों और एनएसएस प्रक्रिया की पीठों के प्रतिनिधियों ने भी हिस्सा लिया। कार्यशाला के आयोजन के साथ ही नवम्बर 2012 के लिए भारत सुरक्षा परिषद का अध्यक्ष बना।

परम्परागत हथियार/कतिपय परम्परागत हथियारों पर अभिसमय (सीसीडब्ल्यू)

भारत सीसीडब्ल्यू को काफी महत्व देता है जिसका उद्देश्य कतिपय परम्परागत हथियारों के उपयोग से उत्पन्न होने वाली मानवीय चिंताओं का समाधान करने और ऐसे हथियारों की सैन्य आवश्यकता के बीच संतुलन बनाना है। 20 नवम्बर 2011 को आयोजित समीक्षा सम्मेलन में पेश आई विपरीत स्थितियों के बावजूद, जो क्लस्टर म्यूनीसंस प्रोटोकाल को अंगीकरण नहीं कर सका, सीसीडब्ल्यू अंतर्राष्ट्रीय मानवीय कानून की भूमिका और सिद्धांतों को आनुक्रमिक ढंग से सुदृढ़ करने के लिए महत्वपूर्ण स्थान रखता रहा है। भारत सीसीडब्ल्यू और इसके संशोधित प्रोटोकाल—II (एपी—II) और प्रोटोकाल V की बैठकों में सक्रिय और सर्जनात्मक ढंग से भागीदारी करता रहा है।

सीसीडब्ल्यू के राष्ट्र पक्षकारों की वार्षिक बैठक जेनेवा में 15–16 नवम्बर 2012 को आयोजित की गई थी। इस बैठक के दौरान, भारत ने उल्लेख किया कि सीसीडब्ल्यू विश्वस्तर का इकलौता मंच रहा है जो कतिपय परम्परागत हथियारों के सभी प्रमुख प्रयोक्ताओं और निर्माताओं को एक मंच पर लाता रहा है। भारत ने सीसीडब्ल्यू के अंतर्गत राष्ट्र पक्षकारों द्वारा अपनी बाध्यताओं को पूरी तरह और प्रभावी ढंग से कार्यान्वित किए जाने के महत्व पर जोर दिया जिसमें अभिसमय की सर्वव्यापकता और उसके संबद्ध प्रोटोकाल भी हैं। संशोधित प्रोटोकाल—II का 14वां वार्षिक सम्मेलन 14 नवम्बर 2012 को आयोजित किया गया था और उसके बाद 23–24 अप्रैल 2012 को विशेषज्ञ समूह की बैठक आयोजित की गई थी। इन बैठकों में भारत ने एपी—II में अधिष्ठापित दृष्टिकोण के प्रति अपना समर्थन ज्ञापित किया और कार्मिक-विरोधी बारूदी सुरंग के अंततः उन्मूलन के प्रति अपनी वचनबद्धता प्रकट की। भारत ने एपी—II के अंतर्गत उन्नत विस्फोटक यंत्रों के मुद्दों पर निरंतर कार्य को भी अपना समर्थन प्रदान किया। प्रोटोकाल — V के 6वें वार्षिक सम्मेलन का आयोजन 12–13 नवम्बर 2012 को और विशेषज्ञ समूह की बैठक 25–27 अप्रैल 2012 को जेनेवा में किया गया। भारत ने वर्ष के

दौरान राष्ट्रीय रिपोर्टिंग के कार्य का समन्वयन किया और सभी मुद्दों पर चर्चा में योगदान किया जिनमें युद्ध के विस्फोटक अवशेष हटाना, जेनेरिक रोकथाम उपाय, सहयोग और सहायता और पीड़ित सहायता शामिल थे। भारत ने 2-4 अप्रैल 2012 को जेनेवा में आयोजित कार्मिक विरोधी खान से भिन्न खानों पर विशेषज्ञ समूह (एमओटीएपीएम) की बैठक में भी सक्रियता से हिस्सा लिया। भारत ने प्रेक्षक के रूप में 3-7 दिसम्बर 2012 को जेनेवा में आयोजित कार्मिक विरोधी बारूदी सुरंग अभिसमय (ओट्टावा अभिसमय) के राष्ट्र पक्षकारों की 12वीं बैठक में हिस्सा लिया।

अस्त्र व्यापार संधि (एटीटी)

भारत ने अस्त्र व्यापार संधि पर वार्ता के लिए 2-27 जुलाई 2012 को न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र पर आयोजित राजनयिक सम्मेलन में हिस्सा लिया। सम्मेलन में कोई सहमत पाठ अंगीकार नहीं किया जा सका। इन वार्ताओं में भारत ने जोर दिया कि एटीटी का परम्परागत हथियारों की अवैध तस्करी और उन्हें आतंकियों एवं अन्य राष्ट्र विरोधी तत्वों के हाथों में जाने से रोकने पर वास्तविक प्रभाव होना चाहिए। संधि द्वारा निर्यातक और आयातक राष्ट्रों की बाध्यताओं का संतुलन स्थापित किया जाना चाहिए और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि राष्ट्रीय कार्यान्वयन और घरेलू अधिकारिता का पूरा सम्मान किया जाए। भारत ने जोर दिया कि एटीटी की तरह की संधि जो प्रभावी किए जाने पर कानूनी रूप से बाध्यकारी हो, हड़बड़ी में न लागू की जाए। सभी पणधारकों को इस तरीके से सामने आना महत्वपूर्ण है कि ऐसी संधि की संभावनाएं बढ़ें जो व्यावहारिक हो और कार्यान्वयन किए जाने योग्य हो और सर्वव्यापी अनुसरण को आकृष्ट करने में सक्षम हो। एक और राजनयिक सम्मेलन इस वार्ता को आगे बढ़ाने के लिए 18-28 मार्च 2013 को न्यूयॉर्क में आयोजित किया जाएगा।

लघु अस्त्र और हल्के हथियार (एसएएलडब्ल्यू)

भारत ने 27 अगस्त-7 सितम्बर 2012 को न्यूयॉर्क में आयोजित लघु अस्त्र और हल्के हथियार (एसएएलडब्ल्यू) के अवैध व्यापार पर संयुक्त राष्ट्र कार्रवाई कार्यक्रम (यूएनपीओए) के दूसरे समीक्षा सम्मेलन में हिस्सा लिया। भारत ने यूएनपीओए को अपनी ओर से दिए जाने वाले खास महत्व को विशेष रूप से प्रकट किया जो एसएएलडब्ल्यू के अवैध व्यापार को रोकने, उसका मुकाबला करने और उसे समाप्त करने के बहुपक्षीय प्रयासों की बड़ी पहल के रूप में है। भारत ने समीक्षा सम्मेलन के सफल समापन का स्वागत किया जिसके अंत में सर्वसम्मति से एक परिणाम दस्तावेज अंगीकरण किया गया। समीक्षा सम्मेलन ने यूएनपीओए और अंतर्राष्ट्रीय खोजी दस्तावेज के अधीन राष्ट्र महत्वपूर्ण वचनबद्धता की पुनःपुष्टि की और 2012-2018 के दौरान आयोजित की जाने वाली बैठकों की अनुसूची पर सहमति प्रकट की। भारत ने आने वाले वर्षों में यूएनपीओए के कार्यान्वयन के राजनैतिक और तकनीकी दोनों पहलुओं में आगे प्रगति करने की जरूरत पर जोर दिया।

जैविक और विषैले हथियार अभिसमय (बीटीडब्ल्यूसी)

भारत ने 23-27 जुलाई 2012 को आयोजित बीटीडब्ल्यूसी के विशेषज्ञों की वार्षिक बैठक और 10-14 दिसम्बर 2012 को आयोजित राष्ट्र पक्षकारों की बैठक में ठोस योगदान किया। भारत ने बीटीडब्ल्यूसी को पहली बहुपक्षीय, भेदभाव रहित और व्यापार विनाश के हथियारों की समूची श्रेणी पर रोक लगाने वाली संधि के रूप में स्वयं द्वारा दिए गए खास महत्व को दोहराया। भारत ने अभिसमय की प्रभाविकता में सुधार करने, उसके कार्यान्वयन को मजबूत बनाने और उसके सर्वव्यापीकरण के प्रयासों का समर्थन प्रकट किया। बीटीडब्ल्यूसी की बैठकों में तीन एजेंडा मदों (सहयोग और सहायता, एसओटी घटनाक्रमों की समीक्षा और राष्ट्रीय कार्यान्वयन) पर और द्विवर्षी एजेंडा मद (सीबीएम में पूरी भागीदारी) पर विस्तृत चर्चा की गई जिसका निर्णय 7वें समीक्षा सम्मेलन में लिया गया था। विशेषज्ञ बैठक में हिस्सा ले रहे भारतीय विशेषज्ञों ने आचार संहिता और भारत की निर्यात नियंत्रण प्रणाली पर प्रस्तुतिकरण पेश की।

रासायनिक हथियार अभिसमय (सीडब्ल्यूसी)

भारत ने विगत वर्षों की भांति दि हेग में रासायनिक हथियारों का प्रतिषेध संबंधी संगठन में रासायनिक हथियारों को नष्ट किए जाने, उद्योग का निरीक्षण करने, राष्ट्रीय कार्यान्वयन, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सहायता के मुद्दों पर कार्यकारी परिषद की बैठकों और राष्ट्र पक्षकारों के सम्मेलन के दौरान राष्ट्रपक्षकारों के साथ वार्ता करके सक्रिय भूमिका निभाई। भारत समीक्षा सम्मेलन पर खुले कार्य समूह के कार्य में सक्रियता से संलग्न रहा और साथ ही एशियाई समूह और संगठन के विभिन्न सहायक निकायों जिनमें वैज्ञानिक सलाहकारी बोर्ड (एसएबी) और प्रशासनिक एवं वित्तीय मामलों संबंधी सलाहकार बोर्ड (एबीएएफ) भी शामिल थे, के अतिरिक्त सीडब्ल्यूसी के संदर्भ में नैम समूह जैसे समूहों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा। भारत का ओपीसी डब्ल्यू का स्थायी प्रतिनिधि एम्बेसडर को सर्वसम्मति से 11 मई 2013 को समाप्त होने वाली एक वर्ष की अवधि के लिए 41 सदस्यों वाले कार्यकारी परिषद के अध्यक्ष के रूप में चुना गया। भारत के सीडब्ल्यूसी राष्ट्रीय प्राधिकारी ने नई दिल्ली में 10-13 दिसम्बर 2012 को अंतरण व्यवस्था के तकनीकी पहलुओं पर सीडब्ल्यूसी के एशियाई राष्ट्र पक्षकारों के लिए क्षेत्रीय परम्परा प्रशिक्षण आयोजित किया।

अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईईए)

परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष और परमाणु ऊर्जा विभाग के सचिव की अगुवाई में भारतीय प्रतिनिधिमंडल 17-21 सितम्बर 2012 को वियना में आयोजित आईईए महासम्मेलन के 56 सत्र में हिस्सा लेने गया। प्रतिनिधिमंडल ने महानिदेशक, आईईए श्री यूकीय अमान के साथ बैठक की और कई देशों के साथ द्विपक्षीय बैठकें कीं। आईईए और भारत सरकार के बीच आईईए के परमाणु सुरक्षा कोष को भारत की ओर से 1 मिलियन अमेरिकी डालर के योगदान की व्यवस्था पर हस्ताक्षर किए गए। शांतिपूर्ण प्रयोजनों के क्षेत्र में सूचना के आदान-प्रदान और सहयोग के लिए 19 सितम्बर 2012

को भारत के परमाणु ऊर्जा विनियामक बोर्ड (ईआईआरबी) और रोमानिया के राष्ट्रीय परमाणु कार्यकलाप नियंत्रण आयोग (सीएनसीएएन) के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। प्रतिनिधिमंडल ने आर्थिक सहयोग और विकास संगठन, परमाणु ऊर्जा एजेंसी के महानिदेशक से भी मुलाकात की।

आसियान क्षेत्रीय मंच (एआरएफ)

आसियान क्षेत्रीय मंच (एआरएफ) एशिया-प्रशांत क्षेत्र में राजनैतिक और सुरक्षा मुद्दों पर वार्ता, सहयोग और विश्वास निर्माण के लिए मंच है। पूर्व विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा ने 12 जुलाई 2012 को नोम पेन्ह में आयोजित 19वीं एआरएफ मंत्रिस्तरीय बैठक में हिस्सा लिया। बैठक में अप्रसार और निरस्त्रीकरण पर एक कार्य योजना अंगीकरण की गई। भारत ने एआरएफ के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक, दो अंतर-सत्रीय समूह बैठकों, चार अंतरसत्रीय बैठकों में हिस्सा लिया जो आपदा राहत, समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद-रोधी और पर-राष्ट्रीय अपराध और अप्रसार एवं निरस्त्रीकरण और विभिन्न सहयोग कार्यक्रमों और सेमिनारों के संबंध में थीं। भारत ने एडीएसओएम प्लस और मानवीय सहायता एवं आपदा राहत संबंधी विशेषज्ञ कार्य समूहों, समुद्री सुरक्षा, सैन्य औषधि, आतंकरोधी और शांति रक्षा ऑपरेशन पर आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक प्लस 8 (एडीएमएमप्लस) प्रक्रिया में भी हिस्सा लिया।

भारत के तकनीकी और वित्तीय सहयोग से अंतर्राष्ट्रीय समुद्रीय संगठन के दायरे के भीतर मलाका पट्टी और सिंगापुर में नौवहन की सुरक्षा बढ़ाने और समुद्री वातावरण संरक्षण के लिए सहयोग मंच की परियोजना – IV 2012 में सफलतापूर्वक पूरी की गयी जिससे तटवर्ती राष्ट्रों में भारत के प्रति बहुत अधिक सदभावना उत्पन्न हुई।

एशिया में मेल मिलाप और विश्वास निर्माण उपायों पर सम्मेलन (सीआईसीए)

एशिया में मेल-मिलाप और विश्वास निर्माण उपायों पर सम्मेलन (सीआईसीए) एशिया क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और संपन्नता को बढ़ावा देने के लिए वार्ता और सहयोग हेतु एक 24 सदस्यों वाला क्षेत्रीय मंच है। वर्ष के दौरान भारत ने सीआईसीए विदेश मंत्रियों की बैठक, विशेष कार्य समूह (एसडब्ल्यूजी) और वरिष्ठ अधिकारियों की समिति (एसओसी) की बैठकों और आर्थिक सहयोग, पर्यावरण, मादक द्रव्यों की तस्करी, आतंकवाद जैसे मुद्दों और लोकतंत्र को बढ़ावा देने जैसे क्षेत्रों में सीआईसीए ढांचे के भीतर सहयोग कार्यक्रमों में भाग

लिया। संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री सचिन पायलट की अगुवाई में एक भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने 12 सितम्बर 2012 को काजकस्तान के अस्ताना में आयोजित सीआईसीए विदेश मंत्रियों की बैठक में हिस्सा लिया। बैठक के दौरान, भारत ने सर्वसम्मति पर आधारित सहमत क्षेत्रों में विश्वास निर्माण उपायों (सीबीएमएस) के कार्यान्वयन एवं उनके और अधिक समेकीकरण और एशिया की वास्तविकताओं में बसी स्थितियों के आधार पर कदम-दर-कदम दृष्टिकोण विकसित किए जाने को अपने समर्थन को विशिष्ट ढंग से प्रकट किया।

निर्यात नियंत्रण

भारत ने सभी चार बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्थाओं अर्थात् परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी), मिशाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था (एमटीसीआर), आस्ट्रेलिया समूह और वासेनार व्यवस्था के साथ 2012 में इन व्यवस्थाओं की पूरी सदस्यता के उद्देश्य प्राप्त करने हेतु किए जा रहे कार्य की प्रगति करने के उद्देश्य से अपनी वार्ता जारी रखी।

विदेश मंत्रालय और रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण (आईडीएसए) संस्थान ने 18 अप्रैल 2012 को आईडीएसए में एक राष्ट्रीय निर्यात नियंत्रण संगोष्ठी आयोजित की। संगोष्ठी में दिल्ली में बसे राजनयिक समुदाय के सदस्यों, भारत सरकार की एजेंसियों, विशेषज्ञों, विचारकों और निर्यात नियंत्रण के व्यवसायियों ने हिस्सा लिया। भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) और विदेश मंत्रालय ने 22 मार्च, 2012 को इंडिया हैबिटेड सेंटर, नई दिल्ली में सामरिक निर्यात नियंत्रण संगोष्ठी आयोजित की जो भारतीय उद्योग के लिए एक आउटरीच कार्यक्रम के रूप में थी।

अन्य मुद्दे

विदेश सचिव श्री रंजन मथाई और कार्यवाहक यूएसअंडर सेक्रेटरी, शस्त्र नियंत्रण और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा सुश्री रोज गोटेमोलर की अगुवाई में भारत-अमेरिका सामरिक सुरक्षा वार्ता 18 अक्टूबर, 2012 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। इस वार्ता में निरस्त्रीकरण और अप्रसार के क्षेत्र में परस्पर हितों और बहुपक्षीय घटनाक्रमों के व्यापक वैश्विक और क्षेत्रीय सुरक्षा से जुड़े मुद्दों को शामिल किया गया।

वर्ष के दौरान भारत ने फ्रांस, जर्मनी, जापान, रूस और अमेरिका सहित विभिन्न देशों के साथ निरस्त्रीकरण, अप्रसार और निर्यात नियंत्रण से जुड़े मुद्दों पर कार्य स्तरीय परामर्श आयोजित किया।



12वीं आईओआर - एआरसी मंत्री परिषद की बैठक

क्षेत्रीय सहयोग हेतु हिन्द महासागर रिम संघ की 12वीं बैठक 2 नवम्बर, 2012 को गुडगांव में विदेश मंत्री श्री सलमान खुरशीद की अध्यक्षता में आयोजित की गई। भारत की अध्यक्षता में आयोजित मंत्री परिषद की यह दूसरी बैठक है; पिछली बैठक नवम्बर 2011 में बंगलुरु में आयोजित की गई थी। मंत्री परिषद की बैठक से पूर्व आईओआर शैक्षिक समूह, व्यापार एवं निवेश कार्य समूह और आईओआर कारोबार मंच से संबंधित वरिष्ठ अधिकारियों की समिति की बैठकें आयोजित की गईं।

‘आईओआर-एआरसी 15 – अगली सदी’ विषय पर आयोजित बैठक से भारत की अध्यक्षता में इस संघ को और मजबूत बनाने के तौर-तरीकों पर अधिक से अधिक ध्यान केन्द्रित करने में मदद मिली और अगले दशक हेतु सहयोग संबंधी रोड मैप निर्धारित करने में भी मदद मिली, ताकि संघ के सदस्यों की जरूरतों को पूरा करने में कारगर ढंग से कार्य करने, समकालीन विकास मूलक चुनौतियों से निपटने के लिए उनकी क्षमताओं को सुदृढ़ करने के अलावा हिंद महासागर क्षेत्र में यह सर्वोच्च संगठन अपना यथोचित स्थान प्राप्त कर सके। इस बैठक में समुद्री वाणिज्य की सुरक्षा और समुद्री यात्रियों की संरक्षा से संबंधित सदस्यों की साझा चिंताओं का आदान-प्रदान किया गया।

कोमोरोस संघ को सर्वसम्मति से मंत्री परिषद की बैठक में आईओआर – एआरसी के 20वें सदस्य के रूप में शामिल किया गया। भारत की अध्यक्षता में यह आईओआर – एआरसी की सदस्यता में दूसरा लगातार विस्तार है; बंगलुरु में आयोजित पिछली बैठक में सेशल्स संघ में पुनः शामिल हुआ था। यह आईओआर – एआरसी के बढ़ते दायरे का प्रतीक है। आईओआर – एआरसी के वार्ता सहभागी के रूप में शामिल होने से संबंधित अमरीका के अनुरोध को भी अनुमोदित किया गया। इस संघ में अब 20 सदस्य, 6 वार्ता भागीदार तथा 2 पर्यवेक्षक हैं।

एक गुडगांव विज्ञप्ति जारी की गई जिसमें 12वीं मंत्री परिषद की बैठक से संबंधित विचार-विमर्श तथा निर्णय शामिल हैं। अगली बैठक वर्ष 2013 के अंत में आस्ट्रेलिया में आयोजित की जाएगी जहां भारत अध्यक्ष की कुर्सी आस्ट्रेलिया को सौंपेगा और इंडोनेशिया उपाध्यक्ष की कुर्सी सम्भालेगा।

ब्रिक्स (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका)

भारत ब्रिक्स के साथ अपनी वार्ता को अत्यधिक महत्व देता है जो वैश्विक तथा साथ ही क्षेत्रीय महत्व से जुड़े समकालीन मुद्दों और

वैश्विक राजनैतिक तथा आर्थिक अभिशासन संबंधी मुद्दों पर समन्वयन, परामर्श तथा सहयोग हेतु एक मंच है।

चौथा ब्रिक्स शिखर सम्मेलन नई दिल्ली में 29 मार्च 2012 को आयोजित किया गया। इस शिखर सम्मेलन में ब्राजील के राष्ट्रपति डिल्मा रूसॉफ, रूस के राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव, चीन के राष्ट्रपति हू जिन्ताओ और दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति जेकब जूमा ने अपने-अपने शिष्टमण्डलों का नेतृत्व किया।

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की कार्यसूची में वैश्विक राजनैतिक तथा आर्थिक अभिशासन में सुधार, वैश्विक आर्थिक परिस्थिति, समकालीन राजनैतिक (पश्चिम एशिया में घटनाक्रमों सहित), विश्व व्यापार संघ और अंतर्राष्ट्रीय कारोबार व्यवस्था, अंतर्राष्ट्रीय वैश्विक अभिशासन संस्थान, चिरस्थायी विकास, आतंकवाद, खाद्य एवं ऊर्जा सुरक्षा और अंतर-ब्रिक्स सहयोग का सुदृढ़ीकरण जैसे मुद्दों को शामिल किया गया।

नेताओं ने ब्रिक्स तथा अन्य विकासशील देशों में अवसंरचना तथा चिरस्थायी विकास परियोजनाओं के लिए अधिशेष बचत के पुनः उपयोग हेतु ब्रिक्स के नेतृत्व में एक नया विकास बैंक स्थापित करने की संभावना पर विचार किया और इस पहल की व्यवहार्यता एवं संभावना की जांच करने और अगले शिखर सम्मेलन में रिपोर्ट करने के लिए उन देशों के वित्तमंत्रियों को निर्देश दिया।

नेताओं ने ‘द ब्रिक्स रिपोर्ट’ नामक एक रिपोर्ट संयुक्त रूप से जारी की, जिसमें ब्रिक्स अर्थव्यवस्थाओं के बीच सहक्रियाओं एवं कॉम्प्लीमेंटरीज पर ध्यान दिया गया है। शिखर सम्मेलन में चौथे शिखर सम्मेलन के विचार-विमर्श एवं निर्णयों को शामिल करते दिल्ली घोषणा जारी की गई।

एक्जिम/डेवलपमेंट बैंकों द्वारा दो करारों : (1) स्थानीय मुद्राओं में ऋण सुविधा दिए जाने पर मास्टर करार तथा (2) बहुपक्षीय ऋणपत्र अभिपुष्टि सुविधा करार पर हस्ताक्षर किए गए। ये दोनों करार सक्षम करार हैं जो राष्ट्रीय विनियमों के अधधीन हैं, जिससे ब्रिक्स डेवलपमेंट बैंकों के बीच सहयोग बढ़ाने, अंतरा-ब्रिक्स व्यापार लेनदेन लागतों को कम करने एवं अंतरा-ब्रिक्स कारोबार को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी।

शिखर-सम्मेलन कार्यसूची में जानकारीयां देने के लिए नई दिल्ली में दो ट्रेक-II कार्यक्रमों की मेजबानी की गई। ब्रिक्स इकोनॉमिक रीसर्च ग्रुप (ईआरजी) – जो एक भारतीय पहल है, की पहली बैठक जिसने ब्रिक्स आर्थिक विचारकों, विशेषज्ञों तथा संपादकों को साथ लाया तथा जिसका समन्वयन नैशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक



गुडगांव में 2 नवम्बर, 2012 को आयोजित 12वें आईओआर – एआरसी मंत्री परिषद की बैठक



नई दिल्ली में 29 मार्च, 2012 को आयोजित चौथे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में ब्राजील, रूस, भारत, चीन तथा दक्षिण अफ्रीका के नेतागण।

फाईनेंस एंड पॉलिसी (एन आई एफ एफ पी) ने किया – का आयोजन 27 फरवरी 2012 को किया गया और ब्रिक्स अकादमिक मंच— जो विचारकों का एक सुस्थापित मंच है, जिसकी बैठक 5–6 मार्च 2012 को भारतीय अध्यक्षता में हुई जिसका समन्वयन ऑबजर्वर रीसर्च फाउंडेशन (ओ आर एफ) ने किया।

शिखर सम्मेलन पूर्व अन्य बैठकों में मार्च 2012 में ब्रिक्स कारोबार मंच की तीसरी बैठक, ब्रिक्स व्यापार मंत्रियों और ब्रिक्स विकास बैंकों के वित्तीय मंच की बैठक शामिल हैं। कार्य/विशेषज्ञ स्तरीय बैठकों में ब्रिक्स नैशनल स्टैटिस्टिकल अथॉरिटीज, ब्रिक्स डेवलपमेंट बैंकों के तकनीकी विशेषज्ञों, आर्थिक, व्यापार तथा निवेश मुद्दों पर संपर्क समूह और दिल्ली घोषणा के मसौदे पर बातचीत करने के लिए ब्रिक्स सु-शेरपाज की बैठकें शामिल हैं।

पांचवां शिखर सम्मेलन मार्च 2013 में दक्षिण अफ्रीका स्थित डरबन में आयोजित किया जाएगा।

जी-20 शिखर-सम्मेलन के मौके पर ब्रिक्स नेताओं की बैठक

शिखर सम्मेलन की कार्यसूची में समाविष्ट अभिमतों का आदान-प्रदान करने के लिए जी-20 शिखर सम्मेलन के मौके पर 18 जून 2012 को लोस काबोस, मेक्सिको में ब्रिक्स नेताओं की एक बैठक की अध्यक्षता प्रधान मंत्री जी ने की। नेताओं ने राष्ट्रीय मुद्राओं और साथ ही आरक्षित पूलिंग के बीच स्वाप व्यवस्थाओं पर भी चर्चा की।

अन्य मंत्रालयीय बैठकें: संयुक्त राष्ट्र आम सभा की सितम्बर 2012 में न्यूयॉर्क में आयोजित बैठक के अवसर पर ब्रिक्स विदेश मंत्रियों की बैठक हुई। इस बैठक में विदेश सचिव श्री रंजन मथाई ने भारत का प्रतिनिधित्व किया। संयुक्त राष्ट्र आम सभा के मौके पर जी-15 विदेश मंत्रियों ने भी आपस में मुलाकात की; इस बैठक में संयुक्त सचिव (एमईआर), विदेश मंत्रालय ने भारत का प्रतिनिधित्व किया।

भारत, चीन और रूस

पूर्व विदेश मंत्री श्री एम.एम.कृष्णा ने मॉस्को में 13 अप्रैल, 2012 को आयोजित रूस, भारत तथा चीन के विदेश मंत्रियों की 11वीं बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया। विदेश मंत्रियों ने, अन्य बातों के साथ-साथ, समकालीन प्रासंगिक क्षेत्रीय तथा वैश्विक मुद्दों; अफगानिस्तान, पश्चिम एशिया तथा उत्तर अफ्रीका तथा कोरियाई प्रायद्विप में व्याप्त परिस्थिति; और तीनों देशों में आपात क्षेत्रों; स्वास्थ्य देखभाल, कृषि, कारोबार, ऊर्जा तथा नवाचार एवं उच्च प्रौद्योगिकी में सहयोग को बढ़ाने पर चर्चा की। बैठक के बाद एक संयुक्त विज्ञप्ति जारी की गई।

भारत, ब्राजील तथा अफ्रीका

प्रीटोरिया, दक्षिण अफ्रीका में अक्टूबर 2011 में आयोजित 5वें शिखर सम्मेलन के निर्णयों का अनुपालन करने के लिए सितम्बर 2012 में संयुक्त राष्ट्र आम सभा के अवसर पर आई बी एस ए फोकल प्वाइंट्स ने न्यूयॉर्क में अपनी 20वीं बैठक आयोजित की।

आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (ओईसीडी)

विभिन्न मंत्रालयों/विभागों ने सीमित क्षेत्रीय विनियोजन की समग्र नीति के दायरे में ओईसीडी के साथ बातचीत करना जारी रखा। ओईसीडी के साथ भारत के पारस्परिक लाभप्रद सहयोग से मुद्दों की संभावना एवं दायरे का विस्तार हुआ है। सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय और ओईसीडी ने नई दिल्ली में अक्टूबर 2012 में सांख्यिकी, ज्ञान और नीति पर चौथे ओईसीडी मंच की मेजबानी की। भारत सरकार के एक नोडल मंत्रालय के रूप में विदेश मंत्रालय ने ओईसीडी मामलों के संबंध में सभी संबंधित मंत्रालयों/विभागों के परामर्श से ओईसीडी के साथ भारत के विनियोजन की समीक्षा की। यह निर्णय लिया गया कि सीमित क्षेत्रीय विनियोजन की मौजूदा नीति को जारी रखा जाए।

समूह-20 (जी-20)

लोस केबोस, मैक्सिको में 18–19 जून 2012 तक आयोजित 7वें जी-20 शिखर सम्मेलन में भारतीय शिष्ट मंडल का नेतृत्व प्रधानमंत्री जी ने किया। इस चर्चा में 'वैश्विक अर्थव्यवस्था तथा मजबूत, चिरस्थायी तथा संतुलित विकास हेतु कार्य ढांचा', 'अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना एवं वित्तीय प्रणाली का सुदृढ़ीकरण और वित्तीय समावेशिता का संवर्धन' तथा 'विकास, हरित विकास, बुनियादी अवसंरचना तथा खाद्य सुरक्षा' विषय शामिल थे। लोस केबोस शिखर सम्मेलन के परिणामों में 'जी-20 नेताओं की घोषणा' और इसके तीन अनुबंध अर्थात् (1) 'लोस केबोस विकास तथा रोजगार कार्य योजना' (2) 'विकास कार्य समूह की वर्ष 2012 की प्रगति रिपोर्ट' और (3) मैक्सिको में 18 मई 2012 को कृषि उपमंत्रियों/उपप्रभारियों की बैठक की रिपोर्ट शामिल थी।

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने इस बैठक में हस्तक्षेप करते हुए कहा कि भारत निवेश पर ध्यान केन्द्रित कर रहा है और अवसंरचना संबंधी निवेश को दुरुस्त रखने के लिए एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है और साथ ही क्रियान्वयन संबंधी अड़चनों को दूर करने के लिए एक समस्या निदान तंत्र विकसित किया है। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में 10 बिलियन अमरीकी डॉलर के अंशदान की घोषणा की, जो वर्ष 2010 में सुधार योजना के तहत कोटा बढ़ोतरी की तुलना में बढ़कर 450 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया।

अन्य सदस्य देशों के साथ-साथ भारत भी जी-20 विकास कार्य सूची के भाग के रूप में विकास अंतराल को पाटने, गरीबी को कम करने और विकास को बढ़ावा देने के प्रति वचनबद्ध है। कनाडा के साथ भारत 'सशक्त, चिरस्थायी तथा संतुलित विकास संबंधी जी-20 कार्य ढांचा कार्य समूह' का सहअध्यक्ष है। भारत विकास, रोजगार वित्तीय सशक्तिकरण, सार्वजनिक क्षेत्र से निजी क्षेत्र की ओर मांग को पुनः संतुलित करने और साथ ही यूरो जोन में आंतरिक असंतुलन से उत्पन्न जोखिमों को पुनः संतुलित करने की ओर अपनी ऊर्जा को पुनः केन्द्रित करने का प्रयास किया।



नई दिल्ली में 20-21 दिसंबर 2012 को आयोजित आसियान-भारत स्मारक शिखर सम्मेलन में राष्ट्राध्यक्ष/सरकारी प्रमुख



प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और उनकी पत्नी श्रीमती गुरशरण कौर नई दिल्ली में 21 दिसंबर 2012 को आसियान-भारत कार रैली 2012 फ्लैग डाउन समारोह में हिस्सा लेते हुए।

भारत-आसियान

नोम पेन्ह, कम्बोडिया में 19 नवम्बर 2012 को आयोजित दसवें आसियान-भारत शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री जी ने भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। शिखर सम्मेलन के दौरान आसियान-भारत वार्ता संबंधों के पिछले 20 वर्षों के इतिहास की समीक्षा की और उन्होंने आसियान-भारत शांति भागिदारी, प्रगति तथा सांझी प्रगति (2010-2015) के क्रियान्वयन हेतु कार्य योजना में हुई अच्छी प्रगति की सराहना की। आसियान लक्ष्यप्रतिष्ठ व्यक्ति समूह की रिपोर्ट नेताओं के समक्ष पेश की गई। नेताओं ने आसियान-भारत कारोबार हेतु वर्ष 2015 तक 100 बिलियन अमरीकी डॉलर का लक्ष्य निर्धारित किया। शिखर सम्मेलन में भारत के विदेश मंत्री ने नोम पेन्ह कम्बोडिया में 11 जुलाई 2012 को आयोजित आसियान-भारत विदेश मंत्रियों की बैठक में भाग लिया।

वर्ष 2011-12 में आसियान तथा भारत के बीच कारोबार में 37 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो 79.3 बिलियन अमरीकी डॉलर तक पहुंच गया जिससे यह राशि समय से पहले 70 बिलियन अमरीकी डॉलर के लक्ष्य को पार कर गई। वाणिज्य, उद्योग तथा वस्त्र मंत्री श्री आनंद शर्मा ने 31 अगस्त 2012 को आयोजित 10वें आसियान वित्त मंत्रियों + इंडिया कंसल्टेशंस इन सीम रीप में भाग लिया, जहां मंत्रियों ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि सेवाओं तथा निवेश करार में आसियान भारत कारोबार के समापन की ओर बातचीत में और तेजी लाई जाए।

कृषि मंत्रालय ने नई दिल्ली में 17 अक्टूबर 2012 को कृषि तथा वानिकी पर द्वितीय आसियान-भारत मंत्रालयी बैठक और 17-19 अक्टूबर 2012 तक कृषि प्रदर्शनी का संयोजन किया। पर्यावरण तथा वन मंत्रालय ने आसियान भारत पर्यावरण मंत्रियों की पहली बैठक 6-7 सितम्बर 2012 तक नई दिल्ली में आयोजित की जिसके उपरांत 4-5 सितम्बर 2012 तक नागोया प्रोटोकॉल पर क्षमता विकास आसियान-भारत कार्यशाला का आयोजन किया गया। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय ने 7 नवम्बर 2012 को नई दिल्ली में नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा पर प्रथम आसियान-भारत मंत्रालयी बैठक का आयोजन किया, जिससे पूर्व 5-6 नवम्बर 2012 को नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा पर एक कार्यशाला आयोजित की गई।

भारत तथा आसियान सदस्य देशों के अंतरिक्ष एजेंसी प्रमुखों की प्रथम बैठक 19-20 जून 2012 तक बंगलौर में आयोजित की गई, जिसमें अंतरिक्ष क्षेत्र में सहयोग पर चर्चा की गई। भारतीय विज्ञान संस्थान बंगलौर में 27-28 जून 2012 तक जलवायु परिवर्तन पर आसियान-भारत विशेषज्ञ समूह की एक बैठक आयोजित की गई। आसियान एसएमई कार्य समूह तथा भारत के बीच पहली बार एक संयुक्त परामर्शदात्रियों की एक बैठक हनोई, वियतनाम में 15 नवम्बर 2012 को आयोजित की गई।

भारत सरकार ने आसियान कनेक्टिविटी पर एक अंतरमंत्रालयी समूह का गठन किया और एक भारतीय शिष्टमंडल ने लाओ पीडीआर में दिनांक 3-5 जुलाई 2012 तक आयोजित 21वें आसियान

भूपरिवहन कार्य समूह की बैठक, 9 सितम्बर 2012 को आयोजित आसियान कनेक्टिविटी समन्वयन समिति की बैठक और 17-19 अक्टूबर 2012 तक आयोजित 24वें आसियान मेरिटार्इम कार्य समूह की बैठक में भाग लिया।

आसियान-इंटर पार्लियामेंटरी असेम्बली (एआईपीए) शिष्टमंडल जिसका नेतृत्व राष्ट्रपति डॉ० मारजूकी अलीद ने किया और जिसमें इंडोनेशिया वियतनाम, सिंगापुर तथा थाईलैण्ड के संसद सदस्य शामिल थे तथा जिसने पहली बार 28 जुलाई-2 अगस्त 2012 तक भारत का दौरा किया, के साथ संसदीय सहयोग की प्रक्रिया जारी रही। एक भारतीय संसदीय प्रतिनिधिमण्डल जिसमें संसद सदस्य श्री धनन्जय सिंह तथा श्री मो. असरारुल हमक थे, ने लॉम्बोक, इण्डोनेशिया में 16-22 सितम्बर 2012 तक आयोजित 33वीं आम सभा में भाग लिया।

स्मारक शिखर-सम्मेलन के दो प्रमुख कार्यक्रमों में द्वितीय आसियान-भारत कार-रैली और प्रशिक्षण जहाज आईएनएस सुदर्शिनी की आसियान देशों की समुद्री यात्रा शामिल है। आईएनएस सुदर्शिनी अभियान की शुरुआत 15 सितम्बर, 2012 को कोच्ची से की गई। पोर्ट ब्लेयर होते हुए भारत में कोच्ची वापस लौटने से पूर्व यह जहाज पडांग, बाली, मनाडो, ब्रूनेई, सेबू, मनीला, डा नांग, सिहानुकविले, बैंकॉक, सिंगापुर, क्लॉंग, फूकट तथा सितवे में रुका।

आसियान-भारत कार-रैली, 2012 को योग्याकार्य, इण्डोनेशिया से 26 नवम्बर, 2012 को रवाना किया गया। यह रैली 8 आसियान देशों (इंडोनेशिया, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैण्ड, कम्बोडिया, वियतनाम, लाओ पी डी आर, म्यांमार) से होते हुए 16 दिसम्बर, 2012 को 21 दिनों तक लगभग 7600 कि.मी. की यात्रा पूरी करके गुवाहाटी में समाप्त हुई। आसियान और भारतीय नेताओं ने इस रैली को 21 दिसंबर 2012 को नई दिल्ली से समारोहपूर्वक रवाना किया। कार रैली के मार्गों तथा आईएनएस सुदर्शिनी के विश्राम स्थलों पर "स्मारक" कार्यक्रम जैसे बिजनेस सेमिनार, पर्यटन, रोड शो तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए, ताकि इस बात को रेखांकित किया जा सके कि किस प्रकार कनेक्टिविटी कारोबार तथा लोगों के बीच आपसी संपर्क को प्रभावित करती है।

"शांति एवं सांझी समृद्धि हेतु आसियान-भारत भागीदारी" विषय पर आसियान-भारत स्मारक शिखर सम्मेलन 20-21 दिसंबर 2012 तक नई दिल्ली में आयोजित किया गया। इस शिखर सम्मेलन की सह अध्यक्षता भारत के प्रधानमंत्री तथा कम्बोडिया के प्रधानमंत्री सामडेक हुन सेन ने की। इस शिखर सम्मेलन में ब्रुनेई के सुल्तान; इंडोनेशिया तथा म्यामां के राष्ट्रपति; लाओ पीडीआर, मलेशिया, सिंगापुर, थाईलैण्ड तथा वियतनाम के प्रधानमंत्री; फिलिपीन्स के उप-राष्ट्रपति तथा आसियान महासचिव ने भाग लिया।

दिनांक 20 दिसम्बर, 2012 को आयोजित पूर्ण सत्र में नेताओं ने एकमत से आसियान-भारत सहभागिता को राजनीतिक स्तर तक बढ़ाने का अनुसमर्थन किया और उन्होंने आसियान-भारत अभिकल्पना वक्तव्य को अंगीकृत किया। इन नेताओं ने आसियान-भारत सेवा एवं निवेश व्यापार करार पर बातचीत समाप्त होने का भी स्वागत किया।

चौथी आसियान-भारत पर्यटन मंत्रियों की बैठक 21 जनवरी 2013 को विएनटीएन, लाओ पीडीआर में आयोजित की गई जिससे पूर्व 10वीं आसियान-भारत पर्यटन कार्य समूह की बैठक आयोजित की गई। आसियान और भारत के बीच पर्यटन सहायोग को सुदृढ़ बनाने के संबंध में एक प्रोटोकॉल में संशोधन किया गया।

भारत ने 'भारत-आसियान: सहभागिता एवं समृद्धि हेतु अभिकल्पना' विषय पर 19-20 फरवरी, 2013 को नई दिल्ली में दिल्ली वार्ता V की मेजबानी की जिसमें भारत तथा आसियान के नेतागण, विचारकों, राजनयिकों, शिक्षाविदों तथा थिंक टैंकों ने साथ मिलकर दोनों क्षेत्रों के मध्य राजनैतिक, रणनीतिक, आर्थिक तथा सिविल सोसायटी संबंधी बातचीत को और तेज एवं व्यापक करने पर चर्चा की।

भारत ने 21 फरवरी 2013 को नई दिल्ली में 15वीं आसियान-भारत वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक की मेजबानी की। आसियान-भारत मीडिया आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत आसियान देशों के 20 पत्रकारों ने 17-23 फरवरी 2013 तक भारत की यात्रा की।

पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (ईएएस)

भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 20 नवम्बर 2012 को नोम पेन्ह, कम्बोडिया में आयोजित 7वें पूर्वी एशिया शिखर-सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया। पूर्व विदेश मंत्री श्री एस. एम. कृष्णा ने 12 जुलाई 2012 को आयोजित द्वितीय पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन विदेश मंत्रियों की बैठक में भाग लिया।

छठे पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में की गई घोषणा को मूर्त रूप देते हुए भारत ने 8-9 नवम्बर 2012 तक नई दिल्ली में 'ईएएस -भारत कार्यशाला 2012 : भूकंप जोखिम प्रबंधन हेतु क्षेत्रीय कार्यवाहक निर्माण' की मेजबानी की। प्रथम 'पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन ई ए एस शिक्षा मंत्रियों की बैठक' 5 जुलाई 2012 को योग्याकार्य, इंडोनेशिया में आयोजित की गई। भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व मानव संसाधन विकास मंत्रालय में तत्कालीन राजमंत्री श्रीमती डी. पुरेंदेश्वरी ने किया। ईएएस ऊर्जा मंत्रियों की छठी बैठक नोम पेन्ह, कम्बोडिया में 13 सितम्बर 2012 को आयोजित की गई। पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री आर.पी.एन सिंह के नेतृत्व में प्रतिनिधिमण्डल ने इस बैठक में भारत का प्रतिनिधित्व किया। विश्व बैंक/आईएमएफ बैठकों के साथ-साथ 13 अक्टूबर 2012 को तोक्यो, जापान में पूर्वी एशिया वित्त मंत्रियों की अनौपचारिक बैठक आयोजित की गई। वित्त मंत्री श्री पी. चिदम्बरम के नेतृत्व में वित्त मंत्रालय से एक प्रतिनिधिमंडल ने इस बैठक में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

एशिया-यूरोप बैठक (एएसईएम)

विएनटीएन, लाओ, पीडीआर में 5-6 नवम्बर 2012 तक एशिया-यूरोप की नौवीं बैठक आयोजित की गई। विदेश मंत्री श्री सलमान खुशीद ने इस शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया। नेताओं ने नई दिल्ली में 14-15 नवम्बर 2013 तक एएसईएम विदेश मंत्रियों की 11वीं बैठक आयोजित करने की पेशकश का स्वागत किया।

वर्ष 2012 के दौरान एएसईएम में मंत्रालय स्तरीय भागीदारी संबंधी कार्यकलापों में अग्रलिखित शामिल थे:- (I) योग्याकार्य, इंडोनेशिया में 18-19 सितंबर, 2012 तक आयोजित एएसईएम संस्कृति मंत्रियों की 5वीं बैठक जिसके लिए भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व कुमारी शैलजा, संस्कृतिमंत्री ने किया और (II) बैंकॉक, थाईलैण्ड में 14-15 अक्टूबर 2012 तक आयोजित एएसईएम वित्त मंत्रियों की 10वीं बैठक, जिसके लिए भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व वित्त मंत्री श्री पी. चिदम्बरम ने किया।

एशिया-यूरोप प्रतिष्ठान (एएसईएफ)

एशिया यूरोप प्रतिष्ठान के शासी बोर्ड की 29वीं बैठक नई दिल्ली में 11-13 अक्टूबर 2012 तक आयोजित की गई। वर्ष 2007 में भारत जब से एशिया-यूरोप बैठक (एएसईएम) प्रक्रिया का एक सदस्य बना है, तबसे पहली बार विदेश मंत्री ने एएसईएफ शासी बोर्ड की बैठक की मेजबानी की।

मेकाँग-गंगा सहयोग (एमजीसी)

मेकाँग गंगा सहयोग की छठी मंत्रालयीय बैठक 4 सितंबर 2012 को नई दिल्ली में आयोजित की गई, जिससे पूर्व 3 सितंबर 2012 को एमजीसी वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक आयोजित की गई। इस बैठक की मेजबानी विदेश मंत्री ने की। भारत ने इंडिया-सीएलएमवी विक्क इम्पैक्ट प्रोजेक्ट्स रिवॉल्विंग फंड के लिए प्रतिवर्ष 1 मिलियन अमरीकी डॉलर की प्रतिबद्धता की घोषणा की। इस बैठक से एमजीसी वार्ता को पुनः शुरू करने और साथ ही इस क्षेत्र में सहयोग हेतु नए क्षेत्रों का पता लगाने में भी मदद मिली।

एशिया सहयोग वार्ता (एसीडी)

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री ई.अहमद ने 16-17 अक्टूबर 2012 तक कुवैत सिटी में आयोजित प्रथम एसीडी शिखर सम्मेलन में भाग लिया। इस बैठक में कुवैत, ताजिकिस्तान तथा थाईलैण्ड के एक कार्य समूह की बैठक संयोजित करने संबंधी प्रस्ताव का स्वागत किया गया, ताकि विभिन्न तंत्रों जिनमें एसीडी के कार्य का समर्थन करने के बाबत एक सचिवालय शामिल है, के संबंध में सिफारिशें कीं और इस सचिवालय के मुख्यालय की मेजबानी करने संबंधी कुवैत की पेशकश को नोट किया गया। संस्कृति के क्षेत्र में एक सह-मुख्य प्रवर्तक के रूप में भारत ने सांस्कृतिक सहयोग पर 19-20 अप्रैल 2012 तक नई दिल्ली में वरिष्ठ अधिकारियों की दूसरी बैठक की मेजबानी की और "एसीडी देशों के लब्धप्रतिष्ठा कवियों का कविता संग्रह" प्रकाशित करने की पेशकश की।

बहु-क्षेत्रीय तथा आर्थिक सहयोग हेतु बंगाल की खाड़ी पहल

भारत ने 27-28 जून 2012 तक ढाका, बांग्लादेश में आयोजित संयुक्त कार्य समूह की 5वीं बैठक और 18-19 नवम्बर 2012 तक टांगेल, बांग्लादेश में आयोजित संयुक्त कार्य समूह की बैठक में हिस्सा लिया, जिसमें बिस्स्टेक स्थायी सचिवालय के वित्तीय तथा प्रशासनिक मामलों से संबंधित प्रावधानों पर चर्चा करके इन्हें अंतिम रूप दिया गया।

भारत ने बैंकॉक, थाईलैंड में 6-7 जून, 2012 तक जैव ईंधन उत्पादन तथा उपभोग विषय पर आयोजित क्षेत्रीय कार्यशाला तथा अध्ययन दौरे और 30 जुलाई - 28 अगस्त तक जलीय पौध मृदारहित प्रसंस्करण तथा फसलोत्तर प्रौद्योगिकी विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भी भाग लिया।

विदेश मंत्रालय के विधि एवं संधि प्रभाग ने नई दिल्ली में 8-9 जनवरी 2013 तक विधि एवं कानून प्रवर्तन मुद्दों पर 5वें बीआईएमएसटीईसी जेडब्ल्यूजी-सीटीटीसी उप समूह की मेजबानी की, जहां आपराधिक मामलों में परस्पर कानूनी सहायता संबंधी एक अभिसमय का प्रारूप पाठ तैयार किया। विद्युत मंत्रालय ने 11 जनवरी 2013 को नई दिल्ली में ट्रांस विद्युत विनियम विषय पर कार्यबल की चौथी बैठक आयोजित की, जहां बीआईएमएसटीईसी ग्रिड इंटरकनेक्शन हेतु समझौता ज्ञापन के प्रारूप पाठ पर चर्चा की गई।

नालन्दा विश्वविद्यालय परियोजना

नालन्दा विश्वविद्यालय पर पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में तेजी आई है। दिनांक 25 नवम्बर 2010 नालन्दा विश्वविद्यालय अधिनियम, 2010 को लागू किए जाने के पश्चात् एक अभिशासन संरचना तैयार करने की आवश्यकता थी और इसके बाद निर्माण कार्य की ओर बढ़ना था और अंततः अकादमिक कार्यक्रम तैयार किया जाना था। ये सभी कार्य प्रगति पर हैं।

भारत के राष्ट्रपति इस विश्वविद्यालय के विजिटर हैं। शासी बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. अमर्त्य सेन को 18 जुलाई 2012 को इस विश्वविद्यालय का कुलाध्यक्ष नियुक्त किया गया। कुलपति और वित्त अधिकारी की नियुक्ति की जा चुकी है और 31 मार्च 2012 को संविधियों को अधिसूचित कर दिया गया है। अभिशासन व्यवस्था को जारी रखने के लिए मौजूदा शासी बोर्ड के कार्यकाल को एक वर्ष तक अर्थात् 24 नवम्बर 2013 तक बढ़ा दिया गया है। यह विश्वविद्यालय नई दिल्ली स्थित अपने परियोजना कार्यालय से कार्य कर रहा है। कार्य प्रगति की मॉनीटरी के लिए योजना आयोग के उपाध्यक्ष के नेतृत्व में एक राष्ट्रीय मॉनीटरी समिति गठित की गई है। अभिशासन में सुधार करने के लिए नालन्दा विश्वविद्यालय अधिनियम, 2010 में संशोधनों का सुझाव देने वाली समिति ने अपनी रिपोर्ट सौंप दी है।

पटना में 19-20 जुलाई 2012 तक आयोजित इसकी चौथी बैठक में एडसिल की अंतिम परियोजना रिपोर्ट को शासी बोर्ड द्वारा अनुमोदित कर दिया गया। विश्वविद्यालय ने 21 नवम्बर 2012 को वास्तुकला डिजाइन प्रतियोगिता का आयोजन किया। कैम्पस हेतु एक मास्टर प्लान तथा भवन जिनका निर्माण चरण-। के तहत वर्ष 2013 के उत्तरार्द्ध में शुरू होने की संभावना है, का डिजाइन प्रस्तावित करने के लिए भारतीय तथा विदेशी कम्पनियों को आमंत्रित

किया गया है। इतिहास अध्ययन तथा पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन स्कूल सात स्कूलों में से दो होंगे और शैक्षिक सत्र 2014 में अध्यापन प्रारंभ होने की संभावना है।

विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद ने 20 दिसंबर 2012 को दिल्ली में आसियान-भारत स्मारक शिखर सम्मेलन में "सभ्यता वार्ता: एशियाई अंतर संबंध तथा अंतर सांस्कृतिक आदान-प्रदान" का प्रथम प्रकाशन जारी किया।

श्री जॉर्ज ईओ, पूर्व विदेश मंत्री, सिंगापुर, और शासी बोर्ड के एक सदस्य की अध्यक्षता में एक अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार पैनल गठित किया गया है। थाईलैंड की राजुमारी महाचकरी सिरीधोर्न, प्रो. मेघनाद देसाई, सदस्य शासी बोर्ड, डॉ. हसन विराजुदा, इंडोनेशिया के पूर्व विदेश मंत्री और वर्तमान में सदस्य, राष्ट्रपति की सलाहकार परिषद और श्री ली झाओजिंग, चीन के पूर्व विदेश मंत्री और वर्तमान में विदेश मामले समिति, राष्ट्रीय जनवादी कांग्रेस इस पैनल में शामिल हुए हैं।

भारत इस परियोजना का प्रमुख योगदानकर्ता देश रहा है। चीन तथा थाईलैंड के बाद लाओस वित्तीय अंशदान करने वाला तीसरा देश है। जापान ने विश्वविद्यालय तक के पहुंचमार्ग के नवीनीकरण हेतु अपने ओ.डी.ए. का उपयोग करने का बीड़ा उठाया है और नालन्दा विश्वविद्यालय में शांति अध्ययन को बढ़ावा देने हेतु पीस इंस्टीट्यूट ऑफ जापान का उपयोग करने की पेशकश की है। सिंगापुर बौद्ध समुदाय ने पुस्तकालय हेतु योगदान करने की पेशकश की है। श्री एन.के.सिंह, संसद सदस्य और शासी बोर्ड के सदस्य की अध्यक्षता में एक बाह्य स्थायी निधि समिति का गठन किया गया है।

शंघाई सहयोग संगठन

वर्ष के दौरान भारत ने शंघाई सहयोग संगठन के साथ अपने विनियोजन को और तेज किया। पूर्व विदेश मंत्री श्री एस. एम. कृष्णा ने बीजिंग में (जून 2012) आयोजित एससीओ राष्ट्राध्यक्ष शिखर सम्मेलन में शामिल होने के लिए भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया। विदेश मंत्री ने इस बात को दुहराया कि एससीओ सदस्य राष्ट्रों द्वारा विस्तार संबंधी तौर-तरीकों को अंतिम रूप दे दिए जाने के बाद भारत एक पूर्णकालिक सदस्य बनने के लिए तैयार है। श्री संजय सिंह, सचिव (पूर्व) ने बिश्केक में 4-5 दिसंबर 2012 तक आयोजित एससीओ राष्ट्राध्यक्ष परिषद की बैठक में शामिल होने के लिए 2-सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया। भारत ने आतंकवाद तथा मादक द्रव्यों की तस्करी से उत्पन्न खतरों से निपटने के लिए एससीओ क्षेत्रीय आतंकवाद रोधी तंत्र के साथ अधिक से अधिक तालमेल की पेशकश की। भारत ने इस क्षेत्र से होकर मानव, व्यापार तथा ऊर्जा की निर्बाध आवाजाही हेतु एक परिवहन नटवर्क की जरूरत पर बल दिया।



भारत ने सार्क सदस्य देशों के बीच क्षेत्रीय कार्यकलाप को गति प्रदान करने हेतु अपना अहम दृष्टिकोण जारी रखा। सार्क के नये महासचिव राजदूत अहमद सलीम ने 8-21 अप्रैल, 2012 को भारत की यात्रा की। इस दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह और विदेश सचिव श्री रंजन मथाई से मुलाकात की।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद की अध्यक्षता में एक भारतीय शिष्टमंडल ने माले, मालदीव में 10-12 अप्रैल, के दौरान स्वास्थ्य मंत्रियों की चौथी सार्क बैठक में भाग लिया। इस बैठक में क्षेत्रीय स्वास्थ्य मुद्दों पर माले प्रस्ताव अपनाया गया। इस बैठक के दौरान संक्रामक रोगों पर सार्क क्षेत्रीय रणनीति भी प्रारंभ की गई थी। एक भारतीय पहल, सार्क टेली मेडीसीन परियोजना, जिसे वर्तमान में अफगानिस्तान, नेपाल और भूटान में कार्यान्वित किया जा रहा है, उसकी प्रगति में अन्य सार्क सदस्य देशों की साझीदारी थी।

संयुक्त सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने 19-20 अप्रैल, 2011 को थिम्पु में आयोजित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग/समकक्ष निकायों के प्रमुखों की समिति की सातवीं सार्क बैठक में भाग लिया। इस बैठक में व्यावसायिक डिग्रियों की परस्पर मान्यता, साझे क्षेत्रीय शैक्षणिक मानक के लक्ष्य की प्राप्ति, गुणता आश्वासन और प्रत्यायन तंत्र तथा सार्क देशों के पाठ्यचर्चा में एकरूपता समेत महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई।

सार्क देशों के चुनाव प्रबंधन निकाय चुनाव प्रबंधन निकाय प्रमुखों के सार्क सम्मेलन के तहत सहयोग करते हैं और अनुभवों का आदान-प्रदान करते हैं। भारत ने 3 मार्च-30 अप्रैल, 2012 के दौरान नई दिल्ली में चुनाव प्रबंधन निकाय प्रमुखों के तीसरे सम्मेलन की मेजबानी की जिसमें सभी सार्क सदस्य देशों ने भाग लिया। इस सम्मेलन के दौरान भारत ने सार्क देशों के मिड-कैरियर चुनाव प्रबंधन अधिकारी के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित करने के लिए अपने प्रस्ताव की घोषणा की।

भारत ने पुलिस मामलों में सहयोग पर 10वें सार्क सम्मेलन की मेजबानी की जिसकी अध्यक्षता निदेशक, आसूचना ब्यूरो ने की। सार्क देशों के पुलिस विभागों के प्रमुखों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन से पूर्व सार्क आतंकवाद अपराध मानीटरिंग डेस्क (एसटीओएमडी) और सार्क ड्रग अपराध मानीटरिंग डेस्क (एसडीओएमडी) के मुख्य बिन्दुओं पर बैठक की गई।

सार्क क्षेत्र के भीतर पर्यटन को बढ़ावा देने की दृष्टि से भारत ने 6-7 जुलाई, 2012 को नई दिल्ली में सार्क टूर आपरेटर की सभा का

आयोजन किया। सभी सार्क सदस्य देशों के शिष्टमंडलों ने इस सभा में भाग लिया जिसका उद्घाटन पर्यटन मंत्री श्री सुबोध कांत सहाय ने किया।

सार्क की आर्थिक सहयोग संबंधी समिति (सीईसी) की 15वीं बैठक 15-16 जुलाई, 2012 को आयोजित की गई। भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व वाणिज्य सचिव ने किया।

गृह मंत्री श्री सुशील कुमार शिन्दे ने मालदीव में 24-26 सितम्बर, 2012 को आयोजित सार्क आंतरिक/गृह मंत्रियों की 5वीं बैठक में भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। इसके पूर्व सार्क आंतरिक/गृह सचिवों और सार्क आप्रवासन पदाधिकारियों की बैठक हुई। मंत्रियों ने सभी मायनों में आतंकवाद की भर्त्सना की और इसके विरुद्ध एकजुट होकर कार्रवाई करने का आहवान किया।

नवम्बर, 2011 में मालदीव में आयोजित 17वें सार्क शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह ने दक्षिण एशियाई डाक संघ (एसएपीयू) की स्थापना की सराहना की और डाक क्षेत्र में क्षमता निर्माण के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम की घोषणा की। वर्ष के दौरान, रफी अहमद किदवई राष्ट्रीय डाक अकादमी, गाजियाबाद में 15-19 अक्टूबर, 2012 के दौरान सार्क पदाधिकारियों के लिए अंतर्राष्ट्रीय डाक संबंधी एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। वर्ष के दौरान दक्षिण एशियाई डाक संघ (सापू) का एक तदर्थ सचिवालय नई दिल्ली में स्थापित किया गया। श्री एस.सामंत, भारतीय डाक सेवा के एक पूर्व अधिकारी, को महा सचिव नियुक्त किया गया। मार्च, 2013 में आयोजित किये जाने वाले सापू सभा के लिए तैयारी करने हेतु 18-19 दिसम्बर, 2012 को नई दिल्ली में सापू के प्रारंभिक सम्मेलन का आयोजन किया गया।

सार्क स्पीकरों और पार्लियामेंटेरियनों के संघ का छठा सम्मेलन 4-6 नवम्बर, 2012 को इस्लामाबाद में आयोजित किया गया। भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार ने किया। सार्क पार्लियामेंटेरियनों ने सहभागी लोकतंत्र और खाद्य सुरक्षा के बारे में चर्चा की। इस सम्मेलन के दौरान अध्यक्षता भारत से पाकिस्तान को हस्तांतरित कर दी गई।

7 दिसम्बर, 2012 को विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद द्वारा सार्क सांस्कृतिक महोत्सव 2012 का उद्घाटन किया गया। इसके भाग के रूप में 7-9 दिसम्बर, 2012 के दौरान पुराना किला, नई दिल्ली में सार्क देशों के विभिन्न बैंडों से सुसज्जित दक्षिण एशियाई बैंडस महोत्सव का आयोजन किया गया। 7 दिसम्बर, 2012 को ललित

कला अकादमी, नई दिल्ली में विदेश सचिव द्वारा चित्रकला 'सार्क का रंग' प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। सांस्कृतिक महोत्सव जिसमें सार्क का साहित्य महोत्सव शामिल है, का 10-11 मार्च, 2013 को आगरा में आयोजन किया जाएगा।

सार्क चार्टर दिवस जो हर वर्ष मनाया जाता है वह सार्क क्षेत्रीय केन्द्रों और शीर्ष निकायों द्वारा 8 दिसम्बर, 2012 को मनाया गया। सार्क चैम्बर ऑफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्री तथा फाउंडेशन ऑफ सार्क राइटर्स एण्ड लिटरेचर (एफओएसडब्ल्यूएल) ने कार्यक्रम आयोजित

किये जिससे क्रमशः व्यवसाय और साहित्यिक समुदायों तक सार्क का संदेश पहुँचा। युवा पीढ़ी को शामिल करते हुए सार्क आपदा प्रबंधन केन्द्र और सार्क प्रलेखन केन्द्र द्वारा क्रियाकलाप आयोजित किए गए।

भारत "विकास के लिए वैश्विक साझीदारी में एम्बेसडर के रूप में युवा" विषय के अंतर्गत 11-15 फरवरी, 2013 के दौरान राजीव गांधी नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ यूथ डेवलपमेंट, तमिलनाडु में चौथे सार्क युवा शिविर की मेजबानी करेगा।



विकास सहयोग को भारतीय विदेश नीति में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। हाल ही के वर्षों में विदेशों में भारतीय विकास कार्यक्रमों में भौगोलिक विकास तथा क्षेत्रीय फैलाव दोनों के संदर्भ में पर्याप्त विस्तार हुआ है। जनवरी, 2012 में विदेश मंत्रालय ने भारत सरकार के विदेशी आर्थिक सहायता कार्यक्रमों का शीघ्र एवं सक्षम कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए विकास सहभागिता प्रशासन (डीपीए) स्थापित करने की महत्वपूर्ण पहल की थी। विकास सहभागिता प्रशासन को अवधारणा, प्रारम्भण, कार्यान्वयन तथा समापन के चरणों में भारतीय विकास परियोजनाओं के सक्षम संचालन के लिए प्रक्रियाएं स्थापित करने का अधिदेश प्राप्त है। इसका उद्देश्य भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग तथा अन्य योजनाओं के अन्तर्गत क्षमता का समुन्नयन करना एवं सुचारु बनाना है। विकास सहभागिता प्रशासन इस मंत्रालय के संबंधित क्षेत्रीय प्रभागों के निकट समन्वय से कार्य करता है। क्षेत्रीय प्रभाग शुरू की जाने वाली परियोजनाओं के चयन के संबंध में सहभागी देशों के साथ मुख्य वार्ताकार बना रहता है। परियोजनाओं के कार्यान्वयन तथा निष्पादन का दायित्व डीपीए का है।

वर्ष 2012-13 में इस मंत्रालय के कई क्षेत्रीय प्रभागों से कई परियोजनायें विकास सहभागिता प्रशासन को हस्तांतरित की गईं जो परियोजना मूल्यांकन, कार्यान्वयन, अनुवीक्षण तथा मूल्यांकन के विभिन्न चरणों में विविध क्षेत्रों एवं हलकों में बहुपक्षीय परियोजनाओं के संचालन के लिए अपेक्षित तकनीकी विशेषज्ञता का विकास करने के संबंध में डीपीए प्रगति के अनुरूप थी। अफगानिस्तान, म्यांमा, श्रीलंका, बांग्लादेश, तथा अफ्रीकी देशों में विकास परियोजनाएं तथा कई विकासशील देशों में ऋण श्रृंखला के अन्तर्गत परियोजनायें डीपीए के सकेन्द्रित क्षेत्रों में निर्माणाधीन स्तर पर थी। तकनीकी सहायता कार्यक्रमों में असैनिक तथा सैन्य क्षमता निर्माण शामिल था जिसका विस्तार होता रहा।

ऋण श्रृंखला

हाल ही के वर्षों में भारतीय विकास सहायता का मुख्य संघटक अल्पतम विकसित तथा विकासशील देशों को रियायती शर्तों पर ऋण श्रृंखला प्रदान करना है। ऋण श्रृंखला अफ्रीका, एशिया तथा लातीन अमरीका में भारत की विकास सहयोग रणनीति का एक महत्वपूर्ण संघटक रही है। द्विपक्षीय सहयोग सम्वर्धित करने के उद्देश्य से ऋण श्रृंखला ऋणी देशों को भारत से वस्तु एवं सेवाओं का आयात करने तथा अपनी विकास प्राथमिकताओं के अनुसार अवस्थापना विकास तथा क्षमता निर्माण के लिए परियोजनायें शुरू करने में सहायता प्रदान करती है।

पिछले दशक के दौरान 164 ऋण श्रृंखलाओं के लिए 9.2 बिलियन अमरीकी डॉलर की राशि आबंटित की गई थी जिनमें से 5.3 बिलियन अमरीकी डॉलर अफ्रीकी देशों के लिए तथा 3.9 बिलियन डॉलर गैर अफ्रीकी देशों को आबंटित किये गये थे। चालू वित्तीय वर्ष के दौरान 188.32 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला अफ्रीका को आबंटित की गई थी जिसमें बेनिन गणराज्य को ट्रैक्टर एसेम्बली संयंत्र एवं कृषि उपस्कर निर्माण एकक के निर्माण के लिए 15 मिलियन अमरीकी डॉलर, मोजाम्बिक को ग्रामीण पेय जल परियोजना के लिए 19.72 अमरीकी डॉलर, डेका पम्पिंग स्टेशन के समुन्नयन तथा नदी जल प्राप्ति प्रणाली हवांगे विद्युत स्टेशन के लिए 28.60 मिलियन अमरीकी डॉलर तथा माशकौर चीनी परियोजना के लिए सुडान को 105 मिलियन अमरीकी डॉलर शामिल हैं। गैर अफ्रीकी देशों को ऋण श्रृंखला की प्रतिबद्धता में म्यांमा को विभिन्न परियोजनाओं के लिए 500 मिलियन अमरीकी डॉलर (प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह की म्यांमा यात्रा के दौरान मई 2012 में घोषित) तथा क्यूबा को ब्लैडिंग उर्वरक संयंत्र के लिए 2.7 मिलियन अमरीकी डॉलर शामिल है।

भारत सरकार ने जून 2010 में श्रीलंका के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान घोषित प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए त्रिकोमाली में सामपुर विद्युत परियोजना के लिए श्रीलंका सरकार को 200 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला भी प्रदान की है। यह परियोजना नेशनल थर्मल पावर कारपोरेशन तथा सीलोन विद्युत बोर्ड के बीच एक संयुक्त उद्यम है इस ऋण श्रृंखला का उपयोग सामपुर में एक जेटी के निर्माण तथा सामपुर से हबारना तक पारेषण लाइनों का निर्माण किया जाएगा।

श्रीलंका में ऋण श्रृंखला के अन्तर्गत पहले से ही चल रही परियोजनाओं में संतोषजनक प्रगति हुई है। कोलम्बो से मातरा तक दक्षिण रेलवे कॉरीडोर में ट्रैक बिछाने का काम अप्रैल 2012 में पूरा हो गया था। इस खण्ड को 19 अप्रैल 2012 वाणिज्यिक यातायात के लिए खोल दिया गया था। इस परियोजना के लिए रोलिंग स्टॉक तथा अन्य मर्दों की आपूर्ति अगस्त 2012 में पूरी हो गई थी। 416.39 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला के अन्तर्गत ओमान्ताई-पल्लई, मैदाबाछैया- मधु, मधुचर्च-तलाई मन्नार क्षेत्रों में रेलवे परियोजना के कार्यान्वयन में अच्छी प्रगति हुई है। पल्लई-कांकेसंतुराई रेलवे लाइन पर ट्रैक बिछाने (146.34 मिलियन अमरीकी डॉलर) तथा उत्तरी रेलवे लाइन के लिए सिंगनल तथा दूरसंचार उपस्करों (86.52 मिलियन अमरीकी डॉलर) की आपूर्ति का कार्य भी शुरू हो चुका है।

भारत सरकार ने वर्ष 2010 में बांग्लादेश के लिए एक बिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला की घोषणा की थी। वर्ष 2012 में 200 मिलियन अमरीकी डॉलर की राशि को अनुदान में परिवर्तित करने का निर्णय लिया गया था जिसका उपयोग बांग्लादेश सरकार की प्राथमिकता के अनुसार परियोजना के लिए किया जाएगा। ऋण श्रृंखला के अन्तर्गत उपलब्ध शेष 800 मिलियन अमरीकी डॉलर में से 656.34 मिलियन अमरीकी डॉलर की राशि की 12 परियोजनाओं की पहचान परस्पर सहमति से की गई है। इनमें रोलिंग स्टॉक-फ्रेट वैगन, लोकोमोटिव, डीजल इलैक्ट्रिकल मल्टिपल यूनिट तथा 290 डबलडैकर, सिंगल डैकर की आपूर्ति शामिल है। तथा 50 संधियुक्त बसों के लिए परियोजनाएं शामिल हैं। डबलडैकर बसें पहले ही सौंप दी गई हैं तथा ढाका में चल रही है। बांग्लादेश सरकार तथा विभिन्न हित धारकों के साथ तिमाही समीक्षा बैठकों का तंत्र स्थापित किया गया है। इससे ऋण श्रृंखला के अन्तर्गत परियोजनाओं का शीघ्र तथा सक्षम कार्यान्वयन के लिए प्रक्रियाओं का सरलीकरण हुआ है।

दक्षिण पूर्व एशिया तथा मध्य एशिया के कई देशों को भी जल संसाधन विकास एवं सिंचाई विद्युत पारेषण, एवं उत्पादन तथा ग्रामीण विद्युतीकरण के लिए विभिन्न क्षेत्रों में ऋण श्रृंखला प्रदान की गई है। लाओ पीडीआर के लिए 33 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला के अन्तर्गत पाकसौग एस/एस-जिंगसी 115 केवी, डबलसर्कट पारेषण लाइन परियोजना तथा नाम सौग 7.5 मेगावाट जल विद्युत परियोजना सफलतापूर्वक पूरी कर ली गई है। कम्बोडिया को 60 अमरीकी डॉलर को कुल तीन ऋण श्रृंखलाओं के अन्तर्गत बांध तथा अवस्थापना कार्यों के अन्तर्गत विनिर्माण के साथ स्टॉक टसाल जल विकास परियोजना के कार्य में संतोषजनक प्रगति हो रही है। फरवरी 2012 में भारत-मंगोलिया संयुक्त प्रौद्योगिकी शिक्षा एवं आउटसोर्सिंग सेण्टर (आईएमजेआईटी) के लिए 20 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला प्रदान करने के करार पर हस्ताक्षर किये गये हैं।

नेपाल सरकार को 2 ऋण श्रृंखलाएं प्रदान की गई थी जिनमें से एक 2007 में 100 मिलियन अमरीकी डॉलर की थी तथा दूसरी 2010 में 250 मिलियन अमरीकी डॉलर की थी। 100 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला के अन्तर्गत सड़क परियोजनाओं, ग्रामीण विद्युतीकरण, विद्युत पारेषण तथा जल विद्युत परियोजनाओं के लिए कुल 82.5 मिलियन अमरीकी डॉलर की राशि की 14 संविदाएं अनुमोदित की गई हैं। इनमें से देवी घाट जल विद्युत परियोजना का पुनर्स्थापन, चाक-चेक लिबांग सड़क का समुनयन तथा भालू बांग प्यूथान सड़क का निर्माण पूरा कर लिया गया है। राज मार्ग, पुलों, एयरपोर्टों तथा सिंचाई परियोजना सहित अवस्थापना संबंधी परियोजनाओं की वित्त व्यवस्था के लिए 250 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला है।

चालू परियोजनाओं के अनुवीक्षण के भाग के रूप में समीक्षा मिशन ने मोजाम्बिक, तंजानिया, इथियोपिया, कांगो, लोकतांत्रिक गणराज्य, मध्य अफ्रीकी गणराज्य, गाबोन, सूडान, डिबोती, तथा सेनेगल का दौरा किया। कई भारतीय मिशनों तथा ऐग्जीम बैंक, जो कि भारत

सरकार की ऋण श्रृंखला के लिए ऋण दाता एजेंट है, से निष्पादन रिपोर्ट भी प्राप्त की गई हैं।

पड़ोसी देशों में अनुदान सहायता से विकास परियोजनाएं

अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण तथा विकास के लिए भारत की प्रतिबद्धता के अनुसरण में अवस्थापना, जलविद्युत, विद्युत पारेषण, कृषि, उद्योग, शिक्षा तथा स्वास्थ्य के क्षेत्र में कई परियोजनाओं, जिन्हें अफगानिस्तान की सरकार ने विकास के प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र के रूप में अभिनिर्धारित किया है, भारत सरकार की सहायता से कार्यान्वित की जा रही है। अफगानिस्तान में चल रही परियोजनाओं में हेरात प्रान्त में सलमा बांध (42 मेगावाट) का पुनर्निर्माण दोशी तथा चारीकार में 2 उप स्टेशन, अफगान संसद का निर्माण, स्टोर पैलेस का पुनर्स्थापन, भारतीय चिकित्सा मिशनों के माध्यम से चिकित्सा सेवाओं तथा दवाईयों की व्यवस्था, खाद्यान्न तथा उच्च प्रोटीन वाले बिस्कुटों के रूप में 1 मिलियन टन गेहूँ का दान, काबुल में इन्दिरा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय बाल अस्पताल के लिए सहायता, एक कृषि विश्वविद्यालय का समुनयन, एक खनन संस्थान की स्थापना तथा बस, कम्प्यूटरों तथा अन्य अपेक्षित वस्तुओं की आपूर्ति शामिल हैं।

शिक्षा तथा क्षमता निर्माण अफगानिस्तान के साथ भारत की विकास सहभागिता का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। कार्यान्वयनाधीन क्षमता निर्माण कार्यक्रमों में अफगान राष्ट्रिकों के लिए विश्वविद्यालय छात्र वृत्तियां (आईसीसीआर द्वारा आयोजित), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) की 674 छात्रवृत्तियां, असेनिक तथा कार्मिकों के लिए 593 अल्पावधिक प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा अफगान लोक प्रशासन (सीएपी) क्षमता कार्यक्रम के लिए 30 भारतीय सिविल सेवकों की प्रतिनियुक्ति शामिल हैं। सीआईआई द्वारा संचालित भारत-अफगान व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों में अफगानी राष्ट्रिकों के लिए बड़ईगिरी, प्लम्बिंग, बेल्टिंग मिस्त्री कार्यों तथा दर्जी कार्यों तथा सेवा परियोजना के चरण-II में महिलाओं के वस्त्रनिर्माण, खाद्य प्रसंस्करण तथा विपणन में प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। पिछले तीन वर्षों के दौरान एक लघु विकास परियोजना, स्कीम के प्रथम दो चरणों में संवेदनशील सीमा क्षेत्रों में कृषि, ग्रामीण विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए समुदाय आधारित परियोजना का वित्तपोषण किया गया, जिनका सामुदायिक जीवन पर प्रत्यक्ष एवं स्पष्ट प्रभाव पड़ा है। 100 मिलियन अमरीकी डॉलर की अतिरिक्त परियोजनाओं को शामिल करने के लिए लघु विकास परियोजनाओं का तीसरा चरण शुरू किया गया है।

म्यांमा में सीमापार परियोजनाओं सहित विविध प्रकार की परियोजनाएं कार्यान्वित की जा रही हैं। महत्वपूर्ण चालू परियोजनाओं में कलादान बहुविध परिवहन परियोजना (जो कि भारत के पूर्वी समुद्री क्षेत्र में बन्दरगाहों को म्यांमा के सीतवे बन्दरगाह से और उसके बाद भारत-म्यांमा सीमा को जोड़ेगा), क्षेत्रीय राजमार्ग (जो भारत को म्यांमा तथा थाइलैंड से जोड़ेगा), एवं अन्य परियोजनाएं, आधुनिक कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा केन्द्र, चावल जैव पार्क, म्यांमा सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, यांगान बाल अस्पताल तथा सितवे सामान्य अस्पताल का समुनयन तथा यांगन तथा नई पई लाव में भाषा प्रयोगशाला तथा एक इ.संसाधन केंद्र शामिल हैं।



इथीयोपिया में चीनी उद्योग के विकास के लिए भारतीय अनुदान सहायता तथा ऋण श्रृंखला के अन्तर्गत निर्माणाधीन फिंचा चीनी फैक्ट्री।



भारतीय अनुदान सहायता के अन्तर्गत सौर विद्युतीकरण पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम के सहभागी फिजी के प्रधान मंत्री के साथ।

वर्ष 1951 से ही भारत-नेपाल आर्थिक सहयोग का निरन्तर तीव्रीकरण तथा विविधीकरण हुआ है। भारत सरकार द्वारा कार्यन्वित की जा रही महत्वपूर्ण चालू विकास परियोजनाओं में तराई सड़कों का विनिर्माण (कुल 605 कि.मी लम्बाई की 19 सड़कें, जो सीमा क्षेत्रों में लगभग 8.8 मिलियन लोगों के लिए लाभदायी होंगी तथा जिनसे व्यापार व उद्योग संवर्धित होगा), भारत-नेपाल सीमा पर एकीकृत चैक पोस्ट, सीमापार रेलवे सम्पर्क, काठमाण्डू में 200 बिस्तरों वाला आपातकालीन अस्पताल एवं ट्रॉमा केन्द्र, विद्युत पारेषण लाईनों का निर्माण तथा हेतौदा में पोलीटेक्नीक की स्थापना शामिल है।

श्रीलंका के साथ भारत की बहुक्षेत्रीय विकास सहभागिता श्रीलंका सरकार द्वारा अभिज्ञात प्राथमिकताओं पर आधारित हैं। इस प्रकार अभिज्ञात तथा भारत सरकार की सहायता से कार्यन्वित की जा रही परियोजनाओं में कांकेसातुराई बन्दरगाह का विकास, जाफना सांस्कृतिक केन्द्र का निर्माण तिरुकेश्वरम मंदिर का पुनर्स्थापन, कैण्डी में अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध संग्रहालय में भारतीय गैलरी की स्थापना तथा डिकोया में 150 बिस्तरों वाले अस्पताल का निर्माण शामिल हैं।

भारत मुख्य आवास निर्माण पहल के माध्यम से श्रीलंका में आंतरिक रूप से विस्थापित व्यक्तियों के पुनर्वास में योगदान दे रहा है। जुलाई 2012 में 530 मिलियन की लागत उत्तरी प्रान्त के 5 जिलों में 25 आवासीय एककों 1000 आवासीय एककों की प्रायोगिक परियोजना पूरी कर ली गई है। भारत सरकार तथा श्रीलंका के बीच 17 जनवरी 2012 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे, जिसके अन्तर्गत भारत उत्तरी तथा पूर्वी प्रान्तों में स्वामी द्वारा निर्धारण के आधार पर 43,000 मकानों तथा एजेंसी द्वारा निर्धारण के आधार पर 6000 मकानों के निर्माण एवं मरम्मत का वित्त पोषण करेगा। मालिक द्वारा निर्धारण के आधार पर संचालित माडलज में लाभार्थी को प्रत्यक्ष रूप से उनके मकान की राशि किश्तों में सीधे उनके बैंक खाते में जमा की जाती है। श्रीलंका में भारत के उच्चायुक्त तथा श्रीलंका सरकार के आर्थिक विकास मंत्री ने 2 अक्टूबर, 2012 को आयोजित एक समारोह में मालिक द्वारा निर्धारित मकानों का निर्माण शुरू किया था तथा इस अवसर पर लगभग 1500 लाभार्थियों को जमीन का मालिकाना अधिकार तथा भुगतान की पहली किश्त जारी की गई थी। मकानों को पूरा करने की वास्तविक स्थिति के अनुसार शेष किश्तें जारी करने के कार्य में काफी प्रगति हुई है। वर्ष 2012 के अंत तक लाभार्थियों की संख्या 4000 से अधिक थी।

समीक्षाधीन वर्ष में मध्य/यूवाप्रान्तों में एजेंसी द्वारा निर्धारित मॉडल के अन्तर्गत 4000 मकानों के निर्माण की प्रक्रिया चल रही है।

अफ्रीका तथा अन्य क्षेत्रों में विकास परियोजनाएं

अफ्रीका के साथ भारत की सहभागिता परामर्शदायी सहयोग मॉडल पर आधारित है, जो अफ्रीकी देशों की आवश्यकताओं तथा विकास अनुभव के आदान-प्रदान के अनुरूप है। खासकर पिछले 10 वर्षों के दौरान विभिन्न अफ्रीकी देशों के साथ विकास सहभागिता के माध्यम से आर्थिक विकास तथा क्षमता निर्माण में हमारे योगदान में पर्याप्त वृद्धि हुई है। वर्ष 2008 तथा 2011 में दो भारतीय अफ्रीका

मंच शिखर सम्मेलनों (आईएएफएस-I व II) से इस महाद्वीप के साथ हमारी सहभागिता और सशक्त हुई है।

अनुदान सहायता के अन्तर्गत वर्तमान वर्ष में मालवी, बोत्स्वाना, नामीबिया तथा तनजानिया के शिक्षा एवं स्वास्थ्य क्षेत्रों को वित्तीय सहायता प्रदान की गई थी। मालावी में भारत ने शिक्षा संस्थानों के लिए 14.7 मिलियन उपस्करों भेजे तथा स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए 60 मिलियन रुपये की राशि प्रदान की। वर्तमान वर्ष में बोत्स्वाना ने 57.3 मिलियन रुपये मूल्य के चिकित्सा एवं सूचना प्रौद्योगिकी उपस्करों की खेप प्राप्त की नामीबिया में अस्पताल प्रबंधन के लिए सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित 100 मिलियन रुपये से अधिक मूल्य के उपस्करों की आपूर्ति की कार्रवाई चल रही है। सेशल्स में विक्टोरिया अस्पताल के लिए उपस्करों की आपूर्ति जारी है।

महत्वपूर्ण कार्यान्वयनधीन आईएएफएस परियोजनाओं में अफ्रीका-जिम्बाब्वे, मालावी, दक्षिण सूडान, कोर डी आईवोरी तथा कांगों गणराज्य में 5 ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क (आरटीपी) शामिल हैं। ये ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान (एनआईआरडी), हैदराबाद द्वारा कार्यन्वित किए जाएंगे। एनआईआरडी ने मालावी व जिम्बाब्वे, दोनों देशों में प्रारम्भिक अध्ययन का कार्य पूरा कर लिया था। क्षमता निर्माण प्रतिबद्धता के अन्तर्गत वर्तमान वर्ष में एनआईआरडी द्वारा अफ्रीकी कार्मिकों के लिए स्थानीय अभिशासन एवं विकेन्द्रीकरण, वाटरशेड प्रबंधन, ग्रामीण लघु उद्यमों के संवर्धन, पेय जल प्रबंधन तथा सहभागी गरीबी उन्मूलन जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने जा रहा है। नेशनल स्वापक जांच प्रयोगशाला (एनडीटीएल) तथा विश्व स्वापक विरोधी एजेंसी (डबल्यूएडीए) के बीच सहयोग स्थापित करने के लिए वर्ष के दौरान खेल एवं युवा कार्य मंत्रालय के सहयोग से विशेषज्ञता आदान-प्रदान कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

इसी अवधि के दौरान पुरातत्व संकषण, सूचना एवं कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी तथा लघु एवं मध्यम उद्यमों के क्षेत्र में कई द्विपक्षीय परियोजनाएं शुरू की गई थी। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने कम्बोडिया में ता प्रोम मंदिर, लाओ पीडीआर में वाट फोऊ मन्दिर तथा म्यांमा में आनंद मंदिर के संरक्षण एवं पुनर्स्थापन का कार्य कर रहा है। एसेह, इण्डोनेशिया में विनिर्माण क्षेत्र में व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र तथा जिम्बाब्वे में लघु एवं मध्यम उद्यमों के क्षेत्र में एक परियोजना से संबंधित कार्य पूरे कर लिए गए हैं। विवेच्य वर्ष के दौरान वियतनाम, एल सालवाडोर तथा निकारागुआ में आईसीटी (सूचना व संचार प्रौद्योगिकी) से संबंधित कार्य पूरे कर लिए गए हैं। विवेच्य वर्ष के दौरान वियतनाम, एल सालवाडोर तथा निकारागुआ में आईसीटी (सूचना व संचार प्रौद्योगिकी) से संबंधित कार्य पूरे कर लिए गए हैं। सीरिया, ग्रेनाडा तथा डोमीनिकन गणराज्य आईसीटी से संबंधित कार्य जारी है; अन्य स्थानों पर भी यह कार्य किया जाना है।

आपदा राहत के लिए सहायता

भारत प्राकृतिक आपदा से प्रभावित देशों को राहत सहायता प्रदान करता है। कांगों गणराज्य, लीबिया, बांग्लादेश, फिजी, सीरिया तथा म्यांमा को नकद अथवा वस्तुओं के रूप में राहत सहायता प्रदान की गई थी।



भारतीय अनुदान सहायता के अन्तर्गत अफगानिस्तान में निर्मित सलमा बांध का दृश्य



भारत श्रीलंका में आंतरिक रूप से विस्थापित व्यक्तियों (आईडीजी) को पुनर्वास के लिए योगदान देते हुए जिसके तहत भारत नार्दन तथा इस्टर्न राज्यों में 43,000 घरों के मालिकाना हक के साथ निर्माण और मरम्मत करते हुए तथा 6000 आवासीय इकाइयों तीन साल में देते हुए।

तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग के माध्यम से क्षमता निर्माण (आ टी सी एवं एससीएएपी)

पिछले वर्षों की भाँति वर्ष 2012-13 में भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग कार्यक्रम (आईटीईसी) तथा अफ्रीका कार्यक्रम के लिए विशेष राष्ट्रमंडल सहायता (एससीएएपी) विकासशील विश्व के लिए भारतीय सहायता का एक महत्वपूर्ण संघटक था। इन कार्यक्रमों की उपयोगिता तथा प्रासंगिकता इन कार्यक्रमों में सहभागियों की बढ़ती संख्या से परिलक्षित होती हैं। 161 विकासशील देशों को 8000 से अधिक असेैनिक प्रशिक्षण स्लाट आबंटित किए गए थे (सूची परिशिष्ट-IV पर है)। भारत सरकार द्वारा पूर्णतः प्रायोजित असेैनिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अन्तर्गत इन संस्थानों में 280 पाठ्यक्रम आयोजित किए गए थे। ये पाठ्यक्रम प्रधानतः अल्पावधिक तथा कार्यरत व्यावसायिकों को भिन्न-भिन्न प्रकार के कौशल्य एवं विषयों का प्रशिक्षण दिया गया था। सरकारी एवं अन्य अधिकारियों को मुख्य रूप से वित्त एवं लेखें, लेखापरीक्षण, बैंकिंग, शिक्षा, नियोजन एवं प्रशासन, संसदीय अध्ययन, अपराध रिकार्ड, वस्तु, ग्रामीण विद्युतीकरण, उपस्कर अभिकल्पन, और ओप्राथालमालिजिक उपस्कर इत्यादि जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्रदान किया गया था। एसएमई तथा उद्यमीयता विकास कार्यक्रमों ने भी कई सहभागियों को आकर्षित किया (असेैनिक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करने वाले संस्थानों की सूची परिशिष्ट -V पर है)।

वर्ष के दौरान सूचना तक पहुंच को आसान बनाने तथा विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए आवेदन तथा अनुमोदन प्रक्रियाओं में शीघ्रता लाने के लिए आई टीईसी वेबसाइट का पुनर्गठन किया गया था। विदेश स्थित मिशनो में आई टीईसी दिवस समारोह तथा सोशल नेटवर्किंग माध्यमों से भी आईटीईसी/एससीएएपी एलुमनी के साथ आदान प्रदान सशक्त हुआ है।

आईटीईसी कार्यक्रम अनिवार्य रूप से द्विपक्षीय है। तथापि, हाल ही के वर्षों में असियान, बिमस्टैक, मैकांग गंगा सहयोग (एमजीसी), अफ्रीका आर्थिक आयोग, अफ्रीकी संघ, एफ्रो-एशियाई ग्रामीण विकास संगठन (एएआरडीओ), पैन अफ्रीकी संसद, कैरेवियाई समुदाय (कारीकाम), राष्ट्रमंडल, विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू टीओ), हिन्द महासागर क्षेत्रीय सहयोग रिम संघ (आईओआर-ए आरपी) तथा भारत अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन जैसे क्षेत्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय सन्दर्भ में परिकल्पित सहयोग कार्यक्रमों के लिए आईटीईसी के संसाधनों का उपयोग किया गया है।

विशेष पाठ्यक्रम

सहभागी देशों के विशेष अनुरोध पर वर्ष 2012-13 के दौरान आर्मेनिया, भूटान, मोजाम्बिक तथा अन्य देशों के लिए अन्तराष्ट्रीय लोकतंत्र तथा चुनाव प्रबंधन संस्थान (आईआईडीईएम) नई दिल्ली, विश्व व्यापार संगठन अध्ययन केन्द्र, भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, नई दिल्ली, राष्ट्रीय प्रशासनिक शोध संस्थान (एनआईएआर), मसूरी, संसदीय अध्ययन एवं प्रशिक्षण ब्यूरो (बीपीएसटी), नई दिल्ली, में विशेष पाठ्यक्रम आयोजित किए गए थे।

कोलम्बो योजना के अन्तर्गत तकनीकी सहयोग योजना

एशिया तथा प्रशान्त महासागर क्षेत्रों में सहयोगी तथा आर्थिक-सामाजिक विकास के लिए कोलम्बो योजना इस क्षेत्र के देशों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास को संवर्धित करने के लिए 1951 में स्थापित क्षेत्रीय अन्तर सरकारी पहल थी। वर्ष 2012-13 के दौरान कोलम्बो योजना के 18 सदस्य देशों के लिए 500 प्रशिक्षण स्लाट आबंटित किए गए थे। इसमें कोलम्बो योजना सचिवालय के विवेकाधिकार पर 90 स्लाट रखे गए थे। प्रशिक्षण के क्षेत्रों में मानव संसाधन विकास, लेखापरीक्षण एवं लेखे, वाणिज्य, सूचना प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर शिक्षा, संसदीय मामले ग्रामीण विकास, वस्त्र, जल संसाधन, चिकित्सा विज्ञान, इंजीनीयरी, वित्तीय प्रबंधन, बीमा इत्यादि शामिल हैं।

भारत सरकार के वित्तीय अनुदान से कोलम्बो योजना स्टाफ कालेज, मनीला ने 2010-11 में द्विवर्षीय तकनीकी मानव संसाधन विकास गरीबी उन्मूलन कौशल्य के लिए टीवीईटी कौशल्य 'एशिया प्रशान्त क्षमता निर्माण के लिए परियोजना' नामक दो वर्षीय तकनीकी सहयोग कार्यक्रम का कार्यान्वयन शुरू किया है। सीपीएससी ने 12-14 नवम्बर, 2012 में इस परियोजना की मध्यावधिक समीक्षा के लिए दूसरी क्षेत्रीय कार्यशाला आयोजित की थी।

रक्षा प्रशिक्षण

आईटीईसी कार्यक्रमों के अन्तर्गत विभिन्न रक्षा प्रशिक्षण संस्थानों में रक्षा प्रशिक्षण लोकप्रिय रहा है। वर्ष 2012-13 के दौरान सहभागी देशों को 1500 रक्षा प्रशिक्षण स्लाट आबंटित किए गए थे। ये पाठ्यक्रम सामान्य तथा विशिष्ट दोनों प्रकार के थे तथा इसमें सुरक्षा एवं रणनीतिक अध्ययन, रक्षा प्रबंधन, इलेक्ट्रॉनिक्स, यांत्रिक इंजीनियरी निटी, समुद्री जल सर्वेक्षण, आतंकवाद विरोध तथा वन युद्ध प्रणाली के साथ-साथ तीनों सेवाओं में युवा लघु व्यापारियों के लिए आधारभूत पाठ्यक्रम शामिल थे। राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय (एनडीसी, नई दिल्ली) तथा रक्षा सेवा स्टाफ महाविद्यालय, (डीएससीसी) वेलिंगटन में प्रमुख रक्षा पाठ्यक्रमों में आवेदनों की संख्या काफी अधिक थी तथा इनमें विकसित देशों से स्ववित्त पोषण के आधार पर अन्य अधिकारी भी आकर्षित हुए।

विशेषज्ञों की प्रतिनियुक्ति

सरकारों तथा अन्तराष्ट्रीय संगठनों के अनुरोध पर सूचना प्रौद्योगिकी, लेखा परीक्षक, विधिक कार्य, कृषि, फार्मेकोलोजी। सांख्यिकी, जनसांख्यिकी, लोक प्रशासन तथा वस्त्र जैसे कई क्षेत्रों में विशेषज्ञता के आदान-प्रदान के लिए विभिन्न असेैनिक तथा रक्षा क्षेत्रों के 26 विशेषज्ञ प्रतिनियुक्ति पर भेजे गए थे। लाओस, मॉरीशस, सेशलस, इथोपिया, लिसोर्थ, नामीबिया, तथा युगाण्डा ने प्रशिक्षण एवं परामर्शदायी क्षमताओं में रक्षा दलों की सेवाओं का लाभ उठाया। विशेषज्ञों की प्रतिनियुक्ति से सहभागी देशों में राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों के निर्माण के लिए योगदान में सहायता मिली है।



विदेश मंत्रालय में सृजित निवेश एवं प्रौद्योगिकी (आईटीपी) प्रभाग आर्थिक राजनय रणनीतियों को निश्चित दिशा प्रदान करता है तथा इस पर जोर देता है। यह प्रभाग व्यापार एवं निवेश तथा प्रौद्योगिकी अधिग्रहण को सुविधाजनक बनाने के सामान्य उद्देश्यों को संवर्धित करने के लिए निर्यात संवर्धन परिषद, वाणिज्य एवं उद्योग चैम्बर और औद्योगिक संघों तथा सरकारी मंत्रालयों/विभागों के साथ नियमित रूप से आदान-प्रदान करता है।

विदेशी निवेश की प्राप्ति को सुविधाजनक बनाने के लिए यह प्रभाग विदेशी निवेश संवर्धन बोर्ड के सदस्य के रूप में आर्थिक कार्य विभाग के साथ; बैंकिंग तथा संबंधित मुद्दों पर वित्तीय सेवा विभाग और भारतीय रिज़र्व बैंक में विदेशी निवेश पर विशेष समिति के साथ, अन्य देशों/विदेशी एअर लाइनों के साथ नागर विमानन वार्ता, वायु सेवा करार (एएसए) तथा विदेशी एवं भारतीय विमानों की वायुयान सेवा में सुधार इत्यादि के मामलों के संबंध में नागर विमानन मंत्रालय के साथ मिलकर कार्य करता है। बंदरगाह इत्यादि की अवस्थापना में निवेश से संबंधित मामलों पर यह प्रभाग पोत परिवहन मंत्रालय तथा अन्य संबंधित सरकारी विभागों के साथ मिलकर कार्य करता है। इस प्रकार विदेश मंत्रालय की ओर से आईटीपी प्रभाग अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य प्रदान करने के लिए विभिन्न सरकारी मंत्रालयों/विभागों के नीति निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेता है।

यह प्रभाग भारत के व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण से संबंधित मामलों को सुविधाजनक बनाने के लिए एक नोडल केन्द्र के रूप में विदेश स्थित भारतीय मिशनो के निकट सहयोग से कार्य करता है। भारतीय मिशनो ने विदेशों में कार्यक्रमों/निवेश संवर्धन कार्यक्रमों के संचालन एवं इस संबंध में रणनीति तैयार करने के लिए विपणन विस्तार कार्यक्रमों के अंतर्गत 2012-13 के दौरान 5 करोड़ रुपये के बजट का उपयोग किया। इस प्रभाग ने न केवल रोजमर्रा के व्यापार एवं निवेश पूछताछ से संबंधित कार्यवाही, अपने प्रत्यायन के देशों में आर्थिक एवं व्यापार वातावरण से संबंधित सूचना प्रदान करने में बल्कि विपणन सर्वेक्षण, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं तथा वाणिज्यिक चैम्बरों की ओर लक्षित आउटरीच कार्यक्रमों जैसे प्रोत्साहन कार्यक्रमों करके नए व्यापार अवसरों की पहचान करने में भारतीय गैर-सरकारी क्षेत्र की अकांक्षाओं के अनुरूप समयबद्ध तरीके से तथा प्रभावशाली ढंग से कार्य करने में वाणिज्यिक स्कंधों की सहायता की। धनराशि के बेहतर आबंटन

तथा उपयोग के लिए संकेन्द्रित क्षेत्रों तथा संकेन्द्रित देशों की पहचान करने के लिए भारतीय विदेश व्यापार संस्थान को राशि के आबंटन से संबंधित रणनीतिक दस्तावेज तैयार करने का कार्य दिया गया था। उनके महत्व को ध्यान में रखते हुए लैटिन अमेरिकी, अफ्रीकी तथा एशिया प्रशांत क्षेत्र में संभावित बाजारों को उचित महत्व दिया गया है। यह नीति विदेश व्यापार नीति 2009-2014 के व्यापक उद्देश्यों के अनुरूप है।

आईटीपी प्रभाग की वैबसाइट इंडिया इन बिजनेस (<http://www.indiainbusiness-nic-in>) भारत में व्यापार, वर्तमान आंकड़ों भारत सरकार की नीतियों, क्षेत्रीय अध्ययन, निवेश एवं व्यापार अवसरों, आर्थिक एवं वाणिज्यिक समाचारों, नवनीति पहल, भारत के द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय आर्थिक संबंधों, विभिन्न सरकारी एजेंसियों तथा चैम्बर्स ऑफ कामर्स के साथ उपयोगी लिंकों से संबंधित सूचना प्रदान करता है। यह भारत के निवेश अवसरों पर सूचना का एक केन्द्रीयकृत स्रोत है जो निवेशकों की पूछताछ का जवाब देकर व्यापार अनुकूलन की सुविधा प्रदान करती है तथा भारतीय मिशनो को बैकअप समर्थन प्रदान करता है तथा इसे नियमित रूप से अध्ययन बनाया जाता है। विदेश स्थित सभी भारतीय मिशनो तथा केन्द्रों को साप्ताहिक एवं मासिक बुलेटिन प्रदान किए जाते हैं।

भारतीय मिशनो द्वारा स्थानीय व्यापार एवं व्यापार संवर्धन कार्यक्रमों के प्रसार के लिए 'इंडिया इन बिजनेस' नामक सूचना पुस्तिका तथा गाइड का वार्षिक प्रकाशन किया जाता है। इस पुस्तिका एवं सीडी में भारत की प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति तथा देश में निवेश अवसरों पर अध्ययन सूचना शामिल होती है।

आईटीपी प्रभाग निवेश अवसरों पर सूचना के उचित एवं समयबद्ध प्रसार के लिए राज्य सरकारों के साथ भी सक्रीय रूप से संपर्क करता है। कर्नाटक, केरल तथा मध्यप्रदेश की राज्य सरकारों द्वारा 2012 में आयोजित निवेशक शिखर सम्मेलनों के बारे में सूचना का प्रसार करने के लिए भी उनकी सहायता की गई थी। इस प्रभाग ने संगोष्ठियों, सम्मेलनों तथा प्रतिनिधिमंडलों के समन्वयन में भी सहायता की। इस प्रभाग ने व्यापार एवं निवेश बाधाओं/विवादों तथा अन्य द्विपक्षीय बकाया मुद्दों के समाधान में भी सहायता की।



ऊर्जा सुरक्षा प्रभाग इस मंत्रालय में ऊर्जा से संबंधित मामलों में नोडल बिंदु के रूप में कार्य करता है। ऊर्जा सुरक्षा के अलावा इस प्रभाग के दायित्वों के चार्टर में देश की खाद्य सुरक्षा, ऊर्वरक तथा खनिज संसाधनों से संबंधित मामलों को शामिल किया गया है।

सरकार ने आर्थिक विकास तथा ऊर्जा की उपलब्धता के दोहरे उद्देश्यों को पूरा करते हुए देश के लिए ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए देश के लिए बहुसूत्रीय रणनीति अपनाई है। पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस, कोयला, विद्युत, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा, खान, इस्पात, कृषि, खाद्य एवं ऊर्वरक मंत्रालय तथा परमाणु ऊर्जा एवं विभाग से निकट समन्वय करके तथा सतत राजनयिक हस्तक्षेप से आयातित ऊर्जा संसाधनों पर भारत की अत्यधिक निर्भरता का प्रबंधन किया गया है। यह प्रभाग ऊर्जा/ऊर्वरक/खनिज संसाधनों के लिए विदेशी आपूर्ति आधार का और विविधीकरण करने के प्रयासों में भी सहायता करता है।

भारत ऊर्जा से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय निकायों का एक सक्रिय सहभागी है जो ऊर्जा से संबंधित वैश्विक नीति पर विचार विमर्श करता है और उसका निर्माण करता है। इस प्रभाग ने प्रत्यक्ष तौर पर अथवा अन्य मंत्रालयों के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय नवीकरणीय ऊर्जा एजेंसी (आईआरईएनए), अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा दक्षता एवं सहयोग सहभागिता (आईपीईसी) स्वच्छ ऊर्जा मंत्रालय (सीईएम), 21वीं शताब्दी के लिए नवीकरणीय ऊर्जा नीति नेटवर्क (आरईएन-21) अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा मंच (आईईएफ) तथा संयुक्त तेल आंकड़ा पहल (जेओडीआई) जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ विचार-विमर्श में भी योगदान देता है। भारत ने अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के साथ अपने विचार-विमर्श को संवर्धित किया है जिसने मई 2012 में भारत में आपदा निवारण अभ्यास किया था। इस प्रभाग ने इस संगठन के मंत्रालयस्तरीय ऊर्जा क्लब के गठन के लिए शंघई सहयोग संगठन (एसईओ) के प्रयासों का भी समर्थन किया है। यह प्रभाग यूएनजीए, जी-20, एसेम, एसीडी, पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन, ब्रिक्स, सीआईसीए, आईवीएसए तथा गुटनिरपेक्ष आंदोलन जैसे विभिन्न बहुपक्षीय मंचों पर ऊर्जा तथा खाद्य सुरक्षा मामलों में भारत की स्थिति का उल्लेख करने वाले इनपुट्स भी प्रदान करता है।

इस प्रभाग ने अप्रैल 2012 में लंदन में आयोजित स्वच्छ ऊर्जा मंत्रालयस्तरीय बैठक (सीईएम) 2012 में भी भाग लिया तथा यह नई दिल्ली में आयोजित होने वाली सीईएम-2013 की तैयारियों में भी शामिल है। यूएन-ईएससीएपी 27 – 29 मई 2013 से व्लाडिवोस्टोक में एशिया प्रशांत ऊर्जा मंच की मंत्रीस्तरीय बैठक के आयोजन के प्रयासों में भी अग्रणी है। इस उद्देश्य के लिए यूएन-ईएससीएपी

ने 6-7 नवम्बर 2012 में नई दिल्ली में दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम एशिया के लिए उपक्षेत्रीय परामर्श बैठक आयोजित की थी तथा 21-23 नवम्बर 2012 को बैंकाक में क्षेत्रीय विशेषज्ञ समूह की बैठक आयोजित की थी। इस प्रभाग ने इन बैठकों में भारत का प्रतिनिधित्व किया था।

इस प्रभाग ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका, जापान तथा यूरोपीय संघ के साथ निर्धारित ऊर्जा वार्ताओं में योगदान दिया। 10 फरवरी 2012 को आयोजित भारत यूरोपीय शिखर सम्मेलन के दौरान भारत तथा यूरोपीय संघ के बीच ऊर्जा पर संवर्धित सहयोग के लिए संयुक्त घोषणा पारित की थी। भारत-अमरीका संयुक्त वार्ता 25-28 सितम्बर 2012 को वाशिंगटन में आयोजित की गई थी। भारत-जापान ऊर्जा वार्ता 10 अक्टूबर 2012 को टोकियो में आयोजित की गई थी। 15-17 अक्टूबर 2012 के दौरान अस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा के दौरान यह निर्णय लिया गया था कि भारत-आस्ट्रेलियाई संघीय संसाधन ऊर्जा तथा पर्यटन मंत्री तथा भारत की ओर से योजना आयोग के उपाध्यक्ष के स्तर पर वार्षिक मंत्री स्तरीय भारत-आस्ट्रेलिया ऊर्जा सुरक्षा वार्ता शुरू की जाए। प्रथम भारत-आस्ट्रेलिया ऊर्जा वार्ता 3 सितम्बर 2012 को आयोजित की गई थी कनाडा के प्रधानमंत्री की यात्रा के दौरान दोनों देश तेल एवं गैस से लेकर ऑयल सैंड, सेल गैस और नवीकरणीय ऊर्जा सहित ऊर्जा के अन्य साधनों जैसे ऊर्जा संसाधनों के उपयोग को अधिकतम बनाने के लिए क्षमता विकास के संयुक्त प्रयास करने तथा ऊर्जा पर सहयोग केन्द्रित करने के लिए सहमत हुए थे। मंत्री स्तर पर विचार-विमर्श करने तथा तेल एवं गैस के क्षेत्र में समझौता ज्ञापन की संभावना का पता लगाने के लिए भी सहमति हुई थी। इस प्रभाग ने 17-18 जुलाई 2012 को नई दिल्ली में आयोजित पेट्रोलियम एवं पेट्रो रसायन उत्पादों में व्यापार पर भारत-पाक विशेषज्ञ समूह की बैठकों में भी भाग लिया। ऊर्जा तथा ऊर्जा क्षमता पर संयुक्त कार्य समूह की रूस के साथ बैठक 12 अक्टूबर 2012 को नई दिल्ली में, भारत-कुवैत संयुक्त कार्य समूह की बैठक 22-23 नवम्बर 2012 को नई दिल्ली में तथा व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय एवं सांस्कृतिक सहयोग पर भारत कजाकिस्थान अंतर सरकारी आयोग की बैठक 8-9 जनवरी 2013 को नई दिल्ली में आयोजित की गई थी।

मई 2012 में तुर्कमेनिस्तान के साथ गैस बिक्री तथा खरीद करार संपन्न होने के बाद वर्ष के दौरान प्रस्तावित तुर्कमेनिस्तान-अफगानिस्तान-पाकिस्तान-भारत प्राकृतिक गैस पाइप लाइन (टी ए पी आई पाइप लाइन परियोजना) में और प्रगति हुई है। इसके पश्चात सहभागी देशों ने पाइप लाइन के वित्त-पोषण,

निर्माण तथा संचालन करने वाले परिसंघ की पहचान करने के लिए रोड शो आयोजित किए।

वर्ष 2012 में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय के तत्वावधान में मार्च 2012 में एशिया गैस सहभागिता शिखर सम्मेलन तथा अक्टूबर 2012 में पेट्रो टैक्स सम्मेलन, तथा अक्टूबर 2012 में नवीन एवं नवीकरणी ऊर्जा मंत्रालय दोबारा आयोजित ऊर्जा प्राप्ति पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी शामिल है। भारतीय उद्योग परिसंघ तथा इस प्रभाग ने 13 दिसम्बर 2012 को

ऊर्जा सुरक्षा सम्मेलन आयोजित किया। भारत में 2020 में 36वें अंतर्राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक कांग्रेस (आईजीसी) की मेजबानी करने का सफल प्रयास किया।

यह प्रभाग ऊर्जा से संबंधित मुद्दों पर ऊर्जा सुरक्षा हैंडबुक का प्रकाशन करता है तथा ऊर्जा से संपन्न मुख्य देशों पर चार क्षेत्रीय रिपोर्टें और पाइप लाइन एवं ऊर्जा राजनय तथा कोयला आधारित मिथेन उत्पादन की संभावनाओं एवं चुनौतियों पर भी दो शोध दस्तावेज प्रस्तावित करता है।



आतंकवाद निरोध (सीटी)

वर्ष के दौरान भारत ने आतंकवाद निरोध के संबंध में सहभागी देशों के साथ संयुक्त कार्यकारी समूह के माध्यम से निर्धारित वार्ता जारी रखी। भारत ने निम्नलिखित देशों/संगठनों के साथ संयुक्त कार्य समूह – आतंकवाद निरोध (जेडब्ल्यूजी-सीटी) स्थापित किए:

क्रं. सं.	देश/संगठन का नाम	तिथि	वेन्यु
1.	युरोपीय संघ	10 जनवरी 2012	नई दिल्ली
2.	चीन	1 मार्च 2012	नई दिल्ली
3.	रूस	11 अप्रैल 2012	नई दिल्ली
4.	कजाखस्तान	29 मई 2012	अस्ताना
5.	संयुक्त राज्य अमेरिका	1 जून 2012	वाशिंगटन
6.	मलेशिया	4 अक्टूबर 2002	नई दिल्ली
7.	जापान	6 नवम्बर 2012	टोक्यो
8.	फ्रांस	19 नवम्बर 2012	नई दिल्ली
9.	यूनाइटेड किंगडम	20 नवम्बर 2012	नई दिल्ली
10.	कनाडा	29 नवम्बर 2012	नई दिल्ली
11.	इज़राइल	20 फरवरी 2013	नई दिल्ली

भारत 2011 में स्थापित वैश्विक आतंकवाद निरोध मंच (जीसीटीएफ) के 30 संस्थापक सदस्यों में से एक है। जीसीटीएफ का उद्देश्य आपराधिक न्याय प्रणाली तथा हिंसात्मक उग्रवाद रोध जैसे क्षेत्रों में असैनिक क्षमता निर्माण तथा नियम निर्धारित करने के लिए विशेषज्ञता एवं संसाधन जुटाना है। इस समय जीसीटीएफ के पांच कार्य समूह हैं जो (1) आपराधिक न्याय/विधिक प्रक्रिया (2) हिंसात्मक उग्रवाद रोध (3) साहेल में क्षमता-निर्माण (4) होर्न ऑफ अफ्रीका क्षेत्र में क्षमता निर्माण तथा (5) दक्षिण पूर्व एशिया में क्षमता निर्माण से संबंधित है। भारत ने वर्ष के दौरान जीसीटीएफ सहित इसके कार्य समूहों की बैठकों में भाग लिया। विशेष सचिव (पीओएल, पीपी एण्ड आर), विदेश मंत्रालय ने 13 – 14 दिसम्बर 2012 को आबू धाबी में आयोजित जीसीटीएफ के मंत्रालयी एवं समन्वय समिति की बैठक में भाग लिया।

नीति नियोजन एवं शोध

नीति नियोजन एवं शोध के क्षेत्र ने इस प्रभाग ने विदेश नीति पर शोध एवं प्रक्रियाओं में लगे भारत सरकार के विदेश नीति संस्थानों, शिक्षाविदों, विचार केन्द्रों तथा शोध संगठनों को समर्थन देना जारी रखा तथा भारत के विदेश संबंधों में विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने के लिए संगोष्ठियां, सम्मेलन तथा अध्ययन आयोजित करने के लिए उनकी वित्तीय सहायता की। यह मंत्रालय इस प्रभाग के आउटरीच कार्यक्रमों के माध्यम से विदेश नीति के विभिन्न क्षेत्रों तथा वैश्विक मामलों पर विशेषज्ञों के सुविदित दृष्टिकोण तथा नए परिदृश्य का पता लगाता है।

इस प्रभाग ने विदेश मंत्री, विदेश राज्य मंत्री, विदेश सचिव के लिए भाषणों के मसौदे तैयार किए। इस प्रभाग ने मंत्रिमंडल तथा भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों के विचारार्थ विदेश मंत्रालय से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाक्रमों/समारोहों का मासिक सारांश तैयार करना जारी रखा। इस प्रभाग को विदेश मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट का समयबद्ध तरीके से संकलन, मुद्रण तथा वितरण करने का कार्य सौंपा गया है। यह रिपोर्ट समीक्षाधीन अवधि के दौरान विश्व के विभिन्न राष्ट्रों तथा अन्य महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय मंचों के साथ भारत के वैश्विक संबंधों का विस्तृत संकलन है। यह प्रभाग भारत के अध्याय 'भारत एवं विदेश' की सामग्री एकत्र करता है तथा संकलन करता है जो कि सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय का वार्षिक प्रकाशन है। यह प्रभाग विदेश मंत्रालय के सक्रिय समर्थन तथा वित्तीय सहायता से कोलकाता विश्वविद्यालय के तत्वावधान में विदेश नीति संस्थान के साथ सहयोग करता रहता है। इस प्रभाग की आंशिक/पूर्णतया वित्त व्यवस्था से देश के विभिन्न संस्थानों के साथ आयोजित संगोष्ठियों, सम्मेलनों, बैठकों तथा अध्ययनों की सूची परिशिष्ट 6 में दी गई है।

यह प्रभाग देश में आने वाले विदेशी प्रकाशनों में भारत की वाह्य सीमाओं के सीमांकन के लिए भी उत्तरदायी है तथा इस मामले पर कार्यवाही से संबंधित मंत्रालयों को अपनी सलाह भी देता है।

इस प्रभाग में इस मंत्रालय के पुराने रिकार्डों की प्राप्ति के लिए शोधकर्ताओं के अनुरोधों तथा भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार के पुराने नक्शों की प्राप्ति पर भी कार्यवाही की जाती है।

स्थिति कक्ष

इस मंत्रालय में स्थापित स्थिति कक्ष बहुआयामी, बहुसुविधासंपन्न अत्याधुनिक परिसर है। इसमें संकट की स्थिति में प्रबंधन के लिए आवश्यक सभी अपेक्षित संचार संपर्कों की व्यवस्था है। कई प्रभाग इस

मंत्रालय के संकट प्रबंधन कक्ष के रूप में इसकी मुख्य भूमिका के अलावा टेलीफोन/विडियो कांफ्रेंसिंग सहित प्रस्तुतीकरणों एवं सम्मेलनों के लिए भी इस परिसर की सेवाओं का उपयोग करते हैं। यह एक बहुसुविधा संपन्न परिसर के रूप में कार्य करता है जो इस मंत्रालय के विभिन्न प्रभागों द्वारा अपेक्षित सम्मेलनों, प्रस्तुतिकरणों, आवधिक ब्रीफिंग, मिशन प्रमुखों के साथ विडियो/टेलीफोन कांफ्रेंसिंग, मानचित्रों तथा छवियों पर विचार-विमर्श को सुविधाजनक बनाता है।

इस वर्ष जवाहर लाल नेहरू भवन में एक नया स्थित कक्ष कार्य करने लगेगा।

सीमा प्रकोष्ठ

सीमा प्रकोष्ठ भारतीय सर्वेक्षण के समन्वय से भारत की अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं से संबंधित मानचित्रों तथा भारत की बाह्य सीमाओं के सभी पहलुओं की प्रकाशनार्थ जांच करता है। यह प्रकोष्ठ विदेश मंत्रालय के अन्य प्रभागों की सीमा से संबंधित मामलों पर कार्टोग्राफिक परामर्श तथा तकनीकी सहायता प्रदान करता है। यह प्रकोष्ठ उपलब्ध कार्टोग्राफिक स्ट्रिप/आधार नक्शों के संग्रहण एवं उन्हें डिजिटल बनाने में सहायता करता है। यह प्रकोष्ठ सीमा स्तम्भों के अनुरक्षण/मरम्मत सहित संयुक्त सीमा सर्वेक्षण कार्यों तथा भारतीय भूभाग में किसी प्रकार के अतिक्रमण की रिपोर्टों के संबंध में भारतीय सर्वेक्षण/राज्य सरकारों के साथ भी संपर्क करता है। यह समुद्री सीमा, संपूर्ण आर्थिक क्षेत्र (ईईजी) से संबंधित सूचना के संग्रहण एवं उन्हें डिजिटल बनाने तथा जलमग्न तट के निर्धारण में भी सहायता करता है। यह प्रकोष्ठ रक्षा मंत्रालय के समन्वयन से प्रतिबंधित मानचित्रों की जांच करता है तथा नौसैनिक जल वैज्ञानिक कार्यालय तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के साथ भी संपर्क करता है।

सीमा प्रकोष्ठ भारत की अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं से संबंधित सभी मानचित्रों/दस्तावेजों/सूचनाओं का संग्रहण केन्द्र है। सीमा प्रकोष्ठ ने भारत की अंतर्राष्ट्रीय थल तथा समुद्री सीमा के संबंध में कई आंतरिक/अंतरमंत्रालीय बैठकों में भाग लिया जिसका विवरण निम्नानुसार है: —

इस मंत्रालय के विभिन्न प्रभागों को अंतर्राष्ट्रीय सीमा के विभिन्न पहलुओं के संबंध में कार्टोग्राफिक तथा तकनीकी इनपुट प्रदान की।

विभिन्न क्षेत्रीय प्रभागों द्वारा आयोजित अंतरमंत्रालीय बैठकों के लिए इनपुट प्रदान की।

संबंधित राज्य सरकारों के साथ भारत-बांग्लादेश अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर सीमा सम्मेलनों/बैठकों के संबंध में कार्टोग्राफिक इनपुट प्रदान की।

विधिक एवं संधि प्रभाग को भारत बांग्लादेश समुद्री एवं थल सीमा पर इनपुट प्रदान की।

विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा इंटरनेट पर भारत की बाह्य सीमाओं के गलत सीमांकन के संबंध में नीति नियोजन एवं शोध प्रभाग को इनपुट प्रदान की।

संयुक्त सर्वेक्षण को सुविधाजनक बनाने के लिए भारत-बांग्लादेश अंतर्राष्ट्रीय सीमा के समीपवर्ती क्षेत्रों में बांग्लादेशी दल के साथ संयुक्त क्षेत्रीय दौरों में भाग लिया।

सीमा मामलों पर आईएफएस परिविक्षाधीन अधिकारियों के लिए भारतीय सर्वेक्षण के क्षेत्रीय दौरे आयोजित किए गए।



विदेश मंत्रालय के नयाचार (प्रोटोकॉल) प्रभाग ने अप्रैल 2012 – जनवरी 2013 के दौरान राष्ट्राध्यक्ष, उप राष्ट्रपति, सरकार के प्रमुख और विदेश मंत्री के स्तर की 94 भारत यात्राओं और 23 विदेश यात्राओं का समन्वय किया।

नयाचार प्रभाग के सम्मेलन सेल ने नई दिल्ली में 3-4 सितंबर, 2012 के दौरान 6ठे मेकाँग-गंगा सम्मेलन तथा 1-2 सितंबर, 2012 के दौरान गुड़गांव (हरियाणा) में 12वें आईओआर-एआरसी

सम्मेलन का समन्वय किया। इस प्रभाग ने 20-21 दिसंबर, 2012 के दौरान दिल्ली में आसियान-भारत स्मारक शिखर सम्मेलन, जिसमें 10 आसियान राष्ट्राध्यक्षों/सरकारों ने भागीदारी की, और 21 दिसंबर, 2012 को आसियान कार रैली के लैंग डाउन समारोह का भी समन्वयन किया। इस अवधि के दौरान, सिंगापुर गणराज्य ने नई दिल्ली में अपना व्यापार कार्यालय खोला और इंग्लैण्ड ने हैदराबाद तथा चंडीगढ़ में उप-उच्चायोगों की शुरुआत की।

अप्रैल 2012 - जनवरी 2013 की अवधि के दौरान राष्ट्रपति/उपराष्ट्रपति/प्रधानमंत्री के स्तर पर आने वाले राज्य/सरकारी कार्य हेतु दौरा

क्र.सं.	गणमान्य अतिथि के नाम और विवरण	तारीख
1	श्री आसिफ अली जरदारी पाकिस्तान के राष्ट्रपति (सरकारी)	8 अप्रैल, 2012
2	शेख हमद बिन खलीफा अल-थानी, कतर राष्ट्र के अमीर (राज्य)	8-10 अप्रैल, 2012
3	डॉ. मोहम्मद वाहीद, मालदीव के राष्ट्रपति (सरकारी)	11-15 मई, 2012
4	श्री फर्नांडो लुगो मेनदेज, पराग्वे के राष्ट्रपति (सरकारी)	23-25 मई, 2012
5	प्रिंस सलमान बिन हमद अल खलीफा, बहरीन के राज्य के युवराज और उप सुप्रीम कमांडर (सरकारी)	30-31 मई, 2012
6	श्री ली हसेन लूंग, सिंगापुर गणराज्य के प्रधानमंत्री और श्रीमती ली हसेन लूंग (राज्य)	10-12 जुलाई, 2012
7	श्री एमोमाली राहमोन, ताजिकिस्तान गणराज्य के अध्यक्ष (राज्य)	1-4 सितंबर, 2012
8	कमोडोर जोसाईया वारेक बेइनीमारामा, फिजी के प्रधानमंत्री	5-8 सितंबर, 2012
9	श्री लियोन्टेन जिग्मी योजेर थिनले, भूटान के प्रधानमंत्री	6-10 सितंबर, 2012
10	श्री महमूद अब्बास, फिलिस्तीन राज्य के फिलीस्तीनी राष्ट्रीय प्राधिकरण के अध्यक्ष (राज्य)	10-12 सितंबर, 2012
11	श्री पियरे कुरुन्जिजा, बुरुंडी गणराज्य के राष्ट्रपति और श्रीमती डेनिस बुकुमी कुरुन्जिजा, (राज्य)	17-19 सितंबर, 2012
12	श्री महिन्दा राजपक्षे, श्रीलंका लोकतांत्रिक समाजवादी गणराज्य के राष्ट्रपति	19-22 सितंबर, 2012
13	श्री लियोन्टेन जिग्मी योजेर थिनले, भूटान के प्रधानमंत्री	19-22 सितंबर, 2012
14	सुश्री जूलिया गिलार्ड, ऑस्ट्रेलिया की प्रधानमंत्री (राज्य)	15-17 अक्टूबर, 2012
15	श्री जुआन कार्लोस I, स्पेन के राजा (राज्य)	24-27 अक्टूबर, 2012
16	श्री स्टीफन हार्पर, कनाडा के प्रधानमंत्री और श्रीमती लॉरीन हार्पर	4-9 नवंबर, 2012
17	श्री हामिद करजई, अफगानिस्तान इस्लामी गणराज्य के राष्ट्रपति	9-13 नवंबर, 2012
18	श्री मिखाइल वी मियास्नीकोविच, बेलारूस गणराज्य के प्रधानमंत्री	13-14 नवंबर, 2012
19	श्री हुयान डाम, वियतनाम के फादरलैण्ड फ्रंट के अध्यक्ष	29 नवंबर-7 दिसम्बर, 2012
20	श्री विक्टर यानुकोविच, यूक्रेन के राष्ट्रपति	9-12 दिसम्बर, 2012
21	श्री व्लादिमीर वी. पुतिन, रूसी संघ के राष्ट्रपति	24 दिसम्बर, 2012
22	डॉ. राम बरन यादव, नेपाल के राष्ट्रपति	24-29 दिसंबर, 2012

23	आसियान शिखर सम्मेलन	
i	ब्रुनेई दारुसलाम के सुल्तान हाजी हस्सनाल बोल्कीयाह मुइज्जादीन वादाउल्लाह और यांग दी-पेरतुआन	19-21 दिसंबर, 2012
ii	श्री सामदेच अक्का मोहा सेना पादेई ताको हुन सेन, कंबोडिया अधिराज्य के प्रधानमंत्री	19-21 दिसंबर, 2012
iii	डॉ. सुसीलो बामबांग युधोयोनो, इंडोनेशिया गणराज्य के राष्ट्रपति	19-20 दिसंबर, 2012
iv	श्री थोंगसिंग थाम्मावोंग, लाओ पीपुल्स डेमोक्रेटिक रिपब्लिक के राष्ट्रपति	20-21 दिसंबर, 2012
v	दातो श्री मोहम्मद नजीब बिन तुन अब्दुल रजाक, मलेशिया के प्रधानमंत्री	19-21 दिसंबर, 2012
vi	श्री यू थें सेन, म्यांमार संघीय गणराज्य के राष्ट्रपति	20-22 दिसंबर, 2012
vii	सुश्री येंग्लुक शिनावाना, थाईलैंड अधिराज्य की प्रधानमंत्री	20-21 दिसंबर, 2012
viii	श्री गुयेन टैन डंग, वियतनाम समाजवादी गणराज्य के प्रधानमंत्री	20-21 दिसंबर, 2012
ix	श्री जेजोमार सी. विनय फिलीपींस गणराज्य के उप राष्ट्रपति	18-22 दिसंबर, 2012
x	श्री ली सेन लूंग, सिंगापुर के प्रधानमंत्री	19-21 दिसंबर, 2012
xi	श्री राजकैस्वुर पुर्रियाग, मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति	07-10 जनवरी, 2013

अप्रैल 2012 - नवंबर 2012 की अवधि के दौरान विदेश मंत्री के स्तर पर और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की भारत यात्राएं

क्र.सं.	गणमान्य अतिथि के नाम और विवरण	तारीख
1	डॉ. अब्दुल समद अब्दुल्ला, मालदीव के विदेश मंत्री	1-4 अप्रैल, 2012
2	श्री मिलान रोसेन, मोंटेनेग्रो के विदेश मंत्री	10-12 अप्रैल, 2012
3	श्री बान की मून, संयुक्त राष्ट्र महासचिव	26-29 अप्रैल, 2012
4	श्री कोइचिरो गोम्बा, जापान के विदेश मंत्री	29 अप्रैल-1 मई, 2012
5	डॉ. जाल्माई रास्सोउल, अफगानिस्तान के विदेश मंत्री	30 अप्रैल-2 मई, 2012
6	सुश्री हिलेरी रोधम क्लिंटन, संयुक्त राज्य अमेरिका की विदेश मंत्री	6-8 मई, 2012
7	डॉ. दीपू मोनी, बांग्लादेश के विदेश मंत्री	6-8 मई, 2012
8	श्री के. षण्मुगम, सिंगापुर के विदेश मंत्री	6-10 मई, 2012
9	शेख अब्दुल्ला बिन जायद अल नाहयान, संयुक्त अरब अमीरात के विदेश मंत्री	17-18 मई, 2012
10	डॉ. अली अकबर सालेही, ईरान इस्लामी गणराज्य के विदेश मंत्री	31 मई-1 जून, 2012
11	डॉ. गुइडो वेस्टरवेल, जर्मन संघीय गणराज्य के विदेश मामलों के संघीय मंत्री	22-23 जून, 2012
12	डॉ. जाल्माई रास्सोउल, अफगानिस्तान गणराज्य के विदेश मंत्री	29 जून, 2012
13	डॉ. अरवीन बूलेल्ल, जीओएसके, विदेश मंत्री, मॉरीशस गणराज्य की क्षेत्रीय एकता और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार	4-7 जुलाई, 2012
14	मैडम मोनीक बोजीजे, मध्य अफ्रीकी गणराज्य की प्रथम महिला (निजी)	8-14 जुलाई, 2012
15	श्री कारेल शेवार्जेन्बर्ग, चेक गणराज्य के विदेश मंत्री (पारगमन)	16-19 जुलाई, 2012
16	डॉ. आर.एम. मार्टी एम. नाटालेगावा, इंडोनेशिया गणराज्य के विदेश मामलों के मंत्री	26-27 जुलाई, 2012
17	श्री दीदीएर रेन्डेर, उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री, बेल्जियम विदेश व्यापार और यूरोपीय मामले और श्रीमती बेरनादेत्त रेन्डेर	1-5 और 8-12 अगस्त, 2012
18	श्री रोजेलियो सिएरा दीयाज, क्यूबा गणराज्य के विदेश मामलों के उप मंत्री	5-8 अगस्त, 2012
19	श्री अल्फ्रेडो मोरेनो शार्म, चिली गणराज्य के विदेश मंत्री	6-8 अगस्त, 2012
20	श्री निकोलस मादुरो मारोस, वेनेजुएला बोलीवारियन गणराज्य के विदेश संबंध के लिए पोपुलर पावर मंत्री	7-8 अगस्त, 2012

21	श्री के. षण्मुगम, सिंगापुर के विदेश और कानून मंत्री (निजी)	27-31 अगस्त, 2012
22	श्री जुल्लापोंग नोन्चीचाई, थाईलैंड अधिराज्य के उप विदेश मंत्री (6 एमजीसी की बैठक)	2-5 सितंबर, 2012
23	श्री यू मायुंग मीन्त, म्यांमा संघीय गणराज्य के विदेश उप मंत्री (6 एमजीसी बैठक)	3-4 सितंबर, 2012
24	श्री होर नाम्होंग, कंबोडिया अधिराज्य के उप प्रधानमंत्री और विदेश तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग मंत्री (6 एमजीसी बैठक)	3-5 सितंबर, 2012
25	डॉ. थोंगलूयुन सिसोयुलिथ, लाओ पीडीआर के उप प्रधानमंत्री और विदेश मामलों के मंत्री (6 एमजीसी बैठक)	3-5 सितंबर, 2012
26	श्री फाम क्वांग विन्ह, वियतनाम समाजवादी गणराज्य के विदेश मामलों के उप मंत्री (6 एमजीसी बैठक)	3-6 सितंबर, 2012
27	श्री जॉन बायर्ड, कनाडा के विदेश मंत्री	9-13 सितंबर, 2012
28	श्री दिमित्री ओएगोवीच रोजोजीन, रूसी संघ के उप प्रधानमंत्री और श्रीमती तात्याना जेन्नादीएवेना गोजीना (सरकारी)	13-15 अक्टूबर, 2012
29	श्री लुइस लीबेरमान गीन्सबर्ग, कोस्टा रिका के द्वितीय उपाध्यक्ष (निजी)	15-20 अक्टूबर, 2012
30	बेगम खालिदा जिया, अध्यक्ष, बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी और विपक्ष की नेता, बांग्लादेश राष्ट्रीय संसद	28 अक्टूबर - 3 नवंबर, 2012
31	श्री रिचर्ड मार्ले, संसदीय सचिव, ऑस्ट्रेलिया के विदेश और व्यापार विभाग (आईओआर-एआरसी)	1-2 नवंबर, 2012
32	श्री मोहम्मद मीजारूल कायेस, विदेश सचिव, विदेश मंत्रालय, बांग्लादेश जनवादी गणराज्य (आईओआर - एआरसी)	1-2 नवंबर, 2012
33	श्री बुदी बुवोलेक्सोनो, महासचिव, विदेश मंत्रालय, इंडोनेशिया गणराज्य (आईओआर - एआरसी)	1-2 नवंबर, 2012
34	श्री मोहम्मद मेहदी अक्होन्जादेह, ईरान इस्लामी गणराज्य के उप विदेश मंत्री (आईओआर - एआरसी)	1-2 नवंबर, 2012
35	प्रोफेसर एम्बेसडर शिमशोन ओंगेरी, विदेश मंत्री, केन्या (आईओआर - एआरसी)	1-2 नवंबर, 2012
36	श्री पीएरोट जोसलीन राजाओनारिवेलो, विदेश मंत्री, मेडागास्कर गणराज्य (आईओआर - एआरसी)	1-2 नवंबर, 2012
37	श्री रिचर्ड रायोट जाएम, विदेश उप मंत्री, मलेशिया (आईओआर-एआरसी)	1-2 नवंबर, 2012
38	श्री अनुन्दप्रियाय नीवूर, विदेश सचिव, मॉरीशस (आईओआर - एआरसी)	1-2 नवंबर, 2012
39	श्री हेनरीक बांजे, मोजाम्बिक के उप विदेश तथा सहयोग मंत्री (आईओआर-एआरसी)	1-2 नवंबर, 2012
40	श्री यूसुफ अलावी, ओमान सल्तनत के विदेश मंत्री (आईओआर - एआरसी)	1-2 नवंबर, 2012
41	श्री जीन पॉल एडम, विदेश मंत्री, सेशेल्स सरकार (आईओआर - एआरसी)	1-2 नवंबर, 2012
42	श्री मासागोस जुल्कीपली बिन मासागोस मोहमद, विदेश मामलों के राज्य के वरिष्ठ मंत्री, सिंगापुर (आईओआर - एआरसी)	1 -2 नवंबर, 2012
43	श्री इब्राहिम इस्माइल इब्राहिम, उप मंत्री, अंतरराष्ट्रीय संबंध और सहयोग विभाग, दक्षिण अफ्रीका गणराज्य (आईओआर - एआरसी)	1-2 नवंबर, 2012
44	प्रोफेसर गामिनी पेइरिस, श्रीलंका लोकतांत्रिक समाजवादी गणराज्य के विदेश मंत्री (आईओआर - एआरसी)	1-2 नवंबर, 2012
45	डॉ. अब्दुल्लाह ओमारी कीगोडा, उद्योग मंत्री और तंजानिया संयुक्त गणराज्य (आईओआर - एआरसी) की व्यापार	1-2 नवंबर, 2012
46	श्री नवीन बूनसेयाट, विदेश मंत्री के सचिव, मंत्री के कार्यालय, थाईलैंड (आईओआर - एआरसी)	1-2 नवंबर, 2012
47	डॉ. अनवर मोहम्मद गार्साश, संयुक्त अरब अमीरात के विदेश मामलों के राज्य मंत्री (आईओआर - एआरसी)	1-2 नवंबर, 2012
48	डॉ. अबू अल बक्र कीर्बी, विदेश मंत्री, यमन गणराज्य (आईओआर - एआरसी)	1-2 नवंबर, 2012
49	श्री विलियम हेग, सांसद, यूनाइटेड किंगडम के विदेश एवं राष्ट्रमंडल मामलों के विदेश मंत्री	7-9 नवंबर, 2012
50	डॉ. आंग सान सू की, अध्यक्ष, म्यांमार संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य नेशनल लीग	13-17 नवंबर, 2012
51	श्री लुइज इनासियो लूला डा सिल्वा, ब्राजील संघीय गणराज्य के पूर्व राष्ट्रपति	21-23 नवंबर, 2012

अप्रैल 2012 - नवंबर 2012 की अवधि के दौरान आयोजित सम्मेलन

क्र.सं.	सम्मेलन का नाम	तारीख
1	6टा एमजीसी सम्मेलन	3-4 सितंबर, 2012
2	12वां आईओआर – एआरसी सम्मेलन	1-2 नवंबर, 2012

अप्रैल-नवम्बर, 2012 के दौरान राष्ट्रपति/उपराष्ट्रपति/प्रधानमंत्री के स्तर पर निजी/ट्रांसिट दौरा

क्र.सं.	गणमान्य अतिथि के नाम और विवरण	तारीख
1	डॉ. डेनजिल डगलस, सेंट किट्स और नेविस के प्रधानमंत्री (निजी)	5-9 अप्रैल, 2012
2	श्री लियोनचेन जिग्मी वाई थिनले, भूटान के प्रधानमंत्री (ट्रांसिट)	6-8 अप्रैल, 2012
3	कमोडोर जोसाईआ वारेक बाईनीमारामा, फिजी के प्रधानमंत्री (निजी)	21-29 अप्रैल, 2012
4	श्री लियोनचेन जिग्मी वाई थिनले, भूटान के प्रधानमंत्री (ट्रांसिट)	13 जून, 2012
5	डॉ. बाबूराम भट्टाराई, नेपाल के प्रधानमंत्री (ट्रांसिट)	25 जून, 2012
6	श्री लियोनचेन जिग्मी वाई थिनले, भूटान के प्रधानमंत्री (ट्रांसिट)	26-27 जून, 2012
7	श्री वाक्लाव क्लारुस, चेक गणराज्य के अध्यक्ष (पारगमन)	4-10 जुलाई, 2012
8	श्री आंड्रुज आंसिप, इस्टोनिया के प्रधान मंत्री (निजी)	16-17 जुलाई, 2012
9	डॉ. बोनी यायी, बेनिन गणराज्य के राष्ट्रपति (ट्रांसिट)	17 जुलाई, 2012
10	श्री महा वाजीरालोंगकोर्न, थाईलैंड के क्राउन प्रिंस (ट्रांसिट)	29 जुलाई, 2012
11	श्री रातू एपेली नाईलातीकायु, फिजी के राष्ट्रपति (प्राइवेट)	5-8 अगस्त, 2012
12	श्रीमती जेत्सुन पेमा वांगचुक, भूटान की रानी (निजी)	11-13 अगस्त, 2012
13	श्री सामदेच अक्का मोहा सेना पादेई तेचो हुन सेन, कंबोडिया अधिराज्य के प्रधानमंत्री (ट्रांसिट)	29 अगस्त, 2012
14	श्री परमानंद झा, नेपाल के उप राष्ट्रपति (प्राइवेट)	4-7 अक्टूबर, 2012
15	श्री सैमुअल हिंड्स, गुयाना के प्रधानमंत्री (निजी)	8-13 अक्टूबर, 2012
16	जॉर्डन के राजकुमार अल हसन बिन तलाल और राजकुमारी सारवाथ अल हसन (निजी)	24-27 अक्टूबर, 2012
17	श्री राएला ए. ओडिंगा, केन्या गणराज्य के प्रधानमंत्री (निजी)	30 अक्टूबर - 1 नवंबर, 2012
18	श्री वाक्लाव क्लारुस, चेक गणराज्य के अध्यक्ष (पारगमन)	4-7 नवंबर, 2012
19	श्री रिसेप तईप एरडोगन, तुर्की गणराज्य के प्रधानमंत्री (पारगमन)	7-9 नवंबर, 2012
20	मैडम इसातोयु जीए-साईडी, उप राष्ट्रपति और गाम्बिया गणराज्य की महिला मामलों की मंत्री (निजी)	8-9 & 13-14 नवंबर, 2012

अप्रैल, 2012 - जनवरी, 2013 की अवधि के दौरान राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की विदेश यात्राएं

क्र.सं.	गणमान्य अतिथि के नाम और विवरण	तारीख
1	राष्ट्रपति की सेशेल्स और दक्षिण अफ्रीका की यात्रा	29 अप्रैल - 8 मई 2012
2	प्रधानमंत्री की म्यांमार की यात्रा	27-29 मई 2012
3	प्रधानमंत्री मंत्री की मेक्सिको और ब्राजील की यात्रा	16-23 जून 2012
4	प्रधानमंत्री की ईरान की यात्रा	28-31 अगस्त, 2012
5	प्रधानमंत्री की कंबोडिया की यात्रा	18-20 नवंबर, 2012
6	उप राष्ट्रपति की वियतनाम की यात्रा	14-17 जनवरी, 2013

अप्रैल 2012 - जनवरी 2013 की अवधि के दौरान विदेश मंत्री की विदेश यात्राएं

क्र.सं.	गणमान्य व्यक्ति का नाम और विवरण	तारीख
1	विदेश मंत्री की मास्को की यात्रा	13-14 अप्रैल, 2012
2	विदेश मंत्री की अबू धाबी की यात्रा	15-16 अप्रैल, 2012
3	विदेश मंत्री की मैड्रिड की यात्रा	19-23 अप्रैल, 2012
4	विदेश मंत्री की म्यांमार की यात्रा	27-29 मई, 2012
5	विदेश मंत्री की बीजिंग की यात्रा	6-7 जून, 2012
6	विदेश मंत्री की संयुक्त राज्य अमेरिका और क्यूबा की यात्रा	12-17 जून, 2012
7	विदेश मंत्री की ताजिकिस्तान की यात्रा	2-3 जुलाई, 2012
8	विदेश मंत्री की जापान और कंबोडिया की यात्रा	7-12 जुलाई, 2012
9	विदेश मंत्री की मालदीव की यात्रा	28-29 जुलाई, 2012
10	विदेश मंत्री की तेहरान की यात्रा	27-31 जुलाई, 2012
11	विदेश मंत्री की पाकिस्तान की यात्रा	7-9 सितंबर, 2012
12	विदेश मंत्री की संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा	26 सितंबर - 4 अक्टूबर, 2012
13	विदेश मंत्री की ब्रुनेई दारुसलाम की यात्रा	20-21 अक्टूबर, 2012
14	विदेश मंत्री की लाओ पीडीआर की यात्रा	5-6 नवंबर, 2012
15	विदेश मंत्री की म्यांमार की यात्रा	14-16 दिसंबर, 2012
16	विदेश मंत्री की फ्रांस की यात्रा	10-11 जनवरी, 2013
17	विदेश मंत्री की भूटान की यात्रा	14-15 जनवरी, 2013

विदेशी राजदूतों/उच्चायुक्तों की सूची जिन्होंने अप्रैल 2012 - नवंबर 2012 की अवधि के दौरान अपनी साख प्रस्तुत की

क्र.सं.	देश का नाम	एचओएम का नाम	साख की प्रस्तुति
1	ग्रीस	श्री लोआन्नीस ई. राप्ताकीस	24 अप्रैल, 2012
2	मोरक्को	श्री लार्बी रेफफोयुह	24 अप्रैल 2012
3	नाइजर	श्री अली इल्लस्सुओ (प्रथम निवासी एचओएम)	24 अप्रैल 2012
4	सूरीनाम	श्रीमती आश्ना बांदानी राधा कन्हाई	24 अप्रैल 2012
5	सेशेल्स	श्री विंस्टो विलियम वावेन	24 अप्रैल 2012
6	आयरलैंड	श्री फेइलीम मैकलाउग्लीन	24 अप्रैल 2012
7	ज़ाम्बिया	श्रीमती सुसान योयो सिकानेता	24 अप्रैल 2012
8	मंगोलिया	श्री सांजासुरेन बायार्रा	24 अप्रैल 2012
9	स्विजरलैंड	श्री लिनोस वान कास्तेल्मुर्	24 अप्रैल 2012
10	सायप्रस	श्रीमती मारिया मिशेल	24 अप्रैल 2012
11	गिनी अमेरिका	श्री अलेक्जेंद्र सेसे लोयुआ	24 अप्रैल 2012
12	अमेरिका	सुश्री नैन्सी जे. पॉवेल	24 अप्रैल 2012
13	जर्मनी	श्री मिशेल स्टेनेर	13 जुलाई 2012

14	स्पेन	श्री गुस्तावो मानुएल द आरीस्तेगुई यी सां रोमान	13 जुलाई 2012
15	पाकिस्तान	श्री सलमान बशीर	13 जुलाई 2012
16	अफ़ग़ानिस्तान	श्री शैदा मोहम्मद अब्दाली	13 जुलाई 2012
17	स्वीडन	श्री हराल्ड एन.ई. सांद्वर्ग	13 जुलाई 2012
18	नॉर्वे	श्री इविन्द एस. होम	24 सितम्बर 2012
19	नीदरलैंड	श्री अल्फ़ॉसुस हेरमानुस मारिया स्टोएलिंगा	24 सितम्बर 2012
20	दक्षिण सूडान	डॉ. पनेल पीटर ओथेलो	24 सितम्बर 2012
21	कोरिया गणराज्य	श्री ली वान—ग्यु	24 सितम्बर 2012
22	फिलिपींस	श्री बेनीतो बी.बालेरीआनो	08 नवम्बर 2012
23	सूडान	डॉ. हसन इसा हसन अल तलीब	08 नवम्बर 2012
24	कांगो गणराज्य	श्री फेलिक्स नगोमा	8 नवम्बर 2012
25	बेलोरूस	श्री विताली प्रीमा	08 नवम्बर 2012
26	बोलीविया	श्री जोर्ज कार्डेनास रोबेल्स (प्रथम निवासी एचओएम)	08 नवम्बर 2012
27	जापान	श्री ताकेशी यागी	08 नवम्बर 2012

अप्रैल 2012 - नवंबर, 2012 की अवधि के दौरान भारत छोड़ देने वाले मिशनों के अध्यक्षों की सूची

क्र.सं.	देश	एचओएम का नाम	प्रस्थान की तारीख
1	फिलिपींस	श्री रोनाल्ड बी. अल्लारे	04 अप्रैल, 2012
2	स्पेन	श्री जेवियर एलोज़ा	14 मई, 2012
3	अफ़ग़ानिस्तान	डॉ. नांग्युयालाई शैली	28 मई, 2012
4	पाकिस्तान	श्री शाहिद मलिक	13 जून, 2012
5	स्वीडन	श्री लार्स — ओलोफ लिंड्ग्रेन	29 जून, 2012
6	मालदीव	श्री अब्दुल अजीज़ यूसुफ	16 जुलाई, 2012
7	फिनलैंड	सुश्री तेरही हकाला	28 जुलाई, 2012
8	नॉर्वे	सुश्री एन. ओल्लेस्ताद	01 अगस्त, 2012
9	नीदरलैंड	श्री बॉब हीएन्सेच	17 अगस्त, 2012
10	कोरिया गणराज्य	श्री किम जूंग—केयुन	22 अगस्त, 2012
11	जापान	श्री साएकी अकीताका	04 सितंबर, 2012
12	म्यांमार	श्री यू सीन नाम याव	12 सितंबर, 2012
13	लिथुआनिया	श्री पेत्रास सीमेलीयुनास	23 सितंबर, 2012
14	मलावी	डॉ. चेरीस्सीए मुधोधो चावान्जे	25 सितंबर, 2012
15	इंडोनेशिया	लेटिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) एम. आन्दे ग़ालिब	28 सितंबर, 2012
16	चीन	श्री झांग यान	14 अक्टूबर, 2012
17	ऑस्ट्रिया	डॉ. फर्डिनेंड मायुल्तासेचल	25 नवंबर, 2012
18	क्रोएशिया	डॉ. बोरिस वेलीक	30 नवंबर, 2012

अप्रैल-नवंबर, 2012 की अवधि के दौरान सिंगापुर गणराज्य ने न दिल्ली में अपना व्यापार कार्यालय खोला; इंग्लैण्ड ने हैदराबाद तथा चंडीगढ़ में अपने उप उच्चायोग खोले

अप्रैल-नवंबर, 2012 की अवधि के दौरान अनुमोदित भारत में विदेशों के प्रधान कौंसलावास/मानद कौंसलावास की सूची

महा कौंसलावास

1	संयुक्त अरब अमीरात	तिरुवनन्तपुरम
2	कनाडा	बेंगलूरु
3	कोरिया गणराज्य	चेन्नई

मानद कौंसलावास

1	अल सल्वाडोर	बेंगलूरु
2	आइसलैण्ड	चेन्नई
3	चेक रिपब्लिक	मुंबई
4	दक्षिण अफ्रीका	चेन्नई
5	सेंट लुसीया	नई दिल्ली

अप्रैल-नवंबर, 2012 की अवधि के दौरान भारत में नए सृजित विदेशी राजनय मिशनों/केन्द्रों की माहवार सूची

क्र.सं.	महीना	सृजित पदों की संख्या
1	अप्रैल	8
2	मई	38
3	जून	8
4	जुलाई	7
5	अगस्त	15
6	सितंबर	15
7	अक्तूबर	68
8	नवंबर	5
	कुल	164



विदेश मंत्रालय अपने कॉसली, पासपोर्ट एवं वीज़ा (सीपीवी) प्रभाग, केंद्रीय पासपोर्ट संगठन (सीपीओ) तथा इसके पासपोर्ट कार्यालयों व पासपोर्ट सेवा केंद्रों के नेटवर्क के माध्यम से तथा भारतीय मिशनों एवं विदेशी केंद्रों के माध्यम से विदेश में बसे भारतीय/विदेशी नागरिकों को कॉसली वीज़ा तथा पासपोर्ट सेवाएँ प्रदान करता है।

पासपोर्ट सेवाएँ

विदेश मंत्रालय अपने 37 पासपोर्ट कार्यालयों के माध्यम से एवं सीपीवी प्रभाग (केवल राजनयिक तथा शासकीय पासपोर्ट) जारी करता है, और अंडमान निकोबार द्वीप समूह के मुख्य सचिव के कार्यालय के नेटवर्क के माध्यम से भारतीय पासपोर्ट जारी करता है। पासपोर्ट कार्यालय के विस्तारित शाखाओं के रूप में 77 पासपोर्ट सेवा केंद्रों के साथ इस नेटवर्क का विस्तार किया गया। विदेशों में रहने वाले भारतीयों के लिए पासपोर्ट, तथा अन्य विविध सेवाएँ 180 भारतीय मिशनों/पोस्टों के माध्यम से प्रदान की जाती हैं। सभी पासपोर्ट कार्यालय अंतर्राष्ट्रीय नागर विमानन संगठन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार मशीन-पठनीय पासपोर्ट जारी करते हैं।

पिछले दशक के दौरान पासपोर्ट कार्यालयों द्वारा दी जा रही सेवाओं की संख्या में उल्लेखनीय विस्तार हुआ है। जनवरी से दिसम्बर, 2012 के दौरान, 37 पासपोर्ट कार्यालयों, मुख्यालयों तथा अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह के मुख्य सचिव के कार्यालय ने 59.40 लाख पासपोर्ट जारी किए (जिसमें 2301 राजनयिक पासपोर्ट तथा 22010 सरकारी पासपोर्ट शामिल हैं) और पुलिस अनापत्ति प्रमाण-पत्र सहित 3.14 लाख पासपोर्ट संबंधी विविध सेवाएँ दीं। वर्ष 2012-13 (अप्रैल-दिसम्बर, 2012) में सभी पासपोर्ट सेवाओं से सृजित कुल राजस्व समग्र वित्तीय वर्ष के दौरान 1200 करोड़ रुपये अनुमानित था, जो 884.69 करोड़ रुपये रहा था। वित्त वर्ष 2012-13 में केंद्रीय पासपोर्ट संगठन को 559.72 करोड़ रुपये की राशि आबंटित की गई।

केंद्रीय पासपोर्ट संगठन (सीपीओ)

केंद्रीय पासपोर्ट संगठन का गठन मंत्रालय के एक अधीनस्थ कार्यालय के रूप में वर्ष 1959 में किया गया था तथा संयुक्त सचिव एवं मुख्य पासपोर्ट अधिकारी इसके प्रधान हैं, जो पासपोर्ट अधिनियम 1967 के तहत अपीलीय प्राधिकारी हैं तथा वित्तीय शक्तियों का प्रत्यायोजन नियम 1978 के तहत विभाग प्रमुख के रूप में भी कार्य करते हैं। 31 दिसम्बर, 2012 तक केंद्रीय पासपोर्ट संगठन संवर्ग की कुल संख्या 2697 थी। सीपीओ कर्मियों की सेवा स्थिति में सुधार करने के लिए मंत्रालय ने संवर्ग के पुनर्गठन, शीघ्र पदोन्नति तथा

उत्पादकता आधारित प्रोत्साहन योजना के द्वारा सीपीओ कर्मियों की सेवा स्थिति में सुधार करने के कई उपाय किए हैं। सहायक से सुपरिटेण्डेंट, अवर श्रेणी लिपिक से उच्च श्रेणी लिपिक, उच्च श्रेणी लिपिक से सहायक, उप पासपोर्ट अधिकारी से पासपोर्ट अधिकारी तथा सुपरिटेण्डेंट से पीजीओ में पदोन्नति के लिए कुल 6 डीपीसी का गठन किया गया।

पासपोर्ट सेवा परियोजनाओं का सफल क्रियान्वयन

मंत्रालय जनता की सुविधा और आराम के लिए पासपोर्ट जारी करने की प्रणाली को सरल व त्वरित बनाने के लिए कई उपाय कर रहा है। गहन कंप्यूटरीकरण, नए पासपोर्ट कार्यालयों की शुरुआत तथा केंद्रीय पासपोर्ट संगठन में सुधारों के बावजूद पासपोर्ट पाने वालों की संख्या में तीव्र वृद्धि के कारण वर्तमान प्रणाली को बदलने की आवश्यकता महसूस की गई। नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर स्मार्ट गवर्नेंस के अध्ययन के अनुसरण में तथा सितम्बर, 2007 में केंद्रीय मंत्रिमण्डल के अनुमोदन से मंत्रालय ने राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस योजना के हिस्से के रूप में सार्वजनिक-निजी भागीदारी आधार पर एक महत्वाकांक्षी मिशन मोड परियोजना, पासपोर्ट सेवा परियोजना (पीएसपी) आरंभ की है।

यह परियोजना बिल्ड-ओन-ऑपरेट-ट्रांसफर मॉडल पर चलती है, जिसमें शुरुआती निवेश, निजी भागीदारों द्वारा किया गया। सरकार की ओर से अल्पतम निवेश किया गया। इस परियोजना का उद्देश्य समय पर, पारदर्शी, अधिक सुगम तथा विश्वसनीय तरीके से नागरिकों को सभी पासपोर्ट संबंधी सेवाएँ प्रदान करना है। इस परियोजना में अन्य बातों के साथ देशभर में 77 पासपोर्ट सेवा केंद्रों की स्थापना, 24x7 परिचालित बहुभाषीय कॉल सेंटर्स की स्थापना तथा पासपोर्ट जारी करने के लिए केंद्रीकृत देशव्यापी कंप्यूटरीकृत प्रणाली की भी परिकल्पना की गई है।

प्रायोगिक परियोजना मई, 2010 में कर्नाटक में 4 पासपोर्ट सेवा केंद्रों में आरम्भ की गई थी। बाद में, 3 अन्य प्रायोगिक पासपोर्ट सेवा केंद्र अगस्त, 2010 में चंडीगढ़, लुधियाना तथा अम्बाला में आरम्भ की गई। सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग के तहत एक संगठन तृतीय: पक्षी लेखा परीक्षा-मानवकीकरण, परीक्षण एवं गुणवत्ता प्रमाणन (एसटीक्यूसी) द्वारा अपेक्षित प्रमाणन के पश्चात मंत्रालय तथा सेवा प्रदाता ने संयुक्त रूप से रोल-आउट योजना सुनिश्चित की। 14 जून, 2012 तक देश के सभी 77 पासपोर्ट सेवा केंद्रों की स्थापना तथा प्रचालन शुरू हो चुका था, साथ ही दिल्ली स्थित क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय के 77 पासपोर्ट सेवा केंद्रों को जन सेवा के लिए आरम्भ कर दिया गया था। 2 वर्ष में प्रायोगिक चरण से पूर्ण रोल आउट तक

परियोजना का समय पर पूर्ण होना—सफलतापूर्वक परियोजना कार्यान्वयन के लिए एक नया निर्देश चिन्ह स्थापित करता है। एसटीक्यूसी निदेशालय ने सख्त सत्यापन प्रक्रिया के पश्चात 12 जून, 2012 को अनुपालन सत्यापन रिपोर्ट जारी किया। इस परियोजना के लिए यह एक महत्वपूर्ण सोपान है क्योंकि परियोजना कार्यान्वयन की पूर्णता तथा प्रचालन एवं अनुरक्षण चरण को चिन्हित करता है। नई प्रणाली के अंतर्गत 31 दिसम्बर, 2012 तक 64.73 लाख से अधिक पासपोर्ट आवेदनों पर कार्यवाई की गई। इस परियोजना को भारतीय कम्प्यूटर सोसायटी द्वारा 2011-12 के दौरान भारत सरकार के सर्वश्रेष्ठ ई-शासन परियोजना घोषित किया गया।

पासपोर्टों की सुपुर्दगी का पता लगाने के लिए भारतीय डाक तथा आवेदकों के निजी विवरणों के सत्यापन के लिए भारतीय पुलिस के साथ इंटरफेस सहित समग्र प्रक्रिया को ऑनलाइन तथा सरल और कारगर बना दिया गया है। पासपोर्ट पोर्टल पासपोर्ट सेवाओं पर व्यापक तथा नवीनतम सूचना प्रदान करने के साथ आवेदन की स्थिति की सूचना भी देता है, अर्थात् कहीं भी कभी भी पहुँचने में सक्षम बनाता है। एक ई-मेल आधारित हेल्पडेस्क तथा 24 7 कॉल सेंटर की स्थापना की गई है, जो नागरिकों को 17 स्थानीय भाषाओं में अपेक्षित जानकारी प्रदान करता है। सहायता के लिए निःशुल्क हेल्पलाइन नं. 1800-258-1800 डायल कर सकते हैं।

इसकी मूल अभिकल्पना में सभी गैर-संप्रभु, गैर-सुरक्षा तथा गैर-संवेदी कार्यों का समावेश है जिसे सेवा प्रदाता मैटाटा कंसलटेंसी सर्विसेज करती है, जबकि सरकारी अधिकारियों के पास सभी विवेचनात्मक कार्य तथा उत्तरदायित्व हैं। निश्चित सेवा स्तर के अंदर नागरिकों को दी जाने वाली सेवा व्यवस्था में सेवा के लिए निकट तथा बड़ी संख्या में एक्सेस प्वाइंट, वास्तविक समय स्टेटस ट्रैकिंग के साथ ऑन-लाइन सेवाओं के पोर्टफोलियो की उपलब्धता तथा पूछताछ एवं शिकायत निवारण के लिए प्रभावी प्रणाली व सेवा प्रदान करने में 'पहले आओ-पहले जाओ' सिद्धांत सख्ती से पालन करना है।

पासपोर्ट सेवाओं में सुधार के लिए अन्य उपाय

लोक शिकायत निवारण तंत्र

मंत्रालय के सीपीवी प्रभाग को सभी सरकारी कार्यालयों में लोक सेवा सुपुर्दगी में सुधार के लिए भारत सरकार की गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली (क्यूएमएस) सेवोत्तम— एक प्रायोगिक परियोजना के कार्यान्वयन के लिए प्रशासनिक सुधार एवं लोक निवारण विभाग (डीएआरपीजी) के द्वारा चुनी गई प्रायोगिक इकाइयों में से एक के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। संयुक्त सचिव (पासपोर्ट सेवा परियोजना) तथा मुख्य पासपोर्ट अधिकारी के पर्यवेक्षण में सीपीवी प्रभाग के तहत एक लोक शिकायत निवारण प्रकोष्ठ (पीजीआरसी) स्थापित किया गया है। यह टेलीफोन, ई-मेल तथा डाक से प्राप्त शिकायतों तथा विभिन्न सरकारी कार्यालयों जैसे— राष्ट्रपति सचिवालय, प्रधान मंत्री कार्यालय, केंद्रीय सतर्कता आयोग तथा संसद सचिवालय से प्राप्त संदर्भों को भी देखता है। इसके अतिरिक्त, सभी पासपोर्ट कार्यालय कार्मिक,

लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय के वेबसाइट, केंद्रीकृत लोक शिकायत निवारण तथा मॉनीटरिंग प्रणाली (सीपीजीआरएम) के माध्यम से प्राप्त जन शिकायतों को देखता है, जिसमें वर्ष 2012 के दौरान प्राप्त 5402 शिकायतों में से 2,253 मामलों को निपटाया जा चुका है। उनके आवेदन की नवीनतम स्थिति के साथ आगे की कार्यवाई के लिए निर्देश भी वेबसाइट पर पोस्ट किए जाते हैं, जो लाभार्थ लोगों द्वारा आसानी से एक्सेस किया जा सकता है। वर्ष 2012 में सीपीवी प्रभाग (सीपीजीआरएम सहित) कुल 46,878 लोक शिकायतें मिली हैं, जिसमें से 42,295 शिकायतों का निपटारा किया जा चुका है।

पासपोर्ट कार्यालयों में लोक शिकायत अधिकारी का नाम, पता तथा फोन नम्बर भी लगाया जाता है। पासपोर्ट कार्यालयों में शिकायत/सुझाव पेटी भी अनुकूल स्थानों पर लगाई जाती है। लोगों से प्राप्त किसी शिकायत का समयबद्ध निवारण तथा पूछताछ के लिए सभी पासपोर्ट कार्यालयों में लोक शिकायत निवारण तंत्र मौजूद है। आवेदकों की सहायता और शिकायतों के शीघ्र निपटारे के लिए सूचना एवं सुविधा काउंटर, पीजी प्रकोष्ठ तथा हेल्प डेस्क स्थापित किए गए हैं।

इसके अलावा, पासपोर्ट सेवा परियोजना (पीएसपी) क्रियान्वयन के एक भाग के रूप में एक राष्ट्रीय कॉल सेंटर स्थापित किया गया है, यह विभिन्न सेवाओं, शिकायत प्रबंधन तथा नागरिक फीडबैक के बारे में सूचना के प्रचार-प्रसार के लिए 17 भारतीय भाषाओं में कार्य करता है, जो इस समय एक केंद्रीय प्रणाली प्लेटफॉर्म पर कार्य कर रहा है। साथ ही एक हेल्प डेस्क की भी व्यवस्था की गई है जो नागरिकों को passportindia.gov.in पोर्टल के जरिए सुलभ हो सकता है और जहां सुझाव एवं शिकायतें भेजी जा सकती हैं तथा अपनी स्थिति ऑनलाइन भी देख सकते हैं। पीएसपी कॉल सेंटर और हेल्प डेस्क विभिन्न सेवाओं, शिकायत निवारण तथा नागरिकों के फीडबैक से संबंधित सूचनाओं का प्रचार-प्रसार करता है। इन कॉल सेंटरों पर बात करने के लिए लोग निःशुल्क फोन नं. 1800-258-1800 डायल करते हैं। यह कॉल सेंटर 24 7 आधार पर कार्य करता है। वर्तमान में यह प्रतिदिन 1800 कॉल का उत्तर देता है (जिसमें से 42 प्रतिशत हिंदी में तथा 29 प्रतिशत अंग्रेजी में उत्तर दिए गए)।

सूचना का अधिकार अधिनियम (आरटीआई)

सूचना का अधिकार अधिनियम के तहत आवेदकों को सूचना देने के लिए प्रत्येक पासपोर्ट कार्यालय में एक केंद्रीय जन सूचना अधिकारी तथा सहायक जन सूचना अधिकारी नियुक्त किए गए हैं। सीपीवी प्रभाग में एक केंद्रीय जन सूचना अधिकारी की भी नियुक्ति की गई है। सभी पासपोर्ट कार्यालयों तथा सीपीवी प्रभाग के संदर्भ में संयुक्त सचिव (पीएसपी) एण्ड सीपीओ प्रथम अपीलीय प्राधिकारी होते हैं। वर्ष 2012 के दौरान, इस प्रभाग द्वारा कुल 1196 आरटीआई आवेदन तथा 1,009 अपीलें प्राप्त हुईं और इनका निपटारा किया गया।

भारतीय पासपोर्ट पोर्टल

सीपीवी प्रभाग की वेबसाइट जिसकी शुरुआत 1999 में की गई है, जिसे पीएसपी के प्रचालन के पश्चात समाप्त कर दिया गया। पीएसपी के तहत पासपोर्ट सेवाएँ, पासपोर्ट सेवाओं पर व्यापक तथा नवीनतम सूचना नियुक्ति प्रक्रिया, प्रलेखन, स्थिति पूछताछ तथा अन्य संबंधित मुद्दों पर सेवा प्रदान करने हेतु एक नया ऑनलाइन पोर्ट passportindia.gov.in तैयार किया गया है, अर्थात् कहीं भी कभी भी सुलभ। इस पोर्टल को अधिक प्रयोक्ता अनुकूल तथा सरल बनाने के लिए नियमित रूप से अपडेट किया जाता है।

भौतिक संरचना

37 पासपोर्ट कार्यालयों में से 16 कार्यालय अपने स्वयं के भवनों से, 4 कार्यालय भारत सरकार के भवनों से संचालित किए जा रहे हैं। सभी पासपोर्ट कार्यालयों को स्वयं के भवनों में स्थानांतरित करने संबंधी मंत्रालय की नीति के अनुसरण में, अत्याधुनिक भवनों के निर्माण हेतु भू-खण्ड अधिगृहित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। मंत्रालय ने अब तक 9 स्थानों पर अर्थात् श्रीनगर, अमृतसर, जालंधर, देहरादून, सूरत, मुंबई, पूणे, भोपाल तथा गुवाहाटी में भूमि अधिगृहित की है। शेष 8 स्थानों पर प्राथमिकता आधार पर भू-खण्ड आबंटन के लिए राज्य सरकारों से संपर्क करने के लिए पासपोर्ट अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं। सूरत में, नए पासपोर्ट कार्यालय भवन तथा 22 स्टाफ आवास का निर्माण पूर्ण हो चुका है तथा मुंबई में पूर्णता के नजदीक है। पासपोर्ट कार्यालय रॉची, जो जगह की गंभीर कमी के तहत कार्य कर रहा था, उसे इस वर्ष के दौरान निजी भवन के बड़े तथा विस्तृत कार्यालय में भेज दिया गया है।

मशीन-पठनीय पासपोर्ट

विदेश में 150 मिशन/पोस्टों तथा सहायक सचिव (पासपोर्ट) का कार्यालय, अंडमान निकोबार द्वीप समूह, पोर्ट ब्लेयर के लिए मशीन पठनीय पासपोर्ट (एमआरपी) का मुद्रण सीपीवी प्रभाग, नई दिल्ली का केंद्रीय भारतीय पासपोर्ट मुद्रण प्रणाली (सीआईपीपीएस) करता है। वर्ष 2012 में सीआईपीपीएस ने 1,08,073 पासपोर्टों का मुद्रण किया है।

पासपोर्ट पुस्तिकाओं की नई विशेषताएं

ऑकड़ों तथा फोटोग्राफों की अस्पष्टता की समस्या को दूर करने के लिए और भारतीय पासपोर्टों की गुणवत्ता, कार्य कुशलता एवं सुरक्षा में सुधार के लिए विभिन्न उपाय जैसे—पासपोर्ट पुस्तिका के ऑकड़ा पृष्ठ का पृष्ठ सं. 2 पर तथा अंतिम पृष्ठ को पृष्ठ सं. 35 पर ले जाना, पासपोर्ट धारक के निजी ब्यौरे के साथ “घोस्ट इमेज” का समावेश भी ऑकड़ा पृष्ठ पर आरम्भ किया गया है। आईएसपी, नासिक को निर्देश दिया गया है कि इन नई विशेषताओं के साथ “2012 सीरीज पुस्तिकाओं” का मुद्रण आरंभ करें।

ई-पासपोर्ट

मशीन पठनीय यात्रा दस्तावेजों में बायोमैट्रिक ऑकड़े समाविष्ट किए जाने के लिए आईसीएओ दिशा-निर्देशों के अनुसरण में, भारत ने भी

यह निर्णय लिया है कि विद्यमान पासपोर्टों को इलेक्ट्रॉनिक कोटि के ई-पासपोर्टों के रूप में अद्यतन किया जाए। प्रायोगिक परियोजना के भाग के रूप में राजनयिक तथा सरकारी पासपोर्ट कोटि के तहत 25 जून, 2008 को भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने ई-पासपोर्ट (बायोमैट्रिक पासपोर्ट के रूप में भी जाना जाता है) जारी करना आरम्भ किया। ई-पासपोर्ट फर्जी दुरुपयोग तथा टैम्परिंग के विरुद्ध अधिक सुरक्षा प्रदान करने के साथ पासपोर्टों के उच्च स्तर की सुरक्षा भी प्रदान करता है। ई-पासपोर्ट बहु-पासपोर्ट धारण करने तथा वांटेड व्यक्तियों तक पहुँचने की सुविधा से भी बचाता है। राजनयिक तथा सरकारी कोटि के ई-पासपोर्ट जारी करने के प्रायोगिक चरण से प्राप्त अनुभव के आधार पर, मंत्रालय ने सामान्य कोटि के लिए भी ई-पासपोर्ट आरंभ करने का निर्णय लिया है। तदनुसार, ई-पासपोर्ट उत्पादन के लिए कांटेक्टलेस चिप्स के लिए इनलेज अधिप्राप्ति के लिए मार्च, 2009 में आईएसपी, नासिक ने एक वैश्विक पीक्यूबी नोटिस प्रकाशित किया है। भारतीय सुरक्षा प्रेस, नासिक द्वारा ई-पासपोर्ट के विनिर्माण के लिए इसकी प्रचालन प्रणाली के साथ आईसीएओ अनुपालन इलेक्ट्रॉनिक कांटेक्टलेस इनलेज की अधिप्राप्ति के लिए वैश्विक पीक्यूबी आवेदनों का मूल्यांकन अभी भी प्रक्रियाधीन है। वर्ष 2012 में मंत्रालय द्वारा 301 ई-सरकारी तथा 661 ई-राजनयिक पासपोर्ट जारी किए गए हैं।

अंतर्राष्ट्रीय नागर विमानन संगठन (आईसीएओ)

अंतर्राष्ट्रीय नागर विमानन संगठन के मशीन पठनीय यात्रा दस्तावेजों (एमआरटीडी) पैनल पर तकनीकी सलाहकार दल (टीएजी) के सदस्य के रूप में कार्य करता है तथा मशीन पठनीय यात्रा दस्तावेजों पर आईसीएओ दिशा-निर्देशों को क्रियान्वित करने में भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नागर विमानन सुरक्षा में सुधार के लिए आईसीएओ के सामरिक उद्देश्य के समर्थन में इलेक्ट्रॉनिक यात्रा दस्तावेज के लिए विश्व स्तर पर प्रचालित ई-पासपोर्ट मान्यकरण को बढ़ावा देने के लिए लागत निर्धारण नीति पर केंद्रीय संदर्भ के रूप में दस्तावेज 9303 के शर्तों पर आईसीएओ ने आईसीएओ पब्लिक की डाइरेक्टरी (पीकेडी) की स्थापना की है। आईसीएओ पीकेडी सेंट्रल प्लेटफॉर्म, ई-पासपोर्ट के चिप में अवस्थित इलेक्ट्रॉनिक हस्ताक्षर के ब्यौरे को वैधता देने के लिए तथा अन्य मशीन पठनीय यात्रा दस्तावेजों के प्रमाणन का विश्व व्यापी विनिमय प्रबंधित करता है। चूँकि अधिक से अधिक राज्य ई-पासपोर्ट आरम्भ कर रहे हैं, पीकेडी संरचना, राज्यों के मध्य विनिमय प्रक्रिया को विश्वसनीय, तीव्र तथा सरल रखना सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत है। पीकेडी बोर्ड के सदस्यों को पीकेडी में भाग लेने वाले देश नामित करते हैं तथा आईसीएओ परिषद इन्हें नियुक्त करता है। आईसीएओ, पीकेडी में भारत 2009 में शामिल हुआ है। 2012 के दौरान, विंडसर में पीकेडी बोर्ड की 16वीं बैठक में अतिरिक्त सचिव (सीपीवी) श्री बसंत के. गुप्ता तथा एनआईसी के वरिष्ठ तकनीकी निदेशक श्री एस.के. सिन्हा ने भारत का प्रतिनिधित्व किया। श्री गुप्ता ने मांटेरियल में आयोजित 21वीं टीएजीएमआरटीडी बैठक में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया।

पासपोर्ट अदालतें

पासपोर्ट कार्यालय, पासपोर्ट आवेदकों के शिकायतों का निवारण करने के लिए नियमित रूप से पासपोर्ट अदालतों का आयोजन करते हैं। ये अदालतें पुराने मामलों को निपटाने में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुई हैं।

हज यात्री: विशेष अभियान

24 मार्च, 2012 को तंजौर पीएसके में हज आवेदकों के लिए विशेष कैंप का आयोजन किया गया। उस दिन करीब 170 आवेदनों पर कार्रवाई की गई। 16 जनवरी से 13 अप्रैल, 2012 तक क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बेंगलूर में हज मेला आयोजित किया गया। कुल 9100 नियुक्तियों को कर्नाटक के 4 पीएसके के हज आवेदकों को समर्पित किया गया। चेन्नई, सालीग्राम पीएसके में हज आकांक्षियों के लिए लगातार 2 शनिवार को विशेष कैंप का आयोजन किया गया। कुल 890 आवेदनों पर कार्रवाई की गई।

2012 के आरम्भ में, भारतीय हज समिति ने भावी हज आवेदकों से आवेदन के साथ पासपोर्ट ब्यौरा भी प्रदान करना अनिवार्य कर दिया। समय की कमी के बावजूद, हज समिति के आँकड़ों के अनुसार, इसने 1,25,000 आबंटित हज कोटे की तुलना में वैध पासपोर्ट सहित 3,07,000 हज आवेदन प्राप्त किया।

सार्वजनिक आउटरीच

सीपीवी प्रभाग, विभिन्न पासपोर्ट संबंधी मुद्दों पर सूचना समाहित एक तिमाही बुलेटिन "पासपोर्ट पत्रिका" प्रकाशित कर रहा है। हैदराबाद में 19 जुलाई, 2012 पणेजी में 3 अगस्त, 2012 लखनऊ में 8 अगस्त, 2012 तथा कोलकाता में 21 अगस्त, 2012 को मीडिया नुककड नाटक आयोजित किया गया, मीडिया को पासपोर्ट सुपुर्दगी में सुधारों से अवगत कराया गया था।

पासपोर्ट शुल्क में संशोधन

पासपोर्ट अधिनियम, 1967 द्वारा प्रदत्त शक्तियों के उपयोग में, केंद्र सरकार ने 1 अक्टूबर, 2012 के प्रभाव से पासपोर्ट तथा संबंधित सेवा शुल्कों को संशोधित करने का निर्णय लिया है। वर्तमान शुल्क को 29 मार्च, 2012 में अंतिम रूप से निर्धारित किया गया था। पासपोर्ट सेवा नेटवर्क का आगे विस्तार, तकनीकी संरचना का उन्नयन तथा लोक सेवा सुपुर्दगी में सुधार के लिए बड़े हुए राजस्व का उपयोग किया जाएगा।

आरपीओ/पीएसके में संसदीय समिति का दौरा

1 मार्च से 5 मार्च, 2012 की अवधि के दौरान श्री अनंत कुमार की अध्यक्षता में संसदीय स्थाई समिति ने पीएसके लालबाग, बेंगलूर, पीएसके मलाड, मुंबई तथा अहमदाबाद पीएसके 2 (विजय क्रॉस रोड) का दौरा किया। उन्होंने नागरिकों के लिए सेवा शर्तों में पीएसके कार्यचालन की समीक्षा की तथा पिछले एक वर्ष में पीएसपी द्वारा की गई प्रगति पर संतोष व्यक्त किया।

विदेश कार्य पर स्थाई संसदीय समिति को देखते हुए, इसकी 11वीं रिपोर्ट की सिफारिशों के संदर्भ में सभी स्तर के अधिकारियों के लिए कौंसली, पासपोर्ट व वीजा मामलों पर आम जनता के साथ व्यवहार करने, विदेशों में रहने वाले भारतीय नागरिकों को प्रभावी कौंसली सेवा प्रदान करने पर सुपुर्दगी मापदण्डों पर 23 मई, 2012 को विदेश सेवा संस्थान में एक पुनश्चर्या सत्र आयोजित किया गया, जिसे विदेश कार्य पर स्थायी समिति के सदस्य श्री एच.के. दुआ, विदेश सचिव तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने संबोधित किया।

पासपोर्ट अधिनियम, 1967 के तहत नियम-विनिमय ढाँचे के संदर्भ में लोक-सभा की अधीनस्थ विधायी पर संसदीय समिति ने 27 जून, 2012 को आरपीओ, कोयंबटूर का अध्ययन दौरा किया।

सांसद तथा अध्यक्ष श्री फ्रांसिस्को सारदिन्हा के नेतृत्व में प्राक्कलन समिति ने 10 जुलाई, 2012 को पीएसके लखनऊ का दौरा किया।

प्राक्कलन समिति के अध्यक्ष श्री फ्रांसिस्को सारदिन्हा ने सांसदों श्री शांताराम नाईक तथा श्री श्रीपद नाईक के साथ 3 अगस्त, 2012 को आरपीओ, पणजी का दौरा किया। इस प्रतिनिधिमण्डल को पीएसके कार्यचालन का विस्तृत ब्यौरा प्रदान किया गया।

संसदीय राजभाषा समिति ने 12 जून, 2012 को आरपीओ, सूरत, 9 जुलाई, 2012 को आरपीओ, जम्मू, 4 जनवरी, 2013 को आपीओ, चेन्नई तथा 2 फरवरी, 2013 को आरपीओ जयपुर का निरीक्षण दौरा किया।

प्राक्कलन समिति के अध्यक्ष श्री फ्रांसिस्को सारदिन्हा ने 9 सांसदों के साथ 10 जनवरी, 2013 को आरपीओ पणजी का दौरा किया। इस प्रतिनिधिमण्डल ने पणजी आरपीओ की पासपोर्ट सेवा परियोजना तथा कार्यचालन की समीक्षा की।

विदेश कार्य पर संसदीय स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री अनंत कुमार की अध्यक्षता में प्रतिनिधिमण्डल ने विदेश सचिव, श्री रंजन माथार्ई की अध्यक्षता में सीपीवी प्रभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ पासपोर्ट सेवा परियोजना-लक्ष्य और उपलब्धियाँ विषय पर विचार-विमर्श किया।

महत्वपूर्ण कार्यक्रम तथा घटनाक्रम

केरल के मुख्यमंत्री श्री ओमान चाण्डी, राज्य मंत्रियों तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में विदेश मंत्री श्री एस.एम. कृष्णा ने 2 अप्रैल, 2012 को केरल के 13 पासपोर्ट सेवा केंद्रों का उद्घाटन किया।

गर्मियों के दौरान पासपोर्ट सेवाओं की बढ़ी हुई माँगों का पूरा करने तथा मिलने का समय पाने में नागरिकों द्वारा झेली जा रही परेशानियों को देखते हुए, 24 पासपोर्ट कार्यालयों द्वारा 23 जून, 2012 से लगातार समय-समय पर पासपोर्ट मेला आयोजित किया गया है। कई पासपोर्ट कार्यालय तथा सेवा केंद्र (कुल 40) में सप्ताहांत में भी कार्य किया गया। 2012 में पासपोर्ट मेलों के दौरान 33,584 पासपोर्ट प्राप्त हुए, जिसमें से करीब 26,000 पासपोर्ट सेवाएँ प्रदान की गईं।



तत्कालीन विदेश मंत्री श्री एस एम कृष्णा 26 जुलाई, 2012 को जम्मू और कश्मीर में एक आयोजन के दौरान पासपोर्ट सेवा केन्द्र का उद्घाटन करते हुए



सोमाली जलदस्युओं द्वारा बंधक बनाए गए भारतीय समुद्री यात्रियों का 33 माह बाद एमवी आइसबर्ग-1 से रिहाई के बाद 29 दिसम्बर, 2012 को विदेश मंत्री श्री सलमान खुरशीद द्वारा स्वागत

वीज़ा

विदेश स्थित मिशन/केंद्रों द्वारा वीज़ा जारी किया जाना

भारतीय मिशन/केंद्र प्रत्येक वर्ष लगभग 5 मिलियन वीज़ा जारी करते हैं। मिशन/केंद्रों द्वारा वीज़ा मंजूर किए जाने की प्रक्रिया को और सरल बनाया गया, जिसमें जारी करने की प्रणाली को कंप्यूटरीकृत करना तथा 2006 में आरम्भ वीज़ा सेवाओं की आउटसोर्सिंग शामिल किया है इस समय विदेश स्थित 68 मिशन/केंद्रों में वीज़ा कार्यों की आउटसोर्सिंग की गई है।

वीज़ा जारी किए जाने की प्रणाली के सुरक्षा वातावरण को संवर्धित करने के लिए विदेश मंत्रालय ने भारत यात्रा के इच्छुक विदेशियों को वीज़ा देने के लिए बायोमेट्रिक नामांकन प्रक्रिया (दस ऊँगलियों के छाप तथा चेहरे की बायोमेट्रिक्स) शुरू करने का निर्णय लिया है। यह गृह मंत्रालय, एनआईसी तथा विदेश मंत्रालय की संयुक्त परियोजना है, जिसमें गृह मंत्रालय नोडल प्राधिकारी तथा विदेश मंत्रालय, भारतीय मिशन/विदेशों में स्थित केंद्रों में कार्यान्वयन प्राधिकारी का कार्य करेगा। विदेश मंत्रालय ने मई, 2012 में सभी भारतीय मिशन/विदेश स्थित केंद्रों को इस परियोजना का विस्तृत निर्देश जारी कर दिया है। 2014 तक इस समग्र योजना के पूर्ण कार्यान्वयन की संभावना है। बायोमेट्रिक प्रक्रिया की शुरुआत भारतीय मिशन/विदेश स्थित केंद्रों में आईवीएफ आरटी (आप्रवास, वीज़ा तथा विदेशियों का पंजीकरण तथा ट्रेकिंग) योजना के कार्यान्वयन से संबंधित है, जो गृह मंत्रालय द्वारा एनआईसी के सहयोग से पूरा किया जाएगा। फिलहाल, 108 भारतीय मिशन/विदेश स्थित केंद्रों में आईवीएफआरटी योजना (बायोमेट्रिक्स के बिना) की शुरुआत की गई है। बायोमेट्रिक प्रक्रिया नामांकन के साथ आईवीएफआरटी योजना कार्यान्वयन भारत में सही विदेशी पर्यटकों को आवाजाही की सुविधा प्रदान करने के अलावा वीज़ा जारी करने के सुरक्षा पक्ष को और संवर्धित करेगा।

सीपीवी प्रभाग द्वारा वीज़ा जारी किया जाना

सीपीवी प्रभाग ने वर्ष 2012 के दौरान विदेशी राजनयिक/शासकीय पासपोर्ट धारकों को 7,190 वीज़ा जारी किए। सीपीवी प्रभाग ने 2012 में स्थानांतरण तथा सरकारी कार्य से भारतीय मिशन/केंद्रों में कार्य ग्रहण करने वाले भारतीय सरकारी कार्यकारियों हेतु वीज़ा जारी करने के लिए 13,665 नोट वर्बेल जारी किए।

भारतीय मिशन/केंद्रों द्वारा वीज़ा/कोंसली/पासपोर्ट कार्य की आउटसोर्सिंग

विदेश मंत्रालय ने 2006-07 के दौरान भारतीय मिशन/विदेश स्थित केंद्रों में वीज़ा सेवाओं की आउटसोर्सिंग शुरू की। बाद में, पासपोर्ट तथा कोंसली सेवाओं को भी आउटसोर्स कर दिया गया। अब तक, 68 भारतीय मिशन/विदेश स्थित केंद्रों ने 31 दिसम्बर, 2012 तक पासपोर्ट/वीज़ा/कोंसली सेवाओं तथा संग्रह कार्यों की आउटसोर्सिंग की है (जिसमें से 18 मिशन ने सभी तीनों कोटियों की, 36 मिशन/केंद्रों ने केवल वीज़ा सेवाओं की, 9 मिशन/केंद्रों

ने केवल वीज़ा तथा पासपोर्ट सेवाओं की, 4 मिशन/केंद्रों ने केवल वीज़ा तथा कोंसली सेवाओं की तथा मात्र एक मिशन ने पासपोर्ट तथा कोंसली सेवाओं की आउटसोर्सिंग की है)।

आउटसोर्सिंग का मूल उद्देश्य लोगों को शीघ्र एवं प्रभावी सुविधा प्रदान करने के अलावा मिशन/केंद्रों में आगन्तुकों की संख्या घटाना है, अर्थात् सुरक्षित वातावरण को बढ़ाना है। इन सेवाओं के सुरक्षा पक्ष को पूरी तरह संरक्षित रखा गया है। क्योंकि, आउटसोर्सिंग एजेंसियों को केवल बाहरी कार्य सौंपा गया है। अनुमोदन/अस्वीकृति के लिए अंतिम निर्णय सहित संवेदनशील कार्य, नीतिगत मुद्दे भारत सरकार के अधिकारियों के अधिकार क्षेत्र में है। 2011 में शुरू की गई नई नीति के अनुसार भी भारतीय अथवा विदेशी मूल के स्थानीय भागीदार के बिना अथवा साथ, केवल भारतीय कंपनिया ही टेंडर प्रक्रिया में भाग लेने के योग्य है, अर्थात् आउटसोर्सिंग प्रणाली के सुरक्षा पक्ष में और वृद्धि करना।

वीज़ा उन्मुक्ति करार

भारत ने 52 देशों के साथ उन्मुक्ति करार संपन्न किए हैं जिसके तहत राजनयिक/शासकीय पासपोर्ट धारकों को वीज़ा की आवश्यकता से छूट मिलती है। वर्ष 2012 में किसी भी देश के साथ कोई वीज़ा छूट करार पर हस्ताक्षर नहीं किया गया।

कोंसली मामले

एपोस्टिल अभिसमय परियोजना की शुरुआत

मंत्रालय के सीपीवी प्रभाग में सत्यापन प्रकोष्ठ, विदेशों में उपयोग के लिए व्यक्तियों के शैक्षिक तथा निजी दस्तावेजों के प्रमाणीकरण के लिए सत्यापन सेवा प्रदान करता है। इसके अलावा, भारतीय व्यापारिक प्रतिष्ठानों को भी निर्यात के साथ विदेशों में अन्य व्यापारिक उद्यमों के लिए विदेश मंत्रालय द्वारा वाणिज्यिक दस्तावेजों के सत्यापन की आवश्यकता होती है। 2012 के दौरान, शाखा सचिवालयों (चेन्नई, गुवाहटी, हैदराबाद तथा कोलकाता) सहित मंत्रालय द्वारा 3,07,672 निजी तथा शैक्षिक दस्तावेजों तथा 1,86,926 वाणिज्यिक दस्तावेजों का सत्यापन किया गया।

सामान्य सत्यापन के अलावा, एपोस्टिल सदस्य देशों की यात्रा करने वालों के लिए सत्यापन प्रकोष्ठ द्वारा अगस्त, 2007 के प्रभाव से एपोस्टिल प्रमाणीकरण भी किया गया। दस्तावेजों पर एपोस्टिल स्टिकर चिपकाया गया तथा सेवाओं के लिए पोस्टल आर्डर के माध्यम से 50/- रूपए फीस भी लिया गया। 2012 के दौरान एपोस्टिल सदस्य देशों में बाहर उपयोग हेतु 2,61,749 दस्तावेजों को एपोस्टिल किया गया। विदेश में रहने वाले भारतीय नागरिकों के लिए भारतीय मिशन/केंद्रों द्वारा कोंसुली दस्तावेजों का भी सत्यापन किया जाता है।

सत्यापन सेवाओं की आउटसोर्सिंग

अपने दस्तावेजों के सत्यापन के लिए सीपीवी प्रभाग से संपर्क करने वाले आवेदकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। इसके कारण

कई बार स्थानीय एजेंटों/दलालों के साथ लोगों का व्यवहार अनियंत्रित हो जाता है। परिसर के अंदर अथवा प्रवेश द्वार पर सुरक्षा जाँच के लिए उपयुक्त तंत्र के अभाव में प्रदान की गई सुरक्षा अपर्याप्त सिद्ध होती है इस कारण संपूर्ण प्रभाग सुरक्षा की दृष्टि अतिसंवेदनशील की श्रेणी में आता है। इसे देखते हुए, मंत्रालय ने सत्यापन के लिए दस्तावेजों का संग्रह/सुपुर्दगी से संबंधित कार्य 5 कंपनियों को आउटसोर्स कर दिया है। दो वर्ष के लिए विदेश मंत्रालय तथा इन 5 कंपनियों के बीच 16 जुलाई, 2012 को समझौते पर हस्ताक्षर किया गया।

प्रत्यर्पण मामले तथा विधिक सहायता

यह मंत्रालय अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद तथा संगठित अपराध, जिसमें वित्तीय धोखाधड़ी तथा मादक द्रव्यों का व्यापार शामिल है, से लड़ने के लिए एक कानूनी तथा संस्थागत ढाँचे की व्यवस्था करने के लिए विभिन्न देशों के साथ द्विपक्षीय करार संपन्न करने के बावत सक्रियता से इस मामले पर कार्यवाई कर रहा है। इन कौंसली करारों में प्रत्यर्पण संधियाँ, आपराधिक मामलों में परस्पर कानूनी

सहायता देना तथा कारावास की सजा काट रहे अपराधियों का स्थानांतरण आदि शामिल है। इस वर्ष के दौरान एक थाई प्रतिनिधिमण्डल ने भारतीय गणराज्य तथा थाईलैंड राज्य के बीच प्रत्यर्पण संधि पर समझौते के लिए 10 सितम्बर से 12 सितम्बर, 2012 तक नई दिल्ली की यात्रा की।

2012 में भारत सरकार को विभिन्न देशों से प्रत्यर्पण के लिए छः अनुरोध प्राप्त हुए— बांग्लादेश (1), यूनाइटेड किंगडम यू.के. (1), संयुक्त राज्य अमेरिका (4) तथा सऊदी अरब (4) एवं संयुक्त अरब अमीरात (85) से 89 भारतीय नागरिकों के संदर्भ में स्थानीय स्तर पर मुकदमा चलाए जाने हेतु भी अनुरोध प्राप्त हुए हैं। भारत सरकार ने बांग्लादेश (1), सऊदी अरब (2), दक्षिण अफ्रीका (1), थाईलैंड (2), संयुक्त अरब अमीरात (1), यूनाइटेड किंगडम (3) तथा संयुक्त राज्य अमेरिका (3) को प्रत्यर्पण के लिए कुल 13 अनुरोध भेजे हैं। इसके अलावा, संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए दो तथा आस्ट्रेलिया के लिए 1 व्यक्ति को प्रत्यर्पित किया गया है। जर्मनी तथा सऊदी अरब प्रत्येक से 1 व्यक्ति को प्रत्यर्पित किया गया।



प्रशासन

प्रशासन प्रभाग को इस मंत्रालय के मुख्यालय तथा विदेश स्थित 180 मिशन/केन्द्रों में विविध कार्यात्मक आवश्यकताओं को इष्टतम रूप से पूरा करने के लिए आवश्यक मानव संसाधन क्षमता का प्रबन्धन करने का कार्य सौंपा गया है। संवर्ग प्रबंधन कार्यों में अन्य बातों के साथ-साथ भर्ती, प्रशिक्षण, तैनाती/स्थानांतरण, प्रतिनियुक्ति, कैरियर प्रगति तथा सेवानिवृत्ति उपरान्त देयताओं का निपटारा शामिल है। यह प्रभाग विदेशों में नए मिशन/केन्द्रों की स्थापना के साथ-साथ कार्मिकों से संबंधित सभी संबद्ध नियमों तथा विनियमों का प्रतिपादन, संशोधन तथा सुधार करने का कार्य भी करता है।

बढ़ते वैश्विक परिदृश्य तथा भारत के साथ आदान प्रदान को ध्यान में रखते हुए आईएफएस संवर्ग में व्यापक विस्तार करने का कार्य वर्ष 2008 से चल रहा है तथा वर्तमान में यह प्रचालन के आधे स्तर पर पहुंच गया है। इस कार्य के वर्ष 2018 तक चलने की संभावना है। इस योजना के अन्तर्गत प्रतिवर्ष विभिन्न स्तरों पर 50 पद शामिल किए जाते हैं तथा मंत्रालय ने इस प्रक्रिया के 5 चरण पहले ही पूरे कर लिए हैं। भारतीय विदेश सेवा “ख” संवर्ग समीक्षा के प्रस्ताव का अनुमोदन वर्ष 2011-12 में कर दिया गया था और इसे तेजी से कार्यान्वित किया गया था। इस प्रस्ताव के कार्यान्वयन से संबंधित अधिकारियों की कैरियर आकांक्षाओं को पूरा करने के अलावा बेहतर एवं शीघ्रतर सेवा सुपुर्दगी की बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

इस मंत्रालय में कर्मचारियों की वर्तमान स्वीकृत संख्या 3962 है, (विवरण के लिए परिशिष्ट IX देखें)। इन पदों पर नियुक्त कार्मिकों की तैनाती भारत तथा विदेश स्थित 180 मिशन/केन्द्रों में की जाती है। इसमें भारतीय विदेश सेवा के अधिकारी, भारतीय विदेश सेवा, शाखा “ख” (आईएफएस “बी”) के कर्मचारी, दुभाषिया संवर्ग, विधि एवं संधि संवर्ग तथा पुस्तकालय संवर्ग शामिल हैं, परन्तु समूह “घ” तथा संवर्ग वाह्य पद शामिल नहीं हैं।

1 अप्रैल से 10 दिसम्बर, 2012 के दौरान सीधी भर्ती, विभागीय पदोन्नति तथा सीमित विभागीय परीक्षा के माध्यम से विभिन्न श्रेणियों में की गई भर्ती परिशिष्ट X की तालिका में दी गई है, जिसमें आरक्षित रिक्तियों पर की गई भर्ती भी शामिल है।

विदेश मंत्रालय ने अपने कार्यकरण की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त प्रशिक्षण तथा भाषा कौशल विकास को हमेशा उच्च प्राथमिकता दी है। इसके परिणामस्वरूप पिछले कई वर्षों के दौरान इस सेवा के भीतर विदेशी भाषा कौशल वाले व्यक्तियों का एक व्यापक तथा बड़ा

पूल सृजित किया गया है, ताकि ये अधिकारी अपने राजनयिक दायित्व प्रभावशाली ढंग से निभा सकें। इस मंत्रालय के अधिकारियों के भाषा कौशल का विवरण परिशिष्ट XI में दिया गया है।

यह मंत्रालय विकलांग व्यक्तियों को भी उचित अवसर प्रदान करने के लिए पूरी तरह वचनबद्ध है, ताकि कार्मिकों में उनका उचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इस मंत्रालय ने भारत सरकार के संबद्ध नियमों के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की निर्धारित विकलांगता वाले व्यक्तियों के लिए उचित पदों की पहचान की है।

वर्ष 2012-13 में, एक नए देश दक्षिणी सूडान के अस्तित्व में आने के साथ ही, वहां के भारतीय केन्द्र का स्तरोन्नयन करके उसे पूर्ण कार्यरत मिशन में परिवर्तित कर दिया गया। भारतीय राजदूत ने हाल ही में अपना कार्यभार संभाला है।

सतर्कता एकक

29 अक्टूबर, 2012 से 3 नवंबर, 2012 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। केन्द्रीय सतर्कता आयोग द्वारा विनिर्धारित शपथ विदेश स्थित सभी भारतीय मिशन/केन्द्रों द्वारा विदेश मंत्रालय में विभिन्न विभागों में दिलाई गई। मंत्रालय ने 1 जनवरी, 2013 से 50 करोड़ तथा अधिक मूल्य के सभी प्रापणों/परियोजनाओं के लिए भावी बोलीदाताओं/विक्रेताओं के साथ संविदापूर्व सत्यनिष्ठा समझौता पर हस्ताक्षर करना प्रारंभ कर दिया है। इस प्रभाग द्वारा इस वर्ष के दौरान निपटाए जा रहे मामलों का ब्यौरा इस प्रकार है:

31 मार्च, 2012 तक लंबित मामलों की संख्या	88
1 अप्रैल, 2012 से 11 जनवरी, 2013 तक की अवधि के दौरान जांच के लिए प्राप्त मामलों की संख्या	32
11 जनवरी, 2013 तक मामलों की कुल संख्या (88+32)	120
1 अप्रैल, 2012 से 11 जनवरी, 2013 तक की अवधि के दौरान औपचारिक दण्ड लगाकर बंद किए गए मामलों की संख्या	5
1 अप्रैल, 2012 से 11 जनवरी, 2013 तक की अवधि के दौरान दण्ड रहित, मौत, वीआरएस आदि के कारण बंद किए गए मामलों की संख्या	36
1 अप्रैल, 2012 से 11 जनवरी, 2013 तक की अवधि के दौरान बंद किए गए मामलों की कुल संख्या	41
11 जनवरी, 2013 तक लंबित मामलों की संख्या (120-44)	79

कल्याण प्रभाग

विदेश स्थित मिशनों/केन्द्रों में तैनात अधिकारियों तथा कर्मचारियों सहित मंत्रालय के सेवारत अधिकारियों तथा स्टॉफ सदस्यों के सामान्य कल्याण से संबंधित सभी मामले कल्याण प्रभाग द्वारा निपटाए जाते हैं।

यह प्रभाग इस मंत्रालय के अधिकारियों के बच्चों का केन्द्रीय विद्यालयों में प्रवेश दिलाने में मदद करता है जहां हर वर्ष 60 सीटें उपलब्ध होती हैं। यह मुख्यालयों के अधिकारियों के बच्चों का सरकारी/निजी स्कूलों तथा भारत में कॉलेजों में चिकित्सा/इंजीनियरिंग/डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में प्रवेश सुनिश्चित करने में मदद करता है। प्रत्येक वर्ष लगभग 79 विद्यार्थी इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों के लिए और लगभग 4-5 चिकित्सा पाठ्यक्रमों के लिए चयनित किए जाते हैं।

यह प्रभाग कर्मचारी लाभ निधि का भी प्रबंधन करता है जिसका निर्माण पिछले अनेक वर्षों के दौरान मंत्रालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से प्राप्त अंशदानों के आधार पर हुआ है। इसका उपयोग मुख्यतः विदेश मंत्रालय के कर्मचारियों की असामयिक मृत्यु की स्थिति में दाह संस्कार पर होने वाले व्यय को पूरा करने के लिए किया जाता है। यह प्रभाग विदेशों में तैनाती के दौरान मृत्यु हो जाने की स्थिति में कार्मिक के मृतक शरीर के अंतिम संस्कार के लिए संभारतंत्रीय व्यवस्थाओं में परिवार के सदस्यों की सहायता भी करता है। यह प्रभाग परिवार के जीवित सदस्यों की वित्तीय स्थिति की जांच भी करता है और कार्मिक तथा प्रशिक्षण विभाग द्वारा नियत किए गए दिशानिर्देशों के अनुरूप समूह-“ग” अथवा समूह-“घ” पदों पर अनुकंपा के आधार पर भर्ती के लिए मामलों पर कार्रवाई करता है।

कल्याण प्रभाग विदेश स्थित सभी भारतीय मिशनों एवं भारत के सभी क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालयों में मनोरंजन सुविधाओं एवं खेल संबंधी गतिविधियों के लिए सहायता अनुदान को प्रशासित करता है। यह प्रभाग प्रत्येक वर्ष अंतर्मंत्रालयी खेल गतिविधियों का वित्तपोषण भी करता है। यह रेडक्रास दिवस, सांप्रदायिक सद्भाव दिवस, कर्मचारी लाभ निधि, झण्डा दिवस आदि जैसे कार्यक्रमों को मनाए जाने के लिए व्यवस्था करता है और इसके लिए निधियां एकत्र करता है।

कल्याण प्रभाग साउथ ब्लॉक, जवाहरलाल नेहरू भवन तथा पटियाला हाउस में स्थित मंत्रालय के कैंटीनों को भी प्रशासित करता है।

स्थापना

जवाहर लाल नेहरू भवन का निर्माण कार्य पूरा होने के बाद मंत्रालय के अकबर भवन स्थित कार्यालय इस भवन में स्थानांतरित कर दिए गए हैं। इसके अलावा साउथ ब्लॉक, आईएसआईएल भवन और शास्त्री भवन के कुछ कार्यालयों को भी जेएनबी में स्थान दे दिया गया है। जेएनबी में अवस्थित कार्यालयों के सुचारु कार्यकरण के लिए मंत्रालय के अपेक्षाओं के अनुरूप उपयुक्त फर्नीसिंग, कार्यालय उपकरणों तथा विभिन्न विद्युत तथा संचार उपकरण स्थापित कर दिए गए हैं। इस भवन में स्थित सम्मेलन तथा मीडिया कक्ष की

सुविधा का भी उपयोग नियमित तौर पर न केवल मंत्रालय की आंतरिक बैठकों बल्कि विदेशी प्रतिनिधिमंडलों की भागीदारी से मंत्रालय द्वारा आयोजित सम्मेलनों/बैठकों के लिए भी उपयोग में लाया जा रहा है।

इस मंत्रालय के ओडीए समिति के अनुमोदन से अशोक की 12वीं गिरनार की राजाज्ञा की प्रतिमूर्ति, जवाहर लाल नेहरू की आवक्ष प्रतिमा, संगमरमर के दीपों, भारतीय भाषा वर्णमाला वृक्ष, धातु निर्मित मयूर, बौद्ध की लकड़ी की प्रतिमा तथा विश्व मानचित्र सहित लकड़ी की जाली, ढोकरा पेड़ों सहित दीवार पर भित्तिचित्र, दीवारों पर तितली एवं जीव जन्तुओं के विषयों पर भित्तिचित्र, पत्थर की टहनियों एवं टाईटेनियम पंखुडियों के कमल के फूल जेएनबी में स्थापित कर दिए गए हैं।

चाणक्यपुरी तथा द्वारका स्थित मंत्रालय के भवन परिसरों के रहनसहन की स्थिति को इस स्थान में लैण्डस्केप तथा अन्य सुविधाओं की उपयुक्त तथा नियमित रखरखाव के माध्यम से उन्नत बनाया गया। चाणक्यपुरी परिसर के बहुदेशीय हाल को मंत्रालय के सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ-साथ इन परिसरों के निवासियों के कार्यकलापों के लिए भी नियमित रूप से उपयोग किया गया है। एक जीमखाना भी बहुदेशीय हॉल (विस्तार) में स्थापित किया गया है तथा मौजूदा बहुदेशीय हॉल के ऊपर एक अन्य मंजिल के निर्माण की संभावनाओं का पता लगाया जा रहा है। मंत्रालय ने विदेश मंत्रालय के पदाधिकारियों तथा उनके परिवारों को भारत का यूनिक आईडेंटिफिकेशन कार्ड जारी करने के लिए चाणक्यपुरी रिहायशी परिसर में जनगणना पदाधिकारियों के एक कैम्प के आयोजन में सहायता दी।

के.जी. मार्ग तथा आरके आश्रम मार्ग पर मंत्रालय के हॉस्टल आवास में सुविधाओं के उन्नयन तथा विकास के प्रयास किए गए हैं। के. जी. मार्ग पर विदेश मंत्रालय के हॉस्टल में आंतरिक स्थलों के साथ-साथ बड़े सिविल कार्या को प्रारंभ करने के लिए एनबीसीसी की सेवाओं का उपयोग किया गया है। सीपीडब्ल्यूडी ए ब्लॉक में अवस्थित मकानों के आंतरिक स्थलों के उन्नयन के कार्य को पूरा करने की प्रक्रिया में है और इसके द्वारा हॉस्टल के बाह्य स्थलों तथा रेट्रोफिटिंग कार्य को मजबूत करने के लिए कार्य प्रारंभ करने की आशा है।

दोनों रिहायशी परिसर लगभग पूरी तरह से भर चुके हैं। यहां तक कि दोनो हॉस्टलों में रहने वालों की संख्या काफी अधिक है। आईएफएस प्रोबेशनरों के नए बैचों के आकार में वृद्धि के साथ ही केजी मार्ग स्थित हॉस्टल सुविधाओं का उपयोग आईएफएस प्रोबेशनरों को रखने के लिए भी उपयोग में लाया जा रहा है।

विदेशों में तैनात भारत में रहने वाले पदाधिकारियों के लिए बेहतर रिहायशी आवास को किराए पर लेने में मदद करने के लिए अनेक मिशनों/केन्द्रों में किराए की सीमा संशोधित कर दी गई है और विदेश में संपत्तियों को किराए पर लेने के प्रस्तावों पर तेजी से कार्रवाई की गई।

विदेशी भत्ते की 15वीं वार्षिक समीक्षा के लिए विदेश मंत्रालय और वित्त मंत्रालय के एक संयुक्त दल के न्यूयार्क का दौरा हाल ही में करने की संभावना है। करेंसी के उतार-चढ़ाव की वेगरिज से विदेशों में कार्यरत कर्मचारियों की सुरक्षा के लिए विदेशों में परिलब्धियों के भुगतान के लिए नकद करेंसी के अतिरिक्त अन्य विकल्पों पर कार्यवाई की जा रही है। लीबिया और सीरिया में तैनात भारतीय अधिकारियों को हार्डशीप भत्ते के भुगतान के लिए प्रस्ताव मंत्रालय में विचाराधीन है।

परियोजना प्रभाग

वर्ष 2012-13 के दौरान इस प्रभाग ने चांसरी/आवासों के रूप में उपयोग के लिए विदेशों में सम्पत्तियों का निर्माण तथा अधिग्रहण जारी रखा। विश्व भर के रियल स्टेट संपत्ति के गिरते मूल्यों ने विदेशों में सम्पत्तियां अर्जित करने के अनेक अवसर प्रस्तुत किए हैं। अटलांटा के एक निर्मित सम्पत्ति चांसरी के लिए अधिग्रहित की गई और आवासीय परिसर के निर्माण के लिए बैंकाक में एक भूखण्ड खरीदा गया। ठोस प्रयासों के माध्यम से ब्राजीलिया, अबुजा, इस्लामाबाद, ढाका तथा काठमांडु में चल रही चांसरी/आवासीय परिसर निर्माण परियोजनाओं में अत्यधिक प्रगति की गई। इस प्रभाग ने निविदा आमंत्रित करने की प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूरी कर लेने के बाद वार्सा में चांसरी-सह-आवास निर्माण परियोजना के लिए ठेके प्रदान किए।

किराए की देयता को कम करने के दृष्टिकोण से इस प्रभाग ने यथासंभव अधिक-से-अधिक स्टेशनों पर निर्मित सम्पत्ति का अधिग्रहण करने की रणनीति अपनाई है और इस कार्य में उन स्टेशनों को प्राथमिकता प्रदान की गई है जहां किराए का खर्च विशेष रूप से अधिक है। विश्व के विभिन्न भागों में व्याप्त रियल स्टेट कीमतों में आई कमी के अवसर का लाभ उठाने की दृष्टि से अधिग्रहण हेतु उपयुक्त सम्पत्तियों का पता लगाने के लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। वर्तमान में भारत सरकार के पास विदेश स्थित 79 स्टेशनों पर 84 चांसरी भवन, विदेशों में मिशनों/केन्द्रों के प्रमुखों के लिए आवास और अधिकारियों तथा स्टॉफ के लिए लगभग 640

आवास हैं। इसके अलावा, सरकार के पास 2 स्टेशनों पर सांस्कृतिक केन्द्रों के लिए और एक सम्पर्क अधिकारी के लिए सम्पत्तियां हैं।

इस वर्ष की मुख्य बात यह रही कि विदेश मंत्रालय के कार्यालयों को किराए के अकबर भवन परिसर से नई दिल्ली में नवनिर्मित जवाहर लाल नेहरू भवन में स्थानान्तरित कर दिया गया है।

इस प्रभाग ने विभिन्न निर्माण /पुनर्निर्माण परियोजनाओं की प्रगति का गहन अनुवीक्षण यह सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जारी रखा कि उसका प्रारंभ, समापन शीघ्र ही हो सके। विदेशों की परियोजनाओं में से अबुजा, अदीसअबाबा, बहरीन, बैंकाक, बर्लिन, ब्राजीलिया, ब्रुनेई, दारे सलाम, ढाका, दोहा, इस्लामाबाद, गैबरोन, काबुल, काठमांडू, खारतुम, क्वालालंपुर, मारीशस, निकोशिया, ओस्लो, पेरिस, पोर्टलुईस (चांसरी), पोर्टलुईस (विश्व हिन्दी सचिवालय), डब्ल्यूएचएस, पोर्ट ऑफ स्पेन, सेंटियागो, सिंगापुर, ताशकंद, वार्सा और वेलिंगटन शामिल हैं और उन स्थानों पर परामर्शदाता की नियुक्ति, वास्तुकला आरेखन की तैयारी तथा चालू निर्माण कार्य संबंधी निविदाओं को अंतिम रूप दिया जा रहा है। हांगकांग में बड़े पैमाने पर मरम्मत, हेलसिंकी में दूतावास के लिए आवास तथा क्वालालंपुर में अधिकारियों के लिए आवासीय अपार्टमेंट्स (पुत्री अपार्टमेंट्स) के निर्माण का कार्य पूरा कर लिया गया है और पेरिस में चांसरी एनेक्सी नवीकरण कार्य लगभग पूरा होने वाला है। सिंगापुर और ओस्लो में सम्पत्तियों के पुनर्विकास के लिए कार्यवाही विकसित करने में उल्लेखनीय प्रगति हासिल की गई है।

मंत्रालय ने विश्व के विभिन्न देशों में निर्मित सम्पत्तियों के अधिग्रहण के ठोस प्रयास करना जारी रखा और पिछले एक वर्ष में उल्लेखनीय अधिग्रहण में अटलांटा (चांसरी), बैंकाक (आवास के लिए भूखण्ड) और येरेवन (चांसरी) शामिल है।

चल रही विभिन्न निर्माण परियोजनाओं के साथ-साथ वास्तुशिल्पीय आरेखन तैयार करने, परियोजना की लागत का अनुमान करने, कार्य आबंटित करने के लिए पूर्व अहंता तथा टेंडर आमंत्रित करने, चल रहे लेखा बिलों की जांच आदि की मॉनिटरिंग को सुदृढ़ करने के लिए इस प्रभाग ने सीपीडब्ल्यूडी से प्रतिनियुक्त लोगों से अपनी तकनीकी कक्ष को सुदृढ़ किया है।



मंत्रालय ने सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के पूर्ण कार्यान्वयन के प्रयासों को जारी रखा। मंत्रालय में प्राप्त आवेदनों पर अधिनियम के प्रावधानों के अनुरूप कार्रवाई की गई। मंत्रालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के बीच इन अधिनियमों की बेहतर समझ को बढ़ावा देने के लिए अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए संपर्क सत्र का आयोजन किया गया।

1 अप्रैल – 31 दिसंबर, 2012 की अवधि के दौरान सूचना का अधिकार अधिनियम के तहत, सूचना प्राप्त करने हेतु कुल 1410 आवेदन मंत्रालय के आरटीआई सेल में प्राप्त हुए। आवेदनों में पूछे जाने वाले विषयों में विदेशों से संबंध, प्रशासनिक मामले, हज यात्रा तथा द्विपक्षीय दौरों तथा उनपर होनेवाले खर्च शामिल थे। सीपीवी प्रभाग, विदेश स्थित मिशन/केन्द्रों, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) और भारतीय विश्व कार्य परिषद (आईसीडब्ल्यूए) इस अधिनियम के तहत लोक

प्राधिकरण के रूप में अपने-अपने रिकार्ड खुद रखते हैं। मंत्रालय ने कार्मिक तथा प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) की संस्तुतियों को कार्यान्वित किया है और सूचना का अधिकार आवेदनों की प्राप्ति तथा निपटान को दुरुस्त करने के लिए एक आरटीआई सेल की स्थापना की गई है। इस सेल के साथ-साथ मंत्रालय के विभिन्न प्रभागों में जन सूचना अधिकारी (पीआईओज) और प्रथम अपीलीय प्राधिकारी (एफएएज) इन आवेदनों पर समय से कार्रवाई कर रहे हैं।

मंत्रालय के अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच इस अधिनियम की बेहतर समझ को बढ़ावा देने के लिए और साथ ही पीआईओज को आवेदन पर अधिक प्रभावी ढंग से कार्रवाई करने में सक्षम बनाने हेतु आरटीआई अधिनियम, 2005 के विशेषज्ञों के साथ अनेक संपर्क सत्रों का आयोजन किया गया। इस वर्ष के दौरान ऐसे और भी सत्र आयोजित किए जाएंगे।



विवेच्य वर्ष के दौरान, भारत में इंटरनेट अभिशासन से संबंधित मुद्दों, जिनमें साइबर सुरक्षा, साइबर अपराध, मानवाधिकार, ऑनलाइन तथा अंतर्राष्ट्रीय संचार विनियम शामिल हैं, ने अधिक ध्यान आकर्षित किया। भारत ने अंतर्राष्ट्रीय सूचना सुरक्षा पर संयुक्त राष्ट्र के सरकारी विशेषज्ञों के समूह में भाग लिया। इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र, इंग्लैण्ड तथा जापान के साथ अंतर्राष्ट्रीय साइबर मामलों पर द्विपक्षीय बातचीत को संस्थानिक रूप दिया गया। भारत ने साइबर सुरक्षा और साइबर अपराध पर यूरोपीय संघ के साथ परामर्श का दूसरा दौर भी किया। इन वार्तालापों से इन क्षेत्रों में सहयोग के ठोस क्षेत्रों की बेहतर समझ और पहचान में सहायता मिली। 8 नवंबर, 2012 को इंग्लैण्ड के विदेश सचिव श्री विलियम हेग की भारत यात्रा के दौरान इंग्लैण्ड के साथ द्विपक्षीय वार्तालाप के बाद साइबर मुद्दों पर एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया। भारत ने इंटरनेट पर मानवाधिकारों के संवर्धन सुरक्षा तथा उपयोग पर संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद संकल्प का सह-प्रायोजन भी किया। इंटरनेट अभिशासन के संबंध में अधिकाधिक सहयोग के बारे में इन्फारमेशन सोसाइटी अधिदेश विषयक विश्व शिखर

सम्मेलन की अनुशंसाओं पर विचार करने और उनके कार्यान्वयन के लिए अधिकाधिक सहयोग संबंधी विकास कार्यसंचालन समूह के लिए एक विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी आयोग का गठन करने के बारे में भारत के प्रस्ताव को संयुक्त राष्ट्र महासभा के 67वें सत्र में अंगीकृत कर लिया गया।

गृह मंत्रालय की अगुवाई में प्रव्रजन, वीजा और विदेशियों के पंजीकरण और उसपर नजर रखने संबंधी परियोजना (आईवीएफआरटी) का कार्यान्वयन 108 मिशनों/केन्द्रों में किया गया जिससे ऐसी सुविधा प्रारंभ किए जानेवाले मिशनों/केन्द्रों की कुल संख्या बढ़कर 130 हो गई। समेकित मिशन एकाउन्टिंग साफ्टवेयर (आईमास) साफ्टवेयर 7 मिशनों/केन्द्रों में लागू किया गया जिससे ऐसे मिशनों/केन्द्रों की कुल संख्या बढ़कर 179 हो गई। वीजा/पासपोर्ट/कोंसली सेवाओं के आउटसोर्सिंग को 10 मिशनों (पर्थ, बहरीन, हॉगकांग, एथेंस, तेलअबीब, काठमांडू, मनीला, वासा, चींगमई तथा एडेनबर्ग) में पूरा किया गया जिससे ऐसे मिशनों/केन्द्रों की कुल संख्या बढ़कर 73 हो गई।



समन्वय प्रभाग प्रश्न-उत्तर, आश्वासनों, विदेशों से संबंध पर चर्चा आदि सहित संसद से संबंधित सभी काम के लिए विदेश मंत्रालय के नोडल केन्द्र के रूप में काम करता है। यह प्रभाग विदेश मंत्रालय की परामर्शदात्री समिति की बैठकें आयोजित करने और विदेश मंत्रालय की स्थायी संसदीय समिति और अन्य संसदीय समितियों से संबंधित कामों का समन्वयन करने के लिए उत्तरदायी है।

समन्वय प्रभाग राज्यों के राज्यपालों, लोक सभा के अध्यक्ष, राज्य सभा के उप सभापति केन्द्रीय मंत्रियों, राज्य सरकारों के मंत्रियों, संसद सदस्यों, राज्य विधान सभाओं के सदस्यों, न्यायपालिका के सदस्यों, सरकारी पदाधिकारियों आदि की विदेश यात्राओं के लिए सभी प्रस्तावों पर राजनीतिक दृष्टि से अनापत्ति प्रदान करने की कार्यवाही करता है। विदेश मंत्रालय द्वारा राजनीतिक अनापत्ति समय समय पर इस प्रयोजन के लिए सरकार द्वारा बनाए गए दिशानिर्देशों, दौरे के राजनीतिक तथा कार्यात्मक औचित्य, आयोजित की गई बैठकें और संबंधित भारतीय मिशनों/केंद्रों की संस्तुतियों को ध्यान में रखकर दी जाती है। अप्रैल-दिसंबर, 2012 के दौरान, समन्वय अनुभाग ने ऐसे दौरों के लिए 1959 राजनीतिक अनापत्तियां जारी की।

अनुभाग विदेशी गैर-अनुसूचित उड़ानों तथा राजनयिक उड़ानों और नौसैनिक जहाजों से यात्राओं के लिए राजनयिक अनापत्तियां प्रदान करने से संबंधित कार्यों को भी देखता है। अप्रैल -दिसंबर, 2012 के दौरान, प्रभाग ने विदेशी गैर-अनुसूचित उड़ानों के लिए 788 अनापत्तियां और विदेशी नौसैनिक जहाजों की यात्राओं के लिए 21 राजनीतिक अनापत्तियां जारी कीं।

समन्वय अनुभाग ने विदेशों में अंतर्राष्ट्रीय खेल समारोहों में भारतीय खिलाड़ियों और खेल-कूद टीमों की भागीदारी के लिए और विदेशी खिलाड़ियों/टीमों की भारत यात्रा के लिए अनुमोदन प्रदान करने की कार्यवाही की। ऐसे 134 मामलों पर अनापत्ति के लिए कार्यवाही की गई थी।

यह अनुभाग अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, संगोष्ठियां, कार्यशालाएं आयोजित करने, भारतीय टेलिग्राफ अधिनियम, 1885 के तहत एमेच्योर डब्ल्यू/टी लाइसेंस प्रदान करने, विदेशों में स्थित भारत विदेश सांस्कृतिक मैत्री और सांस्कृतिक सोसाइटियों के लिए सहायता अनुदान के लिए अनापत्ति देने के अनुरोधों की भी जांच करता है। अप्रैल-दिसंबर, 2012 के दौरान, इस प्रभाग ने भारत में 834 सम्मेलनों/सेमिनारों आदि के लिए अनापत्ति जारी की। इसके अलावा, प्रशिक्षण/अनुसंधान के लिए भारत आने वाले विदेशी विद्वानों के दौरों के 101 अनुरोधों पर कार्यवाही की गई थी।

समन्वय अनुभाग विदेशी राष्ट्रों को पद्म अवार्ड प्रदान करने से संबंधित कार्यों का समन्वय करता है। समन्वय अनुभाग द्वारा विदेश स्थित भारतीय मिशनों/केंद्रों से नामांकन प्राप्त किया जाता है और मंत्रालय की सिफारिशों से गृह मंत्रालय को अवगत कराया जाता है।

समन्वय प्रभाग द्वारा मंत्रालय और विदेश स्थित मिशनों/केंद्रों में आतंकवाद विरोधी दिवस (21 मई), सदभावना दिवस (20 अगस्त) और कौमी एकता सप्ताह दिवस (19-25 नवंबर) भी मनाया जाता है; मुख्यालय में और विदेश स्थित मिशनों/केंद्रों, दोनों स्थानों पर अधिकारियों को शपथ दिलाई गयी थी।

शिक्षा अनुभाग

शिक्षा अनुभाग इस मंत्रालय को क्रमशः स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आबंटित सीटों पर स्व-वित्तपोषित विदेशी छात्र योजना के अंतर्गत एमबीबीएस/बीडीएस/बीई/बी.फार्मेसी और भारत की विभिन्न संस्थाओं से डिप्लोमा पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए 63 मित्र, पड़ोसी एवं विकासशील देशों से विदेशी छात्रों के चयन, नामांकन और प्रवेश के संबंध में कार्यवाही करता है। शिक्षा अनुभाग द्वारा विभिन्न चिकित्सा संस्थाओं और शोध पाठ्यक्रमों में चयनात्मक प्रशिक्षण/इंटर्नशिप सहित इंजीनियरी, चिकित्सा, प्रबंधन, अन्य तकनीकी एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के स्नातक एवं परा-स्नातक पाठ्यक्रमों में प्रवेश चाहने वाले विदेशी छात्रों को राजनीतिक दृष्टिकोण से अनापत्ति प्रदान करने की भी कार्यवाही की जाती है।

शैक्षिक वर्ष 2012-2013 के दौरान शिक्षा अनुभाग में विदेशी नागरिकों के प्राप्त संसाधित आवेदनों के ब्यौरे नीचे दिए गए हैं -

शैक्षिक वर्ष 2012-13 के दौरान एमबीबीएस/बीडीएस में प्रवेश के लिए 87 आवेदन प्राप्त हुए थे और 25 एमबीबीएस/बीडीएस सीटें विकासशील/पड़ोसी देशों के अभ्यर्थियों को प्रदान की गई थी।

शैक्षिक वर्ष 2012-13 के दौरान बीई और बी-फार्मेसी पाठ्यक्रमों के लिए 85 आवेदन प्राप्त हुए थे और 64 पात्र अभ्यर्थियों को सीटें दी गई थीं।

चिकित्सा विज्ञान संस्थान, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में स्नातकोत्तर चिकित्सा पाठ्यक्रमों के लिए 5 सीटें प्रदान की गई थीं।

अप्रैल से नवंबर, 2012 की अवधि के दौरान, 1669 विदेशी छात्रों को भारत में विभिन्न पाठ्यक्रमों के अध्ययन के लिए अनापत्ति प्रदान की गई थी।



विदेश मंत्रालय के विदेश प्रचार विभाग को मीडिया से संबंधित कार्य करने के लिए नामित किया गया है। यह विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर भारत सरकार के विचारों/स्थिति को स्पष्ट करता है। हमारी विदेश नीति के उद्देश्यों को पूरा करने में हासिल की गई उपलब्धियों और सफलताओं का राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में प्रचार-प्रसार करता है तथा भारत के निकट तथा दूर के पड़ोसियों के साथ भारत के संबंधों पर सूचनाओं का प्रचार-प्रसार करता है। इस कार्य को अति-विशिष्ट व्यक्तियों के दौरों की प्रेस कवरेज को सुविधाजनक बनाकर, मीडिया के लिए नियमित तथा विशेष संक्षिप्त टिप्पणियों तथा पृष्ठभूमि वार्तालापों का आयोजन करके प्रेस विज्ञप्तियों और टिप्पणियों को जारी करके और विदेशी पत्रकारों के परिचय यात्राओं का आयोजन करके किया जाता है। वर्ष के दौरान इस प्रभाग ने मंत्रालय का नया वेब पोर्टल लांच किया और विभिन्न मीडिया मंचों पर उपस्थिति दर्ज की जिसका उद्देश्य अधिक से अधिक श्रोताओं तक पहुंचना और भारत की विदेश नीति के सार्वजनिक प्रचार-प्रसार में अधिक सक्रियता से समुदाय के साथ ऑनलाइन भागीदारी में संलग्न होना है।

भारत के गणमान्य लोगों के विदेश दौरों की प्रेस कवरेज

इस प्रभाग द्वारा दौरों का उपयुक्त मीडिया कवरेज सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधान मंत्री एवं विदेश मंत्री के विदेशी दौरों पर उनके साथ जाने वाले मीडिया के लिए सभी संभारतंत्रीय व्यवस्थाएं की जाती हैं जिसमें पूर्णतः सुसज्जित मीडिया केंद्रों की स्थापना एवं प्रचालन, मीडिया ब्रीफिंग एवं अन्य सुविधाएं शामिल हैं। इस प्रभाग ने राष्ट्रपति के साथ सेशेल्स तथा दक्षिण अफ्रीका जाने वाले प्रतिनिधिमंडलों तथा प्रधान मंत्री के साथ ब्राजील (रियो + 20), कम्बोडिया (आसियान शिखर सम्मेलन तथा पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन), लोस काबोस – मेक्सिको (जी 20 शिखर सम्मेलन), म्यांमा और तेहरान (नाम शिखर सम्मेलन) में साथ जाने वाले मीडिया प्रतिनिधिमंडलों को भेजने में सहायता की। वर्ष के दौरान विभिन्न अवसरों पर विदेश मंत्री द्वारा दिए गए भाषणों तथा वक्तव्यों, जिनमें बुनई, दारुसलाम, कम्बोडिया, चीन, क्यूबा, जापान, लाओ पीडीआर, मारिशस, पाकिस्तान, रूस, स्पेन, ताजिकिस्तान और अमरीका की यात्राओं के दौरान दिए गए भाषण प्रमुख हैं, का प्रचार-प्रसार करके विदेश नीति के परिदृश्य में किए गए प्रयासों के महत्वपूर्ण क्षेत्रों को भी उजागर किया गया। दिसंबर, 2012 में विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद की पहली म्यांमा यात्रा और उप राष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी की जनवरी, 2013 में वियतनाम यात्रा के दौरान भी मीडिया प्रतिनिधिमंडल साथ गया।

भारत आने वाले अति विशिष्ट व्यक्तियों के दौरों की प्रेस कवरेज

वर्ष के दौरान अनेक उच्च-स्तरीय यात्राओं में स्पष्ट बढ़ोत्तरी अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ भारत के सुदृढ़ सम्पर्क का साक्ष्य बना। इनमें से उल्लेखनीय दौरे थे – स्पेन के राजा, अफगानिस्तान, बुरुन्डी, मालदीव, फिलिस्तीन, श्रीलंका, तजाकिस्तान के राष्ट्रपतियों, आस्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री, बहरीन के युवराज, संयुक्त राष्ट्र महासचिव, बेलजियम अधिराज के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री, रूस के उप प्रधानमंत्री, अफगानिस्तान के विदेश मंत्री, कनाडा के विदेश मंत्री, चिली के विदेश मंत्री, ईरान के विदेश मंत्री, मालदीव के विदेश मंत्री, मॉरीशस के विदेश मंत्री, मॉन्टेनिग्रो के विदेश मंत्री, संयुक्त राज्य अमरीका के विदेश मंत्री, बेनेजूएला के विदेश मंत्री, क्यूबा के उप विदेश मंत्री, पेरू के उप विदेश मंत्री, इंग्लैण्ड के विदेश तथा राष्ट्रमंडल मामले मंत्री, पाकिस्तान के विदेश सचिव, और डाओ आनसौन सू की, अध्यक्ष, म्यांमा संघीय गणराज्य की राष्ट्रीय लोकतांत्रिक लीग। भारत का दौरा करने वाले विशिष्ट व्यक्तियों के साथ संयुक्त प्रेस सम्मेलनों का आयोजन किया गया और साथ आने वाले मीडिया तथा भारत स्थित विदेशी मीडिया को इन दौरों के उपयुक्त कवरेज प्रदान करने में सहायता दी गई। इस प्रभाग ने इस वर्ष के दौरान मेकोंग गंगा सहयोग बैठक तथा 12वें आईओआर-एआरसी मंत्रियों की परिषद की बैठक के सफल आयोजन तथा कवरेज में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रभाग ने उच्च स्तरीय विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा भारत की यात्राओं की मीडिया कवरेज सुनिश्चित करना जारी रखा जिनमें मॉरीशस, नेपाल, रूस तथा यूक्रेन के राष्ट्रपतियों के दौरे शामिल थे। इस अवधि के दौरान भारत के दौरे पर आने वाले अन्य महत्वपूर्ण विशिष्ट गणमान्य व्यक्ति अफगानिस्तान के खान मंत्री, पाकिस्तान सीनेट के अध्यक्ष और शरणार्थियों के संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त तथा पुर्तगाल के पूर्व प्रधान मंत्री थे। इस प्रभाग ने दिसंबर, 2012 के दौरान नई दिल्ली में सम्पन्न आसियान भारत यादगार शिखर सम्मेलन की मीडिया कवरेज के कार्य में भी सहयोग किया।

सरकारी प्रवक्ता का कार्यालय

सरकारी प्रवक्ता के कार्यालय ने भारत की विदेश नीति के संचालन से संबंधित रोजमर्रा के घटनाक्रमों पर सूचना के प्रसार के लिए केंद्र के रूप में काम किया। इस कार्यालय ने प्रमुख घटनाक्रमों पर नियमित ब्रीफिंग का आयोजन करके पूरे वर्ष के दौरान भारतीय एवं विदेशी मीडिया के साथ संपर्क स्थापित किया जिनका भारत की विदेश नीति, आवक एवं जावक उच्च स्तरीय दौरों तथा रोजमर्रा के

महत्वपूर्ण घटनाक्रमों से सरोकार था। वर्ष के दौरान, इस प्रभाग द्वारा 221 प्रेस विज्ञप्ति, 129 प्रेस वार्ता, 32 संयुक्त प्रेस वक्तव्य तथा 76 मीडिया एडवाइजरी जारी की गई।

मीडिया से जुड़े व्यक्तियों को पृष्ठभूमि संबंधी ब्रीफिंग उपलब्ध कराकर विभिन्न महत्वपूर्ण मुद्दों पर भारत सरकार के दृष्टिकोण एवं परिप्रेक्ष्य का संप्रेषण करने के लिए निरंतर प्रयास किए गए। भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समाचार पत्रों एवं टीवी चैनलों के साथ प्रधान मंत्री, विदेश मंत्री तथा अन्य गणमान्य लोगों के साक्षात्कार की व्यवस्था की गई। इन साक्षात्कारों की प्रतिलिपियां मंत्रालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

इस वर्ष के दौरान मंत्रालय ने अपने यू-ट्यूब चैनल <http://www.youtube.com/user/meaIndia> पर मीडिया सम्पर्कों का लाइव स्ट्रीमिंग भी प्रारंभ किया। संयुक्त प्रेस सम्मेलनों तथा राजकीय यात्राओं के दौरान हैदराबाद हाउस में आयोजित होने वाले संयुक्त प्रेस सम्मेलनों तथा करार पर हस्ताक्षर के समारोहों जैसे सभी मीडिया कार्यक्रमों के वीडियो भी यु-ट्यूब पर अपलोड किया गया तथा <http://www.facebook.com/MEAINDIA> पर उपलब्ध कराया गया।

विदेश मंत्रालय की वेबसाइट

विदेश मंत्रालय की वेबसाइट <http://mea.gov.in/> भारत सरकार के सर्वाधिक व्यापक रूप से देखे जाने वाले वेबसाइटों में से एक है और यह इस प्रभाग के प्रचार-प्रसार प्रयासों में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। 25 सितंबर, 2012 को मंत्रालय के नए नवीकृत वेब पोर्टल का प्रारंभ किया गया जिसमें विविध प्रकार से उपयोगकर्ताओं के अनुभवों को बढ़ाने के उद्देश्य से अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों तथा वास्तुशिल्पीय विशेषताओं का समावेश किया गया है। वेबसाइट के प्रेस अनुभाग को वास्तविक समय आधार पर प्रधान मंत्री, मंत्रियों, प्रेस रिलिजों, सरकारी प्रवक्ताओं और अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों की संक्षिप्त टिप्पणियों द्वारा विदेश नीति पर भाषणों/साक्षात्कारों/विवरणों से अद्यतन बनाया जाता है। इस वर्ष से प्रारंभ करके, वीडियो ब्रीफिंग भी वेब पोर्टल पर अपलोड किए जा रहे हैं।

सामाजिक मीडिया मंच

प्रौद्योगिकी विकासों के साथ-साथ चलने तथा देश व विदेशों में व्यापक श्रोताओं तक पहुंच बनाने के लिए मंत्रालय ने अपना यु-ट्यूब चैनल <http://www.youtube.com/user/meaIndia>, फेसबुक पेज <http://www.facebook.com/MEA/INDIA>, फ्लिकर <http://www.flickr.com/photos/meaIndia>, और गुगल प्लस पेज सूचना <http://plus.google.com/u/0/103329416703761384109> सफलतापूर्वक प्रारंभ किया। बाहर यात्रा पर जाने वाले तथा भारत की यात्रा पर आने वाले अतिविशिष्ट व्यक्तियों के दौरों तथा मंत्रालय के अन्य कार्यक्रमों से संबंधित वीडियो तथा फोटो तथा अन्य संबंधित दस्तावेजों को इन मंचों पर लगभग वास्तविक समय आधार पर प्रचारित किया जाता है और इन

प्रयासों ने पहले ही यथार्थ मीडिया पर एक व्यापक दर्शक समूह जुटा लिया है।

हिन्दी, ऊर्दू एवं अरबी वेबसाइट

वेबसाइट के हिन्दी खंड को नियमित रूप से अद्यतन किया जा रहा है। आम जनता के साथ-साथ भारतीय मीडिया के प्रतिनिधि भी हिन्दी वेबसाइट की सराहना कर रहे हैं। विदेश प्रचार प्रभाग ने अब ए एन आई के साथ वेबसाइट के ऊर्दू एवं अरबी में अनुवाद की भी व्यवस्था की है। इन साइटों को भारत में एवं हमारे पड़ोसी देशों में ऊर्दू मीडिया के साथ-साथ अरबी भाषी देशों द्वारा बड़े पैमाने पर अक्सेस किया जाता है।

भारत - अफ्रीका सम्पर्क वेबसाइट

विदेश प्रचार प्रभाग और आईएनएस द्वारा संयुक्त रूप से विकसित भारत - अफ्रीका सम्पर्क वेबसाइट भारत एवं अफ्रीकी देशों के बीच संबंधों को बढ़ावा देने के प्रति समर्पित है। इस वेबसाइट पर विकास सहयोग पर विशेष बल के साथ भारत एवं अफ्रीका पर समाचार, लेख एवं आवश्यक सूचनाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। इस वेबसाइट को www.indiaafricaconnect.in पर अक्सेस किया जा सकता है तथा इसे दैनिक आधार पर अद्यतन किया जा रहा है।

विदेशी पत्रकारों की परिचय यात्रा

विदेशी मीडिया में भारत का बेहतर और समकालीन चित्रण प्रस्तुत करने के लिए भारत में विदेशी पत्रकारों की परिचय यात्रा इस प्रभाग के प्रयासों का मुख्य घटक है क्योंकि ये पत्रकार भारत की राजनीति, विदेश नीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में होने वाले विकास के बारे में अद्वितीय, प्रत्यक्ष प्रभाव की जानकारी प्राप्त करते हैं।

मंत्रियों, वरिष्ठ अधिकारियों, शिक्षाविदों और व्यापारिक प्रतिनिधियों के साथ भी यात्रा पर आए इन पत्रकारों की बैठकें आयोजित की गईं। इस वर्ष के दौरान भारत के पड़ोसी देशों के पत्रकारों सहित विश्व के विभिन्न भागों के 50 देशों से लगभग 189 विदेशी पत्रकारों को भारत आमंत्रित किया गया। इनमें कोत दीव्वार, बेलिज़, ब्राज़ील, बुरुन्डी, कैमरून, चीन, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, कांगो गणराज्य, क्यूबा, इरीट्रिया, इथियोपिया, घाना, ग्वाटेमाला, इंडोनेशिया, ईरान, केनिया, कोरिया गणराज्य, कुवैत, लेबनान, मेडागास्कर, मलेशिया, मॉरिशस, मेक्सिको, मोजाम्बिक, म्यांमा, नीदरलैंड, नाइजीरिया, ओमान, पनामा, फिलिपींस, सिएरा लियोन, सेनेगल, सेशेल्स, सिंगापुर, दक्षिणी सुडान, तंजानिया, थाईलैण्ड, यूएई, बेनेजुएला तथा जिम्बाबे के वरिष्ठ पत्रकारों तथा सम्पादकों के प्रतिनिधिमण्डल शामिल हैं।

इस प्रभाग ने दिसंबर, 2012 के दौरान आसियान देशों से वरिष्ठ पत्रकारों के परिचय यात्राओं का आयोजन किया। आने वाले परिचय यात्राओं में जनवरी-फरवरी, 2013 के दौरान अफगानिस्तान से वरिष्ठ संपादकों के एक दल की यात्रा शामिल है। फरवरी तथा मार्च, 2013 के दौरान एएमयू मास कम्युनिकेशन अनुसंधान केन्द्र, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में अफगानिस्तान के

नौजवान पत्रकारों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

प्रशिक्षण, कार्यशाला और सम्मेलन

मंत्रालय ने पड़ोसी देशों के मीडिया संगठनों की क्षमता निर्माण के उद्देश्य से कार्यकलाप आयोजित करता है और इसने मई-जून, 2012 में 30 अफगान पत्रकारों और सितंबर/अक्टूबर, 2012 में अफ्रीकी देशों के 25 पत्रकारों के लिए आईआईएमसी (भारतीय जन संचार संस्थान) में प्रशिक्षण कार्यक्रम की व्यवस्था की। यह प्रभाग चुनिंदा अफ्रीकी देशों में स्ट्रिंजर के स्थानन के लिए भी पीटीआई तथा आईएनएस को सहायता प्रदान करता रहा है ताकि आपसी समझबूझ को बढ़ाया जा सके और सूचना की कमी को दूर किया जा सके।

विदेशी श्रव्य-दृश्य एजेंसियों के वृत्तचित्र

इस प्रभाग के कार्य का एक और प्रमुख क्षेत्र विदेशी श्रव्य दृश्य एजेंसियों द्वारा निर्मित वृत्त चित्रों की प्रोसेसिंग करना एवं मंजूरी प्रदान करना है। अप्रैल-दिसंबर, 2012 की अवधि के दौरान पर्यटन, वन्य जीव एवं आर्थिक गतिविधि समेत विभिन्न विषयों पर विदेशी

निर्माण गृहों एवं अंतर्राष्ट्रीय टीवी चैनलों से भारत में वृत्त चित्रों की शूटिंग के लिए 208 प्रस्तावों को प्रोसेस किया गया एवं अनुमोदित किया गया। इस प्रभाग ने भारत में डॉक्यूमेंटरी फिल्में बनाने के लिए अनुरोध पर कार्रवाई करना जारी रखा और विदेशी श्रव्य-दृश्य एजेंसियों से प्राप्त 250 प्रस्तावों पर कार्रवाई करके अनुमोदन देने की कार्रवाई की जा रही है। भारत स्थित विदेशी समाचार एजेंसियों और मीडिया संगठनों के प्रतिनिधियों को उनके प्रत्यायक दस्तावेजों, वीजा आवासीय परमिटों के संबंध में सहायता प्रदान कर रही है।

भारत आस्थानी विदेशी मीडिया प्रतिनिधिमण्डलों को संभार सहायता

विभिन्न रुचिकर मुद्दों पर प्रासंगिक सूचना का प्रावधान करके और परिचय दस्तावेज, वीजा तथा रहने की अनुमति के मामलों में सहायता प्रदान करके सुविधाजनक रूप से कार्य करने में सक्षम बनाने के लिए भारत स्थित 201 विदेशी मीडिया प्रतिनिधियों को आवश्यक सुविधा प्रदान की गई। शेष विश्व के साथ भारत को सक्रिय कार्यकलापों से एक महत्वपूर्ण स्थिति उत्पन्न हुई है, जिसमें अनेक विदेशी भारतीय मीडिया संगठनों के लिए कार्य कर रहे हैं।



इस मंत्रालय के लोक राजनय प्रभाग ने विभिन्न कार्यकलापों तथा कार्यक्रमों का आयोजन किया तथा इनमें भाग लिया जिसका उद्देश्य भारत की विदेश नीति के सामान्य तथा विभिन्न पहलुओं में भारत की रुचि तथा सराहना सृजित करना है। इस प्रभाग ने विभिन्न वर्गों के लोगों तक अपनी पहुंच बनाई जिनमें निर्णयकर्ता, मीडिया, शिक्षाविद, विशेषज्ञ, छात्र तथा सामान्य लोग शामिल हैं। इस प्रभाग ने सोशल मीडिया में अपनी उल्लेखनीय उपस्थिति का दायरा बढ़ाना जारी रखा और इसे वेबरन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। विदेशों में भारत की सकारात्मक छवि प्रस्तुत करने में हमारे मिशनों को सुसज्जित करने के लिए वृत्तचित्र तथा पुस्तकों, 'इंडिया पर्सपेक्टिव' नामक मासिक पत्रिका का मुद्रण तथा डिजिटल फॉर्मेट में प्रकाशन जैसे कार्य शुरू किए गए।

आउटरीच कार्यकलाप

लोक राजनय प्रभाग द्वारा विभिन्न आउटरीच कार्यकलाप शुरू किए गए जिनमें अग्रलिखित शामिल हैं:— भारत तथा विदेशों में विदेश नीति संबंधी मुद्दों पर सेमिनारों एवं सम्मेलनों का समर्थन, ट्रैक फॉर्मेट में भारत तथा विदेश में प्रमुख विचारकों के साथ बातचीत करना, पाकिस्तान के साथ ट्रैक 2 पहलकदमियों को समर्थन, भारत भर में विभिन्न संस्थाओं में विभिन्न व्याख्यान शृंखला का संचालन करना, अफगानिस्तान तथा अफ्रीका से प्रमुख व्यक्तियों के प्रतिनिधिमण्डलों की मेजबानी।

अंतर्राष्ट्रीय संबंध अभिसमय

लोक राजनय प्रभाग ने अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र, नई दिल्ली में 10–12 दिसम्बर 2012 को आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर अध्ययन में लगे विद्वानों के द्वितीय अभिसमय का समर्थन किया। इस सम्मेलन का विषय "द डॉनिंग ऑफ एशियन सेंचुरी: इमर्जिंग चैलेंजेज बिफोर थियरी एंड प्रैक्टिस ऑफ आई आर इन इंडिया"। इस सम्मेलन का आयोजन इंस्टीट्यूट ऑफ रीसर्च ऑन इंडिया एंड इंटरनैशनल स्टडीज (आईआरआईआईएस) के सहयोग से भारतीय अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संघ द्वारा किया गया। इस सम्मेलन का उद्देश्य चयनित विषय पर भारतीय विश्वविद्यालयों/संस्थाओं के आईआर विद्वानों को साथ लाना और साथ ही विदेश नीति निर्माताओं तथा प्रैक्टीशनरों के साथ बातचीत को भी प्रोत्साहित करना है। इस सम्मेलन में लगभग 300 शिष्टमण्डलों ने भाग लिया। उद्घाटन भाषण विदेश मंत्री द्वारा दिया गया; राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार तथा विदेश सचिव ने विद्वानों के साथ बातचीत की।

वर्ष के दौरान लोक राजनय प्रभाग द्वारा समर्थित सेमिनारों तथा सम्मेलनों में निम्नलिखित शामिल हैं:—

- जाधवपुर अंतर्राष्ट्रीय संबंध संघ द्वारा इम्फाल में 16–17 अगस्त 2012 तक आयोजित 'भारत तथा उसके पड़ोसी देशों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन'। विदेश सचिव ने बीज वक्तव्य दिया।
- विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 21 अगस्त 2012 को आईसी डब्ल्यू ए के साथ संयुक्त रूप से आयोजित परमाणु निरस्त्रीकरण सम्मेलन।
- 'केन्द्रीय तथा दक्षिण एशिया में समकालीन अंतरक्षेत्रीय सहयोग प्रक्रिया' पर 20–23 सितम्बर 2012 तक 'ग्रामीण तथा औद्योगिक विकास शोध केन्द्र' तथा 'विश्व अर्थव्यवस्था एवं राजनय विश्वविद्यालय, ताशकंद ने एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया।
- सीआरआरआईडी द्वारा 17 अक्टूबर 2012 को चंडीगढ़ में मध्य एशिया पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार।
- मौलाना अब्दुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान ने कोहिमा, नागालैंड में 2 दिसम्बर, 2012 को 'इंडियाज नॉर्थवेस्ट: द ब्रिजहेड बिटविन इंडिया एंड म्यामां' शीर्षक एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में म्यामां से एक 15 सदस्यीय शिष्टमण्डल ने भाग लिया।
- कैम्ब्रिज स्थित 'कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय' के सहयोग से खाड़ी शोध केन्द्र, जीनेवा द्वारा 'इंडिया-गल्फ स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप इन ए पैन-एशियन कोऑपरेटिव पैराडिगम' विषय पर वार्षिक खाड़ी शोध बैठक का आयोजन किया गया।
- वर्ष के दौरान फिक्की के सहयोग से विदेश नीति मंच की बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गईं।
- ग्लोबल इंडिया फाउंडेशन ने 29 अगस्त 2012 को नई दिल्ली में लोक राजनय प्रभाग के सहयोग से द्वितीय के. सुब्रमण्यम स्मारक व्याख्यान का आयोजन किया। पूर्व विदेश सचिव श्री श्याम सरण द्वारा "अंडरस्टैंडिंग चाइना" विषय पर एक व्याख्यान दिया गया।

विदेशी प्रतिनिधियों की मेजबानी

- अफगानिस्तान में कंधार प्रांत के 12 वरिष्ठ अधिकारियों के शिष्टमंडल ने 6–12 अप्रैल 2012 तक भारत का दौरा किया।
- भारत-अफ्रीका शिखर-सम्मेलन 2011 में यथा सम्मत अधिदेश की पूर्ति करते हुए फरवरी तथा मार्च 2013 में अफ्रीका के देशों से आए संसदीय शिष्टमंडल।

- विदेशी संबंधों पर मिस्त्र परिषद के प्रतिनिधिमण्डल की 14-15 अक्टूबर 2012 तक आगरा दौरे के लिए मेजबानी की गई।

अंतर्राष्ट्रीय विचारकों के साथ वार्ताएं/गोलमेज बैठकें

- राजनय अध्ययन संस्थान, रियाध में 9-10 अप्रैल, 2011 तक भारत सऊदी अरब कार्यशाला के तीसरे दौर की बैठक आयोजित की गई। भारतीय शिष्टमण्डल में राजदूत (सेवानिवृत्त) रंजीत गुप्ता, अतुल अनेजा, एन. जनार्दन तथा संयुक्त सचिव (लोक राजनय) शामिल थे।
- अंतर्राष्ट्रीय रणनीति अध्ययन संस्थान के साथ पांचवीं वार्ता लंदन में 4 अक्टूबर 2012 को आयोजित की गई। विदेश सचिव ने बीज वक्तव्य दिया।
- लोवी इंस्टीट्यूट फॉर पब्लिक पॉलिसी, सिडनी के साथ तृतीय भारत-ऑस्ट्रेलिया गोलमेज बैठक 4-5 दिसम्बर 2012 तक दिल्ली में आयोजित की गई। इस गोलमेज बैठक के लिए ऑब्जर्वर्स रिसर्च फाउंडेशन ने लोक राजनय के साथ भागीदारी की। ऑस्ट्रेलियाई शिष्टमण्डल में ऊर्जा मंत्री तथा जॉन मॅकार्थी, ऑस्ट्रेलिया-भारत परिषद के अध्यक्ष शामिल थे। इस गोलमेज बैठक में बड़ी संख्या में गैर-सरकारी प्रतिनिधियों के साथ-साथ विदेश मंत्रालय से विशेष सचिव (लोक राजनय), संयुक्त सचिव (लोक राजनय) तथा संयुक्त सचिव (दक्षिण) ने भाग लिया।

पाकिस्तान के साथ ट्रेक-II पहलकदमियां

- लोक राजनय प्रभाग ने पाकिस्तान से आए एक संसदीय शिष्टमण्डल की दिनांक 24-26 अगस्त 2012 तक दिल्ली तथा पटना दौरे के लिए संभार सहायता दी जो पाकिस्तान इंस्टीट्यूट फॉर लेजिस्लेटिव डेवलपमेंट तथा ट्रांसपेरेंसी के तत्वावधान में था।
- वर्ष के दौरान दिल्ली तथा इस्लामाबाद में आयोजित भारत पाकिस्तान नीमराना पहलकदमी संबंधी बैठकों को समर्थन।

विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला

विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला के तहत वर्ष के दौरान अठारह व्याख्यान आयोजित किए गए। भौगोलिक व्यापकता लाने की कोशिश की गई ताकि भारत के सभी भागों में स्थित शहरों को इसके तहत शामिल किया जा सके। इस प्रभाग की वेबसाइट www.indiandiplomacy.in पर इससे संबंधित ब्यौरा उपलब्ध है।

डिजिटल राजनय

लोक राजनय प्रभाग को संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की ओर से 'जन सहभागिता पहल' श्रेणी के तहत डिजिटल राजनय के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के अभिनव प्रयोग के लिए 'प्लेटिनम आइकॉन' नामक वेबरत्न पुरस्कार 2012 से सम्मानित किया गया।

लोक राजनय प्रभाग के फेसबुक पृष्ठ भारतीय राजनय पर रोचक अनुच्छेद, प्रासंगिक लिंक जिसमें भारत की मृदु शक्ति को दर्शाया गया है, साथ ही संस्कृति, साहित्य, विज्ञान, रक्षा तथा सामाजिक उपलब्धियों से संबंधित कहानियां शेयर की गई। इस फेसबुक पेज को लगभग 1,00,000 लोगों ने पसंद किया।

ट्विटर पर 60,000 लोगों के साथ पीडी ट्विटर पर भारतीय राजनय से संबंधित जानकारी भारत से संबंधित सूचनाओं का एक उपयोगी स्रोत बन गयी है। समाज के कई नामी गिरामी लोग, जिनमें विचारक भी शामिल हैं, इस ट्विटर अकाउंट का उपयोग करते हैं।

इस प्रभाग ने नवम्बर 2011 में 'इंडिया इज़...' विषय पर वैश्विक विडियो प्रतियोगिता के दूसरे संस्करण की शुरुआत की। इस वर्ष फोटोग्राफी प्रतियोगिता को भी शामिल किया गया। यह काफी सफल प्रयास रहा जिसमें विश्व भर से लगभग 2700 फोटोग्राफरों ने भाग लिया। 'इंडिया इज़...' नामक फेसबुक पेज को लगभग 137000 लोगों ने पसंद किया।

'भारत अफ्रीका: ए शेयर्ड फ्यूचर' एक अनूठी पहलकदमी है जिसमें भारत और अफ्रीका के युवाओं को कई सृजनात्मक कार्यों में लगाया गया है। लागोस में सितम्बर 2012 में आयोजित एक कार्यक्रम में कई ऑन लाइन प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और पुरस्कारों की घोषणा की गई। भारत-अफ्रीका फेसबुक पेज को 118000 से भी ज्यादा लोगों ने पसंद किया।

भारत आसियान स्मारक शिखर सम्मेलन जो दिसम्बर 2012 में आयोजित किया गया, हेतु शोशल मीडिया पर एक सक्रिय वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर तथा यू ट्यूब के ज़रिए लोक राजनय के द्वारा ब्रांडिंग की गई। आसियान-भारत वेबसाइट में कई नई प्रौद्योगिकी फिचरों का उपयोग किया गया जिससे यह दर्शकों के लिए काफी आकर्षक बन गई। आईएनएस सुदर्शिनी, भारतीय नौसेना पोत जो आसियान देशों के दौरे पर था, के कप्तान द्वारा फेसबुक पेज पर भेजे गए कई ब्लॉग काफी सफल रहे। इस फेसबुक पेज के खोले जाने के उपरांत एक महीने के भीतर इसने 100000 दर्शकों का आंकड़ा पार कर लिया। भारत-आसियान कार रैली का शोशल मीडिया के ज़रिए सीधा प्रसारण किया गया और इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

विदेश मंत्रालय द्वारा वर्ष 1981 से तैयार किए गए लगभग सभी वृत्तचित्रों को वर्ष के दौरान यू ट्यूब चैनल पर www.indiandiplomacy.com वेबसाइट के ज़रिए अपलोड किया गया। इस वेबसाइट पर विभिन्न भाषाओं की 1000 से भी अधिक फिल्में मौजूद हैं जिनमें फ्रेंच, पुर्तगाली, रूसी, अरबी, चीनी, कोरियाई आदि भाषाओं की फिल्में शामिल हैं। यू ट्यूब चैनल को पहले से ही हजारों लोग देखते आ रहे हैं और यह पीडी प्रभाग के लिए बहुत सफल प्रयास रहा है।

सामग्री एवं पुस्तकें

इस प्रभाग ने अंग्रेजी और साथ ही पांच विदेशी भाषाओं जैसे: रूसी, फ्रेंच, अरबी, स्पैनिश तथा पुर्तगाली भाषाओं में मिशनों/केन्द्रों में



विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद "द डाउनिंग आफ दि एशियन सेंचुरी: इमर्जिंग चैलेंजिस बिफोर थियोरी एण्ड प्रैक्टिसेस ऑफ इंटरनेशनल रिलेशन्स इन इंडिया" विषय पर भारतीय अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संघ के वार्षिक अभिसमय (कन्वेंशन) को संबोधित करते हुए।



विदेश सचिव श्री रंजन मथाई इम्फाल, मणिपुर में 17 अगस्त, 2012 को "भारत और इसके पड़ोसी देश: नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, म्यामां, श्रीलंका और मालदीव के साथ रीविजिटिंग रिलेशन्स" पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेते हुए।

कॉफी टेबल पुस्तकें प्रदान करने की प्रथा जारी रखी। 'इंडिया फॉर ए बिलियन रीजन्स' नामक कॉफी टेबल पुस्तक को अद्यतन बना कर छः भाषाओं में इनका पुनः मुद्रण करवाया गया और 'इंडिया; स्पीरिट ऑफ इंटरप्राइज़' नामक पुस्तक को पांच विदेशी भाषाओं में पुनः मुद्रित किया गया। स्थानीय सामुदायिक स्कूलों तथा केन्द्रों में संवितरण हेतु मिशनो/केन्द्रों को तमिल, तेलुगु, गुजराती तथा पंजाबी भाषाओं में 20-20 बाल पुस्तकें, उपहार सैट भी प्रदान किए गए।

वर्ष 1947 से 2007 की अवधि के दौरान भारत-पाकिस्तान के रिश्तों से संबंधित दस्तावेजों को 'भारत-पाकिस्तान संबंध' नामक पुस्तक के रूप में 10 खण्डों में संकलित करने के कार्य जो इस विभाग द्वारा शुरू किया गया था, को इस समय भारत तथा विदेशों में स्थित मिशनो/केन्द्रों, शैक्षिक समुदायों और साथ ही प्रमुख विचारकों को संवितरित किया जा रहा है।

भारत-चीन सांस्कृतिक संबंधों पर एक विश्वकोष जो भारत और चीन की एक संयुक्त परियोजना है, का कार्य इस वर्ष के दौरान आगे बढ़ाया गया। इस विश्वकोष के सार के रूप में प्रविष्टियों की सूची का आदान-प्रदान किया गया। भारतीय पक्ष की ओर से इस परियोजना हेतु वित्तीय व्यवस्था करने के लिए चीनी अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

भारतीय परिपेक्ष्य

लोक राजनय प्रभाग ने विदेश मंत्रालय की मासिक फ्लैगशिप पत्रिका 'इंडिया पर्सपेक्टिव्स' का 17 भाषाओं में प्रकाशन जारी रखा। विश्व भर में इस पत्रिका की 70000 प्रतियां प्रतिमाह वितरित की जाती हैं। इस प्रभाग ने इंडिया पर्सपेक्टिव्स ई पत्रिका

(www.indiaperspectives.in) को पांच भाषाओं अर्थात् अरबी, स्पैनिश, फ्रेंच, अंग्रेजी तथा पुर्तगाली भाषाओं में प्रकाशित करना प्रारम्भ किया। इस पत्रिका को पाठकों ने हाथों हाथ लिया।

श्रव्य दृश्य प्रचार-प्रसार

वर्ष के दौरान कई वृत्तचित्र पूरे किए गए जैसे:

- भारतीय मूल के लोग (कनाडा)
- ध्वनि जांच
- एक नई शुरुआत: भारत अमरीका संबंध
- ताना-बाना-द वार्प एण्ड वैट ऑफ इंडिया
- भारत में चीनी निवेश
- सौहार्द महोत्सव
- भारत में स्वतंत्रता की भावना
- भारत-आसियान संबंध

जी-टीवी सीरियल कभी-कभी (69 एपिसोड) को फ्रेंच तथा रूसी भाषाओं में रूपांतरित करके इसके प्रसारण हेतु विभिन्न मिशनो को भेजा गया। सुश्री सुजाता कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्देशित लोक राजनय प्रभाग के वृत्तचित्र 'ए ब्रश विद लाइफ' को शिकागो में सिल्वर ह्यूगो टेलिविज़न पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस प्रभाग ने इन फ्लाइंट मनोरंजन कार्यक्रमों के रूप में फ्लाइंट के दौरान लोक राजनय प्रभाग द्वारा तैयार किए गए वृत्तचित्रों को दिखाने के लिए एयर इंडिया के साथ एक करार पर हस्ताक्षर किए हैं। "द ट्रेजर इन द स्नो: ए फिल्म ऑन सिक्किम" को इतिहाद एयरवेज़ द्वारा अगस्त-सितम्बर 2012 में अपनी फ्लाइंटों के दौरान सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया गया।



भारतीय विदेश सेवा (आई एफ एस) परिवीक्षार्थियों का प्रशिक्षण

विदेश सेवा संस्थान के प्रमुख कार्यों में से एक कार्य आई एफ एस परिवीक्षार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान करना है। ये परिवीक्षार्थी विदेश सेवा संस्थान में एक वर्षीय प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं ताकि उन्हें उनके व्यावसायिक कैरियर के दौरान मुख्यालयों तथा विदेश स्थित मिशनों एवं केन्द्रों दोनों में सौंपे जाने वाले कार्यों को दक्षतापूर्वक पूरा करने के बाबत सक्षम बनाया जा सके।

वर्ष 2010 बैच के प्रशिक्षण समाप्त होने के पश्चात 17 मई 2012 को विदेश सेवा संस्थान में एक विदाई समारोह का आयोजन किया गया था। इस वर्ष सर्वोत्तम परिवीक्षार्थी के रूप में विदेश मंत्रालय का स्वर्ण पदक सुश्री सास्वती डे को दिया गया। सर्वोत्तम शोध निबंध के लिए राजदूत श्री बिमल सान्याल स्मारक पदक श्री मैत्रेय कुलकर्णी को दिया गया, सुश्री सोम्या नैयर को डीन की ओर से मेरिट प्रमाण पत्र और सर्वोत्तम खिलाड़ी की ट्रॉफी डॉ वरुण जेफ को दिया दी गई।

वर्ष 2011 के बैच के आई एफ एस परिवीक्षार्थियों ने दिसम्बर 2011 में विदेश सेवा संस्थान में अपना अध्ययन शुरू किया। उनका एक वर्षीय प्रशिक्षण कार्यक्रम विभिन्न व्याख्यानों तथा विभिन्न संस्थाओं में उन्हें जोड़कर पूरा किया गया। इसके तहत विभिन्न विषयों जैसे: अंतर्राष्ट्रीय संबंध तथा विदेश नीति, अंतर्राष्ट्रीय कानून, रक्षा तथा सुरक्षा, आर्थिक राजनय, सांस्कृतिक राजनय और सामाजिक विकास विषयों से संबंधित मॉड्यूल बड़ी संख्या में शामिल थे। इस कार्यक्रम में प्रशासन, स्थापना, लेखा, प्रोटोकॉल, कांसुली मामले, रिपोर्टिंग कौशल, राजभाषा नीति, विदेश प्रचार-प्रसार, लोक राजनय, प्रतिनिधित्व कौशल और भारत की सांस्कृतिक धरोहर जैसे माड्यूल भी शामिल थे।

इन परिवीक्षार्थियों को समकालीन सामाजिक विकास के मुद्दों, अल्पसंख्यक के अधिकारों एवं समस्याओं, सूचना का अधिकार और मानवाधिकार संबंधित मुद्दों पर भी प्रशिक्षण दिया गया। इन परिवीक्षार्थियों में सृजनात्मक चिंतन को बढ़ावा देने के लिए विषयगत मुद्दों पर सामूहिक परिचर्चा, केस अध्ययन तथा प्रस्तुतीकरण को भी शामिल किया गया। परिवीक्षार्थियों में कारगर संप्रेषण कौशल विकसित करने हेतु सार्वजनिक भाषण पर एक विशेष मॉड्यूल भी इस प्रशिक्षण के तहत शामिल किया गया। भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, नई दिल्ली के सहयोग से छः सप्ताह के एक पाठ्यक्रम का भी आयोजन किया गया ताकि प्रबंधन एवं आर्थिक मुद्दों पर उनके कौशल का विकास किया जा सके। विदेश स्थित भारतीय मिशनों में किए जाने वाले कार्यों से इन परिवीक्षार्थियों को परिचित करवाने हेतु इन्हें तीन

समूहों में जकार्ता, सिओल तथा काइरो स्थित भारतीय मिशनो का दौरा करवाया गया।

परिवीक्षार्थियों को भारतीय सेना, नौसेना तथा वायुसेना के साथ एटेचमेंट के रूप में भी भेजा गया। इसके अलावा उन्होंने मझगांव डॉकयार्ड लिमिटेड, बी ए आर सी मुम्बई का भी दौरा किया और प्रमुख वित्तीय संस्थाओं तथा औद्योगिक घरानों के साथ इंटरएक्टिव सत्र में भी भाग लिया। उन्होंने संसदीय अध्ययन एवं प्रशिक्षण ब्यूरो में संसदीय कार्य प्रणाली के बारे में भी प्रशिक्षण प्राप्त किया। परिवीक्षार्थियों के लिए भारत दर्शन नामक पर्यटन का भी आयोजन किया गया ताकि उन्हें इस देश की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता, धरोहर तथा आर्थिक एवं पर्यटन संभावनाओं के बारे में परिचित करवाया जा सके।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों में देश भर के विभिन्न राज्यों में एक माह का जिला अटेचमेंट भी शामिल है जहां इन्हें राज्य तथा जिला प्रशासन के कार्यक्रम एवं निचले स्तर पर प्रशासन के बारे में सीखने का मौका मिल सके। इन परिवीक्षार्थियों को मंत्रालय में डेस्क अटेचमेंट के रूप में भी प्रशिक्षण दिया जाता है जहां वे भाषा प्रशिक्षण हेतु विदेशों में तैनात किए जाने से पूर्व वास्तविक कार्य अनुभव प्राप्त करते हैं।

वर्ष 2012 बैच के आई एफ एस परिवीक्षार्थियों ने दिसम्बर 2012 में विदेश सेवा संस्थान के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

विदेश सेवा संस्थान विदेश मंत्रालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को कैरियर के मध्य तथा प्रवेश स्तर पर भी प्रशिक्षण प्रदान करता है।

संयुक्त सचिव स्तरीय अधिकारियों के लिए चौथा मध्य कैरियर प्रशिक्षण कार्यक्रम इंडियन स्कूल ऑफ बिजिनेस हैदराबाद तथा विदेश सेवा संस्थान परिसर में 18 से 29 जून 2012 तक दो चरणों में आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में संयुक्त सचिव रैंक के 32 अधिकारियों ने भाग लिया। निदेशक स्तरीय अधिकारियों के लिए ई मेल आधारित मध्य कैरियर प्रशिक्षण कार्यक्रम वर्ष 2012 में पूरा किया गया। 1996 बैच के आई एफ एस अधिकारियों के लिए यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा होने वाला है।

इस मंत्रालय के अनुभाग अधिकारियों के लिए एक पुनश्चर्चा पाठ्यक्रम 25 अक्टूबर से 9 नवम्बर 2012 तक और मंत्रालय के सहायकों तथा लिपिकों के लिए दो बुनियादी व्यावसायिक पाठ्यक्रम क्रमशः 11 से 22 जून 2012 और 26 सितम्बर से 10 अक्टूबर 2012 तक संचालित किए गए।

विदेश मंत्रालय के अधिकारियों के लिए सामान्य कौशल एवं संप्रेषण कौशल पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 3 मई 2012 को आयोजित किया गया। अनुभाग अधिकारियों सहित 52 अधिकारियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। विदेशों में रह रहे भारतीय नागरिकों को कारगर कांसुली सेवाएं प्रदान करने के बारे में विदेश मंत्रालय के अपर सचिव स्तर तक के 30 वरिष्ठ अधिकारियों हेतु एक और मॉड्यूल आयोजित किया गया।

साइबर सुरक्षा सहित विभागीय सुरक्षा पर आधे दिन का ब्रीफिंग सत्र मंत्रालय के ई जी एण्ड आई टी प्रभाग के सहयोग से 24 नवम्बर 2012 को आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में संयुक्त सचिव तथा निदेशक रैंक के लगभग 17 अधिकारियों ने भाग लिया।

सीधी भर्ती से आए लगभग 80 सहायकों के लिए जनवरी तथा फरवरी 2013 में दो इंडक्शन पाठ्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इसी अवधि के दौरान इन सहायकों के लिए आईएमएस में चार प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी आयोजित किए जाने की योजना है।

अंतर सेवा प्रशिक्षण

सिविल तथा वर्दीधारी सैन्य बलों के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए "मेन करंट्स इन इंडियन फॉरेन पालिसी" विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 25 फरवरी से एक मार्च 2013 तक आयोजित किया जाएगा।

विदेशी राजनयिकों के लिए कार्यक्रम

विदेश सेवा संस्थान ने विश्व भर के देशों के साथ अपनी मैत्री को और प्रगाढ़ करने के प्रयास में विदेशी राजनयिकों के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन करना जारी रखा। विदेश सेवा संस्थान द्वारा क्रमशः 21 मार्च से 20 अप्रैल 2012 तक और 22 अगस्त से 21 सितम्बर 2012 तक विदेशी राजनयिकों के लिए दो व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का आयोजन सफलता पूर्वक किया गया। आई ओ आर – ए आर सी राजनयिकों के लिए एक विशेष पाठ्यक्रम, जिसे फरवरी 2012 में संचालित किया जाना था, को 30 अप्रैल से 11 मई 2012 तक आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 13 देशों

के 20 राजनयिकों ने भाग लिया। नवम्बर से दिसम्बर 2012 तक आसियान राजनयिकों के लिए आयोजित किए गए एक माह के विशेष पाठ्यक्रम में 8 आसियान देशों तथा आसियान सचिवालय से 30 राजनयिकों ने हिस्सा लिया। इन पाठ्यक्रमों के दौरान कक्षा प्रशिक्षण के अलावा विदेशी राजनयिकों को दिल्ली में तथा दिल्ली से बाहर ऐतिहासिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक महत्व के विभिन्न स्थानों एवं संस्थानों में ले जाया गया।

लगभग 20 विदेशी राजनयिकों के लिए एक और पाठ्यक्रम 16 जनवरी से 15 फरवरी, 2013 तक आयोजित किया जाएगा।

शिखर सम्मेलन प्रबंधन विषय पर म्यामां राजनयिकों को प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु एक तीन सदस्यीय प्रशिक्षक दल ने 24 दिसम्बर से 3 जनवरी 2013 तक म्यामां की यात्रा की।

विदेश स्थित समकक्षी संस्थाओं के साथ संबंध

विदेश सेवा संस्थान और कोरिया राष्ट्रीय राजनयिक अकादमी, कोरिया गणराज्य के बीच 21 मार्च 2012 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

म्यामां में मानव संसाधन विकास की जरूरत पर चर्चा करने के लिए 14 फरवरी 2012 को म्यामां के उप विदेश मंत्री डॉ. म्यो मिनट की अध्यक्षता में एक चार सदस्यीय म्यामां शिष्टमंडल ने विदेश सेवा संस्थान के डीन से मुलाकात की और उनसे म्यामां के राजनयिकों को प्रशिक्षण प्रदान करने में सहायता देने का आग्रह किया। डॉ. गोरान बांदोव के नेतृत्व में यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस एण्ड डिप्लोमेसी डाग हम्मरजोल्ड, जग्रेब के 19 सदस्यीय छात्र समूह ने अपने अध्ययन दौरे के दौरान 18 जुलाई 2012 को विदेश सेवा संस्थान का दौरा किया। विदेश सेवा संस्थान में उपलब्ध सुविधाओं के बारे में पता लगाने के लिए लीबिया के एशियाई तथा आस्ट्रेलियाई मामले के प्रमुख श्री रमादान मोहम्मद अरिहम, के नेतृत्व में एक 7 सदस्यीय शिष्टमंडल ने 27 सितम्बर 2012 को विदेश सेवा संस्थान का दौरा किया और उन्होंने विदेश सेवा संस्थान और लीबियाई संस्थान के बीच संस्थागत संबंधों हेतु अनुरोध किया।



राजभाषा नीति का कार्यान्वयन और विदेशों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार

26

विदेशों में हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने और इसका प्रचार-प्रसार करने के प्रयोजनार्थ विदेश मंत्रालय का एक सुनियोजित कार्यक्रम है जिसका संचालन विदेशों में स्थित हमारे 180 से भी अधिक मिशनों तथा केन्द्रों द्वारा उनके निकट सहयोग से किया जाता है। यह मंत्रालय वित्तीय सहायता प्रदान करके हिन्दी शिक्षण हेतु कई पहलकदमियों का समर्थन भी करता है।

हिन्दी को बढ़ावा देने तथा इसके प्रचार-प्रसार से जुड़े फलैगशिप कार्यक्रम के तहत इस वर्ष दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग शहर में 22-24 सितम्बर, 2012 के दौरान 9वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में भारतीय सरकारी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विदेश मंत्रालय में विदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर ने किया और इसमें हिन्दी भाषा के विकास, प्रोन्नयन तथा इसके प्रचार-प्रसार से जुड़ी कई नामचीन हस्तियां शामिल थीं। विशिष्ट भारतीय सांसदों के एक विशेष प्रतिनिधिमंडल ने भी इस सम्मेलन की कार्यवाही में भाग लिया, जहां देश-विदेश से 700 से अधिक विद्वानों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इस सम्मेलन हेतु स्थानीय भागीदार दक्षिण अफ्रीका स्थित 'हिन्दी शिक्षा संघ' था जिसे दक्षिण अफ्रीका सरकार से भरपूर समर्थन प्राप्त हुआ। दक्षिण अफ्रीका के वित्त मंत्री श्री प्रवीण गोर्धन इस सम्मेलन के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि थे जबकि मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मंत्री श्री मुकेश्वर चूनी उद्घाटन तथा समापन दोनों-समारोह में विशिष्ट अतिथि थे। उद्घाटन समारोह में दक्षिण अफ्रीका के उप-विदेश मंत्री श्री मॉरीयस फ्रांसमैन भी उपस्थित थे। महात्मा गाँधी की पौत्री तथा एक प्रमुख दक्षिण अफ्रीकी गाँधीवादी विदूषी सुश्री ईला गांधी उद्घाटन समारोह में

विशेष अतिथि थीं। दिल्ली राज्य से आए प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व दिल्ली की स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. किरण वालिया ने किया। उद्घाटन तथा समापन सत्रों की अध्यक्षता विदेश मंत्रालय में विदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर ने की और पूर्ण सत्रों की अध्यक्षता श्री एम. गणपति, सचिव (पश्चिम), विदेश मंत्रालय ने की। 9वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने में योगदान करने वाले भारतीय तथा विदेशी विद्वानों को सम्मानित किया गया। यह सम्मेलन एक संकल्प पारित करके समाप्त हुआ जिसमें, अन्य बातों के साथ-साथ, 10वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन भारत में आयोजित करने का आह्वान किया गया।

मंत्रालय द्वारा दिल्ली में और विदेश स्थित कई मिशनों/केन्द्रों द्वारा 10 जनवरी, 2013 को 'विश्व हिन्दी दिवस' मनाया गया। यह हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने तथा इसका प्रचार-प्रसार करने के प्रयोजनार्थ हिन्दी से जुड़े विदेशी विद्वानों से जुड़ने का एक महत्वपूर्ण अवसर होता है।

विदेश मंत्रालय में 19-25 नवम्बर, 2012 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया। मंत्रालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ-चढ़कर हिस्सा लिया। महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी प्रश्न मंच प्रतियोगिता, कविता पाठ, टिप्पण तथा आलेखन प्रतियोगिता शामिल थे।

विश्व हिन्दी सचिवालय के कार्यकारी बोर्ड की तीसरी बैठक पोर्ट लुई, मॉरीशस में 25-26 जून, 2012 तक आयोजित की गई और सचिवालय के कार्यक्रम तथा उद्देश्यों से संबंधित कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।



वर्ष 1950 में स्थापित भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद जिसका मुख्य उद्देश्य भारत और अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों तथा पारस्परिक समझ-बूझ पैदा करना तथा इन्हें सुदृढ़ बनाना है, ने इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निरन्तर कार्य किया है।

परिषद के प्रमुख कार्यकलाप इस प्रकार हैं-

भारत सरकार और अन्य एजेंसियों की ओर से विदेशी छात्रों के लिए छात्रवृत्ति योजनाओं का संचालन; अंतर्राष्ट्रीय छात्रों का कल्याण; विदेशी छात्रों को भारतीय नृत्य तथा संगीत सीखने और साथ ही इंजीनियरी, फार्मसी, एकाउंटेंसी, बिजनेस एडमिस्ट्रेशन तथा प्रबंधन आदि जैसे व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अवर स्नातक, स्नातकोत्तर तथा डॉक्टरल स्तर पर छात्रवृत्तियां प्रदान करना; पारस्परिक आधार पर प्रदर्शनियाँ आयोजित करना; अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों तथा संगोष्ठियों का आयोजन एवं इनमें भागीदारी; विदेशों में प्रमुख सांस्कृतिक महोत्सवों में भागीदारी; विदेशों में भारत महोत्सव का आयोजन; मंच कलाकार समूहों का आदान-प्रदान, विदेशों में मंच कलाकारों द्वारा व्याख्यान सह-प्रदर्शन का आयोजन; विशिष्ट आगन्तुक कार्यक्रम जिसके तहत विदेशों से नामचीन हस्तियों को भारत यात्रा के लिए आमंत्रित किया जाता है, और जावक आगन्तुक कार्यक्रम जिसमें विशेषज्ञों को व्याख्यान देने के लिए विदेश भेजा जाता है; विदेशों में स्थित संस्थाओं को पुस्तकें, दृश्य-श्रव्य सामग्री, कलात्मक वस्तुएं और संगीत वाद्य यंत्र प्रदान करना; अंतर्राष्ट्रीय समझ-बूझ के लिए जवाहरलाल नेहरू पुरस्कार हेतु सचिवालय की व्यवस्था करना; वार्षिक मौलाना आजाद स्मारक व्याख्यान आयोजित करना; भारत तथा विदेशों में संचितरण हेतु पत्रिकाओं का प्रकाशन; पठन सामग्री से परिपूर्ण पुस्तकालय तथा मौलाना अबुल कलाम आजाद की पाण्डुलिपियों का रखरखाव; और दुर्लभ पाण्डुलिपियों का डिजिटलीकरण।

परिषद ने नवम्बर, 2012 तक विश्व के विभिन्न देशों में 119 सांस्कृतिक समूहों को प्रायोजित किया जिनमें मलेशिया, चीन, हांगकांग, वियतनाम, कनाडा, सिंगापुर, वियतनाम, पोलैंड, स्पेन, ब्राजील, मेक्सिको, जापान, यू.के., श्रीलंका, भूटान, म्यांमा, थाईलैण्ड, रीयूनियन द्वीपसमूह, मॉरीशस, त्रिनिदाद व टोबैगो, नेपाल तथा बेलारूस शामिल हैं।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद "जर्मनी में भारत के दिन 2012-13" आयोजित कर रही है, जिसका उद्घाटन "हैम्बर्ग बंदरगाह महोत्सव" के दौरान किया गया था जिसमें 3 सांस्कृतिक समूहों ने भाग लिया था। परिषद ने "जर्मनी में भारत के दिन" में भाग लेने के लिए अब तक 09 सांस्कृतिक समूहों को प्रायोजित किया है। इस वित्त वर्ष के

31 मार्च, 2013 तक के शेष माहों के दौरान चार सांस्कृतिक समूह तैयार हैं। परिषद ने नवम्बर, 2012 तक आसियान कार रैली/आसियान नौका अभियान के लिए 8 मंच कला समूहों को प्रायोजित किया है और 3 समूहों को मार्च, 2013 तक भेजा जाना है। डेनमार्क, सऊदी अरब, ब्राजील, ईरान, कजाकस्तान तथा रूस में लघु महोत्सव आयोजित किए गए। आईसीसीआर प्रायोजित समूहों ने प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय महोत्सवों में भाग लिया जैसे मेक्सिको में सर्वानिटनो महोत्सव, वियतनाम में ह्यू महोत्सव, जिम्बाबवे में हरारे अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव, मिश्र में अंतर्राष्ट्रीय सामा महोत्सव, यू.के. में ऑलिम्पिक खेल समारोह, दक्षिण अफ्रीका में साझा इतिहास महोत्सव और जापान में ओसाका कला महोत्सव आदि।

जेएनसीसी ने 10 नवम्बर, 2012 को 'संस्कृति सागर' भारतीय शास्त्रीय नृत्य रचना की प्रस्तुती दी। इस महोत्सव ने रूस की युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति को करीब से जानने का अवसर प्रदान किया। इस महोत्सव में भारत की विविधता को रेखांकित किया गया जिसमें प्रथम 5 दिनों में से प्रत्येक दिन देश के विभिन्न भागों को समर्पित किया गया। मॉस्को वासियों ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों की अलग-अलग नृत्य शैलियों का आनन्द लिया जिसमें कथक, भरत नाट्यम तथा ओडिसी नृत्य शामिल थे।

संस्कृति के माध्यम से एक अंतर्राष्ट्रीय समझ-बूझ पैदा करना परिषद के प्रमुख अधिदेशों में से एक है। वर्ष 1950 में परिषद ने अपनी स्थापना के समय से ही सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत तथा इससे इतर भारत आनेवाली सांस्कृतिक मण्डलियों को संभाला है। विदेशों से आने वाली मण्डलियों की मेजबानी सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा पारस्परिक आधार पर की जाती है। अप्रैल-नवम्बर 2012 की अवधि के दौरान परिषद ने चीन, कोलम्बिया, मेक्सिको, अर्जेन्टिना, इटली, कुवैत, जॉर्जिया, घाना, सेशलस, सूडान, जाम्बिया, माली, सेनेगल, पाकिस्तान, श्रीलंका, स्पेन, ईरान, रूस, कजाकस्तान, पोलैंड, उज्बेकिस्तान, अफगानिस्तान, तुर्की, बांग्लादेश, ऑस्ट्रीया, बेल्जियम, कनाडा, चेक गणराज्य, आयरलैण्ड, मलेशिया, नॉर्वे, पुर्तगाल, बुरुंडी, इस्टोनिया, हंगरी, इजराइल, लिथुआनिया, मोरक्को, स्लोवाक, सिंगापुर, यू.के., स्विट्जरलैण्ड तथा जापान से आई 80 विदेशी सांस्कृतिक मण्डलियों की मेजबानी की।

परिषद ने वर्ष के दौरान सात प्रमुख महोत्सवों का भी आयोजन किया: अप्रैल-मई, 2012 के दौरान लातिन अमरीकी संगीत एवं नृत्य महोत्सव जिसमें कोलम्बिया, मेक्सिको, अर्जेन्टिना, इटली, कुवैत तथा जॉर्जिया से आए 6 समूहों ने भाग लिया; जून, 2012 में अफ्रीका



जर्मनी में भारत के दिन के एक अंश बर्लिन में "विल्कोमेन" के दौरान प्रस्तुति करते कलाकार



मॉस्को में 09 नवम्बर, 2012 को आयोजित 25वीं वर्षगांठ समारोह में मयूरी नृत्य मंडली की प्रस्तुति



1 नवम्बर, 2012 को मॉस्को से आए बैले समूह द्वारा प्रेक्षागृह (सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम) में संगीत समारोह

महोत्सव जिसमें घाना, सेशल्स, सूडान, जाम्बिया, माली तथा सेनेगल से आए 6 समूहों ने भाग लिया; अक्टूबर, 2012 में आयोजित तीसरा अंतर्राष्ट्रीय नृत्य महोत्सव जिसमें इटली, स्पेन, ईरान, रूस, अर्जेंटिना, कजाकिस्तान तथा पोलैण्ड के कलाकारों ने समकालीन एवं लोकनृत्य का प्रदर्शन किया; रूसी संस्कृति दिवस जहां रूसी कलाकारों ने अक्टूबर, 2012 में दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई तथा बंगलौर में यादगार प्रदर्शन किया, जिसमें प्रसिद्ध बोलसोई बैले की प्रस्तुति उल्लेखनीय रही है; प्रसिद्ध प्रतिष्ठान के सहयोग से दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय कला महोत्सव; दिसम्बर, 2012 में आयोजित सार्क महोत्सव 2012 तथा इण्डो-आसियान महोत्सव।

परिषद ने भारत में 45 विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जिनमें दुमरी महोत्सव तथा मल्हार महोत्सव शामिल थे। इंडियन नैशनल यूथ ऑर्केस्ट्रा ने सोनिया खान के साथ मिलकर एक भारत-जर्मन कार्यक्रम 10 अप्रैल, 2012 को बंगलौर में आयोजित किया अफगानिस्तान में सामाजिक विकास प्रक्रिया हेतु हमारे समर्थन को रेखांकित करने के लिए आईसीसीआर ने दारी भाषा में एक नाट्य रचना में सहयोग दिया, जिसका मंचन दिल्ली में 22 मई, 2012 को किया गया और बाद में इसे लन्दन में आयोजित शेक्सपिरियन महोत्सव में ले जाया गया। आईसीसीआर ने सहयोगात्मक परियोजना "इंडिया टुडे: डेनमार्क टूमोरो" (16-22 अक्टूबर, 2012) के तहत डेनमार्क स्थित एक कम्पनी के साथ गठजोड़ किया; नई दिल्ली में 11, 12 तथा 13 दिसम्बर, 2012 को नीमराना फाउंडेशन के साथ इटालियन संगीत समारोह का आयोजन; और 27 दिसम्बर, 2012 को "स्वान लेक रीविजिटेड (मितुलसेन गुप्ता)" नामक भारत-फ्रांस सहयोगात्मक कार्यक्रम का आयोजन।

आईसीसीआर ने विदेश स्थित भारतीय मिशनों के परामर्श से विभिन्न विदेशी विश्वविद्यालयों में भारतीय अध्ययन पीठों की स्थापना की। आईसीसीआर के पास विदेश में अध्ययन पीठों के लिए 95 समझौता ज्ञापन हैं (जिनमें से 8 पीठों में पूर्ण कालिक प्रोफेसरों के स्थान पर अब हिन्दी भाषा शिक्षक तैनात हैं), चीन में दो पीठों (दो पीठें। क्रमशः गुआंगडॉंग यूनिवर्सिटी ऑफ़ फॉरेन स्टडीज, चेंगडू तथा शंघाई अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन विश्वविद्यालय शंघाई), जर्मनी (गोटिंगजन विश्वविद्यालय, गॉटिंगजन) और जमायका वेस्टइंडीज विश्वविद्यालय, किंग्सटन हेतु वित्त वर्ष 2012-13 (30 नवम्बर, 2012 तक) 4 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए। इन पीठों के अलावा, दिसम्बर, 2012 से मार्च, 2013 के दौरान ऑस्ट्रेलिया तथा कनाडा, और साथ ही आयरलैण्ड, स्वीडन तथा उक्रेन में 3-3 पीठों की स्थापना के लिए समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए जाने की संभावना है।

आईसीसीआर संस्कृति तथा समाज विज्ञान के क्षेत्रों में भारतीय अध्ययनों में विशेषज्ञता प्राप्त करने वाले अंतर्राष्ट्रीय अध्येताओं को कनिष्ठ तथा वरिष्ठ शोध अध्येतावृत्ति प्रदान करती है। अप्रैल-नवम्बर, 2012 के दौरान परिषद में घाना, ईरान तथा फ्रांस से 3 वरिष्ठ

अध्येता आए। परिषद को उम्मीद है कि दिसम्बर, 2012 में इण्डोनेशिया से एक वरिष्ठ अध्येता और मार्च, 2013 तक बेलग्रेड तथा कजाकस्तान से दो कनिष्ठ अध्येता आएंगे।

आईसीसीआर ने इण्डोनेशिया तथा ईरान के अध्येताओं को सहायता देकर अपनी एशिया परियोजना में आईआईसी के सहयोग हेतु करार किया है ताकि इन देशों के साथ भारतीय संबंधों को सहयोग देने के लिए शैक्षिक विशेषज्ञों का एक टिकाऊ संसाधन आधार बनाया जा सके।

आईसीसीआर भारत और विदेशों विदेशों में इण्डोलॉजी, बौद्ध धर्म, सूफी धर्म आदि जैसे विषयों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करती है, जिनमें लब्ध प्रतिष्ठ भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय अध्येतागण भाग लेते हैं। परिषद ने अप्रैल-नवम्बर, 2012 तक ऑस्ट्रेलिया, श्रीलंका तथा जर्मनी में 3 टैगोर सम्मेलन आयोजित किए हैं। परिषद ने "भारत और वियतनाम के बीच चाम सभ्यतामूलक संपर्क" पर 26-27 जून, 2012 के दौरान वियतनाम में और मई-जून, 2012 के दौरान "विश्व धरोहर स्थलों तथा सभ्यताओं को जोड़ना" विषय पर 2 पुरातत्व सम्मेलन आयोजित किए।

परिषद ने पटना में 20-22 जुलाई, 2012 तक "भारत तथा आसियान के बीच सभ्यतामूलक वार्ता" विषय पर एक महा सम्मेलन भी आयोजित किया जोकि वर्तमान में चल रहे आसियान महोत्सव का एक हिस्सा था और इस सेमिनार की कार्यवाहियों पर आधारित एक पुस्तक दिसम्बर, 2012 के दौरान दिल्ली में आयोजित आसियान शिखर सम्मेलन में जारी की गई। "पंचतंत्र एक्रॉस डिस्प्लीस एंड कल्चर्स" पर लिपजिग, जर्मनी में 27-30 सितम्बर, 2012 के दौरान एक इण्डोलॉजी सम्मेलन भी आयोजित किया गया।

परिषद 5 अलग-अलग भाषाओं में 6 पत्रिकाएं प्रकाशित करती है अर्थात "इंडियन हॉराइजन्स" तथा "अफ्रीका क्वार्टरली" (दोनों अंग्रेजी तिमाही), "गगनांचल" (हिन्दी-तिमाही), "पेपल्स डीला इंडिया" (स्पेनी द्विवार्षिकी), "रेज्जॉटरे एवेक, ल इंडे" (फ्रेंच द्विमासिक) और "थकाफत-उल-हिन्दी" (अरबी तिमाही)। इसके अतिरिक्त, आईसीसीआर द्वारा प्रत्येक वर्ष सेमिनारों तथा सम्मेलनों से लेकर, प्रदर्शनी तथा कार्यक्रम विवरणिकाएं तथा पुस्तिकाएं आदि प्रकाशित की जाती हैं। वर्ष के दौरान, आईसीसीआर ने सुश्री मायर्का बार्दी द्वारा रचित "इंडिया सुस डांजास क्लासिक्स" नामक पुस्तक प्रकाशित की।

वर्ष के दौरान, परिषद ने "गगनांचल" के 1, 2, 3, 4, 5 अंक प्रकाशित किए। जोहांसबर्ग में 22-24 सितम्बर, 2012 के दौरान आयोजित 9वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर एक विशेषांक प्रकाशित किया गया। आईसीसीआर ने इस सम्मेलन में अधिकारियों को प्रतिनियुक्त करने के साथ-साथ भाग लेने के लिए 15 कवियों की यात्रा को प्रायोजित किया। इस अवसर पर श्री शेखर सेन द्वारा निर्देशित "कबीर" नामक नाटक का मंचन भी किया गया।





आसियान-भारत शिखर सम्मेलन 2012 के दौरान राष्ट्रपति भवन में 20 दिसम्बर, 2012 को इण्डो-आसियान गाला सांस्कृतिक समारोह।



पटना में 20-22 जुलाई, 2012 के दौरान भारत और आसियान के बीच सभ्यतामूलक वार्ता पर सेमीनार

भारतीय विश्व कार्य परिषद् ने अफ्रीका, एशिया, लातिन अमेरिका तथा यूरोपीय संघ में राजनैतिक, सुरक्षात्मक तथा आर्थिक घटनाक्रमों के बारे में शोध एवं अध्ययन को उच्च प्राथमिकता देना जारी रखा और व्यापक वैश्विक भूराजनीतिक तथा भू-राजनैतिक परिवेशों का विश्लेषण किया। इन निष्कर्षों का प्रचार-प्रसार सप्रू हाउस पेपर्स, इश्यू ब्रीफ्स तथा व्यूप्वाइंट के रूप में किया गया जिन्हें आई सी डब्ल्यू ए की वेबसाइट पर डाला गया था।

आई सी डब्ल्यू ए ने बड़ी संख्या में कार्यक्रमों, लेक्चरों, सम्मेलनों तथा आउटरीच कार्यक्रमों का संचालन किया। पुस्तकालय में सुधार करके नई पुस्तकें मंगाई गईं। आई सी डब्ल्यू ए द्वारा प्रेक्षागृह के नवीनीकरण का कार्य शुरू किया गया। आई सी डब्ल्यू ए अभिशासन नियमावली के आधार पर आई सी डब्ल्यू ए के प्रचालन हेतु विनियमों का मसौदा पूरा किया गया जिसे विदेश मंत्रालय द्वारा अधिसूचित किया गया।

आई सी डब्ल्यू ए के कोर समूहों ने अफगानिस्तान, बांग्लादेश, चीन, म्यामां, नेपाल, श्रीलंका तथा मालदीव में समकालीन घटनाक्रमों की मॉनीटरी तथा विश्लेषण किया और यथोचित मामलों में अध्ययन एवं नीतिगत सिफारिशें विदेश मंत्रालय को अग्रेषित की गईं।

वर्ष के दौरान, आई सी डब्ल्यू ए द्वारा कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन इस प्रकार हैं—

पुस्तकें: द ई यू-इंडिया पार्टनरशिप: टाइम टू गो स्ट्रैटेजिक? (संपादक) लुई पेरल तथा विजय सखूजा, अक्टूबर 2012; इंडिया एंड आसियान: पार्टनर्स फॉर पीस, प्रोग्रेस एवं स्टैबिलिटी (संपादक) राजीव के. भाटिया, विजय सखूजा तथा आसिफ सूजा, दिसम्बर 2012।

सप्रू हाउस पेपर्स: 'सीरिया एंड द इवॉल्विंग पॉलिटिको — स्ट्रैटेजिक डायनामिक्स इन द गल्फ', जाकिर हुसैन, अगस्त 2012; वियतनाम-इंडिया रिलेशंस इन द लाइट ऑफ इंडियाज लूक ईस्ट पॉलिसी, वो जुआन विन्ह, अक्टूबर, 2012।

इश्यू ब्रीफ — ब्रिक्स कार्यसूची पर विकासमूलक मुद्दे : दिल्ली शिखर सम्मेलन की संभावनाओं; दिनोज कुमार उपाध्याय, 3 मई 2012; 'ईरान तथा अमरीका के बीच भारत एक शांतिकार के रूप में', आसिफ सूजा, 20 मई 2012; 'पोस्ट-अस्साड भूराजनीतिक संभावनाएं', जाकिर हुसैन, 6 अगस्त, 2012; 'सी एस टी ओ: भारत नेपाल सप्तकोशी बांध परियोजना', सौरभ, 9 अगस्त 2012; 'आसियान्स डिफिकल्ट ट्रेजेक्टरी एंड सिल्वर लाइनिंग्स', विभांशु शेखर, 11 सितम्बर, 2012; 'अरब बसंत और अरब राजनीति की बदलती

तस्वीर', फज्जुर रहमान सिद्दीकी, 21 सितम्बर 2012; 'पाइप लाइनें, बंदरगाह तथा राजनीति: खाड़ी क्षेत्र, मध्य एशिया तथा भारत', विजय सखूजा, 21 सितम्बर 2012; 'ऊर्जा तथा पर्यावरण क्षेत्रों में भारत-यूरोपीय संघ के सहयोग का विस्तार', दिनोज कुमार उपाध्याय, 12 अक्टूबर, 2012।

व्यू प्वाइंट: 'ताजीकिस्तान के वैकल्पिक ऊर्जा मार्ग: भारत के लिए अवसर' अतर जाफर, 9 मई 2012; 'आर्थिक राजनय तथा उभरते बाजार पर इंडोनेशिया का ध्यान', विभांशु शेखर, 25 मई 2012; 'ईरान्स एसर्टिवनेस ऑन डिस्प्युटेड आईलैंड्स रैटल्स यू ए ई', अतर जाफर, 7 जून 2012; 'अफगानिस्तान में सुरक्षा में बदलाव: भारत के लिए आशय', दिनोज कुमार उपाध्याय, 8 जून 2012; 'क्या म्यामां के साथ जुड़े रहने संबंधी आसियान नीति का कोई परिणाम निकल पाया है?', विकास रंजन, 25 जून 2012; 'जापान्स सिक्युरिटी कोननड्रम एंड द एशिया-पैसिफिक', डी. गनाना गुरु नाथन, 3 अगस्त 2012; 'भारत की मध्य एशिया के साथ जुड़ने की नीति' एक कदम आगे, अंजीरा सेन शर्मा, 7 सितम्बर 2012; 'इंडिया-ईयू एफटीए: बिल्डिंग न्यू सिनर्जीज', दिनोज कुमार उपाध्याय, 27 नवम्बर 2012; 'रियलाइजेशन ऑफ एन एशियन सेंचुरी: ऑपॉर्चुनिटीज एंड चैलेंजेज' विकास रंजन, 4 दिसम्बर 2012।

'आई सी डब्ल्यू ए की 'भारत तिमाही' का प्रकाशन 1945 से निरन्तर अनवरत किया जा रहा है जो एक रिकार्ड है।

आई सी डब्ल्यू ए आउटरीच कार्यक्रमों में देश भर में कई भारतीय विश्वविद्यालयों तथा विचारकों के साथ आयोजित संयुक्त सम्मेलन तथा सेमिनार शामिल हैं और अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में कई देशों में आयोजित सम्मेलन, सेमिनार तथा व्याख्यान शामिल हैं।

भारत में महत्वपूर्ण आउटरीच कार्यक्रमों में अग्रलिखित शामिल थे: इंस्टीट्यूट ऑफ स्ट्रेटेजिक एंड इंटरनैशनल स्टडीज (आईएसआईएस), मलेशिया, के सहयोग से तीसरी भारत-मलेशिया वार्ता, 12-13 अप्रैल 2012; नार्थ ईस्ट इंडिया इन ट्रांजिशन: त्रिपुरा — द कॉमर्स एंड कनेक्टिविटी कॉरीडोर बिटविन इंडिया एंड बांग्लादेश' पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार जो त्रिपुरा विश्वविद्यालय परिसर में त्रिपुरा विश्वविद्यालय, अगरतला के सहयोग से मौलाना अबुल कलाम आजाद द्वारा आयोजित किया गया, 26-27 अप्रैल 2012; 'भारत-यमन द्विपक्षीय संबंध पर आईसीडब्ल्यू ए — एस सी एस एस सम्मेलन और आई सी डब्ल्यू ए तथा शेबा सेन्टर फॉर स्ट्रेटेजिक स्टडीज, साना, यमन के बीच सहयोग हेतु नई दिल्ली में 17 अप्रैल 2012 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए; आई सी डब्ल्यू ए तथा एशिया केन्द्र, बंगलौर द्वारा 'विंड्स ऑफ चेंज अक्रॉस म्यामां-स्ट्रेटेजिक

इम्प्लिकेशंस फॉर इंडिया' विषय पर बंगलौर में 9 जून 2012 को संयुक्त रूप से आयोजित सेमिनार; इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन अफेयर्स एंड नैशनल सिक्यूरिटी (आई एफ ए एन एस) के साथ एशिया प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा की स्थिति और 'भारत कोरिया द्विपक्षीय संबंध' पर नई दिल्ली में 27 जून 2012 को गोलमेज परिचर्चा; 'ग्लोबल इनीशिएटिव फॉर सस्टेनेबिलिटी एंड ह्यूमन डेवलपमेंट: एनविजनिंग द प्लैनेटेरी यूचर' विषय पर गुवाहाटी में 1-3 अक्टूबर 2012 के दौरान अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी; स्कूल ऑफ इंटरनैशनल रिलेशंस एंड पॉलीटिक्स, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय कोट्टायम, केरल द्वारा 'चीन का उदय: नीतिगत पैरामीटर तथा परिप्रेक्ष्य' विषय पर कोट्टायम, केरल में 1-13 नवम्बर 2012 तक संयुक्त रूप से आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन।

वर्ष के दौरान आईसीडब्ल्यूए द्वारा भारत से बाहर आयोजित आउटरीच कार्यक्रमों में अग्रलिखित शामिल हैं: पोलिश इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनैशनल अफेयर्स (पीआईएसएम) के सहयोग से 'इंडिया एंड पोलैंड विस्टाज फॉर फ्यूचर पार्टनरशिप' विषय पर वारशॉ, पोलैंड में 17-18 मई 2012 तक आयोजित सेमिनार; किर्गिस्तान इंस्टीट्यूट ऑफ स्ट्रैटेजिक स्टडीज (केआईएसएस) के सहयोग से विशकेक में 11-13 जून 2012 तक आयोजित प्रथम वार्षिक भारत-मध्य एशिया वार्ता; डिप्लोमेटिक एकेडमी ऑफ वियतनाम के सहयोग से 'भारत-वियतनाम रणनीतिक सहभागिता:भावी दिशाएं' विषय पर हैनोई, वियतनाम में 17-18 जुलाई 2012 तक आयोजित सेमिनार; और बहुपक्षवाद पर ब्रसेल्स में दिनांक 23-26 अक्टूबर 2012 को चौथा आईसीडब्ल्यूए-ईयूआईएसएस मंच।

आईसीडब्ल्यूए ने वर्ष के दौरान कई महत्वपूर्ण लेक्चर्स, सेमिनारों तथा पैनल चर्चाओं का भी आयोजन किया।

वर्ष 2012 जिन गणमान्य व्यक्तियों ने आईसीडब्ल्यूए का दौरा किया उनमें अग्रलिखित शामिल हैं— श्री हेदी बेन अब्बास, विदेश मामलों हेतु राज्य मंत्री, ट्यूनीशिया; डॉ मोहम्मद हसन मानिक, राष्ट्रपति मालदीव; श्री अबदीरहमान मोहम्मद महमूद (फरोल), राष्ट्रपति, पुंटेले, सोमालिया का एक राज्य; डॉ. आर. एम. मार्ती एम. नाटालेगावा, इण्डोनेशिया के विदेश मंत्री; श्री अलफ्रेडो मोरीनो, चिली के विदेश मंत्री, और श्री फाम क्वांग-विन्ह, वियतनाम के उप विदेश मंत्री।

आई सी डब्ल्यू ए ने वर्ष 2001 से ही एशिया प्रशांत सुरक्षा सहयोग परिषद – भारत समिति के सचिवालय की मेजबानी की है। वर्ष के दौरान परिषद ने टोक्यो, जापान में 6-8 फरवरी 2012 तक जल संसाधन सुरक्षा पर तीसरे सीएससीएपी एसजीएम का समन्वयन किया जिसमें श्री उत्तम कुमार सिन्हा, आई डी एस ए ने भाग लिया; सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में 6-7 मार्च 2012 तक सी पी डब्ल्यू एम डी

विषय पर 15वाँ सी एस सी ए पी एस जी एम जिसमें डॉ. मनप्रीत सेठी ने भाग लिया; चियांग माई, थाईलैंड में 29-30 अप्रैल 2012 तक जल संसाधन सुरक्षा पर आयोजित सीसीएपीएसजीएम की अंतिम बैठक जिसमें श्री उत्तम कुमार सिन्हा ने भाग लिया; कुआलालम्पुर में 29-30 मई 2012 तक आयोजित 26वां एशिया प्रशांत गोलमेज बैठक और कुआलालम्पुर में 30-31 मई 2012 तक आयोजित 37वां एस सी एम जिसमें राजदूत लीला के. मोनप्पा, राजदूत टी.पी श्री निवासन, सुश्री मोनिका जैन तथा श्री डॉ. प्रोबाल कुमार घोष ने भाग लिया; सी एस सी ए पी के भविष्य की समीक्षा करने के लिए बाली इण्डोनेशिया में 22-24 जुलाई 2012 तक आयोजित सी एस सी ए पी तदर्थ बैठक जिसमें राजदूत लीला के. मानप्पा ने भाग लिया; हो ची मिन्ह सिटी, वियतनाम में 'व्यापक संहार करने वाले हथियारों के प्रसार को रोकना' विषय पर 8-9 नवम्बर 2012 तक आयोजित सी एस सी ए पी की 16वीं बैठक जिसमें डॉ. मनप्रीत सेठी, शोध अध्ययता ने भाग लिया; और सिंगापुर में 2-3 दिसम्बर 2012 तक आयोजित सी एस सी ए पी की संचालन समिति की 38वीं बैठक; जिसमें राजदूत लीला के. मोनप्पा तथा राजदूत सुधीर टी. देवारे ने भाग लिया।

आईसीडब्ल्यू ए का पुस्तकालय जो 1955 से ही कार्य कर रहा है, आज एक प्रमुख शोध पुस्तकालय है जहां लगभग 140000 दस्तावेज मौजूद हैं जिनमें पुस्तकें (जिनमें हजारों दुर्लभ पुस्तकें हैं), पत्रिकाओं के जिल्द बंद खंड, मानचित्र, यूएन दस्तावेज तथा यूरोपीय संघ दस्तावेजों का विशेष संग्रह शामिल है। इस पुस्तकालय में लगभग 1 मिलियन प्रेस कतरन भी शामिल हैं। पुस्तकालय की ग्रंथसूची ऑन लाइन कर दी गई है तथा आई सी डब्ल्यू ए की वेबसाइट पर इसे देखा जा सकता है। सदस्यों को इलेक्ट्रॉनिक विषयसूची तथा सूचनाएं सुलभ कराने के लिए एक साइबर पुस्तकालय भी बनाया गया है।

प्रचार-प्रसार

आई सी डब्ल्यू ए ने अपने निर्गतों एवं कार्यकलापों के व्यापक प्रचार-प्रसार की नीति शुरू की है ताकि अधिक से अधिक संभावित वैश्विक श्रोताओं तक पहुंच सके तथा राष्ट्रीय एवं वैश्विक परिदृश्य में भारतीय सरोकारों एवं आकांक्षाओं के बारे में जागरूकता पैदा की जा सके। प्रकाशन अलर्ट परिचालित करने और साथ ही वेबसाइट: www.icwa.in में फेरबदल करने और महत्वपूर्ण कार्यक्रमों की वैश्विक वेबकास्टिंग संबंधी एक प्रणाली मौजूद होने से आई सी डब्ल्यू ए के अधिदेश को प्राप्त करने में काफी सहाय्यता हुई। आई सी डब्ल्यू ए ने परिषद के बारे में वैश्विक स्तर पर श्रोताओं को सूचनाएं देने के लिए अपनी प्रचार-प्रसार विवरणिका को अद्यतन एवं इसका पुनर्मुद्रण भी करवाया है।



विकासशील देशों के लिए अनुसंधान एवं सूचना प्रणाली (आर.आई.एस), विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन नई दिल्ली स्थित एक स्वायत्त विचार केन्द्र है। इस संगठन को अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों और विकास सहयोग पर नीतिगत अनुसंधान में विशिष्टता प्राप्त है। संस्थान की अभिकल्पना विकासशील देशों के बीच अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर प्रभावी नीतिगत वार्ताओं और क्षमता निर्माण को संपोषित करने वाले एक मंच के रूप में की गई है। आर.आई.एस के अनुसंधान कार्यक्रम में दक्षिण-दक्षिण सहयोग को बढ़ावा देना और विभिन्न मंचों पर बहुपक्षीय वार्ताओं में विकासशील देशों की सहायता करना मुख्यतः शामिल है। संस्थान अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर भारत सरकार को नीतिगत विचार प्रदान करता है और विभिन्न ट्रैक-II प्रक्रियाओं में संलग्न है। आर.आई.एस जिन संस्थाओं से संबद्ध है उनके गहन समन्वय से कार्य करता है ताकि अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर नीतिगत सामंजस्य को सुदृढ़ बनाया जा सके।

वर्ष 2012-13 के दौरान आर.आई.एस के कार्यक्रम का सार नीचे दिया गया है:-

भारत सरकार को अनुसंधान और नीति के संबंध में प्रदान की गई निविष्टियाँ

ब्रिक्स: विदेश मंत्रालय (एम.ई.ए) को आर.आई.एस ने निम्न पर विचार प्रदान किए:

- (क) "सतत विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन की प्रारंभिक प्रक्रिया पर (रियो+20 सम्मेलन)" ब्रिक्स देशों के विचार/दृष्टिकोण।
- (ख) वैश्विक शांति और सुरक्षा: ब्रिक्स की भूमिका; और
- (ग) वहनीय मूल्य पर औषधियों तक पहुंच: ब्रिक्स के बीच सहयोग अवसर।

आई.ओ.आर: "ए.आर.सी ने आई.ओ.आर.ए.आर.सी में क्षेत्रगत सहकारिता" पर विदेश मंत्रालय को विचार प्रदान किए।

पक्षकारों का सम्मेलन: अक्टूबर, 2012 हैदराबाद में आयोजित पक्षकारों के सम्मेलन की 10वीं बैठक की कार्यसूची की मदों पर आर.आई.एस ने वन एवं पर्यावरण मंत्रालय को विचार प्रदान किया।

नीतिगत वार्ता, सम्मेलन, कार्यशाला, क्षमता निर्माण कार्यक्रम:

विकासशील देशों के बीच क्षमता निर्माण और बौद्धिक वार्ताओं को प्रोत्साहित करने के अपने अधिदेश की पूर्ति के लिए आर.आई.एस

ने वर्ष 2012-13 के दौरान कई नीतिगत वार्ताएं, सम्मेलन, कार्यशाला, क्षमता निर्माण कार्यक्रम इत्यादि का आयोजन किया।

इस अवधि के दौरान आयोजित चयनित मुख्य घटनाओं में निम्नलिखित शामिल हैं-

भारत-म्यामां व्यापार और संपर्क पर विचारोत्तेजक सत्र

आर.आई.एस ने नई दिल्ली में 13 अप्रैल, 2012 को भारत-म्यामां व्यापार और संपर्क पर एक विचारोत्तेजक सत्र आयोजित किया था। सत्र डा. विश्वजीत धर, महानिदेशक, आर.आई.एस के स्वागत सम्बोधन तथा राजदूत श्याम शरण, अध्यक्ष, आर.आई.एस के विशेष सम्बोधन के साथ शुरू हुआ।

म्यामां में भारत के राजदूत डा. वी.एस.शेषाद्रि ने अहम प्रस्तुति की जिसके बाद खुली चर्चा हुई।

आसियान-भारत संपर्क और भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

आर.आई.एस ने इम्फाल में 04 मई, 2012 को आसियान और पूर्वी एशिया के लिए आर्थिक अनुसंधान संस्थान और इंडियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स (आई.सी.सी) के सहयोग से "आसियान-भारत संपर्क और भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र" पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। सम्मेलन में निम्नलिखित व्यापक विषयों पर चर्चा की गई: बृहत एशिया विकास योजना (सी.ए.डी.पी) और आसियान-भारत संपर्क तथा आसियान-भारत संपर्क और उत्तर-पूर्व भारत के लिए चुनौतियां तथा अवसर। आर.आई.एस से डा. विश्वजीत धर, महानिदेशक और डा. प्रबीर डे, सदस्य ने भाग लिया।

दक्षिण एशिया में व्यापार सरलीकरण पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

आर.आई.एस ने नई दिल्ली में 28 मई, 2012 को एशिया और प्रशांत (यू.एन.एस.सी) क्षेत्र के लिए, संयुक्त राष्ट्र आर्थिक व सामाजिक आयोग, एशिया-प्रशांत अनुसंधान तथा व्यापार प्रशिक्षण नेटवर्क (ए.आर.टी.नेट), एशिया और प्रशांत क्षेत्र में पेपर रहित व्यापार के संयुक्त राष्ट्र नेटवर्क के विशेषज्ञों (यू.एन.एन.एक्स.टी) तथा भारत में मालभाड़ा फेडरेशन ऑफ फेट फारवर्डर्स एसोशिएशन इन इंडिया (एफ एफ एफ ए आई) के सहयोग से "दक्षिण एशिया में व्यापार सरलीकरण: चुनौतियां और भविष्य" पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। सम्मेलन में निम्नलिखित मुद्दों पर विचार किया गया था। एशिया-प्रशांत क्षेत्र में आयात/निर्यात प्रक्रिया और

कार्यप्रणाली; दक्षिण एशिया में व्यापार प्रक्रिया और कार्यप्रणाली का सुधार और व्यापार सरलीकरण सुधार। आर.आई.एस से डा. विश्वजीत धर, महानिदेशक, डा. सचिन चतुर्वेदी, वरिष्ठ सदस्य तथा डा. प्रवीर डे, सदस्य ने भाग लिया।

नए विकास प्रतिभागियों से वार्ता

आर.आई.एस तथा विश्व बैंक ने संयुक्त रूप से नई दिल्ली में 22-23 जून, 2012 को “नए विकास प्रतिभागियों से वार्ता: राष्ट्रीय अनुभव से सीख तथा वैश्विक भागीदारी निर्माण” पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। तत्कालीन विधि एवं न्याय मंत्री श्री सलमान खुर्शीद द्वारा आधार व्याख्यान दिया गया। उद्घाटन सत्र को राजदूत श्याम शरण, अध्यक्ष, आर.आई.एस और डा. एक्सेल वान ट्रोटेसेनबर्ग, उपाध्यक्ष, रियायती वित्त और वैश्विक भागीदारी/विश्व बैंक ने भी उद्घाटन सत्र को सम्बोधित किया। सम्मेलन में चर्चित मुद्दे थे— भारत के विकास सहयोग से सबक/पाठ, विकास सहयोग पर तुलनात्मक परिदृश्य, मध्य आय देश, भागीदारी विकास में कॉरपोरेट क्षेत्र, विकास भागीदारी में मध्यम आने वाले देशों का कॉरपोरेट क्षेत्र, नई विकास भागीदारी का मापन एवं प्रभाव मूल्यांकन और वैश्विक विकास चुनौतियाँ और नए विकास प्रतिभागी। श्री सुधीर व्यास, सचिव (ई. आर), विदेश मंत्रालय ने विदाई भाषण दिया। सत्र की अध्यक्षता प्रो. कौशिक बासु, मुख्य आर्थिक सलाहकार, भारत सरकार द्वारा की गई थी। आर.आई.एस से डा. विश्वजीत धर, महानिदेशक तथा डा. सचिन चतुर्वेदी, वरिष्ठ सदस्य ने वार्ता में भाग लिया।

गरीबी उन्मूलन पर संगोष्ठी

आर.आई.एस ने कोलम्बो में 12 जुलाई, 2012 को संयुक्त रूप से श्रीलंकाई विचार केन्द्र, लक्ष्मण कादिरगमर अंतर्राष्ट्रीय संबंध तथा सामरिक अध्ययन संस्थान के साथ मिलकर गरीबी उन्मूलन पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया था। श्री जयराम रमेश, ग्रामीण विकास और पेयजल व स्वच्छता मंत्री, भारत सरकार तथा श्री जी.एल. पेयरिस, विदेश मंत्री, श्रीलंका सरकार सम्मानित अतिथि थे। आर. आई.एस से डा. विश्वजीत धर ने कार्यक्रम में भाग लिया।

आसियान-भारत विचार केन्द्र नेटवर्क पर गोलमेज (ए.आई.एन.टी.टी)

आर.आई.एस ने आसियान सचिवालय के साथ मिलकर नई दिल्ली में 7-8 अगस्त, 2012 को “आसियान-भारत विचार केन्द्र नेटवर्क पर गोलमेज” सम्मेलन का आयोजन किया। विदेश मंत्री श्री एस. एम. कृष्णा ने उद्घाटन भाषण दिया। श्री नयन लिन, उप महासचिव, राजनैतिक सुरक्षा समुदाय, आसियान सचिवालय, जकार्ता ने विशेष सम्बोधन किया। सम्मेलन की कार्यसूची में निम्नलिखित पर चर्चा शामिल थी: मालों व अवसरों के संबंध में आसियान-भारत मुक्त व्यापार करार, सेवाओं और निवेश में गहन एकीकरण के माध्यम से, आसियान-भारत आर्थिक एकीकरण को प्रोत्साहित करने के लिए सम्पर्क बढ़ाना, खाद्य सुरक्षा की चुनौतियों का सामना करने की रणनीति जलवायु परिवर्तन, जैवविविधता और पारंपरिक औषधियों से संबंधित चुनौतियाँ।

आर.आई.एस से राजदूत श्याम शरण, अध्यक्ष, डा. विश्वजीत धर, महा निदेशक, डा. एस.के. मोहंती, वरिष्ठ सदस्य, डा. सचिन चतुर्वेदी, वरिष्ठ सदस्य, डा. प्रवीर डे, सदस्य, डा. रामगोपाल अग्रवाल, विशिष्ट सदस्य, डा. आई.एन. मुखर्जी, वरिष्ठ परामर्शदाता और सुश्री कस्तूरी दास, परामर्शदाता ने भाग लिया।

आसियान-भारत सहयोग के 20वीं वर्षगांठ के स्मरणोत्सव के लिए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

आर.आई.एस ने संयुक्त रूप से चुलालांगकार्न विश्वविद्यालय के साथ मिलकर बैंकाक में 20-21 सितंबर, 2012 को आसियान-भारत सहयोग के 20वीं वर्षगांठ के स्मरणोत्सव के लिए “तीसरे दशक में सीवनहीन एकीकरण — आसियान-भारत भागीदारी के दो दशकों में निर्मित आधार” पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। सम्मेलन के विशिष्ट प्रतिभागियों में प्रो. कुआ वांगबूनसीन, उपाध्यक्ष, चुलालांगकार्न विश्वविद्यालय तथा थाइलैण्ड में भारत के राजदूत श्री अनिल वधवा शामिल थे।

सम्मेलन में व्यापार, निवेश तथा आर्थिक सहयोग, संपर्क, शिक्षा, ज्ञान और संस्थागत सहयोग, राजनैतिक सहयोग और भविष्य के लिए परिदृश्य जैसे मुद्दों पर चर्चा हुई। आर.आई.एस से डा. प्रवीर डे, सदस्य ने भाग लिया।

जैव सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत सामाजिक-आर्थिक विचारों पर पैनल वार्ता

आर.आई.एस द्वारा हैदराबाद में 03 अक्टूबर, 2012 को जैव सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत सामाजिक-आर्थिक पहलुओं पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया। कार्यक्रम में जैव सुरक्षा और सामाजिक-आर्थिक पहलुओं पर एशियाई जैव प्रौद्योगिकी तथा विकास समीक्षा (ए.बी. डी.आर) का विशेषांक जारी किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. बालाकृष्णन पीसूपति, अध्यक्ष, भारतीय राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण द्वारा किया गया। आर.आई.एस से डा. सचिन चतुर्वेदी, वरिष्ठ सदस्य और डा. कृष्ण रवि श्रीनिवास, सहायक सदस्य ने भाग लिया।

छठा एशियाई जैवप्रौद्योगिकी और विकास सम्मेलन

आर.आई.एस ने हैदराबाद में 6-7 अक्टूबर, 2012 को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा जैव प्रौद्योगिकी विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सहयोग से छठे एशियाई जैव प्रौद्योगिकी और विकास सम्मेलन (ए.बी.डी.सी) का आरंभ किया। प्रो. डीरन माकिण्डे, ए.बी.एन.ई./अफ्रीका के विकास (नेपैड) के लिए नई भागीदारी, बुर्किना फासो ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। श्री ब्राउलियो फेरेयरा डी सुजा डायस, कार्यपालक सचिव, जैवविविधता सचिवालय अभिसमय (सी.बी.डी), कनाडा ने आधार व्याख्यान दिया। डा. एस.आर. राव, परामर्शदाता, जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डी.बी.टी) भारत सरकार, डा. रंजिनी वारियर, निदेशक, पर्यावरण व वन मंत्रालय और सदस्य सचिव, जी. ई.ए.सी तथा बी.सी.एच.एन.एफ.पी और आर.आई.एस के डा. के रवि

श्रीनिवास, एशोसिएट सदस्य ने भी उद्घाटन सत्र को सम्बोधित किया। सम्मेलन के निम्नलिखित सत्र थे: जैव प्रौद्योगिकी, समावेश, मूल्यांकन तथा विकास, वहनीय स्वास्थ्य देखभाल और जैव प्रौद्योगिकी: एशिया के लिए इसमें क्या है? कृषि जैव प्रौद्योगिकी: जीएम फसलों से परे, सामाजिक-आर्थिक संकेतक— मुद्दे व परिदृश्य, जैव प्रौद्योगिकी नवाचार, संकेतक और राष्ट्रीय नवाचार, देश प्रस्तुतिकरण और क्षेत्रीय परिदृश्य और सी.ओ.पी के समक्ष मुद्दे।

श्री हेम पाण्डेय, संयुक्त सचिव, पर्यावरण व वन मंत्रालय और सी.बी.डी/सी.पी.बी तथा जी.ई.एफ राष्ट्रीय फोकल प्वाइंट (एन.एफ.पी) ने विदाई सत्र की अध्यक्षता की। डा. विलियम दार, महानिदेशक, आईसीआरआईएसएटी, हैदराबाद ने विदाई भाषण दिया।

प्रौद्योगिकी व नवाचार पर कार्यशाला रिपोर्ट, २०१२

आर.आई.एस और यू.एन.सी.टी.ए.डी ने संयुक्त रूप से प्रौद्योगिकी व नवाचार रिपोर्ट, 2012 पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। दक्षिण-दक्षिण व्यापार व निवेश में आदान-प्रदान और दक्षिण-दक्षिण प्रौद्योगिकी अभिगम को प्रोत्साहित करने के लिए दांचागत कार्य पर चर्चा हुई। आई.आर.एस से डा. विश्वजीत धर, महानिदेशक, श्री टी. सी. जेम्स, परामर्शदाता और श्री रेजी के. जोसेफ, परामर्शदाता ने भाग लिया।

सार्वजनिक ऋण से निपटने संबंधी चुनौतियां और वैश्विक विभिन्न संकट पर पैनल चर्चा

आर.आई.एस ने नई दिल्ली में 19 दिसंबर, 2012 को वैश्विक वित्तीय संकट और सार्वजनिक ऋण से निपटने संबंधी चुनौतियों पर एक पैनल चर्चा आयोजित की। राजदूत श्याम शरण, अध्यक्ष, आर.आई.एस ने अध्यक्षता की। पैनल में डा. बेनू सेनडर, अंतर्राष्ट्रीय वित्त के प्रमुख, आर्थिक व सामाजिक कार्य विभाग, संयुक्त राष्ट्र, संयुक्त राज्य अमेरिका और डा. आलोक शील, सचिव, प्रधान मंत्री के आर्थिक परामर्श परिषद, शामिल थे। डा. सचिन चतुर्वेदी, वरिष्ठ सदस्य, आर.आई.एस ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

क्षेत्रीय परिदृश्य और व्यापार तथा आर्थिक सहयोग पर डब्ल्यूटीओ वार्ता पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम

आर.आई.एस ने विदेश सेवा संस्थान, नई दिल्ली की ओर से नई दिल्ली में 11 दिसंबर, 2012 को आसियान राजनयिकों के लिए 7वें विशेष पाठ्यक्रम के तहत क्षेत्रीय परिदृश्य और व्यापार तथा आर्थिक सहयोग पर डब्ल्यूटीओ वार्ता पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया।

व्यापार और आर्थिक सहयोग पर कार्यशाला: वैश्विक और क्षेत्रीय परिदृश्य

आर.आई.एस ने विदेश सेवा संस्थान (एफ.एस.आई), विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के साथ मिलकर संयुक्त रूप से नई दिल्ली में 03 अप्रैल, 2012 को विदेशी राजनयिकों के लिए 54वें विदेशी राजनयिक व्यवसायिक पाठ्यक्रम के तहत एक दिवसीय व्यापार और आर्थिक सहयोग कार्यशाला: वैश्विक और क्षेत्रीय परिदृश्य का आयोजन किया।

व्यापार और आर्थिक सहयोग पर कार्यशाला: वैश्विक और क्षेत्रीय परिदृश्य

आर.आई.एस ने विदेश सेवा संस्थान (एफ.एस.आई), विदेश मंत्रालय के साथ मिलकर संयुक्त रूप से नई दिल्ली में 08 मई, 2012 को आई.ओ.आर — आर्क के लिए द्वितीय विशेष पाठ्यक्रम के तहत विदेशी राजनयिकों के लिए व्यापार और आर्थिक सहयोग पर कार्यशाला: वैश्विक और क्षेत्रीय परिदृश्य का आयोजन किया।

व्यापार और आर्थिक सहयोग पर कार्यशाला: वैश्विक और क्षेत्रीय परिदृश्य

आर.आई.एस ने विदेश सेवा संस्थान, विदेश मंत्रालय के साथ मिलकर संयुक्त रूप से नई दिल्ली में 04 सितंबर, 2012 को विदेशी राजनयिकों के लिए 55वें व्यावसायिक पाठ्यक्रम (पीसीएफडी) के तहत व्यापार और आर्थिक सहयोग पर कार्यशाला: वैश्विक और क्षेत्रीय परिदृश्य का आयोजन किया।

आर.आई.एस प्रकाशन

आर.एस.आई ने तीन रिपोर्ट, आठ नीतिसार, पांच चर्चा दस्तावेज, दक्षिण एशिया आर्थिक पत्रिका के दो अंक, एशियाई जैव प्रौद्योगिकी तथा विकास समीक्षा के चार अंक और न्यू एशिया मॉनिटर के दो अंक प्रकाशित किए हैं। आर.आई.एस के प्रकाशन इसके वेबसाइट www.ris.org.in से डाउनलोड किया जा सकता है।

बजट

वर्ष 2012-13 के लिए आर.आई.एस को विदेश मंत्रालय, भारत सरकार ने 5.35 करोड़ रुपए की वित्तीय सहायता संस्वीकृत की गई थी।



विदेश मंत्रालय के पुस्तकालय में 100,00 से भी अधिक पुस्तकें, समृद्ध विशिष्ट सामग्री और मानचित्रों का संग्रहण, सूक्ष्म फिल्मों तथा सरकारी दस्तावेज हैं। यह नीति योजना और अनुसंधान को सहायता देने हेतु आधुनिक सुविधाओं से भी लैस है। पुस्तकालय लगभग 350 पत्र/पत्रिकाओं और अखबारों (ऑनलाइन पत्रिकाएं तथा डाटाबेस) का क्रय करता है।

एकीकृत पुस्तकालय सॉटवेयर पैकेज “लिबसिस” के प्रयोग से पुस्तकालय प्रबंधन की सभी पहलुओं को समाहित करते हुए सभी दस्तावेज/ग्रंथ सूची सेवाओं के साथ-साथ अन्य पुस्तकालय परिचालन सेवाओं का कम्प्यूटरीकरण कर दिया गया है। पुस्तकालय में प्राप्त सभी पुस्तकों, मानचित्रों, दस्तावेजों और पत्र/पत्रिकाओं में से चयनित लेखों से संबंधित जानकारी मंत्रालय के उपयोग के लिए ऑनलाइन उपलब्ध है। पुस्तकालय की सूचना विदेश मंत्रालय की वेबसाइट <http://mealib.nic.in> से इंटरनेट के माध्यम से भी प्राप्त की जा सकती है।

पुस्तकालय में प्राप्त होने वाली सभी दस्तावेजों जैसे पुस्तकें, मानचित्र, सूक्ष्म फिल्में, पत्र-पत्रिकाओं से चयनित लेख से संबंधित प्राप्त सभी नए दस्तावेजों को नियमित आधार पर विदेश मामलों से संबंधित डाटाबेस में डाला जाता है जिसे फेयरस (FAIRS) कहा जाता है। इस डाटाबेस तथा सीडी रोम डाटाबेस के प्रयोग से पुस्तकालय वर्तमान जानकारी सेवा और ग्रंथ सूची तथा संदर्भ सेवाएं भी प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय नियमित तौर पर जारी करता है: अंतर्राष्ट्रीय संबंधों तथा संबंधित विषयों पर चयनित लेखों की सूची/पुस्तकालय में जोड़ी गई नवीनतम पुस्तकें/प्रकाशनों की संक्षिप्त सूची। पुस्तकालय नियमित रूप से दैनिक समाचार, पुस्तक अलर्ट और लेख अलर्ट जारी करता है और मंत्रालय के विदेश सेवा अधिकारियों और विदेश स्थित मिशनों को सामूहिक ई-मेल द्वारा भेजता है। पुस्तकालय नई दिल्ली में और विदेश स्थित सभी भारतीय मिशन/केन्द्रों/उपभोक्ताओं को “ईआईयू ऑनलाइन डाटाबेस”

सेवा, ईआईयू ब्रीफिंग ऊर्जा संक्षिप्तियां व भविष्यवाणियां, डाटा मॉनिटर से, एमबीआईसी बिजनेस मॉनिटर इंटरनेशनल, बौद्धिक संपदा प्रबंधन, केसिंग वर्ल्ड न्यूज अर्काइव “न्यूजपेपर डायरेक्ट” तथा जे एस टी ओ आर, जेन्स ऑन लाइन जर्नल्स तथा ऑन लाइन मैगजीन्स (दि न्यू स्टेट्समैन, दि न्यूयार्क और स्पेकटेटर) आदि भेजता है ताकि नई दिल्ली स्थित मुख्यालय तथा सभी विदेश स्थित सभी भारतीय मिशनों व केन्द्रों में इनका उपयोग किया जा सके। ये ऑनलाइन डाटाबेस और पत्र/पत्रिकाएं इंटरनेट पर यूजरनेम और पासवर्ड के माध्यम से देखे जा सकते हैं। ऐसे विषयों की एक सूची विदेश मंत्रालय के पुस्तकालय की वेबसाइट <http://mealib.nic.in> पर उपलब्ध है।

इस पुस्तकालय ने राष्ट्रीय सूचना केन्द्र के सहयोग से विदेश मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट (वर्ष 1948 से 1998-99) और विदेश मामलों के रिकार्ड (1995-1999, अगस्त) का एक पूरा पाठ्य सीडी रोम में उपलब्ध कराया है। यह सीडी पुस्तकालय, पटियाला हाउस, नई दिल्ली से मांगी जा सकती है।

पुस्तकालय ने समय-समय पर दिल्ली और पड़ोसी शहरों के विभिन्न संस्थानों में पढ़ रहे पुस्तकालय और सूचना विज्ञान के छात्रों को प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया है। अगस्त, 2012 में हेलसिंकी, फिनलैण्ड में अंतर्राष्ट्रीय पुस्तकालय संघ के परिसंघ समिति की बैठक में पुस्तकालय के एक प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया। मंगलोर, 2012 में आयोजित अखिल भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन तथा पाण्डिचेरी में आयोजित 25वें आईएसएस एलआईसी राष्ट्रीय संगोष्ठी में भी दो प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

मंत्रालय की पुस्तकालय की वेबसाइट <http://mealib.nic.in> को नियमित तौर पर अद्यतित किया जा रहा है। अनुसंधान विद्वानों सहित इस पुस्तकालय का उपयोग करने वाले सभी व्यक्तियों द्वारा पुस्तकालय और सीडी रोम डाटाबेस सहित इसके डाटाबेस का इस्तेमाल किया जा सकता है।



विदेश मंत्रालय के बजट का बड़ा भाग गैर-योजना बजट के अन्तर्गत आता है। विदेश मंत्रालय के बजट का योजना अंश भारत के पड़ोसी देशों में चल रही कुछ वृहद परियोजनाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। ये परियोजनाएं भूटान, अफगानिस्तान और म्यांमा में अवस्थित हैं। भूटान में योजना बजट शीर्ष से वित्तपोषित परियोजनाएं हैं— पुनात्संगचू हाइड्रोइलैक्ट्रिक परियोजना—I एवं II, मांग्डेचू हाइड्रोइलैक्ट्रिक परियोजना और डंग्सम सीमेंट प्लांट का निर्माण। अफगानिस्तान में काबुल से पुल—ए—खुमरी तक डबल सर्किट ट्रांसमिशन लाइन का निर्माण पूरा हो चुका है। इस परियोजना के अतिरिक्त घटक के रूप में अफगानिस्तान में हो दोशी तथा चारीकार में दो सब—स्टेशनों का निर्माण अभी चल रहा है। म्यांमा में कलादान मल्टीमॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट परियोजना के निर्माण का कार्य जारी है। बिहार में नालंदा विश्व विद्यालय की स्थापना भी योजना आवंटन से ही वित्तपोषित हो रही है। विश्व विद्यालय को आवंटित भूमि की सुरक्षा के लिए चहारदीवारी के निर्माण का कार्य चालू है। भवनों के निर्माण का ठेका वर्ष—2013 की दूसरी छमाही में दिया जाना संभावित है।

विदेश मंत्रालय के मुख्यालयों के लिए वित्तीय वर्ष—2012—13 हेतु संशोधित बजट अनुमान 241.93 करोड़ रुपये है जो 9662 करोड़ रुपये (पूँजी और राजस्व) के कुल बजट का 2.50% (लगभग) है। भारतीय मिशनों और विदेशी केन्द्रों के लिए संशोधित बजट अनुमान 1589.83 करोड़ रुपये है जो विदेश मंत्रालय के पूँजी और राजस्व बजट का 16.45% (लगभग) है।

31 दिसम्बर, 2012 तक पासपोर्ट, वीजाशुल्क और अन्य प्राप्तियों से विदेश मंत्रालय को प्राप्त राजस्व 2515.99 करोड़ रुपये है। पासपोर्ट शुल्क, वीजा शुल्क एवं अन्य प्राप्तियों से आय क्रमशः 1348.44 करोड़ रुपये, 884.69 करोड़ रुपये और 282.86 करोड़ हैं।

भारत सरकार ने भूटान सरकार को विकासात्मक परियोजनाओं को लागू करने के लिए ऋण दिया है। वर्ष 2012—13 के दौरान 1838.00 करोड़ रुपये (संशोधित अनुमान) का ऋण दिया गया है।



परिशिष्ट

परिशिष्ट I

वर्ष-2012 में भारत द्वारा अन्य देशों के साथ संपन्न अथवा नवीकृत की गई संधियां/अभिसमय/करार

क. बहुपक्षीय

क्र.स.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/अधिमिलन/स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
1.	पर्यटन सहयोग को सुदृढ़ करने के लिए भारत गणराज्य की सरकार और दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ के सदस्य देशों के बीच समझौता ज्ञापन	12.01.2012		12.01.2012
2.	कर मामलों पर आपसी प्रशासनिक सहयोग के लिए प्रोटोकॉल द्वारा यथासंशोधित अभिसमय के संबंध में कर मामलों पर आपसी प्रशासनिक सहयोग संबंधी अभिसमय	26.01.2012		
3.	प्राकृतिक आपदाओं पर द्रुत प्रतिक्रिया के लिए सार्क करार समरूपता निर्धारण की मान्यता के लिए बहुपक्षीय व्यवस्था पर सार्क करार क्षेत्रीय मानकों को लागू करने पर सार्क करार सार्क सीड बैंक करार	11.11.2011 11.11.2012 11.11.2011 11.11.2011	02.07.2012 04.06.2012 04.06.2012 29.08.2012	
4.	सहयोगी प्रशिक्षण कार्यक्रम और प्रशिक्षण प्रणालियों पर शोध करने के लिए भारत और आई एल ओ के बीच समझौता ज्ञापन	31.10.2012		31.10.2012

ख. द्विपक्षीय

क्र.स.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/अधिमिलन/स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
1.	अफगानिस्तान: 1. कोयला खनिज संसाधनों के विकास के क्षेत्रों में सहयोग के लिए भारत और अफगानिस्तान के बीच समझौता ज्ञापन 2. भारत के युवा मामले और खेलकूद मंत्रालय तथा अफगानिस्तान के सूचना और संस्कृति मंत्रालय के बीच युवा मामलों में सहयोग लिए समझौता ज्ञापन 3. उर्वरक क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत और अफगानिस्तान के बीच समझौता ज्ञापन	12.11.2012 12.11.2012 12.11.2012		

परिशिष्ट I

क्र.स.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/अधिभिलन/स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
	4. स्थानीय सरकारी निकायों, समुदाय संगठनों, गैर-सरकारी संगठनों, धर्मार्थ ट्रस्ट एवं शिक्षा तथा व्यावसायिक संस्थानों के माध्यम से लघु विकास परियोजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए भारत अनुदान सहायता के संबंध में समझौता ज्ञापन	12.11.2012		
2.	अजरबैजान: भारत गणराज्य की सरकार और अजरबैजान गणराज्य सरकार के बीच हवाई सेवाओं के लिए करार	16.04.2012		
3.	बहरीन: 1. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत गणराज्य की सरकार और बहरीन साम्राज्य की सरकार के बीच समझौता ज्ञापन 2. करें से संबंधित सूचना के आदान-प्रदान के लिए भारत सरकार और बहरीन सरकार के बीच करार	31.05.2012 31.05.2012		
4.	बेलारूस: 1. फार्मास्यूटिकल उत्पादों के उत्पादन और व्यापार के क्षेत्र में सहयोग पर भारत के फार्मास्यूटिकल विभागों, रसायन और उर्वरक मंत्रालय तथा बेलारूस के फार्मास्यूटिकल इंडस्ट्री विभाग, स्वास्थ्य मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन 2. भारत गणराज्य की सरकार के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय और बेलारूस गणराज्य की विज्ञान प्रौद्योगिकी समिति के बीच भारत-बेलारूस नवीकरणीय ऊर्जा सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन 3. प्रैस और सूचना के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत गणराज्य सरकार और बेलारूस गणराज्य सरकार के बीच करार 4. एडवांस कम्प्यूटिंग विकास केन्द्र और बेलारूस के स्टेट साइंटिफिक इंस्टीट्यूशन 'यूनाईटेड इंस्टीट्यूट ऑफ इन्फार्मेटिक्स प्रॉब्लेम्स ऑफ दी नेशनल एकेडमी ऑफ दी साइंसेज' के बीच आई सी टी के क्षेत्र में सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन 5. शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत गणराज्य के मानव संसाधन विकास मंत्रालय और बेलारूस गणराज्य के शिक्षा मंत्रालय के बीच करार	14.11.2012 14.11.2012 14.11.2012 14.11.2012 14.11.2012		

परिशिष्ट I

क्र.स.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/अधिमिलन/स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
	6. पोटस उर्वरक आपूर्ति में सहयोग के लिए भारत गणराज्य के रसायन और उर्वरक मंत्रालय तथा बेलारूस गणराज्य के तेल और रसायन राजकीय संस्थान के बीच समझौता ज्ञापन	14.11.2012		
5.	बेल्जियम: 1. रेलवे सेक्टर के प्रभावी विकास और आधुनिकीकरण के लिए द्विपक्षीय सहयोग पर समझौता ज्ञापन 2. सिविलियन न्यूक्लीयर ऊर्जा के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र और बेल्जियम न्यूक्लीयर अनुसंधान केन्द्र (एससीके-एसईएन) के बीच समझौता ज्ञापन	02.08.2012 02.08.2012		
6.	भूटान: 1. स्टैण्डबाई क्रेडिट सुविधा के लिए भारत गणराज्य सरकार और भूटान की शाही सरकार के बीच करार 2. भूटान में टाटा हाइड्रोइलैक्ट्रिक परियोजना के संबंध में संशोधित प्रोटोकॉल के लिए भारत और भूटान के बीच करार	13.06.2012 10.12.2012		
7.	ब्राजील: 1. नेशनल लैबोरेटरी ऑफ इंडिया के माध्यम से काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एण्ड इंडस्ट्रीयल रिसर्च (सी एस आई आर) तथा ब्राजील के मेट्रोलॉजी, क्वालिटी एण्ड टेक्नोलॉजी (इनमेट्रो), मिनिस्ट्री ऑफ डेवलपमेंट, इंडस्ट्री एण्ड फॉरेन ट्रेड ऑफ फेडरेटिव रिपब्लिक ऑफ ब्राजील के बीच रसायन, भौतिकी, इंजीनियरी मापन विज्ञान, सर्टीफाइड रिफ्रिजेंट मटीरियल्स फॉर थर्मोफीजिक्स प्रोपर्टीज के विकास, नैनोमेट्रोलॉजी, एनालिसिस ऑफ सर्फेस एण्ड थिन फिल्म्स, बायो फ्यूल्स एण्ड बायोटेक्नोलॉजी में वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी सहयोग संबंधी समझौता ज्ञापन। 2. वर्ष 2012-2014 की अवधि के लिए भारत और ब्राजील के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यकारी कार्यक्रम	11.06.2012 30.03.2012		
8.	बुरुण्डी: 1. ग्रामीण विकास के क्षेत्र में सहयोग 2. स्वास्थ्य और दवा क्षेत्र में सहयोग 3. शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग के लिए आदान-प्रदान कार्यक्रम 4. भारत सरकार और बुरुण्डी सरकार के बीच द्विपक्षीय सहयोग विषयक करार	17.02.2012 18.09.2012 18.09.2012 17.02.2012		

परिशिष्ट I

क्र.स.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/अधिमिलन/स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
9.	कनाडा: 1. सड़क परिवहन में सहयोग के लिए भारत गणराज्य के सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय और कनाडा के परिवहन विभाग के बीच समझौता ज्ञापन 2. खनिज संसाधनों के क्षेत्र में सहयोग के संबंध में भारत गणराज्य के खान मंत्रालय और प्राकृतिक संसाधनों तथा वन्य जीवन के क्यूबेक मंत्री एवं आर्थिक विकास नवाचार तथा निर्यात व्यापार के क्यूबेक मंत्री के बीच करार 3. भारत गणराज्य और कनाडा के बीच सामाजिक सुरक्षा का करार 4. सूचना संचार प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स में सहयोग के लिए भारत गणराज्य के संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय एवं कनाडा के इंडस्ट्री विभाग के बीच समझौता ज्ञापन 5. रक्षा विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में संयुक्त अनुसंधान व विकास में सहयोग के लिए डीआर डी ओ, रक्षा मंत्रालय, भारत एवं योर्क विश्व विद्यालय, कनाडा के बीच समझौता ज्ञापन	11.06.2012 24.05.2012 06.11.2012 06.11.2012 06.11.2012		24.05.2012 06.11.2012
10.	चीन: 1. भारत-चीन सीमा मामलों पर परामर्श और समन्वय के लिए कार्य संचालन प्रक्रिया की स्थापना हेतु भारत गणराज्य सरकार और चीन की जनवादी गणराज्य सरकार के बीच करार 2. ऊर्जा क्षमता के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर, ब्यूरो ऑफ इनर्जी एफीशिएंसी, ऊर्जा मंत्रालय, भारत गणराज्य सरकार और राष्ट्रीय विकास और सुधार आयोग, चीन की जनवादी गणराज्य सरकार के बीच समझौता ज्ञापन 3. संयुक्त अध्ययन के आश्वासन पर भारत के योजना आयोग और चीन के राष्ट्रीय विकास एवं सुधार आयोग के बीच समझौता ज्ञापन 4. रेलवे सेक्टर में तकनीकी सहयोग के लिए भारत और चीन के बीच समझौता ज्ञापन	17.01.2012 26.11.2012 26.11.2012 26.11.2012		17.01.2012
11.	कोलम्बिया: वर्ष 2012-2016 के लिए भारत और कोलम्बिया के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम।	12.03.2012		

परिशिष्ट I

क्र.स.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/अधिभिलन/स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
12.	क्यूबा: 1. खेलकूद के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत के युवा मामले और खेलकूद मंत्रालय तथा क्यूबा के राष्ट्रीय खेलकूद, शारीरिक शिक्षा एवं मनोरंजन संस्थान के बीच करार 2. क्यूबा में मिल्क पाउडर प्रोसेसिंग प्लांट की स्थापना के वित्तपोषण के लिए एकजिम बैंक ऑफ इंडिया और सेंट्रल बैंक ऑफ क्यूबा के बीच 5 मिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला संबंधी करार	14.02.2012 10.10.2012		
13.	डोमिनिकन रिपब्लिक: सांस्कृतिक क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत और डोमिनिका रिपब्लिक के बीच करार	23.08.2012		
14.	मिस्र: 1. निर्वाचकीय प्रबंध एवं प्रशासन के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत के निर्वाचन आयोग और मिस्र की सर्वोच्च राष्ट्रपति (प्रेसीडेंसियल) चुनाव समिति के बीच समझौता ज्ञापन 2. वर्ष 2012-2014 के लिए भारत और मिस्र के बीच सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं वैज्ञानिक सहयोग के कार्यकारी कार्यक्रम	18.09.2012 04.03.2012		
15.	एल साल्वाडोर: विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार में सहयोग के लिए भारत गणराज्य सरकार और एल साल्वाडोर गणराज्य सरकार के बीच करार	21.08.2012		
16.	यूरोपीयन आयोग: सांख्यिकीय सहयोग के लिए केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय (सी एस ओ), सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार और यूरोपीयन आयोग (यूरोस्टैट) के बीच समझौता ज्ञापन	10.02.2012		
17.	यूरोपीय संघ: अनुसंधान एवं नवाचार सहयोग के लिए भारत और यूरोपीय संघ की संयुक्त घोषणा	10.02.2012		

परिशिष्ट I

क्र.स.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/अधिमिलन/स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
18.	फ्रांस: 1. "खाद्य संसाधन सेक्टर में सहयोग" के लिए प्रशासनिक करार 2. वर्ष 2012-2017 के लिए भारत गणराज्य के संस्कृति मंत्रालय और फ्रांस के लॉवरे म्यूजियम के बीच समझौता ज्ञापन 3. आई आई एस सी में एप्लाइड मैथमैटिक्स स्थापित करने के लिए सेंटर नेशनल डी ला रिसर्च साइंटिफिक (सी एन आर एस) और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के बीच समझौता ज्ञापन 4. चैन्नै में सूचना विज्ञान की अन्तर्राष्ट्रीय संयुक्त प्रयोगशाला की स्थापना के लिए चैन्नै गणितीय संस्थान, गणितीय विज्ञान संस्थान और आई आई एस सी के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर 5. सतत शहरी विकास के क्षेत्र में करार 6. भारत के संस्कृति मंत्रालय और फ्रांस के बीच सांस्कृतिक सहयोग को और सुदृढ़ करने के लिए संकल्प की घोषणा	24.10.2012 03.02.2012 12.01.2012 12.01.2012 3-6.10.2012 26.10.2012		24.10.2012
19.	फिनलैंड: भारत गणराज्य और फिनलैंड गणराज्य के बीच सामाजिक सुरक्षा के लिए करार	12.06.2012		
20.	जर्मनी: सतत शहरी विकास के क्षेत्र में भारत गणराज्य के शहरी विकास मंत्रालय और जर्मनी संघीय गणराज्य के परिवहन, भवन एवं शहरी विकास मंत्रालय के बीच संयुक्त घोषणा	10.04.2012		10.04.2012
21.	इजराइल: 1. एक दूसरे देशों के नागरिकों के पारस्परिक प्रत्यर्पण के लिए भारत और इजराइल के बीच करार 2. सजायाफ्ता व्यक्तियों के हस्तांतरण के लिए भारत और इजराइल के बीच करार 3. वस्त्र एवं परिधान के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत गणराज्य के वस्त्र मंत्रालय और इजराइल राज्य के उद्योग, व्यवसाय एवं श्रम मंत्रालय के बीच संकल्प-पत्र 4. परिधान क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत और इजराइल के बीच समझौता ज्ञापन	10.01.2012 10.01.2012 05.09.2012 05.09.2012		

परिशिष्ट I

क्र.स.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/अधिभिलन/स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
	5 जल प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत गणराज्य के शहरी विकास मंत्रालय और इजराइल राज्य के उद्योग, व्यवसाय एवं श्रम मंत्रालय के बीच संयुक्त घोषणा	13.02.2012		
22.	इटली: सजायाफ्ता व्यक्तियों के हस्तांतरण के लिए इटली गणराज्य की सरकार और भारत गणराज्य की सरकार के बीच करार	10.08.2012		
23.	जमाइका: 1. जमाइका में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों की उन्नति और विकास में सहयोग के लिए राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम, भारत और जमाइका व्यापार विकास सहयोग के बीच समझौता ज्ञापन 2. भारतीय विद्या/गाँधी अध्ययन पर आई सी सी आर पीठ को स्थापित करने के लिए भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद और वेस्टइंडीज विश्व विद्यालय के बीच समझौता ज्ञापन	20.02.2012 30.08.2012		
24.	जापान: 1. सामाजिक सुरक्षा के लिए भारत और जापान के बीच करार 2. भारत में रेयर अर्थ्स इंडस्ट्री में सहयोग के लिए भारत के परमाणु और ऊर्जा विभाग तथा जापान के आर्थिक, व्यापार व उद्योग मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन	16.11.2012 16.11.2012		
25.	लीबिया: 1. इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में पारस्परिक सहयोग के लिए भारत और लीबिया के बीच समझौता ज्ञापन	30.11.2012		
26.	मलेशिया: 1. अपराधिक मामलों में पारस्परिक सहायता के लिए भारत गणराज्य सरकार और मलेशिया सरकार के बीच संधि 2. आय पर करों से संबंधित दोहरे कराधान और वित्तीय अपवंचना से बचाव के लिए भारत सरकार और मलेशिया सरकार के बीच करार	12.03.2012 09.05.2012		26.12.2012
27.	मालदीव: राष्ट्रीय पुलिस अकादमी की स्थापना के लिए भारत गणराज्य की सरकार और मालदीव की सरकार के बीच समझौता ज्ञापन	26.11.2012		

परिशिष्ट I

क्र.स.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/अधिभिलन/स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
28.	मॉरीशस: 1. वस्त्र और परिधान के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत के वस्त्र मंत्रालय और मॉरीशस के उद्योग, उपभोक्ता संरक्षण मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन 2. राष्ट्रीय विज्ञान संग्राहलय परिषद के माध्यम से भारत सरकार और राजीव गांधी विज्ञान केन्द्र ट्रस्ट फंड के माध्यम से मॉरीशस सरकार के बीच समझौता ज्ञापन 3. विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी सहयोग के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार तथा मॉरीशस अनुसंधान परिषद, मॉरीशस के बीच समझौता ज्ञापन 4. शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत सरकार और मॉरीशस सरकार के बीच कार्यक्रम आदान-प्रदान 5. खेलकूद और युवा मामलों के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत सरकार के युवा मामलों का मंत्रालय और मॉरीशस सरकार के युवा एवं खेलकूद मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन 6. पर्यवेक्षण सहयोग एवं पर्यवेक्षण सूचना के आदान-प्रदान के लिए रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया और बैंक ऑफ मॉरीशस के बीच समझौता ज्ञापन 7. मॉरीशस में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए मॉरीशस सरकार के कला एवं संस्कृति मंत्रालय, हिंदी भाषी संघ और नैनीताल की आधारशिला के बीच समझौता ज्ञापन	07.02.2012 07.02.2012 07.02.2012 07.02.2012 07.02.2012 07.02.2012 07.02.2012		07.02.2012
29.	माली: भूविज्ञान एवं खनिज संसाधनों के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत और माली के बीच समझौता ज्ञापन	11.01.2012		
30.	मैक्सिको: 1. संयुक्त मैक्सिकन राज्यों की सरकार के स्वास्थ्य सचिवालय और आयुष विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत गणराज्य सरकार के बीच स्वास्थ्य के विषय में परम्परागत दवा के क्षेत्र में सहयोग के लिए संकल्प पत्र 2. सीमाशुल्क मामलों में पारस्परिक प्रशासनिक सहायता के लिए भारत गणराज्य की सरकार और संघीय मैक्सिकन राज्यों की सरकार के बीच करार	15.10.2012 10.08.2012		

परिशिष्ट I

क्र.स.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/अधिमिलन/स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
31.	मोनाको: कर मामलों से संबंधित सूचना के आदान-प्रदान के लिए भारत गणराज्य की सरकार और मोनाको प्रिंसीपेलिटी की सरकार के बीच करार	31.07.2012		
32.	मोजाम्बिक: सुरक्षा के क्षेत्र में पारस्परिक सहयोग पर करार	14.07.2012		
33.	म्यांमा: 1. भारत-म्यांमा सीमा क्षेत्र विकास के लिए भारत सरकार और म्यांमा सरकार के बीच समझौता ज्ञापन 2. हवाई सेवाओं के लिए भारत गणराज्य की सरकार और म्यांमा संघ गणराज्य की सरकार के बीच समझौता ज्ञापन 3. सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान म्यांमा स्थापित करने के लिए भारत गणराज्य की सरकार और म्यांमा संघ गणराज्य की सरकार के बीच समझौता ज्ञापन 4. येजिन कृषि विश्व विद्यालय, ने प्यी ताव, म्यांमा में कृषि अनुसंधान और शिक्षा के लिए उन्नत केन्द्र स्थापित करने के लिए भारत गणराज्य की सरकार और म्यांमा संघ गणराज्य की सरकार के बीच समझौता ज्ञापन 5. कृषि अनुसंधान विभाग ने प्यी ताव, म्यांमा में राइस बायोपार्क की स्थापना के लिए भारत गणराज्य की सरकार और म्यांमा संघ गणराज्य की सरकार के बीच समझौता ज्ञापन 6. भारत और म्यांमा सीमा के बीच सीमा हाटों की स्थापना हेतु भारत और म्यांमा के बीच समझौता ज्ञापन 7. सांस्कृतिक कार्यक्रम के आदान-प्रदान के लिए भारत और म्यांमा के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर 8. संयुक्त व्यापार एवं निवेश फोरम स्थापित करने के लिए भारत के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय तथा म्यांमा के वाणिज्य मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन 9. रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (आई डी एस ए) और म्यांमा इंस्टीट्यूट ऑफ स्ट्रेटेजिक एण्ड इंटरनेशनल स्टडीज (एम आई एस आई एस) के बीच सहयोग पर समझौता ज्ञापन	28.05.2012 28.05.2012 28.05.2012 28.05.2012 28.05.2012 28.05.2012 28.05.2012 28.05.2012		

परिशिष्ट I

क्र.स.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/अधिमिलन/स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
	10. कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता तथा डेगन विश्वविद्यालय यंगोन के बीच समझौता ज्ञापन के बारे में भारत और म्यांमा के बीच समझौता ज्ञापन 11. भारतीय आयात-निर्यात बैंक और म्यांमा व्यापार बैंक के बीच 500 अमरीकी डॉलर क्रेडिट लाइन के संबंध में समझौता ज्ञापन 12. विश्व मामलों की भारतीय परिषद (आई सी डब्ल्यू ए) और म्यांमा सामरिक एवं अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन (एम आई एस आई एस) के बीच समझौता ज्ञापन 13. म्यांमा-भारत सीमा के साथ म्यांमा में रही-टिड्डम सड़क निर्माण/उन्नयन में सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन	28.05.2012 28.05.2012 28.05.2012 14.12.2012		
34.	नीदरलैण्ड: 1. आय और पूँजी पर कर के संबंध में राजकोषीय अपवंचन को रोकने के लिए और दोहरे कराधान से बचने के लिए भारत गणराज्य तथा नीदरलैण्ड अधिराज्य के बीच प्रोटोकॉल संशोधन अभिसमय 2. खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत गणराज्य के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय से खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण तथा नीदरलैण्ड अधिराज्य के आर्थिक मामलों, कृषि और नवाचार मंत्रालय से खाद्य एवं उपभोक्ता उत्पाद सुरक्षा प्राधिकरण के बीच समझौता ज्ञापन 3. भारत सरकार के भारी उद्योग विभाग और नीदरलैण्ड अधिराज्य के आर्थिक मामलों, कृषि एवं नवाचार मंत्रालय के संकल्प की संयुक्त घोषणा	10.05.2015 30.11.2012 19.04.2012		
35.	नियू: भारत और नियू के बीच राजनयिक संबंधों को स्थापित करने संबंधी संयुक्त विज्ञप्ति	30.08.2012		
36.	पाकिस्तान: 1. भारत और पाकिस्तान के बीच वीजा करार 2. सांस्कृतिक सहयोग पर भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद और पाकिस्तान नेशनल काउंसिल ऑफ द आर्ट्स के बीच समझौता ज्ञापन	08.09.2012 08.09.2012		

परिशिष्ट I

क्र.स.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/अधिमिलन/स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
37.	फिलीस्तीन: 1. असेरा अल शामिल यह में बालिकाओं के लिए जवाहर लाल नेहरू माध्यमिक विद्यालय तथा आबू डीस में बालकों के लिए जवाहर लाल नेहरू माध्यमिक विद्यालय के लिए निर्माण व सज्जित करने के लिए भारत और फिलिस्तीन के बीच समझौता ज्ञापन 2. फिलीस्तीन में श्रमिक व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र मंत्रालय हेतु तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षण प्रशिक्षण सामान तथा प्रशिक्षण सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए भारत और फिलिस्तीन के बीच समझौता ज्ञापन 3. आई सी टी में भारत-फिलीस्तीन उत्कृष्टता केन्द्र स्थापित करने के लिए भारत और फिलीस्तीन के बीच समझौता ज्ञापन	11.09.2012 11.09.2012 11.09.2012		
38.	पेरू: 1. भूविज्ञान एवं खनिज संसाधनों के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत गणराज्य और पेरू गणराज्य के बीच समझौता ज्ञापन 2. सूचना प्रौद्योगिकी उत्कृष्टता केन्द्र (सी ई आई टी) की स्थापना के लिए भारत गणराज्य की सरकार और पेरू गणराज्य की सरकार के बीच समझौता ज्ञापन	13.07.2012 13.07.2012		
39.	पोलैण्ड: श्रव्य दृश्य सह-उत्पादन पर भारत गणराज्य की सरकार और पोलैण्ड गणराज्य की सरकार के बीच करार	04.07.2012		
40.	कतर: भारत सरकार और कतर सरकार के बीच सांस्कृतिक करार	09.04.2012		
41.	रोमानिया: शांतिपूर्ण प्रयोजन के लिए नाभिकीय गतिविधियों के नियंत्रण के क्षेत्र में सूचना एवं सहयोग के आदान-प्रदान हेतु भारत के परमाणु ऊर्जा विनियामक बोर्ड और रोमानिया के राष्ट्रीय नाभिकीय गतिविधियां नियंत्रण राष्ट्रीय आयोग के बीच समझौता ज्ञापन	19.09.2012		
42.	रूसीसंघ: 1. कूडानकुलम साइट पर अतिरिक्त नाभिकीय पावर प्लांट यूनिट के निर्माण के साथ साथ भारत में नए स्थानों पर रूसी डिजाइन के नाभिकीय पावर प्लांटों के निर्माण के लिए सहयोग पर भारत और रूस के बीच दिनांक 05.12.08 के करार से संबंधित प्रोटोकॉल	17.07.2012		

परिशिष्ट I

क्र.स.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/अधिमिलन/स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
	2. व्यापार एवं आर्थिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी और सांस्कृतिक सहयोग पर भारत रूस अंतर सरकारी आयोग के XVIII सत्र का प्रोटोकॉल 3. भारत गणराज्य को रसियन ग्लोबल नेवीगेशन सैटेलाइट सिस्टम, ग्लोनास के हाई प्रीसीशन सिगनल की सुविधा प्रदान करने के लिए भारत गणराज्य और रूसी संघ की सरकार के बीच करार 4. वर्ष 2013-2014 की अवधि के लिए परामर्श हेतु भारत गणराज्य के विदेश मंत्रालय और रूसी संघ के विदेश मंत्रालय के बीच प्रोटोकॉल 5. विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार पर भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा रूसी संघ के शिक्षा और विज्ञान मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन 6. वर्ष 2013-2015 के लिए भारत गणराज्य के संस्कृति मंत्रालय और रूसी संघ के संस्कृति मंत्रालय के बीच सांस्कृतिक कार्यक्रम का आदान-प्रदान 7. सीधे निवेश को बढ़ावा देने के लिए रूस और भारत के बीच समझौता ज्ञापन 8. सैटेलाइट आधारित नेवीगेशन सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए पायलट प्रोजेक्ट के माध्यम से प्रूफ ऑफ कंसेप्ट कंडक्ट करने के लिए बीएसएनएल, भारत एवं एमटीएनएल, भारत और जेएससी नेवीगेशन इनफॉर्मेशन सिस्टम (एन आई एस ग्लोनास) मास्को, रूस के बीच समझौता ज्ञापन	15.10.2012 21.12.2012 24.12.2012 24.12.2012 24.12.2012 24.12.2012 24.12.2012	23.11.2012	
43.	रवांडा: 1. भारत और रवांडा के बीच संयुक्त आयोग की स्थापना 2. भारत-रवांडा नवीकरणीय ऊर्जा सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन 3. ग्रामीण विद्यालयों में विद्युतीकरण के लिए भारत रवांडा के बीच समझौता ज्ञापन	15.02.2012 15.02.2012 15.02.2012		
44.	स्पेन: 1. रक्षा सहयोग पर समझौता ज्ञापन 2. सड़क और सड़क परिवहन सेक्टर पर समझौता ज्ञापन 3. श्रव्य दृश्य सह-प्रस्तुति के क्षेत्र में भारत और स्पेन के बीच करार	26.10.2012 26.10.2012 26.10.2012		

परिशिष्ट I

क्र.स.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/अधिमिलन/स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
	4. रेलवे सेक्टर के क्षेत्र में तकनीकी सहयोग पर भारतीय रेल और स्पेन के रेनफेओपेराडोरा एवं एडिफ के बीच समझौता ज्ञापन 5. सड़क और सड़क परिवहन सेक्टर में सहयोग के लिए भारत गणराज्य सरकार के सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय और स्पेन अधिराज्य के द मिनिस्टेरियो डी फोमेंटो (लोक निर्माण एवं परिवहन मंत्रालय) के बीच समझौता ज्ञापन	26.10.2012 26.10.2012		
45.	सेशल्स: 1. तटीय निगरानी रडार प्रणाली उपलब्ध कराने के लिए भारत सरकार और सेशल्स सरकार के बीच समझौता ज्ञापन 2. पुलिस अनुसंधान और विकास कार्यालय द्वारा पुलिस अनुसंधान/प्रशिक्षण पर समझौता ज्ञापन 3. युवा मामले और खेलकूद मामलों में सहयोग पर समझौता ज्ञापन	14.02.2012 14.02.2012 14.02.2012		
46.	दक्षिण अफ्रीका: आय पर कर के संबंध में दोहरे कराधान से बचने और राजकोषीय अपवंचन रोकने के लिए के लिए भारत सरकार और दक्षिण अफ्रीकी सरकार के बीच करार में संशोधन संबंधी प्रोटोकॉल			
47.	दक्षिण कोरिया: भारत और कोरिया के बीच वीजा प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए करार	25.03.2012		
48.	सिंगापुर: व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत और सिंगापुर के बीच समझौता ज्ञापन	11.07.2012		11.11.2012
49.	श्रीलंका: 1. अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध संग्रहालय, श्रीलंका, केण्डी, श्रीलंका गणराज्य और भारत गणराज्य के राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद के बीच समझौता ज्ञापन 2. श्रीलंका में पिपरहना से प्राप्त कपिलवस्तु अवशेष के प्रदर्शन के आयोजन के बारे में भारत और श्रीलंका के बीच करार 3. वर्ष 2012-2016 के लिए भारत और कोलंबिया के बीच सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आदान-प्रदान	अग. 2012 18.05.2012 12.03.2012		

परिशिष्ट I

क्र.स.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/अधिमिलन/स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
50.	ताजिकस्तान: 1. स्वास्थ्य एवं दवाओं के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत गणराज्य के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और ताजिकस्तान गणराज्य के स्वास्थ्य मंत्रालय के बीच करार 2. खेलकूद और युवा मामलों में सहयोग पर भारत और ताजिकस्तान के बीच समझौता ज्ञापन 3. सामाजिक एवं श्रमिक संबंध के क्षेत्र में सहयोग के लिए ताजिकस्तान गणराज्य के श्रम व सामाजिक सुरक्षा मंत्रालय और भारत गणराज्य के श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के बीच करार 4. वर्ष 2012-2015 के लिए संस्कृति एवं कला के क्षेत्र में ताजिकस्तान गणराज्य के संस्कृति मंत्रालय और भारत गणराज्य के संस्कृति मंत्रालय के बीच सहयोगी कार्यक्रम 5. शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत गणराज्य की सरकार और ताजिकस्तान गणराज्य की सरकार के बीच कार्यक्रमों के आदान-प्रदान पर करार 6. वस्त्रों के क्षेत्र में सहयोग पर ताजिकस्तान गणराज्य के ऊर्जा व उद्योग मंत्रालय के बीच करार 7. ताजिकस्तान के डब्ल्यू टी ओ में आगमन पर भारत और ताजिकस्तान के बीच द्विपक्षीय वार्ता का प्रोटोकॉल	03.09.2012 03.09.2012 03.09.2012 03.09.2012 03.09.2012 03.08.2012		03.09.2012
51.	थाइलैण्ड: 1. भारत और थाइलैण्ड के बीच मुक्त व्यापार क्षेत्र के लिए करार में ढांचागत संशोधन करने के लिए द्वितीय प्रोटोकॉल 2. वर्ष 2012-2014 के लिए भारत और थाइलैण्ड के बीच सांस्कृतिक कार्यकारी कार्यक्रमों का आदान-प्रदान	25.01.2012 25.01.2012		01.04.2012
52.	त्रिनिडाड और टोबागो: 1. भारत गणराज्य की सरकार तथा त्रिनिडाड और टोबागो गणराज्य की सरकार के बीच, सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के शिक्षा, हवाई सेवाओं, द्विपक्षीय हवाई सेवाओं पर तकनीकी सहयोग के लिए पर करार 2. परम्परागत भारतीय दवाओं में सहयोग पर समझौता ज्ञापन 3. वेस्ट इंडीज विश्वविद्यालय में आयुर्वेद पीठ की स्थापना के लिए समझौता ज्ञापन 4. हिंदी और भारतीय अध्ययन के लिए आई सी सी आर की पीठ स्थापित करने के लिए समझौता ज्ञापन	06.01.2012 06.01.2012 06.01.2012 04.09.2012		

परिशिष्ट I

क्र.स.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/अधिमिलन/स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
53.	टर्की: भारत और टर्की के बीच समझौता ज्ञापन	15.06.2012		
54.	यूक्रेन: 1. रक्षा क्षेत्र में सहयोग पर भारत गणराज्य की सरकार और यूक्रेन के कबीना मंत्रियों के बीच करार 2. विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग पर भारत गणराज्य की सरकार और यूक्रेन की सरकार के बीच करार 3. भारत और यूक्रेन के बीच सिविल एवं वाणिज्यिक मामलों में पारस्परिक विधिक सहायता पर संधि 4. तकनीकी सूचना के आदान-प्रदान और नाभिकीय सुरक्षा एवं रेडिएशन से बचाव पर सहयोग के लिए भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा नियंत्रण बोर्ड तथा यूक्रेन के राज्य नाभिकीय नियंत्रक निरीक्षक के बीच करार 5. मानकीकरण, समनुरूपता निर्धारण एवं गुणवत्ता के क्षेत्र में ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड और यूक्रेन के आर्थिक विकास व उद्योग मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन	10.12.2012 10.12.2012 10.12.2012 10.12.2012 10.12.2012		
55.	संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम: भारत सरकार और संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू एन डी पी) के बीच भागीदारी ढांचागत करार	14.03.2012		14.03.2012
56.	यूनाइटेड किंगडम: शहरी पुनरुद्धार एवं विकास में सहयोग पर भारत के शहरी विकास मंत्रालय और यूनाइटेड किंगडम ग्रेट ब्रिटेन व उत्तरी आयरलैंड के व्यापार नवाचार व कौशल विभाग के बीच समझौता ज्ञापन	19.09.2012		
57.	संयुक्त अरब अमीरात: 1. सीमाकर मामलों में पारस्परिक सहायता और सहयोग पर भारत गणराज्य की सरकार तथा संयुक्त अरब अमीरात की सरकार के बीच करार 2. किंग्स कॉलेज के भारतीय संस्थान में टैगोर सेंटर फॉर ग्लोबल थॉट की स्थापना के लिए संस्कृति मंत्रालय और किंग्स कॉलेज के बीच करार 3. मि.विलियम हेग, यूनाइटेड किंगडम के विदेश मंत्री की दिल्ली यात्रा के दौरान साइबर समस्याओं पर जारी संयुक्त वक्तव्य	01.04.2012 15.06.2012 08.11.2012		

परिशिष्ट I

क्र.स.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/अधिमिलन/स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
58.	संयुक्त राज्य अमरीका: 1. श्रम सहयोग के संबंध में भारत गणराज्य के श्रम और रोजगार मंत्रालय तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के श्रम विभाग के बीच समझौता ज्ञापन 2. आय और पूँजी पर कर के संबंध में राजकोषीय-अपवंचन रोकने और दोहरे कराधान से बचने के लिए भारत सरकार एवं संयुक्त अरब अमीरात सरकार के बीच करार संशोधन विषयक द्वितीय प्रोटोकॉल 3. कौशल विकास, युवाओं को रोजगार, व्यावसायिक सुरक्षा व स्वास्थ्य तथा खान सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत एवं संयुक्त राज्य अमरीका के बीच समझौता ज्ञापन 4. लमेटा निर्माण से परवर्ती खटीमय महाद्वीपीय टैट्रापौड जीवाश्मों के अध्ययन के लिए ज्योलोजीकल सर्वे ऑफ इंडिया, खान मंत्रालय और जीवाश्म विज्ञान संग्रहालय, मिशगन विश्वविद्यालय के बीच संयुक्त सहयोगात्मक कार्यक्रम के लिए समझौता ज्ञापन	02.02.2012 16.04.2012 02.02.2012 27.02.2012		02.02.2012
59.	मैक्सिकन राज्य संघ: वर्ष 2102-2015 की अवधि के लिए संस्कृति के क्षेत्र में भारत और मैक्सिकन राज्य संघ के बीच सहयोग के लिए कार्यक्रम	16.04.2012		
60.	उजबेकिस्तान: 1. आय पर कर के संबंध में राजकोषीय अपवंचन रोकने के लिए एवं दोहरे कराधान से बचने के लिए भारत गणराज्य की सरकार और उजबेकिस्तान गणराज्य की सरकार के बीच करार में संशोधन संबंधी प्रोटोकॉल 2. वस्त्र, परिधान एवं फैशन उद्योग के क्षेत्र में सहयोग पर भारत के कपड़ा मंत्रालय और उजबेकिस्तान गणराज्य के विदेश आर्थिक मामले, निवेश एवं व्यापार मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन	11.04.2012 18.05.2011		20.10.2012 18.05.2011

परिशिष्ट II

जनवरी 2012 से दिसम्बर 2012 तक की अवधि के दौरान जारी किए गए पूर्ण अधिकार के दस्तावेज

क्रम स.	अभिसमय / संधि	पूर्ण अधिकार की तिथि
1.	सीमाशुल्क मामलों में सहयोग एवं पारस्परिक सहायता के लिए भारत गणराज्य की सरकार और संयुक्त अरब अमीरात की सरकार के बीच करार	06.01.2012
2.	कर मामलों में पारस्परिक प्रशासनिक सहायता पर अभिसमय संशोधन से संबंधित नयाचार द्वारा यथासंशोधित कर मामलों पर पारस्परिक प्रशासनिक सहायता अभिसमय	18.01.2012
3.	आय पर कर के संबंध में वित्तीय अपवंचन रोकने और दोहरे कराधान से बचने के लिए रोमानिया तथा भारत गणराज्य की सरकार के बीच करार	13.02.2012
4.	आपराधिक मामलों में पारस्परिक सहायता के लिए भारत गणराज्य की सरकार और मलेशिया की सरकार के बीच संधि	29.02.2012
5.	कर मामलों से संबंधित सूचना के आदान-प्रदान के लिए भारत गणराज्य की सरकार और पिंसीपेलिट्टी ऑफ मोनाको की सरकार के बीच करार	29.02.2012
6.	आय पर कर के संबंध में वित्तीय अपवंचन रोकने एवं दोहरे कराधान से बचने के लिए भारत गणराज्य की सरकार और मलेशिया की सरकार के बीच करार	16.03.2012
7.	आय और पूँजी पर कर के संबंध में वित्तीय अपवंचन रोकने एवं दोहरे कराधान से बचने के लिए भारत गणराज्य और नीदरलैंड अधिराज्य के बीच अभिसमय संशोधन नयाचार	16.03.2012
8.	आय पर कर के संबंध में वित्तीय अपवंचन रोकने और दोहरे कराधान से बचने के लिए भारत गणराज्य की सरकार तथा उजबेकिस्तान गणराज्य की सरकार के बीच करार संशोधन नयाचार	03.04.2012
9.	आय और पूँजी पर कर के संबंध में वित्तीय अपवंचन रोकने के लिए तथा दोहरे कराधान से बचने के लिए भारत गणराज्य की सरकार और संयुक्त अरब अमीरात की सरकार के बीच करार संशोधन संबंधी द्वितीय नयाचार	13.04.2012
10.	भारत गणराज्य और फिनलैंड गणराज्य के बीच सामाजिक सुरक्षा पर करार	23.05.2012
11.	श्रव्य दृश्य सह-प्रस्तुति पर भारत गणराज्य की सरकार और पोलैंड गणराज्य की सरकार के बीच करार	25.05.2012
12.	करों से संबंधित सूचना के आदान-प्रदान के लिए भारत गणराज्य की सरकार और बहरीन साम्राज्य की सरकार के बीच करार	31.05.2012
13.	सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग पर भारत गणराज्य की सरकार और बहरीन साम्राज्य की सरकार के बीच समझौता ज्ञापन	05.07.2012
14.	आय और पूँजी पर कर के संबंध में वित्तीय अपवंचन रोकने एवं दोहरे कराधान से बचने के लिए भारत गणराज्य की सरकार और अल्बानिया गणराज्य के मंत्रियों की परिषद के बीच करार	05.07.2012
15.	सीमाशुल्क मामलों पर सहयोग और पारस्परिक सहायता के लिए भारत गणराज्य की सरकार तथा मलेशिया की सरकार के बीच समझौता ज्ञापन	09.07.2012
16.	भारत गणराज्य के रेल मंत्रालय और बेल्जियम अधिराज्य के गतिशीलता मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन	31.07.2012
17.	सजायाता व्यक्तियों के हस्तांतरण पर इटली गणराज्य की सरकार और भारत गणराज्य की सरकार के बीच करार	01.08.2012

परिशिष्ट II

क्रम स.	अभिसमय / संधि	पूर्ण अधिकार की तिथि
18.	आय पर कर से संबंधित वित्तीय अपवंचन रोकने तथा दोहरे कराधान से बचने के लिए भारत गणराज्य की सरकार और फिजी गणराज्य की सरकार के बीच करार	22.08.2012
19.	सीमाशुल्क मामलों में पारस्परिक प्रशासनिक सहायता पर भारत गणराज्य की सरकार और संयुक्त मैक्सिकन राज्य की सरकार के बीच करार	10.09.2012
20.	सीमाशुल्क मामलों में पारस्परिक सहायता पर भारत गणराज्य की सरकार और पाकिस्तान इस्लामिक गणराज्य की सरकार के बीच करार	18.09.2012
21.	व्यापारिक शिकायतों के निवारण पर भारत गणराज्य की सरकार और पाकिस्तान इस्लामिक गणराज्य की सरकार के बीच करार	18.09.2012
22.	सतत शहरी विकास के क्षेत्र में सहयोग पर भारत गणराज्य की सरकार और फ्रांस गणराज्य की सरकार के बीच करार	02.10.2012
23.	भारत गणराज्य और स्वीडन के अधिराज्य के बीच सामाजिक सुरक्षा पर करार	16.10.2012
24.	भारत गणराज्य के खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों और फ्रांस गणराज्य के कृषि, खाद्य, मत्स्य, ग्रामीण मामले एवं स्थानिक योजना मंत्रालय के बीच प्रशासनिक करार	16.10.2012
25.	आय और पूँजी पर कर से संबंधित वित्तीय अपवंचन रोकने तथा दोहरे कराधान से बचने के लिए भारत गणराज्य की सरकार और स्पेन अधिराज्य की सरकार के बीच अभिसमय एवं नयाचार में संशोधन संबंधी नयाचार	25.10.2012
26.	आय और पूँजी लाभ पर कर के संबंध में वित्तीय अपवंचन रोकने तथा दोहरे कराधान से बचने के लिए भारत गणराज्य की सरकार और ग्रेट ब्रिटेन एवं उत्तरी आयरलैंड के यूनाइटेड किंगडम की सरकार के बीच अभिसमय संशोधन नयाचार	25.10.2012
27.	भारत गणराज्य और कनाडा के बीच सामाजिक सुरक्षा पर करार	30.10.2012
28.	कोरिया गणराज्य के रणनीति और वित्त मंत्रालय तथा भारत गणराज्य के वित्त मंत्रालय के बीच सहयोग पर समझौता ज्ञापन	01.11.2012
29.	आय पर कर संबंध में वित्तीय अपवंचन रोकने तथा दोहरे कराधान से बचने के लिए भारत गणराज्य की सरकार और दक्षिण अफ्रीकी सरकार के बीच करार संशोधन नयाचार	05.11.2012
30.	सूचना संचार प्रौद्योगिकी एवं इलैक्ट्रॉनिक्स में सहयोग पर कनाडा के उद्योग विभाग और भारत गणराज्य के संचार और सूचना संचार प्रौद्योगिकी मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन	05.11.2012
31.	सीमाशुल्क मामलों पर सहयोग एवं पारस्परिक सहायता के लिए भारत गणराज्य की सरकार और मलेशिया की सरकार के बीच समझौता ज्ञापन	20.11.2012
32.	सीमाशुल्क मामलों पर सहयोग एवं पारस्परिक सहायता के लिए भारत गणराज्य की सरकार और तुर्की गणराज्य की सरकार के बीच करार	14.12.2012

परिशिष्ट III

जनवरी 2012 से दिसम्बर 2012 तक की अवधि के दौरान जारी किए गए अनुसमर्थन/अधिमिलन दस्तावेज

क्रम स.	अनुसमर्थन/अधिमिलन दस्तावेज	अनुसमर्थन जारी करने की तारीख
1.	ड्रग माँग में छूट एवं नारकोटिक ड्रग्स, साइकोट्रोपिक पदार्थों तथा प्रीकर्सर रसायनों व संबंधित मामलों पर भारत गणराज्य की सरकार और पाकिस्तान इस्लामिक गणराज्य की सरकार के बीच समझौता ज्ञापन	23.01.2012
2.	कर मामलों में पारस्परिक प्रशासनिक सहायता अभिसमय में नयाचार द्वारा संशोधन कर मामलों में पारस्परिक प्रशासनिक सहायता के लिए यथासंयोजित अभिसमय	02.02.2012
3.	सिविल मामलों में पारस्परिक विधिक सहायता पर भारत गणराज्य और कजाखस्तान गणराज्य के बीच संधि	29.02.2012
4.	भारत गणराज्य और थाइलैण्ड अधिराज्य के बीच मुक्त व्यापार क्षेत्र के लिए ढाँचागत करार में संशोधन हेतु द्वितीय नयाचार	01.03.2012
5.	फ्रांस गणराज्य की सरकार और भारत गणराज्य की सरकार के बीच नाभिकीय ऊर्जा के शांतिपूर्ण प्रयोग के विकास पर बौद्धिक संपदा अधिकार संबंधी करार	02.03.2012
6.	ड्रग माँग में छूट एवं नारकोटिक ड्रग्स, साइकोट्रोपिक पदार्थों तथा प्रीकर्सर रसायनों व संबंधित मामलों पर भारत गणराज्य की सरकार और कुवैत राज्य की सरकार के बीच करार	15.03.2012
7.	दंडित व्यक्तियों के हस्तांतरण पर भारत सरकार और इजराइल राज्य की सरकार के बीच करार	15.03.2012
8.	दक्षिण एशिया में सौहार्द और सहयोग संधि में संशोधन संबंधी तृतीय नयाचार	27.03.2012
9.	आपराधिक मामलों में पारस्परिक सहायता पर भारत गणराज्य की सरकार और मलेशियाई सरकार के बीच संधि	27.04.2012
10.	सीमाशुल्क मामलों में सहयोग और पारस्परिक सहायता पर भारत गणराज्य की सरकार तथा संयुक्त अरब अमीरात की सरकार के बीच करार	27.04.2012
11.	दण्डादेशित व्यक्तियों के हस्तांतरण पर भारत गणराज्य की सरकार और संयुक्त अरब अमीरात गणराज्य की सरकार के बीच करार	18.05.2012
12.	समनुरूपता निर्धारण की स्वीकृति के लिए बहुपक्षीय व्यवस्था पर सार्क करार	04.06.2012
13.	क्षेत्रीय मानकों को लागू करने पर सार्क करार	04.06.2012
14.	सामाजिक सुरक्षा पर भारत गणराज्य और हंगरी गणराज्य के बीच करार	05.06.2012
15.	सामाजिक सुरक्षा पर भारत गणराज्य और फिनलैण्ड गणराज्य के बीच करार	25.06.2012
16.	प्राकृतिक आपदा पर द्रुत प्रतिक्रिया हेतु सार्क करार	02.07.2012
17.	संयुक्त आयोग स्थापित करने के लिए भारत गणराज्य की सरकार और रवांडा गणराज्य की सरकार के बीच करार	07.08.2012
18.	श्रव्य-दृश्य सह-प्रस्तुति पर भारत गणराज्य की सरकार और पोलेण्ड गणराज्य की सरकार के बीच करार	07.08.2012
19.	दण्डादेशित व्यक्तियों के हस्तांतरण पर भारत गणराज्य की सरकार और मालदीव गणराज्य की सरकार के बीच करार	23.08.2012

परिशिष्ट III

क्रम स.	अनुसमर्थन/अधिमिलन दस्तावेज	अनुसमर्थन जारी करने की तारीख
20.	सार्क सीड बैंक स्थापित करने पर करार	29.08.2012
21.	कर मामलों में सूचना के आदान-प्रदान के लिए भारत गणराज्य की सरकार और प्रिंसीपेलिटी ऑफ मोनाको की सरकार के बीच करार	31.08.2012
22.	आय और पूँजी पर कर संबंधित वित्तीय अपवंचन रोकने और दोहरे कराधान से बचने के लिए भारत गणराज्य और नीदरलैण्ड अधिराज्य के बीच अभिसमय संशोधन नयाचार	31.08.2012
23.	जैविक विविधता अभिसमय के अनुसार आनुवंशिक संसाधनों की सुलभता और उनके उपयोग से प्राप्त लाभ की उचित व औचित्यपूर्ण हिस्सेदारी से संबंधित नागोया नयाचार	08.10.2012
24.	दण्डादेशित व्यक्तियों के हस्तांतरण पर भारत गणराज्य की सरकार और इटली गणराज्य की सरकार के बीच करार	16.11.2012
25.	आय और पूँजी पर कर से संबंधित वित्तीय अपवंचन रोकने और दोहरे कराधान से बचने के लिए भारत गणराज्य की सरकार तथा स्पेन अधिराज्य की सरकार के बीच अभिसमय और नयाचार में संशोधन के लिए भारत गणराज्य तथा स्पेन अधिराज्य के बीच नयाचार	16.11.2012
26.	सीमाशुल्क मामलों में सहयोग एवं पारस्परिक सहायता पर भारत गणराज्य की सरकार और पाकिस्तान इस्लामिक गणराज्य की सरकार के बीच करार	16.11.2012
27.	सीमाशुल्क मामलों में पारस्परिक प्रशासनिक सहायता के संबंध में भारत गणराज्य की सरकार तथा संयुक्त मैक्सिकन राज्य के बीच करार	16.11.2012
28.	भारतीय गणराज्य को रसियन ग्लोबल नेविगेशन सेटलाइट सिस्टम ग्लोनास के हाई प्रीसिजन सिगनल सुलभ कराने के प्रावधान के संबंध में भारतीय गणराज्य की सरकार तथा रूसी संघ की सरकार के बीच करार	23.11.2012

परिशिष्ट IV

आईटेक और स्काप देशों की सूची

आईटेक देशों की सूची

क्र.स.	देश	क्र.स.	देश
1	अफगानिस्तान	32	डोमिनिका राष्ट्रमंडल
2	अल्बानिया	33	कॉमोरोस
3	अल्जीरिया	34	कांगो
4	अंगोला	35	कुक्स आइलैण्ड
5	अंग्यूला	36	कोस्टा रिका
6	एंटीगुआ एण्ड बरबूडा	37	कोटे ड आइवोइर
7	अर्जेंटीना	38	चेक गणराज्य
8	अर्मेनिया	39	कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य
9	अजरबैजान	40	जीबोती
10	बहमास	41	डोमिनिकन गणराज्य
11	बहरीन	42	इक्वाडोर
12	बांग्लादेश	43	मिस्र
13	बारबाडोस	44	एल—सल्वाडोर
14	बेलारूस	45	इक्वेटोरियल गिनी
15	बेलीज	46	इरीट्रिया
16	बेनिन	47	इस्टोनिया
17	भूटान	48	इथियोपिया
18	बोलिविया	49	फिजी
19	बोस्निया—हर्जगोविना	50	गैबोन
20	ब्राजील	51	जॉर्जिया
21	ब्रूनी दारुशलम	52	ग्रेनाड
22	बुल्गारिया	53	ग्वाटेमाला
23	बुरुकिना फासो	54	गिनी
24	बुरुंडी	55	गिनी बिस्साउ
25	कम्बोडिया	56	गुयाना
26	केप वरडे द्वीप	57	हैती
27	कैमेन द्वीप	58	होंडुरास
28	मध्य अफ्रीकी गणराज्य	59	हंगरी
29	चाड	60	इंडोनेशिया
30	चिली	61	ईरान
31	कोलम्बिया	62	इराक

परिशिष्ट IV

क्र.स.	देश	क्र.स.	देश
63	जमैका	102	पोलैंड
64	जॉर्डन	103	कतर
65	कजाकस्तान	104	साओ तोमे गणराज्य
66	किरीबाती	105	रोमानिया
67	कोरिया (डी पी आर के)	106	रूस
68	किर्गिस्तान	107	रवाण्डा
69	लाओस	108	समोआ
70	लातविया	109	सेनेगल
71	लेबनान	110	सर्बिया
72	लिबेरिया	111	सिंगापुर
73	लीबिया	112	स्लोवाक गणराज्य
74	लिथुआनिया	113	सोलोमन द्वीप
75	मेसीडोनिया	114	सोमालिया
76	मैडागास्कर	115	श्रीलंका
77	मलेशिया	116	सेंट किट्स तथा नेविस
78	मालदीव	117	सेंट लूसिया
79	माली	118	सेंट विंसेंट तथा ग्रैनाडाइन्से
80	मार्शल द्वीप	119	सूडान
81	मौरीतानिया	120	दक्षिण सूडान
82	मैक्सिको	121	सूरीनाम
83	माइक्रोनेशिया	122	सीरिया
84	मोलडोवा	123	ताजिकिस्तान
85	मंगोलिया	124	थाइलैण्ड
86	मानटीनिग्रो	125	तिमोर लेस्ते
87	मांटसेराट	126	टोगो
88	मोरक्को	127	टोंगो
89	म्यांमा	128	ट्रिनिडाड तथा टोबैगो
90	नौरू	129	ट्यूनिशिया
91	नेपाल	130	टर्की
92	निकारागुआ	131	तुर्कमेनिस्तान
93	नाइजर	132	तुर्क तथा कैकोस द्वीप
94	ओमान	133	तुवालु
95	पलाऊ	134	यूक्रेन
96	फिलीस्तीन	135	उरुग्वे
97	पनामा	136	उज्बेकिस्तान
98	पापुआ न्यू गिनी	137	वानुआतू
99	पेरूग्वे	138	वेनेजुएला
100	पेरू	139	वियतनाम
101	फिलीपीन्स	140	यमन

परिशिष्ट IV

स्काप देशों की सूची

क्र.स.	देश	क्र.स.	देश
141	केमरुन	151	नाइजीरिया
142	केमरुन	152	सेशल्स
143	गम्बिया	153	सीरा लिओन
144	घाना	154	दक्षिण अफ्रीका
145	केन्या	155	स्वाजीलैण्ड
146	लेसोथो	156	तंजानिया
147	मलावी	157	युगांडा
148	मॉरीशस	158	जांबिया
149	मोजाम्बिक	159	जिम्बाबवे
150	नमीबिया		

परिशिष्ट V

पैनल में शामिल आइटेक/स्काप प्रशिक्षण संस्थानों की सूची

क्र.स. संस्थान का नाम	शहर
लेखा, लेखापरीक्षा, बैंकिंग एवं वित्त पाठ्यक्रम	
01. सरकारी लेखा एवं वित्त संस्थान	नई दिल्ली
02. अंतर्राष्ट्रीय सूचना एवं प्रणाली लेखा केन्द्र	नोएडा
03. राष्ट्रीय बैंक प्रबंधन संस्थान	पुणे
आई टी, दूरसंचार एवं अंग्रेजी पाठ्यक्रम	
04. एप्टेक लिमिटेड	नई दिल्ली
05. सेंटर फॉर डेवलेपमेंट ऑफ एडवांस कम्प्यूटिंग	मोहाली
06. सेंटर फॉर डेवलेपमेंट ऑफ एडवांस कम्प्यूटिंग	नोएडा
07. दूरसंचार प्रौद्योगिकी व प्रबंधन उत्कृष्टता केन्द्र	मुंबई
08. सी.एम.सी. लिमिटेड	नई दिल्ली
09. अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय	हैदराबाद
10. एन.आई.आई.टी. लिमिटेड	नई दिल्ली
11. यू.टी.एल. प्रौद्योगिकी लिमिटेड	बंगलौर
प्रबंधन पाठ्यक्रम	
12. भारत का प्रशासनिक स्टाफ कॉलेज	हैदराबाद
13. अनुप्रयुक्त मानव शक्ति अनुसंधान	दिल्ली
14. अंतर्राष्ट्रीय प्रबंधन संस्थान	नई दिल्ली
एसएमई/ग्रामीण विकास पाठ्यक्रम	
15. भारतीय उद्यमशीलता विकास संस्थान	अहमदाबाद
16. राष्ट्रीय उद्यमशीलता एवं लघु व्यापार विकास संस्थान	नोएडा
17. राष्ट्रीय सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्यम संस्थान	हैदराबाद
18. राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान	हैदराबाद
विशिष्ट पाठ्यक्रम	
19. संसदीय अध्ययन एवं प्रशिक्षण ब्यूरो	नई दिल्ली
20. मानव पुनर्वास प्रबंधन संस्थान	नई दिल्ली
21. भारतीय जनसंचार संस्थान	नई दिल्ली
22. अंतर्राष्ट्रीय सांख्यिकी शिक्षा केंद्र	कोलकाता
23. राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो	नई दिल्ली
24. राष्ट्रीय मानकीकरण प्रशिक्षण संस्थान (भारतीय मानक ब्यूरो)	नोएडा
25. राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान	चेन्नै
26. राष्ट्रीय शैक्षणिक योजना व प्रशासन विश्वविद्यालय	नई दिल्ली
27. पोस्टल स्टाफ कॉलेज	गाजियाबाद
28. विकासशील देशों के लिए अनुसंधान व सूचना प्रणाली	नई दिल्ली
29. वी. वी. गिरी राष्ट्रीय श्रम संस्थान	नोएडा

परिशिष्ट V

क्र.स. संस्थान का नाम	शहर
तकनीकी पाठ्यक्रम	
30. केंद्रीय उर्वरक गुणवत्ता नियंत्रण व प्रशिक्षण संस्थान	फरीदाबाद
31. केंद्रीय ग्रामीण विद्युतीकरण संस्थान	हैदराबाद
32. केंद्रीय औजार अभिकल्प संस्थान	हैदराबाद
33. केंद्रीय वैज्ञानिक यंत्र संगठन	नई दिल्ली
34. द्रव नियंत्रण अनुसंधान संस्थान	केरल
35. भारतीय भूविज्ञान सर्वेक्षण, प्रशिक्षण संस्थान	हैदराबाद
36. भारतीय उत्पाद प्रबंधन संस्थान	कंसबहल, उड़ीसा
37. भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान	देरहादून
38. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान	रूड़की, जल विज्ञान विभाग
39. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान व प्रबंधन विभाग	रूड़की, जल संसाधन विकास
40. राष्ट्रीय फार्मास्यूटिकल शिक्षा व अनुसंधान संस्थान	सास नगर, पंजाब
41. दक्षिण भारत कपड़ा अनुसंधान संघ	कोयंबटूर
पर्यावरण एवं नवीकरणीय ऊर्जा पाठ्यक्रम	
42. वैकल्पिक जल ऊर्जा केंद्र, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान,	रूड़की
43. बेयरफुट कॉलेज	तिलोनिया, राजस्थान
44. पवन ऊर्जा प्रौद्योगिकी केंद्र	चेन्नै
45. भारतीय विज्ञान संस्थान	बंगलुरु
46. सौर ऊर्जा केंद्र	गुडगांव
47. टीईआरआई (ऊर्जा व संसाधन संस्थान)	नई दिल्ली

परिशिष्ट VI

वर्ष 2012-13 की अवधि के दौरान नियोजन तथा अनुसंधान प्रभाग द्वारा आंशिक अथवा पूर्ण रूप से वित्तपोषित विश्वविद्यालयों/संस्थानों द्वारा आयोजित/संचालित सम्मेलन/संगोष्ठियां/अध्ययन परियोजनाएँ

क्र.स.	परियोजना का ब्यौरा	संस्थान
1	कोलकाता विश्वविद्यालय परिसर, अलीपुर, कोलकाता, में विदेशनीति अध्ययन संस्थान को आवर्ती अनुदान	कलकत्ता विश्व विद्यालय, कोलकाता
2	डॉ. बालदास घोषाल द्वारा "भारत म्यांमार संबंध: विवेचनात्मक मूल्यांकन एवं नीति संस्तुति" विषय पर अध्ययन परियोजना	इंस्टीट्यूट ऑफ पीस एण्ड कनफ्लिक्ट स्टडीज, नई दिल्ली
3	आई डी एस ए द्वारा गिलगिल बाल्टीस्तान के साथ पीओके के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र में बेहतर समझदारी के लिए संस्थागत आधार के विकास हेतु सतत अनुसंधान परियोजना	आई डी एस ए, नई दिल्ली
4	कनाडियन, यूएस एवं लातिन अमेरिका अध्ययन केन्द्र द्वारा "21 वीं शताब्दी में भारत-अमेरिकी सहसंबंध निर्माण में चुनौतियां" विषय पर आयोजित संगोष्ठी	जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

परिशिष्ट VII

जनवरी से दिसम्बर, 2012 के दौरान प्राप्त हुए पासपोर्ट आवेदन पत्रों और जारी किए गए पासपोर्टों, कुल प्राप्त विविध आवेदनों एवं प्रदत्त सेवाओं, जारी किए गए पासपोर्टों के साथ तत्काल योजना के तहत राजस्व और पासपोर्ट कार्यालयों का कुल राजस्व और व्यय दर्शाने वाला विवरण।

01 जनवरी से 31 दिसम्बर, 2012 के दौरान पासपोर्ट कार्यालयों द्वारा प्रदत्त पासपोर्ट सेवाओं की संख्या दर्शाने वाला विवरण।						
पासपोर्ट कार्यालय	प्राप्त आवेदन पत्रों की सं.	जारी पासपोर्टों की सं.	तत्काल सेवा के तहत जारी पासपोर्टों की सं.	प्राप्त हुए विविध आवेदनों की सं.	दी गई विविध सेवाओं की सं.	राजस्व
अहमदाबाद	330121	313656	4210	9876	9758	381673340
अमृतसर	77404	73671	6026	6370	6945	91000700
बंगलूरु	407646	400263	45877	11823	11541	558679649
बरेली	72695	70610	1973	3506	3272	80858235
भोपाल	105927	109243	11857	1151	1131	74951290
भुवनेश्वर	30484	73164	3870	1234	1199	44962100
चंडीगढ़	283102	282672	8667	13919	13748	333878200
चेन्ने	329408	319321	64076	11186	11003	477727000
कोचीन	296255	264968	68072	71729	14740	335181401
कोइम्बटूर	82156	78591	10875	1274	1215	110747200
देहरादून	54577	51148	3702	2011	1783	47308193
दिल्ली	318129	264785	74142	6789	6467	509323162
गाजियाबाद	115131	119,828	5603	3,507	3372	90667105
गुवाहाटी	60264	52111	8581	1940	2315	74040700
हैदराबाद	523720	503243	53666	49136	46516	647602868
जयपुर	184720	196703	16123	12801	7792	216649200
जालंधर	127731	140923	1645	13221	12734	151456600
जम्मू	25149	24627	47	1203	1039	430436863
कोलकता	281197	233380	17385	9645	8968	309282275
काशीकोडे	232604	227923	38509	10820	10638	322907296
लखनऊ	354259	302359	12595	26506	25562	442511962
मदुरै	176821	161299	135	8005	7754	222114970
मलप्पुरम	193462	194650	35434	9292	9285	59823390

परिशिष्ट VII

पासपोर्ट कार्यालय	प्राप्त आवेदन पत्रों की सं.	जारी पासपोर्टों की सं.	तत्काल सेवा के तहत जारी पासपोर्टों की सं.	प्राप्त हुए विविध आवेदनों की सं.	दी गई विविध सेवाओं की सं.	राजस्व
मुम्बई	324529	277187	32833	8198	7840	408440304
नागपुर	87560	92551	5433	1014	977	101382645
पणजी	30215	22498	283	2892	2628	28120400
पटना	146582	133648	2119	11838	13358	165315715
पुणे	144928	146756	22422	4099	4153	191166230
रायपुर	37473	32517	3983	378	367	10658800
राँची	56979	55520	4428	3486	3211	29652230
शिमला	24461	21991	2826	1951	1905	39280500
श्रीनगर	56728	61463	231	1159	973	61644500
सूरत	115671	111993	2884	7040	6411	131308000
थाने	192332	129791	13156	5123	5071	177067700
त्रिवी	141374	128339	7341	8917	8917	174630811
तिरुवनंतपुरम	158203	131790	41986	11962	11760	229948600
विजग	103183	110526	9544	28730	28087	154674284
कुल	6283180	5915708	642539	383731	314435	7917074418
मुख्यालय सीपीवी प्रभाग (राजनयिक/सरकारी पासपोर्ट)						2301/22010
विदेशों में स्थित 180 मिशनों/केन्द्रों द्वारा जारी पासपोर्ट/ईसी						1135104*
सकल योग (जारी पासपोर्ट/ईसी+कुल प्रदत्त विविध सेवाएं)						7389558

परिशिष्ट VIII

केन्द्रीय पासपोर्ट संगठन की दिनांक 31-12-2012 तक काडर संख्या

समूह / पदनाम	कुल स्वीकृत संख्या
समूह 'क'	
पासपोर्ट अधिकारी	17
उप पासपोर्ट अधिकारी	71
सहायक पासपोर्ट अधिकारी	135
योग :	223
समूह 'ख' (राजमन्त्रित)	
पासपोर्ट प्रदानकर्ता अधिकारी	320
अधीक्षक	245
योग :	565
समूह 'ख' (अराजपन्त्रित)	
सहायक	428
हिंदी अनुवादक	23
समूह 'ग' (अराजपन्त्रित)	
प्र.श्रे.लिपिक	628
अ.श्रे. लिपिक (हिंदी)	04
अ.श्रे. लिपिक	648
ड्राइवर	00
आशुलिपिक	30
कार्यालय सहायक	148
योग :	1,909
सकल योग :	2,697

परिशिष्ट IX

दिनांक 10-12-2012 के अनुसार मुख्यालय और विदेश स्थित मिशनों/केन्द्रों में संवर्ग सं. (इनमें वाणिज्य मंत्रालय के बजट से प्रदान किए गए पद और संवर्ग बाह्य पद इत्यादि शामिल हैं)।

क्रम सं.	काडर/पद	मुख्यालय में पद	मिशनों में पद	कुल
1.	समूह-I	5	28	33
2.	समूह-II	6	40	46
3.	समूह-III	38	126	164
4.	समूह-IV	46	137	183
5.	कनिष्ठ प्रशा. संवर्ग/वरिष्ठ वेतनमान	78	203	281
6.	(i) कनिष्ठ वेतनमान	10	25	35
	(ii) परिवीक्षार्थी आरक्षित	62	—	62
	(iii) अवकाश आरक्षित	15	—	15
	(iv) प्रतिनियुक्ति आरक्षित	19	—	19
	(v) प्रशिक्षण आरक्षित	7	—	7
	योग	286	559	845
	भा.वि.से (ख)			
7.	(i) समूह-I	126	120	246
	(ii) प्रतिनियुक्तिआरक्षित	6	—	6
8.	(i) एकीकृत ग्रेड II एवं III	349	223	572
	(ii) अवकाश आरक्षित	30	—	30
	(iii) प्रतिनियुक्ति आरक्षित	16	—	16
	(iv) प्रशिक्षण आरक्षित	25	—	25
9.	(i) ग्रेड IV	180	426	606
	(ii) अवकाश आरक्षित	60	—	60
	(iii) प्रतिनियुक्ति आरक्षित	55	—	55
10.	(i) ग्रेड V/VI	144	103	247
	(ii) अवकाश आरक्षित	60	—	60
	(iii) प्रतिनियुक्ति आरक्षित	14	—	14
11.	(i) साइफर संवर्ग के ग्रेड II	39	147	186
	(ii) अवकाश आरक्षित	24	—	24
12.	(i) आशुलिपिक संवर्ग	332	512	844
	(ii) अवकाश आरक्षित	47	—	47
	(iii) प्रशिक्षण आरक्षित (हिन्दी)	10	—	10
	(iv) प्रतिनियुक्ति आरक्षित	12	—	12
13.	दुभाषिया संवर्ग	7	26	33
14.	एल एण्ड टी संवर्ग	23	1	24
	योग	1559	1558	3117
	कुलयोग	1845	2117	3962

परिशिष्ट X

मंत्रालय में अप्रैल 2012 से दिसम्बर 2012 तक सीधी भर्ती, विभागीय पदोन्नति और सीमित विभागीय परीक्षा के माध्यम से आरक्षित रिक्तियों के साथ-साथ की गई भर्ती संबंधी आंकड़े।

समूह	रिक्तियों की कुल सं.	रिक्तियों की संख्या		
		अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	अन्य पिछड़ा वर्ग
समूह क	185	09	04	07
समूह क (बाह्य संवर्ग)	02	00	00	01
समूह ख	310	61	17	26
समूह ग	45	09	02	05
कुल	542	79	23	39

परिशिष्ट XI

विविध भाषाओं में प्रवीणता प्राप्त भा.वि. सेवा के अधिकारियों की संख्या

भाषा	अधिकारियों की संख्या
अरबी	95
बहासा इंडोनेशिया	11
बहासा मलय	2
बर्मी	4
चीनी	64
इच	1
फ्रेंच	71
जर्मन	29
हिब्रू	6
इटालियन	2
जापानी	21
कजाक	1
किसवाहिली	6
कोरियाई	4
नेपाली	3
फारसी	19
पुर्तगाली	19
पुस्तू	1
रसियन	84
सर्वो क्रोएशियन	2
सिंहली	3
स्पेनिस	64
तुर्किस	7
यूक्रेनियन	1
वियतनामी	3

परिशिष्ट XII

आर आई एस प्रकाशन

आसियान-इंडिया कनेक्टिविटी रिपोर्ट: इंडिया कंट्री स्टडी

बांग्लादेश और म्यांमार के साथ उत्तर-पूर्व भारत के व्यापार व निवेश का विस्तार: अवसरों और बंधनों का एक मूल्यांकन
नई सहस्राब्दि में आई ओ आर-ए आर सी के व्यापार और निवेश में संभावनाएं: क्षेत्र की नई आर्थिक सीमाएं

नीति सार

लोक स्वास्थ्य और फार्माक्यूटिकल उद्योग: भारतीय प्रजातिगत फार्माक्यूटिकल उद्योग को प्रदोलित करना, डॉ. विश्वजीत धर, मिस्टर टी.सी. जेम्स और मि. रेजी के जोसेफ द्वारा

एशिया में रिजर्व प्रबंधन: रूपरेखा और चुनौतियों को बदलना डॉ. प्रियदर्शी दास द्वारा

क्या चीन का धीमापन वास्तविक है?, सुश्री रमा अरुण कुमार द्वारा

युआन का अंतर्राष्ट्रीयकरण, सुश्री रमा अरुण कुमार द्वारा

प्रोपर्टी बबल: द चाइनीज अप्रोच, सुश्री रमा अरुण कुमार द्वारा

फीडिंग इंडियास ग्राइंग बिलियन: अनिवार्य खाद्य उत्पाद में वृद्धि के साथ, प्रो.बी सी बराह, चेयर प्रोफेसर, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा

चाइना अपडेट्स, सुश्री रमा अरुण कुमार द्वारा

चाइनीज युवान स्प्राइडिंग इट्स विंग्स, सुश्री रमा अरुण कुमार द्वारा

विचार-विमर्श संबंधी कागजात

भारत बाल्टिक समुद्र क्षेत्र व्यापार और संयोजकता: कल्पना अथवा वास्तविकता, प्रबीर डे द्वारा

भारतीय फार्माक्यूटिकल उद्योग में आर एण्ड डी परिदृश्य, रेजी के जोसेफ द्वारा

दवा क्षेत्र में ब्रिक्स एवं दक्षिण-दक्षिण सहयोग: अनुसंधान एवं उद्यमशीलता के सहयोग में उभरती प्रवृत्तियाँ, सचिन चतुर्वेदी और हल्ला र्थेस्टेइंस्डोटटर द्वारा

भारत-2050: क्या हम विकसित देश के रूप में गणतंत्र की शताब्दी मना सकते हैं? राम गोपाल अग्रवाल द्वारा टुवर्ड्स ए मोर इक्विटेबल आउटकम फ्रॉम रियो प्लस 20, राजदूत ए गोपीनाथ द्वारा

पत्रिकाएं

दक्षिण एशिया आर्थिक पत्रिका खण्ड-12 सं. 2 सितम्बर, 2011

दक्षिण एशिया आर्थिक पत्रिका खण्ड 13 सं.1 मार्च, 2012

एशियाई जैव प्रौद्योगिकी तथा विकास समीक्षा, खण्ड 13 सं.3 नवम्बर, 2011

एशियाई जैव प्रौद्योगिकी तथा विकास समीक्षा, खण्ड 14 सं.1 मार्च, 2012

एशियाई जैव प्रौद्योगिकी तथा विकास समीक्षा, खण्ड 14 सं.2 जुलाई, 2012

एशियाई जैव प्रौद्योगिकी तथा विकास समीक्षा, खण्ड 14 सं.3 नवम्बर, 2012

न्यू एशिया मॉनीटर खण्ड 8 सं. 3 खण्ड 9 सं. 1 जनवरी 2012

न्यू एशिया मॉनीटर खण्ड 9 सं. 2 व 3, अक्टूबर 2012

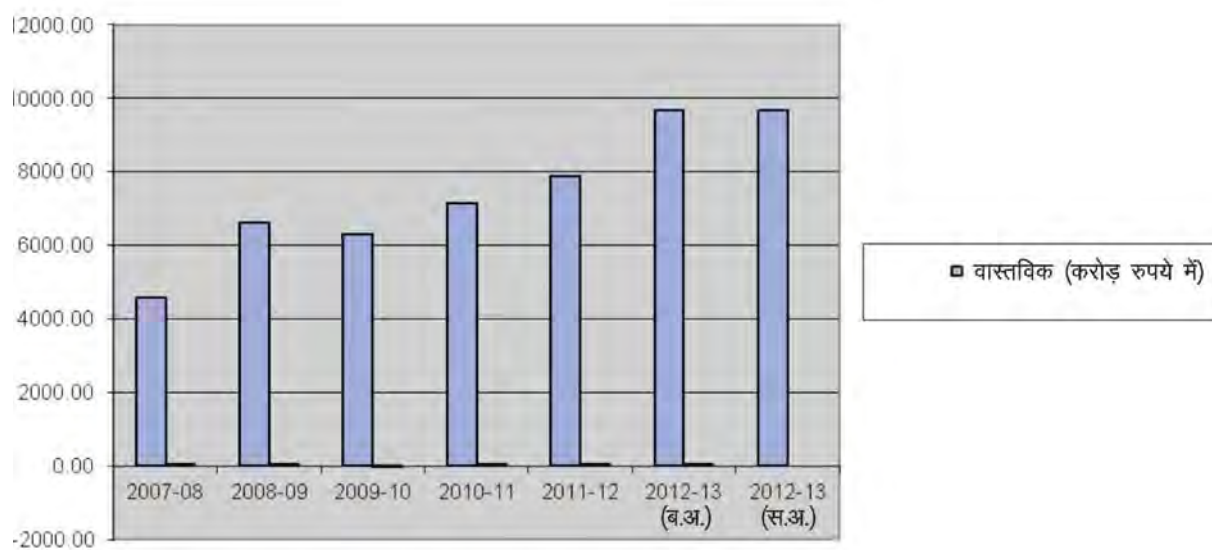
परिशिष्ट XIII

वर्ष 2012-13 (ब.अ.) में बजट आबंटन 9661.97 करोड़ रुपये हैं जो कि वर्ष 2011-12 के बजट अनुमान 7106 करोड़ रुपये की तुलना में 35.97 प्रतिशत अधिक है। वर्ष 2012-13 के लिए संशोधित अनुमान 9662 करोड़ रुपये है जो कि वर्ष 2012-13 के बजट अनुमान के लगभग बराबर ही है।

विदेश मंत्रालय का वास्तविक व्यय, 2007-08 से 2012-13
(राजस्व और पूँजी)

वर्ष	वास्तविक (करोड़ रुपये में)	पिछले वर्ष की तुलना में प्रतिशत अन्तर
2007-08	4572.39	15.77
2008-09	6630.73	45.02
2009-10	6290.77	-5.13
2010-11	7153.27	13.71
2011-12	7872.76	10.06
2012-13 (ब.अ.)	9661.97	22.73
2012-13 (स.अ.)	9662.00	0.00

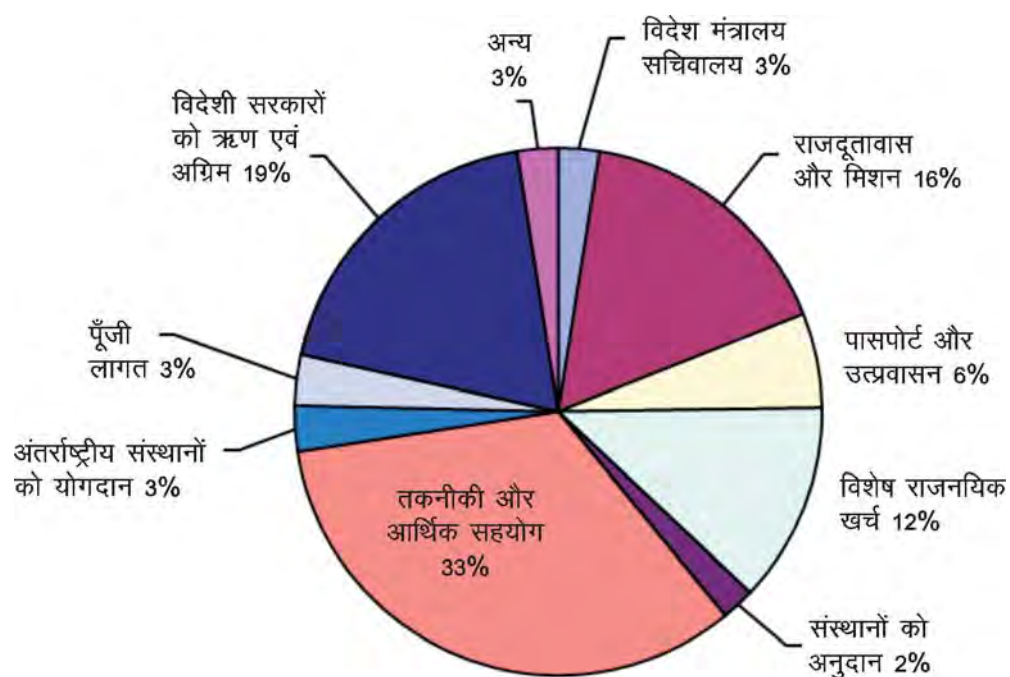
विदेश मंत्रालय का वास्तविक व्यय, 2007-08 से 2012-13 तक
(राजस्व और पूँजी)



परिशिष्ट XIV

2012-13 बजट (संशोधित अनुमान) में मुख्य क्षेत्रों का आबंटन)

क्षेत्र	आबंटन (करोड़ रुपये)
विदेश मंत्रालय सचिवालय	241.93
राजदूतावास और मिशन	1589.83
पासपोर्ट और उत्प्रवासन	560.93
विशेष राजनयिक व्यय	1185.00
संस्थाओं को अनुदान	199.44
तकनीकी और आर्थिक सहयोग	3233.93
अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों को योगदान	271.61
पूँजीगत परियोजनाएँ	300.00
विदेशी सरकारों को ऋण और अग्रिम	1838.00
अन्य	241.33
कुल	9662.00



परिशिष्ट XV

भारत के तकनीकी सहयोग कार्यक्रमों के मुख्य गन्तव्य

वर्तमान वित्तीय वर्ष 2012-13 में भारत के तकनीकी सहायता कार्यक्रमों के प्रधान लाभार्थी (ऑकड़े वर्ष 2012-13 के संशोधित अनुमान से संबंधित हैं)।

क्रम सं.	तकनीकी सहायता बजट	(करोड़ रुपये में)	भारत के कुल सहायता और ऋण बजट का प्रतिशत
1.	भूटान	1171.06	36.21
2.	अफगानिस्तान	491.16	15.19
3.	मालदीव	30.00	0.93
4.	नेपाल	270.00	8.35
5.	अफ्रीकी देश	237.50	7.34
6.	श्रीलंका	290.00	8.97
7.	म्यामां	125.00	3.87
8.	यूरोपीय देश	30.00	0.93
9.	बांग्लादेश	280.00	8.66
10.	लातिन अमरीकी देश	27.61	0.85
11.	मंगोलिया	1.00	0.03
12.	अन्य	280.60	8.68

परिशिष्ट XVI

भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक के लम्बित लेखापरीक्षा पैरा की स्थिति।

क्रम सं.	वर्ष	पैरा/पीए रिपोर्टों की संख्या जिनपर की गई कार्रवाई संबंधी टिप्पणी लेखा परीक्षा के पुनर्निरीक्षण के बाद पीएसी को जमा कराई गई।	पैरा/पीए रिपोर्टों का ब्योरा जिनपर की गई कार्रवाई संबंधी टिप्पणी लम्बित है।		
			मंत्रालय द्वारा पहली बार भी नहीं भेजी गई की गई कार्रवाई संबंधी टिप्पणियों की संख्या	मंत्रालय द्वारा भेजी गई लेकिन अवलोकन के बाद लौटाई गई की गई कार्रवाई संबंधी टिप्पणियों की संख्या जिनकी पुनः वापसी की लेखा-परीक्षा के लिए प्रतीक्षा है।	की गई कार्रवाई संबंधी टिप्पणियों की संख्या जिनका लेखा परीक्षा द्वारा अंतिम पुनर्निरीक्षण हुआ लेकिन मंत्रालय द्वारा पीएसी को जमा नहीं कराई गई।
1	2003	—	—	—	—
2	2004	—	—	—	—
3	2005	—	—	—	1
4	2006	—	—	—	—
5	2007	—	—	3	—
6	2008	—	—	1	—
7	2008-09	—	—	2	—
8	2010-11	—	—	7	1
9	2011-12	—	7	1	—
कुल		—	7	14	2

मार्च 2011 को समाप्त वर्ष की सबसे नवीन लेखा रिपोर्टों में दर्शाए गए महत्वपूर्ण लेखा परीक्षा अवलोकनों का सार निम्नानुसार हैं:

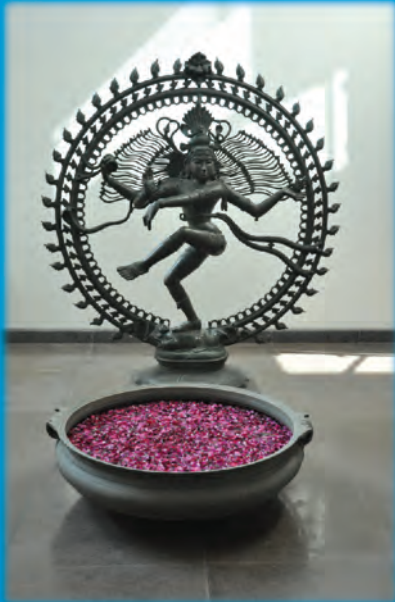
1	कंसूलर स्कंध का कार्य (निष्पादन)	कुछ मिशनो और केन्द्रों ने मंत्रालय द्वारा निर्धारित दरों के अनुसार वीजा शुल्क तथा अन्य कंसूलर सेवाओं पर लेवी नहीं लगाई जिसके कारण लेवी में 37.26 करोड़ रुपये की कमी हुई। मिशन/केन्द्रों द्वारा भारतीय समुदाय कल्याण निधि स्कीम लागू करने में देरी के कारण 21.55 करोड़ रुपये का लेवी शुल्क प्राप्त नहीं हुआ। सरकारी खाते में कंसूलर रशीदों पर धन जमा नहीं होने से कुछ देरी हुई। दी गई व्ययस्थाओं का उल्लंघन करते हुए विदेशों में मिशन वीजा सेवाओं को आउटसोर्स कर रहे थे जिसके कारण सेवा उपलब्ध कराने वालों के चयन में वित्तीय गड़बड़ी और पारदर्शिता में कमी रही। पैरा 3.1
2	निर्धारित नियमों और प्रक्रियाओं को अवलोकन में असफल रहने के कारण अधिभुगतान हुआ।	विदेशों में मिशनो/केन्द्रों द्वारा निर्धारित नियमों और प्रक्रियाओं के अवलोकन में असफल रहने के कारण 56 मिशनो के 263 मामलों में वेतन एवं भत्तों तथा अन्य विविध भुगतानों में 91.96 लाख रुपये का अधिभुगतान हुआ। वर्ष 2009-11 के दौरान लेखा परीक्षा के आग्रह पर इसकी वसूली की गई। पैरा 3.2.1
3	ठेके दिए जाने में कोताही वर्ती गई।	बोलियों (बिड्स) के मूल्यांकन में कोताही वरतने के कारण इंडोनेशिया में आईटी प्रयोगशाला स्थापित करने के लिए अकारण वार्षिक रख-रखाव प्रभार एवं वैट छोड़ देने से 51.67 लाख रुपये की अधिक राशि खर्च हुई। लेखा परीक्षा के आग्रह पर मिशन ने 30.56 लाख रुपये वसूल किए और 21.11 लाख रुपये का भुगतान रोक दिया। पैरा 3.2.2

संक्षिप्तियां

आल्को	एशियाई अफ्रीकी विधिक परामर्शी संगठन	इकोसोक	आर्थिक एवं समाजिक परिषद
एआईईपीजी	आसियान-भारत प्रतिष्ठित व्यक्तियों का समूह	इकोवास	पश्चिम अफ्रीका राज्य आर्थिक समुदाय
एआईटीएफ	अजरबैजान अंतर्राष्ट्रीय भ्रमण एवं पर्यटन	ईएफटीए	यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ
अपेड़ा	कृषिय संवर्धित खाद्य निर्यात एवं विकास प्राधिकरण	ईयू	यूरोपीय संघ
एआरएफ	आसियान क्षेत्रीय मंच	एक्जिम	भारतीय निर्यात-आयात बैंक
आसियान	दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संगठन	एफएटीएफ	वित्तीय क्रियान्वयन कार्यबल
एएसईएम	एशिया यूरोप बैठक	एफडीआई	प्रत्यक्ष विदेशी निवेश
एसोचैम	एसोसिएट्स चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री	फिक्की	भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग परिसंघ
एयू	अफ्रीकी संघ	एफटीए	मुक्त व्यापार करार
एडब्ल्यूजी-केपी	एड-हॉक वर्किंग ग्रुप ऑन क्योटो प्रोटोकॉल	जी-20	समूह-20
एडब्ल्यूजी-एलसी	एड हॉक वर्किंग ग्रुप ऑन लांग टर्म कोऑपरेटिव एक्शन	जीएएआर	जनरल एंटी-अबोइडेंस रूल (टैक्सेशन)
आयुष	आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा एवं होम्योपैथिक	जीसीएसएस	सामान्य सांस्कृतिक छात्रवृत्ति स्कीम
बीआईएमएस	भूटान चिकित्सा विज्ञान संस्थान	जीसीटीएफ	वैश्विक आतंकवाद विरोधी मंच
बिमस्टेक	बहु-क्षेत्रीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल	जीओआई	भारत सरकार
ब्रिक्स	ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका	जीआरएसई	गार्डन रिच शिपबिल्डर्स एण्ड इनर्जी
बीटीआईए	व्यापक आधार व्यापार एवं निवेश करार	एवईपी	जल-विद्युत परियोजना
केपेक्सिल	रसायन एवं सम्बद्ध उत्पाद निर्यात संवर्धन परिषद	आईएएफएस	भारत-अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन
सीबीएम	विश्वास निर्माण उपाय	आईएआईजीसी	भारत-अजरबैजान अन्तर-सरकारी आयोग
सीका	व्यापक आर्थिक सहयोग करार	इब्सा	भारत-ब्राजील-दक्षिण अफ्रीका वार्ता मंच
सीईएलएसी	लातिन अमेरिकी एवं कैरिबियाई राज्य समुदाय	इब्सामार	भारत-ब्राजील-दक्षिण अफ्रीका मेरीटाइम एक्सरसाउजेस
सीईपी	सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम	आईसीएओ	अंतर्राष्ट्रीय नागर विमानन संगठन
सीईपीए	व्यापक आर्थिक भागीदारी करार	आईसीसी	अन्तर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय
सीजीपीसीएस	सोमालिया अपतट पर समुद्री डकैती संबंधी संपर्क समूह	आईसीसीआर	भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद
चोगम	राष्ट्रमण्डल शासनाध्यक्षों की बैठक	आईसीजे	अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय
सीका	एशिया में बातचीत एवं विश्वास निर्माण के लिए सम्मेलन	आईसीपीई	अन्तर्राष्ट्रीय उद्यम संवर्धन केन्द्र
सीआईआई	भारतीय उद्योग परिसंघ	आईसीआरआईआईआर	अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों पर अनुसंधान संबंधी भारतीय परिषद
सीआईएस	स्वतंत्र राज्यों का राष्ट्रकुल	आईसीटी	सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी
सीएलएमवी	कंबोडिया, लाओ पीडीआर, बर्मा और वियतनाम (आसियान उप समूह)	आईसीडब्ल्यूए	विश्व मामलों की भारतीय परिषद
सीएनईएस	राष्ट्रीय द इक्वट्रस स्पेशियल्स केन्द्र	आईडीपी	आन्तरिक रूप से विस्थापित व्यक्ति
सीपीआईओ	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	आईडीएसए	रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान
सीपीवी	कॉसुलर, पासपोर्ट एवं वीजा	आईएफएस	भारतीय विदेश सेवा
सीएससीएपी	एशिया प्रशांत सुरक्षा सहयोग परिषद	आईजीसी	अन्तर सरकारी आयोग
डीवीपी	विशिष्ट आगंतुक कार्यक्रम	इग्नू	इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
ईएम	विदेश मंत्री	आईआईएमसी	भारतीय दूर संचार संस्थान
		आईएलसी	अंतर्राष्ट्रीय विधिक आयोग
		आईएलओ	अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन

आईओएम	अंतर्राष्ट्रीय उत्प्रवासन संगठन	एनएससीएस	राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय
आईओएनएस	इंस्टीट्यूट ऑफ नोएटिक साइंसेज	एनएसआईसी	राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम
आईओआर-एआरसी	हिंदमहासागर परिधि क्षेत्रीय सहयोग संघ	ओसीआई	भारतीय मूल के विदेशी नागरिक
आईपीआर	बौद्धिक संपदा अधिकार	ओपेक	तेल व पेट्रोल निर्यातक देश
आईपीयू	अंतर-संसदीय संघ	ओवीएल	ओएचजीसी विदेश लिमिटेड
आईआरआईजीसी-टेक	प्रौद्योगिकी आर्थिक सहयोग के लिए भारत-रूस अन्तर-सरकारी आयोग	फार्मएक्जिल	भारतीय फार्मक्यूटिकल निर्यात प्रोत्साहन परिषद
आईआरईएनए	अंतर्राष्ट्रीय पुनर्नवीकरणीय ऊर्जा एजेंसी	पीआईओ	भारतीय मूल के व्यक्ति
आईएसजेआरपी	भारत-स्विश संयुक्त अनुसंधान कार्यक्रम	पीएम	प्रधान मंत्री
इसरो	भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन	आरबीआई	भारतीय रिजर्व बैंक
आईटेक	भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग	राइट्स	रेल इंडिया टेक्निकल इकोनॉमिक सर्विस
इत्मा	अन्तर्राष्ट्रीय वस्त्र उत्पादक संगठन	आरजीओबी	भूटान की शाही सरकार
आईडब्ल्यूएलएफ	भारतीय भारत्तोलन संघ	आरटीआई	सूचना का अधिकार
जेसीबीसी	व्यापार सहयोग संयुक्त आयोग	सार्क	दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ
जेसीजी	संयुक्त समन्वयन समूह	एसएडीसी	दक्षिण अफ्रीका विकास समुदाय
जेडब्ल्यूजी	संयुक्त कार्यकारी समूह	सापटा	दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र
एलबीएसएनएए	लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी	सालार	स्थानीय प्राधिकरणों व क्षेत्रों का स्वीडिश संघ
एलसीएस	भूमि सीमाकर केंद्र	एसएयू	दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय
एलडीसी	अल्पतम विकसित देश	एसबीआई	भारतीय स्टेट बैंक
एलओसी	ऋण शृंखला	एससीएपी	अफ्रीकी कार्यक्रम के लिए विशेष राष्ट्रमंडल सहायता
एमईपी	यूरोपीय संसद सदस्य	एससीओ	शंघाई सहयोग संगठन
मर्कॉसुर	दक्षिणी शंकु देश बाजार	एसडीपी	लघु विकास परियोजनाएं
एमजीसी	मैकांग-गंगा सहयोग	सेबी	भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड
एमओईएफ	पर्यावरण एवं वन मंत्रालय	एसईडी	सामरिक महत्त्व के आर्थिक संवाद
एमओपी एण्ड एनजी	पेट्रोल एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय	एसईपीएम	सोसाइटी फॉर सेडीमेंटरी ज्योलॉजी
एमओएस (आई/सी)	राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)	सेवा	स्व-नियोजित महिला संघ
एमओएस (पीके)	विदेश राज्य मंत्री (प्रनीत कौर)	एसएमई	लघु एवं मझोले उद्यम
एमओयू	समझौता ज्ञापन	एसएसएफएफसी	घटिया/मिलावटी/गलतलेबल/डे/नकली दवा उत्पाद
एमपी	संसद सदस्य	तापी	तुर्कमेनिस्तान-अफगानिस्तान-पाकिस्तान-भारत
एमटीसी	सेना-तकनीकी सहयोग	टीबीटी/एसपीएस	व्यापारिक तकनीकी रुकावट/सेनीटरी उपाय
नाम	गुट-निरपेक्ष आन्दोलन	टीम-9	टेक्नो-इकोनॉमिक अप्रोच फार अफ्रीका इण्डिया मूवमेंट
नास्कॉम	राष्ट्रीय सॉटवेयर एवं सेवा कंपनी संघ	टेरी	टाटा ऊर्जा एवं अनुसंधान संस्थान
एनजीओ	गैर-सरकारी संगठन	यूई	संयुक्त अरब अमीरात
एनआईएफटी	राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान	यूएमएफसीसीआई	वाणिज्य व उद्योग चैम्बर्स के फेडरेशन का म्यांमार संघ
एनआईआईटी	राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान	यूएनसीसी	संयुक्त राष्ट्र क्षतिपूर्ति आयोग
एनपीटी	अप्रसार संधि	यूएनसीट्रा	अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कानून के लिए संयुक्त राष्ट्र आयोग
एनपीसीआईएल	न्यूक्लीयर पावर कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड	यूएनसीओपीयूओएस	बाह्य अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण उपयोग के संबंध में संयुक्त राष्ट्र समिति

अंकटाड	व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र संघ सम्मेलन	यूनिफिल	लेबनान में संयुक्त राष्ट्र अंतरिम बल
यूएनडीपी	संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम	यूएनएमआईएन	नेपाल में संयुक्त राष्ट्र मिशन
यूएनईपी	संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम	यूएनएससी	संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद
यूनेस्को	एशिया व प्रशांत के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक आयोग	यूपीए	संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन
यूनेस्को	संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन	वैट	मूल्यवर्धित कर
यूएनएफसीसीसी	जलवायु परिवर्तन के संबंध में संयुक्त राष्ट्र संरचना अभिसमय	डब्ल्यूएचओ	विश्व स्वास्थ्य संगठन
यूएनजीए	संयुक्त राष्ट्र महासभा	डब्ल्यूआईपीओ	विश्व बौद्धिक अधिकार संगठन
		डब्ल्यूटीओ	विश्व व्यापार संगठन
		एक्सपी	विदेश प्रचार





सत्यमेव जयते

विदेश मंत्रालय

भारत सरकार

यह वार्षिक रिपोर्ट इस वेबसाइट पर भी उपलब्ध है:

www.mea.gov.in